Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1874

७१
१८१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 69
पुस्तक संख्या 9-2
आगत पञ्जिका संख्या 68,408

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

❀ ओ३म् ❀

पुस्तक-संख्या 68/16 69/9-2

पंजिका संख्या .....

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या 69 आगत नं0 48,608
लेखक 9-2
शीर्षक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 69 / 7-9 आगत संख्या 89,608

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारतदर्पणः

तृतीय भाग

जिसमें कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, विशोक, स्त्री और शान्ति पर्व तीन अंश पर्य्यन्त हैं

स्वस्तिश्री महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणकाशिराज की आज्ञानुकूल

श्रीगोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरों ने संस्कृत का सारांश यथा वस्थित ले अति परिश्रम, ईश्वर की पूर्ण कृपा, उक्त काशिराज की गुण ग्राहकता, और परितोषकादि लालसा से भाषा, वर्ण, मात्रा वृत्त में अति रुचिर रचना कर कलकत्ता महा नगर के शास्त्र प्रकाश मुद्रा यन्त्र में श्रीपण्डित लक्ष्मीनारायण से शुद्ध कराय शाके १७५१ और संवत १८८६ में मुद्रितकराया था

अब

श्रीयुत परमोदार गुण ग्राहक, गुणियन सुखदायक, राजा माधव सिंह, साहब बहादुर गढ़ अमेठी प्रदेश सुल्तान पुर के अधिपति की अनुमति और सहायता से, सकल कलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर जीने पण्डित प्यारेलाल और पण्डित रामरत्न से यथो चित अति प्रबन्ध से शुद्ध कराय

लखनऊ
निज यन्त्रालय में छपवाया

सितम्बर सन १८७४ ई०

संवत १९३१ वि०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचीपत्र ॥

करण पर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
१—२	कर्णका सेना पति होना अरु सात्यकि करके अनुविन्दु वध और भीम अश्वत्थामा युद्ध वर्णन ॥	१	१५
३	नकुल कर्ण युद्ध और कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्न युद्ध और अर्जुन करके सत्यसेन वध वर्णन ॥	१५	२३
४	अर्जुन वधार्थ कर्ण प्रतिज्ञा और शल्य दुर्योधन विवाद पुन: शिव करके त्रिपुर वध और शल्य सारथ्य अंगीकार और कर्ण शल्य सम्वाद वर्णन ॥	२३	३५
५	युधिष्ठिर करके आत्म सेना व्यूह रचना और संसप्तक अर्जुन युद्ध वर्णन ॥ ...	३५	४३
६	युधिष्ठिर अश्वत्थामा युद्ध और अर्जुन करके अश्वत्थामा पराजय और धृष्टद्युम्न वधार्थ अश्वत्थामा प्रतिज्ञा पुन: भीमसेन करके दुश्शासन वध वर्णन ॥	४४	६९
७	कर्ण शल्य सम्वाद और अर्जुन करके वृषसेन वध और नाग कर्ण सम्वाद और कर्ण रथ चक्रस्तम्भन अरु श्रीकृष्ण सम्वाद और अर्जुन करके कर्ण वध वर्णन ॥	६९	७९
	शल्यपर्व सूचीपत्र ।		
१—३	शल्य करके मकर व्यूह रचना और नकुल करके चित्रसेन वध और शल्य युधिष्ठिर संग्राम में शल्य वध और धृष्टद्युम्न कृतवर्म्मा सात्यकि युद्ध और दुर्योधन पाण्डव और शकुनि धृष्टद्युम्न युद्ध और सहदेव करके सकुनि वध और पराजित दुर्योधन जल कुण्ड प्रवेश वर्णन ॥	१	२२
	गदापर्व सूचीपत्र ॥		
१	दुर्योधन अन्वेषणार्थ युधिष्ठिर दूत प्रेषण और सरस्य दुर्योधन युधिष्ठिर संवाद और गदा युद्धार्थ भीम गमन और बलदेव आगमन पुन: दक्ष करके चन्द्रमा शाप वर्णन ॥ ...	१	८
२	बलदेवजी करके तीर्थ गमन वृत्तान्त और वशिष्ठ विश्वामित्र विरोध और सरस्वती नदी शाप मोचन स्कन्द जन्म पुन: अरुंधती तप कथा अरु दधीच करके अस्थि दान कथा वर्णन ॥	८	१६
३	भीम दुर्योधन गदा युद्ध में दुर्योधन पराजय और श्रीकृष्ण दुर्योधन संवाद और गांधारी संबोधनार्थ कृष्ण गमन दुर्योधन निकट अश्वत्थमा अरु कृपवर्मा आगमन पुन: अश्वत्थामा सेनानी वर्णन ॥	१६	२३
	सौप्तिक पर्व सूचीपत्र ॥		
१	सुप्त पाण्डव वधार्थ अश्वत्थामा विचार औ अश्वत्थामा कृपाचार्य्य शिक्षा अरु अश्वत्थामा करके शिवस्तुति और वरदान प्राप्ति कर धृष्टद्युम्नादि वध पुन: दुर्योधन तन त्याग वर्णन ॥ ...	१	७
	ऐषिक पर्व सूचीपत्र ॥		
१	ससैन्य सुत वध जानि युधिष्ठिर शोक पुन: अश्वत्थामा अन्वेषणार्थ सकृष्ण पाण्डव गमन और अश्वत्थामा ब्रह्मास्त्र मोचन और मणि ग्रहण और श्रीकृष्ण करके शिव प्रशंसा वर्णन ॥	१	७
	विशोक पर्व सूचीपत्र ।		
१	संजय विदुर करके शोकाकुल धृतराष्ट्र सम्बोधन अरु अनेक शिक्षा वर्णन ॥ ...	१	४
	स्त्री पर्व सूचीपत्र ।		
१	स्त्रियों सहित राजा धृतराष्ट्र सुरसरि तट गमन और पाण्डव मिलन अरु धृतराष्ट्रकर्के भीम प्रतिमा मर्दन और स्त्रीविलाप और वीर देह दाह वर्णन ॥	१	७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
	शान्तिपर्व राजधर्म सूचीपत्र ॥		
१—२	युधिष्ठिर निकट नारदादि ऋषि आगमन अरु कर्ण बल कथन और कुन्ती कर्के दारिद्र दोष अरु अर्जुन आदि कर्के युधिष्ठिर शिक्षा और व्यास युधिष्ठिर सम्वाद और ऋषियों कर्केचार बाक बध और युधिष्ठिर राज्याभिषेक वर्णन ॥	१	१७
३	श्रीकृष्ण सहित युधिष्ठिर का भीष्म निकट गमन और ऋचीक ऋषि करके राजा गाधि नृप पुत्रोत्पादनार्थ चरु विभाग और परशुराम करके सहस्रार्जुन भुजच्छेदन कथा और सहस्रार्जुन सुत करके यमदग्नि मरण और परशुराम करके क्षत्री बध वर्णन ॥ ...	१७	२२
४	राजधर्म अरु पृथु जन्म और चतुर्वर्ण धर्म और मुचकुन्द कुबेरसम्वाद वर्णन ॥ ...	२२	३०
५	यज्ञ दक्षिणा मित्र भेद और क्षेमदर्श और ब्राह्मण सम्वाद और निज अमात्य दमन और नगर रचना अरु सेना विधि वर्णन ॥	३०	३६
६	शूरवीर लक्षण और युद्ध रीति और वृहस्पति इन्द्र सम्वाद और क्षेम दर्श विदेह मिलन और माता पिता गुरु पूजन विधि अरु सत्य प्रशंसा सत्संग वर्णन ॥	३६	४२
७	शृगाल सिंह कथा और आलसी उष्ट्रका इतिहास अरु नम्रता के साथ बेंगु बेत इतिहास में नीचता निन्दा और बसुहवन मांधाता सम्वाद अरु दण्ड प्रभाव वर्णन ...	४२	४७
८	युधिष्ठिर कोप देखकर दुर्योधन संताप और धृतराष्ट्र शिक्षा और इन्द्र कथामें प्रह्लाद से शीलत्व याचना अरु राज धर्म वर्णन ॥	४७	५२
	शांति पर्व आपद्धर्म्म सूचीपत्र ॥		
१—२	क्षीणधन दीर्घ सूत्रता आदि इतिहास और दीर्घ दर्शी, दीर्घ सूत्र, प्राप्त कालज्ञ, मीन इतिहास अरु लोमस मार्जार इतिहास वर्णन ॥	१	१०
३	पूजनिनाम शकुनिकर्के ब्रह्मदत्त नृप नेत्रभंग ब्रह्मदत्तकर्के पूजित शकुनि सम्बोधन वर्णन ॥	१०	११
४—५	देवाराधन प्रशंसा में श्वान जंघा ग्रहण अरु कपोत कपोती सम्वाद वर्णन ॥ ...	११	१५
६	तीर्थयज्ञ ते पाप निवृत्ति कथन और नैमिषारण्य में गृध्र जम्बुक इतिहास वर्णन ॥ ...	१६	१८
७—८	शाल्मलि पवन सम्वाद अरु लोभ मोह सदाचारादि व्याख्यान अरु सत्यधर्म महिमा वर्णन ॥	१८	२१
९—१०	खड्गोत्पत्ति अरु नाम और दयाश्रद्धा क्षमादि प्रशंसा और विप्र इतिहासमें बकमारण वर्णन ॥	२१	२७
	शांति पर्व मोक्ष धर्म सूचीपत्र ।		
१	शोक निवृत्यर्थ राजा सेनजित इतिहास और सुखदुख वृत्तान्त और मोक्ष धर्म वर्णन ॥	१	५
२—३	पिता पुत्र इतिहास अरु यज्ञ प्रशंसा और ब्रह्मचर्य्य निरूपण अरु त्याग प्रशंसा वर्णन ॥	५	१०
४	ऋषि इन्द्रिय संयम और कामादि त्याग और मंकी ऋषि ज्ञान प्राप्ति वर्णन ॥ ...	१०	१४
५—७	नहुष बोद्ध ऋषि सम्वाद अरु उरग सारङ्ग पिङ्गला वेश्या तीरकारकुमारिका गुण ग्रहण और अजगर मुनि प्रह्लाद सम्वाद और बणिक कश्यप वृत्तान्त निर्धनतानिन्दा और शृगाल रूप इन्द्र कश्यप सम्वाद वर्णन ॥	१४	२१
८	प्रारब्ध और सत्कर्म प्रशंसा और बुद्धि निर्मलता वर्णन ॥	२१	२२
९	जग दुत्पत्ति और वर्ण विभाग और भृगु भरद्वाज संवाद में ब्रह्मा उत्पत्ति वर्णन ॥ ...	२२	२४
१०—१३	पंचधातु अरु जीवस्थिति अरु गन्धादि उत्पत्ति अरु भूत संघात नम्रता और देहस्थ वायवग्नि प्राण नाड़ी और पंच तत्व स्थान वर्णन ॥	२५	२८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
१४—१७	भूत संघात अरु देह अवस्था वृत्तान्त अरु भूत गण अरु सुर दानवादि उत्पत्ति अरु ब्राह्मण उत्तमता और चतुर्वर्ण कर्म और शौच सदा चार प्रशंसा वर्णन ॥	२९	३३
१८—१९	शारीरक अरु मानस श्रेय अरु देव होम तप फल अरु गृहस्था श्रम प्रशंसा वर्णन ॥	३३	३६
२०	बानप्रस्थाश्रम संन्यासाचार और ब्रह्मस्थान प्राणायाम और निन्दादि दोष निवृत्ति और ब्रह्मचर्य्य वृत्तान्त वर्णन ॥ ...	३६	३८
२१	आचरण प्रशंसा और नित्यनेम करण विधि और निज पाप गोपन दोष वर्णन ॥ ...	३९	४०
२२	अध्यात्म चिन्तन विधि और शब्दादि चराचर विश्वोत्पत्ति अरु सत्व रजतम गुण वर्णन ॥	४०	४४
२३—२४	मोक्ष साधन भूत अरु चार प्रकार के ध्यान और जापक जप विधान और पविचा धारण वर्णन ॥ ...	४५	४७
२५	जापक उत्तम मध्यम अधोगति प्राप्ति अरु जापक गति प्राप्ति वर्णन ॥ ...	४७	४९
२६—२७	काल इक्ष्वाकु और मृत्यु धर्म संबाद और ब्राह्मण कर्के गायत्री जप अरु इक्ष्वाकु कर्के पैप्पलाद ऋषि से जप फल याचना और विकृत विरूप विवाद और परमेश्वरते इक्ष्वाकु वर प्राप्ति जप और संहिता पाठ से सूर्य्यादि लोक प्राप्ति प्रशंसा वर्णन ॥ ...	४९	५०
२८	सद्य मुक्ति अरु उत्तम लोकादि प्राप्त्यर्थ युधिष्ठिर प्रश्न और पिप्पलायन और इक्ष्वाकु के निकट विष्णु इन्द्रादि सर्व देव आगमन अरु ब्राह्मण और इक्ष्वाकु ब्रह्मपुर गमन वर्णन ॥	५०	५९
२९	ज्ञान सहित योग और वेदाध्ययन और अग्निहोत्रादि फल और मनु और वांगीश इतिहास और विविधि गुण कर्म और मंत्र वर्णन ॥ ...	५९	६१
३०	अक्षर ते व्योमादि उत्पत्ति अरु योगाभ्यास ते अक्षर ज्ञान और ज्ञानइन्द्रिय प्रकाश और मरणा नन्तर पञ्च भूत गमन वर्णन ॥ ...	६१	६२
३१	बुद्धि सहित आत्मा निर्विकार और मरणान्तर देहान्तर प्राप्ति वर्णन ॥ ...	६३	६४
३२	स्थूलांग और शरीर वृत्तान्त और इन्द्रिय निर्मलता और लयउत्पत्ति और शब्दादि विषय त्याग वर्णन ॥ ...	६५	६६
३३	संसार त्याग प्रशंसा और मन बुद्धि के एकी भावमे आत्म प्राप्ति वर्णन ॥ ...	६७	६८
३४	सर्व देहमें ब्रह्मस्थिति पृथिव्यादि उत्पत्ति और विषय त्याग और ब्रह्मज्ञान वर्णन ॥ ...	६८	७०
३५	श्रीकृष्ण करके तत्व अरु ब्रह्मा सप्त ऋषिदक्ष अरुचयों दश कन्या अरु सृष्टिउत्पत्ति वर्णन ॥	७०	७४
३६	कृष्ण वृत्तान्त और भीष्म वन गमन में कश्यप कथा वर्णन ॥	७४	७५
३७—६८	गर्भ बास वृत्तान्तअरु ब्रह्म प्राप्ति विप्र निन्दा स्वप्नाद्य वस्था वृत्तान्त आध्यात्म और पञ्च शिखो पाख्यान और यज्ञार्थ पशुहिंसा प्रह्लाद इतिहास वलिइन्द्र सम्वाद वलि देहते लक्ष्मी प्रादुर्भाव और सुरराज नमुचि सम्वाद वलि कथा श्रीकृष्ण उग्र तप इतिहास और ब्रह्म प्राप्ति और कर्म लिंग देह वृत्तान्त मोह वर्णन ॥	७५	११८
६९—७२	ब्रह्मा मृत्यु इतिहास में रोग व्याज सों मृत्यु करके प्रजामारण और धर्म प्रशंसा और धर्म लक्षण और धर्मवा न्निःशंकता वर्णन ॥	११८	१२१
७३—७७	युग२ में धर्म ह्रासता और धर्म मूल श्रुतिस्मृति और जाजलि गर्व और पिशाच करके तुलाधार ज्ञान और काशी वासि तुलाधार जाजलि मिलन और तुलाधार करके जाजलि पूर्व वृत्तान्त कथा और तुलाधार जाजलि सम्वाद और तुलाधार करके निज वृत्तांत कथन और		

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
	तुलाधार करके निष्काम स्वधर्माचरण कथन और जाजलि करके वणिक धर्म प्रशंसा और गोदान प्रशंसा श्रद्धाफल और जाजलि करके पूर्व पत्नी आह्वान और पत्नियों करके धर्म कथन अहिंसक प्रशंसा वर्णन ॥	१२१	१२५
७८—७९	माता वधार्थ गौतम आज्ञा और चिरकारी करके माता प्रशंसा और गौतम करके चिरकारी प्रशंसा और दण्ड कथन अहिंसा प्रशंसा वर्णन ॥	१२५	१२९
८०—८२	गो कपिल संवाद अरु नहुष करके गो अहिंसा और कलि करके नहुष निन्दा और स्मृ मरस्मि करके गृहस्थाश्रम प्रशंसा और पापके चतुर्द्वार और कटु आदि वचन त्याग और चर्तु वर्णाश्रम ओ वेद वर्णन और गर्भाधानादि संस्कार और फलाशा त्याग वर्णन ॥ ...	१३०	१३३
८३—८४	कुण्डधार इतिहास और द्विज करके स्वप्ना वस्थामें मणि भद्र दर्शन और मणिभद्र संवाद और मृगद्विज वार्तालाप और मृग करके ब्राह्मण को दिव्य दृष्टि दान और यज्ञ निन्दा वर्णन ॥	१३४	१३७
८५—८९	मोक्ष मार्ग और काम क्रोधादि त्याग वृत्तान्त और सुखदुःखान्वित संसार अनित्यतामें वृत्रासुर वृत्तान्त अरु शुक्र वृत्रासुरसंवाद औरआत्मके साक्षात्कारको शुक्रसे वृत्रासुर प्रश्न और वृत्रासुर संवाद में सनत्कुमार आगमन और शिवजी के पास वृहस्पति गमन अरु शिव करके इन्द्रको निज बलदान और इन्द्र करके वृत्रासुर वधओ ब्रह्म हत्या उत्पत्ति अरु ब्रह्म हत्या ब्रह्मा संवाद वर्णन ॥	१३७	१४३
९०	महादेव करके दक्ष यज्ञ विध्वंस अरु ज्वर विभाग वर्णन ॥	१४३	१५०
९१	नारद समंग ऋषि इतिहास में योग प्रशंसा वर्णन ॥	१५०	१५१
९२	गुरु सेवा और वृद्ध संग अरु गालव नारद इतिहास में तत्व विचार वर्णन ॥ ...	१५१	१५२
९३	अरिष्टनेमि सगर इतिहास में पुत्र पौत्रादि अनुरक्तता त्याग वर्णन ॥	१५२	१५२
९४	शुक्रस्त्री वध अरु शुक्र करके कुबेर धनहरण अरु शुक्र शिवोदर प्रवेश अरु शिव लिंगते शुक्रोत्पत्ति वर्णन ॥	१५२	१५४
९५-१००	परासर अरु हंस गीता अरु सांख्य धर्म उत्तमता वर्णन ॥	१५४	१६२
१००-१०५	वशिष्ठ कराल जनक संवाद में योग वृत्तान्त वर्णन ॥	१६२	१६८
१०६-१०८	याज्ञ वल्क्य जनक संवाद में योग ज्ञान लोक प्राप्ति वर्णन ॥	१६८	१७४
१०९	जरा यमराज संवाद में जनक पञ्चशिख इतिहास अरु जगन्मिथ्यात्व वर्णन ॥	१७४	१८०
११०-११८	शुक्रा चार्योत्पत्ति ओ शुक व्यास और जनक संवाद अरु शुक वृत्तान्त वर्णन ॥ ...	१८१	१९२
११८	नारायण नारद इतिहासमें नरनारायण तपस्या अरु नरनारायण करके ब्रह्म प्रशंसा वर्णन ॥	१९२	१९४
११९-१२९	श्वेतद्वीप में नारद गमन अरु श्वेतद्वीप अरु श्राद्धादि कथा वृत्तान्त वर्णन ॥ ...	१९४	२०६
१२०	हयग्रीवावतार धारण करके रसातल ते वेदानयन वर्णन ॥ ...	२०६	२०७
१२८	उपासना ते ईश्वर प्राप्ति और स्वच्छ भागवत धर्म अरु त्रिविध प्रकृति वृत्तान्त वर्णन ॥	२०७	२१०
१२९	प्रजा रचनार्थ विष्णु करके ब्रह्मा को बुद्धिदान और मनु करके वेद विभाग और व्यासोत्पत्ति वर्णन ॥ ...	२१०	२११
१३०-१३५	अनेकत्व अरु एकत्व के प्रश्न में विधि हर संवाद अरु शुलभा जनक वृत्तान्त पुनः इन्द्र नारद इतिहास विप्र अतिथि कथा और ब्राह्मण अरु पञ्चचाम सर्प संवाद वर्णन ॥ ...	२११	२१७

शान्तिपर्व मोक्षधर्म सूचीपत्र समाप्तः ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

कर्ण पर्व दर्पणः ॥

दोहा ।

करि प्रणाम नाराणहि नरनरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
जेहि रघुवरप्रभुकेचरितवज्रशत कोटिअमन्द । ताहिनौमि भारत रचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥
पारथ के स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारत भाषा रूप ॥

सोरठा ॥

सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतच्छ भाषा करि चाहत तस्यो ॥
वन्दौं कपिबर बीर राम परम प्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वस्य ध्वजस्य वर ॥
निर्मल करण अनन्दि जासुनाम ह्वै कर्णगत । करण जोरि तेहि बन्दि करणपर्व भाषा करत ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ रोलाछन्द ॥

द्रोण गे जेहि दिवस बधि तेहि रजनि डेरन जाय । शोकग्रस्त महीप तो सुत सहित नृप समुदाय ॥ द्रोण सुतपै जाय बहु समुझाय डेरन आय । भूत प्राप्त भविष्य शोचत रजनि तौन बिताय ॥ सैनपति करि सूतजहि ह्वै बाहननि आरूढ़ । पांडवन सों जूटि क्रम सों युद्ध कीन्हें गूढ़ ॥ दोय दिन लरि पांडवन सों मारि बहु रण धीर । पार्थ के बर बाणसों बधि गयो कर्ण सुबीर ॥ कर्ण को बध देखि संजय तुरग चढ़ि दौराय । जायकै धृतराष्ट्र नृपसों दयो खबरि सुनाय ॥ कह्यौ वैशम्पानि सुनि यह बचन सो सुनि शोचि । कह्यौ जनमेजय महीपति चाव चितको दोचि ॥ जाय संजय भूपसों जब कह्यौ ऐसीबात । कह्यौ कैसें वज्रनृपसों कुलिश कैसो पात ॥ मरे भीषम द्रोण आदिक सुहित सुभट अनेक । पुत्र कितक पउत्र कितने मरे लरि गहि टेक ॥ कर्णसों प्रिय कर्ण नृपके मरो सुनि सो सर्व । मरो नहिं धृतराष्ट्र नृप किमि सह्यो शोक अखर्व ॥ कह्यौ वैशम्पानि सुनि सो समयके अनुरूप । कर्णको सुनि मरण तेहिक्षण भयो जैसो भूप ॥ कहे वैशम्पानि सञ्जय जाय नृपके पास । कियो नृपहि प्रणाम गद्गद गरे लेत उसास ॥ जानि व्याकुल सूतजहि धृतराष्ट्र अति दुख पाय । धीर धरि इमि कहे संजय कहौ मोहि बुझाय ॥ द्रोणको बध देखि कैसे भए मम भट बीर । कियो का मम पुत्र धीरज दयो को रणधीर ॥ भूपको सुनि बचन संजय कह्यौ सुनु क्षितिकन्त । दए साहस त्यागि तो भट द्रोणको लखि अन्त ॥ भूप तोसुत धीरधरि तव भटन धीर धराय । कर्ण कहं सैनेश करिकै लरो ओज बढ़ाय ॥ दोयदिन करि घोर संगर कर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीर धुरीन। पार्थके शर घातसों मरि गयो सुरपुर ईन ॥ करण गत भो करणभट के मरण को आह्वान। भूप त्योहीं गिरो ह्वै गत चेत मनु गतप्रान ॥ भयो हाहाकार अन्तह सदनमें तेहियाम। रुदन धुनिसों भयो पूरित भूमि गगन अछाम ॥ विदुर संजय सीचि जलसों स्वस्थ कीन्हें ताहि। चेति नृप गहि शोच चुप ह्वै रहो चहुंदिशि चाहि ॥ ऊबि ऊबि उसास लै निज सुतहि निन्दि सडौर। सूत सुतसों कह्यौ अनरथ होतभो केहि तौर ॥ कहे संजय पुत्र सह बधि गयो कर्ण अधर्ष। भीम दुश्शासनहिं बधिकै पियो रुधिर सहर्ष ॥ फेरि भूपति सूत सुतसों कहे गोइन राखु। सुभट मम जे गए जिनकों बधे सो सब भाखु ॥ सूतसुत तब कह्यौ जितने प्रगट भट बल ओक। पाण्डवन के बधे तन तजि गए ऊरधलोक ॥

रोलाछन्द ॥ वैशम्पायनउवाच ॥

दृढ़ नृपके वचन सुनिकै कह्यौ संजय धीर। सुनो भूपति मरे जे तुव ओरके बरबीर ॥ दिवस दश करि युद्ध भीषम मारि अगणित सैन। भिदित सब तन मृतक सम ह्वै करत शरपर सैन ॥ मारि सुभट असंख्य अति दिन पांच करि रण कार्य्य। द्रुपद सुत सैनेश के कर मरो द्रोणाचार्य्य ॥ नृप बिबंशित मरो बधि आनर्त अगणित बीर। बिन्द अरु अनुबिन्द बधि गे युद्ध करि गंभीर ॥ सिन्धुपति नृप भट जयद्रथ बधे अर्जुन ताहि। बध्यो लक्ष्मण कुंवर कों अभिमन्यु जय यश चाहि ॥ सुत दुशासन को बध्यो तेहि द्रौपदेय प्रचारि। एक लब्य किरातपति दिव गयो तन इत डारि ॥ पार्थ के शर घात सों भिदि मरो नृप भगदत्त। तथा तासों गयो बधि जु श्रुतायु भूप प्रमत्त ॥ बधि असंख्यन शत्रु पच्चिन नृप सुदच्चिण बीर। मरो दच्चिण पार्थको लहि गात तीच्चण तीर ॥ कुशल धनुधर कोशलाधिप बध्यो तेहि अभिमन्यु। शल्य को सुत बध्यो भट अभिमन्यु करि अति मन्यु ॥ कर्ण को सुत कर्ण दुस्तर युद्ध जो वृषसेन। करि प्रतिज्ञा बध्यो ता कहं पार्थ भट जगजेन ॥ नृप श्रुतायु बिदित भट तेहि बध्यो धनुधर पार्थ। वृहत्क्षत्र भगीरथौ बधि गए सुनहु यथार्थ ॥ रुक्मरथ जो शल्य सुत तेहि बध्यो भट सहदेव। क्षतप्रह्म सुत भगदत्त को तेहि बध्यो नकुल सुभेव ॥ पितामह तो बिदित भट बाल्हीक जो नरनाह। सहित सेना बध्यो ताकहं भीम दीरघबाह ॥ जरासंध महीप को सुत जयत्सेन उदण्ड। बध्यो तेहि अभिमन्यु योधा मारि शायक चण्ड ॥ बीर धीर कलिंगपति जे उभय योधा पर्म। बधे गे तो अर्थ तेऊ कठिन करि रण कर्म ॥ सचिव तो वृषवर्म नामक बिदित योधा जौन। बध्यो ताकहं भीम कर्मा भीम विक्रम भौन ॥ अयुत गज बल भूप पौरव बध्यो अर्जुन ताहि। सूरसेन महीप ताकहं बध्यो पारथ चाहि ॥ दोय सहस बसात योधा गए बधि रणधीर। शिवय सक कालिंग अगणित मरे मालव बीर ॥ अभीषाह असंख्य अगणित सुभट श्रेणय तौन। सुभट संसप्तक असंख्यन बध्यो पारथ जौन ॥ सुभट वृषकाचल नृपति तो सखा जो बलवान। बध्यौ ताकहं पार्थ हनि हनि बज्र सम बरबान ॥ बिदित धनुधर वीरबरणो शाल्व भूभरतार। बध्यो ताकहं भीम जो सब जगतको जेतार ॥ ओघवन्त वृहन्त दोऊ नृपति भे गतप्रान। क्षेमधूर्त्ति हि बध्यो गदया भीमसेन अमान ॥ सुभट जो जलसन्ध ताकहं बध्यो सात्यकि टेरि। बध्यो भूरिश्रवहि सो अरु सोमदत्तहि हेरि ॥ राक्षसाधिप भट अलम्बुष रहौ जो अतिचण्ड। ताहि मास्यो भट घटोत्कच चपल करि दोर्दण्ड ॥ सूतसुत राधेय हे ते गए बधि रणमाह। कैकेय सुभट समस्त मास्यो पार्थ दीरघबाह ॥ द्रविड मद्र ललित्थ क्षुद्रक तुण्डकेशी जूह। साविच अरु मावेल्ल पुत्रक मरे सुभट समूह ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभट प्राचि प्रतीचि दक्षिण अरु उदीची बाल। तुरगसादी अरु पदाती सुरथ द्विरद विशाल ॥ मरे अगणित लाख मम दिशि कहैं कवलों भूप। भयो कारज प्रगट जो तुव मंचके अनुरूप ॥ विकर्ण दुर्मुख सल दुशासन दुसह दुर्विष जौन। दुर्विजय दुर्मखन दुर्जय सुवन तो बलभौन ॥ और तो बहुपुत्र मास्यो भीमसेन प्रचारि। पियो रुधिर दुशासनैकोमारि छाती फारि ॥ कर्ण अर्जुनको भयो नृप महा दारुण युद्ध। बध्यो कर्णहि करि सुदुष्कर कर्म पारथ क्रुद्ध ॥ बध्यो वृत्रहि इन्द्र जिमि अरु रावणहिं जिमि राम। तथा नरकासुरहिं मास्यो कृष्ण महिमा धाम ॥ कार्तवीर्यहि यथा भार्गव अन्धकहि चिपुरारि। खाम कार्तिक महिष राक्षस बध्यो जिमि परचारि ॥ बध्यो कर्णहिं पार्थ तिमि करि द्वन्द्वयुद्ध महान। बन्धुपुत्र सबर्ग मास्यो बरषि अविरल बान ॥ नृपति जोतो पुत्र ताकी आश जयकी जौन। कर्णसंग तेहि मारि डास्यो पार्थ विक्रम भौन ॥ होहि सिगरे भूमि के पति पुत्र मम बलऐन। रही ऐसी बुद्धि जो तो हिए करणि अचैन ॥ भयो यह फल तासु प्रगटित और ह्वै है भूप। भीष्म व्यासादिकनको मत ध्वंसके अनुरूप ॥

दोहा ॥

संजयसों यह सुनि कह्यो नृप ले ऊबि उसाश। कहु संजय जे उत मरे करि कै युद्ध विलाश ॥
यह सुनि कै संजय कह्यौ महाराज सुनु तौन। मरे उतैके सुभट जे महापराक्रम भौन ॥
नारायण गण अगिन अरु बालभटगण भूरि। भीष्म असंख्यन भट बध्यो जाल शरनको पूरि ॥

चौपाई ॥

नृपति सत्यजित रणसों रात्यो। द्रोण चारय ताहि निपात्यो ॥ जे पाञ्चाल सुभट भयवारे। तिनकहं द्रोणाचारय मारे ॥ मत्स्यभूपके अगणित योधा। बध्यो द्रोणभट करि अवरोधा ॥ द्रुपद विराट शंख नरनायक। मास्यौ तिन्हैं द्रोण दृढ़घायक ॥ तिनके रहे बन्धुसुत जेते। तिन्हैं बध्यो द्विज जय यश हेते ॥ बध्यो उत्तरहि शल्य महीपा। शल्यहि बध्यो भीष्म कुलदीपा ॥ एक रथी अभिमन्युहि लहिकै। षटसुरथी मिलि घेरि उमहि कै ॥ बध विचारि अति विक्रम करि करि। विरथ विधनु तेहि कीन्हे लरि लरि ॥ बध्यों दुशासनके सुत ताही। महापराक्रम नद अवगाही ॥ नृप अम्बष्टको सुत बलभारो। लक्ष्मण कुंअर ताहि लरि मारो ॥ वर्षत शायक करषि शरासन। बध्यो वृहन्तहि वीर दुशासन ॥ नृप मणि मानहि द्रोण निपात्यो। दण्डधरहि बधि आनदरात्यो ॥ अंशुमान नृप योधा आरय। तेहि मास्यो लरि द्रोणाचारय ॥ चित्रसेन सह सुत भट चीन्हे। तासु समुद्रसेन बध कीन्हें ॥ नील भूप कहं अश्वत्थामा। मास्यो महाबीर जयकामा ॥ व्याघ्रदत्त अरु भट चित्रायुध। नृपति चित्रयोधी वर आयुध ॥ तिन्हैं विकर्ण बध्यो अति रणकै। बधि अगणित भट अटपट मनकै ॥ तो दिशि कैकय नृप सहसाजा। सो कैकेयहि मास्यो राजा ॥ जनमेजय पार्वती नरेशा। तेहि मास्यो दुर्मुख भट वेशा ॥ रोचमान युगबन्धु रहे हैं। महा पराक्रम तहां गहे हैं ॥ करि अति युद्ध द्रोण तेहि मास्यौ। तासु सैन में प्रलय पसास्यौ ॥ पुरजित कुंतिभोज दोउभाई। मास्यो तिन्हैं द्रोण दृढ़ धाई ॥ अभिभू काशिराज बल भास्यो। तेहि बसुदानभूप सुत मास्यो ॥ नृपति मित्रवर्मा रणचारी क्षत्रधर्मभूपति धनुधारी ॥ द्रुपपाञ्चालन बधि बधि बरधो। द्रोण विप्र तो सुतजय सरधो ॥ सुवन शिखण्डीको अति बरधित। क्षत्र देव हो जययश सरधित ॥ बध्यो ताहि तो पौच अमाना। लक्ष्मण कुंवर विदित बलवाना ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौन सुचित्र भूप बलरासू। सुभट चित्रबर्मा सुत तासू॥ मास्यो तिन्हैं द्रोण अति तुरमैं। हनि हनि चोखे शायक उरमैं॥ मस्यो बार्भत्रेमी नरनाह। अरु अमितौजा दीरघबाहु॥ सेनाबिन्द नृपतिको बेटो। शस्त्रवान हो बिरद लपेटो॥ तेहि मास्यो बाल्हीक प्रचारी। मारि असंख्यन भट रणचारी॥

दोहा॥

धृष्टकेतु शिशु पालसुत अरु सुकेतु बरबीर। घोरयुद्ध करि करि मरे वधि अगणित रणधीर॥ सेनाबिंदु महीप अरु शास्त्रवान नरनाह। मरे द्रोणके शरनसों करि सुयुद्ध रणमाह॥ भूप सत्यधृत बीर अरु अरु मदिराश्व नरेश। सूर्य्यदत्त कहं बधत भो द्रोण भयानक भेश॥ श्येनमान बसुदान नृप करि करि युद्ध अघात। मरे द्रोणके शरनको पाय बज्रको पात॥ इन्हैं आदि अगणित सुभट मरे सुनो क्षितिपाल। कहैं कहालों सकल अब दारुण दशा कराल॥

सोरठा॥

यह सुनि धृतनरेश संजयसों इमि कहत भे। कछु संजय तेहिदेश बचे रहे जे सुभट मम॥ भीषम द्रोण अमान मरे परो मरि कर्ण सुनि। हम मानत गतप्रान जे जीवत तिन सकल कहं॥

सञ्जयउवाच॥ जयकरीछन्द॥

सुनो भूप जे भट तो ओर। हैं जीवत करता रणघोर॥ अश्वत्थामा बीर उदार। बिधिवत धनुर्वेद ज्ञातार॥ अरु आनर्त्त हृषिकसुत जौन। नृप कृतबर्मा बिक्रम भौन॥ अरु आर्ताइन सुहित नरेश। शल्य मद्रपति बली बिशेश॥ सैंधव अरु कांबोज नदीज। भट धार्वती शत्रुदुख बीज॥ सुभट बनायुज लीन्हे संग। लसै शकुनि नृप भरो उमंग॥ कृपाचार्य्य अति रणकरतार। अरु कैकय नृपपुत्र उदार॥ चित्रायुध श्रुतबर्मा भूप। सल दुस्सल सह सैन अरूप॥ कैतव्यनको पति सह सैन। बीर श्रुतायू अरिदल जैन॥ चित्रसेन चित्रांगद जौंन। भूप धृतायू बिक्रम भौंन॥ लीन्हें सैन संग हतशेष। भरे अमर्ष गहे जयरेष॥ तो सुत नृपके संग सडौरे। लसत गहे अति गुरता गौरे॥ तिनमधि नृप तो पुत्र अमान। लसत मेघमधि सूर समान॥ कृशदल मध्य लसत क्षितिपाल। यथा अधूमज्वाल को जाल॥ हय गज रथ पैदर सह भूप। सुन्दर लसत पुरन्दर रूप॥ यह सुनि कै धृतराष्ट्र महीप। महामोह बशभो कुलदीप॥ कहत भयो इमि सहित बिवेक। संजय मौन रहो क्षण एक॥ सुनि अति अप्रिय दशा कठोर। भो अतिशै व्याकुल मन मोर॥ इमि कहि समुझि हारिको हेत। भयो भ्रान्ति बश ह्वै हतचेत॥

सूतउवाच॥ दोहा॥

यह सुनि जनमेजय नृपति कहे कहौ सुनि तौन। तदनन्तर धृतराष्ट्र नृप कियो बारताजौन॥ सुनि बैशम्पायन कहे सुनो भूमिभरतार। तदनु चेति धृतराष्ट्र कहि हाय हाय बहुबार॥ कर्ण बीरको मरणसो मेरु चलने समजानि। जानि सूखिबो सिन्धुको रबिनिपतन समसानि॥ अर्जुनको अद्भुत करम गुणि लै ऊबिउसाश। शोकागिनिसोंदहतभो जानि सुतनको नाश॥

रोला छन्द॥

करणको गुण कथन करि करि कियो भूरि प्रलाप। सुनो जनमेजय नृपति जो सुनोचाहत आप॥ धृतराष्ट्र उवाच॥ बली वृषभ समान जाको ग्रीव उन्नत पुष्ट। मत्त मैगल सरिस उन्नत काय सोभन सुष्ट॥ सिंह सम बलवान जोगज नृपन मध्य बिभात। युद्ध मध्य महेंद्र सो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जगत मध्य विख्यात ॥ जासु ज्यातल शब्द नहिं सहि सकत है नर नाग। वज्र बरषा सेग जाको बाण वेग सराग ॥ जासु भुजबलके भरोसे पुत्र मम क्षितिपाल। युद्ध दानव पाण्डवन सों जानि विजय अकाल ॥ श्रेष्ठ सब अति रथिनसों सो कर्ण वीर विशाल ॥ बधोगो किमि पार्थ सों अरि वृन्द दलको काल ॥ कृष्ण पारथ ऋषि गण कह गुणत हो नहिं जौन। सोइ धनु गांडीव धनुषहि गुनत हो लघु जौन ॥ एक रथ हम बधब पार्थहि मारि सिगरी सैन। कहत हो मल पुत्रसों जो सकल धरनी जैन ॥ अंग वंग कलिंग कोशल काशि सक गांधार। मद्र मत्स्यादिकन जीत्यो जौन वीर उदार ॥ वृद्धिहित मम पुत्र के जो जित्यो नृपति अनेक। शत्रु वश ह्वै मस्यो किमि सो कर्ण जय यश टेक ॥ सुरनमैं वर इन्द्र तैसे भटन मैं वर कर्ण। अहिन को खगराज तैसे अरिन को मदहर्ण ॥ युद्ध करि मगधेश जासों भयो अति संतुष्ट। गहत भो मित्रत्वभाव प्रभाव गुणि अति पुष्ट ॥ परम हित मम पुत्रको भट कर्ण ताको घात। सुन्यो तौलों शोक मैं मम जीव बूड़त जात ॥ वज्र ते अति कठिन संजय हृदय मेरो मानु। फटत नहिं लहि शोक ऐसो दुःख दुसह अमानु ॥ संजय-उवाच ॥ अति प्रशंसित सुकुलमैं उत्पन्न तुम मतिमान। यशी जाहिर जगतमैं युत श्रीजयाति समान ॥ ऋषिनके शुभ वचन बहुदिन सुने सहित विधान। विषादनदमैं बोरि मन मति गहो दुख अतिमान ॥

धृतराष्ट्रउवाच दोहा ॥

संजय भावी प्रबल है पुरुष पराक्रम व्यर्थ। देखि कर्ण को मरण ध्रुव जानि परो यह अर्थ ॥ वर्षिबाण सब पाण्डवन मोहित करि रणधीर। मारि असंख्यन भटन किमि बधो गयो बरबीर ॥ शोक सिन्धुको पार अबदेखि परत नहिं मोहि। अति हित सूतजको मरण विजयव्यर्थके।जोहि ॥ मम आयुर्बल दीर्घ अति कियो विधाता पूर्व। जाते ममहिय सहत दुख कर्ण मरणको गर्व ॥ भीष्म द्रोण अरु कर्णको बध सुनि जान्यो एहु। औशि मरैंगे सुभट मम सब जीवत जेतेहु ॥

जयकरी छन्द ॥

सब गुरुजन को वचन अनूप। नहिं मान्यो शठ मो सुतभूप ॥ गहै न औषध पथ्य महान। यथा कुरोगी जो म्रिय मान ॥ शर शय्या गत भीषम तात। जब मांगे पाणी अवदात ॥ तब शर हनि महिते जलधार। काढ़ि दयो जल पार्थ उदार ॥ सो लखिकै भीषम मतिमान। मम सुतसों बोले सविधान ॥ अबहूं तात कुहठ तजि देहु। पांडवसों सम्मत करि लेहु ॥ रहै कुशल हित बन्धु विभात। होय युद्ध मम अन्त विख्यात ॥ दुर्योधन नहिं मान्यो तौन। संजय होय न अनरथ कौन ॥ जिमि पक्षिहि गहि पक्ष उचारि। बालक क्रीड़त महिपर डारि ॥ तेहि प्रकार ह्वै पक्ष विहीन। औशि होव हम शत्रु अधीन ॥ नृप धृतराष्ट्र भरे परिताप। यहि प्रकार करि भूरि प्रलाप ॥ संजय सों इमि कहे सशोक। संजय नहिं भावी को रोक ॥ जेहि क्षण करिकै युद्ध महान। मरो कर्ण रणधीर अमान ॥ केके तहां लरे रहि संग। केके भगे त्यागि रण रंग ॥ यथा शिखण्डिहि आगे राखि। भीष्महि बधे पार्थ नय नाखि ॥ द्रोणहि यथा निरायुध देखि। धृष्टद्युम्न मास्यो अवरेखि ॥ तैसे कर्णहि मास्यो पार्थ। कै किमि सो विधि कहो यथार्थ ॥ बिरथ बिधनु करि भीमहि जौन। कीन्हो हास कर्ण बल भौन ॥ तेहि प्रकार सह देवहि जीति। नहिं मास्यो गुणि बचन सुनीति ॥ बध्यो घटोत्कच असुरहि जौन। केहि विधि बधो गयो भट तौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

धनु करषत बर्षत बिशिख कर्णहि मारत कौन । भयो उपद्रव कछू तब मारि गयो बलभौन ॥
भिन्न भयो धनु तासु कै मही ग्रस्यो रथचक्र । अस्त्र तासु भे नष्ट कै भए कालचख वक्र ॥
तासु नाशको नहिं रहो कारण और समर्म । पार्थहि वधिबेको रहो जो कीन्हें पण पर्म ॥
सभामध्य सब पाण्डवन शण्ड कह्यो जो बीर । मरो कौन बिधि कर्ण सो जगजेता रणधीर ॥
दुश्शासन अरु कर्णको अति अनरथ बध देखि । शोकाकुल मम पुत्र नृप कियें कहा अवरेखि ॥
बधो देखि निज भ्रातरन सैन पराजित देखि । शोका कुल मम पुत्र नृप कियो कहा अवरेखि ॥
द्यूतबिरचि निरमित कियो एहि अनरथकरि फन्द । देखि कर्ण बध शकुनिसों कहा कियो मतिमन्द ॥

रोलाछन्द ॥

कर्णको बल बुद्धि बिक्रम बरणि बारंबार । कहे अब कछु भयो कैसे कर्ण को संहार ॥ शोक ग्रस्त महीप दूमि कहि किये भूरि प्रलाप । कठिन मेरो हियो संजय सहत ऐसो ताप ॥ कर्णकोसुनि मर्णसुतकोहारि निश्चल जानि । हाय नहिं मम हियो फाटत सहत दारुणग्लानि ॥ पुत्र दुश्शासन परम प्रिय मरो किमि करि युद्ध । लरे किमि तेहिसमय तहं कृप आदि बीर सक्रुद्ध ॥ रह्यो पार्थहि बधनको पण किये जो गहि गर्ब । गयो बधि केहि भांति सो वह कर्ण बीर अखर्ब ॥

सोरठा ॥

यह सुनि संजय नृपतिसों बोल्यो बचन प्रशस्त । सुनौ शोक तजि धीर धरि सो वृत्तान्त समस्त ॥
तेहिदिनकेनिशिमधि विकलदुर्योधन क्षितिरौन । कहे कृपादिक भटनसों सुनो बुद्धिबल भौन ॥
अति दुखदा दारुण दुसह मंद दशा यह पाय । अब जैसो करतव्य सो कहौ मंच सुखदाय ॥
यहसुनि बोलो द्रोणसुत भूपति शोच बिहाय । कर्णहि करि सेनाधिपति करौ युद्ध गहि चाय ॥

सोरठा ॥

द्विजवरके ए बैन सुनि दुर्योधन चैन लहि । जानि बुद्धिबल ऐन किये प्रशंसा कर्ण की ॥

जयकरीछन्द ॥

हे हे कर्ण मित्र रणधीर । तूं ममहित रत अनुपम बीर ॥ हम लहि तो सम्मत एहि देश । किये भीष्म द्रोणहि सैनेश ॥ तिन कहं रक्षणीय हो पार्थ । ताते बधे न गुणि मम स्वार्थ ॥ लरि दशपांच दिवस मनलाय । परे मरे ह्वै बेधित काय ॥ तुव कर जय लहिबेकी आस । नितिसों बसति हमारे पास ॥ तातें ह्वै सेनापति तात । सादर देहु बिजय अवदात ॥ कीन्हें पूर्व प्रतिज्ञा जौन । सानद सोच करौ अब तौन ॥ तुम्हें देखि सैनेश बिशाल । तिमि ह्वै है पाण्डव पाञ्चाल ॥ जिमि चक्रायुध बिष्णुहि देखि । दानव दितिज होत भय भेखि ॥ सुनि भूपतिके बचन नवीन । बोलो सूतज धीरधुरीन ॥ नृप हम ह्वै सेनापति अब । लेब बिजय रचि संगरशब ॥ यह सुनि भूपति मोद बसाय । किये सबिधि अभिषेक सचाय ॥ चारु कनकके कुम्भ भराय । तेहि बिधिवत मंत्रित करवाय ॥ तेहि सुपुण्य जलमधि सनिबन्ध । करि मिश्रित शुभ औषधि गन्ध ॥ द्विरददन्तको पात्र अनूप । खड्ग शृंगके शुचि अतिरूप ॥ तेहि जल पूरण करि करि ताहि । दुर्योधन आदिक नृप चाहि ॥ बिधिवत किये तासु अभिषेक । द्विजगण पढ़त मंत्र सबिवेक ॥ औडम्बर आसन आसीन । करि कीन्हें अभिषेक अहीन ॥ पढ़ि स्वस्त्ययन बिप्र समुदाय । आशिष दीन्हें ओज बढ़ाय ॥ सहित गोबिंद पारथहि जीति । जीतौ पाञ्चालन जय प्रीति ॥ सूर उदै जिमि होत उलूक । तिमि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो शत्रु होहि हैं मूक ॥ सुनि स्वस्त्ययन कर्ण मतिमान । मणि हय गो वसु दीन्हो दान ॥ कौरव दलमधिलसो उदार । सुरसेनामधि यथा कुमार ॥ कर्णहि करि सेनापति भूप । तो सुत भयो कृतारथ रूप ॥ मरे द्रोण भीषम सो देखि । दुर्योधन कर्णहि इमि भेखि ॥ विजय चहत हति शत्रु अमान । भूप होति आशा बलवान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरा-
त्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेकर्णपर्वणि
कर्णोभिषेकोनामप्रथमोऽध्याय: ॥

धृतराष्ट्रउवाच जयकरीछन्द ॥

लहि अभिषेक पूरि अतिचैन । कियो कहा तब कर्ण ससैन ॥ सूत कह्यो तब कर्ण सुभेश । सैन सजनकों दयो निदेश ॥ नृप तेहि शेष रजनि मधि भूरि । साजऊ सजऊ शब्द गो पूरि ॥ निरखि भोर करि कृत्य प्रशस्त । चढ़े वाहनन सुभट समस्त ॥

दोहा

कर्ण तहां विरचत भयो मकरव्यूह अति चण्ड । इविध राखि सबअंगमैं धनुधर सुभट उदण्ड ॥ कर्ण भयो मुख चख भए शकुनि उलूक ससैन । शीश द्रोणसुत ग्रीव भे सब तोसुत बलऐन ॥ दुर्योधन सेना सहित रहो तासुमधि देश । कृतवर्मा भो वामपद सदल भयानक भेश ॥ द्वितिय वामपद शल्य भो सह त्रिगर्त भटगोल । दक्षिणपद भो सैन सह गौतम वीर अडोल ॥ रथ सहस्र चयशत द्विरद सह सुषेन नरनाह । भो द्वितीय दक्षिणचरण वरणो दीरघबाह ॥ चित्रसेन अरु चित्रनृप भ्राता सदल सगर्व । पुच्छ देश पै थिरत भे धारे आयुध सर्व ॥ यह लखि धर्म महीपको शासन लहि भट पार्थ । अर्धचन्द्र वरव्यूह भो रचत जानि निज स्वार्थ ॥ वाम पार्श्वमैं रहत भो भीमसेन रणधीर । दक्षिण दिशिमैं रहत भो धृष्टद्युम्न वरवीर ॥ मध्यदेशमैं रहत भे पारथ अरु नृपधर्म । पृष्ठरक्ष तिनके रहे सहदेव नकुल अभर्म ॥ उतमौजा नरनाह अरु युधामन्यु पाञ्चाल । चक्ररक्ष हे संग लए चौविधि दल विकराल ॥ एहिविधि शेष महीप सब लै संग सुभट समूह । यथाभाग रहि रहि रहे रचत सेनाव्यूह ॥

सोरठा ॥

दुन्दुभि आदिक भूरि लगे बजन बाजन घने । सुभट वीर रसपूरिबढ़ि बढ़ि भिरि लागे लरन ॥ भिरि भिरि भट तेहिकाल घोरयुद्ध लागे करन । मढ़ो शरनको जाल दुहुं ओरअविरल भयद ॥

चौपाई ॥

रथी पदाती भट हयसादी । वीर गजस्थ अशङ्क प्रमादी ॥ तोमर शक्ति भल्ल भयधारे । भिंदि पाल पट्टिश अनियारे ॥ बाण परश्वध वर्षण लागे । परदल जीतनके पणपागे ॥ लगे लरन बढ़िबढ़ि डटि डटिकै । मारो मारो मारु रटि रटिकै ॥ लागे गिरन शीश भुज कटि कटि । भरे रुधिर अतिशोभा अटि अटि ॥ गजतें गिरन लगे भट तैसे । शिला गिरैं गिरि शिखरतें जैसे ॥ एहिविधि भयो युद्ध धुनि धुनिकै । सात्यकि भीम शिखण्डी गुणिकै ॥ द्राविड कांची मागध देशी । अरु प्रभद्र भट उग्र निदेशी ॥ रथी गजी पैदर हयसादी । आयुध वर्षत विदित प्रमादी ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भट जूहा । दलमधि धसन चहे करि हूहा ॥ तिनमैं भीम गजस्थ सोहायो । वर्षत बाण वेगसों आयो ॥ तेहि लखि चे मधूर्ति रणचारी । गज बढ़ाइ भो भिरत प्रचारी ॥ भिरि दोऊभट गौरव लीन्हे । अतिशै तुमुलयुद्ध तहं कीन्हे ॥ अगणित बाण परस्परमारे । अगणित दोऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायक गजन प्रहारे ॥ दोऊ दुजन बाण हनि डारे । दोउ दोउनके धनु काटिडारे ॥ दोऊ कोपि धनुष गहि करषे । बिबिधि भांति के शायक बरषे ॥ ह्वै बेधित अति भय सों पागो। क्षेम धूर्ति नृपको गज भागो ॥ फेरि गजहि सो नृप रण करकस । वर्षत भयो बाण बहु तरकस ॥

दोहा ॥

बज्रसमान सुबाण बर कुञ्जन मध्य प्रहारि । भीमसेन के गजहि बधि दीन्हो महिपै डारि ॥
कूदिद्विरद ते भीम तब गहि गुरगदा प्रचारि । क्षेमधूर्ति नृपकेगजहि डारि देतभो मारि ॥
क्षेमधूर्ति तब गजहि तजि चलो खड्ग गहिचण्ड । ताहिबध्योहनि गुरगदापाण्डव बीरउदण्ड ॥

सोरठा ॥

ताकहंगिरत निरेखि भगेतासुभटघोर तजि। पाण्डव जय अवरेखि प्रबल भए अति चावसों ॥

चौपाई ॥

सो दल बिचलत लखि तेहिक्षणमैं। कर्ण सैनपति रिसि करि मनमैं ॥ करषि शरासन गौरव लीन्हो । परदल मधि अति शर झरि कीन्हो ॥ सो लखि कोपि नकुल रणचारो । सूतसुवनसों भिरो प्रचारी ॥ भीमसेन रथ चढ़ि बढ़ि उतसों । लागो लरन द्रोण के सुतसों ॥ नृपति बिन्द अनुबिन्द सुधीरा । तिनसों भिरो सात्यकी बीरा ॥ श्रुतकर्मा सों अभिरो हरषत । चित्रसेन भपति शर बरषत ॥ दुर्योधन अति रिसिसों मढ़िकै । भिरो धर्म भूपति सों बढ़िकै ॥ बढ़ि बढ़ि संसप्तक गण रूरे । भिरे पार्थसों अमरष पूरे ॥ कृपाचार्य्य गौतम धनुधारी । धृष्टद्युम्न सों भिरो बिचारी ॥ भिरो शिखण्डीसों कृतबर्मा । श्रुतिकीरतिसों शल्य अभर्मा ॥ सहदेवसों भिरि बीर दुशासन । बरषो शायक करषि शरासन ॥ एहि प्रकार इत उतके योधा । लरत भए करि करि अवरोधा ॥ भिरि सात्यकि कैकय दोउ भाई । नृप कीन्हे अति तुमुल लराई ॥ अति बर्षा बाणनकी कीन्हें । दुऊं दिशि अन्धकार मढ़ि दीन्हें ॥ अगणित बाण परस्पर मारे । अगणित बाण शरन सों वारे ॥ कैयक धनुष परस्पर काटे । फिरि धनु गहि गहि धनुबिधि ठाटे ॥

दोहा ॥

एहि प्रकार अति युद्ध करि सात्यकि धीरधुरीन। हनि क्षुरप्र अनुबिन्द को काटि दयो सिरपीन॥
सहितचारुकुण्डलसुकुटगिरतबन्धु शिरदेखि । हन्यो सात्यकिहिसाठिशरबिन्दभूपअति तेखि ॥

सोरठा ॥

अवनभागुदूमिभाषिहन्योसात्यकिहिबीसशर । सात्यकिजयअभिलाषिबिन्दहिमास्योतीसशर ॥

चौपाई ॥

दोऊ बिबिध भांतिसों चरि चरि । बिरथ बिधनुष परस्पर करि करि ॥ सादर खड्ग चर्म गहि गहिकै । अब मति भागु आउ कहि कहि कै ॥ लरे शक्र दृचासुर जैसें । फिरि फिरि लरत भए तहं तैसें ॥ तहं सात्यकि अतिबिक्रम कीन्हो । बधि बिन्दहि अनुपम जय लीन्हो ॥ बिन्दभूपकहं बधि चरि पथपैं । चढ़िगो युधामन्युके रथपैं ॥ फेरि और रथबरपहं चढ़िकै । कैकय दल मर्दत भो बढ़ि कै ॥ चित्रसेन श्रुतिकर्मा भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हें तहं घिरिकै ॥ बलि बासव सम योधा दोऊ । कीन्हें युद्धलखे सब कोऊ ॥ श्रुतिकर्मा बर शायक तुर मैं । मास्यो चित्रसेन के उरमैं ॥ लगे बाण बेधित ह्वै नरपति। मूर्च्छित भयो भूलि सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुगति ॥ तेहिक्षण मैं श्रुतिकरमा राजा । बरषो अबिरल बिशिख समाजा ॥ चित्रसेन फिरि चेतित ह्वैकै । मारि भल्ल काट्यो धनु ज्वैकै ॥ श्रुतिकरमा गहि और शरासन । बर्षत भयो बाण अरिनाशन ॥ दोऊ बधिबेको प्रण लीन्हे । दुहुं ओर शर पंजर कीन्हे ॥ मत्त मतंग सरिस रण बनमैं । घोर युद्ध कीन्हें तेहिक्षणमैं ॥ बाण उपलकर धनुसों गहि गहि । किए प्रहार भागु मति कहि कहि ॥

दोहा ॥

श्रुतिकरमा अतिबेगसों युग क्षुरप्रशर मारि । काटि धनुष तेहि नृपतिको काट्यो शीश प्रचारि ॥
चित्रसेनको शीश सह मुकुट गिरत तेहिकाल । जानि परे मनु सूर शशि लपटि गिरे महिपाल ॥

सोरठा ॥

श्रुतिकरमा रणधीर चित्रसेन भूपतिहि बधि । बरषत बाण गंभीर चमूतासु मर्दत भयो ॥
सो दल मर्दित देखि चलो इतैसों चित्रभट । तासों भिरो निरेखि बढ़ि उतसों प्रतिविंध्य भट ॥

बसुकला छन्द ॥

ते सुभट युद्ध । करि घोर युद्ध ॥ भरि रुधिर गात । भे अति बिभात ॥ बढ़ि डाटि डाटि । धनु काटि काटि ॥ धनु धारि धारि । शरमारि मारि ॥ जय ऊटि ऊटि । हटि टूटि टूटि ॥ थिरु टेरि टेरि । रथ फेरि फेरि ॥ तन चाहि चाहि । शर बाहि बाहि ॥ कीन्हे अमान । संगर महान ॥

दोहा ॥

बज्र घंटायुत शक्ति बर चित्रनृपति लै पानि । तजत भयो तो पौचपहं दपटि व्याम भरि तानि ॥

तोमर छन्द ॥

तेहि निरखि उलकारूप । प्रतिविंध्य योधा भूप ॥ बर बाण तीक्षण बाहि । मग काटि दीन्हे ताहि ॥ तब चित्रनृप बल मेलि । बर गदा मास्यो झेलि ॥ सो बध्यो अग्रन लागि । प्रतिबिंध्य तब रिसि पागि ॥ शक्ति वाहत बेग । तेहि पकरि चित्रनरेश ॥ प्रति विन्द भटहि प्रचारि । भो तजत नाश बिचारि ॥ प्रतिविंध्य सहि सो शक्ति । भो तजत शायकपंक्ति ॥

दोहा ॥

अति विक्रम तेहि ठौर करि मारि बज्र समवान । चित्रनरपतिहि बधतभो भटप्रतिविंध्य अमान ॥
एहि प्रकार पाण्डव सुभट बधिबधि भट समुदाय । किए पराजित सैन सम भल्ल शक्तिशरछाय ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षण धीर धुरीन द्रोण तनय भिरि भीमसों । कियो युद्ध अति पीन जाहि प्रशंसे सुमनगण ॥

चौपाई ॥

करि करलाघव भीम अमाना । द्विजहि हन्यो अति तीक्षण बाना ॥ द्विजभट हनत भयो तेहि क्षणमैं । नव्वे बाण भीमके तनमैं ॥ सहसन बाण विप्रके ऊपर । डास्यो भीम सारथी दूपर ॥ बाणन बाण अनगिने काटत । चरत चक्रसम बढ़ि बढ़ि डाटत ॥ दोऊ अगणित शर अनियारे । तकि तकि दोउनके तनमारे ॥ दोऊ विविध भांतिके घातन । किए युद्ध समता कहि जात न ॥ चापपाणि नखसम शर सोऊ । रण बन लरे सिंह सम दोऊ ॥ करि विक्रम गुणि विधि बधिबेकी । गहे भावना जय सधिबेकी ॥ दोऊ परम पराक्रम करि करि । रथपहं चपल चक्रसम चरि चरि ॥ अतिशै घोर युद्ध तहं कीन्हें । जो लखि सुरगण विस्मय लीन्हें ॥ द्रोणतनय बर मंच घटितकै । गरजो दिव्यअस्त्र प्रगटित कै ॥ सोई यतन भीम बिस्तारो ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्यअस्त्र अस्त्रनसों वारो ॥ करिकरि दिव्य शरनकी वर्षा । लरे उभै भट गहि उतकर्षा ॥ दोऊ विदित वीर वर चीन्हे ।नभ महि बाणनसों मढ़ि दीन्हे ॥ दो उनके हय सूत सोहाए । भरे रुधिर सों अति छवि छाए ॥ दक्षिण वाम भाग फिरि फिरिकै ॥ लरे विविधि विधिसों भिरि भिरि कै ॥

दोहा ॥

एहिप्रकार अतियुद्ध करि चली विप्र अमान । दोऊ दोउन कहं हने अगणित तीक्षण बान ॥
दोउनके शरवरन सों बेधित ह्वै ह्वै धीर । मूर्च्छित ह्वै ह्वै गिरत भे दोऊ अनुपम वीर ॥

सोरठा ॥

तिन्हैं अचेत निरेखि चतुरसारथी दुऊनके । सारथिविधिअवरेखिरथलैनिजनिजदिशिगए ॥

तोमर छन्द ॥

भट पार्थ यश जय ऊटि । संसप्तकनसों जूटि ॥ वर बाण सवथर पूरि । बधि डारि योधा भूरि ॥ हय द्विरद अगणित मारि । भो देत महिमैं डारि ॥ पव शीश भुज कटि काटि । महि दयो रुण्डन पाटि ॥ धनु ध्वजा शायक पक्ति । असि गदा पट्टिश शक्ति ॥ संसप्तकनके भूरि । करि खण्ड खण्ड अदूरि ॥ भो बधत योधाजूह । शरसेत साजि समूह ॥ शर रुधिर को उमगाय । भो लसत ओज बढ़ाय ॥ अति प्रलय काल समान । सो समय करि बलवान ॥ प्रभु रुद्रसम तेहि काल । भो लसत वीर विशाल ॥ यह देखि सुमन विनोदि । भे सुमन वर्षत मोदि ॥ इमि कहत भे बहुवार । यह हरत है महिभार ॥

दोहा ॥

नरनारायण एकरथ चढ़े युद्ध पथ दीछि । अकथ तासु करतब समय कौन लहै जय ईछि ॥

तोमर छन्द ॥

सो द्रोणसुवन निहारि । अतिकोपि धनु टङ्कारि ॥ गहि गरब गरजि प्रचारि । भो कहत रिसि विस्तारि ॥ हे पार्थ उनसों छूटि । लरु आइमोसों जूटि ॥ दरशाउ धनुविधि तौंन । फिरि शिखे इत उत जौन ॥ इमि भाषि तुरता धारि । भो हनत शायक चारि ॥ भो हनत जय अवरेखि । शर साठि कृष्णहि देखि ॥ तव पार्थ हनि शर तीन । धनु तासु काट्यो पीन ॥ धनु और तुरित चढ़ाय । द्विज दयो शायक छाय । शत तीन तीक्षण बान । हनि केशवहि सविधान ॥ फिरि पार्थभटके गात । करि सहस शायक पात ॥ फिरि कइक अर्बुद पत्र । सो वीरवर सो तत्र ॥ कर शीश उर प्रति अङ्ग ॥ धनुध्वजा रथसों संग ॥ कढ़ि शरन के समुदाय । तहं दए जाल बनाय ॥ यह ब्रह्ममंत्र प्रसाद । तकि लहे नृप अहलाद ॥ शर जाल मधि परि पार्थ । नहिं सकी करि निज स्वार्थ ॥

दोहा ॥

बाण जालमधि पार्थहि करि गरजो मतिमान । सो सुनि केशवसों कह्यो पारथ वीर अमान ॥
दुष्टविप्र मम बध समुझ हर्षि करत आह्वान । लखो ताहि मैं करत हौं क्षणमैं मृतक समान ॥

सोरठा ॥

इमि कहि पार्थ अमान कर्षि शरासन वर्षि शर । द्विजके सिगरे बाण काटि गिरायो भूमिपैं ॥

चौपाई ॥

द्विजके बाण निहार समाना । दुरे सूर सम पार्थ अमाना ॥ द्विज द्विज राजहि हतरवि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6216

करिकै । बाणजाल झरि आतप भरिकै ॥ संसप्तकवन प्रतपित कीन्हो । बहुभट शर जीवन बिनु कीन्हो ॥ बहुरि बिप्र करि भट बिधि पालन । लायो तेहिशर घनके जालन ॥ फेरि बिप्रभट सों भिरि पारथ । बर्षो बिशिख जाल गुणि स्वारथ ॥ ते युग धनुधर बीर बडेरे । शिष्य पुत्र आचारय केरे ॥ घोरयुद्ध कीन्हें तेहि पलमैं । प्रलय पूर पारे दुहुदलमैं ॥ काटि असंख्यन शर महि पाटे । महि दिवलों शर पंजर ठाटे ॥ अर्जुन मारि बाण अति चोखा । काटि द्रोण सुतको धनु नोखा ॥ अतिशै करलाघव बिधिधरिकै । द्विजहि शरनमधि गोपित करिकै ॥ फिरि संसप्तक गणसों भिरिकै । बरयो शर जिमि घन जल थिरिकै ॥ अगणित हय गज भट बधि डारो । अगणित रथ धनुध्वजा बिदारो ॥ अगणित अंगद मुकुट धनीके । अगणित कियो मारि शरनीके ॥ तौलगि द्रोण तनय धनु गहिकै । काटि पार्थके शर फिरु कहिकै ॥ कृष्ण पार्थ तुरगणके तनमैं । हन्यो असंख्यन शर तेहि क्षणमैं ॥ पार्थ ताहि अगणित शर हनिकै । बर्षो बिशिख रुद्र सम बनिकै ॥

दोहा ॥

फिरत चक्र सम सुरथपहं घूमि सुचक्रसमान । धनुष मण्डलाकार करि बरषि असंख्यन बान ॥
मढ़ि घनसमसबदिशनमैं अन्धकार अति पूरि । बधत भयो मम सयनके हय गज योधाभूरि ॥
गहत तजत शर ताहि लखि सको न कोऊ तच । गुणैपार्थ इत तजत शर गिरै भूरिभट यच ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षण बिप्र सुबीर पांच बाण कृष्णहि हन्यो । पांच अनूपम तीर हन्यो सव्यशाची भटहि ॥
तहं केशव मतिमान कहे पार्थसों बिप्र यह । अयतन व्याधि समान पीडत तेहि जीतौ सबिधि ॥

चौपाई ॥

यह सुनि पार्थ द्रोणसुत पाहीं । शर बर्षो कहि बाचत नाहीं ॥ काटि काटि सब द्विजके शायक । धनुधर पार्थ बिदित भटनायक ॥ कर भुज उर शिर पगन अदोखे । हन्यो अनगिणे शायक चोखे ॥ रसी काटि घोरनके तनमैं । मारो बाण युगुति गुणि मनमैं ॥ बेधित ह्वै हय भयसों भागे । तजि सन्मुख पथ रथ लै भागे ॥ तुरगन मोरि बिप्रभट दीहा । तजि अर्जुन सों रणकी ईहा ॥ सादर गयो कर्णके दलमैं । पार्थ बध्यो बहुभट तेहिपलमैं ॥ तेहिक्षण पाण्डव दलमधि घोरा । हाहा धुनि भो उत्तर ओरा ॥ सुनि केशव अर्जुनसों भाष्यो । उत मगधेश बिजय अभिलाष्यो ॥ दण्ड नाम भूपति रणधीरा । है भगदत्त सदृश बर बीरा ॥ गजारूढ़ सो नृप जगजेना । मर्दत बधत चतुर बिधि सेना ॥ उत चलि ताहि मारि लुद भरिकै । संसप्तकन बधहु फिरि लरिकै ॥ इमि कहि कृष्ण हांकि सब घोरे । गे मगधेश भूपके धोरे ॥ पार्थहि लखि मगधेश अमाना । भयो प्रहारत द्वादश बाना ॥ कृष्णहि षोडश शायक हनिकै । हयन हन्यो चय चय शर गणिकै ॥ बाण बारि बून्दनकी बर्षा । कियो जलदसम गहि उतकर्षा ॥

दोहा ॥

काटि असंख्यन तासु शर पारथ धीरधुरीन । छेदि धनुष गजवान कहं बध्यो मारि शरपीन ॥
तब नरपति तोमर तजत अगरो गजहि बढ़ाय । हनि क्षुरप्रशर तासु शिर काट्यो पार्थ सचाय ॥

तोमरछन्द ॥

फिरि मारि अगणित बाण । तेहि गजहि करि गतप्राण ॥ जिमि मारि हचहि शक्र ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिमि लसो योधा बक्र ॥ तब बन्धु तासु अमान । धनु करपि बर्षत बान ॥ अतिप्रबल योधा गूढ़ । बढ़ि भिरो द्विरदारूढ़ ॥ बर तीनि तोमर तीर । भो हनत कृष्णहि बीर ॥ शर पांच पार्थहि मारि । भो हनत धनु टङ्कारि ॥ तब शर चुरप्र प्रहारि । भटपार्थ ताकहं मारि ॥ बधि गजहि महिपैं डारि । भो लसत जिमि त्रिपुरारि ॥ मम भटनि बधि बिचलाय । निज भटन धीर धराय ॥ फिरि बधत भट समुदाय । संसप्तकन पहं जाय ॥ भो प्रलय पारत बीर । तो बन्धु सुत रणधीर ॥ भट द्विरद बाजि समूह । भो बधत तजि शर जूह ॥ महि रुण्ड मुण्डन पाटि । भो नदत धनु बिधि ठाटि ॥ जे बिदित बीर सगर्व । संसप्तकनके सर्व ॥ छगजथ दाबाबीच । जिमि लसे लहि निज मीच ॥ जे भए सन्मुख तासु । ते होत जे गत आसु ॥ बड़बागि सुख परिनाव । जिमि होत है तेहिभाव ॥ तहं कहे कृष्ण बिचारि । यह सैन सादर मारि ॥ भट सूतसुत है यत्र । तहं चलो बर्षत पत्र ॥ भट पार्थ सुनि यह नीति । संसप्तकन कहं जीति ॥ गांडीव धनु टङ्कारि । इमि कह्यो प्रभुहि निहारि ॥

दोहा ॥

अब प्रभु सादर हांकि रथ चलो कर्ण है तत्र । सो सुनिकै केशव चले रहो सूतसुत यत्र ॥
मगमैं लखि रणभूमि प्रभु बोले बचन अनूप । लखो पार्थ रणभूमि यह महाभयानक रूप ॥

गोला छन्द ॥

हेम मणि मय रजत बिरचित धनुषके समुदाय । कहूं करमैं भटनके बहु परे भटन बिहाय ॥ कटे करमैं किते कितने कटे ह्वै बहुकाय । परे कितने सहित ज्या बहु बिगतज्या छबिछाय ॥ खर पुंख अनेक शरके भेद भूपर भरि । परे लोहित सांपसे सब गात शोणित पूरि ॥ चर्म पट्टिश गदा यष्टी परिघ शक्ति अनेक । भिन्दिपाल भुसुण्डि आदिक कहैं और कितेक ॥ भरे शोणित परे महिपै सकल आयुध भेद । धसे कितने भटनके तन देत देखत खेद ॥ पाणिमैं निज अस्त्र प्रविशे गातमैं पर अस्त्र । मरे कितने सुभट मानो तजन चाहत शस्त्र ॥ ध्वजा ईषा चक्रजूबा छत्र चामर जूह । कटे फूटे फटे टूटे परे सुरथ समूह ॥ शक्ति शर असि आयुधनसों कटे कर शिर पाय । लखौ पारथ परै गज हय नरनके समुदाय ॥ बहति शोणित धार तनते सहित मज्जा मेद । डकरि डकरि खबीस पीवत गहत नहिं निरवेद ॥ सहित आङ्गदआदि भूषण परे अगणित बाहु । गहे धनुषा लसत मानो लरन चाहत राहु ॥ पाणि दक्षिण परे अगणित सहित अंगुलिबान । पांचफणके व्याल मानहु सुपत हैं मनमान ॥ लसत शोणित मध्य देखो चारु बदन अछाम । आरती मैं मानो कानन कमलको अभिराम ॥

कबित्त ॥

केते कर पग केते धरबिना कर पग मणिनसों भूषे जगमगता तनोत है ।
कुण्डल किरीटसों ललित शीश भूपनके परे जहां तहां करे सुषमा उदोत है ।
केते अधोमुख केते उरध किये हैं रुष केते अध मरे दुख भरे भू करोत है ।
केते वातवश मारो मरो मारु मारु टेरि हेरि इत उत फेरि कालबश होत है ॥

अपरं ॥

केते शर शूल भल्ल पट्टिशके लगे मरे चिकुटी भृकुटी अवलोवक करै है ।
सुरनके शीश केते चूरन गदाके लगे पूरण शशंकसांभू समय कैसे धरै है ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कर कटे केते युगकर कटे केते उदरके फटे डाट अचु नसों डरे है।
घोरनके भुण्डमुण्ड बिनामुण्डके बितुण्ड कटे कौच कुण्ड केते रुण्ड मुण्ड परे है ॥

दोहा ॥

गृध्र श्येन अरु काकगण ऊर्ध्वचलत गहि आंति। नभ नापत हैं खग मनहु गहि जरीबकी पांति ॥
एहि प्रकार कै मेदिनी भई भयावनि पर्म। दुर्योधन मति भरमके पाप करमके कर्म ॥
परिघ गदा अगणित परे कटे कठिन कोदण्ड। अंगदादि भूषण भरे कटे पटे दोर्दण्ड ॥
दण्ड परिघ उदण्ड ददरिघ अखण्ड डडटि डटि। चण्डडच्चल सुउमण्ड बलदोर्दण्ड कटि कटि ॥
भण्डधर दोर्दण्ड कटि वर झण्ड धरि धरि। मंडच्छबि सुबितंड तजि छल छंडलरि परि ॥

अपरं ॥

धर धरषित अगणित परे मारे डरे तुरंग। अंगभंग अगणित परे सहित सवार मतंग ॥
तंग परणि अशङ्क धरणि अरंक गति वही। पङ्क भरणि भ्रूवक करणि ध्रुवकगति लही ॥
लक कट नीच्छु रकड़डटनी शशङ्क सरबर। रागाच्छरणी वैराग्य करनी बिभागावरधर ॥

अपरं ॥

युत जमाति अगणित लसै जम्बुकादिके झुंड। गृध्रश्येन काकादि द्विज बिलसत सामिष तुंड ॥ तुण्ड तरल बितुण्ड परल बिमुण्ड बहु गज। मुण्ड कटि हय झुण्ड मरि परि तुण्ड ददति सज ॥ रुण्डवर जुत मुण्डधर बहु लुंढढ दित उत। मुडड बहुत बितुण्डड बहु शिरकुण्ड वरयुत ॥

अपरं ॥

मनुज भरी भीषम महा लखि न जाति दे अच्छ। मेद मास मज्जा रुधिर कीच मई महि अच्छ ॥ नृप जेहि लच्छम्भट रहिर रच्छदनुच्छिन। पच्छसहित समच्छ ज्जहित बिल्लच्छदे दहि दिन ॥ दच्छधनु धर म्लेच्छ गण तन तच्छि तिमि गनु। मच्छवर अरु कच्छपर सतिक-च्छम्भधि मनु ॥

कलसा छपै ॥

घायल किते अबोल परे प्रतिद्वंदिहि हेरत। कितने भए अडोल बैठि प्रतिवादिहि टेरत ॥ शेष प्राण भट किते परे प्रतिद्वंदिनि गहि गहि। किते पालि भट रेखपरे प्रति योधहि जहि जहि ॥ लखु पारथ कितने प्रवल भट प्रतिद्वंदिन गहि गहि भिरत। लरि लपटि लपटि दटि दपटि रटि रपटि रपटि लटि गिरत ॥

दोहा

गृध्र श्येन वायश बिहग ऊर्द्ध चलत गहि आंति। नभ नापत हैं खग मनहु गहि जरीबकी पांति ॥
एहि प्रकारते मेदिनी भई भयावनि पर्म। दुर्योधन मतिभरमके पाय करमके मर्म ॥

तोमर छन्द ॥

इमि करत वार्त्ता वीर। गे करणदलके तीर ॥ तहं पार्थ रिसि बिस्तारि। गाण्डीव धनु टंकारि ॥ तकि भूपको दलचण्ड। बढ़ि भिरो भट उद्दण्ड ॥ लखि घनो घन जेहि भाय। चलि भिरे मारुत धाय ॥

दोहा ॥

तेहिक्षण पांडमहीप भट अर्जुन सम रणधीर। शर वर्षत मम सैनमधि धसत भयो रणधीर ॥
बस कुन्तल वाल्हीक गण भोज पुलिन्द निषाद। आदि भटन मर्दत चलो जहं हो कर्ण सुनाद ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर बर्षत मर्दत भटन पांड्यहि जात निरेखि। द्रोणतनय बढ़ि आडि इमि कहत भयो अवरेखि ॥
बज्रसदृश मम शरनकी बर्षा सहि एहिकाल। थिरि भिरि मोसो युद्ध करु जात कहां क्षितिपाल ॥

सोरठा ॥

यह सुनि भूप सगर्व कियो बिप्र पहं बाण झारि। सहि बराय सो सर्व बिप्र ताहि बज्र शर हन्यो ॥

चौपाई ॥

पांड्य सुबाण चुरप्र प्रहारी। काटौ तासु धनुष अतिभारी ॥ तुरित चढ़ाय धनुष अभिरामा। शायक बर्षो अश्वत्थामा ॥ अतिकरकस करलाघव लीन्हो। नभ बाणनसों पूरित कीन्हों ॥ तहां पांड्य अति तुरता धरि कै। मंडल सरिस शरासन करिकै ॥ शरसों कोटि असंख्यन शायक। द्विजहि प्रचारि बिदित भटनायक ॥ युग भट तासु चक्र रखवारे। तिन्हैं तीनि शत बाण प्रहारे ॥ लखि नृपको करलाघव ऐसो। द्रोणतनय करि बदन अनैसो ॥ आठ आठ वृषभनसें बाहित। आठ सकट आयुध चित चाहित ॥ दोयघरी महं नृप पहं बरसो। जलद समान बाणप्रद सरसो ॥ पांड्य भूप सो लखि गुणि मनमैं। तजि बाइव्य अस्त्र तेहिक्षणमैं ॥ सिगरे बाण बिप्रके डारे। सबके लखत व्यर्थ करि डारे ॥ सो लखि कोपि बिप्र धनु करष्यो। नृपको धनुष काटि शर बरष्यो ॥ चारि बणासों तुरगण हतिकै। सूतहि बध्यो जीतिसों रतिकै ॥ करि सब खंड रथहि अति रोखो। काट्यो केतु मारि शर चोखो ॥ बध्यो न नृपहि राखि रन ईहा। द्रोणकुमार बिदित भट दीहा ॥ भूप तुरित तेहि रथसों कढ़ि कै। भिरो मत्त मैगलपैं चढ़ि कै ॥

दोहा ॥

जंभा शक्र समान तहं भिरिते सुभट अमान। घोरयुद्ध कीन्हे महा बर्षि असंख्यन बान ॥
शरन बारि शर मारि शर गरजि प्रचारि प्रचारि। भरे रुधिर शोभित भए बाण प्रहारि प्रहारि ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षण बीर अचार्य्य प्रगटअचारय पणोकरि। गुनि अपनोरणकार्य्य गजहिबध्योबज्र बाणहनि॥
युग बर बाण प्रहारि युग भुज काटे नृपतिके। हनि शर चौदह चारि हते नृपतिके अनुज सब ॥
फिरिक्षुरप्र शरमारि काटि शीश नृपपांड्यको। दीन्होमहिपै डारि शोभितकुण्डल मुकुटसह ॥

गुरतोमरछन्द ॥

जिमि काठ मृतक जरायकै। जनपाषि जल झरि पायकै ॥ बुझि जात अनल समानको। जिमि पांड्य नृप बरसानको ॥ बज्र बाजि गज भट मारि कै ॥ दल मध्य प्रलय पसारि कै ॥ भट बिप्रके शर धारसों। बधि गयो बीर अपारसों ॥

महिखरी छन्द ॥

तहंदेखि बध निजसुपतिको भटतासुसब अति भयपगे। करिघोर हाहाकार धुनि रण त्यागि निज दल दिशि भगे ॥ सो देखि अर्जुन भीम सात्यकि आदि भट अमरखभरे। करि घोर बिक्रम जुटि इतके भटनसों अति रण करे ॥ तिमि कर्ण कृप द्विजतनय शल्यहि आदि इतके भटघने। भिरि पाण्डवनके भटनसों अति युद्ध कीन्हे रिसि सने ॥ तहं मारु मारो मरो मारो मारु धुनि नभ भरिरही। जो लखे हम तेहि गैर सो सब जात नहि एहिथरकही ॥

दोहा ॥

तोमर पट्टिश शक्ति शर भल्ल परश्वध और। खड्ग आदि आयुध मढ़े देखिपरे तेहिठौर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथ हयते अरु गजनते गिरत सुभट गतप्रान। गज हय पैदर कटि गिरत देखि परे नहिं आन ॥

सोरठा ॥

रामराम सियराम कहि गहि सिगरे सुभट तहं। चाहि अपूरव धाम किए घोर संग्रामभिरि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेकर्णपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः

धृतराष्ट्रउवाच दोहा ॥

पांड्य नृपतिकोदेखि वधकोपि लरे किमि पार्थ। सो सुनिवो हम चहत हैं संजय भाषु यथार्थ ॥

संजय उवाच ॥

सुनो भूप तेहिक्षण तहां कर्ण धनुर्धर धीर। बाण वर्षि परसैन मधि पारो प्रलय गंभीर ॥

चौपाई ॥

रथी पंचदश विक्रम अतिके। वधत भयो पांचाल नृपति के ॥ अगणित हय गज भट वधि पलमें। रुधिर धार ढारो पर दलमें ॥ लखि सहदेव नकुल धनुधारी। सात्यकि द्रौपदेय रणचारी ॥ धृष्टद्युम्न भट सेना नायक। चले कर्ण पहं वर्षत शायक ॥ सो लखि इतके प्रवल सुयोधा। बढ़ि तिनको कीन्हे अवरोधा ॥ माचो घोर युद्ध तहं तिनसों। पृथक् पृथक् कहि निवरै किनसों ॥ तोमर भल्ल शक्ति शर रूरे। भिन्दिपाल चलि दुहुं दिश पूरे ॥ मूसल गदा भुसुण्डी आदी। आयुध छाड़न लगे प्रमादी ॥ अशनि सरिस अहि वाहन लागे। वधि शत्रुन जय चाहन लागे ॥ लागे गिरन भूरि भट भिदि भिदि। गिरैं उठैं कितने महि छिदि छिदि ॥ हय गज रथते योधा मरि मरि। लागे गिरन रुधिर सों भरि भरि ॥ मारण मरण लगे भट बढ़ि बढ़ि। मारो मरो मारु धरु पढ़ि पढ़ि ॥ मारैं रथी रथिन सों भिरि भिरि। लरैं पदाति पदाती थिरि थिरि ॥ गजी गजी तेहि विधि हय सादी। लागे मारण मरण प्रमादी ॥ दुर्योधन को लहि अनुशासन। अंग बंग सागध अरिनाशन ॥ मेकल कोशल नाथ निषाधा। गज दल सहित अमंद अबाधा ॥ शरजल वर्षत घन सम फैले। धृष्टद्युम्न पहं चले उतैले ॥ तिन्हैं देखि सेनापति कोपो। वधि बिडारि जय यश कहं चोपो ॥ दश दश आठ आठ अनियारे। शायक प्रति मैगलन प्रहारे ॥ किरिणि समान बाण सहि ताके। गज गजस्थ भट अति मम ताके ॥ घन सम बढ़ि गुणि जय यश ओपन। चाहे ताहि सूर मम लोपन ॥ कितने द्विरद मानवन धरि धरि। मर्दत भए चरण तर करि करि ॥ कितने गज दातन सों मारैं। कितने गहि ऊरध उलझारैं ॥ कितने सुण्डन सों करि गहि गहि। मारै भटन सामने लहि लहि ॥ कितने शर पीड़ित भय भारैं। मुखमें कर कुण्डल करि डारैं ॥ कितने शीश उकाढ़े करिकै। ठाढ़े रहे क्रोधसों भरिकै ॥ अति अंकुश अंगुठा के प्रेरे। अगरि जाहिं पर भटके नेरे ॥ तिमि गजस्थ भट आयुध वरषैं। प्रति वादिन वधि वधि अति हरषैं ॥ कितने प्रतिवादिनके मारे। गिरैं यथा तरुते फल मारे ॥ तेहि क्षण नकुल सात्यकी वीरा। द्रौपदेय सहदेव सुधीरा ॥ चेकितान अरु सुभट शिखण्डी। शर वर्षत सह सेना चण्डी ॥ प्रवल वायु बारिद सों जैसे। भिरैं भिरे गज दलसों तैसे ॥

दोहा ॥

शरझरकीन्हें गजनपहं एहिविधितेरणधीर। उमड़िघुमड़ि जिमिगिरणपहं नीरदवरषैनीर ॥
गज बढ़ाय अतिवेग सों अंगदेशको भूप। सात्यकिके सम्मुख भयो वर्षत बाण अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

सात्यकि बीर अमान हन्यो द्विरदके मर्मथल। शायक बज्रसमान तासों भिदि गज गिरतभो ॥

चौपाई ॥

गजहि गिरत गुणि भूप अमाना। कूदन चहो मारि वर बाना ॥ तौलगि सात्यकि शर अनियारो। अंग भूपके उरमेंधि मारो ॥ बेधित ह्वै सो भूपति मरिकै। शोभित भयो भूमिपै परिकै॥ पुंड्रभूप तिमि गजबर भेवहि। चलो बढ़ाय निरखि सहदेवहि। तबसहदेव बर्षिबेर बाणहि। ध्वज काट्यो बधिकै गजवानहि ॥ तऊ अंग नृप सुत दृढ़ घायक। माद्रीसुतपहं बर्षो शायक ॥ तेहि क्षण आइ नकुल तहं आसू। शतसरसों बेध्योगजतासू। सोशर सहस नकुलपहं डारो। नकुल ताहि बाणनसों बारो ॥ तजि क्षुरप्र शायक धनु बरसों। दीन्हो काटि तासु शिर धरसों ॥ शर हनि काटि दयो शिर तासू। महिपै गिस्यो बीर नृप आसू ॥ जमन जनकसुत नृपको मरिबो। लखि सब भट गुनि अनरथ करिबो ॥ सेकल उत कलपति नर नाहू। अरु निषाध नृप दीरघ बाहू ॥ बली ताम्रलिप्तक भट गाढ़े। अरु कलिंग भट सिंह उकाढ़े ॥ नकुल बीरसों भिरे प्रचारी। बर्षत बाण बितरि अंधियारी ॥ सो लखि पांडव भट रिसपूरे। तिनसों भिरे बर्षि शर रूरे॥ सोमक अरु पांचाल प्रबीरा। बढ़ि बढ़ि भिरे बिदित रण धीरा ॥ रथी गजस्थन सों तेहि पलमें। माचो घोर युद्ध ओहि थलमें ॥ सात्यकि आदि बीर सब उतके। बर्षि बर्षि शर अति अय युतके ॥ इतके शरन काटि धिरु बकि बकि। हनि हनि बाण मर्मथल तकि तकि ॥ कर पग उर धर कुम्भ बिदारी। बधे असंख्यन गज रणचारी ॥ मारि असंख्यन भट बल ओकन। भेजि देतभे ऊरध लोकन ॥ प्रलय पर पूरित करि छाजे। काल कराल सरिस तहं राजे ॥ बधि बिचलाय द्विरद दल भारी। मर्दन लगे सैन रणचारी ॥ बर्षा नदी कूल जिमि तोरति। जल प्रबाह सों तृणवन बोरति ॥

दोहा ॥

मम दल मर्दत प्रबल अति भल्ल शक्ति शर छाय। चले कर्णपहं बेगसों पांडव भट समुदाय ॥
निज दल दाहत देखिकै सहदेवहि तेहिकाल। रथ बढ़ायकै भिरत भो दुश्शासन दलपाल ॥

सोरठा ॥

बलसों धनुटङ्कारि बढ़ि अबिरल शरसेत रचि। अति तीक्षण शरचारि सहदेवहिमारत भयो ॥

तोमर छन्द ॥

तब गरजि भट सहदेव। बढ़ि प्रगट करि भट भेव ॥ तो सुवन भटके गात। हनि साठि शर अवदात॥ शर तीनि सूतहि मारि। भो नदत धनुटङ्कारि ॥ तोतनय धनुबिधि ठाटि। धनु तासु शरसों काटि। करि सबिधि शर सन्धान। भो हनत सत्तरि बाण ॥ तब खड्ग गहि धनु त्यागि। सहदेव अरि बध लागि ॥ तकि बेगसों तेहि झेलि। बर बीर बिधिसों केलि ॥ तो पुत्र को कोदण्ड। करि देत भो युगखण्ड ॥

दोहा ॥

काटि धनुषफिरि धनुषगहि हन्यो बज्रसम बान। सो शर काट्यो खड्गसों तासुतबीर अमान ॥
बाण काटि तजिखड्गसों गहिधनु करि सन्धान। दुश्शासनसहदेव पहं डास्यो चासठि बान ॥

सोरठा ॥

एक एकमैं बाण पांच पांच हनि निमिषमैं। भट सहदेव अमान काटि गिरायो भूमिपै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

बाण काटि तुरता विस्तास्यो। अगणित शर तो सुत पहं डास्यो ॥ तीनि तीनि शरसों सब शायक। काटि दयो तो सुत भट नायक ॥ सब शर काटि बाण नव गनिकै। गरजो तासु सारथिहि हनिकै ॥ तब पाण्डव अतिशै रिसि धास्यो। काल दण्ड सम बाण प्रहास्यो ॥ बेधि कवच कढ़ि महि मधि धसिकै। सो शर लसो उरग सम बसिकै ॥ अति बेधित ह्वै हा धुनि करि कै। रथ पहं परो मोहसों भरि कै ॥ नृप तोसुतहि अचेत निहारी। रथ ले भगो सरस रथचारी ॥ इविधि दुशासनसों जय लहि कै। भट सहदेव प्रबलता गहि कै ॥ सुरथ बढ़ाय बीर रस पागो। सैन कौरवी मर्दन लागो ॥ भयो तहां अति तेखी तेखा। नकुल कर्णसों देखी देखा ॥ सुरथ बढ़ाय सुधनु टङ्कारी। नकुल कर्णसों कह्यो प्रचारी ॥ वैरकलह अनरथ कर मूला। तूं शठ पाप बुद्धि अनुकूला ॥ तोमतको फल लहि कछुदिनमैं। कौरव नशत बसत तूं जिनमैं ॥ अब बधि तोहि भेजि यमलोकहि। करिहौं दूरि हियेके शोकहि ॥ यह सुनि सूत सुवन हंसि भाष्यो। राज पुत्र नीको अभिलाष्यो ॥ अब लखाउ निज पौरुष मोही। जाते सुभट गुणौ मैं तोही ॥ लरि करि विक्रम लहि मम समता। तब इमि बचन भाषु गहि ममता ॥ बीर करै विक्रम नहिं भाषै। कादर जलपि विजय अभिलाषै ॥ इमि कहि सूतसुवन बलवाना। नकुलहि हन्यो तिहत्तरि बाना ॥ तहां नकुल अति तुरता लीन्हो। असी सुबाण तासु तन दीन्हो ॥ काटि नकुलको धनु तेहिक्षण मैं। सूतज हन्यो तीस शर तनमैं ॥ तुरितहि नकुल और धनु गहि कै। सत्तरिबाण हन्यो थिरु कहिकै ॥ सूतहि तीनि सुबाण प्रहारी। काट्यौ धनुष मारि शरभारी ॥

दोहा ॥

धनुषकाटिशरतीनिशत कर्णहि हन्यो प्रचारि। तुरि तकर्णधनु औरगहिताहिहन्यो शरचारि ॥
नकुल ताहि शरसात हनि फिरि काट्योकोदण्ड। तुरित कर्णधनु आन गहि बरष्यो बाण उदण्ड ॥

सोरठा ॥

तिमि पांडव बलवान बरसो शायक कर्ण पहं। दोऊ विदित अमान गगन शरन छादित कियो ॥

चौपाई ॥

दोऊ बाण वर्षि तेहिथरमैं। दोउन किये बाणके घरमैं ॥ दोऊ सुभट भरे अति रिसिमैं। अगणित सैन वर्षे दुऊ दिशिमैं ॥ दोऊ बिबिध भांतिसों चरिकै। सुरन किये विस्मित अति लरि कै ॥ दिव्य अस्त्रके विदित बिसारद। दोऊ शत्रु सैनके मारद ॥ दिव्य अस्त्र छादित करि दीन्हे। दिव्यअस्त्रसों वारण कीन्हे ॥ तहां कर्ण अति धनु विधि ठाण्यो। शरहनि धनुष नकुल को काट्यो ॥ फिरि हनि बाण सारथिहि हतिकै। तुरगण बध्यो चपलता अति कै ॥ तब पांडव गुरगदा चलायो। ताहि काटि सूतज भट गायो ॥ शरसों काटि अंग सब रथके। बध्यो चक्र रक्षक रणमथके ॥ तब गहि खड्ग चर्म रथ तजि कै। नकुल कर्णपहं चलो गरजि कै ॥ वर्षि बाण सूतज पण धरिकै। खड्ग चर्म युग शतधा करि कै ॥ अगणित बाण नकुलके तनमैं। हन्यो न नकुल गुन्यो कछु मनमैं ॥ सिंह चलै मैगलपैं जैसे। बलसों चलो कर्णपैं तैसे ॥ सो लखि कर्ण बार बहु हंसिकै। रथसों कूदि वेगसों गसिकै ॥ जाय नकुलके ढिग अति बलसों। डास्यो धनुष ग्रीवमैं कलसों ॥ यथा गारुड़ मंत्रन नहि कै। गहै कुपित व्यालहि थिर रहि कै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

धनुष मध्य इमि कर्णको आनन भयो बिभात। यथा बिषम परिबेष मधि पूरण शशि अवदात ॥
धनु पिंजरमधि डारि गहि नकुल केहरीबीर। हंसि हंसि सूतज हनत भो बचनशक्ति गंभीर ॥
लघु बिक्रम तूं मोहवश कत मम सम्मुख आव। ह्वै गाहक जय अलभको नाहक भयो हसाय ॥

सोरठा ॥

अबमैं बधतनतोहि तोजननीको बचनगुणि। निजसमयोधाजोहिलरेऊ मानि शिख जाऊफिरि ॥

श्रुती छन्द ॥

इमि भाषि कै। पण राखि कै ॥ तेहि त्यागि कै। सुदपागि कै ॥ फिरि आइ कै। छबि छाइ कै ॥ सुत सूतको। हित धूतको ॥

दोहा ॥

कर्ण फेरि चढ़ि सुरथपैं कर्षि कठिन कोदंड। मर्दत भो पांचालदल बर्षि बाण यमदंड ॥
मंचितह्वै रहिकुम्भमधि निकुटोउरग समान। व्रीड़ित निजदल बिबरमधि गयो नकुल बलवान ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

बली बीर बीरानमें बीर बाको। धरे धीर धीरानमें जासु साको ॥ चलो जीति माद्रीसुतै भूरि भेखो। जितै आल पञ्चालको जाल देखो ॥ डरै डारि टङ्कार कोदण्ड भारी। लगो बाण डारै बिडारै बिचारी ॥ ननदें लगो जूथ मर्दें निदर्दी। यथा चालि बर्दें भुअर्दें कपर्दी ॥

सोरठा ॥

तब जुजुत्सुकहं देखिनिजदलमर्दततेहिसमय। भट उलूकअतितेखि भिरतभयोवर्षत बिशिख ॥

चौपाई ॥

बढ़ि जुजुत्सु तेहि बहु शर मारो। सो कढ़ि तेहि बहु बाण प्रहारो ॥ तहं उलूक करलाघव करिकै। काट्यो तासु धनुष पण धरिकै ॥ तुरित जुजुत्सु और धनु गहिकै। हन्यो साठि शर थिरु थिरु कहिकै ॥ हन्यो उलूक बीस शर ताही। सो तेहि हन्यो पांच शर चाही ॥ एहि प्रकार ते ते युग भट भिरिकै। घोर युद्ध कीन्हें तहं थिरिकै ॥ तहं उलूक अति तुरता लीन्हों। तासु सारथी को बध कीन्हों ॥ तुर गण बध्यो मारि बहु शायक। तब रथ त्यागि भगो नर नायक ॥ इबिधि जुजुत्सुहि जीति न नर्दत। भयो उलूक शत्रुदल मर्दत ॥ शतानीक सों भिरि तेहि धर्मा। महाराज तो सुत श्रुतिकर्मा ॥ काटि धनुष सब तुरगण हतिकै। बर्षो बिशिखि पराक्रम अतिकै ॥ ह्वै तहं बिरथ सु तनय नकुल को। तज्यो गदा नाशन अरि कुलको ॥ तो सुतके रथपै सो परिकै। तुरग सूत रथ भस्मित करिकै ॥ राजत भई भूमिपै तैसे। पन्नगराज बमत बिष जैसे ॥ तब श्रुतिकर्मा चरि महि माहीं। गयो बिवंशितके रथ पाहीं ॥ गो प्रतिबिंध्य भूपके रथपै। शतानीक योधा चरि पथपै ॥ भूपति एहि प्रकार सब थलमें। माचो घोरयुद्ध तेहि पलमें ॥ दोहा ॥

गर्जि गर्जि भिरि शकुनि अरु बिदित बीर सुतसोम। इबिधि लरे जो लखि भए खरे सुरनके रोम ॥
बर्षि बर्षि शायक निकर काटि दए शर जाल। अगणित शर दोउन हने दोऊ बीर बिशाल ॥

सोरठा ॥

अति लाघव करि तब नृपमाना तो सुतन को। मारि अनगिने पच तासु सूत तुरगण बध्यो ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरतोमर छन्द ॥

सुत सोम ओज बढ़ाय कै। रथ त्यागि महिपै आइकै ॥ अति चपलता गहि चावसों। चरि दक्षताके छावसों ॥ जिमि जलद जल गिरि देशपै। तिमि बाण शकुनि नरेशपै ॥ नृप भयो बर्षत टेरिकै। सुर मुदित भे सो हेरिकै ॥ तब शकुनि ताहि प्रचारि कै। बर भल्ल बाण प्रहारि कै ॥ सुत सोम को धनु काटि कै। भो लसत धनु विधि ठाटिकै ॥ सुत सोम सो धनु डारिकै। असि चर्म अनुपम धारिकै ॥ गहि पैंतरे सब ठौरके। जे गौर ताके डौरके ॥ भो काटि देत सुभेश के। सब बाण शकुनि नरेश के ॥ नृप शकुनि सो गति चाहिकै। बर शर क्षुरप्रहि बाहिकै ॥ भो काटि देत सु भूपकी। सो खड्ग अद्भुत रूपकी ॥ तब भूप अति बल मेलिकै। अरध असिसो झेलिकै ॥ धनु काटि शकुनि अमान को। गहि डौर सुभट विधान को ॥ शत कीर्तिके रथ जायकै। भो लसत ओज बढ़ाय कै। तेहि समय नृप पर सैनमें। शर शकुनि के रणऐन में ॥ भे लसत जिमि बन चारिको। बहु बुंदु बर्षित बारिको ॥

दोहा ॥

कृपाचार्य्यसों भिरतभो धृष्टद्युम्न सैनेश। अति विक्रम तहं करत भो कृपाचार्य्य भट बेश ॥
कृपाचार्य्य के शरन सों ह्व छादित भिदगात। लघुविक्रम ह्वै जातभो सुभट मपान लजात ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

कृपाचार्य्य को देखिकै तेज पूरो। यथा काल कल्पांत को क्रुद्ध कूरो ॥ इतै के सबै बीर आनंद आने। बली धृष्टद्युम्नै बधै प्राय जाने ॥ गहे द्रोणके घातको क्रोध भारी। लसो अर्थ आचार्य्य आचार्य्यकारी ॥ न मारे बिना आजु तौ ताहि छाड़ै। बलीको उतै बीरजो याहि आड़ै ॥

दोहा ॥

इविधि परस्पर कहत भे इतके सिगरे बीर। धृष्टद्युम्न कहं बधत है आजु विप्र रण धीर ॥
मोहितनिजस्वामिहिनिरखिबोलोसूतविचारि। सिथिल पराक्रमहोइकतलहनचहतहौ हारि ॥
धृष्टद्युम्न सो सुनि कह्यो लहि द्विजको शरपात। हम न पराक्रम करि सकत बेधित ह्वै सबगात ॥
ताते धीरे फेरि रथ चलो भीम जेहि ठौर। सुनत सूत रथ हांकि गो जहां भीम भटमौर ॥
कृतबर्मा चितिपाल अरु सुभट शिखण्डी जूटि। घोर युद्ध कीन्हें तहां सुजय परस्पर ऊटि ॥

सोरठा ॥

दोऊ सुभट अमान बर्षि बनद सम बाण बन। किए कठिन घमसान भूप न कहिबे योगसो ॥
दोऊ बेधित गात शोणितके धारणि भरे। रथ पहं भए विभात सजल कुम्भ बहु छिद्रजिमि ॥

चौपाई ॥

बज्र समान बाण बर पर्मा। हन्यो शिखण्डिहि नृप कृतबर्मा ॥ तासों बेधित ह्वै तेहि चण्डमें। भयो अचेत शिखण्डी रणमें ॥ सो लखि सूत शोचसों पागो। तुरगण फेरि सुरथ लै भागो ॥ इन युग बंधुन विचलत देखी। बिकल भए पर भट अवरेखी ॥ भपति सुनो पार्थ तेहि पलमें। प्रलय पसारत भो मम दलमें ॥ सो लखि इतके नृप अरि जेना। भिरत भए बढ़ि बढ़ि सह सेना ॥ सत्यसेन अरु सौ श्रुति राजा। चित्रसेन नृप सहित समाजा ॥ नृपति मित्रवर्मा रणचारी। मित्रदेव भूपति धनुधारी ॥ नृपति सुतंजय दीरघ बाहू। चंद्रदेव बरणो नर नाहू ॥ शिवप चिगर्त शाल्व गण रूरे। अरु संसप्तक अमरख पूरे ॥ बर्षत बाण पार्थसों तैसे। भिरे असुर सुरपति सों जैसे ॥ तहां पार्थ अति धनुविधि ठोव्यो। सबके बाण असंख्यन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काट्यो ॥ सब के गात बाण बहु मार्यो । अगणित भटन भूमिपै डार्यो ॥ शत्रुञ्जय कहं यम-पुर दीन्हो । सौश्रुतिको धर बिनुशिर कीन्हो ॥ बध्यो चन्द्रदेवहि हनि शायक । धीरधुरीन पार्थ दृढ़शायक ॥ पांच पांच शायक अनियारे । हनि हनि इतर नृपन कहं बारे ॥

दोहा ॥

सत्यसेन क्षितिपाल तहं करि लाघव तेहिकाल । कृष्ण चन्द्रके भुजनमैं तोमर हन्यो बिशाल ॥
बांह बेधि सो कढ़ि गयो करतें गिरो प्रतोद । सो लखि बोले पार्थ इमि पूरित बीरबिनोद ॥

सोरठा ॥

गहि प्रतोद रथ हांकि सत्यसेनपाहंचलहु प्रभु । देत शरनसों फांकि तासु शीशसरदा सरिस ॥

चौपाई ॥

इमि कहि पारथ सत्य परनको । करि अबिरल सन्धान शरनको ॥ काट्यो सत्यसेनके शीशहि । व्यथित कियो तो सुत अवनीशहि ॥ बहुरि मारि शायक वर रूपहि । बध्यो मित्रवर्मा वर भूपहि ॥ मंडल सदृश धनुष करि चरिकै । मित्रसेन कहं बिरथी करिकै ॥ सहसन संसप्तक भट हतिकै । बिलसत भयो जीति सो रतिकै ॥ अस्त्र ऐन्द्रहि प्रगटित कीन्हो । प्रलयकाल रोपित करि दीन्हो ॥ राजपुत्र क्षत्रिनके धरसों । पाट्यो भूमि काटि शर बरसों ॥ कुंडल अंगद हार अदूषन । मणिमय मुकुट आदि बर भूषन ॥ सहित परे कर शिर धर रूरे । रुधिर भरे अति सुषमा पूरे ॥ लसत भए तहं मणिगण तैसे । अरुण गगनमधि उडगण जैसे ॥ धनु रथ ध्वज तुरगण की राजी । काट्यो प्रगटि धनुष विधि ताजी ॥ अगणित गज बधि हरि महिभारा । प्रगटित कियो रुधिरकी धारा ॥ शक्ति बाण असि भल्ल गदादिक । आयुध जितने तजे प्रमादिक ॥ सो सब काटि पार्थ रणधीरा । पलमैं बध्यो असंख्यन बीरा ॥ बाणजाल सबधर मढ़ि दीन्हो । प्रलयकाल आरोपित कीन्हो ॥ बाण धनुषसों जे नहं लाए । ते तहं भए कालके खाए ॥ शर धनु सहित गिरे कर तिनके । गिरे गदा सह बाहु अगिनके ॥ सो लखि एकहि बचत न जाने । तजि साहस हतशेष पराने ॥ तिन कहं जीति पारथ हरिसावक । लस्यो विधूम लसै जिमि पावक ॥ तेहिक्षण धर्म भूपतिहि देखी । दुर्योधन भूपति अवरेखी ॥ वर्षत बाण धनुष टंकारत । चलो युधिष्ठिर नृपहि प्रचारत ॥ सो लखि हरषि धर्म नरनायक । भिरो भूपसों वर्षत शायक ॥ प्रबल धनुर्द्धर दोऊ भाई । नृप कीन्हे तहं तुमुल लराई ॥ नव शायक अतिशै अनियारे दुर्योधन नृप धर्महि मारे ॥

दोहा ॥

अति क्रोधित ह्वै धर्मनृप तकि तजि तेरहवान । चारिबाणसों वधत भो चारोंतुरग अमान ॥
रथि सूतहि ध्वज काटि फिरि काटि धनुष तरवारि । दुर्योधनके तन हन्यो शायक पांच प्रचारि ॥

सोरठा ॥

तुरितत्यागि रथतौन भूपखरोभो भूमिपै । सो लखि करि तहं गौन घेरि लए कृपआदि भट ॥
उत भीमादिक वीर घेरि युधिष्ठिर भूपतिहि । वर्षन लागे तीर इत इतके उत शरघने ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

किते शक्ति मारैं किते भल्लडारैं । किते बाण धारैं चहूंवोर ढारैं । किते तोमरैं औ गदा यष्टि हालैं । किते पट्टिशै औ तजैं भिण्डपालैं ॥ भिरैं नाम लैलै तजैं बाण रूरे । घने आयु धैके घने जाल पूरे । रथी अश्वसादी गजी अश्वसादी । भिरैं त्यों रथी औ रथीसै प्रमादी ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५१,६०४ ६१/६ ६१/२८२

भिरे हांक दै दै पदाती पदाती। कहूं अश्वसादी पदाती विघाती ॥ महा घोर संग्राम ता ठौर जूटो ॥ परो जानि कल्पांतको काल टूटो।

दोहा ॥

गतवाहन ह्वै भट किते लरे पयादे टूटि। किते निरायुध ह्वै किए बाहुयुद्ध तहं जूटि ॥ महायुद्ध करि तहं भए मोहित सुभट अमान। निज पर हय गज रथ तुरग रहो न काहुहि ज्ञान॥ यह सुनि ऊवि उसांस लै कह्यौ दुष्ट क्षितिपाल। विरथी ह्वै मम तनय नृप कहा कियो तेहि काल॥ यह सुनि कै संजय कह्यो क्रोधित नृपति अचैन। और सुरथपै तुरित चढ़ि कहे सूतसों बैन ॥

सोरठा ॥

मोरथ शीघ्र बढ़ाय धर्म नृपतिके निकट चलु। सो सुनि सूत सचाय चलो युधिष्ठिरके निकट॥ भूपहि आवत देखि रथ बढ़ाय अति बेगसों। नृपति युधिष्ठिर तेखि भूप सुयोधनसों भिरो॥

चौपाई ॥

दोऊ बन्धु विदित धनुधारी। दोऊ राज्यहेत रणचारी॥ दोऊ गहे क्रोध उतकर्षा। दुहुंदिशि किए शरनकी वर्षा॥ नृप दुर्योधन तुरता ठाढ्यौ। शर हनि तासु शरासन काट्यौ॥ धर्म नृपति धनु गहि गुणि मनमय। काट्यो तासु धनुष ध्वज क्षणमय॥ तुरित धनुष गहि भूप सुयोधन। कियो धर्म नृपको अवरोधन॥ पुरुषसिंह दोऊ भट आरज। लरे सिंह सम महि करि कारज॥ धर्म भूप तो सुतके उरमैं। मास्यो तीनि बाण अति तुरमैं॥ तबतो पुत्र शक्ति वर गहिकै। तज्यो धर्मपहं धिरुधिरु कहिकै॥ सो तेहि काटि तीनि शर हनिकै। भूपहि हन्यो पांचशर गणिकै॥ तब तो सुत नव शर अनियारे। नृपति युधिष्ठिरके तनमारे॥ तेहिक्षण धर्मभूप अति रोखो। मास्यो नृपहि बाण अति चोखो॥ सो शर नृप तो सुतके गातहि। बेधि कढ़ो कंटक जिमि पातहि॥ तब तो तनय गदा गहि भारी। चलो धर्म भूपतिहि प्रचारी॥ गदा गहे तो पुत्रहि देखी। मास्यो शक्ति धर्मनृप तेखी॥ तासों बेधित ह्वै नर नाहू। मूर्च्छित भयो सिथिल करि बाहू॥ फिरि नहिं हन्यो भीमसों सुनि कै। तुम न बधो एहि मम पण गुणिकै॥

दोहा ॥

भूपहि मूर्च्छित देखि कै छतवर्मा क्षितिपाल। बढ़ि आढ़त भो पर भटन वर्षि शरन के जाल॥ भो तहं चौथे पहरमैं एहि विधिको संग्राम। गदरानो तो कुमति तरु को फल दुखदा नाम॥

सोरठा ॥

कर्ण आदि रणधीर भिरि भीमादिक भटनसों। किए युद्ध गंभीर मारु मारु धरु रटन करि॥

चौपाई ॥

माचत भयो भूप तेहि पलमैं। अतिशै घोरयुद्ध तेहि थलमैं॥ पट्टिश भल्ल शक्ति शरकूरे। आयुध विविध दुहुंदिशि पूरे॥ दिव्य शरनकी वर्षा करि करि। लरे सुभट बहु विधिसों चरि चरि॥ ह्वै बिनुभट बहु हय गज घायल। इत उत फिरन लगे ह्वै चायल॥ ह्वै बिनु वाहन योधा केते। महिगत लरण लगे जय हेते॥ भए बिसुण्ड बितुण्डघनेरे। अगणित भटन प्राण बिनु हेरे॥ बिना सुण्ड के अगणित योधा। आयुध गहे करैं अवरोधा॥ कितने परे धरणिपैं लोटैं। मारु मारु कहि भूमि खसोटैं॥ कितने खरे अधमरे भूमैं। घायल किते रोष सों घूमैं॥ कितने निरथ निरायुध ह्वैकै। करैं मल्ल रण रिसिसों ग्वैकै॥ शिर धर भुज सह बसन विभूषण। परे रुधिर मैं लसैं अदूषण॥ टूटि फूटि जिमि तरु छवि धरिकै। दहकत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावानलमधि परिकै ॥ कितने लरि गिरि उठिगिरिगिरिके। महिपैं परे लरैं भिरि भिरि कै ॥ चामर छत्र किरीट पताका। हौदा पाखर अंकुश चाका ॥ अङ्ग भंग हयगज भट मरि मरि। शोभित भए भूमिपैं परि परि ॥ रुण्ड मुण्ड शोणितसों धरणी। भई भयानक रूप विवरणी ॥

दोहा ॥

अस्त्र शस्त्र तनुत्रान शरके मिलान भव शब्द। धनुटङ्कार प्रचार धुनिसों पूरित भो अब्द ॥ मचो घोरसंगर तहां निकट सात्यकिहि पाय। कर्ण कर्षि को दण्ड वर बज्र शरे हन्यो सचाय ॥ सूत तुरग कर्णहि हन्यो सात्यकि अगणितबान। एहि प्रकार दोऊ सुभट किए घोर घमसान ॥

सोरठा ॥

लखि कर्णहि तेहिकाल छादित सात्यकिके शरण। भट सुषेन क्षितिपाल सदल गयोतहं बेगसों ॥

तोमर छन्द ॥

तहं जात ताकहं देखि। पर सैनपति अति तेखि ॥ करि चपल करि कोदण्ड ॥ बढ़ि भिरो बीर उदण्ड ॥ तहं पार्थ भट रण धीर। मम सैन जग पहं वीर ॥ भो लसत सत्व समुद्र। कल्पान्त कैसो रुद्र ॥ सो देखि तो सुत भूप। करि वदन भीषन रूप ॥ शर वर्षि धनु टंकारि। बढ़ि भिरो ताहि प्रचारि ॥ तेहि देखि पार्थ अमान। भो तजत आठ सुबान ॥ तकि तुरग चारौं मारि। भो देत महिपैं डारि ॥

दोहा ॥

पञ्चम शरसों काटि धनु छठए सों वधि सूत। द्वै शरसों काटत भयो छत्र केतु मजबूत ॥ फिरि अमोघ शर तजत भो वध विचारि कै तासु। ताकहं काट्यो द्रोण सुत मारि सात शर आसु ॥

सोरठा ॥

करिअतिरिसिहनिबाणकाटिधनुषद्विजतनयको। तुरगणबध्योअमानपार्थधनुर्द्धर विदितभट ॥

चौपाई ॥

ढिग कृप कृतवर्मा कहं तकिकै। काट्यो धनुष भागु मति वकिकै ॥ करि दुश्शासन को धनु छेदन। चलो कर्ण पहं परदल भेदन ॥ सो लखि कर्ण सात्यकिहि तजिकै। पार्थ वीर पहं चलो गरजि कै ॥ तीनि बाण अर्जुन कहं हनिकै। कृष्णहि हन्यो बीस शर गणिकै ॥ सात्यकि तहां जाइ तेहि क्षण मैं। शत शर हन्यो कर्ण के तन मैं ॥ तुरित जाइ तहं अगणित योधा। किये कर्ण भटको अवरोधा ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा। सुभट शिखण्डी सहित समाजा ॥ द्रौपदेय अरु नकुल सुवीरा। सहदेव धृष्टद्युम्न रण धीरा ॥ सदल धर्म भूपति धनु धुनिकै। भिरे सूत सुतको वध गुणिकै ॥ तहां कर्ण अति लाघव लीन्हों। सब पहं बाण जाल रचि दीन्हों ॥ काटि तहां सबके बज्र शायक। सब कहं हन्यो बाण दृढ़ घायक। दिव्य शरन की वर्षा करिकै। सब कहं व्यथित कियो पण धरिकै ॥ सो लखि कोपि पार्थ धनुधारी। वर्षि दिव्य शायक रण चारी ॥ शस्त्र शस्त्र सों वारण करिकै। वर्षो विशिख चक्र सम चरिकै ॥ तिमि चरि कर्ण पार्थसों भिरिकै। कीन्हों घोर युद्ध तहं थिरिकै ॥ दोऊ भूरि विक्रमी गाए। दुहुं दिशि बाण वनद सम छाए ॥

दोहा ॥

दिव्य अस्त्र मैं कुशल अति दोऊ वर बाणैत। घोर युद्ध कीन्हें तहांदोऊ धीर धरैत ॥ एहिविधिभिरिभिरिसकलसलदुहुंदिशिके भटउद्ध। अतिविक्रमकरिकरिकरेभीषम अद्भुतयुद्ध ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिखरी छन्द ॥

तहं भयो भीषम युद्ध सिगरे सुभट अति विक्रम करे। गज तुरग भट समुदाय बधि बधि रुधिर रुण्डन महि भरे॥ इमि होत संगर घोर सो दिन बितो रवि अथवत भए। तब युद्ध तजि सब भूप निज निज सयन सह डेरन गए॥ जुरि भूत गृध्र पिशाच जम्बुक हरषि तहं विहरन लगे। भट जाय डेरन किए सब करतव्य गोचित अम पगे॥ जो भयो पूर्व कुमंच तासों इतक अनरथ लखि खरो। अब कहत नहिं कछु बनत नृपसो समुझि अरि आवत गरो॥

दोहा

कर्ण पर्वके प्रथम दिन इमि रण भो चितिपाल। राम कृष्ण जो चहत सो औशि होत सबकाल॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे कर्णपर्वणि प्रथम दिन युद्ध समाप्तिर्नाम तृतीयोऽध्यायः

वैशम्पायनउवाच दोहा ॥

कर्ण पर्व के प्रथम दिन को सुनि युद्ध विहार। इमि बोले धृतराष्ट्र नृप गहे शोच अधिकार॥

रोलाछन्द ॥

सुनो संजय होत सोई चहत ईश्वर जौन। सकै पार्थहि जीति ऐसो भयो योधा कौन॥ विपिन खांडव पार्थ आस्त्रो जीति शक्रहि एक। एक पार्थ निवातकवचिन बध्यो गहि रणटेक॥ एक पारथ लयो जय गन्धर्व गणसों जूटि। एक पार्थ विराटपुर में लयोजय यश जूटि॥ एक पारथ लरो शिवसों लियो पशुपति अस्त्र। एक पारथ दिगपतिन सों लह्यो सिगरे शस्त्र॥ तिहुं पुरके जीतिबे को योग पारथ वीर। बात सो परसिद्ध जानत कहत सब रणधीर॥ भरो अति दुख सदल मम सुत तौन रजनि बिताय। कर्ण सह चढ़ि लरो कैसे कहो सो समुझाय॥ भूपके ए वचन सुनिकै कह्यो संजय बैन। भोर सूतज जाय नृपपै देखि नृपहि अचैन॥ कह्यो भूपति शोच तजि सुद गहौ मम पण जोहि। बधैंगो मैं पार्थ कहंकै पार्थ बधि है मोहि॥ आजु पार्थहि बधे बिनु नहिं आइहौं तो पास। शोच इतक न पूर्व आयो निकट मम गहि चास॥ अस्त्र विक्रम शस्त्र धनुके गुनन में सविधान। सूर तामें तुल्य हैं हम पार्थ भट नहिं आन॥ विजय नामक धनुष बिरच्यो विश्वकर्मा पूर्व। जीति दैत्यन इन्द्र दीन्हों भार्गवहि सो गर्व॥ बार एकइस सकल क्षत्रिण जीति तासों राम। मोहि दीन्हों धनुष सोई विजय जोको नाम॥ धनुष सो गांडीव सों। अधिक सो अब धारि। भूप तो कहं विजय देहौं जीति पार्थहि मारि॥ यथा अगिनिहि सकत नहिं सहि वृक्ष तेहि विधि पार्थ। आड़ि सहि नहिं सकैगो मम बाण वृष्टि पदार्थ॥ एक मैं हम पार्थसों हैं हीन कहियतु तौन। पार्थको है सारथी यदुवीर सब गुण भौन॥ नहीं तासम सारथी मम शोच इतनो भूप। शल्य सारथि पनो जानत कृष्णके अनुरूप॥ होइ जौ मम सारथी नृप शल्य धीर धुरीन। जीति पार्थहि भूप तो तेहि देउं जय यशपीन॥ पार्थके हैं दिव्य रथ हय अक्षय अक्ष तुणीर। तासु हित मम संग राखेहु सुरथ तर्कस भीर॥ अस्त्र हृदय सुमंत्र जानत कृष्ण जिमि तिमि शल्य। शल्य होइ सुसारथी तौ करौं तेहि अशल्य॥ शल्य अधिको कृष्णसों हम पार्थसों सब ठौर। औशि जय हम लेव नृप जौ सधै ऐसो डौर॥ कर्णके ए वचन सुनि तो तनय नृप तजि शोच। शल्यके ढिग जाय सविनय कहत भो निज रोच॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यव्रत नृप सिंह पर दल दलन धीर धुरीन। मद्रपति सो करौ जो मैं कहत हौं ह्वै दीन॥ कृष्णके सम कर्ण को नहिं सारथी परवीन। तुम्हैं तेहि सम पाइ सूतज भयो चाहत पीन॥ जोरि कर करि विनय ताते कहत हौं हे भूप। कृपा करिकै करो सारथि पनो निज अनुरूप॥ कियो सारथि पनो विधि जिमि शंभुको तेहि रीति। सूत सुतको सूत ह्वै नृप मोहि दीजै जीति॥ कृष्ण रक्षक पार्थहि तिमि पाहि कर्णहि आप। जीति शत्रुन मेटिये मम हियेको परिताप॥

दोहा॥

यथा अरुण सहभानु कढ़ि नासि देत तम जूह। तिमितुम सह लरिकै वधिहिसूतज शत्रु समूह॥ भीष्मद्रोणको बधकिएवै करिछल व्यापार। कर्ण बधैगो उन्हहि लहि तुव सहाय आधार॥ जिमिमम हित रत कर्णतिमि आपु महारथ बीर। सारथिपन स्वीकारकरि मोहिदीजिये धीर॥

रोला छन्द॥

भूपके ए वचन सुनिकै लोचननि करि लाल। बङ्क करि भृगुटी न बोलो शल्य वीर विशाल॥ भूमिपति कत भूलि ऐसो कहत बचन अनीक। बाहु बल मम विदित तामें चहत लावन लीक॥ जानि मोसों अधिक कर्णहि कहत हूजै सूत। मैं न जानत सूतजहि निज सदृश भट मजबूत॥ प्रबल अति पर सैन में जो ताहि देहु बताय। ताहि वधिकै जाव हम निज देश शङ्ख बजाय॥ कहौ सबसों लरन जौ तौ लखौ बिक्रम मोर। प्रलय पारत शत्रु दल में शरस शरको जोर॥ धनुष रथ हय गदा लखि मम देखि बाहु उदण्ड। भूप बोलो बचन जो नहिं होइ लायक दण्ड॥ भए कबहूं सूत क्षत्री सूतको कहु तौन। सूत ह्वै वे सूतको तुम मोहिं भाषत जौन॥ सूत सुत अधरथी ताको सारथी अब होन। भूप मोको कहत तुम हो उचित तुमको सोन॥ भूप अभिषेकित विदित हम मद्रपति रणधीर। सूत सुतको सूत ह्वै वे कहत तेहि निज तीर॥ पाइ इमि अपमान अब हम रहब नहिं एहि देश। जाव निज पुर औशि शासन शीघ्र देहु नरेश॥

दोहा॥

इमिकहिशल्य महीपउठि चलो क्रोधसों पूरि। गहितोसुत लागोकहन बचन विनय भरिभूरि॥ मम हियकी सिगरी व्यथा जानत हौ क्षितिपाल। तातेसोई करहुजेहि विनशै व्यथा विशाल॥ यथा यज्ञकरिकरिदएभूरिदक्षिणा तात। तिमिरणमखमधि देहु मोहि विजय द्रव्य अवदात॥ शल्य सदृश तुम शत्रुके ताते शल्य विख्यात। करिसारथिपन मोहि अब करो अशल्य विभात॥

सोरठा॥

कर्ण न तुमसों श्रेष्ठ उभय सैनमें श्रेष्ठ तुम। ताते इतो यथेष्ठ मांगत दीजै आपु सो॥

जयकरीछन्द॥

तुम कहं अधिक कृष्ण सों जानि। जय हित यह मांगत अनुमानि॥ अमरष त्यागिबूझि मम भाव। मांगत हौं सो देहु सचाव॥ यह सुनि शल्य क्रोध करि दूरि। कहत भए अनुकम्पा पूरि॥ एवमस्तु नृप तो जय हेत। सारथि पनो मानि हम लेत॥ पै इतनो कहि लेत सचैन। सब यर कहब रुचिहि जो बैन॥ यह सुनि भूप कर्ण तजि दंद। कहै रुचिहि सो कहहु सुछंद॥ नृप तदनंतर तो सुत भूप। कह्यो शल्यसों बचन अनूप॥ मार्कण्डेय सु मुनि तपरास। मम पितुसों अनुपम इतिहास॥ कहे पूर्व जो सो एहि ठौर। हम कहियतु तुम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनौ सगौर ॥ देवनसों असुरनसों पूर्व । भयो तारकामय रण गूर्व ॥ लरि असुरन को करि संहार । लहे सुजय सुरराज उदार ॥ तारकको सुतहो ताराक्ष । विद्युन्माली अरु कमलाक्ष ॥ अति तप किए धीर धरि ध्यान । तब विधि देन कहे वरदान ॥ तबते कहे परम यश लेहु । हे विधि हमहि अमर करि देहु ॥ कहत भए वेधा अवदात । नहिं सब अमर होत हे तात ॥ मांगौ और चहौ वर जौन । यह सुनि बोले ते बलभौन ॥

दोहा ॥

सुनो तात हम तीनिपुर विरचित हैं तेहि जौन । वेधै तकि हनि एक शर हमैं वधै सुरतौन ॥
एव मस्तु कहिकै मुदित वेधा गे निज धाम । ते सब मयसों कहत भे रचो नगर अभिराम ॥

सोरठा ॥

विसुकर्मा गुणग्राम दैतन को मय असुर वर । रच्यो तीनि पुर आम शतशत योजन विस्तरित ॥
सुवरण मयो ललाम तारकाक्ष को नगर सो । रजतमयो अभिराम बनो नगर कमलाक्षको ॥
आय समयो कठोर विद्युन्माली को नगर । हो सबके चहुं ओर परिखा नीर गंभीर युत ॥

दोहा ॥

ऊरध हो काञ्चन नगर मधिमैं राजत रूह । महिपैं आयसमय बसे सब बल असुर समूह ॥
कैयक अर्बुद असुर पति ह्वै ह्वै ते असुरेश । तीनिलोक पीड़ित किए जीति सुरन सबदेश ॥
तारकाक्ष को सुवनभो हरि नामक बलधाम । सो तप करि विधिसों लयो वर दायक जयकाम ॥
रच्यौ एक हम बावली तामधि डारैं ल्याय । वधो अस्त्र को असुर सो जिये तुरित गहिचाय ॥

रोला छन्द ॥

पाइ इमि बरदान ह्वै अति प्रबल राक्षस सर्व । लगे बाधन लोक सिगरे गहे अतिशै गर्व ॥ क्रोधि सुरगण सहित तेहि पुर जाय लरि सुरराज । हारि करि अनुमान विधि पहं गए सहित समाज ॥ विनय करिकै भए बूझत बधन को उपचार । कहे विधि हम पूर्व तिन कहं दए सुवर सुठार ॥ एक शरसों कठिन तीनौ दुर्ग वैधै जौन । तारकाक्षहि आदि असुरण बधै रणमैं तौन ॥ और सों नहिं सधैगो यह परम दुस्तर कर्म । वेधि हैं शर एकसों सब दुर्ग शंभु अभर्म ॥ वचन यह सुनि विधिहि आगे राखि सुर समुदाय । जाय शिव पहं भए अस्तुति करत प्रेम बढ़ाय ॥ नमः शङ्कर शंभु शिव ईशान प्रभु भगवान । प्रजापतिके यज्ञ हन्ता प्रजापति परधान ॥ नमो हर प्रणतार्त्ति हर चयतापहर वर देव । नमो रुद्र सुनील कंठ उदार अनुपम भेव ॥ नमो शूली शंभु अंबक विभु पिनाकी नाम । वनस्पति पति परम परमा नमो दायक काम ॥ नमो पशुपति भूतपति परमेष्टि गौरी नाथ । नमो औढर ढरन आपद हरण करण सनाथ ॥ सुनो अस्तुति सुरण की ह्वै भूतनाथ प्रसन्न । कहे सो सब कहो जेहि हित भए आइ प्रपन्न ॥ वचन सुनि विधि कहे असुरण दए हम वरदान । तौन करि नहिं तिन्हैं वधिबे योग कोऊ आन ॥ आपु तिनकहं वधौ करिकै दुसह युद्ध विनोद । होइ कलमष हीन महि सब सुमन पावै मोद ॥ कहे शिव नहिं तिन्हैं मारण चहत लरि हम एक । अर्धबल मम पाय मम संग लरौ सब गहि टेक ॥ कहे सुरबल आपको हम सबाव नहिं सहि नाथ । आपु सबको अर्धबल लै मारि करहु सनाथ ॥ शंभु कीन्हें ग्रहण सबको अर्धबल तेहि काल । कहे गे तेहि दिवस शङ्कर महादेव विशाल ॥ सुमन गण करि मंच शंभुहि बरणि कै तेहि देश । विश्वकर्मा सो कराय सुरय रचना वेश ॥ विष्णु पावक सोम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय भे रचत अनुपम बान। सुरथ भूमि नक्षत्र ईषा अक्ष गिरि सविधान ॥ चारु कूबर वासुकी ऋषि सप्त मण्डल पूर। युवा कृतके युगतु मारुत चक्र भे शशि सूर ॥ मेरु भो ध्वज यष्टि सम्वत शर धनुष अभिराम। देवि सावित्री प्रत्यंचा भई अद्भुत दाम ॥ जलद तड़िता सह पताका पार्श्व रक्षक वेद। देवि गायत्री सुरथ की शिखावन्द अखेद ॥ अक्ष बन्धन पास सागर लसो सरस समान। अयस्कर भे सुरथ के गिरिविन्ध्य अरु हिमवान ॥ सिंधु गंगा भारती मय धुरा अति रमणीय। चारि फलको रचत भे रथ तुल्य अति कमनीय ॥ औषधी अरु वृक्ष सिगरे भए घंटा भरि। राचि दिन भे पूर्व पर अस्थान परमा पूरि ॥ तुरग मानस रज्जु भे कर कोटकादिक नाग। पला काष्ठा मास तिथि भे कील गहि अनुराग ॥ इविधि विरचित विश्व मय रथ निरखि शङ्कर ईन। सुर ऋषिनसों सुनत अस्तुति होत भे आसीन ॥ राजि शिव तेहि सुरथ पैं हंसि सुरण की दिशि हेरि। कहे अब उत कष्ट मोसों सूत ल्यावहु हेरि ॥ बचन यह सुनि सुमन विधिसों कहे चाहि अनंद। आपु हूजै सारथी तौ मिटै सबको द्वंद ॥ यदपि बेधा रहे शिव सों अधिक तदपि विचारि। नहीं मान्यो नेकु अनुचित देवकार्य्य निहारि ॥ किए सारथि पनो रथ चढ़ि हांकि तुरग अखर्व। करत अस्तुति चले शिवके संग सुमन ससर्व ॥

दोहा ॥

भांति भांति कै बिसद धुनि वाजन भेद समूह। चले बजावत अर्बुदन गन्धर्वन के जूह ॥
संग असंख्यन गण चले वलकत हंसत सगर्व। तेहि क्षणकी छवि वरणिको सकै भूपएहिपर्व ॥

चौपाई ॥

तेहिक्षण शिव सुषमासों भेखे। त्रिपुर नाश को पण अवरेखे ॥ विधिसों कहे चलो तहं रथ ले। जहां असुर सब गर्व अकथ ले। ॥ तहां लखौ मम विक्रम भारी। क्षणमैं बधन असुर पण धारी ॥ बेधा सुनत तुरित सब वाजिन। कीन्हें चपल वात गति साजिन ॥ चले वाजि वर नभ पीवतसे। पग सूचिन मग पट सीवतसे ॥ पुर ढिग जाय वृषभ भो गरजत। सुनिभो असुरण को हिय लरजत ॥ तेहिक्षण भये त्रिपुर मधि असगुण। प्रभु प्रगटितकीन्हें तामस गुण ॥ असुर असंख्यन पुरते कढ़िकै। लरिवे को सम्मुख भे बढ़िकै ॥ तेहिक्षण शंभु क्रोध अति लीन्हें। रूप भयङ्कर प्रगटित कीन्हें ॥ अयुतादित्य तेज गहि राजे। महि दिवलों अतिसुषमा साजे ॥ गहि त्रिशूल घनवर सम गरजे। असुर समूहन के हिय दरजे ॥ धुनि सुनि भे सभीत जय वादिक। सुरगण सोम सूर अनलादिक ॥ रथ ह्वै गयो सिथिल धुनि सुनिकै। सो लखि तहां विष्णु प्रभु गुणिकै ॥ शरतें निकसि वृषभ वपु गहिकै। सुरथ शीशपैं लए उमहिकै ॥ वृषभ शीश हय पीठि परमपैं। धुर लखि मनदै उग्र करमपैं ॥ वृषके खुरण दुधा करि दीन्हें। तुरगण कहंबिनु अस्थन कीन्हें ॥ तब ते वृषभ दुधा खुर जोहे। असयन हीन तुरग सब सोहे ॥ तब महेश चय पुरहि निहारे। रिसि गहि धनु चढ़ाय टङ्कारे ॥ तेहिक्षण प्रभुप्रतापतें ग्वैगे। त्रैपुर सिमिट एकतें ह्वैगे ॥ एकै भे तीनौं पुर जबहीं। सुरगण गहे मोद अति तबहीं ॥ सिद्ध महर्षि जयति जय कहिकहि। अस्तुति करण लगे सुद गहि गहि ॥ प्रभु त्रैलोक्य सारमय शर गहि। धनुसों योजित कीन्हे जय चहि ॥ पशुपति अस्त्र घटित करि तामय। कर्षे धनुष सरुष ममता मय ॥ तेजस सरसि सरस शर छांड़े। सो त्रयपुर मधि प्रविशो चांड़े। उग्र प्रभाव उग्रता धरिकै। पुर सहअसुरण भस्मित करिकै ॥ पश्चिम समुद्र मध्य करि मंजन। प्रगटित भयो सुरन मन रंजन ॥ त्रिपुर सहित असुरण करि भस्मित। लखि निज तेज शम्भु ह्वै सस्मित ॥ अब मति लोक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भस्म करु ईना। इमि कहि किए आपु मैं लीना ॥ ऋषि गन्धर्व सुमन मुद लीन्हें। प्रभु स्वयंभु की अस्तुति कीन्हें ॥

दोहा ॥

सुनि अस्तुति शिव मुदितह्वै वेधहि सुरण समेत। करिसुविदा तवआपुगेनिजगिरि शुभद निकेत ॥

रोला छन्द ॥

कियो जिमि सारथ्य शिवको जगत छत विधि तच। कर्ण को सारथ्य तेहि विधि आपु कीजै अच ॥ पाइ विधिहि सहाय छत जिमि रुद्र त्रिपुरहि जारि। किए शक्रहि सुचित कैएक खर्व दैयत मारि ॥ तथा तुम्हहि सहाय छत लहि कर्ण परदल नाशि। करि अकंटक राज्य देहैं मोहि सरस सुपासि ॥ कर्ण हम मम राज्य जय यश भूप तो आधीन। कृष्णसम सारथ्य करिकै देहु आनद पीन ॥ असुरगण को नाश करिवे हेत श्री भृगुराम। अस्त्र अनघ अमोघ शिव सों लहे दायक काम ॥ दए सो सब शस्त्र कर्णहि राम गुणि निज भक्त। कर्ण धीर धुरीन ज्ञान सुधर्म मय अनुरक्त ॥ सूत कुलमें जात नहिं यह देव पुत्र महान। कवच कुण्डल सहित प्रगटित भयो वीर अमान ॥ भगी व्याघ्रहि जनति नहिं नृप लखौ करि अनुमान। कर्ण को लघु गुणज्ञ मति है कर्ण पुरुष प्रधान ॥

दोहा ॥

तजि अमरप ह्वै सारथी देहु मोहि जयदान। विधिअरुकृष्णसमान तुम जानत अस्त्र विधान ॥

जयकरीछन्द ॥

पूरब को इतिहास अनूप। मन दै सुनो मद्रपति भूप ॥ शीखन को सुर शस्त्र ललाम सेवे शिवहि जाय भृगुराम ॥ तप लखि प्रगटि कृपाके भौन। कहे मांगु वर चाहत जौन ॥ सुनि भृगुपति इमि कहे प्रशस्त। हमैं देहु प्रभु अस्त्र समस्त ॥ सोसुनि शंभुपाच गुणि ताहि। दीन्हें अस्त्र शस्त्र हित चाहि ॥ तेहि युगमें ह्वै असुर अमान। देवन दए खेद मनमान ॥ तब ऋषि सुमन शंभु पहं जाय। कहे बरधि दैयत समुदाय ॥ देत हमैं दुख दारुण घोर। तिन्हैं बधौ गहि धनुष कठोर ॥ सो सुनि शंभु कृपा करि भूरि। कहे रामसों आनंद पूरि ॥ असुरण जाय बधौ करि युद्ध। लहौ सुरण मधि जय यश शुद्ध ॥ सो सुनि लहिआनन्द भृगुराम। बन्दि शंभु के पद अभिराम ॥ जाय सुरण सह धनुटङ्कारि। असुर वृन्द सों लरे प्रचारि ॥ करि शिव शीक्षित अस्त्र प्रयोग। वर्षि शस्त्र नहिं सहिवे योग ॥ बधे जितक हे असुर सगर्व ॥ अस्तुति किए सुमन गन्धर्व ॥ सोई अस्त्र अमोघ समस्त। कर्णहि दीन्हें राम प्रशस्त ॥ होत कर्णमें किलविष छाम। तौ नहिं अस्त्र देत भृगुराम ॥

दोहा ॥

हरण शत्रु धनु कर्ण के करि करसम दोर्दण्ड। हित हर्षण कर्षण कठिन विजय नाम कोदण्ड ॥ परमशिष्य भृगुराम को प्राकृत पुरुष न एहु। कर्णहि लघु जानो न नृप यह मम सम्मत लेहु ॥ अधिक रथीसों सारथी होत सघत तव काज। श्रेष्ठ आप ह्वै सारथी नृप साधो मम राज ॥

लघुतोमर छन्द ॥

जब सुयोधन भूमिपाल। इमि कह्यो सुवचन विशाल ॥ नृप शल्य तब लहि चैन। इमि कह्यो भावत वैन ॥

दोहा ॥

होवकर्णके सूत हम पै यह कहत निदान। जौ कदाचि पार्थहि वधिहि कर्णवीर बलवान ॥ गदाचक्र गहि कृष्णतब वधिहै तुम्हैं ससैन। आड़ि सकै जो कृष्णकहं ऐसो कोउ न हैन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

शल्य भूपके वचन सुबोधन। सुनि बोलत भो नृपति सुयोधन ॥ कर्ण समान बीर को जगमें। है भट कर्ण पराक्रम अगमें ॥ धनुर्वेद को पारग जाहिर। सब शास्त्रज्ञ शस्त्रबिद माहिर ॥ जासु धनुष की ज्या धुनि सुनिकै। भगत शत्रु भट बध ध्रुव गुनिकै ॥ विरथ विधनु करि भीमहि जोई। मूर्च्छित कियो बीर रसु सोई ॥ धनुष कोटि मधि करि अभिमानी। भाष्यो दुसह शक्ति सम बानी ॥ तेहि विधि महिगत नकुलहि करिकै। अहि सम धनुष पाच मधि धरिकै ॥ बचन पालि जीयत तजि दीन्हों। तिमि सात्यकिहि मारि जय लीन्हों ॥ भीम तनय असुराधिप योधा। ताहि बध्यो जो करि अवरोधा ॥ जाके डर रहि शंकित पारथ। सम्मुख ह्वै न करत पुरुषारथ ॥ धृष्टद्युम्न आदिक पांचालन। जीतत जौन कर्ण अरि घालन ॥ तेहि कर्णहि को जीतन लायक। सहित बरुण यम शक्र सहायक ॥ तेहि प्रकार तुम विदित पराक्रम। हौ अजेय जेता रण आश्रम ॥ तीनि लोकमें ऐसो को है। जे नहिं तो सन्मुख ह्वै मोहै ॥ कृष्ण न अधिक विक्रमी तुमते। नहिं त्वकसार अधिक दृढ़द्रुमते ॥ केशव यथा पांडवी दलमें। आपु तथा मम सेनाघल में ॥

दोहा ॥

करिहैं केशव चक्रगहि जेहिविधिकोरणकर्म। शरधनुगहि तातेअधिक तुमकरिहौ गुणिमर्म ॥
दुर्योधन के वचन ए सुनि लहि आनद भरि। शल्य भूमिपति कहतभो गरबि बीररस पूरि ॥
निजपरसुभटनतेअधिकअरुप्रभुकृष्णसमाने। मोहिकहतक्षितिपालतुमनिजहित मानिमहान ॥

सोरठा ॥

भूपति तो जयहेत होव कर्ण को सारथी। पै इतनो कहि लेत जब जो भाइहि सो कहव ॥
कर्ण सकै सहि तौन मोहि सारथी तौ करै। यह बिचारि क्षितिरौन कहो कर्णसों बूझि कै ॥

जयकरी छन्द ॥

यह सुनि हर्षि कर्ण अरु भूप। कहे शल्यसों वचन अनूप ॥ नृप जो रुचिहि कहेहु सो वैन। अब ह्वै सूत देहु मोहि चैन ॥ यह सुनि शल्य भूमि भरतार। सारथि पनो कियो स्वीकार ॥ तब दुर्योधन नृप अति मोदि। कर्ण बीर सों कहे बिनोदि ॥ शल्यहि पाय सूत अवदात। बधि सम अरिन अकृष्ण हो तात ॥ कर्ण कहे नहिं शल्य नरेश। सहरष कहत वदन करि वेश ॥ ताते फेरि कहौ समुझाय। जातें लसै सुरथ पैं जाय ॥ यह सुनिकै दुर्योधन राय। शल्यभूपसों कहे बुझाय ॥ वेगि सहाय करो क्षितिपाल। सूतज लरो चहत एहिकाल ॥ बधि अगणित परदलके बीर। पार्थहि बधन चहत रणधीर ॥ तातें निज जय हित कर जोरि। याचत तुम्हें बहोरि बहोरि ॥ पार्थहि रक्षत कृष्ण यथैव। तुम पालेहु सूतजहि तथैव ॥ यह सुनि शल्य नृपहि भरि अङ्क। कहत भयो कुल कुमुद शशङ्क ॥ गर्व त्यागि हे कुरुकुलराज। सूत होत हम तो हित काज ॥ शल्य भूपके सुनि ए वैन। बोलो कर्ण बीर बलऐन ॥ विधि अरु कृष्ण सदृश तुम दक्ष। रक्षण करण हार मम पक्ष ॥

शल्यउ वाच दोहा ॥

आपनि अस्तुति कथन अरु परनिन्दा को जाप। निज सुख करत न सतपुरुष किये होत परिताप ॥
इतै प्रयोजनवश कछू कहियत निज व्यवसाय। मातलि सम हम शक्रको करिबेयोग सहाय ॥
बिनाप्रमाद प्रयोग अरु बिद्या ज्ञान विचार। करि करि सबयर करव हम बिधिवत रथ सञ्चार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोच त्यागि अब पार्थसों करो युद्धव्यापार। क्रुद्ध उद्ध बर भटन वधि होऊ कीर्त्ति कर्त्तार ॥

दुर्योधनउवाच चौपाई ॥

हे हे मित्र कर्ण धनुधारी। शल्य भूप भो तुवरथचारी ॥ अधिक कृपाते ए रथचालक। अश्व हृदय ज्ञाता हितपालक ॥ शल्यहि तुम्हहि एक यल देखी। ह्वै है विकल शत्रु भयभेखी ॥ लेऊ विजय अब संशय नाहीं। पार्थहि जीति लसौ महि माहीं ॥ इविधि कर्णसों कहि हितबानी। कह्यो शल्यसों नृप अभिमानी ॥ कर्ण वीरको तुरग समाजा। तोचण करौ युद्ध में राजा ॥ कर्ण आपकहं पाय सहायक। भयो पारथहि जीतन लायक ॥ यह सुनि कह्यो शल्य अनुमानी। साच कहे तुम भूपति ज्ञानी ॥ सो सुनि कर्ण मोद अति लीन्हो। सुमना सूतहि शासन दीन्हो ॥ मम रथ कल्पित करो उतायल। नाधो प्रबलबाजि हति पायल ॥ आयुधभेद धरो सब विधिके। जे अमोघ रण कारज सिधिके ॥ सो सुनि सुरथ साजि अनुगामी। कीन्हो अरज सिद्ध रथ स्वामी ॥ जाहि ब्रह्म बिद विप्र पुरोहित। मंचित करि कीन्हे अति सोहित। तेहि चण कर्ण दान दै सानद। सुभटनसों सुबचन कहि मानद ॥ रथ जैत्र कहं करि सुप्रदक्षिण। करि नियमित निज रक्षक पक्षिण ॥ सादर कह्यो शल्यसों हंसिकै। चढ़ो सुरथपैं हरि सम लसिकै ॥

दोहा।

यह सुनि सानद शल्य नृपरघुवर रामहि ध्याय। हयशीचण ढिगसुरथपै लसो सूर समजाय ॥
चढ़ो सुरथपैं कर्ण तब ध्याय इष्ट गुरुदेव। घने बजे बाजन तहां गहे युद्ध जयभेव ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

तहां तोतनय भूप आनंद पूरे। दए कर्णके कर्ण एवर्ण रूरे ॥ किए भीष्म औ द्रोण जौ कर्म नाहीं। करो आजु सो कर्म या युद्धमाहीं ॥ गहौ ज्येष्ठकों ज्येष्ठ जो पांचमो है। वधौ चारिको हे इहै हेत मोहै ॥ वधौ धृष्टद्युम्नादि जे युद्धकर्मा। वधौ सात्यकै जो महाभर्म भर्मा

सोरठा ॥

इमि कहि तो सुत भूप चढ़ो सुरथपैं नृपनसह। द्विजगण मंगल रूप पठन लगे सुस्वयनशुभ ॥
तेहिचण शल्य महीपै विहंसि कर्णसों कहतभो। अरे सूत कुलदीप निज विक्रम दरशाउअब ॥

दोहा ॥

कर्ण धनुर्द्धर कर्षि धनु वर्षि वज्र सम बान। भीम पार्थ आदिकन पहं करु विक्रम मनमान ॥
धर्मराज कहं पकरि ले वधु पार्थहि सहसैन। दे अपूर्वजय कुरुपतिहि है प्रसिद्ध जगजैन ॥

सोरठा ॥

यह सुनि कर्ण सगर्व शल्य भूपसों कहत भो। वेगि हांकि हय सर्व चलो पाण्डवी सैन पहं ॥

चौपाई ॥

पार्थहि आदि सुभट सब उतके। जे बरणे अति विक्रम युतके ॥ ते सिगरे मम विक्रम जो है। अब तें युद्ध तजै करि सो है ॥ आजु प्रलय परदल में पारत। महारथिनवधि महि मधि डारत ॥ लखो मोहि मारुत सम लागत। परदल लखो जलद सम भागत ॥ उत अति प्रबल सुभट अस कोहै। जो मम निकट आइ नहिं मोहै ॥ यह सुनि शल्य नयन करि राते। बोलत भए बचन अति ताते ॥ सूत सुवन नहिं निजबल तोलत। कत पांण्डवन निदरि इमि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलत ॥ जौ लगि सुनत न दायक दुखकी। स्रुतिकटु धुनि गाण्डीव धनुषको ॥ तौ लगि जिमि भावै तिमि बोलो। निज विक्रमकी पदवी खोलो ॥ जौलगि भीमहि गदा प्रहारत। लखत न मैलग जूथ संहारत ॥ सहदेव नकुल युधिष्ठिर राजहि। जौलगि करत शरनके छाजहि ॥ लखत न तौलगि हौं इमि भाषत। लखेन बनिहि धीरता राखत ॥ धृष्टद्युम्न सात्यकिहि निरेखी। इविधि न कहत बनिहि अवरेखी ॥ ऐसे बचन शल्यके सुनिकै। सूतज रहो अस्तुति सम गुणिकै ॥ कह्यो पालि सारथिपन भलियै। सादर अरिदल के ढिग चलियै ॥ सो सुनि शल्य हांकि रथ धीरे। चलो महा अमरष भरि हीरे ॥ धनु टङ्कारत नृपतो दलके। चले सदल बढ़ि जे अतिबल के ॥ दुन्दुभि आदि वाद्य तेहि क्षणमैं। बजे असंख्यन सैन सदन मैं ॥

दोहा ॥

होत भयो दिगदाह अरु भे अति उल्कापत। महि कम्पादिक अपसगुण भे करता उतपात ॥
चले सैनके बाम ह्वै मृग पक्षी समुदाय। एहि प्रकार प्रगटित भए बहु असगुण दुखदाय ॥

सोरठा ॥

तेहि क्षण कर्ण सटेक कहत भयो नृप शल्यसों। मोहिन संशयनेक युद्धोत्सुक सुरपतिहु लखि ॥

चौपाई ॥

विष्णु महेंद्र सदृश रणचारी। विदित पिनाकी सम धनुधारी ॥ भीषम द्रोण तिन्हैं उन मारे। तदपि न हम कछु संशय भारे ॥ आजु पाण्डवनबधि जय लैहों। कै जहं द्रोण गयो तहं जैहों ॥ दुर्योधन को कारज करिबो। मोहि उचित कैरणमधि मरिबो ॥ आजु महा धनुविधि प्रगटित कै। दुसह शरन के जाल घटितकै ॥ बधि हौं पार्थहि सहित सहाई। बचिहिन शक्रहु के ढिग जाई ॥ यह सुनि कह्यो सत्य क्षितिनायक। झूठ कहत नहिं तुम एहि लायक ॥ मौन रहो मति एहि विधि भाषौ। मति रवि शशिहि गहन अभिलाषो ॥ जब कुरुपतिहि गन्धर्वन लीन्हों। तहां न तुम सब विक्रम कीन्हों ॥ गए विराट नगर में जादिन। पारथ कियो पराक्रम तादिन ॥ सो भुलाय अब एहिविधि भाषत। मन करि सुर तरुके फल चाखत ॥ वासुदेवसों रक्षित पारथ। को तेहि जीति सकै गुणि स्वारथ ॥ यह नरवर पारथ भट आरज। कहं तुम पुरुषाधम नरजारज ॥ जौ न भागि जैहो ओहि छिनमें। तौ तो बध निरमित एहि दिनमें ॥ ऐसे बचन शल्यके सुनिकै। उत्तर दयो कर्ण इमि गुणिकै ॥ कपट त्यागि सारथिपन कीजो। मम करतब विक्रम लखि लीजो ॥ अवरहि मौन चपल करि घोरे। सादर चलो पार्थ के धोरे ॥

दोहा ॥

शल्य भूपसों भाषि इमि सुभटनको दिशि हेरि। कर्ण बीर सगरब बचन कहत भयो इमि टेरि ॥
नृपके हितरत सुभट जो पार्थहि देइ देखाय। ताहि सकट भरि देउंगो रत्न मोद सरसाय ॥
कांस्य दोहनी धेनुशत अयुत तुरग शत ग्राम। षटशत देहौं द्विरद वर शत इस्त्री छबिधाम ॥
दासी दासनके निकर रथ भूषण समुदाय। देहौं ताकहं आजु जो पार्थहि देइ देखाय ॥

सोरठा ॥

पार्थ केशवहि मारि हरिहरि तिनकोसौजसब। देहौं ताहि विचारि पार्थहि देइ देखाइ जो ॥
सूतजके ए बैन सुनि कौरव मोदित भए। ह्वै सगर्व सहसैन बजवाए दुदुंभि घने ॥

जयकरी छन्द ॥

सुनि सूतज के ऐसे बैन। बोलो शल्यभूप बल ऐन ॥ सूतज धनुष रचत जेहि काज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपुहि ह्वै है सो तुव राज ॥ बालबुद्धि गहि खरचत दाम । बिनु धन दए सधी यह काम ॥ तोबध कर्ण जानि निज स्वार्थ । आपुहि तोढिग आइहि पार्थ ॥ कृष्ण पार्थ कहं बधन सहर्ष । जो तुम कहत गहे उतकर्ष ॥ अबलों सुन्यो न ऐसो चार । सिंहहि बधै द्विरद मतवार ॥ बांधि कंठमैं शिला अचुद्र । चाहत पैरण क्षीरसमुद्र ॥ गिरितें गिरन हेत उमदात । नहिं पारथ के सन्मुख जात ॥ गणे गणे सुभटन लै संग । करो पार्थसों भिरि रणरंग ॥ जौ चाहौ निज जीवन लाऊ । तौ मति ज्वलत ज्वलनमधि जाऊ ॥ नृपति सुयोधनको हित जानि । यह तुमसों कहियतु अनुमानि ॥ ऐसे दुसह बचन सुनि बीर । बोलो कर्ण विदित रणधीर ॥ निज भुजदण्डनके बल शुद्ध । चाहत कियो पार्थसों युद्ध ॥ मित्र सही पर शत्रु समान । तुम उपजावत भीति महान । आवै वज्रपाणि रण हेत । तऊ न रणतें मोरव चेत ॥ सुनि ऐसे सूतजके बैन । बोले शल्य अरुण करि नैन ॥ कुपित व्यालके मुख ढिग पानि । चाहत कियो मरण विधि ठानि ॥

दोहा ॥

दिव्यधनुषसोकड़त लखिआवतवज्रसमान । पारथकेशरनिरखि नहिंहेरिहितोहिधनु ज्ञान ॥
शिशुजननीकेगोदरहि शशिहिपसारतपानि । तिमिरयपैंरहि पारथहिबधनचहतपण ठानि ॥
पार्थ सिंहको जूठ धन आमिष पाय मोटाय । चहत पार्थसों लरण अब जंबुक सम उमदाय ॥
भयो कालबश उरगसम पार्थ गरुड़पहं जान । चहत पार्थअहिक्षुधितसोंदरदुर सम लपटान ॥
जेहिविधि सेवितशशनसों बनमैंबड़ोशृगाल । आपुहि जानत सिंह बिलुखे सिंह विकराल ॥
तिमितुम सेवितभटनसों आपुहि धनुधरबीर । जानत जौलगि सिंहसम पार्थहिलहतनतीर ॥

सोरठा ॥

जब पारथ ढिग आय बर्षिहि शायक वज्रसम । तबतुम धीर भुलाय रणतजिहो कापुरुषसम ॥
अखुतेयथा बिडालअरु शृगालते सिंहजिमि । तिमितुमते सबकाल अधिकपराक्रम पार्थभट ॥

चौपाई ॥

शल्य भूपकी सुनि यह बानी । बोलत भयो कर्ण अभिमानी ॥ जानत गुणी सुगुण गुणियनके । नहिं जानत जे निर्गुण मनके ॥ तूं गुणहीन कहा गुण जानै । सबहीको निर्गुण करि मानै ॥ अर्जुनको विक्रम धनु शायक । अरु केशवके गुण जेहि लायक ॥ सो सब हम जानत हैं जेतो । क्षितिपति तुम नहिं जानत तेतो ॥ अरु अमोघ निज विक्रम जानत । सम शायक गिरिभेदन ठानत ॥ तिनके बल केशव पारथसों । लरन चहत करि रति स्वारथसों ॥ भीरुनके भयदायक दोऊ । रणमैं मोहि हरषप्रद ओऊ ॥ मूढ़ सभीत न युद्ध विशारद । तुम ताते सुहितहि भय भारद ॥ अपटु कुदेशज शठ अविचारी । अनुचण उन्हैं कहत भटभारी ॥ करि तिनको बध तो बध करिहौं । मद्रदेश मैं प्रलय पसरिहौं ॥ हित ह्वै अरि सम अरिहि सराहत । अजय हमार तासु जय चाहत ॥ आवै सहस कृष्ण शत पारथ । तौ हम एक बधब गुणि स्वारथ ॥ कैवै हमैं मारि जय लेहैं । धर्मभूपतिहि आनद देहैं ॥ उभैप्रकार चर्चि यहि नीको । भीत भरत जो कादर जीको ॥

दोहा ॥

सबदेशनमैं नीच अति मद्रदेश विख्यात । मित्रद्रोह करिकै जहां पुरुष न नेकु लजात ॥
अनाचारको चार जहं नेकुन वरण विचार । नात गोतको भेद कछु गुणत न करत विहार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिप्रमत्तजेहिदेशकी युवतीकरिमधुपान । बसनत्यागिनिरतहिंहंसहिंकरहिंसुरतिसुखगान ॥
सदा रहत मैथुन चहत तिन युवतिनके पुत्र । किमि मित्रनको हित गहैं करैं धर्मसों सुत्र ॥
पापकर्म जितना करत तितनो तहं नरनारि । पृथक् पृथक् औगुण सकल कबलों कहैं विचारि ॥

सोरठा ॥

जेहि देशिनको साथ बरजत है सब शास्त्रबिद । तेहिकुदेशको नाथ कत नहिं जलपै भांति एहि ॥
जौ एहि बिधिके बैन फेरि कहैगो मद्रपति । तौ हनि गदा सचैन तो शीशहि चूरण करौं ॥
इमिकहिकर्ण सक्रुद्धशल्यभूपसों फिरिकह्यो । कपट त्यागि ह्वै शुद्ध चलो पार्थपहं भीति तजि ॥

रोलाछन्द ॥

सुनो नृप सुनि सूतसुतके बचन ऐसे आम । कहतभो फिरि बचन ऐसे शल्य नृप बलधाम ॥
यज्ञकरता धर्मरत नृपबंश मैं हम जात । मद्यपेई मत्तसम तुम कहत ऐसी बात ॥ बिसम
सम अरु बलाबल अरु सगुण कुसगुण नेत । सुनो जानत भले हम इमि कहत हैं तेहिहेत ॥
पुरुषकों है धर्म रक्षण मित्रको सब याम । बूझि सो तो बचनहित हम कहे बचन ललाम ॥
नोबि सम मम बचन तुम कहं लगो करकस तात । लगो नहिं गुरु सदृश प्रिय तेहि हेत इमि
बतरात ॥ सुनो ताते काकको अरुहंसको इतिहास । कहत अब हम सुनो हैं जो वृद्धजनके पास ॥
सिन्धु के तट भूप धर्म प्रधानको नृपग्राम । बसत हो तहं वैश्य एक धनाढ्य अति अभिराम ॥
रहो तासु कुमार सो करि प्रेम पाल्यो काग । नाम तासु उच्छिष्टभुत सो रहो पूरित भाग ॥
दैवबश एक दिवस मैं चक्रांग आदिक हंस । चले ताके निकट ह्वै है बिदित जासु प्रशंस ॥
देखि हंसन कागसों इमि कह्यो वैश्य सचेत । त्याज्य सब पक्षीण मैं है कागसो केहि हेत ॥
सत्य हो यह बचन यद्यपि तदपि काग रिसाय । मूर्खतासों कहत भो इमि नांघि निज
व्यवसाय ॥ परम गुरता उडव है पक्षीण को नहिं आन ॥ उड़ै मेरे संग जौ ए गहै कछु
अभिमान ॥ बचन यह सुनि कहत भो चक्रांग हंस उदार । उडौगे मम संग किमि तुम
कहौ सो उपचार ॥ खाय जूठो पुष्ट गर्बित काग सुनि ए बैन । कह्यो जानत उड़न की
शत रीति हम बल ऐन ॥ उड्डीन अरु अवडीन अरु प्रडीन अरु नीडीन । संडीन तिर्य्य-
गडीन अरु बीडीन अरु परिडीन ॥ पराडीन सुडीन अरु अतिडीन अरु श्वाडीन । डीन
अरु संडीन डीनक महाडीन अडीन ॥ इन्हैं आदि प्रकार शत है उडन के ते सर्व । भली
बिधि हम सिखें ताते गहत इतनो गर्व ॥ जौन गतिकी किए होइ अभ्यास तुम गति तौन ।
गहन करिकै उड़ौ मम संग सको जौ करि गौन ॥ काग के ए बचन सुनिकै कह्यो हंस
सुजान । एक गति सब विहग की तुम काग शत गतिमान ॥ एक बिधिसों उड़व हम तुम
यथा रुचित सुबंस । बांधि एहि बिधि बहस लागे उड़न बायस हंस ॥ बैठि वृक्षण उड़त
तक्षण चलो काग सडौर । उड़त बोलत फिरत इत उत गहे गुरता गौर ॥ देखि ऐसी तासु
गति भे मुदित सिगरे काग । हंस सिगरे लगे बिहंसन जानि तासु अभाग ॥ इबिधि एक
मुहूर्त उड़ि भो कहत हंसहि टेरि । प्रगट करियेकलानिजममकलाइतनी हेरि ॥ हंससुनि
हंसि चलो पश्चिम ओर सागर यत्र । चलो ताके संग बायस चपल कीन्हे पत्र ॥ उदधि पै
कछु दूरलों बढ़ि जाय घाको काग । वृक्ष टापू लखे बिनु तजि धीर डरपन लाग ॥ शिथिल
ह्वैगे पक्ष तब गिरि परो सागर मांह । देखि सो हंसि खरो ह्वै भो कहत हंसजनांह ॥
पालि व्रत करि शीघ्र मज्जन चलो बायस कन्त । एक शत योजन इहांतें उदधि को है अन्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहो ग्रतमैं उड़नकी यह चारु विधि है कौन। वारि मैं पर तुण्ड बोरत कढ़त हौ रहिमौन॥ बचन यह सुनि नीच बायस कह्यो आरत बैन। देखि निज दिश क्षमा करि अब मोहि दीजै चैन॥ कुमतिवश हम कह्यो कुत्सित वचन सो करि दूरि। मोहि जलतें करो बाहेर दया हियमैं पूरि॥ सुनो सूतज कागके सुनि बचन हंस अमन्द। पकरि पगसों ल्याय थलपैं दयो डारि स्वछन्द॥ वैश्यके घर खाइ जूठो पुष्ट ह्वै जिमि काग। हंससों करि बहस प्रगटित कियो अपनो दाग॥ तथा तुम धृतराष्ट्रके घर खाइ बाढ़ि मोटाय। पार्थसों लरि कागके सम चहत होन हसाय॥ द्रोण कृप तुम भीष्म आदिक भटन जीत्यो पार्थ। एक तुम तेहि जीति चाहत कियो नृपको स्वार्थ॥

दोहा॥

सूर्य्य चन्द सम विदित हैं पारथ कृष्ण अमान। तिनकी सरवरि जिनि करो तुम खद्योतसमान॥
बर प्रभाव हरि पार्थको पूर्व कह्यो बलिराम। सो भुलाय कत मोहबश लरन चहत जयकाम॥

सोरठा॥

ऐसे बचन अमन्द सुने शल्य चितिपाल के। बोलो बचन स्वछन्द करण गुद्धमति क्रुद्ध तजि॥

जयकरीछन्द॥

कृष्ण पार्थके सुगुण अमन्द। हम जानत नहिं आनत दन्द॥ पैमम हिये एक यह दाह। सो हम कहत सुनो करि चाह॥ पूरब हम भृगुपति पहं जाय। धनु विधि सीख्यो जाति छपाय॥ मम ऊरुपै धरि शिर आमे। एक दिवस सोये भृगु राम॥ तहं मम अहित हेत मतिवक्र। आयो कीट रूप धरि शक्र॥ अधसों मम ऊरू अभिराम। वेधन लगो कुटिल तेहियाम॥ गुरु सोवत हे गुणि गहि टेक। हम नहिं टास्यो ऊरू नेक॥ अधसों वेधि उरू सुनु भूप। ऊपर कढ़ो भयानक रूप॥ तासों कढ़ी रुधिरको धार। तब जागे भृगुराम उदार॥ लखि शोणित बूझे सो भेद। हम बताय दीन्हो तजि खेद॥ गुणि मम धीर कहे बलभौन। नहिं तूं विप्र सत्य कहु कौन॥ यह सुनि शापभीति उर ल्याय। हम क्षत्री इमि दयो बताय॥ सो सुनि कोपि तपस्वी विप्र। भूपति शाप दयो मोहि क्षिप्र॥ मोसों लहे अस्त्र तुम जौन। कार्य्य कालमैं सिगरे तौन॥ रहि हैं नहीं उपस्थित तोहि। प्रबल शत्रु जब ऐहै कोहि॥ यह सुनि मोहि न जानेहु हीन। अगणित अस्त्र लहे फिरि पीन॥

दोहा॥

तिन अस्त्रनकहं बर्षि परदलमधि प्रलय पसारि। प्रबल धनुर्द्धर पार्थ तेहि दैहौं मरिपैंडारि॥
सुर मानुष असुरनहुको जीतनहार अडोल। पारथ तेहि शरबरनसों करिहौं आजुअबोल॥
सत्य कहत तुम जगत को जेता पार्थ सटेक। ताहि जीतिबे योग मोहि रच्यो विधाता एक॥

सोरठा॥

तूं अधीर मतिमन्द मित्रद्रोहकर क्षुद्रनर। कियो चहतहै बन्द मम विक्रम ए बचन कहि॥

चौपाई॥

इन्द्र कुबेर बरुण यम राजा। जौ चढ़ि आवहिं सहित समाजा॥ तबहु न कछू भीत मो मनमैं। कहा पार्थ मम सन्मुख रणमैं॥ मोहि न लगत भीति जेहि कारन। सो सुनु शल्य भूप भय भारन॥ हम हे बाण चलावत बनमैं। लगो बाण गो सुतके तनमैं॥ होन धेनु सुत को बध देखी। दीन्हों शाप विप्र अतितेखी॥ मचो एक दिन युद्ध ठिहारे। पतित होहिंगे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्र तिहारे ॥ सो सुनि हम अतिशै भय लीन्हे । षटशत वृषभ सहस गो दीन्हे ॥ चौदह सहस धेनु दै आतुर । दासी दास दए शत चातुर ॥ फिरि सब गेह देन तेहि लागे । तब सुनि राज दयासों पागे ॥ कहे कहेऊ मति मिथ्या कबहूं । परम धर्म यह अबहूं तबहूं ॥ हिंसा पातक तोहि न ह्वै ह्वै । लहि उत कृष्ण सुगति सुद खैहै ॥ इमि कहि गए सुसुनि छबिछाए । शोच त्यागि हम निजघर आए ॥ हम हैं शुद्ध हृदय यह तातें । तुमसों कह्यो सुहितके नातें ॥ का मम निकट पार्थ धनुधारी । बधिहौं बन्धुन सहित प्रचारी ॥ शक्रहि मैं न गणत कछु मनमैं । तेहि भय देत पार्थसों रणमैं ॥ जो इमिकहत और भट कोऊ । अबलों जात कालपुर सोऊ ॥ नृपको मित्र सखा मम आरज । अवलोकिये मित्रके कारज ॥ कढ़िबे हेत बचन कटु चीन्हें । प्रमथहि तुम निबन्ध करि लीन्हें ॥ ताते बचो जात सुनि लीजै । अब एहि विधि मति सरवर कीजै ॥ निज भुजबल हम पार्थहि जीतब । नहिं तुम बिनु बिक्रम सों रीतब ॥

दोहा ॥

सूतजकेएबचन सुनिकह्यो शल्यक्षितिनाथ। तरुणिनसुख पावति परशि निजउरोज निजहाथ ॥
निजसुखनिजविक्रमकहेतिमिनमिलहिंयशतोहिकतजल्पतबिनुकाजइमिनिजअजानगणिमोहि

सोरठा ॥

शल्य भूपके बैन सुनि सूतज इमि कहत भो । सुनु भूपति अगऐन समाचार निज देशकौ ॥
मद्रि कहि कर्ण सक्रुद्ध पृथक् पृथक् सब कहत भो । जो सुनि रहो अशुद्ध रहनि मद्रदेशीन की ॥

रोला छन्द ॥

पर्व नृपधृतराष्ट्रके ढिग आय ब्राह्मण एक । कह्यो जो तहं सुने हम सो कहत सहित बिबेक ॥ परम पण्डित वृद्ध ब्राह्मण कह्यो सुनिये भूप । त्याज्य कुगति कुदेश जगमें मद्र कुतसित रूप ॥ सुर सरित सरस्वती यमुना परम पावन जौन । तीर्थ जो कुरक्षेत्र तासों दूर अति अघभौन ॥ पांचनद अरु सिन्धु छठवों बसत तिनके बीच । अशुचि अनई अरु अधर्मी बसत जहं जन नीच ॥ बट गोबर्धन नाम चत्वर जहं सुभद्रक नाम । राज कुलके द्वारपै हम सुनत नितिसों आम ॥ नगर शाकल अजल सरिता मद्र ए अपवित्र । वृत्ति इनकी परम निन्दित रहनि गहनि बिचित्र ॥ मद्रदेशी अपटु आसव पियत गोपल खात । शाकलह सुनपाक खोजत काक सम हरपात ॥ हंसति निरतति जहां युवती मत्त करि मधुपान । ऊट खरके सरिस सुरसों करति सबक्षण गान ॥ सदा मैथुनमैं रहत रतनही नेकु अघात । टेरि पुरुषहिं मिलत तरुणी किए पुलकित गात ॥ आत्मा अरु परपुरुषको जहं नहीं वर्ण बिचार । देत गारी परस्पर करि कलह हास बिहार ॥ बकत ऐसो रहत युवती पुरुष जहं सब याम । आत्म पर तिय पुरुषको जु बिचार करत निकाम ॥ बाराह कुक्कुट मांस गोपल रासभ मांस न खात । मद्यपान न करत ताको जन्म निष्फल जात ॥ भाषि इमि द्विज कह्यो नृपसों पञ्चनदके नाम । चन्द्रभागा अरु शतद्रू अरु बिपासा आम ॥ इरावत तब है वितस्ता सिन्ध छठवो तासु । मध्यमैं ते बसत पूरब पाप सञ्चय जासु ॥ ग्रहण करत न दत्त तिनको पितर ब्राह्मण देव । जानि कुत्सित कर्मरत अरु महा कुत्सित भेव ॥ भक्ष्य आर अभक्ष्य गम्यागम्य को जेहि देश । नहीं नेकु बिचार जहं तहं धर्मको कहं लेश ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

बस प्रस्थल गान्धार अरु मद्र और आरट्ट । ए सब कुत्सित देश अति कुत्सित जनको ठट्ट ॥
है मनुष्यको म्लेच्छ मल देशनको मल मद्र । मल सिगरे याजकनको चाच पुरोहित भद्र ॥
एहि प्रकार तो देशकी कहि वार्त्ता मतिमान । गयो विप्रनिजआश्रम सो हम सुनेविधान ॥

सोरठा ॥

कस न कहौ अस बैन तूपति ह्वै तेहि देशको । बधब तोहि सह सैन जौ ऐसो फिरि कहोगे ॥

महिखरी छन्द ॥

सुनि सूतसुतके बचन ऐसे शल्य भूपति इमिकहे । परदोषनिरखत रहत जे नर होत सबदूषण नहे ॥ द्विज वैश्य क्षत्री शूद्रकहं नहिं होत मूरख पटु सुनो । अरु धर्मपातक कर्म कहं नहिंहोत निज मन मधि गुणो ॥ तुम अधिप अंग कुदेशके तहं आतुरन त्यागत सुने । इमि दोष अरु गुण होत सबमैं पोत मणिगण सब बुने ॥ ममदेशको कथि दोष मति तुम पारथहि जीतन चहो । जिमि रहे इत उत लरत तेहि विधि लरनको पण फिरि गहो ॥

दोहा ॥

इतनेमैं नृप सुवन तुव दुर्योधन जितिपाल । उभै भटन कीन्हों क्षमित कहि कहि बचन रसाल ॥
नहिं उत्तर दीन्हो करण शल्य न बोल्योफेरि । हंसि सूतज इमि कहतभो चलो पार्थपहं हेरि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे कर्णपर्वणि द्वितीयदिनयुद्धेकर्ण शल्यसंवादोनामचतुर्थोऽध्याय: ॥

संजयउ वाच दोहा ॥

इमि सम्भाशन करि तहां कर्ण शल्य रणधीर । सदल शत्रुदल पहंचले गहे ओज गंभीर ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥

केहिप्रकारकोव्यूहरचि चलो पार्थभटचण्ड । सदलपार्थकिमिबढ़िभिरोकरषिकठिनकोदण्ड ॥
यह सुनिकै संजय कह्यो सुनो यथा रचि व्यूह । उभै सैनपति बढ़ि भिरे बर्षत शस्त्र समूह ॥
कृप कृतवरमा साल्व तब अरु मागध नृप दक्ष । हे सपक्ष मम सैनके रक्षक दक्षिण पक्ष ॥
रहे तासु प्रतिपक्ष नृप शकुनि उलूक ससैन । बजवावत दुन्दुभि घने विदित शत्रुदलजैन ॥
पार्वतीय गान्धार अरु संसप्तकगण सर्व । चौबिस सहस रथी रहे वामपक्ष गहि गर्व ॥
सक कांबोज ससन अरु यवन समूह समस्त । रहे तासु प्रतिपक्ष करि जीति लेनको कस्त ॥
मध्य सैनमुखमैं रहो कर्ण बीर सैनेश । रहे ताहि रक्षत सबै तोसुत सदल सुवेश ॥
दुश्शासन चढ़ि द्विरदपहं सुभट सहित सहचैन । दृष्टरक्ष मम सैनको रहो बीर बलऐन ॥
रहो ताहि रक्षत सदल तोसुत भूप बिशाल । तिमि अश्वत्थामा प्रभृत रहे सर्वदलपाल ॥
इबिध व्यूहरचि सूतजहि व्यूह वदनमैं देखि । धर्म भूमिपति पार्थसों कहत भयो अवरेखि ॥
व्यूह बिरचि आवतकरण तासोंसहितविधान । लरौ सुजयहित जतनसों गहि रणरीति महान ॥
धर्मभूपके बचन सुनि पार्थ कह्यो कर जोरि । अनुशासनजिमि देहु तिमि युद्ध करैं शरजोरि ॥
कहे धर्म तुम कर्णसों लरो करषि कोदण्ड । नृप दुर्योधनसों भिरै भीम बर्षि शर चण्ड ॥
नकुल लरै वृषसेनसों सौबलसों सहदेव । दुश्शासनसों भिरि लरै शतानीक बर भेव ॥
कृतवरमासों भिरि लरै सात्यकि अनुपम बीर । अश्वत्थामासों भिरै पांड्य भूप रणधीर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोरठा ॥

सहित शिखण्डी बीर सुवन द्रोपदी के सबै । शायक दायक पीर बर्षि सोदरण सों लरै ॥
कृपाचार्यसों जूटि करषि शरासन हम लरब । धृष्टद्युम्न जय ऊटि दलरक्षत सबसों लरिहि ॥

रोला छन्द ॥

इबिधि रचना व्यूहकी सुनि कह्यो दृढ़ महीप । कहो फिरि किमि लरे बढ़ि बढ़ि उभय नृप कुल दीप ॥ कहे संजय सुनो भूपति सबिधि व्यूह बनाय । सूतसुत पहं चलो पारथ दुन्दुभी बजवाय ॥ घने बाजन बजन लागे मढ़ी धुनि अतिघोर । लगे सन सन ठनन घन घन चलन अस्त्र अघोर ॥ देखि आवनि पार्थ की घन उलद सम भयदानि । कर्ण सों इमि कहत भो नृपमद्रपति अनुमानि ॥ सूतसुत जेहि पार्थ कहं तुम रहे हेरत तौन । चलो आवत काल सम अब करो करतब गौन ॥ होत यहि क्षण अपसगुण बहु आजु पारथ बीर । बधिहि इतके बहुत हय गज सुभट नृप रण धीर ॥

दोहा ॥

लखो होत भूकम्प अरु सन्मुख डोलत पौन । कूजत हैं क्रव्याद मृग करत बाम ह्वै गौन ॥
केतु भयानक रूप ह्वै तिष्ठति रवि ढिग जाय । काग गृध्र चहुं दिशि जुरे बोलत सन्मुख आय ॥
ध्वज कम्पत बिपरीति गति तुरगण के चख बारि । होत भयद उलकापतन अरुण भएदिशि चारि ॥
औशि असंख्यन भूमिपति मरि लसिहैं भूबीच । लसत भटनको शीश चढ़ि कालसंग लै मीच ॥

चौपाई ॥

शङ्ख भेरि आदिक बहु बाजन । की धुनि आवति है भय छाजन ॥ बाणशब्द अरु धनुटङ्कारनि । गज गरजनि अतिशै भय भारनि ॥ हयहीसनि रथनेमि भयानक । औ भट टेरनि पूर पयानक ॥

दोहा

सुनो कर्ण अतिघोर धुनि पूरत गगन समस्त । आवत अर्जुन बनद तोहि कर्ण सूर सम अस्त ॥

चौपाई ॥

दामिनि सरिस ध्वजा छवि छाजत । छत्र बलाक हंस सम राजत ॥ देखु कर्ण अर्जुन धनु धारी । आवत शक्र सरिस रणचारी ॥ पाञ्चालनके शिशद पताका । चहुंदिशि सोहत मनु शशि राका ॥ लखु अर्जुनके ध्वजप हं सोहत । बानर जाहि देखि मन मोहत ॥ देखौ चक्र गदाधर स्वामी । करत सूतपन केशव नामी ॥ कौस्तुभमणि सोहत उर जाके । पीतबसन तन अति परभाके ॥ स्वेततुरग अर्जुनके रथके । देखु कर्ण मर्दन महि पथके ॥ लखु गाण्डीव धनुषकी कर्षनि । लखु अमोघ अबिरल शर वर्षनि ॥ हय गज भट बधि बधि महि डारत । लखु पार्थहि आवत भयभारत ॥ पारथके बाणनसों आकुल । लखौ कौरबीसेना व्याकुल ॥ मृग समूह मैं केहरि राजत । तिमि अर्जुन मम दलमधि गाजत ॥ जेहि देखन हित हे धन खरचत । सो आवत बाणन दल अरजत ॥ एकरथस्थ पुरुष बर दोऊ । जिन सम नहिं तिहुंपुरमधि कोऊ ॥ नर नारायण अर्जुन केशव । बरणि न सकै जासु गुण शेषव ॥ आवत हय गज भट बधि डारत । अबिरल यूथप यूथ बिडारत ॥ कृष्ण सारथी अर्जुन सुरथी । तासों लरै कौन जय अरथी ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजयउवाच दोहा ॥

शल्यभूपके वचन सुनि करि अति राते नैन। कर्ण दयो टङ्कारि धनु निज सुभटन कहं चैन ॥
सुनु भूपति तेहि क्षण तहां संसप्तकगण ऊटि। सहसनभट लागे लरण एक पार्थसों जूटि ॥
संसप्तकगण पार्थ पहं वर्षि शस्त्र समुदाय। क्षणमें दए अदृश्य करि लाघवता दरशाय ॥

निशपालिका छन्द ॥

तौन लखि मोदि अति सूतसुत शल्यसों। आनि हिय गर्भ अति खर्व कछु शल्यसों ॥
मानि अति कर्म रणधर्म तिन सर्वको। बैन सचि चैन सतिऐन करि गर्व को ॥

दोहा ॥

कह्यो कर्ण लखु मद्रपति पार्थहि बाणन छाय। संसप्तक चाहत बधन अब न सकत इत आय ॥
यह सुनि बोल्यो मद्रपति सूतज कछु अनुमानि। कौन सुभट जोपार्थकहं वधै अंगजतिठानि ॥
इंधन डारे होत नहिं समित आगि गुणु तौन। वधै असंख्यन भटन कहं पारथ विक्रम भौन ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

लए सङ्ग दे बाण लै युद्ध नीतै। कुवक्रौ भए जाहि शक्रौ न जीतै ॥ वधै ताहि को काहिको वीर कूजो। लखो अर्जुनै अर्जुनै सो न दूजो ॥ लखो धर्मराजै गहे वर्म राजै। युवा सूरसो तेजकी लेज छाजै ॥ लखो भीम सेनै महा जङ्गजेनै। लखो शत्रुसेनै बली जौन सेनै ॥ महा बीर माद्री तनय दोउ देखो। न जानो इन्हैं बाल एकाल लेखो ॥ लखौ सात्यकै धृष्टद्युम्नादि बोधै। अहै को सहै आसु जो तासु क्रोधै ॥ लखो पार्थके बाणको जाल जैसो। नहीं कालके गालको साल ऐसो ॥

दोहा ॥

शल्य कर्णतें इमि कह्यो जौलगि वचन गंभीर। तौलगि संसप्तकनसों लरि पारथ रणधीर ॥
शस्त्र समूह विदारि सब वर बाणन बाणैत। बधि विचलाय चला जितै रहो करणधाकैत ॥

सोरठा ॥

भूप सुनो तेहिकाल तुमुल युद्ध सब ठौरमैं। होत भयो विकराल पृथक् पृथक् कवलों कहैं ॥
यह सुनि पृथ्वीप कह्यो कर्ण तहं किमि लरो। सो कछु हे कुलदीप यथा लरे सम पुत्र सब ॥

चौपाई ॥

सुनि धृतराष्ट्रभूपकी बानी। कहत भयो संजय अनुमानी ॥ धृष्टद्युम्न आदिक पांचालन। देखि सूतसुत अरिदल घालन ॥ गरुड़ चलै अहिगण पै जैसे। तिन पहं चलो वेगसों तैसे ॥ कर्णहि लखि ते सब भट नायक। घिरे वेगसों वर्षत शायक ॥ दुन्दुभि शङ्ख आदि सब बाजे। तेहि क्षण तहां दुहूं दिशि साजे ॥ बढ़ि बढ़ि सुभट प्रचारण लागे। आयुध घने प्रहारण लागे ॥ करि अतिशै विक्रम तेहि पलमें। सूतज पैठि पाण्डवी दलमें ॥ क्षणमें वध्यो प्रभद्रक दलके। सतहत्तरि योधा बरबलके ॥ भट पचीस अति रथी गणाए। पांचालन यमलोक पठाए ॥ चेदि नृपति के अगणित योधन। वधत भयो करि धनु विधि शोधन ॥ लाघव करत वर्षि शरनीके। काटि असंख्यन शर सबहीके ॥ भानुदेव कहं यमपुर दीन्हो। चित्र सेनकहं बिनु शर कीन्हो ॥ सेना विन्दहि बधि अति रोखो। तब नहिं वध्यो मारि शर चोखो ॥ बधिभट सूरसेन कुलदीपहि। व्यथित कियो पाञ्चाल महीपहि ॥ सो लखि कोपि रथी दश टूटे। वर्षत विशिख कर्णसों जूटे ॥ हनि दश बाण तिन्हैं बधि क्षणमैं। बिलसो कर्ण काल सम रणमैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

सत्यसेन बलवान अरु भट सुषेण रणधीर। सुवन कर्णके ते रहे युग दिशि रक्षक वीर॥
षष्ठरक्ष जेठो सुवन हो वृष सुवन अमान। नेता धनु सन्धान सब ज्ञाता शस्त्र विधान॥

सोरठा ॥

निजदल मर्दत देखि उतके भीमादिक सुभट। बध करिबो अवरेखि भिरे आय अतिवेगसों॥

चौपाई ॥

तिन कहं देखि धनुष टङ्कारी। भीमहि वीर सुषेण प्रहारी॥ भल्ल प्रचारि काटि धनु तासू। मारत भयो सात शर आसू॥ तुरितहि भीम और धनु गहिकै। शर हनि काटि धनुष थिरु कहिकै॥ दश शर तासु गात मैं हनिकै। कर्णहि हन्यो तिहत्तरि गनिकै॥ बध्यो भानु सेनहि हनि शायक। भीम विदित सुभटन को नायक॥ अगणित भटन भूमि पैं डास्यो। दुश्शासनहि तीनि शर मास्यो॥ कृप कृतवर्मा के धनु नोखे। काटि हन्यो बहु शायक चोखे॥ षट शर सौबलके तन दीन्हो॥ विरथ उलूक पतत्रिहि कीन्हो॥ भानुसेन सुतको बध देखी। शोकाकुल ह्वै कर्ण विशेखी॥ काटि भीमको धनु अति गाढ़ो। हन्यो तीनि शर कहि रुज ठाढ़ो॥ तुरितहि भीम और धनु लीन्हो। हन्यो सुषेणहिं शरवर चीन्हो॥ भिरि सुषेण को काटि शरासन। बरषो विशिख भीम अरि नाशन॥ सुवन सुषेणहिं अर्दित लखिकै। कर्ण कोपि रक्षण अभि लखिकै॥ करषि कठिन कोदण्ड अधीमहि। मास्यो बाण तिहत्तरि भीमहि॥ धनु गहि वीर सुषेण अवरजो। नकुलहि पांच बाण हनि गरजो॥ ताकहं वीस बाण अनियारे॥ हन्यो नकुल गिरि बेधन हारे। तहं सुषेण थिरु थिरु थिरु भनिकै। बाण इग्यारह नकुलहि हनिकै॥ अर्ध चन्द्र शायक हनि आसू। दीन्हो काटि शरासन तासू॥ तुरित नकुल गहि और शरासन। हन्यो सुषेणहि नव शर नासन॥ फिरि सुषेण के सूतहि हति कै। धनु काढ्यो करलाघव अतिकै॥ तब सुषेण धनु और सुधास्यो। शायक साठि नकुल कहं मास्यो॥ सहदेवहि षट शर हनि हरषो। तथा नकुल तापहं शर बरषो॥ करलाघव करि करि धनु कर्षे। दोऊ दोउन पै शर बर्षे॥

दोहा ॥

यहि प्रकार अति युद्ध तहं कीन्हो नकुल सुषेन। तिमि बढ़ि सात्यकिसों भिरे बली वीर वृषसेन॥
बाण वर्षि वृषसेनके सूतहि बधि तेहि ठौर। धनुध्वज काटि बध्यो हयन सात्यकि भट शिरमौर॥

सोरठा ॥

तुरित तौन रथ त्यागि चलो खड्ग गहि कर्ण सुत। मारि बाण पगपागि सात्यकि काढ्यो खड्गसों॥

चौपाई ॥

विरथ विधनु वृषसेनहि देखी। दुश्शासन अनरथ अवरेखी॥ सादर तेहि निज रथ पहं लैकै। गयो अनत चलि मन निर भैकै॥ फिरि वृषसेन सुरथ पहं चढ़िकै। भीमहि हन्यो साठि शर बढ़िकै॥ हन्यो द्रौपदेयन के तनमैं। तीक्षण बाण तिहत्तरि क्षणमैं॥ पांच बाण सहदेवहि हनिकै। नकुलहि हन्यो तीस शर गणिकै॥ शतानीक कहं सात सुशायक। हन्यो शिखण्डिहि दश दृढ़ बायक॥ धर्म भूपतिहि शत शर मास्यो। इतर नृपन बहुबाण प्रहास्यो॥ धनु कर्षत घन सदृश ननर्दत। भो वृषसेन शत्रुदल मर्दत॥ सात्यकि दुश्शासन सों भिरिकै। शायक वरषि चक्र सम फिरिकै॥ क्षणमैं विरथ विधनु करि तरजो। भ्रूमधि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनि बाण हनि गरजो ॥ सुरथ और पै चढ़ि दुश्शासन । शर वर्षत भो करषि शरासन ॥ तेहि क्षण धृष्टद्युम्न रणचारी । कर्णहि दश शर हन्यो प्रचारी ॥ भीम नकुल सहदेव शिखंडी । शतानीक सात्यकि अरि दंडी ॥ द्रौपदेय अरु धर्म महीपति । और अनेक रथी अवनीपति ॥ कर लाघव करि करि धनु करषे । बाण समूह कर्ण पहं वरषे ॥ तहां कर्ण अति विक्रम कीन्हों । सबके तन दश दश शर दीन्हों ॥

दोहा ।

मंडल सम कोदंड करि अनुपम विधि दरशाय । दियो पांडवी सैन मधि अविरल शायकछाय ॥ मोहित करि अगणित भटन रथी तीनिशत मारि । धर्मभूपपहं चलतभो अचले सुभटनटारि ॥

सोरठा ॥

इतके भट तेहिकाल कर्णहिं रक्षत चलतभे । उतके सुभट कराल धर्महि रक्षत भिरत भे ॥ धर्म भूप पहं जात कर्णहि इमि आड़े सुभट । औषध मंच विभात व्याधिहि रोकत भांति जेहि ॥

तोमर छन्द ॥

फिरि कर्ण भट दृढ़ घाय । शरसेत अविरल छाय ॥ सब पांडवन विचलाय । तिमि चढ़ो दीरघ काय ॥ जिमि रोग कर्मज आय । नहिं घटत औषध पाय ॥ फिरि भीम आदिक बीर । धनु कर्षि बढ़ि धरि धीर ॥ लरि भए आड़त ताहि । इमि परो सुणि सो चाहि ॥ प्रभु कृपाते जेहि भाय । दुख कर्मजो घटि जाय ॥ करि कर्ण बड़ व्यवसाय । नहिं सको धर्महि पाय ॥ जिमि योग विदको प्रान । नहिं लहत काल अमान ॥ तेहि ठौर नृप तेहि काल । भो युद्ध अति विकराल ॥ दुहुं ओर के भट जूटि । सब विजय निज निज ऊटि ॥ तिमि लरे विक्रम भौन । नहिं वनत भाषत जौन ॥ तहं निकट कर्णहि हेरि । नृप धर्म भाष्यो टेरि ॥ तू गहत जेहि बलगर्व । अब प्रगट करु सो सर्व ॥ तूं दुष्ट ताको धाम । बड़ किए कुत्सित काम ॥ अब दर्प तेरो तूरि । मैं देत हौं करि दूरि ॥ इमि भाषि धर्म नरेश । भो हनत दश शर वेश ॥ तब भूपतिहि दश बान । भो हनत कर्ण अमान ॥ तेहि पल युधिष्ठिर भूप । भो कुपित रुद्र स्वरूप ॥

दोहा ॥

धनुष कर्षि उरमधि हन्यो शायक बज्र समान । तासों वेधित ह्वै भयो मूर्च्छित कर्ण अमान ॥ तेहि क्षण ममदलमधि गई हाहा धुनिअधिकाय । तुरित चेति सूतज लगो वर्षण शरसमुदाय ॥

सोरठा ॥

चक्ररक्ष हे तासु चन्द्रदेव अरु दंडधर । तिन्हैं वधत भो आसु शर क्षुरप्रसों काटि शिर ॥

चौपाई ॥

भूपति हनत भयो तेहि क्षण मैं । शायक तीस कर्ण के तनमैं ॥ शायक तीनि सुषेणहिं मास्यो ॥ सत्यसेन कहं तीनि प्रहास्यो ॥ नव्वे बाण शल्यकहं हनिकै । कर्णहि हन्यो तिहत्तरि गनिकै ॥ जितने रहे कर्ण के रक्षक । सब कहं हन्यो तीनि शर दक्षक ॥ सो लखि बिहंसि कर्ण धनु धारी । हन्यो साठि शर नृपहि प्रचारी ॥ यह निरेखि उतके भट रूरे । भिरे कर्ण सों अमरष पूरे ॥ सात्यकि चेकितान नर नायक । पांड्य युयुत्सु शिखंडी चायक ॥ भीम नकुल सहदेव ससाजा । द्रौपदेय जन्मेजय राजा ॥ वर्षत भए कर्ण पहं शायक । अरु बाराह कर्ण दृढ़ घायक ॥ तहां कर्ण अति गौरव लीन्हो । ब्रह्म अस्त्र वर प्रगटित कीन्हो ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तासों कढ़ि कढ़ि बाण हजारन। लगे पांडवी सैन संहारन ॥ हनि क्षुरप्रशर धर्म नृपतिको। काट्यो धनुष हेम मणि अतिको ॥ हनि नव्वे शायक बर पणको। काट्यो कवच भूपके तनको ॥ तब अति रिसि करि नृप रणचारी। मार्यो शक्ति वज्र सम भारी ॥ सूत सुवन तब धनु विधि ठाट्यो। तामधि सात बाण हनि काट्यो ॥ भूपति चारि बाण अनियारे। तासु हिये भू भुज मधि मारे ॥

दोहा ॥

तेहिक्षण सूतज धनुष धरकरिअद्भुत सन्धान। नृपतियुधिष्ठिर पहं भयो वर्षतअविरलबान ॥
काटि धनुष ध्वज छत्रअरु तिलमित करि रथ सर्व। भूपतिके तनहनतभोतीनिबाणगहि गर्व ॥
तेहिक्षण भूपति बिकल ह्वै औरसुरथपैंजाय। युद्ध त्यागि फिरि चलतभो चपल हयन हंकवाय ॥

सोरठा ॥

कर्ण सुरथ बढ़वाय पकरणचाह्यो भूपतिहि। सो लखि शल्य सचाय कह्यो कर्ण मति नृपहि गहु ॥

चौपाई ॥

पाणि लगै हौ नृपके तनमैं। तौ भखित करिहै एहि क्षणमैं ॥ यह सुनि कर्ण त्यागि मन भावत। भो एहि विधिकै बचन सुनावत ॥ धीर धरम क्षत्रियको तजिकै। भगो जात कत फिरत न लजिकै ॥ अब मति कबहुं आइ मम सन्मुख। हुजो युद्ध करण कहं उनमुख ॥ इमि कहि नृपहि त्यागि पण गुणिकै। लागो दलम दैन धनु धुनिकै ॥ धर्म भूपतिहि विचलत देखो। भगे सुभट अनरथ अवरेखो ॥ इतके सुभट मोदि शर छावत। अगरि चले दुन्दुभि बजवावत ॥ इतनेमैं भूपति थिरि ज्वैकै। अति रिसि गहि अमरषसों ग्वैकै ॥ चढ़ि रथपैं श्रुतिकीर्त्ति नृपतिके। बोलो बचन पराक्रम अतिके ॥ फिरि फिरि लरि अरि दल बधि सादर। जय यश लेहु भए कत कादर ॥ धर्म भूपकी सुनि यह बानो। फिरि फिरि उतके भट अभिमानी ॥ तोमर भल्ल शक्ति शर बर्षत। दरशत अरिन बीररस सरसत ॥ भिरत भए मम दलसों तैसैं। मारुत भिरै मेघसों जैसैं ॥ नृप तेहिसमय भयो रण गाढ़ो। जैसे लगै विपिनिमैं डाढ़ो ॥ हय गज पैदर रथी सोहाए। करत भए विक्रम मनभाए ॥ नाम गोत विक्रम कहि कहिकै। भे भट लरत ओज गहि गहिकै ॥

दोहा ॥

ह्वै वेधित तन त्यागिकै चले सुभट समुदाय। जोहि तिन्हैं लै असुरा याननपैं बैठाय ॥
यहप्रतक्ष लखिलखिसुभट मरिबोईअभिलाषि। अतिविक्रमकरि करिलरेभागुनबचतनभाषि ॥
भीषमसरिता रुधिरकीउमगि चली तेहिकाल। रुण्डमुण्ड करपगलसे जिमि जलजंतु कराल ॥

सोरठा ॥

सुनु भूपति बलऐन भीमादिक परभटनसों। मर्दित ह्वै मम सैन भई पराजित तेहि समै ॥

बसुकला छन्द ॥

निजदल विशेखि। विचलत निरेखि ॥ तो सुवन भूप। ह्वै बिगत रूप ॥ बहुभांति टेरि। फिरि चलो फेरि ॥ तब सूतसून। करि क्रोध दून ॥ नृपशल्य ताहि। इमि कह्यो चाहि ॥ जहं भीम वीर। तहं चलो धीर ॥ यह सुनि नरेश। हय हांकि वेश ॥ जहं रहो भीम। तहं गो अधीम ॥ सूतजहि देखि। भट भीम तेखि ॥ निज सूत ताहि। इमि कह्यो चाहि ॥ शल्यहि निहारि। चरिओ विचारि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

धृष्टद्युम्न अरु सात्यकी सों फिरि कह्यो विचारि। तुम रहियो रक्षत सदा धर्मनृपहि पणधारि ॥
आवत मोपहं कर्ण मैं तासों भिरिकरियुद्ध। आजु याहि बधि करत हौं निज जयकी विधि शुद्ध ॥

सोरठा ॥

इमिकहिधनुटङ्कारि घनसमगरजतसुभटमणि। बर्षतविशिख प्रचारि चलोसूतसुतके निकट ॥

चौपाई ॥

भीमहि आवत लखि अनुमानी। शल्य कर्णसों कह्यो सुबानी ॥ देखु कर्ण आवत एहि पलमैं। बर्षत विशिख भीम मम दलमैं ॥ काल कराल सदृश भय भारत। गणे भटनको धीरज टारत ॥ अबलों तासु रूपएहि विधिको। लख्यो न जगत जीतकी सिधिको आवत तो ॥ बधको पण कीन्हे। लरेऊ बाचिबेकी विधि लीन्हे ॥ सुनि यह बचन कर्ण हंसि बोलो। भूपकहे तुम बचन अतोलो ॥ है अतिबली वृकोदर भूपर। है अति गहे क्रोध मम ऊपर ॥ यह रचि गुप्त कीचकहि आदिक। बध्यो घोर बहु बीर प्रमादिक ॥ है यह प्रबल बीर हम जानत। पै निज निकट तृणै सम मानत ॥ एहि करि बिरथ विमुख करि देहौं। तब अर्जुनहि मारि जय लेहौं ॥ इमि कहि कह्यो चपल करि घोरे। सादर चलो भीमके धोरे ॥ यह सुनि शल्य प्रतोद उठायो। करि अति चपल तुरंग बढ़ायो ॥ धनु टङ्कारत बढ़ि सहसेना। बजवावत दुन्दुभि जगजेना ॥ भट राधेय प्रमेय बिसारद। अति अजेय परदल भयभारद ॥ शर बर्षत घन सदृश ननर्दत। गो जहं रहो भीम दल मर्दत ॥ तेहि विधि भीमसेन धनु करषत। भिरो सन सह बढ़ि शर बरषत ॥ दोऊ बिदित बीर धनुधारी। दोऊ महाप्रबल रणचारी ॥ अद्भुत भांति शरासन करषे। दोऊ दोउनपै शर बरषे ॥ काटि कर्णके अगणित शायक। नव शर हन्यो भीम दृढ़घायक ॥ काटि भीमको धनुष अनोखो। मास्यो कर्ण बाण अतिचोखो ॥ गहि धनु और भीम रणचारी। मास्यो ताहि बाण अति भारी ॥ बाणपचीस कर्ण तेहि मास्यो। रचि शायकको जाल प्रचास्यो ॥ दोऊ पुरुषसिंह धनुधारी। दोऊ अति दृढ़ बाण प्रहारी ॥ दोऊ अति करलाघव कीन्हे। दुहुंदिशि बाणजाल रचि दीन्हे ॥

दोहा ॥

अति करलाघव करितहां भीम विदित बलवान। कर्ण बीरके उर हन्यो शायक बज्र समान ॥
तासों बेधित ह्वै करण रथपैं परो अचेत। सो लखि भागो सुरथ लै शल्य सुबुद्धिनिकेत ॥

सोरठा ॥

इमि कर्णहि बिचलाय बीर वृकोदर विदित भट। मम सेना समुदायमर्दन लागो वर्षि शर ॥

चौपाई ॥

भीमसेनको यह रण कारज। सुनि इमि कह्यो धृतराष्ट्र आरज ॥ चाहतदैव होत सो ऐसे। जीतै भीम कर्णकहं जैसे ॥ संजय पाण्डव सब पाञ्चालन। मारिहि एक कर्ण शर जालन ॥ एहिबिधि कहत रहो दुर्योधन। जीत्यो ताहि भीम अतिक्रोधन ॥ सुनु संजय लखि अचरज ऐसो। ममसुत कीन्हो कारज कैसो ॥ संजय कह्यो भूप तेहिक्षणमें। दुर्योधन हो व्याकुल मनमें ॥ कह्यो सोदरणसों पण धरिकै। लरो भीमसों विक्रम करिकै ॥ यह सुनि क्रांथ विवित्सु सुबीरा। बिकट युतर्वा दुर्धर धीरा ॥ सम उपनंदक नंद सुबाहू। दुःप्रधर्ष सलगु निजलाहू ॥ धनुग्राह दुर्मद सह नामा। बातबेग जलसन्ध सुकामा ॥ ए सिगरे तो सुत दृढ़ घायक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले भीमपहं वर्षत शायक ॥ मखकृत द्विजके करसों जैसें । आहुति चलै अग्नि मुख तैसें ॥ दुर्योधन भूपतिके प्रेरे । ए सब चले भीमके नेरे ॥ अगणित बाण काटि इन सबके । भीम बर्षि शायक वरफवके ॥ भट बिबित्सुको करि शिरछेदन । सहय बध्यो जयशब्द निवेदन ॥ बधि बिकटहि नन्दहि बधि डारो । उपनन्दहि बधि प्रलय पसारो ॥ बधि क्रांथहि यमपुरगत करिकै । अगणित भटन बध्यो पण धरिकै ॥ यह लखि काहुहि बचत न जाने । ह्वै ब्याकुल हत शेष पराने ॥ मन दै सुनो भूप तेहिपलमैं । हाहाकार मचो मम दलमैं ॥ तौलगि चेति कर्ण रणचारी । फेरि भीमसों भिरो प्रचारी ॥

दोहा ॥

कर्ण भीम अति भीमभट भूपति भिरि तेहि ठौर । घोरयुद्ध कीन्हे महा गहि अति गुरता गौर ॥
दोऊ दोउन पैं दए बिरचि शरनको जाल । दोऊ काटे दुहुनकी भूरि शरनकी माल ॥

सोरठा ॥

करि करलाघव तब कर्ण हन्यो तन भीमके । अतितीक्षण नवपच भीम सातशर तेहि हन्यो ॥

चौपाई ॥

कर्ण तहां अति तुरता करि कै । बर्षो बिशिख चक्र सम चरि कै ॥ तेहि बिधि भीम शरासन करषो । बाण समूह कर्ण पैं बरषो ॥ अति करलाघव करि दृढ़घायक । भीमहि कर्ण हन्यो दश शायक ॥ घन सम गरजि सिंहसम डाट्यो । भल्ल प्रहारि शरासन काट्यो ॥ तजि सो धनुभटभीम अदूषित । झेल्यो परिघ हेम मणि भूषित ॥ असनि समान देखि तेहि आवत । कर्ण काटि भो मगहि गिरावत ॥ तब गहि धनुष भीम रण करकस । बर्षत भयो बिशिख बहु तरकस ॥ भो अति घोरयुद्ध तेहिक्षणमैं । देखि सुमन बिस्मित भे मनमैं ॥ भीमहि कर्ण तीनि शर मारो । तहां भीम अति बिक्रम धारो ॥ बज्र समान बाण अति तुरमैं । मारत भयो कर्णके उरमैं ॥ भिदि तासों क्षण मोहित रहि कै । बरष्यो बिशिख भागु मति कहिकै ॥ केतु काटि अति रिसि सों राट्यो । धनुष काटि सारथिहि निपाट्यो ॥ भीम बिरथ ह्वै सोरथ तजिकै । चलत भयो गहि गदा गरजि कै ॥ जाय बेगसों द्विरद गरटमैं । बधन लगो हनि गदा करटमैं ॥ सहसारोह सातशत हाथी । बधि शत रथिन बध्यो सह साथी ॥ सहसन पैदर जूथ संहारो । क्षणमैं तेहिथल प्रलय पसारो ॥

दोहा ॥

भीम भानुसों तपित ह्वै सुनो भूप ममसैन । चरम सरिस सिकुरत भई त्यागि बीररस चैन ॥
सो दल बिचलत देखि बढ़ि रथी पांचशत धीर । लगे दृकोदर वीर पहं बर्षत अबिरल तीर ॥
चपल चक्र सम चरि तहां गरुई गदा प्रहारि । भीम निमिषमैं बधि तिन्हैं दयो भूमिपैं डारि ॥

सोरठा ॥

सो लखि शकुनि नरेश भयो बढ़ावत भीमपहं । तीनि हजार सुबेश तुरग सवार उदार भट ॥

गुरुतोमर छन्द ॥

अति बेगसों ते जाइकै । भे लरत शायक छायकै ॥ सब पैंतरन पैं घूमि कै । भट भीम सबसों झूमि कै ॥ चरि गरजि गरजि प्रचारि कै । अति गुरुगदाहि प्रहारिकै ॥ पग पाणि अगणित तोरि कै । उर शीश अगणित फोरिकै ॥ सब तुरगसादिन मारि कै । अरु घने सुभटन टारिकै ॥ फिरि और रथपै राजिकै । भो बाण बर्षत गाजिकै । भट कर्ण तौ लगि जूटि कै । बढ़ि धर्म नृपसों जूटिकै ॥ अति कठिन शायकबाहि कै । भोबधतसूतहिचाहिकै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो सुभट उतके देखिकै। बढ़ि भिरे अतिशय तेखि कै ॥ भट भीमसों गति हेरिकै। कित जात इत फिरु टेरिकै ॥ चरि चक्रके सम नांचि कै। बर बाण बरषो जांचिकै ॥ तब कर्ण सब कहं त्यागिकै। फिरि महा रिसिसों पागि कै ॥ ह्वै चपल सुरथ अधीम पैं। भो बाण बर्षत भीमपैं ॥ सो देखि सात्यकि कोपि कै। भो बाण बर्षत चोपि कै ॥ तिमि धृष्टद्यु-म्नहिं आदि कै। बढ़ि भिरे परम प्रमादिकै ॥ इत तनय तो भदि औतमौ। हार्दिक्य सौबल गौतमौ ॥ वृषसेन आदिक बीर हे। ते किये युद्ध गंभीर हे ॥ बर शक्ति तोमर बाण की। अरु गदा भल्ल कृपाणकी ॥ अरु परिघ पट्टिश आदिकी। भरि किये युक्ति अनादिकी ॥ तेहि समय संगर घोरभो। थिरु मारु मास्यो सोरभो ॥ महि गगन आयुध पूरिगे। मरि सुभट अगणित दूरिगे ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

बही शोणितोदा नदी ह्वै गहीरी। गहे बेग गाढ़ी नहीं नेकु धीरी ॥ बहैं रुण्ड सुण्डैं कटे पाणि सुण्डैं। सुबेधे हिये के मरे तासु भुण्डैं ॥ लसैं जाइ सेते बसैं भारती के। खसे केतु सेते तुसे तारती के ॥ बहैं बाण भल्लैं गदा भिन्दि पालैं। मनो कालके गालके खाल चालैं ॥

दोहा ॥

बढ़िबढ़ि भट दुहुदलनके मिलियुग समुद समान। अति बिक्रमकरिकरितहांकिए घोरघमसान ॥
तेहिक्षण भानु न लखि परे शर शक्तिनकी छांह। रहो मारिवोई जगत सबहीके मनमांह ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

किते आपने नामऔ गोत बोलैं। हनैंबो हनैं बाहनैंहांकि ओलैं ॥ सहैंसेल्ह सूधेधसैंसेल्ह झेलैं। महालालसे कालसे युद्ध केलैं ॥ कटे सुण्ड केते अड़े रुण्ड लोटैं। गिरैं औ उठैंको उठैं भूखरोटैं ॥ अमन्दी भए यो सुछन्दी बिहारैं। अदन्दी अदन्दीन द्वंदीन मारैं ॥ जुरे भूत पीशाच के यूथ हेलैं। चहूंघां चढ़े चाव चौगान खेलैं ॥ पियैं शोणितै औ भषैं मांस मेदैं। बली निर्बली औ भली भांति खेदैं ॥ हंसैं फेरि आनैं तिते रंग ठानैं। खुशी ह्वै खबीसैं करैं खान पानैं ॥ खसे उद्ध यो युद्ध ताठौर जैसो। लख्यो ना सुन्यो आजुलों और ऐसो ॥

मोरठा ॥

भूपमध्यदिन पाय एहि विधिको संग्राम भो। जोन सविधि कहि जाय कहो चाहि कबलों कहैं ॥

महिखरी छन्द ॥

उत जीति संसप्तकन पारथ कर्णकी दिशि जबचलो। तब फेरि संसप्तक सकल भिरि करत भे बिक्रम भलो ॥ भट नृप सुशर्महि आदि चौदहसहस अतिअनुपम गने। गुनि पूर्वको निज वैर तापहं भए बर्षत शर बने ॥ शर काटि अगणित पार्थ अगणितभटन बिनुकर पग करे। गत प्राण अगणित भटन करि करि रुण्ड सुण्डन महि भरे ॥ गज बाजि अगणित मारि महि पर डारि महि भीषम कियो। फिरि शङ्खध्वनि करि कर्णकी दिशि चलन गति मनमधिलियो ॥

दोहा ॥

तेहिक्षण संसप्तक सकल जीवन आशा त्यागि। वधिवो कै वधिजाइबे के पणसों मन पागि ॥
फिरि पारथ सों भिरि करे शायक दृष्टि प्रशस्त। घोर युद्ध तेहिक्षणभयो कहत नबनत समस्त ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाबिरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे कर्णपर्वणि द्वितीयदिनयुद्धेयुगयामसमाप्तिर्नामपंचमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

इबिधि व्यवस्था युद्धकी सुनि धृतराष्ट्र नरेश। संजय सों बूझत भए संजय कहो विशेश ॥
पारथ सों जेहि बिधि कियो संसप्तक गण युद्ध। यह सुनिकै संजय कह्यो नृप सुनिये सो शुद्ध ॥

चौपाई ॥

नारायण अरु कोशल बीरा। अरु संसप्तक भट रण धीरा ॥ जीवन की आशा तजि दीन्हें। भिरि अर्जुन सों अति रण कीन्हें ॥ बध बिचारि हियमें अति हर्षे। चहुं ओरसों शायक बर्षे ॥ तहं पारथ सब सुभटन डांटत। शक्ति शरासन शर असि काटत ॥ बली सुशर्मा नृप सों भिरिकै। बज्र भट बध्यो चक्रसम फिरिकै ॥ तहां सुशर्मा नृप धनुधारी। करत भयो विक्रम अति भारी ॥ दशशर हन्यो पार्थके तनमें। कृष्णहि तीनि हन्यो गुणि मनमें ॥ अति तीक्षण गुरु भल्ल सु धास्यो। सो ध्वजस्थ कपिके तन मास्यो ॥ लागे बाण कोपि कपि गरज्यो। सो सुनि सुभटन को हिय दरज्यो ॥ भीति पूरि भट मोहित ह्वैगे। सबके चेत पराक्रम ज्वैगे ॥ अचल भए भट पुष्पित बनसे। रहे मुहूर्त युद्ध नहिं मनसे ॥ ह्वै सह चेत लरन फिरि लागे। मरण मारिबे के पण पागे ॥ अगणित भट चहुं दिशि ते झुकिकै। बानन भिदत रहे नहिं रुकिकै ॥ रज्जु धुरा अरु ईषा गहि गहि। गे रथ पैं धरि बांधौ कहि कहि ॥ किते कृष्णके भुजन लपटि गे। किते पार्थ के गात चपटिगे ॥ कितने भट तुरगण कहं धरिकै। कीन्हे सोर मोद हिय भरिकै ॥

दोहा ॥

केशव भुज उलझारि तब सबकहं दए गिराय। पार्थ गिराए सब नकहं करि अतिशै व्यवसाय ॥
कृष्ण प्रतोद उठाय कै कीन्हें चपल तुरंग। तहं संसप्तक सुभट सब होत भए बदरंग ॥
लघुपातन शरवृष्टि करि तहं पारथ रणधीर। बधि डास्यो अगणित सुभट कर्ता युद्धगंभीर ॥

सोरठा ॥

अगणित भटन भजाय कहत भयो इमि कृष्णसों। इमिरथ धृतह्वै जाय छुटोन कोऊ आजुलौं ॥
प्रभुतो प्रभुता पूरि निज बिक्रम परसाद ते। इबिधि छूटि रहि दूरि लखो बधत सब शत्रु भट ॥

चामर छन्द ॥

यों सुभाषि पार्थ शङ्ख देवदत्त लै भले। कृष्णचंद्र पांचजन्य शंख बाद्य कै भले ॥ सैन ऐन में अचैनता महान पूरिकै। पार्थ चाप खैंचि ऐंचि बाणवृष्टि भूरिकै ॥ मारि डारि दए बीर धीर तीर जे रहे। तीरघात पीर पूरि भूरि दूरि ले रहे ॥ फेरि फेरि टेरि टेरि हेरि हेरि ते थिरैं। घेरि घेरि झेरि कै निशान सानसों भिरैं ॥

दोहा ॥

नाग अस्त्र तजि पार्थतहं दीन्हेंसब कहं बांधि। पादबन्ध ह्वै सुभट सब सकेन धनु बिधि साधि ॥
पादबन्ध करि पार्थतहं बध्यो असंख्यन वीर। देखि सुशर्मा नृपति तब कीन्हो क्रोध गंभीर ॥

सोरठा ॥

गारुड़अस्त्र महान तजत भयो अनुमानि तहं। लखिगरुड़न दुखदान नाग भगे भट छुटत भे ॥

चौपाई ॥

नागबन्धतें छुटि सब योधा। लरण लगे फिरि करि अवरोधा ॥ पट्टिश भल्ल शक्ति अनियारे। भिंदि पाल तोमर शर मारे ॥ गदा परश्वध बर्षण लागे। मारौ धरौ रटत पणपागे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहं पारथ अति धनुविधि डार्यो । तिनके शस्त्र अनेकनि काट्यो ॥ अगणित भटन कालवश कीन्हों । अगणित भट विनुकर करि दीन्हों ॥ अगणित भटन कियो विनु वाहन । अगणित भटन वध्यो जय चाहन । अगणित भटन शीश तकि मार्यो । अगणित के उर उदर विदार्यो ॥ अगणित धनु ध्वज छेदन करिकै । अगणित भटन वध्यो पण धरिकै ॥ अगणित योधन कियो पराजित । अगणित धर करि पगविनु राजित ॥ काट्यो शीशक शीश विचक्षण । अगणित वध्यो धनुर्द्धर दक्षण ॥ तेहिक्षण नृपति सुशर्मा तुरमैं । मार्यो बाण पार्थके उरमैं ॥ फिरि अति तीक्षण तीनि सुशायक । हन्यो पारथहि नृप दृढ़ घायक ॥ तिन बाणन बेधित ह्वै पारथ । मूर्च्छित भयो भूलि चरितारथ ॥ सो लखिकै अति आनद लहि लहि । पारथ वध्यो गयो इमि कहि कहि ॥ इतके सुभट शोर अति कीन्हें । बाणन नभ छादित करि दीन्हें ॥ भेरी शंख तूर बजवाये । कहे आजु अनुपम जय पाये ॥

दोहा ॥

तुरित चेति पारथ तहां करि शर धनुष सयोग । ऐन्द्रअस्त्रको करतभो अतिशय प्रबल प्रयोग ॥
सहसन शर तासों प्रगटि महा भयानक रूह । ह्वै पूरित सब सैनमधि मारे सुभट समूह ॥
शस्त्रचलावनको भटन लह्यो न फिरि अवकाश । ह्वै मुहूर्त्तमो होतभो अयुत भटनको नाश ॥

तोमर छन्द ॥

बधि अयुत सुभट महान । भो समित अस्त्र अमान ॥ तब रहे जे हत शेष । ते वर्षि शस्त्रविशेष ॥ ते किए अति घमसान । नहिं चहे राखन प्रान ॥ दश सहस सुरथी गूढ़ । चय सहस द्विरदारूढ़ ॥ अति किए संगर तब । नहिं बनत भाषत अब ॥ तहं पाण्डुनन्दन वीर । अति कियो युद्ध गंभीर ॥ तो सुवन सो सुधि पाय । बहु सुभटके समुदाय ॥ तहं भयो भेजत भूप । जे प्रबल भीषमरूप ॥

दोहा

नृप तेहिक्षण सब सैन मधि भो अति दारुण युद्ध । मारु मारु मार्यो मरो रहीपूरि धुनिउद्ध ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

भयो घोर संग्राम सुग्राम तेहां । लरो पार्थ संसप्तकार्थार्ज जेहां ॥ लरो कर्ण सेनार्णवा भर्ण तैसो । लरो भीम जै वर्ण लै पर्ण ऐसो ॥ तथा कृतवर्मादि शर्मा सुशर्मा । अभर्मा महा घोर कर्मा सुधर्मा ॥ भरे वीर पर्मा सहैं बाण धर्मा । गहैं शस्त्र कर्मा करैं गात वर्मा ॥

मोरठा ॥

एहिविधि को संग्राम भयो तीसरे याम तहं । शोणित नदी अचाम बही फेण मेदावती ॥

दोहा ॥

नृप बीतत युग याम तहं कृप आदिक रणधीर । भिरि भीमादिक भटनसों किए युद्ध गंभीर ॥

चौपाई ॥

कृपहि निरेखि शिखण्डी योधा । शर वर्षत कीन्हों अवरोधा ॥ गौतम ता पहं शर झरि करिकै । दश शर हनत भयो पण धरिकै ॥ शायक वर्षि शिखण्डी क्षण में । हन्यो सात शर कृपके तनमें ॥ तेहि क्षण कृपाचार्य्य अति रिसि कै ॥ द्रुपद तनय पहं बाण बरषि कै ॥ पलमें विरथ विधनु करि दीन्हों । तब असि चर्म शिखण्डी लीन्हों ॥ करत पैतरे असि फरकावत । चलो विप्र पहं ओज बढ़ावत ॥ कृप तजि सहसन शर पग पग में । बाण जाल रचि दीन्हों मगमें ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो लखि धृष्टद्युम्न रणचारी। चलो बेगसों कृपहि प्रचारी ॥ कृप पहं जात करत शर छाजा। लखि आयो कृतबर्मा राजा ॥ तब सह सैन धर्म नृप तच्छण। कृप पहं चलो शिखण्डिहि रच्छण ॥ कृप पहं जात भूपतिहि देखी। आयो द्रोण तनय अवरेखी ॥ तब सहदेव नकुल तहं डगरे। तेहि आयो तो सुत गण अगरे ॥ सो लखि चलो भीम दृढ़घायक। रोक्यो ताहि कर्ण भट नायक ॥ चित्रकेतुको सुत रणचारी। भूप सुकेतु बिदित धनुधारी ॥ जाय तहां गौतमहिं प्रचारो। शायक बर्षि बाण बज्र मारो ॥ तब च्छण पाय शिखण्डी भागो। गो निज दलमधि भयसों पागो ॥

दोहा ॥

नृप सुकेतु गौतमहिं हनि तीच्छण सत्तरि बाण। धनुष काटि सूतहि हन्यो शायक बज्र समान ॥
तबकृपरिसि करिधनुषगहि तीसबाण तेहि मारि। शर च्छुरप्रसों काटिशिर दियो भूमिपैडारि ॥

सोरठा ॥

कृतबर्मा च्छितिपाल धृष्टद्युम्नए भिरि तहां। कीन्हें युद्ध कराल घने शरणके जाल रचि ॥

चामर छन्द ॥

धृष्टद्युम्न आठ बाण हारदिक्य को हन्यो। हारदिक्य ताहि बाण जालमें किए बन्यो ॥
धृष्टद्युम्न काटि बाण जाल यादबार्य के। सोरकै अघोर बाण मारि घोर कार्य के ॥ बाण मारि सूत तासु डारि भूमि पै दए। अश्वभीत पूरि भागि दूरि जान लैगए ॥ धृष्टद्युम्न जोति ताहि कौरवीदलै दल्यो। बाणजाल काल गाल शाल शोच लै चल्यो ॥

चौपाई ॥

सदल धर्म भूपति सों भिरिकै। रथ पर बिप्र चक्र सम फिरिकै ॥ बाण जाल सों गोपित कीन्हों। प्रलय काल रोपित करि दीन्हों ॥ सात्यकि आदि बिदित भट एकौ। नहिं करि सके पराक्रम नेकौ ॥ सबके काटि अनगिने शायक। वध्यो असंख्यन भट दृढ़घायक ॥ तबते सब गहि अति उतकर्षा। किए द्रोण सुतपै शर बर्षा ॥ सात्यकि बत्तिस बाण प्रहास्यो। धर्म नृपति सत्तरि शर मास्यो ॥ तीन बाण मारो श्रुतकर्मा। सात हन्यो श्रुतकीर्त्ति सुधर्मा ॥ तब द्विज करि बाणन को दुर्दिन। सब कहं हनत भयो शर अनगिन ॥ अबिरल बाण बर्षि पणधरिकै। सब सुभटन कहं मोहित करिकै ॥ अगणित हय गज भट बधि डास्यो। पर सेनामें प्रलय पसास्यो ॥ धनुष बेद बिधिके मद मात्यो। सात्यकि के सारथिहि निपात्यो ॥ सो लखि धर्म भूप भय आन्यो। द्विजसों काहुहि बचत न जान्यो ॥ अरुण नयन करि बदन अनैसो। भाषत भयो बिप्रसों ऐसो ॥ रे द्विज पुत्र त्यागि निज कारज। पर गुण गहि कत होत अनारज ॥ मम सुभटन सब कौरव गण सों। दे अब लरण उचित गुनि मनसों ॥ तुम मम बंधु बंधुता राखे। करो युद्ध मम जय अभिलाखे ॥ यह सुनि द्विजसुत हंसि चुप रहिकै। लरण लगो कछु ऋजुता गहिकै ॥

दोहा ॥

तजि सन्मुख द्विज पुत्रको धर्मभूप सहसैन। ममसेना मर्दन लगो बिदित बुद्धि बलऐन ॥
सृंजय अरु पांचाल दल मधि धसि कर्ण कराल। प्रलयकाल रोपित कियो बरनो बीर बिशाल ॥
तुवसेना मधि भीम धसि बसिलसि रुद्रसमान। संसप्तकमधि पार्थतिमि किए घोर घमसान ॥
दलमर्दत माद्री सुतन लखि दुर्योधन भूप। अति बिक्रम करि लरि तिन्हें करतभयो गतरूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

अर्दित तिन्हैं निरेखि धृष्टद्युम्न सेनाधिपति । शर वर्षत अवरेखि भिरो सुयोधन नृपतिसों ॥

चौपाई ॥

ते युग बीर घने शर वाहक । जीतन शील यशी जय चाहक ॥ भूरि पराक्रम कै बल सागर । भीषम युद्ध किये भट नागर ॥ बार अनेक भए धनु काटत । शायक काटि भए महि पाटत ॥ गातन मैं शर भूरि हने तकि । भागु न भागु न बांचत यों बकि ॥

दोहा ॥

अति विक्रम करि द्रुपदसुतशायक वर्षि अनेक । धनुषकाटितोसुतनृपहिविरथ कियोगहिटेक ॥
नृपहि बिरथ लखि दंडधर निज रथपर बैठाय । अनत जाय परभटनसों लरतभयोशरछाय ॥

सोरठा ॥

तेहि क्षण सूतज बीर धसि पांचालन भटन मधि । बधत भयो रणधीर षोड़श बरणेअतिरथिन ॥

चौपाई ॥

अगणित वध्यो तुरग अस वारण । अगणित वध्यो भटन सह वारण ॥ अगणित पैदर यूथ संघास्यो । अगणित ध्वज रथ रथिन विदास्यो ॥ जिमि दावानल बिलसै वनमैं । तिमि तहँ कर्ण लसत भो रणमैं ॥ जे गहि गर्व सामने आये । ते सब भए काल के खाये ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमैं । हाहाकार मचो परदल मैं ॥ लखि अर्दित पांचाली सेना । सदल धर्म भूपति जगजेना ॥ द्रौपदेय जन्मेजय राजा । सहदेव नकुल सपुत्र ससाजा ॥ धृष्टद्युम्न ए सिगरे योधा । किए सूत सुतको अवरोधा ॥ भो अति घोर युद्ध तेहि ठाईं । अब सब कहत न बनत गोसाईं ॥ यथा कर्ण परदल मधि धसिकै । पास्यो प्रलय रुद्र सम लसिकै ॥ तिमि मम दलमधि धसि रण कर्कस । पास्यो प्रलय भीम करि शर्कस ॥ बधि अगणित हय रथ गजगामी । रच्यो रुधिरको नद जय कामी ॥ तिमि कृतवर्मा सात्यकि आदिक । दुहुं दिशिके सब सुभट प्रमादिक ॥ रोपे प्रलय दुहुं दिशि माहीं । सो विधिवत कहि निबरत नाहीं ॥ संसप्तकन जीति उत पारथ । कह्यो कृष्णसों गुणि निज स्वारथ ॥ सूत सुवन मम सैन संहारत । सादर तहां चलो भय भारत ॥ संसप्तक हत शेष पराने । अब न सकत फिरि अति भय साने ॥

दोहा ॥

यह सुनिकै केशव कहे मर्दि कौरवी सैन । फेरि चलेहु राधेय पहं सुनो शत्रुदल जैन ॥
इमि कहिकै मम सैनमधि चपल सुरथलै जाय । सारथिपनकीकुशलता करत भए गहिचाय ॥

सोरठा ॥

धसि ममदल मधि बीर भट कपिकेतु किरीटधर । बधि अगणितरणधीरअर्पिदयोअपयशनकहं ॥

चौपाई ॥

महाराज तोसुत तेहिक्षणमैं । गुणि निज हारि विकल ह्वै मनमैं ॥ संसप्तकन दयो अनुशासन । ते सिगरे फिरि कर्षि शरासन ॥ चौदह सहस सुभट हयसादी । सहस रथी वर बीर प्रमादी ॥ द्वै शत सहस सुबीर पदाती । द्वै शत गजारोह अरिघाती ॥ घेरि पारथहिं आयुध बरसे । घेरे रविहि जलद सम दरसे ॥ पारथ वर्षि बाण वर फवके । काटि असंख्यन आयुध सबके ॥ अंग भंग अगणित भट कीन्हों । बहुभट बिरथ बिधनु करि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीन्हों ॥ नृपति सुदक्षिण को लघु भाई । बध्यो ताहि अति ओज बढ़ाई ॥ दशहजार योधा बधि पलमैं । पारत भयो प्रलय मम दलमैं ॥ हा हा धुनि तेहि थलमैं सुनिकै । सुवन द्रोण को अनरथ गुणिकै ॥ सुरथ बढ़ाय सिंह सम हेरत । पार्थ आउ मम ढिग इमि टेरत ॥ आइ भिरो पारथ सों तैसे । करिवर भिरै द्विरदसों जैसे ॥ धनु बिधि सिखे द्रोणसों दोऊ । जिन्हैं समान और नहिं कोऊ ॥ ते युग सुभट भिरे जब राजा । बिस्मित भो तब सुमन समाजा ॥ दक्षिण बाम भाग फिरि फिरिकै । टेरि टेरि सन्मुख थिरि थिरिकै ॥ दोऊ सुभट गहे उत कर्षा । करत भए बाणन को बर्षा ॥

दोहा ॥

द्रोणतनय तेहिक्षण कियो अति बिक्रम क्षितिपाल । जैसो बिक्रम नहिं कियो द्रौणौ काहूकाल ॥
करि अद्भुत बिधि बाणझरि ह्वै अति भीषमरूप । करलाघवता पार्थकी दयोशिथिलकरिभूप ॥

सोरठा ॥

कृष्ण पारथहिं तब गोपित लखि शरजालमधि । अति आनद भो अब सुरसमूह शंकितभए ॥

रती छन्द ॥

तहं केशव बिप्रको बिक्रम देखि । अरु पारथकी ऋजुता अवरेखि ॥ इमि भाषत भे करि लोचन लाल । कत बिक्रमहीन भए यहि काल ॥ भुज बेधि गए कै गयो धनुटूटि । केहि हेत गयो तुव धीरज छूटि ॥ गुरु को सुत जानि धौं गौरव देत । गुर बिक्रम कै जेहि जीति न लेत ॥

दोहा ॥

केशव के ए बचन सुनि पारथ धनु टङ्कारि । कुपित रुद्रसम ह्वै बिशिख बर्षो सुजय बिचारि ॥
बाणजाल सब काटि अरु चारु शरासन काटि । बज्रसरिस शर बिप्रके उरमधिमास्योडाटि ॥
बेधित ह्वै गतचेत द्विज रहो ध्वजासों लागि । सो निरेखि कै सारथी गयो सुरथलै भागि ॥

सोरठा ॥

इमि बिप्रहि बिचलाय पार्थ भयो मर्दत सयन । प्रगट होतभो आय भूपति फलतोकुमतिको ॥

चौपाई ॥

पार्थहि निजदल मर्दत लखिकै । दुर्योधन क्षितिपाल बिलखिकै ॥ कह्यो कर्णसों ह्वै अति आरत । आजु पार्थ मम सब दल मारत ॥ मद्र महीप आदि सब राजा । सुनो बचन मम सहित समाजा ॥ बड़े भागक्षत्री धनुधारी । ऐसो युद्ध लहत हितकारी ॥ बधि पांडवन भरो सुख उरमैं । कै बधि जाय बसौ सुरपुरमैं ॥ उभै प्रकार धर्म बिधि साधन । करो महाबिक्रम अवराधन ॥ यह सुनि सब योधा सुख पाए । ह्वै सरोष दुन्दुभि बजवाए ॥ सो सुनि अश्वत्थामा नागर । कहत भयो बरबचन उजागर ॥ धृष्टद्युम्न अधरम रण करिकै । मम जनकहि मारो पण धरिकै ॥ औशि आजु ताको बध करिहौं । परसेनामधि बिपदा भरिहौं ॥ सो सुनिकै सब योधा हरषे । शत्रुसैनमधि आयुध बरषे ॥ तेहिक्षण भयो युद्ध अतिभारी । मरे असंख्यन भट रणचारी ॥ कर पग रुण्ड मुण्डमय धरणी । रुधिरधारसों भई बिवरणी ॥

जयकरी छन्द ॥

उत अपार मम सेना जीति । पार्थ कृष्णसों कहे सनीति ॥ लखो दिवस को तीजोभाग । बीतन चहत सुनो बरभाग ॥ भूपहि लखे बिना मन मोर । है चिन्तित ताते ओहि ओर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलो शीघ्र भूपतिहि निरेखि। लरव कर्णसों जय अवरेखि॥ यह सुनि सुरथ हांकि कुल दीप। चले रहो जहं धर्ममहीप॥ कर पग रुण्ड सुण्डमय भूमि। उठत गिरत घायल भट घूमि॥ देखत जाय धर्मके पास। लखि भूपहि लहि परम सुपास॥ लगो लरण मम दलसों जूटि। वधि सुभटन जय लीवो ऊटि॥ तेहिक्षण भयो घोर संग्राम। कटे असंख्यन भट बलधाम॥ संसयन धृष्टद्युम्न भट उद्द। लागो करन कर्णसों युद्ध॥ हनि क्षुरप्र शर सूतज आसु। दीन्हो काटि शरासन तासु॥ धनुष काटि मार्यो नव बान। तौलगि सो भट गहि धनु आन॥ मारत भयो कर्णके गात। सत्तरि शायक अति अवदात॥ रण महिकी भीषमता देखि। कहे कृष्ण हिय करुणा भेखि॥ पार्थ लखौ रण महिको रूप। महा भयानक भई अनूप॥ मरेपरे कहुं द्विरद अछाम। मरे असंख्यन हय छविधाम॥ करपग रुण्ड सुण्ड मयभूमि। गिरत उठत घायल भट घूमि॥ घायल किते करत जलपान। किते प्रियत जल त्यागत प्रान॥ किते मारुमारु रटलाय। रहे बातवश ह्वै हतचाय॥ कितने वीर परस्पर टूटि। रहे मारि मरि महिपरि जूटि॥ कितने आयुध किए उदाव। भिदि गिरि परे गहे रणभाव॥ पट्टिश भल्ल गदा के घात। कितने मरे पाय शरपात॥ कितने परे करिणके सुण्ड। परे अनगिने मरे विखण्ड॥ तुरगण सहित तुरंग असवार। अगणित मरे परे सरदार॥

दोहा॥

चन्दन चरचित मणिन के भूषण भूषित भूरि। दोरदण्ड आयुधन सह परे सुपरमा पूरि॥

मुक्तिका छन्द॥

परे शोणितोदा नदीमें लसैं गात। भरे भूरि भासो चहुंधां डरे ख्यात॥ मनो भारती मैं पटेहैं कटे काठ। दरे जानकेहैं खरे ते ध्वजा लाठ॥ परे पंक्ति शक्तीनके भूरिहैं भात। गदा भल्ल यष्टी अनष्टी लखो तात॥ परे तोमरैं भिंदिपालैं किते बान। परे सांपसे चाप हैं तापके थान॥

दोहा॥

कटे चक्र बाजी मरे रथ परि शोणित बीच। लसै मनो लटि फटि परी नाव भारती कीच॥
करण धार धर सारथी बह्यौ रुधिरकी धार। रथी विकल लहिगहि रह्यौ ध्वजा यष्टिगुणदार॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

किते रुण्ड बैठे लहैं तौन भेलैं। किते शत्रुके सुण्ड लै कुण्ड मेलैं॥ किते औरके सुण्ड लै सुण्ड लावैं। किते खड्ग लीन्हें चहुंओर धावैं॥ किते रुण्डके पाणि औ पाय डोलैं। किते कुद्धनाहैं किए ऊर्द्ध ओलैं॥ किते युद्धकी सुद्धिकै रन्धि बैठैं। जु पैठे चहैंसे गहैं ऐंड़ि ऐंठैं॥ किते रुण्डहैं केतु से क्रूरकारे। किते शक्रके चापसे वक्र डारे॥ किते सुण्डहैं राहु से राजनीपैं। किते खण्ड मार्तण्ड से चण्ड दीपैं॥ किते सुण्ड हैं कुण्डलौ कुण्डधारे। किते कुण्डलौ कुण्ड केभुण्ड डारे॥ किते सुण्डके तापसेआख ह्वैगे। किते आल ह्वै लाल ह्वै भाल ह्वैगे॥

दोहा॥

गदा यष्टि तोमर खडग भल्ल परश्वध बाण। शक्ति आदि आयुध अखिल परे अमन्द अमान॥

कवित्त॥

केते मेद मज्जा मांस शोणितके कीच परे डरे दावानलबीच दारुसे लखात हैं।
केतेनके गात चले ऊरध रुधिर धार रग वारि भारसे फुहारे से विभात हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केते झटकत पटकत गात मरे जात जैसे चटकत जे उपल आगि पात हैं।
कितने सुफब परे शोणित मैं ऊबि ऊबि ढव ढव करिकै बेढब डूबि जात है ॥

दोहा ॥

मणिमय भूषण नृपनके परे किरीट अनेक। लखौ परे अगणित डरे मरे नृपति गहि टेक ॥

सोरठा ॥

एहि प्रकार रणभूमि दरशावत प्रभु पारथहि। चपल हयन करि घूमि गए धर्म नृपकेनिकट ॥

दोधक छन्द ॥

देखि महीपहि आनद ओले। पारथसों प्रभु यों हंसि बोले ॥ पारथ धर्म महीपहि देखो। है अति पूरित कोप विशेखो ॥ लै दल हय दल पैदल भारी। जात चलो नृपजूह निहारी ॥ सात्यकि आदि गणे मम योधा। ते संग जात किए अवरोधा ॥

दोहा ॥

धृष्टद्युम्न आदिक भटन लखौ करत अतियुद्ध। बढ़ि बढ़ि दुहुंदिशिके सुभट लरत मरत अतिक्रुद्ध ॥

तोटक छन्द ॥

लखु पारथ भीम उदय रविसो। परसैन दिशा दिवमैं प्रविसो ॥ तमतोम सुवीरण नाशत है। दुर्योधन चोरहि शासत है ॥ भटजूथ कुमोदिनको दुख दै। निज सैनिक कौल-नको सुख दै ॥ गज सागर जीवण सोषत है। जय बारिसकी विधि पोषत है ॥

दोहा ॥

लखु पारथ सूतज प्रबल गरजत मेघ समान। शृञ्जय पाञ्चालन बधत बरषि बारि सम बान ॥
देखौ पारथ द्रोणसुत टङ्कारत कोदण्ड। पाञ्चालन पहं जात है मारतण्डसो चण्ड ॥

जयकरी छन्द ॥

एहि विधि कहत सुनत अभिराम। केशव अर्जुन सुषमाधाम ॥ जाय धर्म भूपतिके पास। लहि भूपहि लहि परम सुपास ॥ लगे लरण मम दलसों जूटि। बधि सुभटन जय लीवो ऊटि ॥ तेहिक्षण भयो घोरसंग्राम। कटे असंख्यन भट बलधाम ॥ ससयन धृष्टद्युम्न भट उद्ध। लागो करण कर्णसों युद्ध ॥ दोऊ गणे बिदित बाणैत। दोऊ धीर धुरीन धकैत ॥ दोऊ बरषि दुहुनपै बान। कीन्हे तहां कठिन घमसान ॥ हनि क्षुरप्रशर सूतज आसु दीन्हो काटि शरासन तासु ॥ धनुष काटि मास्यौ नबबान। धृष्टद्युम्न तब गहि धनु आन। मारत भयो कर्णके गात। सत्तरि शायक अति अवदात ॥ तापहं कर्ण दयो शरछाय ॥ बरषो विशिख तौन दृढ़घाय ॥ करि ताके बधको अनुमान। कर्ण चलायो बाण अमान ॥ वज्र समान जात लखि ताहि। सात्यकि काटि दियो शर बाहि ॥

दोहा ॥

निज असोघशर व्यर्थ लखि अति रिसि गहि राधेय। भयो सात्यकि सुभट पहं बर्षत बाण अमेय ॥
तिमि सात्यकि भट कर्णपहं बरषो बाण अथोर। एहिप्रकार दोऊ सुभट किये युद्ध अतिघोर ॥

सोरठा ॥

इतने मैं तहं आय अश्वत्थामा विदित भट। देत भयो शर छाय धृष्टद्युम्न सैनेश पहं ॥

चौपाई ॥

शर बर्षत इमि टेरि सुनायो। आजु काल तो सन्मुख आयो ॥ जौ क्षणएक थिरत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम धोरे। तौ यमलोक जात मन मोरे॥ भागि बचै कै पार्थ बचावै। नातरु द्विजबधको फल पावै॥ सुनि अश्वत्थामाकी बानी। बोलो धृष्टद्युम्न अभिमानी॥ द्रोणहि बध्यो बजाइ सुभेरी। तोकहं बधत मोहि का देरी॥ इमि कहि धृष्टद्युम्न दलनायक। भयो विप्र पहं वर्षत शायक॥ इमि भे उभै वीर शर वर्षत। कोऊ भयो न नभदिशि दर्शत॥ विविधि भांतिसो धनुविधि ठाटे। अगणित शरन शरन सों काटे॥ करि लाघव छूची अरिनाशन। दियो विप्रको काटि शरासन॥ तुरितहि विप्र और धनु गहि कै॥ वर्षो विशिख भागुमति कहि कै॥ मारि चुरप्रवाण अति चोखो। काट्यो तासु धनुष अति नोखो॥ धृष्टद्युम्न तब गदा चलायो। विप्र बीचही काटि गिरायो॥ तुरगण मारि कालबश कीन्हो। सूतहि बधि यमपुरपथ दीन्हो॥ धृष्टद्युम्न तब सो रथ तजिकै। खड्ग चर्म गहि चलो गरजि कै॥ तब शर बर्षि विप्र धनुधारी। काट्यो खड्ग चर्म रणचारी॥ फिरि अगणित शायक तेहि हनिकै। मोहित सम करि बिलसो बनिकै॥

दोहा॥

करितेहिमोहित धनुषतजिगहितीक्षणतरवारि। कूदिसुरथतेचलतभो बधिवो तासुविचारि॥
यह लखि केशव पार्थसों कहे विप्र जय चाहि। द्रुपद सुतहि मारण चहत वेगि बचावोताहि
इमि कहि केशव वेगसों गये सुरथ लै तच। पार्थ विप्रके गातमैं हन्यो अनेगनि पच॥
अर्जुनके बर शरनसों ह्वै वेधित द्विज वीर। फिरि रथपैं चढ़ि धनुष गहि बर्षण लागो तीर॥

सोरठा॥

तहां बेगसों जाय भट सहदेव उदारमति। रथपैं लए चढ़ाय धृष्टद्युम्न रणधीर कहं॥

चौपाई॥

गहि अति क्रोध विप्र उतकर्षो। अविरल बाण पार्थपहं वर्षो॥ बहुशर काटि पार्थ तहं तुरमैं। वर शर हन्यो विप्रके उरमैं॥ ह्वै वेधित मूर्छासों पगिकै। द्विजभट रहो ध्वजासों लगिकै॥ सो लखि सूत सुरथ लै भागो। पारथ सुभटन मर्दन लागो॥ भूपति सुनो भीम तेहि पलमैं। अति विक्रम कीन्हों मम दलमैं॥ वध्यो असंख्यन गज मतवारे। अगणित कर भुज शीश विदारे॥ अगणित भटन विरथ करि मास्यो। अगणित पैदरजथ संहास्यो॥ अगणित तुरग तुरग असवारण। वध्यो मारि शर शिला विदारण॥ ए रणकर्म भीमके गाढ़े। देखि कृष्ण पारथ रहि ठाढ़े॥ अनुपम सुभट जानि सुद लीन्हें। केशव बहुत प्रसंशा कीन्हे॥ इमि निज दलमधि भीमहि गाजित। देखि देखि निज सैन पराजित॥ करि अतिक्रोध कर्ण धनु कर्षत। चलो भीम पहं शायक वर्षत॥ सो लखि उतके भट रणचारी। बढ़ि सूतजसों भिरे प्रचारी॥ धृष्टद्युम्न सात्यकि भट नागर। जन्मेजय भूपति बल-सागर॥ सुभट शिखण्डी अमरष पूरे। और प्रभद्रक योधा रूरे॥ तिमि एहिदिशिते योधा बढ़ि बढ़ि। तिनसों भिरे क्रोधसों मढ़ि मढ़ि॥

दोहा॥

भिरो शिखण्डी कर्णसों भिरे नकुल वृषसेन। चित्रसेन सों भिरत भे धर्मभूप जयसेन॥
भिरो दुशासनसों गरजि धृष्टद्युम्न रणधीर। भिरि उलूक सहदेव ए किए युद्ध गंभीर॥

सोरठा॥

सात्यकि शकुनि नरेश अति संगर कीन्हेतहों। युधामन्यु भट वेश गौतमसों भिरि लरतभो॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

उतमौजा कृतवर्मा भिरि कै। घोरयुद्ध कीन्हे तंह घिरि कै ॥ भीमसेन विचरत कुरु-गणमैं। रहो प्रलय पूरत तेहिक्षणमैं ॥ कर्ण तहां अति तुरता लीन्हो। विरथ विधनुष शिखण्डिहि कीन्हो ॥ करि अतियुद्ध अरथ धनु ह्वै कै। भगो शिखण्डी बचव न ज्वै कै ॥ विमुख शिखण्डिहि करि जगजेना। सूतज भो मर्दत परसेना ॥ भट उलूक अतिविक्रम करिकै। भिरि सहदेव सुभटसों लरिकै ॥ विरथ विधनु ह्वै रण तजि भागो। और सुरथ चढ़ि विचरण लागो ॥ शकुनि सात्यकी भिरि तेहिठाईं। अति संगर कीन्हे सुनु साई ॥ लरि तासों वजवावत बाजा। भगो विरथ ह्वै सोवलराजा ॥ तोसुत भूपभीम अतिवलसों। करि अति युद्ध भगो तेहि यलसों ॥ कृपाचार्य्य बरणो भट तासों। युधामन्यु नृप लरि पुरतासों ॥ ह्वैकै विधनु विकल ह्वै लजिकै। गो निजदलमधि सम्मुख तजिकै ॥ उतमौजा भूपति कृतवर्मा। घोरयुद्ध कीन्हे तेहि धर्मा ॥ कृतवरमाके शरसों भिदिकै। सो नृप मूर्च्छि रहो ध्वज छिदिकै ॥ भागो सूत सुरथ लै सादर। गो निजदलमधि कै मन कादर ॥

दोहा ॥

महाराज एहि विधि भयो घोरयुद्ध तेहियाम। सुनत रहे जिमि पूर्व भो देवासुर संग्राम ॥
ऐसो भीषमयुद्ध लखि शकुनि दुशासन बीर। गजानीक सह गर्जि के चले भीमके तीर ॥

सोरठा ॥

तो सुत भूप अधीम तेहिक्षण तासों लरतहो। तेहि भगाय भट भीम गर्जि चलो गजसैन पहं ॥

तोमर छन्द ॥

तहंभीम धनु टङ्कारि। बहु दिव्यअस्त्र प्रहारि ॥ गजसैनमैं तेहिकाल। भोकरत कर्म कराल ॥ बहु किए कर पगछीण। बहु किये दसन विहीन ॥ बहु बधे ग्रीवा फारि। बहु बधे कुम्भ विदारि ॥ शर वज्र सरिस विचारि। बहुगजनके उरमारि ॥ गतप्राण करि पण धारि। भो देत महिपै डारि ॥ बधि गजारूढ़ अनेक। भो डारि देत सटेक ॥ गहि भूरि भयको भार। गज करत भे चिक्कार ॥ धुनि महा आरत छाय। भगि चले गज समुदाय ॥ बहु वमत शोणित नीर। तहं खरे परित पीर ॥ मनु कढ़त सानु अगार। बहु भारतीकी धार ॥ तहं भीम योधा पर्म। नृप कियो जो रणकर्म ॥ नहिं जात भाषो तौन। मन चहत रहिबो मौन ॥ तेहिसमय पार्थ अमान। भो करत अति घमसान ॥ गज बाजि सुभट समूह। भो बधत तजि शरजूह ॥ तेहि ठौर भूभरतार। भो महा हाहाकार ॥

दोहा ॥

भीमपार्थको निरखिकैअतिरणकर्म कराल। सदल धर्मनृप पहं चलो दुर्योधन क्षितिपाल ॥
धर्मनृपतिपहं भीर लखि सदल नकुल सहदेव। भिरे भूपकी सैन सों धृष्टद्युम्न बरभेव ॥

सोरठा ॥

धर्मभूप पहं जात अर्ध सैन सह नृपहि लखि। भीम सुभट अवदात गयो प्रचारत ठौर तेहि ॥

चौपाई ॥

एकक्षोहिणी सेना परकी। नृप पहं आवत लखि बर बलकी ॥ शायक वर्षि कर्ण धनु धुनि कै। आड़त भो सबको बध गुणि कै ॥ दुर्योधन भूपतिसों भिरिकै। भट सहदेव चक्र सम फिरि कै ॥ तीस बाण भूपतिके तनमैं। मास्यौ नृपको बध गुणि मनमैं ॥ रुधिर भरो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूपतिहि निरेखी। कर्ण वीर अनरथ अवरेखी ॥ करि अविरल शर झरि सब थलमैं। बध्यो असंख्यन भट परदलमैं ॥ जेहिविधि दावानललपटनसों। दाहै विपिनि जाल झपटनसों ॥ तथा कर्ण शर झरिके झारण। बध्यो असंख्यन नर हय वारण ॥ दशदिशि बाणजालसों मढ़िकै। चलो धर्म भूपति पैं बढ़िकै ॥ धर्म भूप तेहि देखि प्रचारे। तीक्षण बाण पचास प्रहारे ॥ अगणित बाण वर्षि ता ऊपर। दियो डारि बहुभट बधि भूपर ॥ तब सूतज अतिबल बिस्तार्यो। अगणित बाण भूपतिहि मार्यो ॥ तिनबाणनसों वेधित ह्वै कै। नृपति युधिष्ठिर धीरज ग्वैकै ॥ कहे सारथीसों मन भाई। सुरथ चलाइ अनत चलु भाई ॥ यह सुनि सूत सुरथ लै भागो। कर्ण शत्रुदल मर्दन लागो ॥ धरु धरु जान न पावै बकि बकि। इतके सुभट चले तेहि तकि तकि ॥

दोहा ॥

सातसहस कैकय सुभट अरु पाञ्चाल अनेक। आड़े तिन मम भटन कहं गहि जीतनकी टेक ॥
अति करलाघव करि तहां कर्ण पराक्रम ओक। कैकय भट बधि पांचशत भो भेजत यमलोक ॥

सोरठा ॥

लखि मर्दत निज सैन धर्म नकुल सहदेव फिरि। शर बर्षत बलऐन भिरे सूतके सुवनसों ॥
तहं सूतज जय ऊटि बर्षि बाण चरि चक्रसम। धर्म नकुलसों जूटि बिरथ बिधनु करि देतभो ॥

चौपाई ॥

बिरथ बिधनु ह्वै ते चरि पथपैं। गे सहदेव सुभटके रथपैं ॥ तिन्हैं बिरथ लखि शल्य महीपति। कह्यौ कर्णसों बाणी दीपति ॥ अति सुकुमार भूपसों भिरिकै। सूतज कहा लरत इत थिरिकै ॥ जासु जीतिबेको करि सोधन। पाल्यो तोहि महीप सुयोधन ॥ तेहि पारथसों भिरि लरु भाई। प्रगट होइ जहं तो मनुसाई ॥ कुन्तिहि बर दीन्हे सो तजि कै। भूपहि चाहत बधन गरजि कै ॥ भीम सुयोधन नृपसों लरि कै। चाहत बधन काल सम चरिकै ॥ बेगि बचाउ नृपहि तहं चलिकै। भीम पराक्रम नदमैं हलिकै ॥ यह सुनि कर्ण कह्यौ उत चलियै। गो तहं शल्य गहे गति भलियै ॥ कर्ण कालके मुखसों कढ़िकै। भूपति महाशोचसों मढ़िकै ॥ तीक्षण शरघातनसों पीड़ित। जाय सुडेरामधि अति ब्रीड़ित ॥ रथसों उतरि सेजपहं परिकै। कह्यो नकुलसों धीरज धरिकै ॥ गयो भीमपहं कर्ण अकादर। तुम युगबन्धु जाउ तहं सादर ॥ यह सुनि और सुरथ पैं चढ़ि चढ़ि। ते गहि गर्ब गए तहं बढ़ि बढ़ि ॥ भट अश्वत्थामा तेहिक्षणमैं। भिरि पारथसों गर्वित मनमैं ॥ दिव्य शरण की वर्षा करिकै। अति रण कियो क्रोधसों भरिकै ॥

दोहा ॥

अक्ष शरासन पक्षमैं दक्ष उभय रणधीर। लक्ष परस्पर करि भए वर्षत अविरल तीर ॥
अति विक्रम करि फालगुण काटि शरन के जाल। द्रोण तनय भट सिंहको काट्यो धनुषविशाल ॥

सोरठा ॥

नृप तब विप्र अमान अतिरिसिकरि गहि औरधनु। अस्त्रअइन्द्र महान तजत भयो भट पार्थपहं ॥

चौपाई ॥

तेहिक्षण पार्थ सुभट बल भारो। अति करलाघवता बिस्तारो ॥ सानद अस्त्र अइन्द्रहि त्यागो। अस्त्र अइन्द्र बारि सुदपागो ॥ त्याग्यो जौन अस्त्र द्विजनायक। तजि सो अस्त्र पार्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ घायक ॥ कीन्हो तौन अस्त्रको वारण । पार्थ सुभट बरव्यह विदारण ॥ एहि प्रकार दोऊ पण धरि कै । दिव्यशरनको बर्षा करिकै ॥ महायुद्ध कीन्हे तेहिक्षण मैं । जो लखि सुर विस्मित भे मनमैं ॥ करि करलाघव अश्वत्थामा । शायक तीनि परम अभिरामा ॥ हन्यो कृष्णके दक्षिण भुजमैं । लखि पारथ अति अघ गुणि द्विजमैं ॥ बर्षि बाण तुरगण बधि डास्यौ । गुरुसुत जानि न तेहि शर मास्यो ॥ बर्षि असंख्यन अविरल बाणन । बध्यो अनेगण सुभट अमानन ॥ रथी सारथी भट हयसादी । अगणित बध्यो गजस्थ प्रमादी ॥ तौलगि विप्र हयन करि योजित । धनु टङ्कारि बर्षि शर ओजित ॥ भिरो पार्थसों गरजि प्रचारत । जय लीबो वज्र भांति बिचारत ॥ शायक अस्त्र बक्षमधि मास्यो । तहं पारथ अति रिसि बिस्तास्यो ॥ शायक बर्षि मारि शर चोखे ॥ काट्यौ द्विजको धनुष अनोखे ॥ तब द्विज तज्यौ परिघ अतिभारी । काट्यौ ताहि पार्थ धनुधारी ॥ तब द्विज और शरासन करष्यो । अविरल बाण पार्थपहं बरष्यो ॥ शतशर केशव के तन मारे । पारथ कहं त्रयशत अनियारे ॥ तहं पारथ अतिकोपित ह्वैकै । वध्यौ तासु सूतहि विधि ज्वैके ॥ नृप तेहि समय द्रोणसुत योधा । आपु हयनको करि अवरोधा ॥ पार्थ कृष्णपैं शरकी बर्षा । करत भयो गहि अति उतकर्षा ॥ सो लखि सब भट अचरज माने । द्रोणसुतहि बहुबार बखाने ॥ सो लखि हंसि पारथ रणचारी । काटि दयो बरबाग बिचारी ॥ ह्वै अवन्ध हय रथलै भागे । भगे असंख्यन भट भयपागे ॥ तेहि क्षण पार्थ बर्षि शर रूरे । अगणित भटन मारि महि पूरे ॥ हाहा कार मचो ममदल मैं । कोऊ थिर न रहो निज थलमैं ॥ तिमि पांचाल भटनके मारे । नृप मम सुभट भगे भयभारे ॥ सो लखि दुर्योधन नृप आरज । कह्यो कर्णसों निज जय कारज ॥ मम दल भगत देखि एहिक्षणमैं । तुम नहिं कानि गहत कछु मनमैं ॥ यह सुनि कर्ण मद्र रणपति सों । कहत भयो इमि गौरव अतिसों ॥ हे नृप पुरुषसिंह सुद लीजै । अब तुरगण अति चञ्चल कीजै ॥ धसि परदलमैं ओज बढ़ाई । लखो मोरि विक्रम प्रभु ताई ॥ इमि कहि विजय नाम धनु करष्यौ । शत्रुसैन पर शायक बरष्यौ ॥

दोहा ॥

भार्गव अस्त्र अमोघको करि प्रयोग तेहिकाल । भो बर्षत अरि सैन पै कोटिन शर विकराल ॥
कैयक अर्बुद विशिख वर शत्रुसैन मधि डारि । अगणित हय गजभटनबधिदीन्होमहिपैडारि ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षण हाहाकार भयो पाण्डवीसैन मधि । बही रुधिरकी धार रुण्ड मुण्डजल यन्तुयुत ॥

रोला छन्द ॥

घोरधुनि निजसैन मधि सुनि पार्थ धीर धुरीन । कहे केशव कर्णके ढिग चलो रथ लै पीन ॥ कहे केशव सूतसुतके शरन सों अतिपीड़ि । युद्ध तजि नृप धर्म डेरण गयो मनमैं व्रीड़ि ॥ शीघ्र तहं चलि देखि भूपहि बहुरि दलमैं आय । कर्णको बध करो तीक्षण शरणकी झरि लाय ॥ बचन यह सुनि कहे पारथ औशि चलिये तब । तुरित रथ लै कृष्ण गे हो भीम बिलसत यत्र ॥ देखि भीमहि कहे पारथ कहां धर्म महीप । सैनमधि नहिं परत लखि कमनीय कुरुकुलदीप ॥ भीम बोले सूतसुतके शरणसों भिदि भूप । त्यागि धीरज बिकल डेरण गए ह्वै गतरूप ॥ कहे अर्जुन भूपतिहि बिनु लखे मोहि न चैन । जात हैं हम भूपढिग इत रहो तुम बलऐन ॥ क्षत्रधर्म निधान सब विधि प्रबल तुम जगजैन । रहो गे तुम तहां नृप जय औशि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संशै हैन ॥ भीमसों इमि भाषि पारथ शीघ्र डेरण जाय। उतरि रथसों धर्मनृपके गहे कोमल पाय ॥ कृष्ण पार्थहि देखि भूपति वधो कर्णहि जानि। परम आनद भरे बोलत भए जय अनुमानि ॥ परम दुरजय शत्रु जगत प्रसिद्ध धनुधर एक। काल सम मम सैनको जो नागकरण सटेक ॥ शिष्य जो भृगुराम को सब दिव्य अस्त्र निधान। रहो तेरह वर्ष मम हिय जासुभय परधान ॥ तासु वध करि आय तुम मोहि दए आनद पर्म। आजु बेधित भयो मम अरिभप को हिय मर्म ॥ नकुल सात्यकि धृष्टद्युम्नहि आदि भट बलभौन। लखत तिनके मोहि कीन्हों व्यर्थ बलनिधि जौन ॥ विरथ करिकै कह्यो वज्र दुर्वचन कठिन कठोर। जाहि सुधि करि ग्लानि त्याग न करत नहिं मन मोर ॥ सहित केशव पार्थ कहं हम बधब रचि शरजाल। कहत हो जो गर्व गहि रणधीर वीर विशाल ॥ द्रोपदिहि दुर्वचन वज्र जो कह्यो गहि अतिगर्व। वध्यो तुम तेहि कर्ण कहं किमि युद्ध करि एहि पर्व ॥ चातार जो निज सैन परदलपारको गन्तार। अपार विक्रम चार जो मम सैनको हन्तार ॥ शक्रसम बलवान जो यम तुल्य परम अमान। वध्यौ किमि तेहि सूतजहि तुम कहो तौन विधान ॥ शक्र वरुण कुबेर सम जो युद्धविद विख्यात। ताहि कर्णहि वध्यो किमि तुम कहौ सो अवदात ॥ कर्णहन्ता पार्थको इमि कहत हे जेहि सर्व। वध्यो तुम केहिभांति तेहि किमि गिरो सो तजि गर्व ॥ इबिधके सुनि वचन धर्ममहीपके तेहिकाल। चिन्ति मनमैं फालगुण इमि कहे बचन रसाल ॥ रहे हम संसप्तकनसों लरत रचि शरसेत। आय मोसो भिरो तहं सुत द्रोणको जयहेत ॥ जोति तेहि वधि सुभट अगणित रुधिरनद उमगाय। युद्ध भार समर्पि भीमहि वर्षि शर समुदाय ॥ आइ इत अब देखि आपुहि कुशल फिरि उत जाय। आजु कर्णहि बधब त्यागौ शोच कुरुकुल राय ॥ कर्णके वर शरण बेधित धर्म भप अचैन। बचन यह सुनि महा रिसि गहि कहे ऐसे वैन ॥ पेखि विक्रम कर्णको निज सैन विचलत देखि। युद्ध तजि तुम इतै आए बाचिबो अवरेखि ॥ वृथाही तुम किए एहिजग वृथाके उरवास। जौ न कर्णहि बध्यो कीन्हे व्यर्थ धनुष अभ्यास ॥ द्वैतबनमैं कहे कर्णहि बधब लरि हम एक। तौन तुम अब छोड़ि भीमहि भगे तजि निजटेक ॥ कर्णसों नहिं सकव हम लरि भाषते जौ पूर्व। तौन बनते आइ हम इत रचित संगर गर्व ॥ रही चौदह वर्ष तो बल जीतिबेकी आस। आजु सो कढ़ि भई बाहेर परि ममहिय चास ॥ युद्ध करि नहिं सके तो गाण्डीव धनु जो ताहि। कृष्णकों दै डारते तौ कृष्ण बधते ताहि ॥ जन्म ते तो सातए दिन गगन बाणी पर्म। सुन्यो कुन्ती भयो तोसुत भरो क्षात्र सुधर्म ॥ नाग नर गन्धर्व असुरण जीतिबेके योग। भयो रवि सम तेज याको करिहि महिपैं भोग ॥ धनुरधर नहिं भयो ऐसो नहीं ह्वैहै और। तिहुं पुरके धनुर्धर को होयगो शिरमौर ॥ देवतन को वचन सोऊ परो झूठो जानि। युद्ध तजि तुम बिचलि आए कर्ण को भय मानि ॥ आजु धिक तो बाहुबलकों शरनको धिक भूरि। धनुष वर गांडीव को धिक तूरि डारो दूरि ॥

दोहा ॥

धर्म भूपके वचन ये सुनि अर्जुन अनखाय। पाणि धरे तरवारि पहं महा क्रोधसों छाय ॥
कर लाघव तरवारि पहं देखि कृष्ण अनुमानि। कहे समय बिनु खड्ग कत गहत कहा अनुमानि ॥

सोरठा ॥

युद्ध करण के हेत नहिं कोऊ सन्नद्ध इतै। करि करतलपैं देत कहो पार्थ कारण कहा ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरी छन्द ॥

कृष्णचन्द्रके सुनि ए बैन। कहत भए पारथ बल ऐन ॥ हम हे किए प्रतिज्ञा पूर्व। जो निरदी मम बिक्रम गर्व॥ धनु गांडीवहि निदरि अलेन। जो कोउ भाषिहि औरहि देन ॥ ताको बध हम करब सटेक। गणब न अनुचित उचित बिबेक ॥ सो सबकिए धर्म क्षितिपाल। हम अब इन्हैं बधब एहि काल ॥ यह सुनि कहे कृष्ण अवदात। अर्जुन करण चहत उत्पात॥ जानि परत सुनि बचन असिद्ध। नहिं सेए पटु पण्डित वृद्ध ॥ जो नहिं कबहूं कहिबे योग। चाहत कीन्हों तौन प्रयोग ॥ मिथ्या आदिक जिते अनिष्ट। हिंसा तिनसों अधिक गरिष्ट ॥ सो तुम चाहत कियो अचाय। बधिबो धर्मनृपति सो भाय ॥ यह नहिं सत्यव्रता हे तात। होइहि अपकीरति बिख्यात ॥ कौन काज करिबो एहि द्यौस। गहत कहा करिबेको होस ॥ तुमकहं उचित न कहिबो एऊ। अरिदल नाशन को पण लेऊ॥ कर्णहि बधिबेको पण जौन। कीन्हें करो सत्य अब तौन ॥ व्यासहि आदिक वृद्ध महान। एहि बिधि भाषत धर्म बिधान ॥ पांच ठौर जन मिथ्या भाषि। लहत न पाप पुण्य अभिलाषि ॥

दोहा।

सांच कहे जेहि ठौरमैं जीवजानको योग। अरु सर्वस हरि जानको लागत जहां प्रयोग ॥
अरु बिवाह के कार्य्य मैं अरु रतिसमय सुवेश। बिप्रहेत मिथ्या कहे होत न अघको लेश ॥
जेठो भूपति धर्म मय तासु जीवको घात। चहत मूढ़ सम नहिं चहत लीबो सर्बस जात ॥

जयकरी छन्द ॥

पार्थ सुनो जे जन मतिमान। ते सब करत काज अनुमान ॥ हिंसऊ किए पुण्य कऊं होत। सत्य करत कऊं पाप उदोत ॥ जिमि दोऊ करि ब्याध बलाक। लह्यो पुण्य पातक परिपाक ॥ यह सुनि पार्थ कह्यौ तजि गास। कहो प्रगट करि यह इतिहास ॥ कृष्णउवाच ॥ ब्याध बलाक नाम हो एक। सो मृग हिंसक हो गहि टेक ॥ एक दिवस मृग मिलो न ताहि। जल ढिग श्वान अरिहिसों चाहि। बध्यो मरत ताके तेहिठौर। भयो दिव्य पुष्पनको भौर ॥दिन लहि देह त्यागि मतिरास। पायो ब्याध स्वर्गको बास ॥ करि दिव भोग भूमिपैं आय। भो द्विज कौशिक गोत सचाय ॥ नदीतीर बनमैं बसि तौन। रहो करत तप आनद भौन ॥ एक दिवस तस्कर भय पाय। ता ढिग दुरे सधन जन आय। तेहि दिन मैं तस्कर समुदाय ॥ आए हरिबे मैं मनलाय ॥ बूझे बिप्रहि कहं जन जूह। दियो बताय बिप्र करि ऊह ॥ सत्य कहन को राखे टेक। गुण्यो न धर्म अधर्म बिबेक ॥ सति बकता द्विजसों लहि भेद। गे तहं तस्कर गण तजि खेद ॥ बध्यो तिन्हैं धन लिए छुड़ाय। बिप्र लह्यौ पातक अधिकाय ॥ तन तजि लह्यौ नर्क अति घोर। व्यर्थ भयो तप धर्म अघोर ॥

दोहा।

हिंसाकरि वहगति लह्यौसत्यकहे गतिएऊ। द्विविधि दानअसतिहि दए पापहोत गुणिलेऊ॥
पारथ धर्म अधर्मको सूक्षम गति परधान। ताते तहं अनुमान करि तजो बचन अभिमान ॥

चौपाई ॥

कृष्णचन्द्रकी सुनि यह बानी। अर्जुन कहत भए अनुमानी ॥ प्रभु जो आपु कह्यौ सो सहिये। पै अब इतो बूझिकै कहिये ॥ जाते रहै प्रतिज्ञा सोऊ। मो कहं अधम कहै नहिं कोऊ ॥ यह सुनि कृष्ण कहे सुनि लेऊ। ऋषि अंगिरको सम्मत एहू ॥ मान भंग मानिनको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिबो । सो बध सम पातक को भरिबो ॥ ताते निदरि बोलि क्षितिपालहि । पालहु बचन प्रतिज्ञा आलहि ॥ ह्वै कै बिदा शीघ्र अब चलहु । सूतसुवनके गातहि दलहु ॥ ऐसे बचन कृष्ण के सुनिकै । अर्जुन कोप लोप करि गुणिकै ॥ तुम मति भूप कहौ इमिवानी । रहो मौन विक्रम अनुमानी ॥ रहत कोस भरि रणते न्यारे । एहि विधि बोलत बिना बिचारे ॥ ऐसो भीम कहै तौ सोहै । जो गज यूथमर्दि दल मोहै ॥ जौन भीम बधि अगणित राजा । भेज्यो यमपुर सहित समाजा ॥ तुम कीन्हे का विक्रम रणमैं । निदरत हमैं कहा गुणि मनमैं ॥ तोहितलागि दिशा सब जीते । सो तुम जुवा खेलि फिरि रीते ॥ तोहित हम दुख सहे घनेरे ॥ सो तुम कहे बचन बिष मेरे ॥ हय गज नृप भट बधे अलेखे । सो सम काज न तुम अवरेखे ॥

दोहा ॥

धर्मनृपतिसों भाषि इमि पारथ आनि गलानि । निज बध करिबो चहत भे जीवन अनुचितजानि ॥ सो लखि केशव नीति कहि किए निवारणतौन । पार्थ आत्मबध भ्रातृबध तुल्य पापको भौन ॥ तब पारथ नृपसों कहे उचित वचन अवराध । पिता सरिस गुरु बन्धु नृप गुणो न मम अपराध ॥ इतनेमैं उठि सेजतें रिसि करि धर्म नरेश । कहे पार्थ मम संग तुम लहे न सुखको लेश ॥ अब हम वनकों जातहैं तुम भीमहि करि भूप । लहो मोद मनमान निति निज विक्रमअनरूप ॥ यह सुनि केशव नृपति कहं सविधि मरम समुझाय । बैठाये शुचि सेजपहं दारुण दुखहि दुराय ॥ सजल नयन पारथ गहे धर्म नृपति के पाय । सजल नैन नृप पारथहि हियसों लए लगाय ॥ इमि मिलि भूपति कर्णको दीन्हो कर्म सुनाय । मिटिहि कर्णको बध सुने दुख इमि कहे बुझाय ॥ सो सुनि पारथ कर्णके बधको करि पण पर्म । धर्मनृपहि मोहित किए पालक चर्चाधर्म ॥ यह सुनि केशव नृपतिसों पार्थहि बिदा कराय । दारुकिसों सजवाय रथ चढ़े सुशङ्ख बजाय ॥ बिप्रनसों स्वस्त्ययन सुनि सगुण लखत ह्वै तुष्ट । चले कर्णके बधनकी करत प्रतिज्ञा पुष्ट ॥ अतिवर बिक्रम पार्थको वर्णत श्री यदुराय । चले कर्णके बधन की दृढ़ता करत सचाय ॥

चौपाई ॥

पारथ एक बीर तूं जगमैं । तोविक्रम सागर सम अगमैं ॥ तुम जेहि जीति बधे रणमाहीं । जीतनयोग ताहि कोउ नाहीं ॥ नृप श्रुतायु अयुतायु प्रमादिक । भीषम अरु भगदत्तहि आदिक ॥ बधे असंख्यन नृप तुम रणमैं । जेहि गुणि उपजत विस्मय मनमैं ॥ तुम बहुबार द्रोण कहं जीते । शल्यहि जीते सुजय पिरीते ॥ बिन्दा बिन्द सुदक्षिण राजा । बधे तिन्हैं तुम सहित समाजा ॥ दूरिपात वेधन करलाघव । अरु निशङ्क बल है जिमि राघव ॥ हैं तो दिव्यअस्त्र अति गतिके । परम अमोघ जीतिकी जतिके ॥ सुर गन्धर्व असुरके जेता । हौ तुम पारथ धनुबिधिबेता ॥ यह गाण्डीव दिव्यधनु सारथ । जेहि गहि युद्ध करत तुम पारथ ॥ देवनहूमैं धनुधर तो सम । नहिं हम लखत यथा तुम अनुपम ॥ तुम अजेय जेता सबहीके । भरे वीररस पूरण सीके ॥ पारथ तो धनुकी धुनि सुनतै । शत्रुन वनत हारि निज गुनतै ॥ तो शरधारे होत अरि मोहित । जिमि वडवानल मुख परि वोहित ॥ तो रथघोष सुनत जगजेना । केह अतिवल जे सकुचित भेना ॥ तुम अतिचण्डसूर सम सोहत । अरिदल दवि उलूक सम मोहत ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

पारथ तो सम जगत मैं है सूतज भट एक। क्षती बली सब अस्त्रविद गहे जीतिकी टेक ॥
तेजबाणमैं अग्नि सम क्रोधे काल समान। पुरुषसिंह अति शूर भट अभिमानी बलवान ॥
दुर्योधनको परम हित तुववैरी अतिमान। है अवध्य सुर असुरते जेता तासु न आन ॥

सोरठा ॥

ताके बधिवे योग है पारथ तुम विदित भट। करि अति अस्त्रप्रयोग लरि सटेक कर्णहि बधो ॥

मनोरमा छन्द ॥

इमि पारथसों कहि केशव मानद। फिरि भाषत भे गहिके अति आनद ॥ दिनसत्रह आजु भयो इत योधन। नर बारण बाजिनको बध सोधन ॥ अतिक्षीण भयो दुर्योधनको दल। तिमि क्षीण भयो दल तो परके बल ॥ नहिं जीवन आश गहे भट एकव। गहि आयुधको भय आनत नेकव ॥

दोहा ॥

दुर्योधनको प्रबलदल को भट जीतनहार। बिनु पांडव बिनु द्विरद को सहै द्विरद कोभार ॥
तुमते रक्षित द्रुपदसुत दोऊ बन्धु अमान। भीष्म द्रोण को बध किये जोन साध्य एहिमान ॥

चौपाई ॥

कृप कृतवर्मा द्रोणाचारज। शल्य शकुनि वृषसेन अनारज ॥ कर्ण सुयोधन अश्वत्थामा। दुश्शासनहिं आदि बलधामा ॥ तिन्हैं जीति बर व्यूह बिदारत। को भट प्रबल सैंधवहि मारत ॥ तुम ऐसो अद्भुत रण करता। परभट रुधिर धार महि भरता ॥ दरद तुषार सयमन समाठर। दार्वमि सार अंध अरु पाठर ॥ भट पुलिन्द पार्वती प्रबीरा। अरु अनूप बासी रण धीरा ॥ म्लेच्छ कलिंग किरातहि आदिक। दक्ष युद्ध मैं परम प्रमादिक ॥ बिनु पाण्डव तिन्ह कहं को जीतै। दुर्योधन दल सुभटन रीतै ॥ दश हजार बर योधन हतिकै। भट अभिमन्यु मस्यो रण अतिकै ॥ लरि दश दिवस पुरुष पञ्चानन। भीषम बधि लाखन भट बाणन ॥ भिदि सब गात शरन पर परिकै। राजत युगुति योगकी धरिकै ॥ द्रोणाचार्य्य पांच दिन लरिकै। मारि असंख्यन भट पण करिकै ॥ लरि निशि मध्य महा रिसि लीन्हें। दिव्य अस्त्र की बर्षा कीन्हें ॥ द्रुपद बिराट आदि बहु राजन। बध्यो सहित सामन्त समाजन ॥ मरो पांचए दिन थिर रहिकै। धृष्टद्युम्न के करबध लहिकै ॥ तथा आजु सूतज धनु कर्षत। तीक्षण तरल घने शर बर्षत ॥ सृञ्जय अरु पांचालन बधिकै। ग्रसत काल सम लसत बरधिकै ॥ तथा भीम शर गदा प्रहारत। नर हय बारण बधि महि डारत ॥ तिमि सात्यकि आदिक भट रूरे। भटन बधत अति अमरष पूरे ॥ धृष्टद्युम्न गुर धनु टङ्कारत। रथी पदातिन बधि महि डारत ॥ द्रौपदेय अरु सुभट शिखण्डी। बधत भटन गहि धनुविधि चण्डी ॥ सहदेव नकुल करत रण करकस। बधत शत्रुभट परम अधरकस ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा। चक्ररक्ष तुव सहित समाजा ॥ रक्षत तुम्हैं रहत अरि परखत। अबिरल शायक बिधिवत बर्षत ॥ दुर्योधन आदिक भट उतके। मम दल मर्दत बिक्रम युतके ॥ अब उत चलि करि सुजय निरेखन। बधु परसुभट बली हत शेषन ॥ पांच महारथ हैं उत बाचे। अति धनुधर अति गर्बित सांचे ॥ अश्वत्थामा कृप कृतवर्मा। कर्ण शल्य पूरित अति पर्मा ॥ तिन्हैं मारि लहि बिजय अनूपहि। बधि सबन्धु दुर्योधन भूपहि ॥ भोगौ भूमि समुद्रतक बसिकै।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचौं पांच शूर सम लसिकै ॥ जौ गुरुसुत गुणि अश्वत्थामहि। गुरु जानि गौतम बलधामहि ॥ गुणि निज मातुल शल्य नरेशहि। यदुवंशी हार्दिक्य सुवेशहि ॥ जौ करि कृपा न बध अनुमानो। तौ मम वचन परम हित मानो ॥ कुमती चद्र कुटिल अभिमानी। अनरथ मूल जासु अघबानी ॥ कर्ण ताहि बधु आजु शरनसों। हो उतीर्ण निज पूर्व परणसों॥ परम काज यह तोकहं पारथ। है जै कारण गुणो यथारथ ॥

दोहा ॥

जो गर्वित निति कहत हैं बैठि सभा आगार। मैं बधिहौं सब पाण्डवन बर्षि शरणकी धार ॥
जेहि सूतजके बल गहे दुर्योधन जयआश। पार्थ मारु तेहि सूतजहि करि अति युद्ध प्रकाश ॥

सुन्दरी छन्द ॥

सूतज जे अपराध किए तब। दाहत ही सुधि आवत ते अब ॥ शगड भए पति तो बिगरे सब। दासिन संग बसौ तुमहे अब ॥ तूं दुर्योधनकी तिय ह्वै रहु। बैन महा कटुवा विधिके बहु ॥ भूपति पाण्डव की महिषी तेहि। भाषत भो यह बेगि बधो एहि ॥

दोहा ॥

धनुष काटि अभिमन्यु कहं बधवायो एहि मूढ़। अब एहि बधि लोपित करो निजहियकोदुखगूढ़ ॥
कर्ण शरण कासेतरचि कालसमान बिभात। बधत असंख्यन भटन कहं देखि दहत मम गात॥
तुम्हैं बिना एहि सैन मधि नहिं ऐसो भट और। जो सन्मुख लरि कर्णसों कुशल फिरैगहिगौर॥

सोरठा ॥

बधि कर्णहि यहिकाल डारु दारुसम भूमिमधि। बायस गृध ह्गाल तासु मेद मासहिभखैं ॥
कर्णहि भूगत देखि भगि जैहै दल कौरवी। लेहु बिजय अवरेखि बध सबन्धु दुर्योधनहिं ॥

तोटक छन्द ॥

सुनि माधवके सुगिरा रुचिरा। हिय पारथके अतिमोद घिरा ॥ भट सूतज के बधको पण लै ॥ इमि बोलत भो प्रभुको मन लै ॥ तुम नाथ करौ सुकृपा जेहिपैं। सर्वथा जय श्री निवसै तेहिपैं ॥ प्रभु आपु सदा मम गोहनते। नहिं नेकु टरो अति छोहनते ॥

दोहा ॥

तुव सहायते नाथ हम तीनि लोक जेतार। कहा कर्णको बध करण है मम करण अपार ॥
लखो नाथ पाञ्चालदल द्रवत कर्णकेभीत। लखो कर्ण बिचरत बिरचि रणजगजीत अजीत ॥
लखौ कर्ण प्रेरित लसत भार्गव अस्त्र अमन्द। ज्वलत दवानल सरिस बढ़ि लखि नलहतकोदन्द ॥

सोरठा ॥

हनि अमोघ शरचण्ड आजुवधव हमसूतजहि। कीरति अमल अखण्ड मण्डितरहि है भूमि मित ॥

तारक छन्द ॥

धृतराष्ट्रनरेश महादुखपैहै। दुर्योधन हारि कहूं बहिजैहै ॥ सह बन्धु सपुत्र समित्र सखामी। एहि आजु करौं बधि ऊरधगामी ॥ निज बन्धु महीपहि मोदित कै कै। सब भूभरतार करा पण लै कै ॥ शिर छेदन सूतजको करि कैहे। दल कारजको बधि है लरि कैहे ॥

दोहा ॥

राधहिं करत अपुत्र अरु दुर्योधनहिं अमित्र। रथीहीन शल्यहि करत वृषसेनहिं हतमित्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

आजु वर्षि तीक्षण शर रूरे। गृध्र पक्ष युत सुवर्ण पूरे ॥ बधि शत्रुन अभिमन्यु कुंवरके। करब भूमिगत योधा परके ॥ धार्तराष्ट्र बिनु अब महि होइहि। कै निराजुन महि अरि जोइहि ॥ कृष्ण आजु धनुधरकी गतिसों। मैं ह्वैहौं उचित बल अतिसों ॥ तेरह वर्षि सह्यौ दुखभारी। आजु मेटिहौं सोपण धारी ॥ बध्यो संवरहि मघवा जैसे। बधिहौं आजु कर्ण कहं तैसे ॥ बधि कर्णहि देहौं सुख सीमहि। सहदेव नकुल सात्यकी भीमहि ॥ लखत कर्णके बधि वृषसेनहिं। करिहौं प्रगट दुष्टके एनहिं ॥ कर्णहि बांधि शरणके जालन। बधिहौं मारि बाण अरिघालन ॥ धृष्टद्युम्न आदिक पाञ्चालन। देहौं आजु मोद हियलालन ॥ आजु लखै मम विक्रम योधा। बधत कर्णको करि अवरोधा ॥ अस्त्र शस्त्र ज्ञाता गजमाहीं। मम समान धनुधर कोउ नाहीं ॥ धनु गाण्डीव मुक्त शर झरिकै। आजु कौरवन बधिहौं लरिकै ॥ निज नामाङ्कित शरके घातन। करिहौं आजु कर्णको पातन ॥ कृप कृतवर्मा अश्वत्थामा। आदि जिते योधा बलधामा ॥ करिहौं तिन्हैं बिकल एहि दिन मैं। अगणित भटन मारिहौं छिणमैं ॥

मोरठा ॥

इबिध करत सम्वाद कृष्ण पार्थ दल मधि गए। अति उतकर्ष प्रमाद मढ़ो उभैदलमधिलखे ॥
संजयके ए वैन सुनि बोले धृतराष्ट्र नृप। कछु संजय बल ऐन तेहिक्षण किमि संगर भयो ॥

चौपाई ॥

यह सुनिकै संजय गुणि मनमैं। कहे सुनो भूपति तेहिक्षणमैं ॥ संसप्तकन सहित दुश्शासन। भीम लरत हे कर्षि शरासन ॥ लरत शिखण्डी कृपसों भिरिकै। सात्यकि दुर्योधन भिरि थिरिकै ॥ भट युयुधान विदित धनुधारी। अरु वृषसेन बिशद रणचारी ॥ नकुल सुबीर भूप कृतवर्मा। हे तहं लरत अमानुषकर्मा ॥ धृष्टद्युम्न सूतज अतिधरकश। हे तहं लरत उभै रणकरकश ॥ भिरि सुषेन उत मौजा राजा। रहे लरत तहं सहित समाजा ॥ उतमौजा अति तुरता ठाव्यो। भट सुषेनके शीशहि काव्यो ॥ सुत सुषेनको मरिबो देखी। कर्ण भूपको बध अवरेखी ॥ बाणनकी वर्षा बिस्तार्यौ। तुरगण मारि भूमिपै डार्यौ ॥ तहं उतमौजा अनरथ कीन्हो। कृपके सूतहि यमपुर दीन्हो ॥ कृपके युग सूतन बधि पथपै। गयो शिखण्डी भटके रथपैं ॥ सो लखि द्रोण तनय तहं आयो। बढ़ि आगे लरि कृपहि बचायो ॥ एहिबिधि मचो युद्ध अतिघोरा। रुधिरधार धाई चहुंओरा ॥ तेहिक्षण भीम जीति अभिलाषे ॥ आदर सहित सूतसों भाषे ॥ रथ लै चलो शत्रु दल माहीं। लखौ गमन सुभटन की नाहीं ॥

दोहा ॥

कहो किते मम सुरथमधि आयुधभेद समस्त। यह सुनि सूत विशोक इमि बोलो बचन प्रशस्त ॥
मार्गण साठि हजार हैं भल्लौ साठि हजार। रथपैं साठ हजार हैं वर शायक चुरधार ॥
दोयहजार नराच हैं प्रदर सहस है तीनि। दोय सकट हैं खड्ग सब कहैं कहालों गीनि ॥
कालदण्ड सम हैं सहस गदा सुनौ रणधीर। परशु शक्ति मुद्गर घने अगणित तोमर तीर ॥
आयुध कमतर होनकी शङ्का करौ न नेक। लरौ अरिणसों जिमि चहो आयुध तजौ सटेक ॥
यह सुनि भीम कहे बहुरि क्रोध भरेममनैन। निजपर नहिं चीन्हत कछू एहिक्षण सुनु बुधि ऐन ॥
ताते तुम मम भटनके चीन्हत चिन्ह समस्त। रहेहु बचाये तिन्हहि मम आयुध चलत प्रशस्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोच बड़ो नृप ढिग गयो पारथ फिरो न तौन । कर्ण शरण पीड़ित गयो नृपति भई गति कौन ॥

सोरठा ॥

भीमसेन अवरेखि इमिकहिफिरिचहुंओरलखि । ममदलविचलतदेखिविहंसि सूतसों कहतभो ॥
विकल शत्रु दल सर्व हाहाधुनिअति सुनि परत । बरणे भट तजि गर्व इत उत विचलत लखि परत ॥
जानिपरत ओहिओर आयो पारथ रिपुदलन । करि अविरल शरजोर अरिदलमधिपूरत प्रलय ॥
यहसुनि सारथि स्वस्य कह्यौ प्रगट गाण्डीव धुनि । कपिवर वीर ध्वजस्य उदय सूरसम लखिपरत ॥
यह सुनि चौदहग्राम शतदासी अरु वीसरथ । देन कह्यो अभिराम सूतहि भीम प्रसन्न ह्वै ॥

जयकरीछन्द ॥

सुनि सम सैन मध्य अतिसोर । धनुटङ्कार वाद्य धुनिघोर ॥ सुभटन की गरजनि अति चण्ड । गज हय हीसनि महाउमण्ड ॥ मारु मारु मार्यो धुनि भूरि । सुनि पारथ अति अमरष पूरि ॥ कहे कृष्ण करि चपल तुरंग । परलद चलो मध्य सउमंग ॥ सुनि केशव करि हयन अधीम । चले लरत हो जेहिदिशि भीम ॥ शङ्ख वरण घोरणकी दौर । धनुटङ्कार नेमिधुनि गौर ॥ बाणवृष्टि कोसृष्टि महान । पूरत चलो पार्थ बलवान ॥ जृंभहि हतनहेत जिमि पूर्व्व । चलो बज्रधर गहि रिसि गर्व्व ॥ बधते रथी हय हाथी जूह । बधत पदाती सुभटसमूह ॥ पुरुष सिंह ईछत जय पर्म । अरि द्विरदनको मर्दत मर्म ॥ ऐहि विधि देखि पार्थ कहं जात । चची यूथप यूथ विख्यात ॥ हय गज रथ भट जूह बढ़ाय । भिरे पार्थसों शायक छाय ॥ भल्ल शक्ति तोमर बरबाण । गदा प्रश्वध यष्टि कृपाण ॥ आयुध भिन्दपालदे आदि । वर्षण लगे प्रमादि प्रमादि ॥ तेहिक्षण भयो तहां अति युद्ध । लसो कालसम पारथ क्रुद्ध ॥ बधत असंख्यन भटन प्रचारि । लसो सूर जिमि जलदहि टारि ॥

दोहा ॥

छत्र धनुष ध्वज रथ तुरग द्विरद सारथी जूह । रथी पदाती भट बध्यो काटत शस्त्र समूह ॥
शर क्षुरप्र अरु अर्धशशिकीवरषा करि भूरि । चलो पार्थ जहं कर्ण महि रुण्डन मुण्डनपूरि ॥

चौपाई ॥

दल मर्दत तेहि अगरत देखी । अगणित सुभट भिरे अतितेखी ॥ रथी गजी हयसादी योधा । चहुंदिशि ते कीन्हे अवरोधा ॥ मारो धरि बांधो बकि बकिकै । चहुंदिशि ते बोले तकि तकिकै ॥ पड़िश भल्ल शक्ति शर झेलैं । एकबार सहसन भट रेलैं ॥ तिन्हैं पार्थ शर झरिके घातन । क्षणमैं करे भूमिपर पातन ॥ मण्डल सम कोदण्डहि करिकै । रथपर चारु चक्र सम चरिकै ॥ अगणित नर वारण बल ओकन । भेजि देत भो ऊरध लोकन ॥ तहं ह्वै पारथके शर पीड़ित । हाहा करत भगे भट ब्रीड़ित ॥ चिघरत भगे द्विरद मतवारे । हीसत भगे तुरग भयभारे ॥ तेहिक्षण भयो सोर अतिभारी । यम सम लसो पार्थ रणचारी ॥ सो दल जीति पार्थ शर बर्षत । चलो कर्णके दल पहं हर्षत ॥ पार्थहि देखि लसै भट तैसे । गरुड़हि देखि होहि अहि जैसे ॥ भट तजि तजि जीवनको आशा । करैं पार्थसों युद्ध विलाशा ॥ होहिं पार्थके सन्मुख जेते । तुरतै होहिं काल बश तेते ॥ तहां पार्थ अनरथ भरि दीन्हो । भीषम रूप मेदिनिहि कीन्हो ॥ तथा लरे विक्रम अति मितिके । सात्यकि कर्ण आदि उत इतके ॥

दोहा ।

महाघोर संग्राम भो भूप सुनो तेहियाम । अगणित हय गज सुभट मरि जाय बसे यमधाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्थ लरत तहं सोर सुनि भीमसेन बलधाम । ह्वै प्रसन्न अति गर्ब गहि कियो घोर संग्राम ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

महा भीमता भीमता गैर लीन्हो । महा उद्दके तौरको युद्ध कीन्हो ॥ महा पौनसो पौनजा पौन वेगी । शुभा भौन है कौन ता जौन सेगी ॥ कियो गौरता डौरको पाणि लाघौ । लगा-पै यथाना करै दौर बाघौ ॥ युधै नीतिको जोतिको साध साधै । बधै भूरि योधा प्रलय नाध नाधै ॥

दोहा ।

भीम पराक्रम सरित शर वर्षा भौर महान । मधिपरि भ्रमि व्याकुल भयो ममदल नावसमान ॥
मीरबहर सम सुवन तुव तिन्हैं उबारणहेत । पठयो वोहित सरिस वज्र यूथप साहस देत ॥

तोमर छन्द ॥

ते तुरग द्विरदसवार । अरु रथी सुभट उदार ॥ भट भीमसेनहि घेरि । भेलरत वचत न टेरि ॥ तहं लसो भीम अवध्य । जिमि सोम तारण मध्य ॥ ते घेरि वर्षे तच । गुरगदा मूसल पच ॥ अरु भल्ल शक्ति अनेक । की किए भारि गहि टेक ॥ तहं भीम योधा चंड । अति चपल करि कोदंड ॥ करि चक्र सम कोदंड । भरि बाणवृष्टि अखंड ॥ बधि डारि अगणित बीर । विचलाय अगणित भीर ॥ इमि कढ़ो व्यूह बिदारि । जिमि मीन जालहि फारि ॥ तिमि व्यूहबाहेरआय । भोबधत भट समुदाय ॥ द्वैसहस द्विरद सबार । बधि द्विरद कइक हजार ॥ बधि पांच सहस महान । भट गजारोह अमान ॥ शतरथी योधा मारि । भो देत महिपै डारि ॥ बर रुधिर सरिता टारि । भो लसत जिमि त्रिपुरारि ॥ रथ चक्र तहं आवर्त । गिरि भरे हौदा गर्त ॥ हय द्विरद ग्राह अनूप । तहं लसत भीषम रूप ॥

दोहा ॥

भुज धर ऊरुन सुरन के विलसत मीन समान । धनु ध्वज यष्टी अरु गदा करि करनागमहान ॥
लसति चीण पाठीन सम परा शक्ति असि जौन । पीन मीन सम लसति है परी शतघ्नी तौन ॥
मेद फेण आलार शर केश सेवार विधान । चरम कच्छ अरु छच है हंस चरत बिनु प्रान ॥

सारंगरूपक छन्द ॥

या डौर को देखिकै घोर संग्राम । जो भीमसेनै कियो अद्भुतै काम ॥ तो पुच ह्वै व्याकुलै आकुलि छाम । यौं सौबलै सों कह्यो कैबलै आम ॥ लै संग सेना वध्यो याहि या याम । तू तौ विजय मोहिं देहे ममामाम ॥ है कालसों जौन पूरे प्रलय काल । याके मरे हाल ऐहै विजय चाल ॥

दोहा ॥

यह सुनि शकुनिमहीपमणि रण दुन्दुभि बजवाय । सैनसहित बढ़ि भीमसों भिरो बाण झरिलाय ॥

तोमर छन्द ॥

भट भीम ताकहं देखि । बढ़ि भिरो वध अवरेखि ॥ करि पाणि लाघव घोर । भो तजत बाण अघोर ॥ नृप शकुनि सुरथ बढ़ाय । तहं वर्षि शर समुदाय ॥ तकि भीम भटको गात । भो करत वज्र शरपात ॥ लखि बाम पारश तासु । शर हन्यो तीक्षण आसु ॥ लगि अस्थिलों करि गौन । भो बसत शायक तौन ॥ तब भीम ह्वै अति चण्ड । भो तजत बाण उदण्ड ॥ तेहि मध्य हनि शर बेश । भो काटि देत नरेश ॥ तब भीम ताहि प्रचारि । शर अर्द्ध शशि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम मारि ॥ वर धनुष नृपको काटि । वज्र वाण मास्यो डाटि ॥ तब शकुनि नृपति सडौर । गहि तुरित धनुषा और ॥ द्वै सारथी के गात । शर हन्यो भीमहि सात ॥ ध्वज काटि हनि शर एक । फिरि काटि छत्र सटेक ॥ शर चारि तुरगण मारि । भो नदत धनु टङ्कारि ॥ तब भीम सुभट विशाल । भो तजत शक्ति कराल ॥ नृप शक्ति सो गहि फेरि । भो हनत भीमहि टेरि ॥ भुज वाम वेधत तासु । वह गई महिपैं आसु ॥ भिदि भीम तासों तब । करि क्रोध वरषो पत्र ॥ हय शकुनि के सब मारि । भो देत महिपै डारि ॥

दोहा ॥

बधि सूतहि काट्यो ध्वजा तब रथ तजिसो भूप । महिपै ठाढ़ो ह्वै लगो वर्षण बाण अनूप ॥ भीमसेन तब मारि शर काटि कठिन कोदण्ड । सौवल नृपके तन हन्यो शायक अतिशै चण्ड ॥ तासों भिदि भूपति गिरो महिपै ह्वै गतचेत । ताहि डारि रथपहं भगे तोसुत हाहा लेत ॥

अनुगीती छन्द ॥

नृप शकुनि की यह दशा देखि । तो सुवन नृप अनरथ परोखि ॥ वर तुरग चढ़ि भागो उताल । लखि भगे सिगरे सुभट माल ॥ ढिग कर्ण के गे बच बचाहि । सब बकत सूतज पाहि पाहि ॥ बल भीमको सागर अपार । तहं परे सम भट बिनु अधार ॥ तेहि भयो द्वीप सूतज अमान । करि पाणि लाघव वर्षि बान ॥ नृप मचो तेहिक्षण घोर युद्ध । अति कियो विक्रम भीमक्रुद्ध ॥ दै भटन साहस सूत पुत्र । फिरि युद्ध मगलायो सपुत्र ॥ भिरि उभय दिशिके सुभट सर्व । अति युद्ध तहं कीन्हें सगर्व ॥

दोहा ॥

यह सुनिकै धृतराष्ट्र नृप मन करि महा मलीन । कहे तदनु किमि रण भयो कछु सूतज परवीन ॥ यह सुनिकै संजय कह्यो तेहिक्षण कर्ण अमान । कह्यो शल्यसों चलहु जहं भट पाञ्चालमहान ॥

सोरठा ॥

यह सुनि शल्य नरेश रथ चलाय अतिवेगसों । चलो शत्रुदलदेश तकि सेना पाञ्चाल की ॥

चौपाई ॥

सूत सुतहि निज दलमधि आवत । लखि सहदेव नकुल भट भावत ॥ सुवन द्रौपदी के रणधीरा । धृष्टद्युम्न सेनापति बीरा ॥ भीम शिखण्डी सात्यकि योधा । बढ़ि ताको कीन्हें अवरोधा ॥ करलाघव करि करि धनु कर्षे । अविरल बाण कर्ण पहं वर्षे ॥ सात्यकि तेहि शर बीस प्रहारे । बाण पचीस शिखंडी मारे ॥ पांच बाण मास्यो दल नायक । द्रौपदेय सब चौंसठि शायक ॥ शत शर हन्यो नकुल वरवीरा । नव्वे हन्यो भीम रणधीरा ॥ तेहि क्षण सूत सुवन बलवाना । कियो अमानुष कर्म महाना ॥ सबपै जाल शरण के ठाटे । सबके बाण अनगिणे काटे ॥ सबके बाण अनगिणे सहिसहि । सबकहं आउ खरोरुज कहिकहि ॥ सात्यकि कोकरि धनु ध्वज छेदन । हन्यो बाण नव दायक वेदन ॥ भीमहि देखि क्रोध अति कीन्हो । बाण तीनि शत हनि मुद लीन्हो ॥ विरथ कियो द्रुपदी के वारन । क्षणमैं वर्षो बाण हजारन ॥ भीम आदि सब सुभटन क्षणमैं । व्याकुल करि मोदित ह्वै मनमैं ॥ सब कहं बाण अनगिणे हनि हनि । सबकहं कियो पराजित गनि गनि ॥ मृग गण मध्य सिंह सम चरिकै । वरणे भटन पराजित करिकै ॥ मर्दत भयो शत्रुदल तैसें । तरु बन दहै दवानल जैसें ॥ रुण्ड मुण्ड करपग मुण्डनसों । भस्यो भूमि बधि हय झुण्डनसों ॥ कर्ण महा विक्रम करि राजा । बध्यो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंख्यन सुभट समाजा ॥ प्रति सन्धान अनगिणे योधन । बधे कर्ण करि धनुविधि शोधन ॥ सृंजय अरु पांचाल सुयोधा । बढ़ि बढ़ि तासु करैं अवरोधा ॥ तिन मधि लसे सूत सुत तैसो ॥ द्विरदन मध्य केहरी जैसो ॥ भट पांचाल शूरता जोरे । लरि मरिबे ते नहिं मन मोरे । धनु ध्वज सूत रथी हय हाथी । मारि असंख्यन करण प्रमाथी ॥ भीषम रूप मेदिनिहि करिकै । काल सरिस बिलसो पण धरिकै ॥ भीम आदि योधा सब फिरि फिरि । कीन्हें युद्ध कर्णसों भिरि भिरि ॥ तेहिक्षण भयो युद्ध अति भूरित । भई घोरधुनि नभमधि पूरित ॥ तिमि कृप कृतवर्मा बलधामा । दुश्शासन अरु अश्वत्थामा ॥ बरणे शत्रुभटनसों भिरि भिरि । घोरयुद्ध कीन्हें तहं घिरि घिरि ॥ उत अर्जुन इत निजदलमाहीं । सुनि हाहाधुनि गुणि मन माहीं ॥ यदुपतिसों बोल्यो बलसागर । उतलै सुरथ चलो नयनागर ॥

दोहा ॥

सूतज मर्दत सैन मम मृगगण सिंह समान । ताते सादर चलहु उत लखो युद्ध मनमान ॥ यह सुनिकै केशव चले सूतसुवन हो यच । धनु कर्षत पारथ चलो बर्षत अविरल पच ॥ आवत देखि कपिध्वजहि शल्यभूप अनुमानि । सूत सुवन सो कहत भो वचन भयानक सानि ॥

सोरठा ॥

आवत पारथ बीर देखु सूत सुत अधरथी । शोणित सरित गंभीर उमगावत ओहि ओरते ॥ बिकल करत सबसैन आवत तोपहं चाहि वध । अबधरि धीर सचैन बढ़ि आगे भिरु पार्थसों ॥

रोलाछन्द ॥

सभामधि तुम पांडवन कहं कहे अनुचित जौन । आजु धर्महि बेधि बाणन बिकल कीन्हें तौन ॥ भीम आदिक भटन कहं करि बिमुख अद्भुत कर्म । करत तुम एहि समय मनमें गुणत तौन अभर्म ॥ काल सदृश कराल बर्षत दंड शर एहि काल । क्षीण बल जलमीन सुभटन ग्रसत रचि शरजाल ॥ तुम्हें बधिबे हेत आवत बधत भट समुदाय । कौन ऐसो सुभट जो अब तासु सन्मुख जाय ॥ तुम्हें बिनु नहिं और भट जो लरै तासों जूटि । ताहि बधिबे योग कुरुपति तुम्हहि जानत ऊटि ॥ पार्थ आवत लरो अब तुम करो पण प्रतिपाल । पार्थ सम तुम सुभट भीषम द्रोण सम बिकराल ॥ पार्थ धीर धुरीण आवत सकत तेहि सहि कौन । चहत हे तुम भयो सो अब करो करतब जौन ॥ बचन यह सुनि करण बोल्यो शङ्क त्यागोभूप । आजु पार्थहि बधब हम करि युद्ध कर्म अनूप ॥ मोहि पारथ बधिहि कैजै अजय रणगति होय । लरब नृपहित चाहि होनी होइ जो सो होय ॥ कर्ण के ए बचन सुनिकै शल्य नृप मतिमान । कहे जगमें पार्थके सम कौन सुभट अमान ॥ भाषि एहि विधि कह्यो क्रमसों जौन पार्थ सगर्व । किए हे खांडीव दाहन आदि कर्म अखर्व ॥ शंभु आदिक लोक पालन दए शस्त्र अनेक । भाषि सो सब पार्थके गुण कहे सहित बिवेक ॥ शल्यके ए बचन सुनिकै कह्यो कर्ण सडौर । बंदिजन समभूप बरणत पार्थके गुणगौर ॥ पार्थको बल धनुष धरता शस्त्र संचनभेद । सकल जानत भूप हमपै गहत नहिं भय खेद ॥ शल्य नृपसों भाषि एहि बिधि कर्ण धीर धुरीन । नृपति तो सुत भूपसों इमि कहत भो परबीन ॥ भोज कृप गान्धारपति गुरु तनय ए सह सैन । घेरि पार्थहि युद्ध करिकै करैं समित अचैन ॥ तदनु हम लरि बधब तेहि यह बचन सुनि भट सर्व । सेन सह बढ़ि घेरि पार्थहि लगे लरण सगर्व ॥ सव्यशाची पार्थ तेहि क्षण कियो बिक्रम घोर । देत भो प्रति भटन पहं रचि चावसों शर जोर ॥ द्रोण सुत कृप आदि सुभटन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यरथ करि अवलोक । मारि अगणित भटन दीन्हों भेजि ऊरध लोक ॥

तोमरछन्द ॥

ह्वै विरथ चढ़ि रथ और । फिरि लरे भट शिरमौर ॥ करि बाण बर्षा घेरि । नहिं बचत अब इमि टेरि ॥ शर भल्ल पट्टिश आदि । भे तजत आयुध नादि ॥ तहं पार्थ धीर धुरीन । चरि चक्र सरिस अहीन ॥ अति बाणकी झरि ठाटि । सबदेत आयुध काटि ॥ भो हनत सब कहं बाण । दश बीस शत परमाण ॥ तहं द्रोणसुत सह जोर । करि पाणिलाघव घोर ॥ दश बाण पार्थहि मारि । फिरि हन्यो कृष्णहि चारि ॥ शर चारि कपिहि प्रहारि । भो नदत धनु टङ्कारि ॥ तहं पार्थ ताकहं डाटि । धनु ध्वजा द्विजको काटि ॥ बधि सारथी कहं आसु । बधि तुरग चारों तासु ॥ बहु बाण मास्यो ताहि । डरि दशा ताकी चाहि ॥ कृपआदि सब रणधीर । करि सुरथ पै तेहि बीर ॥ बहु किए बल परकाश । नहिं लहत भे अवकाश ॥ परि पार्थ शरके घात । भे विकल बेधित गात ॥ तिमि लसो पार्थ प्रचारि । जिमि जलद बर्षत बारि ॥

दोहा ॥

कृतवर्मा दुश्शासनहिं आदि भटनके गात । अगणित शायक हनत भो पार्थ बीर विख्यात ॥
बर्षा पूरत शरन जिमि रचि जलधार अपार । तिमि पूस्यो ममसैन सब पार्थ शरन के धार ॥
तोसुतआदिकभटनकरिविरथविधनुतेहिठौर । दक्षिणदिशि ह्वैकर्ण पहं चलोसुभटशिरमौर ॥

सोरठा ॥

नकुल शिखण्डी बीर सहदेव सात्यकि तेहि समय । बर्षत अविरल तीर भये तीर भटपार्थके ॥
सह सृंजय कुरुबीर बढ़ि बढ़ि तिनसों भिरत भे । नीरद बर्षत नीरभई दृष्टि तिमि शरणकी ॥

चौपाई ॥

छादित भई उभय दिशि बानन । निरखे पेखि परै कछु आनन ॥ निशि सम अन्धकार तहं छायो । मनु हिमन्तधर पावस आयो ॥ तेहिक्षण पार्थ शत्रुदल जेना । मर्दत भयो कर्णकी सेना ॥ भल्ल क्षुरप्र अर्धशशि शायक । अविरल बर्षि धनुषधर नायक ॥ रथी सारथिहि पारथ मारे । रथ लै भगे तुरग भयभारे ॥ मरे सुभट कितने हय दौरे । बहु भट किए तुरग बिनु बौरे ॥ अंग भंग कितने रथ कीन्हें । अगणित रथिन्ह कालबश कीन्हें ॥ अगणित चामर छत्र पताका । काट्यो अगणित रथके चाका ॥ अगणित शस्त्र सुभट जे झेलत । काटि तिन्हैं निज शायक रेलत ॥ कर पग शिर कटि धनु ध्वज काटत । बधि गज बाजि भयो महि पाटत ॥ अगणित हय गज रथ बिनु योधन । करत लसो करि धनु बिधि शोधन ॥ बहु रथ अंग भंग करि डारत । बहु बितुण्डके सुण्ड बिदारत ॥ शोणितकी सरिता उमगावत । चलो कर्णपहं ओज बढ़ावत ॥ तहं कृतबर्मा नृपके प्रेरे । भट द्विरदस्थ चारिशत घेरे ॥ क्षणमैं द्विरद द्विरदअसबारण । बधत भयो पारथ शर धारण ॥ भूपति सुनो पार्थ तेहि क्षणमैं । काल समान चरत भो रणमैं ॥ जानि परो गांडीवहि कर्षत । पारथ शक्र बज्रशर बर्षत ॥ बनमैं लगे दवानल जैसे । होहिं मृगा सम भवमें तैसे ॥ बिनु करिआ मारुत बश परिकै । बोहित होइ कूलसों टरिकै ॥ तिमि पारथ शर झरिके घातन ॥ ममदल करत भयो सह चातन ॥ दल बिचलाय बीर रस भीजो । चलत भयो कुन्तीसुत तीजो ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

जाय भीमके निकट कहि नृपति कुशल करि मंत्र । फेरि चलत भो कर्ण पहं पारथ वीरखतंत्र ॥
दुश्शासन दशरथिन सह फिरि घेरत भोताहि । दशशरसों तिनके शिरन पारथ काट्योचाहि ॥
इमि गर्बित कुरु सुभट जे भए सामने तासु । बिरथ बिधनु ह्वै शरन भिदि ते गे यमपुर आसु ॥

सोरठा ॥

बिनु कर पग बिनु शीश बिरथ बिधनु बिनु गज तुरग । करत भटन भटईश चलो बामदै फौजमम ॥

चौपाई ॥

महाराज सुनियै तेहिक्षणमैं । नव्वे रथी मरण गुणि मनमैं ॥ ते संसप्तक योधा रूरे । भिरे शपथ करि अमरष पूरे ॥ नव्वे बाण मारि बरफबके । क्षणमैं काटि शीश तिन सबके ॥ तिन सब कहं बधि सहित समाजा । कपिध्वज चलो कर्णपहं राजा ॥ सो लखि लखि योधा एहिदिशिके । रथ गज हयसादी अति रिसिके ॥ जीवन क्षोभ त्यागि धनु कर्षत । भिरे फाल्गुण सों शर बर्षत ॥ तेरहशत गज सादी योधा ॥ म्लेच्छ तासु कीन्हो अवरोधा ॥ शक्ति गदा मूशल शरबर्षा । करत भए गहि अति उतकर्षा ॥ क्षणमैं पार्थ धनुषधर नायक । बरषि क्षुरप्र अर्धशशि शायक ॥ सबके शीश काटि महि डास्यौ । मम सैनामधि प्रलय पसास्यौ ॥ अगणित भट बिनु बाहन कीन्हो । बहुबाहन बिनु भट करि दीन्हो ॥ इतके भट जीवन डरडारी । बढ़ि बढ़ि भिरैं प्रचारी प्रचारी ॥ अतिशै घोरयुद्ध तहं माचो । पारथ काल बीर रस राचो ॥ अतिशै भीर पार्थ पहं देखी । भीमसेन अनरथ अवरेखी ॥ हत शेषन मम योधन तजिकै । पारथके ढिग गयो गरजिकै ॥ हे हतशेष पार्थके धोरे । जे मम सुभट नचावत घोरे ॥ रुद्र समान रुद्रता पागो । तिनपै गदा प्रहारण लागो ॥ महाराज सुनिये तेहिपलमैं । हाहाकार मचो मम दलमैं ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

हयानीक मैं यों प्रलय काल कै कै । गदा लालकै कालकी चाल लै कै ॥ शतानीक जो हे गजानीकमाहीं । महा भीमह्वै भीम योधी मनाहीं ॥ हने पैर मैं मैरके तन्त नैमैं । हने दंतमैं दंतके अंत वैमैं ॥ हने कन्धमैं कुम्भमैं सुण्ड वैमैं । हने जन्त भूकन्तके सुण्डनैमैं ॥

दोहा ॥

हय हयसादी दश सहस बधि पैदर समुदाय । गजानीक मधि धसत भो भीम बीरदृढ़घाय ॥
गजारोहबहुबहुगजनबधि अगणितबिचलाय । फेरि जाय रथपहं लसो भीमओजअधिकाय ॥
तिमि पारथ के शरण भिदि मम योधा बल ऐन । भागि कर्णके ढिग गये तो सुत भए अचैन ॥
साहस दै तिन भटन कहं कर्ण धनुर्द्धर धीर । मर्दत भो पाञ्चाल दल वर्षि असंख्यन तीर ॥

चौपाई ॥

शतानीक श्रुतिसोमहि बाणन । छादित कियो पुरुष पञ्चाणन ॥ धृष्टद्युम्नके घोरण बधिकै । सात्यकिके हय बध्यो बरधिकै ॥ केकयपति के पुत्रहि हतिकै । बिलसत भयो पराक्रम अतिकै ॥ लखि कुमारको मरण अचायक । बढ़ि शर बरषि तासु दलनायक ॥ नाम उग्रकरमा रणचारी । भिरो कर्णके सुतहि प्रचारी ॥ सुत प्रसेन कहं ताड़ित देखी । कर्ण धनुषधर अतिशै तेखी ॥ अर्द्धचन्द्र बरबाण प्रहास्यो । काटि तासु शिर महिपै डास्यो ॥ तब प्रसेन सात्यकिसों भिरिकै । घोर युद्ध कीन्हों तहं थिरिकै ॥ तहं सात्यकि अति गौरव कीन्हो । कर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुतहि बधि यमपुर दीन्हो ॥ सो लखि कर्ण क्रोधसों पागो । काल सरिस रण बिचरण लागो ॥ अति अमोघ शायक मनभायो । भट सात्यकि पहं टेरि चलायो ॥ सुभट शिखण्डी अमरष सनिकै । काट्यौ ताहि तीनिशर हनिकै ॥ सो लखि कर्ण मारि शर चोखो । काट्यौ तासु धनुष अति नोखो ॥ धृष्टद्युम्नको सुत बधि डास्यो । शत्रु सैन मधि प्रलय पसास्यो ॥ सो लखि कृष्ण कहे सुनु पारथ । चलहु कर्ण पहं गुणि बध खारथ ॥ यह सुनि पार्थ शरासन कर्षत । चलो कर्ण पहं शायक बर्षत ॥

टोहा ।

नभ छादित करि शरनसों अन्धकार अति पूरि । चलो वीरपारथ बधत हयगज योधाभूरि ॥
तासु पीठि रक्षक चलो भीम सुभट शिरताज । मण्डल सम कोदण्ड करि मर्दत सैन समाज ॥
तेहिक्षण उतमौजा नृपति युधामन्यु रणधीर । धृष्टद्युम्न भ्राता उभय जनमेजय ए वीर ॥
बढ़िबढ़िबढ़िसूतजसों भिरेतिन्हैं कर्णदृढ़घाय । विरथबिधनुकरिनिमिषमैं देतभयोविचलाय ॥

सोरठा ॥

भूप सुनो तेहिकाल सुवन द्रोपदी के सकल । सात्यकि वीर विशाल भिरे सूतके सुवनसों ॥

बसुकला छन्द ॥

ते सुभट युद्ध । अति किए युद्ध ॥ शर शक्तिघोर । वर्षे अघोर ॥ तिमि सकल ठौर । भोयुद्ध भौर ॥ बहु रुण्ड मुण्ड । पग पाणि सुण्ड ॥ ध्वज धनुष बाण । पाखर महान ॥ हौदा अलान । अंकुश कृपान ॥ रथ अङ्ग भंग । हय केट संग ॥ कर गहे चर्म । तन सहित वर्म ॥ मणि मुकुट जूह । भूषण समूह ॥ सब शस्त्रभेद । घायल सखेद ॥ मधि रुधिर धार । निरखे अपार ॥ जिमि उदधि पूर । जलजन्तु भूर ॥ महि भई भूप । अति भयद रूप ॥ भो दिन कराल । जगनाश काल । तब करि कुमंत्र । अब सुनोतंत्र ॥ एहि समय जौन । भो अनर तौन ॥

॥ टोहा

तोसुत दुश्शासन प्रबल कर्षि कठिन कोदण्ड । भीमसेनसों भिरत भो वर्षत शायक चण्ड ॥
काटि धनुष षटशर हन्यो सूतहि गर्जि प्रचारि । नवशर मास्यो भीमकहं अति करलाघव धारि ॥

सोरठा ॥

भीमसेन तेहि काल शक्ति चलाओ अशनि सम । हनि दश बाण विशाल काटिदयोतोसुवनतेहि ॥

चौपाई ॥

तब गहि कठिन धनुष अतिभारी । भीमसेन अनुपम रणचारी ॥ दुश्शासन पहं शायक बरष्यो । जो लखि हियो भटनको धरष्यो ॥ तिमि तो सुत बाणन की वर्षा । करत भयो गहि अति उतकर्षा ॥ है अति चपल प्रचारि प्रचारी । भल्ल क्षुरप्र प्रहारि प्रहारी ॥ दोऊ सुभट प्रबल अति धरकश । कीन्हें तहां युद्ध अति करकश ॥ अगणित बाण शरणके ठाटन । बारण किए किए बहु काटन ॥ बहु शरपात गात पहं सहि सहि । अब मति भागु खरोरुह कहि कहि ॥ कीन्हें घोर युद्ध तहं दोऊ । जिमि नहिं किए असुर सुर कोऊ ॥ तहं तो सुत अति धनुविधि ठाट्यो । शरसों धनुष भीमको काट्यो ॥ धनुष काटि अति तुरता धास्यो । तीक्षण बाण तासु तन भास्यो ॥ सो धनु त्यागि भीमबल भास्यो । गहि गुरुगदा सुधारि प्रचास्यो ॥ तो शर कठिन सहेउं मैं भाई । अब तू सहु मम दुसह गदाई ॥ इतो कहत तो सुत क्षण पायो । बज्र सरिस वर शक्ति चलायो ॥ सो धसि गई भीम के तनमें । भीम न कियो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेद कछु मनमें ॥ तनते काढ़ि शक्ति गहि सोई । तज्यो दुशासन को तन जोई ॥ फिरि प्रचारि वह गदा प्रहास्यो । शक्र वज्र जिमि गिरि पहं डास्यो ॥

दोहा ॥

गदालगे तो सुतगिरो दश धनु पीछू जाय । हयन सहित चूरण भएरथध्वज धनु समुदाय ॥ भई चूर्णित कवचकी कटी सकल अभिराम । मूर्च्छित ह्वै गतप्राण सम परो बीर बलधाम ॥ तेहिक्षण अति आनद गहे उतके भट समुदाय । पसरोमहाबिषाद इतनृपसो कहोनजाय ॥ दुश्शासनहिं अचेत लखि भीम सुबीर अभर्म । रथ तजि गो तहं बेगसों समुझि सभाके कर्म ॥

छन्द ॥

तहं जाय ताकहं लखि अचेत । भट भीम इमि उर आनि नेत ॥ भो गुणत यह शठ मृतक प्राय । किमि पियो शोणित भेदि काय ॥ बिनु चेत यह किमि लखिहि तौन । हम कहे शोणित पियन जौन ॥ कटि बसन लै जीवन बनाय । तेहि कियो चेतन मरुत छाय ॥

दोहा ॥

करि सचेत दुश्शासनहिं भीम सगर्व सचाय । धरि छातीपर लात इमि बोलो भुजा उठाय ॥ कृप कृतबर्मा अधिरथिहि आदिकसब सुनिलेहु । बधत याहि हमसुभटसो रक्षण करहु सनेहु ॥ यह सुनि कोऊ करि सक्यौ नहिं रक्षण गहि गर्व । पार्थ आदिकन के शरण है छाजित भटसर्व ॥

सोरठा ॥

इमि सुभटन सों टेरि भीम पराक्रम भीमभट । दुश्शासन तन हेरि कहत भयो अमरषभरो ॥ तबतो शोणित पान करन कह्यो हम मधिसभा । सो अब करतसचानसकत त्राणकरिकौनभट ॥

चौपाई ॥

नृप यह सुनि तो सुत रणधीरा । कहत भयो इमि बचन गंभीरा ॥ ए मम कर करि कुंभ बिदारण । देन हार गो बाजि हजारण ॥ इनके बल तुम सर्बस हारे । बर्ष चयोदश बिपिनि बिहारे ॥ शरपंजर बिरचन बलभारे । पीन पयोधर मर्दन हारे ॥ अति सुकुमार सुगन्धनि मीजे । राज सूय के जलसों भीजे ॥ केश द्रोपदी को तेहि कर्षण । कर्णहार मम भुज अरि धर्षण ॥ तुम सब लखत रहे तेहि क्षणमैं । तब न रह्यो कछु विक्रम तनमैं ॥ अब हम परे समर में ऐसे । मनमें रुचै करौ सो तैसे ॥ शोणित पियन कहत तुम सोऊ । करो मोहिं नहिं अमरष कोऊ ॥ क्षाच धर्म पालन करि रणमैं । हम इमि परै मरे भट गणमैं ॥ काग शृगाल पियें मम शोणित । कै तुम पियो करन करि द्रोनित ॥ यह सुनि भीम क्रोध अति गहिकै । फिरि ओहि भांति भटनसों कहिकै ॥ गहि तो सुत को भुजा उपास्यो । सोई तासु गात पहं मास्यो ॥ चरण दबाय कंठ पहं धरिकै । असिसों बक्ष फारि सुद भरिकै ॥ लागो पियन रुधिर कछु तातो । बीर बिभत्स रौद्र रस रातो ॥ पिये वारि ग्रीषम को प्यासो । तिमिसो रुधिर पियत तहं भासो ॥

दोहा ॥

गोरस ऊष मयूष के रस आदिक जे पेय । तिन सबते या रुधिर मैं है अति स्वाद अमेय ॥ इबिधि सराहि सराहितेहिकरतसुशोणित पान । लखि सबजाने असुरयहनहिंमनुष्यबलवान ॥ भरि अंजुलि पीवत रुधिर उमगि गातपै जात । गिराधार धर शिला समलसौभीमको गात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुम्भ करण सम गरजिकै फिरि सब भटनप्रचारि। कंठ काटि पीयनलगो शोणित कर्म विचारि ॥
कहि कहि कहि ताके किए कर्म आदि ते सर्व। डकरि डकरि पीयत भयो शोणित भीम सगर्व ॥

महिखरीछन्द ॥

इमि पियत शोणित देखि भीमहि भीति इतके भट कहे। यह प्रबल राक्षस रहत हो नरवेश अबलो छपि गहे ॥ अब आजु प्रगटित करत भो निजरूप गुण लहि क्षण भलो। तजि राजपुत्रहि चहत भक्षण सबहि नातरु भजि चलो ॥ सुनु भूप तहं तो सुवन दश तिनि देखि बन्धुहि रिसि भरे। बढ़ि मोहबस तजि जीविताशा भीमभटसों भिरि लरे॥ तब भीम तजि दुश्शासनहि चढ़ि सुरथ पै आनद भरो। दशबाणसों बधि तिन्हैं सब निज बन्धु भट मोदित करो ॥

दोहा ॥

तेहिक्षण हाहाकार करि भूप भगी सम सैन। दुर्योधन छप कर्ण सब मोहित भए अचैन ॥
श्रीयदुपति श्रीकृष्णको कहा कियो नहिं जौन। भूप तासु फल प्रगट भो वारि सकैतेहि कौन ॥

सोरठा ॥

अब धरि धीरज भूप रामकृष्ण सुमिरण करो। रामकृष्ण नररूप परब्रह्म परमातमा ॥

स्वस्तिश्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायण स्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथ स्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे कर्णपर्वणि द्वितीयदिनयुद्धे दुश्शासनबधो नामषष्ठोऽध्यायः ॥

दोहा ॥

बधि बन्धुहि शोणित पियत लखि अति अनरथ ऊटि। सहिनसके तोसुवन दश लरे भीमसोंजूटि ॥
दण्डधार सह धनु गहे वातवेग बलवान। कवची पासी खड्ग अरु आलोलुप मतिमान ॥
सुभट सुवर्चस पुत्र तुव निपुण निषंगी वीर। कर्षि कर्षि धनु वर्षि शर किए युद्ध गंभीर ॥

बसुकला छन्द ॥

भट भीम कोपि। तहं प्रलय रोपि ॥ हनि अति उदण्ड। दश विशिख चण्ड ॥ तिन भटन मारि। गहि दियो डारि ॥ सो निरखि वीर। भे विगत धीर ॥

दोहा ॥

दुश्शासनको बध भए कर्णहि निरखि अचैन। शल्य भूमिपति कर्णसों कहत भयो इमि बैन ॥

जयकरीछन्द ॥

सूतसुवन कत भए अचैन। तजो शोच कछु संशय हैन ॥ रणमैं चढ़ि करि युद्ध विनोद। क्षत्रिहि मरिबो मंगल मोद ॥ जय कै अजय युद्धमैं होत। तुम लरिबेमैं करो न ओत ॥ पारथ आदि सुभट रणधीर। आवत तुम पहं वर्षत तीर ॥ तो सुत भट वृषसेन अमान। बढ़ि शत्रुन पहं वर्षत बान ॥ करो युद्ध तुम शोच विहाय। नृपके शोकहि देहु दुराय ॥ तुम पहं धरो युद्धको भार। चलो पार्थ पहं रचि शरधार ॥ जीते सुयश मरे सुरलोक। लरो त्यागि नृपसुतको शोक ॥ सुनि यह वचन सूतसुत दक्ष। लरि लागो मर्दन परपक्ष ॥ तिमि वृषसेन बाण भरि लाय। भयो बधत अरिभट समुदाय ॥ सो लखि नकुल सुवीर उदण्ड। तासों भिरो कर्षि कोदण्ड ॥ दोय क्षुरप्र बाण हनि आसु। ध्वजा काटि धनु काट्यो तासु ॥ तुरित और धनु गहि रणधीर। कर्णपुत्र तेहि मास्यो तीर ॥ तापहं नकुल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकुल पहं तौन। बर्षे बाण सुबिक्रम भौन॥ कर्ण तनय रणधीर बिशाल। अति करलाघव करि तेहिकाल॥ बध्यो नकुलके रथके सर्व। तुरग बनायुज चपल अखर्व॥

दोहा॥

नकुल तुरत सो सुरथ तजि गहि सुचर्म तरवारि। गहि खगगति द्वै सहस भट दयो भूमिपैडारि॥
इबिधि करत अद्भुत करम नकुल सुभट के गात। करत भयो दृषसेन भट अगणित शायक पात॥
काटि शरणसो चर्म असि कियो अनगने टूक। गयो भीमके सुरथ पहं तब भट नकुल अचूक॥

सोरठा॥

कर्णपुत्र रणधीर गर्जि गर्जि बढ़ि कर्षि धनु। बर्षो अगणित तीर तिन युग बन्धुन भटनपहं॥

चौपाई॥

सो लखि अंजनिसुत रणधीरा। बीर बांकुरो अनुपम बीरा॥ सहि न सक्यो हिय अमरष राख्यो। एहि प्रकार पारथ सों भाख्यो॥ कर्ण तनय घन सदृश ननर्दत। माद्री सुतहि शरण सों मर्दत॥ ता पहं बेगि चलो शर बाहत। अजय तासु निजजय यश चाहत॥ यह सुनि पार्थ शरासन कर्षत। चलो कर्ण सुतपै शर बर्षत॥ सो लखि इतके सुभट सयाने। अनरथ होन चहत अनुमाने॥ कृप कृतबर्मा अश्वत्थामा। शकुनि सुयोधन नृप बलधामा॥ शकुनि तनय दृढ़ क्राथ अमाना। दृढ़ नाम योधा बलवाना॥ बर्षत बाण मंच पढ़ि पढ़िकै। आड़त भए ताहि बढ़ि बढ़ि कै॥ सो लखि उतके योधा रूरे। तिनसों भिरे गर्बसों पूरे॥ सात्यकि धृष्टद्युम्न सैनेशा। द्रौपदेय भट भीषम भेशा॥ भई तहां अति तुमुल लराई। पृथक् पृथक् सब कही न जाई॥ नृप कुलिन्दको सुतरणचारी। कृपाचार्य सों भिरो प्रचारी॥ कृपाचार्य अति गौरव लीन्हों। द्विरद सहित ताको बध कीन्हों॥ सो लखि तासु अनुज रणचारी। चलो बिप्र पहं धनु टङ्कारी॥ तब गांधार भूप पण धरिकै। काट्यो तासु शीश शर भरिकै॥ नृप कुलिन्दको सुत धनु कर्षत। द्विरद बढ़ाये चलो शर बर्षत॥ तासों भिरो क्राथ रथचारी। क्राथहि बध्यौ तौन धनुधारी॥ तब दृढ़शरण तासु गज अरद्यौ। गज पगसों तेहि रथ सह मरद्यौ॥ दृढ़हि मारि नृपसुत दृढ़ घायक। चलो शकुनि पहं बर्षत शायक॥ बध्यौ ताहि गान्धार महीपति। बाणनकी बर्षा करि दीपति॥ शतानीक नाकुलि तेहि पलमैं। बध्यौ असंख्यन भट समदलमैं॥ एहि प्रकार दुहुंदिशिके योधा। बढ़ि बढ़ि भिरि करि करि अवरोधा॥ कीन्हे तुमुल युद्ध बलभारे। अगणित मरि सुरलोक सिधारे॥

दोहा॥

कर्ण पुत्र तेहिक्षणकियो विक्रम कठिन कठोर। भीमनकुल कृष्णहिहन्यो तीक्षण बाण अथोर॥
सो लखि पारथ बर्षि शर नृप मम योधन टारि। भो सन्मुख दृषसेनके भटन भूरि भयभारि॥

सोरठा॥

पार्थहि निकट निरेखि कर्ण पुत्र को दण्डधर। शायक बर्षत तेखि चलो नसुचि जिमि शक्र पहं॥
तेहिक्षणअद्भुतकर्म करतभयो धनुधर सुकुट। अगणित शर तकिमर्म हन्यो पार्थहि बर्षिशर॥

चौपाई॥

अति करलाघव करि पण धरिकै। मण्डल सरिस शरासन करिकै॥ अगणित बाण काटि पारथके। करता तासु सरस खारथके॥ बाहुमूलमधि बाण प्रहास्यो। तीक्षण नव शर कृष्णहि मास्यो॥ फिरि दशबाण पार्थ के तनमें। मारत भयो गर्ब गहि मनमें॥ तब पार्थ अति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिसि बिस्तास्यो । कर्ण तनयको नाश बिचास्यो ॥ करि बिशाख भृकुटी अति भीषम । भो जिमि तरणि दुसह लहि ग्रीषम ॥ कर्णहि टेरि कह्यौ इमि भाजा । लहि अकेल तुम सहित समाजा ॥ मम पुत्रहि बधि आनद लीन्हे । धर्म त्यागि अधरम रण कीन्हे ॥ दुर्योधन सह तुम्हरे देखत । हम तो सुतहि बधन अवरेखत ॥ संग लै नृप कृप आदिक दक्षण । जौ करि सको करौ तौ रक्षण ॥ शकुनि दुशासन तूं दुर्योधन । अनरथ मूल प्रलयबिधि शोधन ॥ क्रमसों तुम सब नभपथ लैहौ । गयो दुशासन जहं तहं जैहौ ॥ इमि कहि पार्थ धनुषधर नायक । कर्ण सुतहि मास्यौ दश शायक ॥ फिरि प्रहारि शायक अतिचोखे । काट्यौ तासु शरासन नोखे ॥ फिरि प्रहारि जुग शर अनियारे । काट्यो तासु भुजा बलभारे ॥ तब क्षुर-प्रशर टेरि चलायो । काट्यो तासु शीश मनभायो ॥

दोहा ॥

बिभुज बिशिर ह्वै कर्णसुत गिरो सुरथते भूप । यथा बायुबश शिखरते पुष्पित वृक्ष अनूप ॥
बध लखि सुत वृषसेन कर सूतज ह्वै हतचेत । धरि धीरज फिरि पार्थपहं चलो अजय जय हेत ॥
यह लखि कै केशव कहे आवत कर्ण सखेद । बेगि करो अब तासु बध गुणि अद्भुत धनुवेद ॥
यह सुनि कै पारथ कह्यौ तो अनुकम्पा पाय । एहिदिनमैं हम सूतजहि बधब दिव्यशर छाय ॥

सोरठा ॥

इमि कहि पार्थ अमान करषि कठिन गाण्डीव धनु । बर्षण लागो बाण सूत सुवन रणधीरपहं ॥
तिमि सूतज बलवान बिजय धनुष टङ्कारि बढ़ि । करि अद्भुत सन्धान बरषो शायक पार्थपहं ॥

रोला छन्द ॥

टेरि टेरि प्रचारि दोऊ विदित वीर बिशाल । भए बर्षत दुहुंदिशिसों दिव्य शायक जाल ॥ दुहुनके रथ ब्याघ्रचर्मनि रचित परम अनूप । दुहुनके रथ स्वेतघोरण सहित राजित भूप ॥ द्विरद ध्वज रथ कर्णको अरु पार्थको कपिकेतु । दुहुन रथपै दए दोऊ बिरचि शायक सेतु ॥ दुहुनके दिशि घने बाजन लगे बाजन तत्र । दुहुनके संग सुभट दुहुंदिशि लगे बर्षण पत्र ॥ सुनो नृप तेहि समय दुहुंदिशि दुहुनके भट पक्ष । गुणे निज निज सुजय निश्चल शत्रुनाश समक्ष ॥ धनुष बिधिमैं सदृश दोऊ सुभट भिरि तेहिकाल । किए अद्भुत कर्म दुहुंदिशि बर्षि शायक माल ॥ शक्र संबर सरिस अतिशै प्रबल दोऊ बीर । किए जैसो युद्ध सो सब कहत छूटत धीर ॥ सिद्ध सुर गन्धर्व किन्नर यक्ष आदि समस्त । भए चाहत फाल-गुणको बिशद बिजय प्रशस्त ॥ असुर गुह्यक जातुधान पिशाच आदिक सर्व । भए चाहत सूतसुतको बिजय बिरद अखर्व ॥ भानु भाषे पार्थहि बधि लहै कर्ण सुजीति । कह्यौ मघवा बधै कर्णहि पार्थ पालक नीति ॥ कह्यौ बिधिसों शक्र तेहिक्षण आपु भाष्यौ पूर्व । कृष्ण जेहि दिशि रहैगो सो लहैगो जय गर्व ॥ कहै फिरि अब लहैगो को सुज यशहि मारि । नाथ निश्चय भाषि सो मम देहु संशय टारि ॥ वचन यह सुनि कह्यौ बेधा लहैगो जय पार्थ । कृष्ण जाके सुरथपै निति सधिहि ताको स्वार्थ ॥ वचन यह सुनि भए मोदित सुमनके समुदाय । असुर पक्षी कर्णके सब दए मोद बिहाय ॥ कह्यो तेहिक्षण शल्यसों इमि कर्ण पालक धर्म । पार्थ हमको बधै तौ तुम करौ कैसो कर्म ॥ शल्य बोल्यौ पार्थ तुम कहं बधै तौ हम एक । बधब सिगरे पाण्डवन कहं बरषि शर गहि टेक ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

पारथ बूझे कृष्णसों कर्ण बधै जौ मोहि। तौ प्रभु तुम करिहौ कहा सूतसुवन कहं जोहि ॥
कहे कृष्ण तौ कर्णको करि सबर्ग संहार। क्षणमैं बधि सब कौरवन पूरव प्रलय पसार ॥
कहे पार्थ प्रभु इमि करत जापैं परपियार। सो हम क्षणमैं सूतजहि बधब न संशै चार ॥
सुमन सिद्ध गन्धर्व ऋषि किन्नर असुर सुद्ध। रहे प्रगट रहि तहं लखत कर्णार्जुन को युद्ध ॥

सोरठा ॥

अतिशै सङ्कर घोर होत भयो तेहिक्षण तहां। शस्त्र प्राण धन चोर पूरि रहे रण गेहमधि ॥

चौपाई ॥

पार्थ कर्णके शायक रूरे। बारिबुन्द सम दुहुंदिशि पूरे ॥ दोऊ अति धनुविधि विस्तारे। अगणित हय गज भट बधि डारे ॥ सो लखि पांच सुभट इतकेरे। गणे धनुषधर बीर बडेरे ॥ दुर्योधन कृप शकुनि सोहाए। भोज भूप द्विजसुत भट गाए ॥ बढ़ि बढ़ि कृष्ण पार्थहि तकि तकि। बरषे विशिख भानु मति बकि बकि ॥ तेहिक्षण पार्थ चक्र सम चरिकै। भल्ल अर्ध शशिको झरि करिकै ॥ सबके हय सारथिन संहारे। ध्वज धनु काटि भूरि शर मारे ॥ लखि तिन की यह दशा प्रमादी। शतसुरथी शतहय गजसादी ॥ सक तुषार यमन कांबोजा। भिरे पार्थसों गहि अति ओजा ॥ बर्षि क्षुरप्र पार्थ तेहिक्षणमैं। तिन्हैं काटि डास्यो सब गणमैं ॥ सो लखि सुरगण अति सुदपाए। साधु साधु कहि तूर बजाए ॥ बरषे सुमन पार्थ के ऊपर। व्यथित भए सब तोसुतभूपर ॥ द्रोणतनय सुरबाणी सुनिकै। सुमन वृष्टि लखि मनमैं गुणिकै ॥ दुर्योधननृपको कर गहिकै। एहिविधि कहत भयो थिर रहिकै ॥ नृप प्रसन्न ह्वै मम शिख धरहू। बन्धु बिरोध दोष परिहरहू ॥ पाण्डव अजौ साम्यता चाहत। जन बिनाश लखि हिये कराहत ॥

दोहा ॥

तुम बिरोध तजि धर्मनृपसों मिलि भायपुलेऊ। देऊ भाग करि भूमि सम मिटै सकल संदेऊ ॥
भूप सगण हत शेष सब निज निजगेहन जाहिं। मिटै महा अनरथनृपति और मंच अब नाहिं ॥
निज मरिबेको शङ्क करि हम न कहत यह बैन। हम मम मातुल अमर हैं यह कछु गोपित है न ॥
बन्धुवर्ग समुदाय सह तुम अरु नृपति समस्त। गुणि सबको कल्याण हम बोलत बचन प्रशस्त ॥
तुम मानौ तौ समित करि कर्ण पार्थको युद्ध। धर्महि तुम्हहि मिलाइ हम करैं हिताई शुद्ध ॥

जयकरी छन्द ॥

द्रोणतनयके सुनि ए बैन। कहत भयो तोसुत बलऐन ॥ तुम जो कहे न अनुचित तौन। तुम्है समान लोरहित कौन ॥ पै हम कहत तौन सुनि लेऊ। नहिं मम हियमैं प्रविशत एऊ ॥ सिंह समान भीम बलवान। गहि मम बन्धुहि द्विरद समान ॥ वक्ष फारि शोणित करि पान ॥ गर्बित बोलो बचन अमान। सो मोहि लगो कुलिशकोपात ॥ किमि अब मेल करैं हम तात। हम कीन्हे उन्हको अपकार ॥ सो किमि भूलिहि उन्हैं सबार। ताते गहौ न संशय नेक ॥ कर्ण पार्थ,कहं वधिहि सटेक ॥

दोहा ॥

यह सुनिकै चुप ह्वै रहो द्रोणतनय मतिशुद्ध। होत भयो तेहिक्षण महा कर्णार्जुनको युद्ध ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

एहि विधि लरत भए ते भिरिकै । लरत मनो युग बारिद घिरिकै ॥ दोऊ शक्र सरिस तहं हरषे । वज्र समान घने शर बरषे ॥ मण्डल सरिस शरासन लीन्हे । दोऊ नभशर छाजित कीन्हें ॥ पक्षीजूह वृक्ष पहं जैसे । वासहेत निपतत हैं तैसे ॥ दोउन के शर दोउन ऊपर । परैं परै जिमि पाहन भपर ॥ दोऊ दोउन के शर रूरे । बाणन काटि युद्ध महि पूरे ॥ दश दश बाण दुऊन के तन में । दोऊ हनत भए तेहि क्षण में ॥ पार्थ तहां अति अमरष पाग्यौ । अस्त्राग्नेय कर्ण पहं त्याग्यौ ॥ तेहि क्षण सुरथ कर्ण को राजित । भो अति ज्वाल जालसों छाजित ॥ सबके बसन बरण तहं लागे । है अति विकल सुभट सब भागे ॥ सो लखि कर्ण धनुषधर दारुण । छाड़त भयो अस्त्र वर वारुण ॥ तासों ज्वाल जाल भो लोपित । भयो जलदसों महि नभ गोपित ॥ तब वाइव्य अस्त्र तजि पारथ । ताहि बिदारि करत भो स्वारथ ॥ दाइत अस्त्र कियो बिस्तारा । तासों कढ़ो शरन की धारा ॥ हयन सहित सूतज के गातहि । ते बेधे कण्टक जिमि पातहि ॥ तब अति रिसि करि कर्ण अमाना । छांड्यौ भार्गव अस्त्र महाना ॥

दोहा ॥

अस्त्र अस्त्रसों समित करि बर्षि बाण पग धारि । बधि अगणित पाञ्चालभट दयो भूमि पै डारि ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

बली कर्ण बैवर्ण कै शत्रुसेना । गुन्यो तो सुतै आशि जै जीति देना ॥ कियौ पार्थपै बाणकी वृष्टि कैसें । तजै शैलपैं वारि में घालि जैसें ॥ करै पार्थके अस्त्रकां व्यर्थ तैसें । यथा ईतिकी भीति को भूप नैसे ॥ किए चण्ड कोदण्ड कोदण्ड भारी । लसो काल जैसो प्रलय काल कारी ॥

दोहा ॥

तेहिक्षणइतकेभट गुणे कर्णपारथहिमारि। देनचहतकुरुपतिहि जयधनुविधिसिधिनिरधारि ॥
तथा पार्थ गाण्डीव धनु किये मण्डला कार । बर्षो सूतज पै बिशिख यथा मेघ जलधार ॥
वारि पार्थको बाण सब बाण पार्थ पहं छाय । कर्ण बधत भो शरनसों हय गज भट समुदाय ॥

सोरठा ॥

सोलखिपवनकुमार बिक्रम निधिअमरषभरो। करि निज सुपण विचार पाणिपाणिसोंमलतभो॥

जयकरी छन्द ॥

भीमसेन अति रिसि बिस्तारि । पारथ सों इमि कह्यौ विचारि ॥ तुम गन्धर्वन जीत्यौ पूर्व । कियो शम्भु सों सङ्कर गर्व ॥ इन्द्रहि जीति कियो बनदाह । असुरणसों जय लह्यौ सचाह ॥ अब कत सिथिल भए हौ तात । सहत कर्णको आयुध पात ॥ सुधि करि पूर्व कियो अपकर्म । शीघ्र बधौ एहि गुणि निजधर्म ॥ यह सुनिकै केशव हितमानि । पारथसों बोले अनुमानि ॥ सूतज प्रबल परो यहिकाल । तुम कत गहत सिथिलता चाल ॥ एहि विधि लहौ जीति यहियाम । भोगौ भूरि भूमि अभिराम ॥ यह सुनि पार्थ क्रोध बिस्तारि । त्याग्यौ ब्रह्मअस्त्र पण धारि ॥ तजि तेहि प्रतिम अस्त्र करि गौर । कीन्हों व्यर्थ कर्ण तेहि ठौर ॥ सो लखि कह्यौ भीम अनखाय । अस्त्रभेद तुम दए भुलाय ॥ शायक बर्षि बधौ एहि तात । सिथिल भए दिन बीतो जात ॥ तब पारथ अमरष सों पूरि । सूतज पहं बर्यो शर भूरि ॥ मम सेनामधि शायक छाय । बध्यौ असंख्यन भट समुदाय ॥ शर गाण्डीव धनुषसों मुक्त । भे जिमि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरिणि प्रलय के उक्त ॥ तपि सहसांशु सरिस जगजैन । अस्मित करत भयो मम सैन ॥

दोहा ॥

तेहि बिधि सूतज प्रबल भट बर्षि बाण उरदण्ड । भीम कृष्ण पार्थहि हन्यौ तीनि तीनि शरचण्ड ॥
कृष्णहि शर ताड़ित निरखि पार्थ क्रोध बिस्तारि । शल्य भूपके गात मैं मास्यौ शायक चारि ॥
मारि केतु मैं एक शर करि अद्भुत सन्घात । तीनि चारि बसु दश हन्यौ सूतजके तन बान ॥
तीनि आठ द्वै चारिदश तीक्षण शायक भूप । फिरि क्रमसों कर्णहि हन्यौ करि शर वृष्टि अनूप ॥

सोरठा ॥

जलदभरतजिमिबारितेहिबिधिशायकबरषितहं । बधे द्विरदशतचारिरथीआठशतबधतभो ॥
सहस तुरग असवार पैदर आठ हजार बधि । बरषि घनो शरधार कर्णहि दयो अदृश्य करि ॥

चौपाई ॥

भूपति सुनो कर्ण तेहिक्षण मैं । मण्डल सम धनु करि गुणि मनमैं ॥ करि करि अगणित परस्पर छेदन । बध्यो असंख्यन भट अरिखेदन ॥ सुवन अश्वनीके मन भाए । तेहिक्षण धर्मभूप पहं आए ॥ औषध करि शर व्यथा दुराए । धर्मभूप अति आनद पाए ॥ रथ चढ़िकैआयो निज दलमैं । सुभटन मुदित कियो तेहि पलमैं ॥ कर्ण सिंह तेहि क्षण रण बनमैं । शत शर हन्यौ पार्थ के तनमैं ॥ साठि सुबाण केशवहि मास्यौ । अनिलनन्दनहि अयुत प्रहास्यौ ॥ छको बीररस प्रबल प्रमादित । अरिदल कियो शरनसों छादित ॥ तिमि पारथ धनु कर्षण करिकै । रथ पर चपल चक्र सम चरिकै ॥ बाणन अन्धकार करि दीन्हो । जाते परो न हय गज चीन्हो ॥ तीक्षण दश शर शल्यहि हनिकै । कर्णहि मास्यौ द्वादश गणिकै ॥ फेरि सात शायक अति चोखे । मारत भयो तेजसों पोखे ॥ शायक बर्षि कर्ण धनुधारी । हन्यो ताहि शर तीनि प्रचारी ॥ कृष्णहि हन्यौ पांच बर शायक । कर्ण सुवीर विदित भटनायक ॥ पार्थ केशवहि बेधित देखी । बर्षो बिशिख नाश अवरेखी ॥ दोय सहस सूतजके अंगी । बधि कीन्हे यमपुर-गत संगी ॥

दोहा ॥

तजिकर्णहितेहिक्षणभगेतोसुतभटसमुदाय । जिमिब्याधहिलखिसुतरुतजिभगतबिहगभय पाय ॥
पार्थ अधरथी के बधन को पण पूरण धारि । पार्थ लसो जिमि त्रिपुरदल मध्य लसो त्रिपुरारि ॥

सोरठा ॥

तिमि सूतज रणधीर प्रलय भस्यौ पर सैनमधि । दोऊ तुलबल बीर कीन्हे अद्भुत युद्ध तहं ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥

महाबीर दोऊ धनुर्बेदचारी । दुहूं ओर कै बाणकी वृष्टि भारी ॥ किए घोर संग्राम ताठौर दोऊ । नहीं सामुहे भे दुहूं ओर कोऊ ॥ गए दूरि जेते भए मौन ऐसे । गए सामने ते भए नाभ ऐसे ॥ दुहूं ओर के यों कहे जाचिबेको । नहीं आजु तो योग है बाचिबेको ॥

दोहा ॥

कर्णहि बधि दल कौरबी बधिहि पार्थ बलऐन । कै पार्थहि बधि कै करण बधत पाण्डबीसैन ॥

चौपाई ॥

दोऊ गगन शरन भरि दीन्हे । अन्धकार आरोपित कीन्हे ॥ दोउन के अति विक्रम देखी । बिस्मित भए सुमन अवरेखी ॥ दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे । इमि कहि कहि सुर दुहुन प्रशंसे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोउनके कर करि कर भारी । रहे जात लखि कानन चारी ॥ कबहुं पार्थ बढ़ि विक्रम कीन्हो । कबहुं सूतसुत गुरता लीन्हो ॥ रह्यौ न थिरि घटि बढ़ि पद कोऊ । अतिशै प्रबल धनुषधर दोऊ ॥ भूप किए तहं तुमुल लराई । पृथक् पृथक् सब कही न जाई ॥ नृप तेहि समय भई कछु लीला । सो हम कहैं सुनो श्रुतिशीला ॥ नागराज को सुत रिसिपागो । जो खाण्डव सुविपिनि ते भागो ॥ मात बधनको अघ गहि हीरे । सो तेहि समौ समय लहि नीरे ॥ पार्थहि बधन हेत अति धरकस । प्रविशत भयो कर्णके तरकस ॥ गहि शररूप रहो छवि सानो । काल कराल पार्थको मानो ॥ अइरावत सुत मुख सो शायक । योजित कियो कर्ण भट नायक ॥ लखि सो बाण काल समनाचत । शक्र कह्यो नहिं मम सुत बाचत ॥ कहे बिरंचि शोच मति करहू । मरिहि न तोसुत साहस धरहू ॥ चाहि पार्थको शीश अनोखो । कर्ण तज्यो सो शायक चोखो ॥

दोहा ॥

निरखि तासुऊरधसुगतिकेशव रथहि दबाय । कछु महिमधिप्रविशितकियोचारुचक्र गहिचाय ॥
भूमि चक्र प्रविशित भए चारौं हय तेहि मान । जानु मोरि महि पहं धरे हरि इच्छा बलवान ॥
इन्द्रदत्त शुचिमुकुटमधि लगो बाणकरि गौन । कटि किरीट महिमधि गिरो व्यर्थभयो शर तौन ॥

श्लोक ॥

गोकर्णासुसुखीकृतेन इषुना गोपुत्रसंप्रेषिता गोशब्दात्मजभूषण सुविहितं सुव्यक्त गोसुभ्रमं ।
दृष्ट्वा गोगत कंजहारमुकुटं गोशब्दागापूरिवै । गोकर्णाशनमर्द नम्रनतया न प्राप्य मृत्योर्वशं ॥

दोहा ॥

उग्र बाण बपु नाग वह बहुरि कर्ण पहं जाय । कह्यौ कृष्णको कृपाते बचो पार्थको काय ॥
फेरि तजौ मोहि पार्थ पहं अब कै बची न तौन । शक्रहुके रक्षण करे करिहि कालपुर गौन ॥

सोरठा ॥

सूतज सुनि यह बैन कह्यौ नागसों कौन तुम । सो सुनि नाग सचैन पूर्व कथा सब कहत भो ॥

तोमर छन्द ॥

सुनि सूतसुत बलवान । इमि कह्यौ करि अनुमान ॥ हम औरको बल पाय । नहिं चहत जय सुखदाय ॥ तुम जाहु निज अस्थान । हम बधब हनि निजबान ॥ फिरि चलो सो अहि एक । गहि पार्थ बधको टेक ॥ तेहि देखि हरि गहि खेद । कहि दए पारथहि भेद ॥ तेहि पार्थ हनि षट पत्र । करि दयो षटधा तत्र ॥ फिरि बर्षि शायक धार । शत रथिन को संहार ॥ भो करत पारथ बीर । भट बिदित अति रणधीर ॥ भट कर्ण तेहिक्षण भूप । ह्वै दुसह सूर स्वरूप ॥ बर शरनकी झरि लाय । दश हन्यो ताके काय ॥ तब पार्थ रिसि करि चाहि । शर हन्यो द्वादश ताहि ॥ तब कर्ण पार्थहि टेरि । शर हन्यो नब्बे फेरि ॥ फिरि बासुदेवहि हेरि । शर हन्यो द्वादश घेरि ॥ तकि गरजि गरजि सहास । शर हनत भो गुणि नास ॥ शर बर्षि पारथ आसु । नहिं सह्यौ गरजनि तासु ॥ तकि कर्ण भटको गात । भो करत बहु शरपात ॥

दोहा ॥

करलाघव करि बर्षि शर टेरि टेरि गहि टेक । चारु कर्णके कर्णको कुण्डल काट्यौ एक ॥
अतिरिसिकरितेहितीनिशरमास्यौकर्णकराल । परिचिदोषबशपुरुषसमपार्थ भयो तेहिकाल ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनु गाण्डीवहि कर्षि तेहि पार्थ हन्यो बज्रबान । लसो कर्ण वर्षा समय गैरिक श्रृंग समान॥

सोरठा ॥

सुनो भूप तेहि ठौर दोऊ बरणे धनुष धर । किए युद्ध एहि डौर जो लखि बिस्मित सुमन भे ॥

चौपाई ॥

महाराज सुनिये तेहि क्षणमें । कर्ण गह्यौ अति गौरव मनमें ॥ अति तीक्षण बर बाण अधोरे । मारत भयो पार्थके हीरे ॥ तासों भिदि मोहित ह्वै पारथ । नहिं करि सक्यौ धनुष चरिता रथ ॥ सो लखि कर्ण धर्म बिद आरज । थिर ह्वै रहो त्यागि धनुकारज ॥ कृष्ण पारथहि मोहित ज्वकै । कहत भए अति दोचित ह्वैकै ॥ पार्थ धीर धरि शायक बरषौ । प्रबल शत्रुको बध करि हरषौ ॥ पार्थ कृष्णको बाणी सुनिकै । लगो बिशिख बर्षण धनु धुनिकै ॥ तथा कर्ण अति अमरष पागो । करि लाघव शर बर्षण लागो ॥ दोऊ धनुधर गौरव लीन्हो । अतिशै कठिन युद्ध तहं कीन्हो ॥ नृप तेहि समय समुझि निज बानो । काल कर्णके ढिग नगिचानो ॥ परशुरामको शाप सोहायो । अरु द्विजशाप समय लखि आयो ॥ रथको बामचक्र बरवरणी । गाढ़े ग्रसत भई तब धरणी ॥ शल्य यतन करि बिस्मय भारे । बली तुरग सब बल करि हारे ॥ यह अनरथ लखि कर्ण बिचास्यौ । महि केहि हेत सुरथ मम धास्यौ ॥ मैं न कियो अधरम निज जानत । दान मान दायक सब मानत ॥ धर्म धर्म करतहि निति रच्छत । अब मम धर्म भयो कित गच्छत ॥

दोहा ॥

इमिकहि सुमिरत निज धरम धरम धुरंधर धीर । पारथ के बाणनि भयो बिकलकर्ण रणधीर ॥
कर्षि धनुष कृष्णहि हन्यौ तीक्षण तीनि सुबान । हन्यौ अर्जुनहि सातशर करि अद्भुत सन्धान ॥
अति तीक्षण सचह बिशिख कर्णहि मास्यौ पार्थ । गात बेधि ते कढ़ि गए भूपति सुनो यथार्थ ॥

सोरठा ॥

कर्ण साहसी धीर तजत भयो ब्रह्मास्त्र तब । सो लखि पारथ बीर ऐन्द्रअस्त्र छाड़त भयो ॥
ऐन्द्र अस्त्र बर तासु व्यर्थ भयो ब्रह्मास्त्रसों । सो लखि पारथ आसु तजत भयो ब्रह्मास्त्र तहं ॥

चौपाई ॥

तुल्य प्रभाव अस्त्र ते भिरिकै । नृप सुनु समित भयो तहं थिरिकै ॥ तहां कर्ण अति तुरता गहिकै । पारथ अब न बचत इमि कहिकै ॥ कर्ण बीर अति धनुबिधि ठाय्यौ । ता धनुको सुप्रत्यंचा काय्यौ ॥ पार्थ प्रत्यंचा और चढ़ायो । काय्यौ सोउ कर्ण भट भायो ॥ तीसरि चउथि पांचई छठईं । ज्या काटत भो सतईं अठईं ॥ कटत प्रत्यंचा पार्थ चढ़ावै । कर्ण काटि तेहि ओज बढ़ावै ॥ पार्थ धनुषकी ज्यागुण अगरी । कीन्हो कर्ण भांडकी पगरी ॥ क्रमसों पारथके धनुकेरी । शतज्या काटि दयो शतबेरी ॥ तहं पारथ अति गौरब लीन्हो । नृप अचरज करलाघव कीन्हो ॥ कटत चढ़ावत बर्षत बाणहि । नेकु न भेद परो लखि आनहि ॥ रथ बिनु चले कर्ण तेहि क्षणमें । समय देखि ह्वै ब्याकुल मनमें ॥ धनु रथपै धरि बीर उतरि कै । चारुचक्र युगकरसों धरिकै ॥ लगो उठावन सुनु महिसाईं । अचरज कियो कर्ण तेहिठांईं ॥ गिरि सागर कानन सह धरणी । रथके संग तेहि पूरण परणी ॥ अंगुल चारि प्रमाण उठायो । सुरगण के मन बिस्मय छायो ॥ छुटो न रथ तब कर्ण बिलखिकै । सजल नयन भो इत उत लखिकै ॥ करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षणमें । बज्र शर हन्यौ कर्णके तनमें ॥ तिनसों कर्ण महा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःख पायो। पारथको इमि टेरि सुनायो ॥ हेहे पार्थ कहा अघ धारो। बाणवृष्टि क्षण एक निवारो॥ ग्रसत चक्र धरणी ते जबलों। मैं काढ़ों तूंयिर रुज तबलों ॥ बिना शस्त्रपहं तजिबो शायक। उचित न तुम्हें विदित भटनायक ॥ दोहा ॥

नहिं कृष्णहि नहिं तुम्हहि हम भोति कहत एवैन। तुमसे क्षत्रिहि धरमको तजिबो सोहत हैन॥ जौलगि चक्र छोड़ाइ हमनहिं पकरैं धनु बान। पारथ तौलगि करि क्षमा बहुरि लरो मनमान॥

जयकरी छन्द।

तहां कर्ण के सुनि एवैन। कहत भए केशव मतिऐन ॥ तुम दुर्योधन शकुनि कराल। कब कीन्हे सुधरम प्रतिपाल ॥ भीमसेन कहं जहर खवाय। सापनसों दीन्हे कटवाय ॥ करिकै मंत्र नाश अभिलाखि। इन कहं लाक्षागृहमें राखि ॥ निशिमें दाह करायो पूर्व। तब कित रहो धर्मव्रत गूर्व ॥ किए सभा में कुकरम जौन। अब नहिं कहत बनत सब तौन ॥ तेरहे बर्षि बांटि महि लेन। किए करार न चाहे देन ॥ तब कित गयो धरमको काम। अब लखि परो धरम अभिराम ॥ बिरथ बिधनुष अकेलो वार। पार्थसुतहि बधि पट धनुधार ॥ अतिआनद लहि भए अभर्म। अब चाहत करवावो धर्म ॥ अब तो बध करिबो एहि याम। है पारथको धर्म ललाम ॥ केशवके ए बचन अनूप। सुनि सूतज ह्वै लज्जित भूप ॥ फिरि रथ पहं चढ़ि गहि कोदण्ड। बर्षण लागो बाण उदण्ड ॥ भरो क्रोध लाघव सरसाय। दयो पार्थ पहं शायक छाय ॥ सो लखि कै केशव अनुमानि। कहे पार्थसों औसर जानि ॥ दिव्य शरणसों बेधि सडौर। अब एहि शीघ्र बधौ करि गौर ॥

दोहा ॥

केशवके ए बचन सुनि पारथ धनु टङ्कारि। बर्षण लागो कर्ण पहं दिव्यअस्त्र पण धारि ॥ करत भयो ब्रह्मास्त्रको तेहिक्षण कर्ण प्रयोग। पारथ तजि ब्रह्मास्त्र तेहि क्षमित कियो करियोग॥ ताहि समित करि तजत भो दृढ़तअस्त्र सोबीर। बारुणास्त्रसों तेहि समित कियो कर्ण रणधीर॥ घनतम सों छादित दिशा देखि पार्थ करि कोप। कियो अस्त्र बायव्यसों बारुणास्त्रको लोप॥

सोरठा ॥

सो लखि कर्ण अमान परम दिव्यशर गहतभो। करि अद्भुत सन्धान तज्यौ देखि डरपे सुमन ॥ बज्र सरिस सो बाण तासु भुजा तर मधि लगो। भिदि तासों बलवान मोहित भो अर्जुन सुभट ॥

चौपाई ॥

महाराज सुनिये तेहिक्षणमें। रथते उतरि कर्ण गुणि मनमें ॥ हर्ष बिषाद क्रोधसों पागो। बल करि सुरथ उठावन लागो ॥ कृष्णचद्रसो समय निरेखी। पारथसों बोले अवरेखी ॥ रथ चढ़ि गहे धनुष शर जौलौं। कर्णहि पार्थ बधौ तुम तौलौं ॥ कृष्णचन्द्र की बाणी सुनिकै। पारथ मंत्र यथारथ गुणिकै ॥ तीक्षण शर क्षुरप्र कर लीन्हो। तासों केतु काटि ई कीन्हो ॥ फिरि अमोघ आंजलिक सुशायक। गह्यौ पार्थ भट धनुधर नायक ॥ चक्र त्रिशूल बज्र सम घोरा। काल दण्ड सम कठिन कठोरा ॥ प्रलय काल के भानु समाना। बायु अग्नि सम दुसह महाना ॥ भरि आंगिरस मंत्रको पुरता। करि अति अगणित गौरव गुरता ॥ सब दिशि हेरि क्रोधसों राता। बोलो पार्थ बीर रस माता ॥ अब इनि यह शर गौरव भेखो। कर्णहि बधि डारत शर देखो ॥ इमि कहि पारथ तेहि शर बरसों। काट्यो शीष करण के धरसों ॥ मारतण्ड सम परम प्रभाको। महिपै गिरो शीष कटि ताको ॥ तदनु गिरो धर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि बल गारो। सरस सुखोचित सुषमा भारो ॥ मणिमै भूरि भूषणनि छाजित। महि पर भयो कर्ण भट राजित ॥

दोहा ॥

सबके देखत तहं भयो अद्भुत अति अमलीन। तेज कर्ण को देहसों कढ़ि भो रविमो लीन ॥
इबिध कर्ण को बध निरखि केशव पाण्डव सर्व। लगे बजावन शङ्ख अति आनद भरे सगर्व ॥
गरजि गरजि सोमक सकल अरु पाञ्चाल समस्त। सानद बजवावन लगे जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥
नृप तहं ममदल मधि मढ़ो हाहाधुनि गम्भीर। भागि चले भट बिकल ह्वै तजि बल गौरव धीर ॥

सोरठा ॥

कर्ण अग्निकी शांति युद्ध यज्ञ के अन्त लखि। आवत भयो अकान्ति सरथ शल्य रित्युज बिकल ॥
दुर्योधन क्षितिपाल कर्ण सखाको बधनिरखि। तजत नयनजलजाल महाराजअतिबिकल भो ॥
पूरित मोद महान करिकरि धनुटङ्कार अति। भीमसेन बलवान गरजि गरजि निरतत भयो ॥
शल्य नृपति पहं आय सकल व्यवस्था कहत भो। सुनि तो सुत क्षितिराय रुदन कियो अतिदीन ह्वै ॥

चौपाई ॥

नृप धृतराष्ट्र वचन यह सुनिकै। संजय सों बूझे शिर धुनिकै ॥ संजय कहो दशा लहि ऐसो। मम सुत भूप गह्यौ गति कैसी ॥ संजय कह्यौ सुनो नर नायक। तेहि पल तो भट भए अचायक ॥ पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि बधिकै। अब हम सब कहं बधो बरधि कै ॥ भीम सेन बिनु बधे न छांड़िहि। को अस सुभट ताहि जो आड़िहि ॥ यह बिचारि अतिशै भय पागे। साहस छोड़ि भूरि भट भागे ॥ नृप तेहि क्षण मम भट भे तैसे। बूड़े नाव वणिकजन जैसे ॥ लखि यह दशा भूप दुर्योधन। निज चख जलकौ करि अवरोधन ॥ गुणि दुख गहे हारि एहि क्षणमैं। तो सुत भूप धीर धरि मनमैं ॥ बिचले भटन टेरि अनखायो। क्षात्रधर्म बहु भांति सुनायो ॥ सो सुनि ते सब फिरे न कैसे। रुकै न बहुत सरितजल जैसे ॥ सो लखि तोसुत सुभट अतोलो। सुहित सारथी सों इमि बोलो ॥ संशय त्यागि चपल करि घोरे। सादर चलो पार्थ के धोरे ॥ मैं रण रच्यो सुभुजबल भाई। बिचलि जाहि सब सुभट सहाई ॥ कहा भीम का केशव पारथ। हम बधि इन्हैं करब निज स्वारथ ॥ ए नहिं आइ सकत मम नीरे। मम बिक्रम गुणि डरपति हीरे ॥ ऐहि बिधि तो सुत नृपसों सुनिकै। धोरे चलो सारथी गुणिकै ॥ सहस पचीस बीर भट बांके। बर्षत बिशिख चले संग ताके ॥ सो लखि गर्बि उतैके योधा। बढ़ि तिनको कीन्हें अवरोधा ॥ सात्यकि भीम नकुल दोउ भाई। धृष्टद्युम्न अति ओज बढ़ाई ॥ कीन्हें घोर युद्ध तहं राजा। बधे असंख्यन सन समाजा ॥ तिमि इतके योधा पण धरिकै। बधे असंख्यन भट शर झरिकै ॥

दोहा ॥

गर्जि गर्जि भट भीम तहं गहि गुरगदा अमान। बधत भयो कैयक सहस हयगज भट परधान ॥
अतिव्याकुल ह्वै तेहि समय इतके भट हतशेष। भगे नृपहि तजि त्याग करि क्षात्रधर्म की रेष ॥

सोरठा ॥

सुनु भूपति तेहिकाल तो सुत नृप धनु धर सुकुट। बर्षि शरणको जाल घोर पराक्रम करत भो ॥
एक सुभट रणधीर भिरि अगणित परभटनसों। कियो युद्धगंभीर पूरि भूरि शर दिशनि मैं ॥

रोलाछन्द ॥

शल्यनृप तेहि समय भूपहि भरो अमरख देखि। सैन बिचलित देखि नृपसों कहत भो अव-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखि ॥ युद्ध करि तन त्यागि क्षत्री लहे ऊरधलोक। युद्ध मैं तन त्याग क्षत्रिहि श्रेष्ठ त्यागौ शोक॥ करण दुश्शासनहि आदिक परे तो प्रिय पर्म। लहै उत्तमलोक रणमैं पालि क्षत्रीधर्म॥ भीम सूतज द्रोणसुत वृषसेन सात्यकि पार्थ। मेदमय करि मेदनी अब किये फेरि यथार्थ॥ देखि दुश्शासन करण वृषसेन भट को नास। भगे भट फिरि सकत नहिं लरि भरे अतिशै त्रास॥ भूमिपति अब युद्ध त्यागो देशकाल विचारि। चलो डेरण कर्ण बधको शोक हियसों टारि॥ शल्यके सुनि वचन भूपति युद्ध त्यागि विचारि। लगो रोदन करण व्याकुल कर्ण कर्ण पुकारि॥ शल्यनृप तेहि समय बहुविधि भूपतिहि समुझाय। चलो डेरण वोर लै रथ युगुतिसों फेरवाय॥ द्रोणसुत कृप शकुनि कृतवर्मादि सुभट समस्त। गहे अतिदुख चले डेरण होत सूरज अस्त॥ गए निज निज ठौर सुर गन्धर्व ऋषि समुदाय। सदल पाण्डव गए डेरण दुन्दुभी बजवाय॥ कृष्ण पारथ मुदित पूरत शङ्ख धुनि कमणीय। गए डेरण जय प्रशंसा सुनत अति रमणीय॥ कहे केशव पूर्व वृत्तहि बध्यो शक्र अमान। आजु ता सम कर्ण कहं तुम बध्यौ हनि बरवान॥

दोहा॥

बहुदिनसों इच्छित रहे धर्मनृपति यहकाल। चलि तासों बधकर्णकोकहो सुवचन रसाल॥
कृष्ण पार्थ कहं देखिनृप जानिकर्णकोनाश। उठि सप्रेम उरलाय बसि बूझे कुशल सुपास॥

सोरठा॥

तहं अर्जुन यदुराय धर्मनृपतिको वचन सुनि। क्रमसों दए सुनाय जेहिप्रकार गो वर्ण बधि॥

महिखरी छन्द॥

सुनि प्रबल अरि भटकरणको बध धरम अति आनद भरे। बहुभांति हरिहि प्रशंसि प्रभुता कृपाको वर्णन करे॥ फिरि कृष्ण पारथ भटन सह चढ़ि सुरथपै मोदित महा। गे धर्मभूपति कर्ण भटमणि परो हो जेहियल तहा॥ तहं सहित सुत मरि परो कर्णहि देखि अति आनद गहे। तुव कृपासों मम सुजय सब थर इविधि केशवसों कहे॥ बहु जरत चारु मसाल संग उमंगसों सब देखि कै। नृप धर्म डेरण गए फिरि निज सुजय ध्रुव अवरेखि कै॥

दोहा॥

करत प्रशंसा कृष्ण अरु पारथकी सब वीर। गे निज निज डेरण लहत आनद सिन्धु गंभीर॥
भूपति कियो कुमंत्र तुम करता इतो अनर्थ। प्रलयकाल आरोपि अब शोच करत हौ व्यर्थ॥

वैशम्पायन उवाच॥

इविधि कर्णको मरण सुनि दम्पति वृद्ध नरेश। मोहित ह्वै गिरि परत भे त्यागि चेतको लेश॥
भूपहि गहि संजय विदुर गन्धारिहि कुरुनारि। चेतित कीन्हे यतन करि धीरज धरौ पुकारि॥
कर्ण पर्वमो होत भो एहि विधि युद्ध विनोद। राम कृष्ण कहं जपत सो लहत सदा जयमोद॥

सोरठा॥

रामभक्त कपिवीर विलसो जासु ध्वजस्थ ह्वै। कृष्ण बसे जातीर किमि न कहै जय पार्थ सो॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे कर्णपर्व समाप्तम्॥

फाल्गुण कृष्ण एकादश्यां गुरुवासरे—संवत् १९३० वि०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

शल्य पर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कारनारायणहि करिनरोत्तमहिनौमि । बन्दिगिरा ब्यासहिरचत भारतभाषासौमि ॥
जेहिरघुबरप्रभुकेचरित बहुशतकोटिअमन्द । ताहिनौमिभारतरचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥
पारथके स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारत भाषा रूप ॥

सोरठा ॥

बन्दौं कपिवर बीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगलमूरति धीर भारत ध्वस्य ध्वजस्य वर ॥
सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधिउलंघनसमयकी । भारत समुदप्रतच्छ भाषाकरि चाहततस्यौ ॥

दोहा ॥

दासरथी नृपरामप्रभु विश्वयोनि भगवान । जासु परमप्रभुता परषि जलमधितरे पषान ॥
जेहि प्रभुकी लहि कलछपा सुरगण भएअशल्य । शल्यपर्व भाषारचत सुमिरितासु कौशल्य ॥

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥

हेद्विजबर यहचरितसुनि ममन गहतनतोष । कहोकर्णबध परलरे किमियुग नृपतिसरोष ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥

सुनो भूप लखि कर्णको बधदुर्योधन राय । कर्ण कर्ण कहि कहि विकल रोदन कियो अचाय ॥
करिरोदन सबभटनसह नृपदुर्योधन राय । गुणिभाविहि बलवानधरि धीरभेरिबजवाय ॥
करिशल्यहि सेनाधिपति सहनृपभटहतशेष । कियो युद्ध पाण्डवनसों गहि क्षत्रिणकी रेष ॥
शल्यनृपति पाण्डवनसों करि सुयुद्ध युगयाम । धर्मनृपतिके शरणभिदि तनतजिगो सुरधाम ॥
शल्यभूपको बध निरखि लहि मरिबेकीचास । दुर्योधन ह्रदमधिदुरो गहि बचिबेकीआस ॥
तहां जाय टेरत भयो भीम कढ़ो तब भूप । गदायुद्ध करि तेहि बध्यो भीम भयानक रूप ॥

रोला छन्द ॥

नृपति को बध देखि संजय पूरि शोक महान । गयो पुर में भयो अनरथ करत यह आह्वान ॥ सुनत नृप बध बचन पुरजन मोह दुख बिसारि । हाय हा कहि लगे रोदन करन सब नर नारि ॥ गए संजय रहे जहं धृतराष्ट्र बिदुर समेत । पुत्रबधुन समेतहो गांधारजा गतचेत ॥ करत रोदन बिकल संजय भूपके ढिग जाय । शल्य अरु नृपसुतन को बध दयो सबिधि सुनाय ॥ गए बधि तो सुवन सब अरु नृपनके समुदाय । धृष्टद्युम्नहि आदि उत सब मरे बेधित काय ॥ सात सुरथी बचे उत इत तीनि भट तजि खेत । कृष्ण सात्यकि पांच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डव उतै जययश लेत ॥ इतै कृतवर्मा महीपति द्रोणसुत कृपवीर । और सब बधि गए इत उत रहे जे रणधीर ॥ बचन यह सुनि मूर्छि महि पै गिरे है जे तब । राजयोषित बिदुर नृप मनु लगो तीक्षणपच ॥ घरिकमें नृप चेत लहि उठि बैठि धीरज धारि । बिदुरसों इमि कह्यो भावी होति औशि बिचारि ॥ बिदुर मोहिं अनाथकहं अब रही तो गति एक । भाषि इमि फिरि गिरो महिपर रहो चेत न नेक ॥ सीचि जलसों बिजन करि तब कियो चेतित लोग । चेति बैठो भूप पूरित पुत्रशोक कुरोग ॥ ऊबि ऊबि उसास लैलै चेति छिनु छिनु मोहि । घरिकमें इमि बिदुरसों नृप कहो कुसमय जोहि ॥ जाहिं गांधारी तियन सह गेहमें एहिकाल । बचन यह सुनि गईं तियसब करत रुदन कराल ॥ और जन जे रहे तिन्हहिं बिसर्जि दृढ़ नरेश । करन रुदन प्रलाप लागे त्यागि धीरज लेश ॥ दारु लोह पषाण सों मम हृदय कठिन असान । फटत नहिं लहि शोक ऐसो वज्रपात समान ॥ महाराज धिराज नरपति भूमिको मघवान । अन्ध दृढ़ सु पितहि तजि कित गए तजि पण्ठान ॥ तात हेहे महाराज पुकारि सानद जोहि । मधुरबाणी परम प्रिय न सुनाइ है अब मोहि ॥ सहित बन्धुन करत हे तुम बाल कौतुक जौन । दयो अतिसुख पूर्व अब मम हियो दाहत तौन ॥ पुत्र तो ऐश्वर्य्य विक्रम फौज सौज उदण्ड । ससुझि परचत हियो मम गुणि तेज दुसह अखण्ड ॥ द्रोण भीषम कर्ण कृप भगदत्त अश्वत्थाम । शकुनि कृतवर्मा अलम्बुष शल्य बलबुधिधाम ॥ विन्द अरु अनुविन्द भूरिश्रवा आदि नरेश । यमनसक काम्बोज संसप्तक दलन अरिदेश ॥ दल एकादश क्षोहिणी नृप रहे सेवत जाहि । मरे सो तुम हाय यहमम कर्मको फल आहि ॥ विकल कहि कहि इबिधिके बहु बचन भूप अडौर । महा रोदन कियो नहिं सब जात कहि एहिठौर ॥ रोइ इमि चिरकाललों फिरि मोहबश ह्वै भूप । धीर धरि इमि कह्यो हा मैं खन्यो दुखदा कूप ॥ कहो संजय भयो किमि रण कर्ण बधके भोर । मद्रपति किमि मरो किमि मम पुत्र नृपशिरमोर ॥ धृष्टद्युम्नहिं आदि उत किमि मरे लरि कहु तौन । आपुसो जिमि मरे लरि इत शकुनि आदिक जौन ॥ भूपको सुनि बचन संजय कहत भो गुणि मर्म । कर्णबधके अर्ध भूपति कियो विक्रम पर्म ॥ कृपाचारय तहां बहुबिधि भाषि नृपहि बुझाय । कह्यो मिलिबो पाण्डवनसों देन महि बिलगाय ॥ भूप कृपके बचन सुनिकै मरम कहि समुझाय । नहीं मान्यो बचन सो फिरि लरत भो शरछाय ॥ तदनु कृतवर्मा शकुनि अरु शल्य सांझ लखाय । गए डेरन नृपहि लै सहसेन धीर धराय ॥ जाय डेरन भूप शोचित धीर धारि अचाय । द्रोण सुत सों भयो बूझत मंत्र बिधिहि मनाय ॥

दोहा ॥

तुम सरबज्ञ अचार्य्यसुत मम हित विश्वेबीस । कहौ शत्रुसों किमि लरैं केहि करि सेनाधीस ॥
यह सुनि कह्यो अचार्य्य सुत शल्यहि करि सैनेश । लरो शत्रुसों धीर धरि त्यागि शोचकोलेश ॥
द्रोणतनयके बचनसुनि नृपशल्यहि करजोरि । सबिधि प्रशंसा करिकह्यो तुव करकीरतिमोरि ॥

जयकरी छन्द ॥

तो सुत नृपको बचन ललाम । सुनि बोलो भूपति बलधाम ॥ कुरुपति सुनो तुम्हारे अर्थ । राज्य प्राण दीबो नहिं व्यर्थ ॥ तुम जो कहो करैं हम तौन । तुवहित करब उचित नहिं कौन ॥ यह सुनि कै दुर्योधन भूप । कह्यो सैनपति होहु अनूप ॥ सुरण देत जय जिमि अस्कन्द । देहु मोहिं तिमि सुजय अमन्द ॥ यह सुनि कह्यो शल्य गहि हौस । हम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनेश होव एहि द्यौस ॥ कृष्ण पार्थ नहिं मोहिं समान । सात्यकि भीम कौन भट मान ॥ बधि पाण्डवन लहत युगयाम । देहौं तोहिं सुजय अभिराम ॥ यह सुनि दुर्योधन गहि टेक । कियो तासु विधिवत अभिषेक ॥ बजवाए दुन्दुभि समुदाय । मोदित भए सुभट उमदाय ॥ पढ़ि सुस्तवन मंत्र सुद देत । द्विजन दयो आशिष जयहेत ॥ लहि अभिषेक शल्य क्षितिपाल । कहत भयो इमि बचन विशाल ॥ काल्हि लखौ मम विक्रम सर्व । क्षणमें शत्रुन करत अगर्व ॥ बधि पाण्डवन लेव जय पर्म । कौ बधिजाव पालि निजधर्म ॥ मारि पराजित करि अरिसैन । अगणित भटन देव यमऐन ॥ जयहित शोच तजौ सबलोग । जय लहि भूप करौ महि भोग ॥

दोहा ॥

लखि शल्यहि सेनाधिपति सुनि सुनि गर्वित बैन । कर्ण मरणको शोच तजि मम भट भए सचैन ॥
शल्यहि सुनि सेनाधिपति धर्मभूप अनुमानि । कृष्णचन्द्रसों कहत भे जय यश दुस्तर जानि ॥

चौपाई ॥

सुनो नाथ दुर्योधन राजा । आजु मंत्र करि सहित समाजा ॥ शल्य नृपहि सेनापति कीन्हें । भटन सहित अति आनंद लीन्हें ॥ अब तासों जयकी विधि कहिये । कृष्ण कह्यो मति शंसय गहिये ॥ भीषम द्रोण कर्ण सम आरय । है नृपशल्य युद्धके कारय ॥ ताके बधन योग एहि दलमें । है तुम एक विदित सब थलमें ॥ ताते तुम बढ़ि तुरता लीजो । बाणन मारि तासुवध कीजो ॥ मातुल जानि दया मति धरियो । क्षत्रधर्म पदवी अनुसरियो ॥ इमि कहि केशव सिविर पधारे । निज निज डेरन सुभट विहारे ॥ दुर्योधन नृप अमरष छाए । रजनि बिताय सैन सजवाए ॥ शल्य सैनपति कहं करि आगे । चले शत्रु पहं अमरष पागे ॥ तिमि पाण्डव दल साजि सोहाए । बढ़ि ममदलके सन्मुख आए ॥ बढ़ि बढ़ि लरे सुभट दुहुं दिशिके । जे दिनमणि अति संगर निशिके ॥ सुनि धृतराष्ट्र कह्यो तेहिदिन में । किमि लरि मरो शल्यनृप तिनमें ॥ किमि मम सुवन भूप रणधीरा । किमि इत उतके सुभट सुबीरा ॥ सो सब पृथक् पृथक् कहु मोसों । जो विधि अकथ कथावत तोसों ॥ यह सुनिकै संजय अनुमानी । कहत भयो सुनु भूपति ज्ञानी ॥

दोहा ॥

भीष्म द्रोण अरु कर्णको बध लखि तोसुत भूप । करि शल्यहि सेनाधिपति चाह्यो सुजय अनूप ॥
आशाबश सब जगत नृप आशा अतिबलवान । आशा लासा विहगमन जौलगि घटमों प्रान ॥

सोरठा ॥

व्यूह सर्वतोभद्र बिरचि चलो पाण्डवन पहं । भूपति पालक मद्र निजदल सह रहि व्यूहमुख ॥

चौपाई ॥

सहित त्रिगर्तन नृप कृतवर्मा । रहो वामदिशि पूरित पर्मा ॥ सहित यमनगण कृप धनु धारी । दहिनी ओर रहो भट भारी ॥ काम्बोजन सह अश्वत्थामा । रहो पृष्ठ रक्षक बलधामा ॥ कुरुन सहित दुर्योधन राजा । रहो मध्यमें सहित समाजा ॥ हय सादिन सह शकुनि नरेशा । हो दल रक्षत भीषम भेशा ॥ पाण्डव बिरचि व्यूह रणभूपर । रचि दल तीनि चले मम ऊपर ॥ धृष्टद्युम्न अरु सुभट शिखण्डी । मेरि भेरि सह सेनो चण्डी ॥ भिरे शल्यकी सेना अतिसों । कीरति चाहि जीतिकी रतिसों ॥ धर्म महोप शल्य नरपतिसों ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिरत भयो सुभटनकी जतिसों ॥ अर्जुन बाण वृष्टि करि पणसों। भिरत भयो संसप्तकगणसों॥ अरु कृतवर्मा नृपहि प्रचारत। आवत भयो भूरि भयभारत॥ सहित सोमकन भीम सुवीरा। कृपाचार्य्यसों भिरो सधीरा॥ सहदेव नकुल सारु धरु धुनिसों। अभिरत भए उलूक शकुनिसों॥ इबिधि अनेक सुभट इत उतके। भिरि भिरि लरण लगे बलयुतके॥ यह सुनि धृतराष्ट्र नृपति गुणि कारय। कहत भयो कछु संजय आरय॥ सचह दिवस कालके नाचे। दुहुंदिशि रहे किते भट बाचे॥

दोहा॥

यह सुनिकै संजय कह्यो नृप तेहिदिन ममओर। दशहजार अरु सातसै रहे द्विरद सहजोर॥ सहस इग्यारह रथि रहे तीनि कोटि पदचार। दोय लाख घोरेरहे सहित वीर असवार॥ रहे उतै षट सहस रथ तिते द्विरद मतवार। रहे कोटि पैदर सुभट घोरे दशै हजार॥

सोरठा॥

एहिमितिभट दुहुंओरबढ़िबढ़िभिरिलागेलरन। मचोयुद्ध अतिघोर उमगिचली शोणितनदी॥

चौपाई॥

शोणित बारि भौंर रथ भाए। धनुष स्रोत ध्वज वृक्ष सोहाए॥ कर पग ग्राह बाण असि मीना। चर्म परे तहं कच्छप पीना॥ मज्जा मेद फेण सम राजे। मुख बारिज सम सुखमा साजे॥ चामर केश सेवार अहीने। छत्र मनो पक्षी अमलीन्हे॥ द्विरद गिरे मनु गिरत करारे। सुभट लसे मनु मज्जा हारे॥ शूर द्विजन कहं सुख दातारा। म्लेच्छ कादरन भयद अपारा॥ एहिबिधि मचो घोर रण राजा। कटे असंख्यन सैन समाजा॥ एहिबिधि मचे युद्ध अतिभारी। अर्जुन भीम बिदित रणचारी॥ बाणवृष्टिको दुरदिन कीन्हें। सम सुभटन मोहित करि दीन्हें॥ सम सुभटन कहं मोहित करिकै। शङ्ख बजावत मे पण धरिकै॥ धृष्टद्युम्न युगबन्धु अमाना। सो धुनि कै करि करि अनु माना॥ नृपति युधिष्ठिर कहं करि आगे। चले शल्यनृपपहं भय त्यागे॥ तेहि बिधि माद्रीसुत धनु धुनि धुनि। ममदल दाबि लए जय गुनि गुनि॥ महाराज सुनिये मम दलमें। हाहाकार मचो तेहिपलमें॥ भगे सुभट तजि सुत पितु संगी। नहिं काहू निरख्यौ निज अंगी॥ करत चिघारि द्विरद मतवारे। भागि चले बाणनके मारे॥

दोहा॥

दल बिचलत लखि सूतसों कह्यो शल्य सैनेश। धर्मनृपति पहं शीघ्र चलु ले मम सुरथ सुभेश॥ नृपशासनसुनि सारथी हांक्यो तुरंग चलांक। जलद वारि तिमि शल्य शरबर्षत चलो निशांक॥ तेहिक्षण उतके सुभट सब भिरे शल्यसों टूटि। बाणजाल सबपहं रच्यो शल्यभूप जय ऊटि॥ बेलासम परदल उदधि आड़त नृपहि निहारि। फिरत भए इतके सुभट मरिबो भलो बिचारि॥

सोरठा॥

महाघोर संग्राम भूपति तेहिक्षण मचत भो। तन तजि गे सुरधाम अगणित हय गज भटगणे॥

पमझली छन्द॥

नृप सुनो तेहिक्षण नकुल तब। लखि चित्रसेनहि बरषि पब॥ भे भिरत ते युग भट अमान। भे करत अति संगर महान॥ करि चित्रसेन लाघव कराल। रचि दयो तापहं बाणजाल॥ धनु काटि तुरगन दयो डारि। फिरि बध्यो सूतहि बाण मारि॥ तब नकुल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असि अरु चर्म धारि। रथ त्यागि ताको बध विचारि ॥ भो चलत सो लखि चित्रसेन। भो बाण वर्षत सुजय लेन ॥ तब नकुल करि पैतरे आसु। सब काटि दीन्हें विशिख तासु ॥ अतिवेगसों ता निकट आय। फिरि कूदि रथपैं चढ़ो जाय ॥

दोहा ॥

देखत इतके भटनके बाहि विशद तरवारि। चित्रसेनको काटि शिर दयो भूमिपै डारि ॥ कर्णपुत्रको बध निरखि भो इत हाहाकार। उत मोदित भे सुभट सब लखि अतिविक्रम चार ॥ निज भ्राताको बध निरखि सत्यसेन रणधीर। अरु सुषेन ए नकुलपहं बरषण लागे तीर ॥

सोरठा ॥

तौलगि सूत सुधीर रथ लै आयो बेगसों। चढ़ि तापै रणवीर नकुल लगो इनसों लरण ॥

चौपाई ॥

चारिबाण हनि अति अनियारे। सत्यसेनके हय बधि डारे ॥ धनुष काटि बहुबाण प्रहास्यौ। अब न बचत यहिभांति पुकास्यौ ॥ सत्यसेन तब सो रथ तजिकै। और सुरथपै चढ़ो गरजिकै ॥ गहि धनु और गह्यौ उतकर्षा। करत भयो बाणनकी वर्षा ॥ तहं सुषेन अति रिसि गहि मनमें। हनि क्षुरप्र शायक तेहि क्षणमें ॥ गुर को दण्ड नकुल को काट्यौ। बाण बरषि न बचत कहि डाट्यौ ॥ तुरतहि नकुल और धनु गहिकै। हन्यो पांच शर थिरु थिरु कहिकै ॥ माद्रीसुत युग भटसों भिरिकै। कीन्ह्यों घोरयुद्ध तहं थिरिकै ॥ अशनिसमान शक्ति हनि उरमें। बध्यो सत्यसेनहिं अतितुरमें ॥ नृप तेहिसमय सुषेन सुबीरा। अति विक्रम कीन्हों रणधीरा ॥ करि शरजोर नकुल तेहि बधिकै। मम दल मर्दत भयो बरधिकै ॥ तहं शर बरषि मद्रपति तक्षण। करत भयो निज दलको रक्षण ॥ शल्यहि घेरि सुभट सब इतके। धर्म भूपतिहि योधा तितके ॥ अति विक्रम कीन्हें तेहि पलमें। भो अति घोरयुद्ध तेहि थलमें ॥ भट कपिकेतु बिदित धनुधारी। बांध संशप्तक भटन प्रचारी ॥ बर्षत विशिष क्रोधसों पागो। सैन कौरवी मर्दन लागो ॥

दोहा ॥

तिमि भीमादिक शत्रु भट नृप आदिक मम वीर। उभय ओर पारे प्रलय बरषि शक्ति शर तीर ॥ महाघोर संगर भयो तेहिक्षण सुनिये भूप। ममसेना अति विकल ह्वै होत भई गतरूप ॥ दलव्याकुल लखि मद्रपति गहि अनुपम कोदण्ड। भो वर्षत पाण्डवन पहं अविरल शायक चण्ड ॥

सोरठा ॥

नृपतेहिक्षण तेहिठौर अगणित असगुन होत भे। मृग गहि असगुनडौर चलतभएमम बाम ह्वै ॥

चौपाई ॥

शल्यभूप असरूप करि मनमें। अति करलाघव करि तेहिक्षणमें ॥ सात्यकि भीम नकुल सहदेवहि। द्रौपदेय नृपधर्म सुभेवहि ॥ धृष्टद्युम्न युग बन्धुन तकि तकि। दश दश बाण हन्यो जय बकि बकि ॥ बारिद करत बारिकी वर्षा। तिमि शर बरषो गहि उतकर्षा ॥ अगणित हय गज भट बध डास्यौ। शत्रु सैनमधि प्रलय पसास्यौ ॥ तहां विचलि परभट चलि चाड़े। गए धर्म भूपतिके आड़े ॥ सो लखि धर्मभूप धनु धुनिकै। भिरो शल्यनृपसों जय गुणिकै ॥ अतिरण करन लगे तहं दोऊ। जेहि सम कबहुं करे नहिं कोऊ ॥ सो लखि उतके योधा रजि रजि। चले शल्य पहं सुभटन तजि तजि ॥ तब इतके भट इत फिरु पढ़ि पढ़ि। भिरत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भए तिनसब सों बढ़ि बढ़ि ॥ भिस्यो भीमसों नृप कृतबर्मा । द्रोपदेय सों शकुनि सुपर्मा ॥ माद्री सुतन देखि अभिरामा । भिरत भयो भट अश्वत्थामा ॥ क्रोध भरो दुर्योधन राजा । भिस्यो पार्थसों सहित समाजा ॥ एहि बिधि तहां द्वंद शत जूटे । भरे बीररस आनंद लूटे ॥ कृतबर्मा बाणनकी झरिकै । बध्यो भीमके तुरगन लरिकै ॥ तब गहि गदा भीम रथ तजिकै । गजन बधत भो गरजि गरजि कै ॥

दोहा ॥

लखि सम्मुख सहदेवकहं शल्य चारिशर मारि । बधि रथके चारो तुरंग दयो भूमिपै डारि ॥ सो रथतजि सहदेव तब गहि तीक्षण तरवारि । शल्यभूपके सुवनको काट्यो शीश प्रचारि ॥

सोरठा ॥

कृपाचार्य्य रणधीर धृष्टद्युम्न सों भिरितहां । कियो युद्ध गम्भीर बाणजाल रचि दिशन में ॥

तोमर छन्द ॥

तेहिसमय शल्य अमान । करि बाण वृष्टि महान ॥ तकि धर्म नृपहि सगौर । भो करत व्यथित सडौर ॥ वह देखि बिक्रम भीम । तहं भयो चलत अधीम ॥ तेहि शल्य आवत देखि । भो हनत तोमर तेखि ॥ गहि भीम तोमर तौन । करि सारथी को दौन ॥ फिरि गहू गदहि प्रहारि । बधि दियो तुरगन डारि ॥ तब गदा गहि नृप शल्य । भिरि करत भो कौशल्य ॥ भिरि उभय योधा शुद्ध । तहं कियो अद्भुत युद्ध ॥

दोहा ॥

अगणित बिधिके पैतरे करत फिरत जिमि चक्र । गदायुद्ध ते करत भे गहिगति सूधीवक्र ॥ कबहुं बाम दक्षिण कबहुं कबहुं ऊर्ध अधिलाय । अति चापलता करिकस्यो गदायुद्ध दृढ़घाय ॥ सिंहसिंहभिरिजिमिलरैं द्विरदद्विरदमतवार । मत्तवृषभसमभिरिलरे शल्यभीम तजिप्यार ॥ गदागदाके लगनसों कढ़ैं फुलंग अपार । तक्षक वासुकि लरत मनु अबिरल बमत अंगार ॥

सोरठा ॥

गदा युद्ध अतिघोर करि सब अंग शोनित भरे । मोहित ह्वै तेहिठौर भीम शल्य दोऊगिरे ॥

चौपाई ॥

महाराज सुनिये तेहि पल में । भो हा हा धुनि दोऊ दल में ॥ कृप शल्यहि निज रथ पर परिकै । सादर अनत जात भो टरिकै ॥ क्षणमें चेति भीम नर बारन । शल्य भूप कहं लगो प्रचारन ॥ सुनि इतके भट अमरष पागे । अति बिक्रम करि बिचरण लागे ॥ तेहि प्रकार उतके भट रूरे । लरत भए करि बिक्रम पूरे ॥ तेहिक्षण दुर्योधन धनु धारी । बज्र समान सुबाण प्रहारी ॥ चेकितान नृपको बध कीन्हों । परदल मधि अति दुख भरि दीन्हों ॥ चेकितान को बधलखि उतके । योधा प्रबल युद्ध बिद युतके ॥ तोमर शक्ति भल्ल शर आदिक । अस्त्र लगे बरषण जय बादिक ॥ कृप कृतबर्मा सौबल राजा । शल्यभूप सह सहित समाजा ॥ भिरे धर्मनृपसों तेहिक्षणमें । पूरि दए शर पाण्डव गणमें ॥ द्रोणा चारय को बधकरता । धृष्टद्युम्न अद्भुत धनुधरता ॥ तासों दुर्योधन नृप भिरिकै । घोरयुद्ध तहं कीन्ह्यो थिरिकै ॥ त्रिसहस रथिन सहित धनु कर्षत । अश्वत्थामा शायक बर्षत ॥ भिरो बिजय भूपति सों हर्षत । सुजय पाइबेकी गति पर्षत ॥ सरमधि धसैं हंसगण जैसे । दुऊदल लसे सुभट सब तैसे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

दटे सुरथ हय गजकटे हय गजयोधा भूरि । मारु मारु धरु मारु धुनि रही गगनमैं पूरि ॥
शल्यभूप तेहि क्षण हन्यो धर्मभूपतिहि बान । चौदह शर शल्यहि हन्यो धर्म भूप बलवान ॥

सोरठा ॥

अतिरिसकरितेहिकालशल्यभूपधनुधरबिदितगहिअतिलाघवचालनृपहिहन्योअगणितविशिख

चौपाई ॥

तेहिक्षण धर्मभूप धनु धुनिकै । शल्य भूमिपतिको बध गुणिकै ॥ चन्द्रसेन द्रुमसेनहि हनि कै । नृपहि हन्यो बहुशर रिसि अतिकै ॥ चक्र रक्षकनको बध देखो । शल्य धनुष धर अतिशै तेखो ॥ धर्महि हन्यो पांच शर चोखो । तेहि क्षण धर्मभूप अति रोखो ॥ भल्ल प्रहारि दीहध्वज काट्यौ । तकि सहास ह्वै शल्यहि डाट्यौ ॥ तब अतिकोपि शल्य उतकरष्यो । धर्मभूप पहं शायक बरष्यो ॥ सहदेव नकुल सात्यकी भीमहि । मास्यौ पांच पांच शर हीमहि ॥ बाणजाल रचि गौरव लीन्हों । धर्म भूप तिहि व्याकुल कीन्हों ॥ धर्म भूपतिहि व्याकुल जानी । सात्यकि भीम नकुल अनुमानी ॥ अरु सहदेव मद्रपति घेरी । बरषे बाण न बाचत टेरी ॥ भीमसेन अति कोपित मनमैं । हन्यो सात शर नृपके तनमैं ॥ सात्यकि शतशर हन्यो प्रचारी । पांच पांच युग बन्धु सुखारी ॥ तेहि क्षण शल्य महा रिसि करिकै । चक्र समान सुरथ पर चरिकै ॥ बाण पचीश सात्यकिहि मास्यो । भीमहि सत्तरिबाण प्रहास्यो ॥ नकुलहि सातबाण हनि गर्जो । मानो शक्र बज्र गहि तर्जो ॥ धनुष काटि सहदेव सुभटको । हन्यो तीन शायक गुणि पटको ॥

दोहा ॥

तबसहदेवप्रचारितेहिगहि कठोर धनुपीन । शल्यहिमास्यो पांचशरफिरिमास्योशरतीन ॥
भीमहि सत्तरि शर हन्यो नव सात्यकि के गात । धनुकाट्यौ नृपधर्मको शल्य वीर विख्यात ॥

सोरठा ॥

तुरितऔर कोदण्ड गहि नृपधर्म उदण्डभट । छायदयो शरचण्ड सदलशल्य चितिपाल पहं ॥

तोटक छन्द ॥

नृपमातुल बाणन छादित ह्वै । गहि केपि कराल प्रमादित ह्वै ॥ दश पाण्डवनाथहि बाण हन्यो । फिरि बाणनको झरि कौ न गन्यो ॥ लखि सात्यकि सो अतिकोप गहा । हनिशायक पांच बचाउ कहा ॥ तब शल्य महीपति कोपि कियो । भट सात्यकि को धनु काटि दियो ॥

दोहा ॥

भीम नकुल सहदेवके अगणित शायक बारि । मेघनाद सम नदतभो तीनि तीनि शरमारि ॥
तेहिक्षण डास्यौ शल्यपहं सात्यकि तोमप्रचण्ड । नकुल शक्ति तानुज गदाभीम बाण उद्दण्ड ॥
तज्यो शतघ्नी धर्म नृप सो सब अच्छ अमान । बीचहि काट्यो शल्य नृप मारि अनगिने बान ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षण शल्यनरेश दुसह पराक्रम करत भो । त्यागि शोचको लेश दुर्योधन नृप मुदित भो ॥

चौपाई ॥

शल्यभूप गहि पाणि अतुरता । करत भयो अति विक्रम गुरता ॥ परदल पूरि शरनसों दीन्हों । भीमादिकन बिकल अति कीन्हों ॥ करि बाणनसों नभ अवरोधन । कियो कालवश अगणित योधन ॥ अगणित भटन पराजित करिकै । रुद्र समान लसो पण धरिकै ॥ तेहिक्षण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सिद्ध नभचारी । निरखि शल्यको बिक्रम भारी ॥ अतिमोदित ह्वै किए प्रशंसा । तो सुत तज्यो अजय की संसा ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षणमें । अर्जुन सिंह सरिस चरि रणमें ॥ द्रोणतनय भट मणिसों भिरिकै । कीन्हो समर चक्रसम फिरिकै ॥ करि कर लाघव धनु बिधि ठाव्यौ । अगणित भटन मारि महि पाव्यौ ॥ तीनि बान द्विज सुतहि प्रहास्यो । दोय दोय शर सुभटन मास्यो ॥ महाराज सुनिये तेहिक्षणमें । द्विजसुत आदि सुभट गुणि मनमें ॥ घेरि पारथहि अमरष पागे । अबिरल शायक बर्षन लागे ॥ तेहिक्षण पार्थ पराक्रम सागर । सकल शस्त्र शोक्षक मणि नागर ॥ बर्षि हेममय शरवर फबके । काटि असंख्यन शायक सबके ॥ द्विज दलमधि बाणनको दुर्दिन । करि भो बधत सुयोधा अनगिन ॥ पूरि रुण्ड सुण्डनसों धरनी । कर पग सुण्डन कियो बिबरनी ॥

दोहा ॥

बारिदान सम लसि बरषिबाण बारिभरि मीच । पूरि दयो रणभूमिमधि मांसरुधिरकी कीच ॥
सुरथी दोयहजार बधि निर्मल अग्नि समान । लसत भयो पारथ तहां असह अदेख अमान ॥
दावानल सम पारथहि दलबन जारत देखि । भिरो द्रोणसुत बनदसम शरबन बर्षत तेखि ॥

सोरठा ॥

क्षत्री बिप्र अमान दोऊ धनुधर सुकुटमणि । किए घोरघमसान करि करि दुर्दिन शरणको ॥

चौपाई ॥

द्रोणतनय अति लाघव धरिकै । शायक बर्षि चक्र सम चरिकै ॥ द्वादश बाण पारथहि मास्यौ । दश शायक यदुपतिहि प्रहास्यौ ॥ तहं पारथ अति रिसिसों भरिकै । गुरसुतको गुणिवो परिहरिकै ॥ तुरगण मारि सारथिहि बधिकै । बर्षो बिशिख क्रोध गहि अधिकै ॥ अतिरथ द्रोणतनय तेहिक्षणमें । भरो क्रोध अनरथ गुणि मनमें ॥ महाभयानक मुसल चलायो । शरन काटि तेहि पार्थ गिरायो ॥ तबद्विजतनय परिघ बर गहिकै । भयो चलावत थिररुज कहिकै ॥ तेहि लखि अर्जुन तुरता लीन्हो । हनि शर पांच पांच करि दीन्हो ॥ परिघ काटि पारथ धनु धुनिकै । तीनि भल्ल मास्यौ बध गुणिकै ॥ भिदि भल्लनसों ब्राह्मण योधा । कछु धर दबो व्याल सम क्रोधा ॥ गहि कोदण्ड लगो शर बर्षण । गणे गणे भट बधन अमर्षण ॥ सुरथी सुरथ नाम तेहिक्षणमें । भिरो बिप्रसों गर्वित मनमें ॥ सो पांचाल सुभट बर बीरा । बर्षो बिशिख जालप्रद पीरा ॥ तेहि लखि बिप्र बीर रणधीरा । दै रद छद पहं सुरदन हीरा ॥ बध्यो ताहि हनि शायक चोखो । रथसों गिरो सुरथ भटनोखो ॥ तेहि बधि द्रोणतनय भट बढ़िकै । सादर तासु सुरथपैं चढ़िकै ॥ निज अनुरूप सूत करि थापित । लगो पार्थसों लरन प्रतापित ॥ अगणित संसप्तक गण फिरिकै । लगो लरन पारथसों भिरिकै ॥ तहं पारथ अति लाघव लीन्हो । सबपहं बाणजाल रचि दीन्हो ॥ लरो शक्र दैतनसों जैसे । तिनसों लरो फाल्गुण तैसे ॥

दोहा ॥

मचो घोर संगर तहां दिन प्रविशो युगजाम । अगणित हय गज भट कटे पाए ऊरध धाम ॥

स्वस्ति श्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीठाकुरनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शल्यपर्वणि प्रथमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

दुर्योधन बन्धुन सहित धृष्टद्युम्नसों जूटि । घोरयुद्ध तहं करत भो बध बिचारि जय ऊटि ॥
सहित प्रभद्रक भटन बढ़ि सुभट शिखण्डी बीर । कृप कृतवर्मासों अभिरि किए युद्ध गंभीर ॥

चौपाई ॥

महाराज सुनिये तेहिक्षणमें । शल्यनरेश सुजय गुणि मनमें ॥ परदल मध्य शरनकी झरिकै । अगणित भटन बध्यो पण धरिकै ॥ करि तीक्षण बाणनसों आकुल । कीन्हो धर्म महीपहि व्याकुल ॥ सो लखि नकुल ओज बिस्तारत । शल्यनृपतिसों भिरो प्रचारत ॥ अगणित बाण बर्षि अति तुरमें । दशशर हन्यो शल्यके उरमें ॥ तेहिक्षण शल्यमहीप प्रमादित । नकुलहि कियो शरनसों छादित ॥ लखि माद्रीसुत पहं शर छाजा । सात्यकि भीम युधिष्ठिर राजा ॥ अरु सहदेव शरासन कर्षत । भिरे शल्य नृपसों शर बर्षत ॥ आद्यौ तिन्हैं शल्यनृप तैसे । बेला लहरि उदधिकी जैसे ॥ भीमहि पांचबाण अनियारे । हनि नृप धर्महि तीनि प्रहारे ॥ तीनि बाण सहदेवहि हनिकै । हन्यो सात्यकिहि शतशर गनिकै ॥ हनि क्षुरप्र शायक अति पुलको । काट्यौ धनुष सुबीर नकुलको ॥ तुरितहि नकुल और धनु गहिकै । बर्षो बिशिख खरोरक्ष कहिकै ॥ तहं सहदेव धर्म नरनायक । हने भूपतिहि दश दश शायक ॥ शायक साठि वृकोदर मास्यो । तिमि सात्यकि दश बाण प्रहास्यो ॥ तेहिक्षण कोपि मद्रनृप धानुष । करत भयो तहं काज अमानुष ॥

दोहा ॥

हनिनव शायक सात्यकिहि फिरि हनि सत्तरि बान । मारि अर्ध शशिबाणवर काट्यो धनुष महान ॥
चारिबाण हनि हयन बधि करि तहं बिरथ बिहाल । अगणित शायक सात्यकिहि हन्यो मद्रक्षितिपाल
धर्म नकुल सहदेव अरु भीमसेनके गात । दश दश शायक हनत भो करि अबिरल शरपात ॥

सोरठा ॥

परम प्रसिद्ध समान इन सुभटनकहं बिकल करि । बिलसो रुद्रसमान शल्यभूप अति प्रबल भट ॥

चौपाई ॥

सात्यकि और सुरथ पर चढ़िकै । बर्षत बिशिख बेगसों बढ़िकै ॥ चलो शल्य नरपतिहि प्रचारत । तापहं चलो शल्य शर डारत ॥ दोऊ दुहुन प्रचारि प्रचारी । निज निज सुजय बिचारि बिचारी ॥ अतिशै तुमुलयुद्ध तहं कीन्हे । नभ बाणन पूरित करि दीन्हे ॥ बन्धुन सहित धर्म धनु धुनिकै । शल्य महीपतिको बध गुणिकै ॥ बर्षत भए बिशिख पण धरिकै । तेहिक्षण शल्य चक्रसम चरिकै ॥ सबके बाण असंख्यन काटत । सबपहं भयो बाणझरि ठाटत ॥ शल्य महीप बीर रस छायो । तहं अद्भुत बिक्रम दरशायो ॥ शल्य नृपतिके बाणन पीड़ित । उतके गणे भटन लखि व्रीड़ित ॥ इतके सुभट बिजय गुणि मनमें । अति बिक्रम कीन्हे तेहि क्षणमें ॥ मरदित किए शत्रु दल तैसें । मंदर वारि उदधिको जैसें ॥ सो लखि अर्जुन बीर अमर्षो । कृप कृतवर्मा पहं शर बर्षो ॥ सहदेव भिरो शकुनिसों हर्षत । नकुल शल्यपहं हो शर बर्षत ॥ द्रौपदेय सब गहि उतकर्षा । नृपगण पहं कीन्हे शर बर्षा ॥ द्रोण तनय सों भिरो शिखण्डी । गहे चढ़ाव चपलता चण्डी ॥ गदापाणि बर बीर वृकोदर । गयो रहो जहं नृपति सहोदर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

नृपतियुधिष्ठिर सैनसह शल्य नृपतिसों जूटि। लरत भयो शर जाल रचि बध विचारि जयऊटि॥
नृप तेहिक्षण तेहिथर मचो महाघोर संग्राम। कटे असंख्यन भट बही शोणित नदी अछाम॥

सोरठा ॥

मद्रदेशपति भूप मण्डल सम कोदण्ड करि। भो अतिभीषम रूप घोरपराक्रम करि तहां॥

रोला छन्द ॥

सोम सम नृपधर्मके ढिग जाय शनि सम भूप। जनन पीड़ित कयो उतरचि बाण जाल अनूप॥ एक भट बहुभटन बधि बिचलाय अगणित धीर। भीम कहं लखि तीर नृपके चलो बर्षत तीर॥ धीर धरिकै तासु सम्मुख भए जे अरि भीर। भीर सुरपुर मध्य कीन्हें बीर ते गति भीर॥ मद्रपतिकी चपलता अरु बीरता इमि देखि। धर्मभूपति टेरि ऐसे करत भो अतितेखि॥ सुनो केशव सुनो सब मम बन्धु भट समुदाय। आजु पण करि कहत हौं मैं बचन सत्य सचाय॥ द्रोण आदिक धनुष धर जे दुसह बीर बिख्यात। गए कुरुपति हेत जहं तहं आजु मातुल जात॥ सुवन माद्रीके प्रबल जिमि शक्र अरु उपशक्र। रहहु रक्षत चक्र मम निज मातुलहि गुणि बक्र॥ कहत हम तिमि और योधा रहो अब मम संग। रहौ दक्षिण ओर सात्यकि बिदित बीर अभंग॥ रहो रक्षत बामदिशि भट धृष्टद्युम्न अमान। पृष्ठ रक्षत रहौ पारथ बीर बर्षत बाण॥ अग्रगामी रहौ अब मम भीमसेन सडौर। बधब हम नृपमातुलहि नहिं बचिहि काहू ठौर॥ भूपके सुनि बचन परभट शङ्क तजि गहि मोद। भरण लागे हांक अतिरण करण युद्ध बिनोद॥ ठानि इमि पण सदल भूपति दुन्दुभी बजवाय। मद्रपति पहं चलो तीक्षण शरनसों नभ छाय॥ भिरे बढ़ि बढ़ि भूप तिन सों सुभट इतके तब। शक्ति तोमर भल्ल बर्षत घने तीक्षण पत्र॥ शल्य भूपति भयो बर्षत बाण धर्महि हेरि। भिरे तकि तकि प्रबलयोधा प्रबलयोधन टेरि॥ नृप सुयोधन भीमसों भिरि करत भो घमसान। प्रगट करि द्विज द्रोणसों जो लहे धनुष बिधान॥ प्रबल योधा बन्धु दोऊ धनुष धर मणि दक्ष। समर महि शर सरसको बर शरण पूरे कक्ष॥

दोहा ॥

अति करलाघव करि तहां तोसुत भूप बिचारि। केतु काटि भटभीमको काट्यो धनुष प्रचारि॥
अतिरिसि करि भट भीमतबशक्ति चलायोचाहि। भिदितासों मोहित भयोतोसुतभूपकराहि॥

सोरठा ॥

भूपहि मोहित देखि भीमसेन सूतहि बध्यो। सूत मरण अवरेखि तुरंग भगे सो सुरथलै॥

चौपाई ॥

महाराज सुनिये तेहि पलमें। हाहाकार मचो मम दलमें॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्मा। नृपरक्षण कीन्हें तेहि धर्मा॥ धनु गांण्डीव कर्षि तहं पारथ। बधि अगणित भट कीन्हों खारथ॥ शल्य सैनसों भिरि तेहिठांई। अति रण कियो धर्म नरसांई॥ अविरल बाणजाल रचि दीन्हों। अगणित भटन कालवश कीन्हों॥ शल्य निरखि मर्दित निज सेना। नृपहि प्रचारि भिरो जगजेना॥ दोऊ अति तुरिता गहि गहिकै। अमरष भरे बैन कहि कहिकै॥ वर बाणनकी बर्षा करि करि। अगणित बाण गातपर धरि धरि॥ भरे रुधिर तन दोऊ राजे। पुष्पित किंसुक तरु सम साजे॥ एहि बिधि लरत भए तहं दोऊ। जो लखि गुणत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भए सब कोऊ ॥ एकहि एक वधत एहि क्षणमें । नहिं दोऊ बाचत एहि रणमें ॥ तहां शल्य भूपति करि तुरता। काट्यो तासु धनुष गहि गुरता ॥ तेहिक्षण धर्म क्रोधसों दहिकै ॥ तुरितहि और शरासन गहिकै ॥ शल्यहि मारि तीनिशत शायक । काटत भयो धनुष दृढ़ घायक ॥ चारौं तुरंग सुरथके बधिकै । उभय सारथिन बध्यो बरधिकै ॥ काट्यो केतु भल्ल शर हनिकै । धर्ममहीप रुद्रसम बनिकै ॥

दोहा ॥

कालकरालसमानलखि धर्मनृपहितेहिकाल। बिचलिचलेतिमिअचलभट जेनचलेजेहिचाल ॥
द्रोणतनय अति वेगसों बर्षत शर समुदाय । जाय शल्यक्षितिरायकहं रथपर लयोचढ़ाय ॥
और सुरथपर तुरित चढ़ि धनुगहि मद्रनरेश । भूप युधिष्ठिरपहं भयो बर्षत बाण विशेश ॥

सोरठा ॥

बरषिअसंख्यनबान हन्यो सात्यकिहि बाणदश । करिअद्भुतसन्धान तीनिबाणभीमहिहन्यो ॥

चौपाई ॥

अगणित हय गज सुभट संघास्यो । अंगभंग करि महि मधि डास्यो ॥ अतिकराल बिक्रम बिस्तास्यो । शत्रुसेन मधि प्रलय पसास्यो॥ महाराज सुनिये तेहि क्षणमें । पाण्डव अतिश्रम-रथ करि मनमें ॥ भीम नकुल सहदेव सुबीरा । अरु अनगिने सुभट रण धीरा ॥ गरजि गरजि गहि गहि उतकर्षा । किए मद्रपति पहं शरबर्षा ॥ तिमि इतके योधा शरतच्छत। भे तहं शल्य महीपहि रच्छत ॥ भो अतिघोर युद्ध तहं राजा । कटे असंख्यन सैन समाजा॥ शल्य धर्म भिरि गौरव लीन्हें । अतिशै तुमुल युद्ध तहं कीन्हें ॥ अगणित बाण परस्पर बारे। अगणित बाण परस्पर मारे ॥ शल्य युधिष्ठिरको धनु काट्यो । धनु गहि धर्म बाण भरि ठाट्यो ॥ बाण शल्यनृपके हिय मास्यो । नोहित ह्वै फिरि भूप सिहास्यो ॥ हन्यो धर्मभूपहि बहु शायक । तिमि शल्यहि नृपधर्म सचायक ॥ द्वै शर मारि शल्य रणचारी । काट्यो तासु धनुष अतिभारी ॥ तुरितहि धर्म और धनुधारी । शल्यहि नवशर हन्यो प्रचारी ॥ फिरि नृपशल्य मारि शर चोखो । काट्यो तासु धनुष अतिनोखो ॥ नृप षटबाण मारि अनियारे । बधि सारथिहि भूमिपर डारे ॥

दोहा ॥

शल्यभूपतबकर्षिधनु चारों तुरगन मारि । धर्मभूपतिहि बिरथ करि बर्षो बिशिखि प्रचारि ॥
भीमसेनतहंशल्यके दीरघधनुषहि काटि । बधि सूतहि तुरगनबध्यो अद्भुत धनुबिघिठाटि ॥
तौलगिचढ़िरथ और पर धर्ममहीप अमान । नृप बर्षत भो शल्यपहं अबिरल तीक्षण बान ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षण शल्यनरेश खड्ग चर्म गहि त्यागि रथ । सिंहसमान सुभेश चलोधर्म क्षितिपालपहं ॥

बसुकला छन्द ॥

तेहि निकट देखि । भट नकुल तेखि ॥ भो हनत बान । तब नृप अमान ॥
रथ काटि तासु । फिरि चलो आसु ॥ तहं शत्रुओर । अति भयो घोर ॥

दोहा ॥

भीम शिखण्डी सात्यकी धृष्टद्युम्न रण धीर । द्रौपदेय ए शल्य पहं बरषे अबिरल तीर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमतहां नवबाण हनिकाटि चर्म तरवारि। निजसुभटन मोदित कियोशल्यहि बहुशरमारि॥
शल्यसिंह सम तरपितहं असि अधकटी प्रहारि। धर्मभूपके हयनवधि दीन्हों महिपैडारि॥

चौपाई ॥

शल्यहि निकट देखि नृप हरषो। बधिक्षण प्रगट भयो इमि परषो॥ कृष्ण चन्द्र को बचन बिचारो। शक्ति अमोघ उठाइ सिहारो॥ चक्र त्रिशूल बज्रसम जोही। कालदण्डसम महिमा पोही॥ जो निरमित त्वष्टाके करषो। भरी कालकी कुलना बरषो॥ बहु मणिमय घटनसों भूषित। मंचन मंचित अमल अदूषित॥ सो सुशक्ति भरि ब्याम उठायो। अवन बचत इमि टेरि चलायो॥ मंत्र आंगिरसकी करि पुरता। भयो चलावत गहि अतिगुरता॥ लखिसो शक्ति शल्य नृप शूरा। परम क्षत्रगण गुनसोंपूरा॥ गरजि लयो निज उरपहं तैसें। घृतकी धार ज्वलित शिखि जैसें॥ मरम बेधि सो शक्ति सोहाई। गई भूमि बधि अति छबिछाई॥ राम राम सीता पति पढ़िकै। नृपमरि गिरो शत्रुदिशि बढ़िकै॥ बाहु पसारि परो नरसांई। हरषो बधो न सुचिकी नांई॥ भरो रुधिर तन भूप अक्षोभित। सो तहं इन्द्र धनुष सम शोभित॥ नृप इमि मरण बन्धुको लखिकै। खाण्डवनाम सुबीर बिलखिकै॥ वर्षतबाण भूरिभय भारत। धर्मभूपसों भिरो प्रचारत॥ धर्महि बधिबेको प्रण लीन्हों। बाणनको दुरदिन करि दीन्हों॥

दोहा ॥

काटि तासु शर धर्मनृप काट्यो शीश उदण्ड। गिरो सकुण्डलभूमिपहं शीशसूरजिमिचण्ड॥
नृपतेहिक्षण ममसैनमधि भो अति हाहाकार। पटह बजे अरिसैनमधि आनन्द भरो अपार॥

सोरठा ॥

ममदल बिचलत देखि सात्यकिशर बर्षतचलो। लखिकृतबर्मातेखि इतसों बढ़ि तासों भिरो॥

चौपाई ॥

दोऊ कृष्णवंशके नागर। धीर धुरीन पराक्रम सागर॥ कर कोदण्ड चपलता भारे। लरे लरैं जिमि गज मतवारे॥ घने पतंगगण भरि नभ सोहैं। तिमि कीन्हें जेहि लखि जन मोहैं॥ दश शर हनि सात्यकिके धर्मा। काट्यो धनुष बीर कृतबर्मा॥ सात्यकि और धनुष गहि तक्षण। बध्यौ तासु हय सूत सपक्षण॥ बिरथ देखि कृतबर्मा राजहि। कृप बिडारि अरि सैन समाजहि॥ जाय चढ़ाय ताहि निज रथपै। चञ्चल चरण लगो रण पथपै॥ देखि दशा यह कृतवर्माकी। भगी फौज नृप गत धर्माकी॥ दल बिचलत लखि तोसुत राजा। भिरो पाण्डवनसों सह साजा॥ कृतबर्मा निज रथ पर चढ़िकै। गयो तहां शर बर्षत बढ़िकै॥ देखि ताहि तहं धर्म नरेशा। बधत भयो सब तुरंग सुभेशा॥ बधि कृतबर्माके हय तोखे। हन्यो कृपहि षट शायक चोखे॥ द्रोणतनय तहं तुरता कीन्हों। कृतबर्महि निज रथपर लीन्हों॥ महाराज सुनिये तेहि क्षणमें। रथीसात शत पण धरि मनमें॥ संगी शल्यमहीपतिकेरे। भिरे पाण्डवनसों चलि नेरे॥ गज चढ़ि दुर्योधन भय साने। मना किये नहिं ते सब माने॥

दोहा ॥

शल्यभूपको मरण लखि निज मरिबो बर जानि। रथी मद्रक्षितिपालके लरन लगे पण ठानि॥
बाणन पूरे शत्रुदल धनु धुनिसों नभ सर्व। सुरथी शल्यमहीपके अरि दलजैन सगर्व॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

पारथ आयो तच सुनि तेहिक्षण तहं तुमुल धुनि । बर्षत तीक्षण पत्र पूरत धनुगाण्डीव धुनि ॥

चौपाई ॥

सानुज धृष्टद्युम्न धनुधारी । सात्यकि द्रौपदेय रणचारी ॥ सञ्जय सोमक अरु पाञ्चाला । गने धनुषधर बीर बिशाला ॥ बरषि शक्ति शायक रिपि पागे । घेरि मद्रदल मर्दन लागे ॥ प्रबल मद्रभूपतिके योधा । तिन सबको कीन्हें अवरोधा ॥ प्रति योधन बिरचे शरसेतू । अगणित भटन बधे जयहेतू ॥ मथै सिन्धु जिमि मकर समूहा । अरिदल मधि तिमि लसे सजूहा ॥ प्रबल शत्रुभटनके मारे । तहं इमि तिनकी दशा निहारे ॥ केते अंग भंग भे जबहूं । गरजत चलै शत्रु दिशि तबहूं ॥ बिरथ भए कितने सरदारे । शत्रु सैन मधि प्रलय पसारे ॥ बिरथ बिधनु बेधित तन केते । मारु मारु टेरत जयहेते ॥ भिदि कितने योधा बल धरिकै । मरैं जाय अरि रथपर परिकै ॥ किते कबन्ध प्रचारत देखे । धावत लरत अनगिने पेखे ॥ किते गिरैं उठि गिरि महि चूमैं । गिरि उठि किते खरे रहि झूमैं ॥ लखि यहदशा मद्र दलमाहीं । शकुनि महीप सकौ सहि नाहीं ॥ कहत भयो तोसुत नरपतिसों । कत तुम खरे निठुरता अतिसों ॥ मद्ररथिनकों मरिबो देखत । नहिं सहाय करिबो अवरेखत ॥ सुनि बोलो कुरुपति नरसांईं । हम इनकहं बरजो बहुदाईं ॥ नहिं माने मम बचन अतोलो । लरन मरण अब देहु न बोलो ॥ यह सुनि कह्यो शकुनि नरनायक । भूपति तुम्हैं न ऐसो लायक ॥ जयहित शूर युद्ध लगि बढ़िकै । फेरे कहूं फिरत रथ चढ़िकै ॥

दोहा ॥

क्रोधत्यागि बढ़ि सैनसह सादर करो सहाय । निजकर दीजो अरिहिजय नहिं नृपनीति सचाय ॥
यह सुनि दुर्योधन नृपति पटह भेरि बजवाय । चलत भए तहं सैन सह जिमि घन उलद सवाय ॥

सोरठा ॥

नृप जौलगि यह सैन जाय तहां तौलगि उतै । पाण्डव भट बलऐन किए अशेषित मद्रदल ॥

तोमर छन्द ॥

देखि मद्रपतिकी सैन । अरि प्रबल बल बुधिऐन ॥ जय दुन्दुभी बजवाय । इत बढ़े शायक छाय ॥ शर भल्ल तोमर भूरि । इत दए अविरल पूरि ॥ जिमि रुद्र वासव काल । तिमि परे देखि कराल ॥ इन बध्यो ऐसो जूटि । नहिं सके कोऊ जूटि ॥ भजि चली सेना सर्व । तजि बीरताको गर्व ॥ नहिं फिरैं फेरे एक । नहिं घिरैं हेरैं एक ॥ जिमि निरखि केहरिजूह । भगि चलैं द्विरद समूह ॥

दोहा ॥

रथी पदाती अनगिने अगणित तुरंगसवार । भागि चले भयपूरि भट द्विरदी दोय हजार ॥
तेहिक्षण पाण्डव प्रबल ह्वै किए असानुष कर्म । बधि अगणित हय द्विरद भट बिचरण लगे अभर्म ॥
भीष्म द्रोण अरु कर्णके जूझे मम भट भूप । भए अधीर सभीत नहिं शल्य मरन अनुरूप ॥
नौका डबे होत जिमि ब्याकुल उतरनहार । मरे शल्यकेतिमि भयो ममदल विगत अधार ॥
भूपति तेहिक्षण उदित भो धर्मनृपतिको धर्म । कहे सबै फल लहत जो किए सुयोधन कर्म ॥

सोरठा ॥

निजदलबिचलत देखि नृपतिसुयोधन धीर धरि । कह्यो सूतसों तेहि अरि सन्मुखलैसुरथ चलु ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

नृपति सुयोधनसों इमि सुनिकै । सारथि चलो सुरथ लै गुणिकै ॥ एकइस सहस सुभट थिरि रणमें । चले भूपके संग तेहिक्षणमें ॥ पाण्डव बढ़ि बढ़ि तिनसों भिरिकै । लागे करन युद्ध तहं थिरिकै ॥ रथते उतरि भीम बल पागो । गदा पाणि ह्वै विचरण लागो ॥ धसि तोसुतके पैदर दलमें । प्रलय पसारत भो तेहिथलमें ॥ जंघा जानु बाहु कटि तोरत । शीश हदीस कुम्भ सम फोरत ॥ बिलसत भयो भीम तहं तैसे । मृगगणमध्य केहरी जैसे ॥ महाराज सुनिये तेहिक्षणमें । भट हतशेष भगे गुणि मनमें ॥ धर्मआदि पाण्डव धनुधारी । दुर्योधन पहं चले प्रचारी ॥ तिन्हें देखि नहिं तोसुत धरषो । कैयक सहस भल्ल शर बरषो ॥ एहिविधि निज सुभटनसों भाष्यो । भागि अमरता तुम अभिलाष्यो ॥ अमर होत नर रणमें मरिकै । नहिं जे मरत रोगवश परिकै ॥ ताते पलटि लरो भय तजिकै । हानि लाभमें आनंद सजिकै ॥ जय लहि लहत सुयश कोटीको । रणमें मरेहु क्षत्रिअहि नीको ॥ और एक है सुनिये सोऊ । इनसों भागि बचिहि नहिं कोऊ ॥ यह सुनि चेति फिरे सब योधा । किए पाण्डु दलको अवरोधा ॥

दोहा ॥

साल्व म्लेच्छपति तेहि समय मत्त द्विरदपरबैठि । शत्रुसैनसों भिरत भो मन मोक्षनको ऐठि ॥
कालराज महिषस्य सम शत्रुसैनसों जूटि । भयो भगावत विकल करि दण्ड शरनसोंकूटि ॥

सोरठा ॥

निजदलबिचलतदेखि धृष्टद्युम्न सेनाधिपति । शरवर्षतअतितेखि चलो साल्वक्षितिपाल पहं ॥

चौपाई ॥

ताहि देखि आवत शर छावत । साल्व भूप भो द्विरद चलावत ॥ धृष्टद्युम्न तहं तुरता धास्यो । बहुशर कुम्भनबीच प्रहास्यो ॥ लागे बाण द्विरद दबि पिछलो । मनु रणबम्बु गोदसो बिछलो ॥ बहुरि चलायो नृप रिसि पागो । धृष्टद्युम्नके बध हित लागो ॥ धृष्टद्युम्न तब घनसम गर्जो । गहि गुरुगदा त्यागि रथ तर्जो ॥ मत्त मतंग नेकु नहिं अटक्यो । सुरथ उठाय भूमिपै पटक्यो ॥ साल्व भूप अति तुरता धास्यो । अगणित भटन शरणसों मास्यो ॥ सात्यकि भीम शिखण्डी तौलों । आए सजे द्विरद रथ जौलों ॥ पुरुष सिंह सेनापति धरकस । गजके कुम्भ गदा हनि करकस ॥ बध्यो चिघरि सो गज मतवारा । गिरो बमत शोणितकी धारा ॥ सात्यकि मारि बाण गति अतिको । काट्यो शीश शाल्व-नर्पतिको ॥ ढिग लखि क्षेमधूर्ति अवनीशहि । शर हनि काटि गिरायो शीशहि ॥ नृप यहि विधिको अनरथ लखिकै । सब भट हाहा किए बिलखिकै ॥ सो लखिकै भूपति कृतबर्मा । भिरो सात्यकी सों बर पर्मा ॥ दोऊ एक वंश भवनागर । दोऊ विदित पराक्रम सागर ॥ अगणित भांतिनकी गति लीन्हें । बाणनको दुर्दिन रचि दीन्हें ॥

दोहा ॥

अगणित शायक परस्पर काटि काटि गति ठाटि । हने परस्पर बाण बहु डाटि डाटि शरपाटि ॥
कृतबर्मा शर अर्धशशि हनि काट्यो धनु तासु । सात्यकि काट्यो तासु धनु गहि कठोर धनु आसु ॥
बधि सूतहि घोरन बध्यो काट्यो ध्वजा अनूप । शूल चलायो और रथ चढ़ि कृतबर्मा भूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहं बिरचि बाणकी बर्षा ॥ शरण पांचशत रथी संहास्यो। सुभट सातशत गज बधि डास्यो ॥ बध्यौ लाख पैदर धनु धुनिकै। बसुशत द्विरद बध्यो जय गुनिकै ॥ तब हतशेष सुभट सब इतके। चले बिचलि बलबीर्य्य अमितके ॥ इमि बिचलाय कौरवी सेना। ताल देत भो भट जगजेना ॥

दोहा ॥

एहि प्रकार तो सुवन बधि भीमबीर उद्दंड। आपुहि मान्यो धन्य अति गुणि पूरण पणचंड ॥
नृप तेहिदिन तेहिक्षण रहो तो दल किञ्चितशेष। तबहूं तोसुत भूप नहिं मान्योकछू बिशेष ॥

सोरठा ॥

युगदल शेष निहारि कृष्ण कह्यो इमि पार्थसों। एहिदिन सुजयबिचारि पार्थबधौ सबशत्रुदल ॥

चौपाई ॥

सात्यकि परदलमधि जय लहिकै। लै आयो संजयकहं गहिकै ॥ व्यूह बनाय किए अवरोधन। हय दलमध्य खरो दुर्योधन ॥ कृप कृतबर्मा अश्वत्थामा। नृपसों दूरि खरे बल धामा ॥ हैं अति समित सुभट दुऊंदिशिके। लरत रोजके जागे निशिके ॥ अब तुम निज धनुबिधि अवराधौ। बधि शत्रुहि नृपकारज साधौ ॥ नाथ आपु यह कहत यथारथ। यह सुनि कह्यो कृष्णसों पारथ ॥ भीम तासु सब बन्धु संहारे। हैं द्वै तीनि जात ते मारे ॥ भीषम द्रोण कर्ण हैं आदिक। मरे असंख्यन सुभट प्रमादिक ॥ बचे पांचशत भट हयसादी। शकुनि भूपके जय धुनि नादी ॥ द्वैशत बचे रथी कुरुपतिके। शत गज गजारोहबल अतिके ॥ तीनि हजार पयादे बाचे। ते मम बाणनकी भय राचे ॥ अश्वत्थामा कृप कृतबर्मा। अरु त्रिगर्तपति भूप सुशर्मा ॥ शकुनि उलूक शेष दल एतो। ताको बधब पराक्रम केतो ॥ नृप न भागि हैं रण तजि जेते। मम बाणन बधि जै हैं तेते ॥ जीत्यो शकुनि रत्न अधरम कै। सो हम आजु लेत सुधरम कै ॥ यह सुनि कृष्ण चपल करि घोरे। चलत भए ममदलके धोरे ॥

दोहा ॥

चले पार्थ के संग तहं भीम नकुल सहदेव। टङ्कारत कोदण्ड वर वर्षत बाण सुमेव ॥
तिन कहं आवत देखि नृप शकुनि सुशर्मा भूप। बढ़ि पारथसों भिरतभे वर्षत बाण अनूप ॥
सुभट सुदर्शन सुवन तुव भिरो भीमसों वीर। भिरत भयो सहदेवसों दुर्योधन रणधीर ॥
प्रास हन्यो सहदेवको शीश हयस्थ नरेश। ह्वै मोहित फिरि चेति सो वर्षो बाण सुमेश ॥

चौपाई ॥

बर्षि बाण पारथ धनुधारी। बध्यो समस्त सुभट हयचारी ॥ रथिनमध्य फिरि प्रलय पसास्यो। अगणित रथिन भूमिपै डास्यो ॥ बाण चुरप्र प्रचारि प्रहास्यो। सत्यकर्मको शीश बिदास्यो ॥ नृगणमध्य सिंह ज्यों भूषो। लस्यो लसो तिमि पार्थ अदूषो ॥ रथी सुशर्माके सब बधिकै। बध्यो सुशर्महि पार्थ बरधिकै ॥ रहे सुशर्माके सुत जेते। तिनकहं बध्यो मारि शर तेते ॥ बधि त्रिगर्तदल भट छबिछायो। शेष कौरवी दलपै आयो ॥ तो सुत सुभट सुदर्शन चीन्हों। भीमसेन ताको बध कीन्हों ॥ लखि बध तासु तासु अनुगामी। भिरे भीम दलसों बध कामी ॥ तिनकहं बध्यो भीम क्षणमाहीं। लखि सब गुणे बचत कोउ नाहीं ॥ तोसुतको सेनापति जोहो। भिरो शत्रुदलसों सो कोहो ॥ रथिन सहित अरिदलसों भिरिकै। सो अति युद्ध कियो तहं थिरि कै ॥ हन्यो उलूक बाणदश भीमहि। शकुनि तीनि शर हन्यो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीमहि ॥ भट सहदेव जीतिकी रतिसों । भो तहं भिरत शकुनि नरपतिसों ॥ शकुनि ताहि नव्वे शर मास्यो । सो भूपहि बहुबाण प्रहास्यो ॥ ते सब सुभट तहां सुनुराजा । करत भए बाणनको छाजा ॥

दोहा ॥

इमिदुहुंदिशिकेसुभटसब भिरिभिरि ओजबढ़ाय । तोमरपट्टिसशक्तिशरदिएदुहुं दिशिछाय ॥
रुण्ड मुण्ड भुज जानुसों भई भयानक भूमि । बायस जम्बुक गृध्र जुरि शोणित पीवत घूमि ॥

सोरठा ॥

सौबलबीर अमान प्रास हन्यो सहदेव शर । भो मूर्छित बलवान भट सहदेव उदार मति ॥

चौपाई ॥

सो लखि भीम शरासन कर्ष्यो । शकुनि आदिपहं शायक वर्ष्यो ॥ घन समान गर्जो पण धरिकै । सो सुनि भगे सुभट अतिडरिकै ॥ सिंह गर्ज सुनि भागे कर्णी । तिमि मम सेना भई विवर्णी ॥ दल विचलत लखि नृप दुर्योधन । इमि कहिकै कीन्हें अवरोधन ॥ फिरौ फिरौ सबसंशै तजिकै । नरक लहौगे रणसों भजिकै ॥ सुनिते फिरे रोषसों पागे । तजि जिय क्षोभ लरण तहं लागे ॥ सहदेव चेति शरासन लीन्हें । दश शर गात शकुनिके दीन्हें ॥ तीनि बाण तुरगन कहं हनिकै । काट्यो धनुष खरोरज्ज भनिकै ॥ तुरितहि शकुनि और धनुधारी । नकुलहि हन्यो साठि शर भारी ॥ हन्यो उलूक साठि शर भीमहि । सत्तरि शर सहदेव अधीमहि ॥ भीम उलूकहि नव शर मास्यो । शकुनिहि चौसठि बाण प्रहास्यो ॥ हनि सुभल्ल सहदेव न भटको । काट्यो शीश उलूक सुभटको ॥ शकुनि पुत्रको मरिबो लखिकै । वाक्य विदुरको समुझि बिलखिकै ॥ दृग जल पूरि भूरिदुख भरिकै । चिन्ति मुहूर्त हियो दृढ़ करिकै ॥ तज्यो तीनि शर पाण्डव ऊपर । तेहि सहदेव गिरायो भूपर ॥ तकि सहदेव सौबलहि डार्यो । बाण अर्ध शशि हनि धनु काट्यो ॥ तब गहि खड्ग शकुनि रण खेलत । भे सहदेव बीर पहं झेलत ॥ भट सहदेव बाण हनि चीन्हों । बीचहि खड्ग काटि द्वै कीन्हों ॥

दोहा ॥

तब सौबलगहि गुरुगदा गर्जि चलायो आसु । ताहि काटि सहदेव भट व्यर्थ कियो बल तासु ॥
शक्ति चलायो शकुनि तब तेहि काट्यो सहदेव । शकुनि भूप तब विचलिगो भभरि त्यागि निज भेव ॥

सोरठा ॥

शकुनिहि विचलत देखि विचलि चले हतशेष भट । तब सहदेव विशेष चले प्रचारत सौबलहि ॥

चौपाई ॥

अब कहं भगे जात हौ मामा । तजि पुंसत्व भए जिमि बामा ॥ कुरुकुल अगिनि पलटि लरु भिरिकै । किए कर्मको फल लहु थिरिकै ॥ आजु काटि तो शीश सोहायो । खेत जुवाको बैर बनायो ॥ इमि कहि शकुनिहि दश शर मास्यो । चारि बाण तुरगनपहं डास्यो ॥ फिरि हनि छत्र ध्वजा ध्वज काट्यो । धनुष काटि लाघवता ठाट्यो ॥ तब अति कोपि शकुनि रण-चारी । चह्यो चलावन प्रास सुभारी ॥ तब हनि तीनिभल्ल अरि दन्दन । काट्यो भुजा पण्डु-नृप नन्दन ॥ फिरि हनि भल्ल काटि शिर ताको । दियो डारि अति भरो प्रभाको ॥ गिरो कबन्ध शकुनिको रथते । मानो केतु गिरो नभपथते ॥ शकुनिहि मरो देखि भट उतके । शङ्ख बजाये आनंद युतके ॥ तब भट सौबलके अनुगामी । भिरे पाण्डवनसों नभ कामी ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्जुन भीम बर्षि शर तिनपै। दीन्हों भेजि शकुनि गो जिनपै॥ तब अतिकोपि सुयोधन राजा। बचे रहे जे सुभट समाजा॥ तिनसों कह्यो पाण्डवन हतिकै। आवो शीघ्र पराक्रम अतिकै॥ सो सुनि ते सब अमरष साने। भरि सुर संगहेत उमदाने॥ चले पाण्डवनपहं धनु कर्षत। पट्टिस शक्ति शूल शर बर्षत॥ देखि तिन्हैं भट पाण्डव दलके। बढ़ि बढ़ि भिरे गणे बरबलके॥

दोहा॥

नृप मुहूर्त भरि होतभो तहां घोरसंग्राम। पाण्डव किये अशेष बधि सब तोसैन ललाम॥ एकादश अक्षोहणी नृपतो सुतकी सैन। तेहिक्षण सिगरी बधि गई भावी होति टरैन॥ एकसुयोधन भूप बचि इतउत चखन चलाय। निजदिग्विजयनी मेदिनी लखिभो महाअचाय॥ धनु टङ्कारत पाण्डवन लखि कछुसैन समेत। मोहि चेति भगि जानको भूप गहत भो नेत॥

सोरठा॥

यह सुनि धृतराष्ट्रनरेश संजयसों बूझत भयो। कछु संजय तेहिदेश बचे किते पाण्डव सुभट॥

जनमेजयउवाच। जयंकरी छन्द॥

सो सुनिकै संजय मतिमान। कहत भयो सुनु भूप सुजान॥ द्वै हजार रथ गज शत सात। पांचहजार अश्व अवदात॥ दशहजार पैदर बलऐन। इतनी बची पाण्डवो सैन॥ लखि नरदत पर योधा चण्ड। चालन करत कठिन को दण्ड॥ भरो तुरंगते उतरि मदन्द। भागि चलो दुर्योधन मन्द॥ एकादश अक्षोहिणिको नाथ। चलो पयादे नहिं कोउ साथ॥ गदापाणि अति जवसों जाय। दुरत भयो शर नीरे पाय॥ सुणत विदुरको वचन प्रशस्त। सरमधि भयो सूर सम अस्त॥ उत सात्यकिके रथपर मोहि। धृष्टद्युम्न सेनापति जोहि॥ हंसि बोलो सात्यकिसों बैन। राखे इन्हैं नफा कछु हैन॥ यह सुनिकै सात्यकि करि चेत। करमें खड्ग लियो बधहेत॥ तेहिक्षण तहां आइ मुनि व्यास। कह्यो न याहि बधौ मति रास॥ व्यास वचन सुनि वीर विशाल। दीन्ह्यों मोहिं छोड़ि तेहि काल॥ व्यास सुमुनिकी कृपा प्रसाद। हम बचि चले तजे अहलाद॥ नृपति कोशभरि तहंसों आय। सरमधि भूपहि लख्यो अचाय॥ नृप लखि मोहिं बारि भरि नैन। रहो मोहवश घरिक अचैन॥

दोहा॥

चेति भूप फिरि कहत भो कछु संजय मतिमान। मम सुहितनमें एक तुम बचे न कोऊ आन॥ यह सुनि हम नृपसों कहो बचे तीनिभट और। कृप कृतवर्मा द्रोणसुत विदित भटनको मौर॥ तब मोसों नृप कहत भो कहेहु पितासों जाय। तोसुत दुर्योधन बचो ह्रदमें पैठि अचाय॥ पुत्रबन्धु हितवर्गबिनु कहा जिये अब मोहि। कह्यो राज्य पाण्डव सबलकिमि जीवेसो जोहि॥ इमि कहि मोकहं बिदाकरि दुरो बारिमधि भूप। कृप कृतवर्मा द्रोण सुत तहं आए हतरूप॥

महिखरीछन्द॥

ते आय मोसों भए बूझत कहो भूपति कित गयो। है बचो कै लरि मरो तब हम रहो नृप तहं कहि दयो॥ ते रोय तेहियर शोकभरि फिरि मोहिं रथपर करि लए। रथ हांकि आए सिविर मधि तेहि समय रवि अथवत भए॥ तेहि समय रोदन शब्द आरत सकल सिविरन भरत भो। हा तात सुत पितु बन्धु स्वामी शब्द यह सुनि परत भो॥ सब दाररक्षक नृपनको तिय रथन करि लै चलत भो। भगि चले सेवक सौज लै लै शोकदावन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलत भो ॥ उर शीश ताड़त करत रोदन चलीं योषित दुखभरीं । सब आय हास्तिन नगर मधिनृप ठौर ठौरन गिरि परीं ॥ उत बिदा कीन्हों धर्मनृपति युयुत्सुकहं उरलायकै । रथ हांकि सो दृग भरे जल नृप नगर देख्यो आयकै ॥ नृप छार छत्ता मिले ताहि प्रणाम करि सो थिरि रहो । सुत भाग्यबश तुम बचे आए नृपति बिनु तिन इमि कहो ॥ तब कह्यो सब वृत्तान्त बेश्यापुत्र जिमि आवत भयो । सुनि समुझि भावी कह्यो बिधि गति बिदुर सतगुण मति भयो ॥

दोहा ॥

निशिभरि रहिनिजगेह सुतभोरधर्मकेपास । जायकहइमिकहितेहिबिदाकियोबिदुरमतिरास ॥
ताहि बिदाकरि दुखित अति बिदुरचले तुअपास । बेश्यासुत निज गेह गोगुणि प्रभु चरितप्रकास ॥
राम राम सियराम जपि कृष्णचन्द्र कहं ध्याय । शल्यपर्व दर्पण रच्यो हनुमत कृपा सहाय ॥

स्वस्ति श्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथकबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शल्यपर्वसमाप्तिर्नाम तृतीयोऽध्यायः ॥

माघ कृष्ण एकादश्यां बुध बासरे ॥ संवत् १९३०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

गदा पर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि। बन्दि गिरा ब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥
भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान। तेहि भरतहि भजि भणत यह भाषा भारत महान ॥
पारथ के स्वारथ भए सारथि परम अनूप। ते सारथ रचि देहिं यह भारत भाषा रूप ॥

सोरठा ॥

बन्दौं कपिबर वीर रामपरम प्रिय पारषद। मंगल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ वर ॥
सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी। भारत समुद्रप्रतक्ष भाषा करि चाहत तस्यौ ॥
जनगदंग जनहेत गहत गदा कौमोदकी। तेहि गहि हिए निकेत गदापर्व भाषा रचत ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

शल्यपर्वकी कथा ललाम। कहि बोले संजय बलधाम ॥ महाराज दुर्योधन भूप। जब ह्रद मध्य दुरो गतरूप ॥ भरो सिविरमधि शोक अपार। भगे लोग करि हाहाकार ॥ द्रोणतनय अरु कृप अनखाय। कृतवर्मा कछु रजनि बिताय ॥ सरपर जाय दुखित अतिमान। कह्यो भूपसों करि आह्वान ॥ नृप हम तीनि महारथ चण्ड। तो जयवशहित धुनि कोदण्ड ॥ चाहत फेरि कियो संग्राम। ताते चलौ लरैं एहियाम ॥ बधि हतशेष पाण्डवी सैन। लेहु विजय बधि अरि बल ऐन ॥ कै बधि जाय बसौ सुरलोक। उभै प्रकार सुयशको ओक ॥ यह सुनि दुर्योधन क्षितिपाल। बोले बचन पूरि दुखआल ॥ तुम त्रय वीर बचेहौ जौन। मम सुभाग्य की पुरता तौन ॥ नहिं यहिक्षण लरिबेके योग। हैं हम महासमित लहि भोग ॥ ह्वैगतश्रम यह रजनि बिताय। तुम सह करब युद्ध गहि चाय ॥ नृप तेहि समय दैव आधीन। भीमसेनको चाकर पीन ॥ बधिक एक ह्वै समित महान। आयो तहां करन जलपान ॥ सो सुनि यह वार्ता सविधान। मनमें भयो करत अनुमान ॥ है यहिसरमधि कुरुकुलराय। जाय भीमकहं देउं बताय ॥ तौ मोहिं बहुधन देहैं भीम। यह बिचारि सो चलो अधीम ॥ विजय पाय उत धर्म नरेश। बन्धु सखन सह मुदित सुभेश ॥ मिलो न दुर्योधन नरनाह। तातेअति चिन्तित मनमाह ॥ चारणकहं कहि बहुधन देन। सबदिशि भेजि दयो सुधिलेन ॥ ते सब जाय दूरिलों हेरि। आय भूपसों भाषे टेरि ॥ हेस्यो बहुत भूप शिरताज। नहिं कहुं मिलो सुयोधन राज ॥ जानि परै लरि मरो सगर्व। क्षात्र धर्म युत बीर अखर्व ॥ इतने में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह व्याध सचैन। जाय भीम सों बोलो बैन ॥ जो द्वैपायन सर अभिराम। ता मधि दुरो भूप ह्वै छाम ॥ इमि कहि कहत भयोसब तौन। सुनी रहै तहं वार्ता जौन ॥ भीम ताहिदै धन सुख पाय। सबिधि कह्यो भूपति सों जाय ॥ सो सुनि धर्मभूप लहि मोद। सदल सकृष्ण चले तेहि कोद ॥ तेहिक्षण भयो किलकिला शब्द। शङ्खशब्दसों पूरो अब्द ॥ कृप कृतवर्मा अश्वत्थाम। सुनि सो शब्द पूरि दुखधाम ॥ कह्यो सुयोधनसों वोहिओर। परत सुनाइ शब्द अति घोर ॥ जानि परत नृपधर्म ससैन। एहिदिशि आवत पूरित चैन ॥

दोहा ॥

अबइतसोंटरिजातहैं हम सब अनत अलेष। जातेतुमएहिमधि न इमि पाण्डवगुणैविशेष ॥
यहसुनितिनकोकरिबिदा दुर्योधनक्षितिपाल। जलथम्भनकरितालमधि दुरतभयोतेहिकाल ॥
ते चययोधा बेगसों दूरि जाय तेहियाम। बैठि रहे वट वृक्ष लहि महा शोचसों छाम ॥

सोरठा ॥

धर्मभूप तेहिठौर बन्धु सखन सह जाइ नृप। दुर्योधनको डौर देखि कृष्णसों कहतभे ॥

रोला छन्द ॥

लखो दुर्योधन नृपतिको महा माया कर्म। वारि थम्भनकरि दुरो सरमध्य परम अभर्म ॥ नरन कहं नहिं प्राप्य अब यह जाइ बधि केहि भांति। मरो देखैं याहि जब तब मिटै दुखकी पांति ॥ बचन यह सुनि कह्यो केशव कहत नृप तुम सांच। युक्तिसों बधि जायगो यह सुकृतिकी लहि आंच ॥ युक्तिसों बधिगये क्रमते असुरपति सब पूर्व। युक्तिसों बधि जायगो यह किये माया गूर्व ॥ बचन यह सुनि नृप युधिष्ठिर हिये करि अनुमान। भूमिनाथ जलस्थसों इमि कह्यो करि आह्वान ॥ नृप सुयोधन गर्व तजि अब गह्यो कैसो कर्म। क्षत्रवंश बिनाशि अब किमि तजत क्षात्र सुधर्म ॥ बन्धु सम्बन्धी सखा सुत समरमें मरवाय। आपु जीवन आस गहि अब छिपे जलमें जाय ॥ गहे अनुपम शूरता तब कहे बचन सगर्व। गर्व विक्रम शूरता निज करत मिथ्या सर्व ॥ जानि ऐसो परत परबल कहे गरवित बैन। परे निजपर भीर रण तजि किए अब जल सैन ॥ शूरता दरशाय सब संसार नाश कराय। भागि जलमें दुरे इमि निज वंश विरद भुलाय ॥ धारि धीरज कढ़ो जलते लरो भिरि मन मान। उचित नहिं कुरुवंश जनकहं जीव क्षोभ मलान ॥ सुनि सुयोधन धर्मनृपके परम तीक्षण बैन। वारिमधि रहि कह्यो मोकहं जीवकी कछु भैन ॥ बिरथ बिधनु अभृत्य ह्वै हम भए समित महान। हेत तेहि एहि वारिमधि धसि करत सैन न आन ॥ सहित अनुगण सोय तुमहूं बितै रणश्रम लेहु। भोर लहि हम लरब तुमसों राखि जयसों नेहु ॥ कह्यो तब नृप धर्म हम सब विगतश्रम हैं भूप। वारिते कढ़ि लरो एहिक्षण बीरता अनुरूप ॥ मारि हमकहं करो अब कै भोग भूमि समस्त। देह तजि कै जाय बिलसौ सुमन लोक प्रशस्त ॥ नृप सुयोधन कह्यो जिन सुत भ्रातरन हित राज्य। चहत ते सब मरे अब सो भयो हमकहं त्याज्य ॥ क्षीण रत्ना हीनक्षत्री भूमि रुचति न मोहिं। युवति बिधवा सरिस सो तजि देत अब हम तोहिं ॥ अबहूं तुमकहं मारिबेको मोहिं है उत्साह। पै न जीवत बन्धु सुत तेहिहेत त्यागत चाह ॥ जाय बनमें बसब अब हम अजिन अम्बर धारि। देत तुम कहं भूमि भोगो सकल संशै टारि ॥ बचन यह सलिलस्थ नृप को सुनत धर्म नरेश। कह्यो अब कत कहत इमि रहि गुप्त पाइ सुदेश ॥ सुई अग्र न दये तब अब देत गिरी भूमि। सुबुधि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो हिए आई कहो कितसों घूमि ॥ भूमि दीवे योग जो तुम अजौलों है तात । तौ न हम तो सुसुख दीन्हीं लेव महि अवदात ॥ वंशरक्षण हेत तब हम रहे मांगत आपु । दए नहिं तब भयो ताते वंशक्षय कृत तापु ॥ वधे बिनु अब तुम्हैं नहिं महि लेव जानो एहु । गरुनको नहिं वचन मानेहु तासुफल तुम लेहु ॥ भागि रणते वारिमधि दुरि देत हौ महिदान । दानमें अरु युद्धमें भो कौन तुम्हहि समान ॥ जानियतु हौ मूर्ख जीयत भूमि शत्रुहि देत । सुई अग्रन दए तब अब इतो धीरज लेत ॥ नहीं जौलगि मरिहि हम तुम दोयमेंते एक । काल तौलगि गहे रहिहै जगत क्षयको टेक ॥ सुनो ताते वारिते कढ़ि लरो डर बिसराय । शूरता तजि गहत कादरपनो लाज बिहाय ॥ वचन यह सुनि कहत भे धृतराष्ट्र भूप अचैन । कहो मम सुत सह्यो कैसे महाकटु ए वैन ॥ जासु हे चखकोर निरखत नृपन के समुदाय । तौन ममसुत सह्यौ कैसे बचन ऐसे हाय ॥

दोहा ॥

धृतनृपतिको बचन सुनि कह्यो सूतसुत दच्छ । नृपके दारुन बचन ए सुनि तो सुवन अपच्छ ॥ करतलसों करत लहि हनि महा क्रोधसों पूरि । सहि न सको नृपधर्मके बचन भरे बलभूरि ॥ कह्यो भूप तुम सकल हौ सरथ सधनुष समैन । अरथ अधनु हम एक किमि तुमसों लरैं सचैन ॥ एक एक क्रमसों करो गदायुद्ध जो जूटि । तौ हम कढ़ि तुमसों लरैं बध बिचारि जय ऊटि ॥ भीष्म द्रोण कर्णादिसों अच्छण होव एहियाम । बधि सिगरे पाण्डवनकहं करि सुगदा संग्राम ॥ धर्मयुद्ध जो करहु तुम जूटि एकसों एक । तौ सूची सुख महि अजौं दुर्लभ तुम्हैं सटेक ॥

सोरठा ॥

दुर्योधनके बैन सुनि मोदित ह्वै धर्मनृप । बोले अचरज है न हौ तुम ऐसे सुभटमणि ॥ क्षात्रधर्म बर जौन अजौं गहे तुम दैववश ॥ परम शूरता जौन भूप गहे सो दैववश ॥

चौपाई ॥

इमि कहि कह्यो धर्म नरनायक । आप कहे सो करिवे लायक ॥ लरिहि एक कहि हौ जेहि आरज । और खरे लखिहैं तो कारज ॥ यह सुनि भूप सुयोधन गरवी । कढ़ो गहे सुगदा अयदरवी ॥ महा मत्त मैगल सम वलते । गदापाणि नृप निकरो अलते ॥ पूरित क्रोध अरुण अति ईक्षण । भृकुटी करे यथा असि तीक्षण ॥ गदापाणि बिलसो अरिचासक । मनहुं दण्ड धर सब जगनायक ॥ गहई गदा लोहकी भारी । गहे लसो मनु त्रिपुर संहारी ॥ नृपहि अकेलो लखि तहं धरपै । हंसे सुभट कर दै दै करपै ॥ हास करत लखि भूप सुयोधन । अति रिसि पूरि कह्यो जयशोधन ॥ सब यहि हंसिवे को फल लहिहौ । यमपुर जैहौ नभपथ गहिहौ ॥ यह सुनि उतके योधा रूरे । कुपित भए अति अमरष पूरे ॥ कोलित अहि सम नृप तेहिक्षणमें । बोलत भयो रोकि रिसि मनमें ॥ भूपति कहत पुकारे तोसों । करो धर्म संगर अब मोसों ॥ विरथ विधनुष कवच नहिं तनमें । है सम एक प्रबल भटगणमें ॥ भूप सुयोधन की सुनि बानी । कह्यो युधिष्ठिर नृप अनुमानी ॥ जब अभिमन्युहि बधि जय लीन्हें । तब तुम तहां धर्म नहिं चीन्हें ॥ अब एहि समय धर्म तुम जाने । यदपि कहत तुमसों हम माने ॥ हौ तुम कवचहीन अब ताते ॥ देत कवच हम पूरित भाते ॥ इमि कहि धर्म कवच बर दीन्हें । ताहि सुयोधन धारण कीन्हें ॥ बर शिरचाण धारि बलसागर । कहत भयो तोसुत भटनागर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

पांच पाण्डवन मों रुचै जाहि गदा गहि तौन। गदायुद्ध हमसों करै और लखैं रहि मौन॥
गदायुद्धमें मोहिं सम कौन भूमि तल माह। न्याययुद्ध करि जो लहै मोसों जय नरनाह॥

सोरठा ॥

इमि कहि बारम्बार गरजत देखि सुयोधनहि। केशव जानि बिकार नृपति युधिष्ठिरसों कह्यो॥

जयकरी छन्द ॥

तुम भूपहि दीन्हों बरदान। लरिहि एक तुमसों सबिधान॥ तेहि बधि लहौ राज्य तुम भूप। इमि कहि दीन्हों बचन अनूप॥ नहिं ऐसो साहस हो योग। अरिसों उचित न धर्म प्रयोग॥ वै केहिबिधि करि करि अन्याय। लीन्हों राज्य रत्न समुदाय॥ तुम फिरि गहत धर्म एहिठौर। है कछु भोग भोगिवे और॥ गदायुद्ध में जीतै याहि। ऐसो कहै कौनको चाहि॥ भीमहुसों संशै परधान। यह जीतै धौ भीम अमान॥ जौ यह भीमहि बधै सचाय। तौ फिरि बसो बिपिनिमें जाय॥ जानिपरो यह राज्य उदार। नहिं तो भाग्य लिख्यो करतार॥ धर्म सहित रहिगदा सुयुद्ध। यासों करिहि मरिहि सो शुद्ध॥ यह सुनि भीमसेन बलवान। कह्यो कृष्णसों करि अनुमान॥ कृष्णचन्द्र मति करौ विषाद। हम एहि बधब गहौ अहलाद॥ हम सबबिधि हैं यासों श्रेष्ठ। भूप पाइहै बिजय यथेष्ठ॥ यह सुनि कृष्ण प्रशंसे ताहि। कह्यो बधौ एहि सुगदा बाहि॥ सात्यकि धर्म भूप कुलदीप। तासु प्रशंसा कियो महीप॥ सुनि सु प्रशंसा भीम अभर्म। कियो तासु बधको पण पर्म॥

दोहा ॥

दुर्योधनके बधनको करत प्रतिज्ञा चण्ड। भीम उतरि रथसों चलो गहि गुरगदा उदण्ड॥
लखि भीमहि गर्वित बचन कहत सुयोधन भूप। गदा उकाढ़त बढ़ि चलो बली सिंह अनुरूप॥
दोऊ दोउनके बधनको पण करत सपर्म। दोऊ दोउनसों कहत निज निज बिक्रम मर्म॥

सोरठा ॥

दोऊ सुभट निशङ्क मत्तमतंग सम सरिस बढ़ि। दोऊ गहि गतिबङ्क गरजि गरजि लागे लरण॥

चौपाई ॥

महाराज तेहिक्षण मनभायो। अति अभिराम राम तहं आयो॥ रामहि देखि कृष्ण उठि पजे। बूझे कुशल कुशल निज कूजे॥ भाइन सहित युधिष्ठिर राजा। धृष्टद्युम्न सात्यकि सुख साजा॥ क्रमसों मिले मोद अति गहि गहि। आजु सुदिन तुम आए कहि कहि॥ सुखासीन करि धर्ममहीपति। कह्यो रामसों बाणी दीपति॥ ए युगबीर बन्धु रणचारी। भरे गर्ब गुरगदा प्रहारी॥ परम बिचक्षण शिष्य तुम्हारे। लरत आजु अति अमरष भारे॥ है मध्यस्थ कृष्ण तुम मानद। देखौ गदायुद्ध यह सानद॥ सुनि बलिराम कह्यो गुणि चितसों। हम है गए पुष्यमें इतसों॥ एक पुष्य रहि अनत बिताए। दूजो श्रवण मध्य इत आए॥ आइ बयालिस दिनपैं लेखो। चाहत गदायुद्ध यह देखो॥ रामहि बन्दि बन्दि तहं तक्षण। लगे लरण युगबन्धु बिचक्षण॥ यह सुनि जनमेजय गुणि धुनिसों। बूझे वैशम्पायन मुनिसों॥ सुनि सुयुद्ध आरम्भनक्षणमें। राम गए कित का गुणि मनमें॥ आये तहां कहा का करिकै। सो सब सुमुनि कहो सुद धरिकै॥ यह सुनि वैशम्पायन भाषे। सुनो भूप तुम जो अभिलाषे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

करि बितीत निज कुदिन सब सुदिन पाय नृपधर्म। अब भेज्यो धृतराष्ट्रपहं कृष्णहि ज्ञापन कर्म ॥
जाय तहां करि वार्ता कृष्णचन्द्र फिरि आय। कहि उनको बिरतान्त सब युद्धमंच ठहराय ॥
दल बिभाग लागे करन तेहिक्षणमें बलिराम। कृष्णचन्द्रसों कहत भे सुबचन अति अभिराम ॥

सोरठा ॥

उनको संग सहाय करिबो हमको उचित है। सो सुनिकै यदुराय मन न दयो तेहि बचनपै ॥

रोला छन्द ॥

कृष्ण मान्यो बचन नहिं तब क्रोध गहि बलिराम। तीर्थयात्रा करनको भो जात बलबुधि धाम ॥ भोज आदिक सकल यादव गए कुरुपतिवोर। सहित सात्यकि पाण्डवनदिशि कृष्ण पालक मोर ॥ चलत उत बलिराम भृत्यन देइ चारु निदेश। द्वारिकासों सौज सब मंगवाइ याचा देश ॥ बाजि कुंजर बसन सुबरण धेनु भूषण भूरि। क्षत्रिजन अरु द्विजन दीनन दए आनंद पूरि ॥ ठौर ठौर कराय भोजन द्विजनके समुदाय। दए दक्षिणा हेम भूषण बसन प्रीति बढ़ाय ॥ तीर्थ सारस्वती करि एहिभांतिसों बलिराम। जात भे कुरुक्षेत्र मधि तेहि रजनिमें तेहि याम ॥ भूप जनमेजय सुसुनिके बचन ए मुनि भूप। कह्यो सारस्वती को अब कहो महिमा रूप ॥ बचन यह सुनि कह्यो मुनि नृप सुनहुं सो इतिहास। गए हे यदुभूप उत जहं परमतीर्थ प्रभास ॥ छुटो जेहि थल चन्द्रमाको महा यक्ष्मारोग। परशि जेहि ह्वै बिगत किल्बिष करत रजनी भोग ॥ भूप यह सुनि फेरि बोले कहो मुनिशितराज। रोग भो किमि शशिहि छूटो किए कौन सुकाज ॥ सु मुनि यह सुनि कह्यो भूपति सुनो सो मनलाय। सुता सत्ताइस प्रजापति दक्षके सुचिकाय ॥ हैं नक्षत्र सताइसौ ते दक्ष तिन्हहि सचैन। दए सानद रजनिपतिकहं भाषि उचित सुबैन ॥ रजनिपति अति चारु तिनमें रोहिणीको देखि। त्यागि औरन लगो तासों रमण मोद विशेखि ॥ कछुदिनमें दुखित ह्वै सब तरुणि ते अनखाय। कह्यो यह वृत्तान्त बिधिवत दक्षके ढिग जाय ॥ दक्ष सो सुनि चन्द्रमासों कह्यो निज ढिगपाय। रमो सम सबतियनसों यह उचित धर्म सुन्याय ॥ दक्ष शशिसों भाषि इमि फिरि कह्यो दुहितन पास। जाहु शशिपै बचन मम गुनि करिहि पूरण आस ॥ गईं ते शशिगेह शशि नहिं रमो तिनसों फेरि। बिकल ते फिरि आइ पितुसों कह्यो निजदुख टेरि ॥ दक्ष फिरि समुझाय शशिसों कह्यो सहित विधान। रमत नहिं सम तियनसों सो लहत पापमहान ॥ रमौ क्रमसों सबनसों इमि भाषि शशिहि बुझाय। कह्यो दुहितन जाहु पतिपहं रमिहि क्रमसों आय ॥ मोहबस नहिं फेरि तिनसों रमो निशिपति मूढ़। फेरि ते सब जाय पितुसों कह्यो निजदुख गूढ़ ॥ बचन तो नहिं सुनत शशि नहिं रमत हमसों तात। जात नहिं अब सहो हमसों मदनको उतपात ॥ बचन यह सुनि दक्ष करिकै महा दारुणकोप। कह्यो यक्ष्मा जाय शशिको करौ बिक्रम लोप ॥ तुरित यक्ष्मा जाय प्रविशो रजनिपतिके गात। चन्द्र क्षीजन लगो दिन दिन तासु लहि उतपात ॥ किए औषध यतन बहु नहिं लगो एक उपाय। भयो अतिबल क्षीण शशि ह्वै महा दुर्बलकाय ॥ देखि शशिकी दशा सुरगण जाय बूझे हेत। कह्यो सो सब रजनि पति जिमि लह्यो शाप अचेत ॥ सुमनगण तब दक्षके ढिग जाय करि अवराध। कहे हे प्रभु क्षमो अब निशिनाथको अपराध ॥ चन्द्रमाके नशे बिनशिहि बीज औषध सर्ब। नशिहि ताते जगत सब सुर असुर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषि गन्धर्व ॥ सुरणके सुनि बचन बोले दक्ष नीति बिचारि । रमै सम सब तियन सों शशि गहै व्रत पण धारि ॥ जाय तौ सुरसतीके मधि पैठि करि असनान । होयगो फिरि पूर्ववत शशि विगतरोग अमान ॥ क्षीण ह्वै है मास आधे बढ़िहि आधे मास । किए मज्जन सुरसती में होयगो नहिं नास ॥ भयो पश्चिम समुद्रमें सुरसती संगम यत्र । चारुतीरथ प्रभासो शशि करौ मज्जन तत्र ॥ जाय तहं शशि कियो मज्जन लह्यो पूरबरूप । तीर्थ सारस्वतीसो नृप परम फलद अनूप ॥

दोहा ॥

जाय तहां बलराम करि मज्जन रहि निशि एक । भूरि दक्षिणां द्विजनकहं दीन्हें सहितबिबेक ॥
फेरि तहांते राम चलि गए कूपको आप । जेहिमधि रहि द्विजसोम लहि दियो बन्धुकहं शाप ॥
यह सुनि जनमेजय कह्यो कहो बिप्रहित चाहि । किमि तहंपायो सोमद्विज शापदयो कतताहि ॥

सोरठा ॥

सो सुनिकै मुनिराज कहत भये क्षितिपालसों । सुनो भूप शिरताज कथा पुरातनि द्विजनकी ॥

दोहा ॥

रहे पूर्व युगमें नृपति ब्राह्मण भ्राता तीन । तेज सदन सब सूर सम कर्त्ता तप मख पीन ॥
कछुदिनमें तिनके हिए भई भावना भूप । करि सुयज्ञ लहि पूर्ण हम पीवैं सोम अनूप ॥
यह बिचारि ते याचकनपूजि मोदसों छाय । गे प्रभास शुभ तीर्थतट लीन्हें पशु समुदाय ॥
चित नामक कछु पशु लए हो बढ़ि आगे जात । और दोय पीछू रहे लीन्हें पशु अवदात ॥
वै द्वै पीछू गुणिकछू टेरे चितहि सडौर । सो सुनि चित फिरि चलत भो गुणि कछु कारज गौर ॥
तहां आइ घेस्यौ चितहि टकतब भाग्योबिप्र । भीतातुरसों भगि चलो गिरो कूपमधि क्षिप्र ॥
ताहि कूपमधि गिरो गुणि टक न देखि ते दोय । भागि चले सब पशुन लै महाभीतसों भोय ॥
परि तेहि निरजल कूपमधि कीन्हों बिप्र बिचार । मरे इहां अब किमि मिलै पावन सोम उदार ॥
इतनेमें द्विज कूपमधि लम्बित बीरुध देखि । तपबलसों प्रगटित कियो बिमल बारि अवरेखि ॥
अग्निहोत्रकी अग्निकहं करि प्रज्वलित महान । लगो करन मख पढ़ि ऋचा ब्राह्मण तेजनिधान ॥
तासु वेदधुनि जीव सुनि कह्यो सुमनसों तत्र । जाऊ सुमन सब शीघ्र तहं चित मख पूरत यत्र ॥
करिहि कोप वह बिप्र तौ निज तपबलके भेव । ताहीथल प्रगटित करिहि नूतन सिगरे देव ॥
यह सुनि सुमनस आय तहं कहे बिप्रसों वैन । हमसब आए भागहित देऊ बिप्र गहि चैन ॥
सुरण देखि द्विज मुदित ह्वै दयो यथाबिधि भाग । बर मांगो द्विज सुर कह्यो पूर्ण भयो तुव याग ॥
सो सुनि मांग्यो बिप्र बर जो परशै यह कूप । सोमपान कृतकी लहै गति सो दिव्य सरूप ॥
एवमस्तु कहि सुमन सब जातभए निज धाम । कूपमध्य पूरित भई सरस्वती अभिराम ॥

सोरठा ॥

भरो तेज अतिमान द्विज कढ़िकै बाहेर भयो । निजगृह आइ सुजान शाप दयो युगद्विजनकहं ॥
दन्तिनकहं भय पाय भगे मूढ़ तुम हमहिं तजि । ताते अब तो काय प्रगटै गुरलांगूल कपि ॥
कछुदिनमें क्षितिपाल कह्यो बिप्र जो सो भयो । यह इतिहास रसाल सुनो व्यास तपधामसों ॥

दोहा ॥

जाय तहां तेहि कूपको परशि बारि बलिराम । सु बरण मणि बिप्रन दए भूषण बसन ललाम ॥

जयकरी छन्द ॥

फिरि तहंसों चलिकै बलिराम । गए सु भूमिक थल अभिराम ॥ शुद्र अभीरणको भय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानि। गुप्त भई जहं गिरा सुजानि ॥ जहां रमैं अप्सर गन्धर्व। किन्नर यक्ष मुनि सुर सर्व ॥ तहां जाय करिकै अस्नान। विप्रन दियो तृप्त करि दान ॥ फिरि गन्धर्व तीर्थमें जाय। करि मज्जन दै धन अधिकाय ॥ फिरि गो गर्गतीर्थपै भूप। सरस्वतीको सुतट अनूप ॥ कीन्हों तहां तपस्या गर्ग। तबसों गर्गतीर्थ प्रद स्वर्ग ॥ तहां जाय करिकै अस्नान। विप्रन दीन्हों दान महान ॥ फिरि गो शङ्खतीर्थ मतिमान। जहं वर शङ्ख सुमेरु समान ॥ सरस्वती के तटपै जौन। सेत शैल सम सुषमा भौन ॥ जहं बिलसैं सुर अप्सर यक्ष। नहिं मनुष्यको गमन प्रतक्ष ॥ तहं दै धेनु बसन मणि भूरि। गयो द्वैत वन आनंद पूरि ॥ पूजि मुनिन तहं अति सुख पाय। विप्रन कहं भोजन करवाय ॥ दै सुबरण मणि हलधर बीर। जाय सुरसती दक्षिण तीर ॥ गयो नागधन्वायल दक्ष। दानशील हलधर सह पक्ष ॥ जेहियल वासुकि पन्नगराज। कहं अभिषेक्यो सुमन समाज ॥ चौदह सहस बसत वहि यच। नहीं व्यालको भय कछु तच ॥ तहं दै द्विजन दान अधिकार। चले पर्वदिशि राम उदार ॥ अगणित तीर्थ करत तेहिओर। देत द्विजनकहं दान अथोर ॥ दरशन करत मुनिनको पर्म। गयो तहांलों सुमति सधर्म ॥ जहां जाय सुरसती असेग। पश्चिमसुख फिरि भई सवेग ॥ सोलखि बिस्मित ह्वै बलिराम। आयो नैमिषार तपधाम ॥ यह सुनि जनमेजय क्षितिपाल। कीन्ह्यों प्रश्न सुनो नरपाल ॥ सविधि बुझाय कहो सो विप्र। कत फिरि चलि सुरसतीसु क्षिप्र ॥ कत बिस्मित भो यदुकुल चन्द। सो सुनि कह्यो सुनीय अमन्द ॥ महाराज कृतयुग में पूर्व। नैमिषारके मुनि तप गूर्व ॥ होत दोयदश वार्षिक यक्ष। तेहि मधि जाय सुतप सरवक्ष ॥ भए यक्ष पूरण फिरि आय। सुरसतिके दक्षिणदिशि जाय ॥ अग्निहोच व्रत धरि रमणीय। सौमित किए कूल कमनीय ॥ तेहि सिमंतपञ्चक मधि चाहि। कीन्हें तप मख बरव्रत गाहि ॥ तिनके हित पश्चिमदिशि आय। गई पूर्व फिरि गिरा सचाय ॥ तहं करि बिप्रणको सतकार। विधिवत तृप्त कियो बहुबार ॥

दोहा ॥

फेरि तहांते राम चलि निरखत मुनिन अमन्द। सप्तसारस्वत तीर्थ मधि जातभयो कुलचन्द ॥
जहां मंजु मंकनक मुनि करत तपस्या तात। यह सुनि जनमेजय नृपति किए प्रश्न अवदात ॥
तीर्थ सप्तसारस्वती भो केहिहेत ललाम। तप निधि को मंकनक मुनि कहो सुमुनि तपधाम ॥

सोरठा ॥

वैशम्पानि मुनीश यह सुनिकै नृपसों कह्यो। जनमेजय अवनीश सुनो प्रश्न जो तुम किए ॥

रोला छन्द ॥

सुप्रभा अरु काञ्चनाक्षी अरु विशाला मंजु। अरु सुरेणु मनोरमा विमलोदका कृत रंजु ॥
ओघवति ए नाम तिनके सुनो भूभरतार। सुनो अब सो कहतहौं जिमि भईं प्रगट उदार ॥
किये पुष्कर क्षेत्रपै विधि यक्ष अति अभिराम। किये विधि तहं सुरसतीको स्वर्ण आनंद धाम ॥ भई तेहिथर प्रगट भूपति सुरसतीकी धार। नाम ताको सुप्रभा भो चारिफल दातार ॥ सुनो नैमिष विपिनिमें बसि ऋषिनको समुदाय। सुरसतीको कियोसुमिरण ध्यान धरि चितलाय ॥ तेज तप निधि मुनिनके उपकार हेत अनूप। काञ्चनाक्षी सुरसती तहं भई प्रगटित भूप ॥ ऋषिन सह गये भूप कीन्हों परम पावन यच। नृप विशाला नाम सुरसति भई प्रगटित तच ॥ कियो उद्दालक परम तप सुरसतीको चाहि। भई प्रगटित तहां

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहत मनोरमा सब ताहि ॥ भूपकुरु कुरुक्षेत्रमें नृप कियो अनुपम यज्ञ । भई प्रगटित सुरसती तहं ओघवती सरबज्ञ ॥ दक्ष कीन्हें यज्ञ गंगा द्वारपै सविधान । सुरसती तहं भई प्रगट सुरेणु नाम महान ॥ किये हिमवत निकट ब्रह्मा परम उत्तम याग । तहां बिमलोदा सुरसती कढ़ी पूरण भाग ॥ भई एकीभूत तेहियल देवि सातौ रूप । सप्त सारस्वत भयो सो तीर्थ परम अनूप ॥ सुनो अब क्षितिपाल मुनि मंकनकको इतिहास । आपगामधि रहो मज्जन करत सो तपरास ॥ एक तरुणि दिगम्बरा तहं करतही असनान । देखि ताको गिरो मुनिको रेत परम अमान ॥ तुरित मुनि मंकनक लीन्हों कलसमें सो रेत । सप्तधा ह्वै कलसमें सो परो भूप सहेत ॥ तुरित प्रगटित भए तासों सात मरुत महान । बायुबेग सुबायु बल अरु बायुहो बलवान ॥ बायुमण्डल बायुज्वाला बायुरेत प्रबीन । बायुचक्र कुमार सतयो भयो अतिशै पीन ॥ भूप औरौ सुनो मुनिकी कथा अतिरमणीय । कियो चारु कुशाग्र सों क्षत पाणि में कमनीय ॥ गिरन क्षतसों लगो अनुपम साकरस तेहिकाल । देखि सो द्विज लगो निरतन गहे मोद बिशाल ॥ ताहि निरतत तासु तपबल पाय नृप तेहिठौर । थावरौ अरु जंगमौ सब गहे निरतन ठौर ॥ तिन्हें निरतत देखि सुरऋषि महा अनरथ जानि । जाय शिवसों कहे ताकहं समित कीबो मानि ॥ आइ तहं शिव कह्यो द्विज तुम नचत हौ केहि काज । शंभुसों तब कह्यो द्विज निज साकरसको राज ॥ कह्यो शिव तब बिप्रसों यह कौन अचरज साज । भाषि इबिधि अंगुष्ठ निजमें कियो क्षत गिरिराज ॥ गिरन तासों लगो हिम सो देखि द्विज गहि लाज । कियो अस्तुति शम्भुको ह्वै नाचिबेसों बाज ॥ तेजनिधि मंकनक इमि तेहि तृप्त करि बलिराम । द्विजन दै बहु दक्षिणा फिरि-चलो बरचस धाम ॥ फेरि उशनस तीर्थ गे बलगहे मोद महान । नाम जासु कपाल मोचन अर्थनाम प्रधान ॥ पूर्व जेहियल किये हो तप शुक्र महिमा भौन । किये मज्जन दान दीन्हें राम करि तहं गौन ॥ भूमिपति इतिहास यह सुनि प्रश्न कीन्हों फेरि । नाम तासु कपाल-मोचन भयो किमि कहु नेरि ॥ प्रश्न यह सुनि भूमिपतिसों कह्यो मुनि अनुमानि । भूप हमसों कहत हौतुम सुनो आनंदआनि ॥ जाय दण्डक बिपिनिमें जब कोशलापति राम । दूषनादिक असुर गणको कियो बध जय काम ॥ शीश काहू असुरको तब एक उड़िकै जाय । हो महोदर बिप्र ताको ग्रस्यो जंघा काय ॥ भयो आरत बिप्र वह तब छूटिबेके हेत । लगो तीरथ करन फिरि फिरि गहे बुधिबल चेत ॥

दोहा ॥

उशनतीर्थमें जाय सो सरस्वतीके बीच । करन लगो अस्नान तहं छूटि परो शिर नीच ॥
गतपीड़ा ह्वै बिप्रवह मोदि द्विजनपहं आय । उशनतीर्थकी निजदशा बिधिवतदयोसुनाय ॥
तेहि कपालमोचनकह्यो सो सुनि सुनि समुदाय । सोकपालमोचन भयो तातेसुनो सचाय ॥

स्वस्ति श्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे गदापर्वणिबलिरामतीर्थयात्राबर्णनोनामप्रथमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

नृप कपालमोचनबिमल तीरथमधिबलिराम । मुनिन संग निवशत भए एक रजनिअभिराम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

तहं बहुधन दै राम द्विजन पूजि अतिमोदसों । अंगारक तपधाम मुनिके आश्रम जातभे ॥
नृपसुत विश्वामित्र जहं तपकरि ब्राह्मण्य लहि । कीन्हें कला विचित्र सप्तऋषिनकेमरिसह्वै ॥

जयकरी छन्द ॥

तहं दै द्विजन दान अधिकाय । गे वक आश्रममें छविछाय ॥ जहं दालभ्य कियो तपपर्म । तहं पूज्यो विप्रन गुणि धर्म ॥ सुनि दालभ्य परम तप रास । सुनो एक ताको इतिहास ॥ मख हित मांगन पशु बहुरास । गे धृतराष्ट्र भूपके पास ॥ सुनिदालभ्य कह्यो नृप अच्छ । मखहित बहु पशु देहु प्रतच्छ ॥ सुनि नृप बोलो त्यागि उछाहु । मिलैं सतक पशुसो लै जाहु ॥ सो सुनि सुनि गुणि अति अपमान । गे आश्रम गहि क्रोध महान ॥ नृपको नगर विनाशन चाहि । पशु होमन लागे पण पाहि ॥ छीजन लगो भूपको ग्राम । तब चिन्तित ह्वै नृप अभिराम ॥ विप्रन बूझो ताको हेत । कह्यो हेत ते विप्र सचेत ॥ तब धृतराष्ट्र भूरि भय मानि । गे दालभ्य पास अनुमानि ॥ पग गहि कीन्हों विनय महान । कृपा कियो तब विप्र सुजान ॥ नृपके नगर वृद्धके काज । कियो हवन तब द्विज शिरताज ॥ बहुपशु दै आयोनृपगूर्व । वरधित भयो नगर जिमि पूर्व ॥ तेहि मुनिके आश्रम बलिराम । सरस्वतीके तट अभिराम ॥ विप्रन बहुधन दै सरवच्छ । गे जहं सुर गुरु कीन्हों यच्छ ॥ असुर नाग सुरगणको वृद्धि । चाहि मांस होमे सचि सिद्धि ॥ गज हय बसन अन्न दै तच । गे ययाति कीन्हों मख यच ॥ तहं दै विप्रन सुवरण भूरि । गे वशिष्ठआश्रम सुद पूरि ॥ विश्वामित्र सुरसतिहि शाप । दयो जहां भो शोनित आप ॥ सुनि जनमेजय कह्यो विचारि । यह इतिहास कहो विस्तारि ॥ वैशम्पायन सुनि यह बैन । कहत भए नृप सुनो सचैन ॥ सरस्वती सरिताके तीर । स्थानु किए हे तप गम्भीर ॥ स्थानु तीर्थभो ताको नाम । तबसों सुनो भप मतिधाम ॥ तेहिथरमें जुरि सुमन अनेक । अस्कन्दहि कीन्हें अभिषेक ॥ तहां तपत हे सुमुनि वशिष्ठ । तत्व विचारन मध्य प्रविष्ठ ॥ कछूदूर पै विश्वामित्र । रहे करत तप परम विचित्र ॥ ते युग ऋषि हिय भरे विरोध । ईर्षा धरे करत तप सोध ॥ लखि वशिष्ठको तेज अमान । कौशिक अमरष गहे महान ॥ करि आवाहन ओज बढ़ाय । सरस्वती कहं निकट बोलाय ॥ कह्यो गिरा मम शासन मानि । निज प्रवाहमधि करि अनुमानि ॥ ल्याउ वशिष्ठहि मम ढिग ताहि । बधो चहत हम निज जय चाहि ॥

दोहा ॥

दिव्य सरूपा सरितसो सुनियह मुनिकी बात । कहि न सकी कछु थिरिरही ह्वै अतिकम्पितगात ॥
सो लखि करि राते नयन कौशिक कह्यो सटेक । शीघ्र वशिष्ठहि ल्याउ अबकरु विलम्ब मति नेक ॥
यहसुनि सो युग मुनिनको गुणितपतेज प्रभाउ । गई वशिष्ठ मुनीश पहं विकल दूरि करि चाउ ॥
कह्यो जौन कौशिक कहो मुनि वशिष्ठ सों तौन । सुनि वशिष्ठ तासों कह्यो करौ तौन भय कौन ॥

सोरठा ॥

जौ न तासु यहबैन करिहौ देहै शाप तौ । यह सुनि सरित सचैन निज प्रवाहमधि धसि गई ॥

रोला छन्द ॥

समयलहि करिकूलकर्षण सरित मुनिपण मानि । धारमधि करिमुनि वशिष्ठहि चली लै अनुमानि ॥ धार मधि धरि चले मुनिवर करत अस्तुति तासु । गई सरिता मुनिहि कौशिकके निकट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लै आसु ॥ लखि बशिष्ठहि निकट कौशिक चले बधन उताल। ब्रह्महत्या बूझि सरिता भरी भीत बिशाल ॥ तब बशिष्ठहि पूर्वदिशि कहं दई शीघ्र बहाइ। देखि कौशिक दयो ता कहं शाप अति अनखाइ ॥ ठगो मो कहं होय ताते रुधिर तेरो बारि। भयो शोणित धार ताको शाप सुनिको धारि ॥ तहां आइ पिशाच राक्षस गहे मोद महान। नचत किलकत बसत तेहि थल करत शोणित पान ॥ कछूदिनमें तहां आए तीर्थ यात्रा हेत। बिप्र अगणित बेद मारग परम तेज निकेत ॥ तहांबिहरत राक्षसन लखि देखि सरिता रूप। बोलि सरितहि भए बूझत तासु कारण भूप ॥ कही सरिता तौन सो सुनि दुखित ह्वै सब बिप्र। लगे करन उपाय जाते शाप छूटै क्षिप्र ॥ लगेतप मख करन शिवहि अराधि रहि व्रतयुक्त। कछूदिनमें भई सरिता शापे अघसों मुक्त ॥ होय दुखित पिशाच ते सब बन्दि द्विजन सडौर। कहे अब हम कहां भोजन करब भमि सबठौर ॥ पिता गुरु गुरुबंधु आदिक गुरुनको अपमान। किए होत पिशाच सो सब करब अबका पान ॥ कहे द्विजन उच्छिष्ट भोजन लहैं भूत पिशाच। पान कचजल रुदनजल अरु शौचको जो बाच ॥ भाषि यहि बिधि कह्यो विप्रन सरितसों एहिभांति। इन्हैं तारौ सरित बरतुम परम पूरण कांति ॥ आनि सुनिमत कियो सरिता अरुण अपनो बारि। न्हाइ तामधि गए राक्षस स्वर्ग शुचि बपुधारि ॥ परम अनुपम तीर्थ गुण सो न्हाइ तहं सुरराज। ब्रह्म बध अति पापसों छुटि लसत सहित समाज ॥ भूप कीन्हों प्रश्न इमि फिरि सुनो तेजस मौन। ब्रह्म हत्या लह्यो कैसे शक्र कहिये तौन ॥ कह्यो सुनिवर शक्रके भय भागि नमुचि बिचारि। दुरो रश्मिन मध्य रविके तहां शक्र निहारि ॥ करत भो तब नमुचिसों हठि मित्रता सम्बन्ध। नमुचि तब सुरराजसों इमि भयो करत निबन्ध ॥ दिवसमें मति रातिमें मति अस्त्रगणके धार। बधौ मति तुम मोहिं सो सुनि शक्र करि स्वीकार ॥ समय हेरत रहो कबहूं परत कुहिरा चाहि। आप निधिको फेण गहि कै बधो बलसो ताहि ॥ शीष कटिकै नमुचिको लगि चलो पीछू तासु। भगे सुरपति लोक सब नहिं लह्यो कतहुं सुपासु ॥ गए बिधिके पास तब निधि दयो तेहि उपदेश। जाय सादर सुरसतो में गिरो त्यागि अदेश ॥ शक्र सो सुनि आय सादर परे अरुणाधार। ब्रह्मकुलभव मित्र बधको छुटो पातक चार ॥ नमुचिको शिर तहां परिकै लह्यो उत्तमलोक। परमपावन करन सो वह तीर्थ महिमा ओक ॥ जाय तहं बलिराम करि अस्नान दै बहु दान। सोमके वर तीर्थमधि भो जात धीर अमान ॥ राज सूय महान मख जहं कियो सोम उदार। अत्रिमुनि जहं भए होता बेदपारग अपार ॥ राजसूय सुयज्ञके जेहि भएके परभाव। युद्ध तारक भयो पीछू भयो अनघ अठाव ॥ सैनपतिको जासुमधि अस्कन्दकहं अभिषेक। सहित सुर ऋषि किए सुरपति बेदबिधि सबिवेक ॥ कथा यहसुनि कह्यो जनमेजय महीभरतार। अस्कन्द को अभिषेक भो किमि कहो सुमुनि उदार ॥ प्रश्न यह सुनि कह्यो मुनिवर सुनो भूपति तौन। यथा लहि अभिषेक शिवसुत कियो विक्रम भौन ॥ प्रथम अब अस्कन्द प्रभुको जन्म सुनिये भूप। फेरि क्रमसों सुनो ताको चरित चारु अनूप ॥

दोहा ॥

तेज अन्धुप्रभुको परो अग्निमध्य सुनु भूप। पावक सो नहिं सहि सको बरचस परम अनूप ॥
तज्यो सुरसरित मध्य सो गर्भ परम अभिराम। सहि न सकी सो सुरसरित गर्भ तेज तपधाम ॥
गंगा गिरि हिमवान पर तज्यो गर्भ अतिचण्ड। तहं बरधित भो गर्भसो तेजपुंज उद्दण्ड ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरस्तम्ब पर ज्वलित लखि मारतण्ड सम गर्व । धीर धारि धारत भई धामिनि कृतिका सर्व ॥
पुचार्यिनि षट कीर्तिकनको गुणि प्रभाव सहान । षटमुख ह्वै स्कन्द प्रभु कीन्हों अस्तन पान ॥
कार्तिकेय ह्वै शैलपहं बरधित ह्वै भगवान । सुनि गन्धर्वनसों सुनत प्रिय अस्तुति अतिमान ॥
जातकर्म सुरगुरु कियो तासु आइ तेहिठौर । धनुर्वेद अरु वेदसब प्राप्त भए गहि गौर ॥
उमा उमापति गणन सह तहं आए तपधाम । सुमन रुद्र आदित्य अहि खग दानव अभिराम ॥
ब्रह्मा आए सुतन सह विष्णु शक्र सब और । चढ़ि विमान आए तहां गहे मोदको डौर ॥
तेजपुंज वह बाल प्रभु चलो शम्भुके पास । तदनु चले सब देवता निरखत प्रभा प्रकास ॥
तेहिक्षण गंगा अरु उमा पावकके भे मान । यहकाको सुत प्रथम अब कापहं जात सुजान ॥
तिनके मनकी समुझि सो बाल चारि वपु धारि । गयो चारि पहं चावसों चारु सुचार विचारि ॥
स्कन्द रूप गे शम्भुपहं विशाख उमाके गोद । शाख अग्नि पहं सुरसरित नैमेय प्रदमोद ॥
सो लखिकै ब्रह्मादि सब अति विस्मित भे भूप । तब विरञ्चिसों शिव कहे विधिवत वचन अनूप ॥
सबविधि देहु एहिबालकहं आधिपत्य अनुमानि । सुनिविचारकरिविधिकियोसेनापति सुखदानि ॥
करिसम्मत अभिषेकको विधि हरिहर सुर सर्व । किन्नर असुर यक्षऋषिसब दिगपति गन्धर्व ॥
हैमवती पावनि परम सरस्वतीके तीर । सरंजाम अभिषेकको सह सुरगुरु ऋषिभीर ॥
तहं सुरगुरुप्रभुहवनकरिकिएसबविधिअभिषेक । सुमणिमालहिमवानतहंस्कन्दहिदीन्हेंएक ॥
विष्णु इन्द्र आदित्य रवि रुद्र पितर वसु सर्प । सिद्ध साध्य लोकप सकल कीन्हें आशिष अर्प ॥
मित्र पितामह प्रजापति पुलह आदि ऋषि सर्व । नारदादि मुनि दिग्पसब मंगल बढ़े अखर्व ॥
सर्वलोक अरु सिन्धु सब सब गिरि सरिता सर्व । सर्वनाग सम्वत् सकल भे मोदित सब पर्व ॥
सब देवी अरु वेद सब सब ब्रह्माण्डज रूप । मुदित भए स्कन्दको लखि अभिषेक अनूप ॥
अभिषेकित स्कन्दकहं चतुराननत्रिपुरारि । चारिचारिअनुचर दए प्रबलप्रचण्ड विचारि ॥
शक्र सूर्य यम वरुण हरि अनुचर दीन्हें भूरि । विन्ध्यमेरु हिमवान ए दीन्हें आनंद पूरि ॥
विश्वकर्मा अरु दक्ष अरुधाता पूषा मित्र । मरुत सिन्धु गिरि वाद ए पार्षद करत अचित्र ॥
एहिविधि सबकोऊ दए अगणित पार्षद ताहि । दिव्यअस्त्रयुत दिव्य वपु दिव्य पराक्रम चाहि ॥
और असंख्यन सुभट गण कार्तिकेयके भूप । कुमुद पद्म आदिक गहे विविधि भांतिके रूप ॥
एकमुण्ड बहुमुण्ड युग कर पग बहु पग पानि । विविधिभांतिके पदनकेकहैं कहांलोंजानि ॥
विविधि भांतिके अस्त्रधर प्रबल प्रचण्ड अखेद । विविधि भांतिके वेषधर शोभित भेदाभेद ॥
तथा असंख्यन मातृगण तासु सैनिकाभूप । विविधिभांति आयुध गहे विविधिभांतिकोरूप ॥

सोरठा ॥

शक्ति अमोघ अमन्द अरुणपताका अमल अरु । शम्भुसुवन स्कन्द कहं दीन्हें सुरराज तहं ॥
दीन्हें आपु इशान भूरि भूतगणकी चमू । दीन्हें विष्णुमहान वैजयन्तिको माल वर ॥
दीन्हें गरुड़ मयूर वसन विरजसी गिरिसुता । अमृत धारसों पूर दयो कमण्डलु सुरसरित ॥
ताम्रचूड़ अभिराम वारुणास्त्र दीन्हें वरुण । कृष्णअजिन गुणग्राम कार्तिकेयकहं विधि दयो ॥

चौपाई ॥

यहिविधि सेनापति पद लहिकै । अभय होहु सुरगणसों कहिकै ॥ साजि सैन अतिबल सोंचढ़िकै । भिरो असुरसेनासों बढ़िकै ॥ कार्तिकेय अति गर्वित मनमें । कोटिन असुर वध्यो तेहि रणमें ॥ राक्षस लाख सहित भट भारी । तार ताहि भो बधत प्रचारी ॥ आठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्म सेनाको नायक। माहिष ताहि बध्यो दृढ़घायक ॥ भट शत अयुत सैन सहचारी। हो चिपाद तेहि बध्यो प्रचारी ॥ असुर खर्वपति बीर सहोदर। सदल बध्यो तेहि सुमिरि दमोदर ॥ कार्तिकेय अतुलित बल भास्यो। इबिधि असंख्यन असुर संहास्यो ॥ बलिको सुवन बाण रण तजिकै। दुरो क्रौंच गिरि वर मधि भजिकै ॥ स्कन्द शक्ति गिरिशिर तब मास्यो। उन्नत शृंग भस्म करि डास्यो ॥ तहं हतशेष असुर भय भरिकै। भगे समर तजि हाहा करिकै ॥ कार्तिकेय अति महिमा छायो। घने बिजय दुन्दुभि बजवायो ॥ मोदि सुमन-गण पूजन कीन्हें। करि सुप्रशंसा आशिष दीन्हें ॥ नृप यहिबिधि अभिषेक सुहावन। कार्तिकेयको भो मन भावन ॥ लहि अभिषेक कियो जो कारय। सो हम तुम्हें सुनायो आरय ॥ यह इतिहास चारिफल दायक। बर्धित करन तेज चित चायक ॥

दोहा।

तैजस नाम सुतीर्थ सो सुनो भूप तपधाम। भयो जहां स्कन्द प्रभुको अभिषेक ललाम ॥
पूर्वसुमन सबऋषिनसहतेहियल सहितबिबेक। सर्वसमुद्रपतिवरुणकहंकीन्हें करिअभिषेक ॥
सुनो भूप तहं एकनिशि रहिदै बिप्रन दान। अग्नि तीर्थ बलिराम गे आनंद भरे महान ॥
सुनो भूप जहं पूर्व भे गुप्त अग्नि भगवान। कीन्हों प्रगट बिरञ्चि फिरि करिकैयत्न महान ॥
यहसुनिजनमेजय कह्यो कहोबिप्रमतिभौन। भए अग्निकिमि गुप्त तहं प्रगट भए किमि तौन ॥
पूर्व अग्नि भृगुशापभय दुरे समीमधि जाय। प्रगट किएबिधिजायतहं भृगुको शापदुराय ॥

जयकरी छन्द ॥

तहां जाय करिकै अस्नान। दै बिप्रन कहं बिधिवत दान ॥ गो कौबेर तीर्थ बलिराम। पूरत बिप्रनको मनकाम ॥ जहं कुबेर करि तप सबिबेक। भए धनद लहिकै अभिषेक ॥ करिसो तीर्थ राम मतिमान। गए बदरपाचन अस्थान ॥ भारद्वाजकी सुता सकाम। श्रुता-बती नामा अभिराम ॥ इन्द्र होहिं ममपति एहिहेत। जहां उग्रतप कियो सचेत ॥ लखि अति भक्ति इन्द्र तेहि ठौर। बनि बशिष्ठ आए गहि गौर ॥ लखि महर्षि कहं बिप्र कुमारि। बोलत भई जोरि युग बारि ॥ शासन करौ देहिं हम तौन। हम चाहत हैं शक्रहि रौन ॥ यह सुनिकै सुरपति द्विजरूप। कहत भए यह बचन अनूप ॥ तप करि देह त्याग करि सर्ब। पावत है सुरलोक अखर्ब ॥ तुमकहं पांच बदर हम देत। तिन्हें करौ परिपाक सनेत ॥ इमि कहि इन्द्र बदर दै ताहि। इन्द्र तीर्थमधि बैठे चाहि ॥ अग्नि बारिसों तरुणि सुजानि। पचवन लगी बदर हित जानि ॥ ईंधन सञ्चित हो सब जौन। सो सब जरो न पाको तौन ॥ तब तिय महा शोचसों छाय। देत भई निज चरण लगाय ॥ चरण परे तबहूं गहिटेक। नहिंसो तिय रुष मोस्यो नेक ॥ तब करि कृपा धारि निजरूप। आए तहां शक्र सुनु भूप ॥ कहे कियो तुम तप जेहिकाज। पूरण भयो तौन तो राज ॥ मम पुर चलौ त्यागि सहदेह। मम संग भोगो पूरित नेह ॥ इमि कहि शक्र पूर्व इतिहास। तासों कहे सुनो मतिरास ॥ इत अरुन्धतीकहं तजि पूर्व। गे हिमवंत सप्तऋषि गूर्ब ॥ द्वादश बार्षिकको तेहि-काल। अनावृष्टि भो महा कराल ॥ अरुन्धती इत बरबत धारि। रहो करत तप सुखद बिचारि ॥ तहं शिव गहि द्विजरूप प्रशस्त। आए दायक सुफल समस्त ॥ सुनि पत्नी सों भाषे एक। हे बत धारिणि भोजन देऊ ॥ अरुन्धती बोली सुनि बैन। बिप्र अन्न आश्रम मधि है न ॥ करौ बदर भोजन सुनि एक। बोले शंभु चुरै एहि देऊ ॥ सो लागी चुरवन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि ढंग ॥ कहन लगे शिव कथा प्रसंग। ताहि चुरत बीतो दिन भूरि ॥ बरषे जलद गयो सुद पूरि। इतने में ऋषि तेज अतूल ॥ आए तहां गहे फल मूल। तिनसों कहे शंभु लखि धर्म ॥ तुम सबसों याको तप पर्म ॥

दोहा ॥

इमि कहिकै करि अति कृपा निजवपु गहि ईशान। अरुन्धतीसो कहत भे सुता मांगु वरदान ॥ यह सुनि कह्यो अरुन्धती देहु परम वर सर्व। याहि बदर पाचन कहै तीर्थ सुमन ऋषि सर्व ॥ एहि थलमें बसि तीनि दिन करै सु व्रत तप जौन। द्वादश वार्षिक तप किएको फल पावै तौन ॥

सोरठा ॥

एवमस्तु कहि चाहि शंभु गए निजलोक प्रति। भए प्रशंसत ताहि सप्तऋषीश्वर मुदित ह्वै ॥ तुम अति दुस्तर कर्म कीन्हे इत ताते सुनो। रहि निशि एक मधर्म अब सो फल लहि है सुजन ॥ यह सुनि सो तजि देह चढ़ि विमान गहि दिव्यतन। गई शक्रके गेह सुमन वृष्टि कीन्हे सुमन ॥

रोला छन्द ॥

भूप यह इतिहास सुनिकै किए प्रश्न प्रप्रन्न। सुता भारद्वाजकी सो भई किमि उत्पन्न ॥ प्रश्न यह सुनि कह्यो मुनि सो सुनहु नृप मतिमान। लखि घृताचिहि अत्रिसुतको गिरो रेत महान ॥ पत्रपुटमें लियो मुनि सो सुता प्रगटी चित्र। श्रुतावति मुनि तासु राख्यो नाम परम पवित्र ॥ बदरपाचन तीर्थमधि तपि गई सो सुरधाम। तहां सो चलि इन्द्रतीरथ गये श्रीबलराम ॥ जहां अगणित यज्ञ करिकै इन्द्र शतक्रतु ख्यात। तहां सो बलिराम गे जहं रामतीर्थ विभात ॥ जोति महि वज्रवार जेहिथल जाय श्रीभृगुराम। अश्वमेध सुयज्ञ अगणित कियो पूरण काम ॥ तहांसो बलिराम यमुनातीर्थ आए भूप। वरुण प्रभु जेहि ठौर कीन्हें राजसूय अनूप ॥ भयो देवासुर महारण जासु मखके भेव। लहे अतिशय खेद दानव असुर सिगरे देव ॥ पूजि विप्रन तहां श्रीबलिराम पूरण मोद। जात भे आदित्य तीरथ करत परम विनोद ॥ जहां मख करि अग्नि प्रभु भे ज्योतिपति रुचिधाम। पूर्व मधुकैटभहि जेहिथल वध्यो विष्णु सकाम ॥ पितर सुर गन्धर्व किन्नर यक्ष ऋषिगण सर्व। जहां मज्जन करि लहत भे परम सिद्धि अखर्व ॥ जहां देवल असित मुनि गहि गृहीधर्म अनूप। जलजदल जल भाव रहि सुखदुःखमें समरूप ॥ वेद आज्ञा करत लाए तत्वमें मन वृत्ति। गुणत ईश्वर नित्य की यह नटनि माया भृत्ति ॥ तहां जैगीषव्य मुनि गहि भिक्षु भेष अमन्द। गुप्त रहि तिमि चरत सर्पत जलदमधि जिमि चन्द ॥ जात आश्रम असितके जब भिक्षु भोजनकाज। देत तब ते ताहि भोजन यथाशक्ति समाज ॥ गयो इमि बहु काल तब युगबन्धु सुमुनि सचेत। गहि कमण्डलु गए नभपथ सिन्धु मज्जन हेत ॥ तहां देख्यो करत मज्जन भिक्षु ब्राह्मण तौन। गुणे मनमें भिक्षु वह इत कियो केहि विधि गौन ॥ न्हाय जलसों पूरि भाजन फेरि नभपथ आय। देखि आश्रममध्य विप्रहि दए विस्मय छाय ॥ एक दिन फिरि चले ऊरध लोक ते युग विप्र। तहां देख्यो भिक्षु ब्राह्मण जात आगे क्षिप्र ॥ पितृ आदिक लोक क्रमसो गए ऊरध यत्र। असित देवल भिक्षु विप्रहि लख्यो आगे तत्र ॥ जाय क्रमसो लोकमें पति व्रतनके मतिमान। लख्यो विप्रहि जात आगे भरो तेज महान ॥ जाय तहं ते लख्यो नहिं फिरि भिक्षु विप्रहि भय। तहां सिद्धन भए बूझत तासु कारण रूप ॥ सिद्ध तिनसों कहे जैगीषव्य सो तपओक। परम योगी योगविधिसों गयो विधिके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक ॥ तहां तो गति नहीं तुम उत सकौ गे नहिं जाय। सुनि पलटि ते फेरि बिप्रहि लख्यो आश्रम आय ॥ जानि जैगो षव्य ते ढिग जाय बिधिवत नौमि। जोरि युगकर कहत भे इमि सरस भाषा सौमि ॥ मोक्ष धर्म अनूप अब हम गहन चाहत तात। कृपा करिकै करहु सो उपदेश अति अवदात ॥ तिन्हैं जैगोषव्य चाहे देन पथ सन्यास। रुदन लागे करन तिनके पितर तब तजि आस ॥ रुदन सुनि ते तजे नहिं गृह रहे रुकि कछुकाल। फेरि गुणिकै लए तासों मोक्षधर्म विशाल ॥ असित देवल सहित जैगीषव्य की तेहिठौर। सुमन ऋषि गन्धर्व अस्तुति किए गहि गहि गौर ॥ तौनि पावक तीर्थमधि रहि एकनिशि बलिराम। द्विजन दै बहुदान गे जहं सोमतीर्थ ललाम ॥ तहां सों फिरि गयो जेहिथल कियो सुतप दधीच। जासु सारस्वत सुवन जो भयो सुरसति बीच ॥ बचन यह सुनि प्रश्न कीन्हों भूप आनद भौन। भयो जेहिबिधि जन्म ताको सुमुनि कहिये तौन ॥

दोहा ॥

बैशम्पायन प्रश्न सुनि बोले बचन रसाल। लखि दधीचिको तप महा भीति भरे सुरपाल ॥ जो अलंबुषा अप्सरा तासों कहे सटेक। सुनि दधीचिको तप करो भंग कला करि नेक ॥ रहे देव तरपण करत सुरसतिमध्य दधीच। मुनिमन मोहनि अप्सरा आई तहां न भीच ॥ देखि अप्सरहि गिरतभो मुनि दधीचिको रेत। सो गहि लीन्ही सुरसती मुनिहित करणिसचेत ॥

सोरठा ॥

गर्भ उदरमें धारि भयो प्रसव तब पुत्र लै। मुनिपहं जाय बिचारि कहत भई अति मोदसों ॥ यह तोपुत्र शुक्रांत लेहु गोदमें प्रेम गहि। इमि कहि सो वृत्तान्त कह्यो लह्यो मुनिरेत जिमि ॥

चौपाई ॥

सो सुनि सुनि अति आनद लहिकै। पुत्रहि लियो गोदमें गहिकै ॥ मूर्ध सूंघि अति आनंद लीन्हों। सुरसति कहं बहु आशिष दीन्हों ॥ फिरि यहि बिधि सुर सति सों भाख्यो। तुम मम सम्भव सुत अभिलाख्यो ॥ ताते सुत सारस्वत नामी। होय तुम्हार नाम अनुगामी ॥ सुरसति ऐसी बाणी सुनि कै। गई सुतहि लै निज सुत गुणि कै ॥ कछु दिन मैं सुर असुर उमगिकै। लरन लगे अति बलसों पगिकै ॥ तहं सुरपति नहिं जय बिधि देख्यो। बिधिहि मंत्रि तब इमि अवरेख्यो ॥ अस्थि दधीचि सुमुनि की पावै। ताहि ल्याय बर अस्त्र बनावै ॥ तौ ताकहं गहि बिक्रम अतिकै। बिजय लहै सब असुरण हतिकै ॥ यह गुणि शक्र आय मुद पागे। हाड़ दधीच सुमुनि सों मागे ॥ सुनि दधीचि अति उत्तम जाने। पर उपकार हेत अनुमाने ॥ सयतन हाड शक्र कहं दैकै। अक्षय लोक गयो यश लैकै ॥ लैसो अस्थिशक्र मन भाए। वज्र शक्र गुर गदा बनाए ॥ तिन्हैं प्रहारि असुर दल जीते। तीन लोक पति भए अभीते ॥ कछुदिन गए सुनो अरि धर्षण। बारह वार्षिक भयो अवर्षण ॥ तब सुरसति तटके द्विज रूरे। बिना अहार शोच सों पूरे ॥

दोहा ॥

पढ़े रहे हे बेद जो सो सब गयो भुलाय। समय पाय ते फिरि पढ़े सारस्वत तहं जाय ॥ द्विजबर साठि हजार कहं बेद पढ़ायो तौन ॥ सुवन सरस्वतिको भयो यहिबिधि महिमाभौन ॥ तहं करिकै अस्नान दै हेम रजत मणि भूरि। गए कुमारी जहंकरी तप अति आनद पूरि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

यहसुनि भूभर्तार किए सुमुनि सों प्रश्न फिरि। कहो तौनजेहि चार कियो कुमारी परम तप ॥

जयकरीछन्द ॥

सुनि यह प्रश्न सुमुनि सुदधारि। जनमेजयसों कहे विचारि ॥ हो कुनि गर्ग सुमुनि तप-भौन। सुता मानसिक जायो तौन ॥ कछु दिनमें मुनि करि तन त्याग। गयो स्वर्ग अतिपूरण भाग ॥ विप्रसुता सो पूरण रूप। अतितप तहां कियो सुनु भूप ॥ नहिं इच्छा सुखदायक नाह। ऊरध लोक चाहि मनमाह ॥ तप करि दीन्हो जन्म बिताय। भई वृद्ध जीरण सब काय ॥ तन तजिबे को कीन्हो डौर। आय कह्यो नारद मुनिमौर ॥ संस्कार बिनु है तपओक। कन्यहि मिलत न ऊरध लोक ॥ यह सुनि सो अति गही गलानि। कौन गहै अब मेरो पानि ॥ सो सुनि प्राकश्टंग तपधाम। तासों बोलो बचन ललाम ॥ एक निवन्ध करौ जौ मानि। तौ हम गहैं तिहारो पानि ॥ रमव एक निशि भरि भरि प्रेम। फेरि न कवहु रमव यह नेम ॥ यह निबन्ध करि मुनि सुखदानि। गह्यो वेदविधि ताको पानि ॥ निशि लहि सो वृद्धा अवदात। भई युवा ह्वै महा विभात ॥ भूषण बसन धारि छविछाय। रमी विप्र संग लाज विहाय ॥ गुण निवन्ध रतिसुख द्विजनाह। अति पछितात भयो मनमाह ॥ निशि बिताय करिकै अस्नान। मुनिसों कहि निवन्धको ठान ॥ ह्वै कै विदा त्यागि तन तौन। ऊरधलोक गई करि गौन ॥ तुम कीन्हे जो प्रश्न प्रकास। है ताको ऐसो इतिहास ॥ नृप ताही थलमें बलिराम। सुन्यो शल्यको बध अतिछाम ॥ तजि समन्त पञ्चकको द्वार। कह्यो मुनिनसों राम उदार ॥ कुरुक्षेत्रको फल है जौन। सानद सुमुनि कहौ सब तौन ॥ यह सुनिकै बोलो द्विजराज। सुनो रामसों सहित समाज ॥ है समंत पञ्चक यह पूर्व। विधिको उत्तर बेदी गूर्व ॥ कियो दिवौकस इत बहु शत्र। फिरि कुरुभूप राज ऋषि अत्र ॥ करि अतिकष्ट साधि तप पर्म। इत करप्यो सब तीरथ धर्म ॥ तब अनुमानि शक्र इत आय। भूपतिसों बूझे हर्षाय ॥ हे राजर्षि कहौ केहिकाज। है कर्षत सब भूमि समाज ॥ तब नृप कह्यो सुनो एहि हेत। हम कर्षत सब तीर्थ सनेत ॥ मरै इहा जो बिना प्रयास। ते सब करै स्वर्गको बास ॥ यह सुनि सुरपति करि अनुमान। कह्यो भूपसों सुनो सुजान ॥ व्रत करि जो इत तजै शरीर। कै रणमध्य मरै जो धीर ॥ लहै स्वर्ग सो गहि अहलाद। राखव उचित इतो मर्य्याद ॥

दोहा ॥

स्नान दान तप मख बरत करै जितो इत आय। तासु सहस गुणको लहै फल अमोघ अधिकाय ॥ परि समीरबश जाय उड़ि कुरुक्षेत्रकी धूरि। जेहिपरसै सोऊ लहै उत्तम गति सुद पूरि ॥ इमि कहि कुरु राजर्षिसों शक्रगए निजधाम। कुरुक्षेत्रको परम फल कहैं कहालों राम ॥ यहसुनिकै बलिराम तहं दै विप्रण बहु दान। चलि तहंसों फिरि लखतभे आश्रम शुभग महान ॥

सोरठा ॥

सो आश्रम बलिराम देखि कहतभे मुनिनसों। यह आश्रम अभिराम कहो कौनतपधामको ॥

जयकरीछन्द ॥

यह सुनिकै मुनि तपनिधि बोले। सुनो भूप इतिहास अतोले ॥ पर्व विषु इत वर तप कीन्हे। तप प्रभाव कहं गरिमा दीन्हे ॥ ऋषि साण्डिल्य विप्रकी तनया। ही श्रीमती नाम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति सनया ॥ ब्रह्मचारिणी सो इत रहिकै । करि तप पर्म धर्म व्रत गहिकै ॥ तन तजि गई स्वर्ग मतिधामा । यह ताको आश्रम अभिरामा ॥ फिरि तहंसों चलिकै हलधारी । गे सुरसतितट तीरथ चारी ॥ तहं अन्हाय संध्यादिक करिकै । मुनिन संग बैठे मुद धरिकै ॥ तेहिक्षणमें तहं नारद आए । बिधिवत पूजि राम बैठाए ॥ भे मुनिसों बूझत गुणि मनकी । कहौ दशा कुरु पाण्डव रणकी ॥ यह सुनिकै बोले मुनिनारद । बधि गे अगणित युद्ध बिशारद ॥ कहैं कहालों चलि सब देखो । भावी अवशि होति अवरेखो ॥ एहिक्षण भीम सुयोधन भिरिकै । गदायुद्ध बितरत हैं थिरिकै ॥ अब गुरता युग शिष्यन केरी । चलिकै लखौ करौ मति देरी ॥ सुनि बल भए बिदा मुनिगणसों । जाऊ द्वारिका कहि निज जनसों ॥ गिरिते उतरि सुरथपर चढ़िकै । चले युद्धथल बनते कढ़िकै ॥ सुरसति सरितहि हिये सराहत । गे जहं रहे कृष्ण रण चाहत ॥

दोहा ॥

गए उहां बलिराम तब जो वार्त्ता भो भूप । सो सिगरो प्रथमहि कह्यो संजयबचन अनूप ॥

स्वस्ति श्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे गदापर्वणिबलिरामतीर्थयात्रावर्णनोनाम द्वितीयोऽध्याय: ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

संजयके मुख रामको सुनि आगम तेहिठौर । कहत भए धृतराष्ट्र नृप गहे मोहको डौर ॥ संजय जब रणभूमि मधि आए श्रीबलिराम । भीम सु योधन किमि लरे तबसो कहु मतिधाम ॥

चौपाई ॥

सुनि धृतराष्ट्र भूपकी बाणी । कहत भए संजय अनुमानी ॥ नृपते उभै बीर रणचारी । गदा पाणि गिरिवर सम भारी ॥ सिंह समान सरस बलभारे । गर्जत जिमि मतंग मतवारे ॥ दोऊ दोउन के वधिबेकी । करत प्रतिज्ञा जय सधिबेकी ॥ बढ़ि बढ़ि लागे गदा प्रहारण । प्रबल प्रचण्ड प्रभाव प्रचारण ॥ फिरि अपसव्य सव्य गति गहि गहि । मारु बचाउ न बाचा कहि कहि ॥ मारैं गदा चपल कर करि करि । टारैं गदा गदा पर धरि धरि ॥ दोऊ गदा गातपर सहि सहि । बाहैं गदा क्रोध सों दहि दहि ॥ कूदि दूरि है फिरि फिरि झपटैं । गदा प्रहारण करि करि दपटैं ॥ गदा प्रहारि द्वैक पग हटि हटि । दोऊ गदा प्रहारैं दटि दटि ॥ दोऊ चपल प्रबल अरु पायल । युद्ध कुबीले अतिकुर कायल ॥ गदा युद्ध हलधरसों सीखे । गदायुद्ध बिदमें गुर लीखे ॥ दोऊ दोउनको बध इच्छे । लरत गहे अति सौ हति रीछे ॥ दोऊ गदा गातमधि मारैं । दोऊ गदा गदासों टारैं ॥ लगे दुहुनके गदा गदासों । कढ़े उतंग फुलंग अदासों ॥ भरे रुधिर तन दोऊ कोहे । पुष्पित किंसुक तरु सम सोहे ॥

दोहा ॥

एहि प्रकार लरिकै तहां ह्वै अति समित नरेश । दोऊ योधा दूरिह्वै खरे भए हरि भेश ॥ रहि मुहूर्त फिरि बढ़ि भिरे दोऊ सिंह समान । गदायुद्धकी घातसों लागेलरन अमान ॥ गदा युद्धके मार्गजे तिन मार्गनके डौर । लरत भए दोऊ सुभट गहि अति गुर्ता गौर ॥ गत प्रत्यागत आदि करि मण्डल बिबिध बिचित्र । घोरयुद्ध तहं करत भे दोऊ सुभट अमित्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि मोक्ष प्रहारण परिवारण अति चण्ड। अभिद्रवण आक्षेप अरु अवस्थान उद्दण्ड ॥ उपन्यस्त अपन्यस्त अरु संविग्रह दै आदि। गदायुद्ध अस्थान सों करि करि लरे प्रमादि ॥

रोला छन्द ॥

भए तहं अति करत विक्रम उभै योधा धीर। सहि परस्पर गदा गरुई गणत नेकु न पीर ॥ गरजि गरजि अखण्ड गति गहि उभै वीर उदण्ड। करत चालन दोरदण्डन चपल अतिशै चण्ड ॥ सव्य कोउ अपसव्य फिरि जो सव्य सो अपसव्य। फिरत वाहत गदा गरुई वीर भाभरि भव्य ॥ शब्दसों भरि दए अब्दहि स्तब्ध भे नहिं नेक। टूटि टूटि अचूक वाहत गहे बधको टेक ॥ दृच वासव सरिस दोऊ लरे नृप तेहिठौर। वज्र सम वर गदा वाहत गहे अनुपम डौर ॥ भीम भारीगदा मास्यो तौन सहि तो पुत्र। गदा मास्यो भीमके शिर राखि जयसों सुत्र ॥ गदा लागे शीशसों भो नेकु व्यथित न भीम। तजत भो तो तनय नृप पहं गदा परम अधीम ॥ ताहि दीन्हों व्यर्थ करि तो तनय तजि अस्थान। गरजि मास्यो भीमके उर गदा परम अमान ॥ देखि ऐसी चपलता तो तनयकी तेहिकाल। भए पाण्डव व्यथित मनमें सहित सब पाञ्चाल ॥

दोहा ॥

नृपतेहिक्षणअतिक्रोधकरि गर्जिभीम भटचण्ड। तोसुतके वखिआनमधि मास्यो गदाउदण्ड ॥ गदालगे ह्वै मोहवश धरि पृथ्वीपरजानु। रह्योअचल ह्वै भुवनतो जिमिगिरिकै गिरिभानु ॥

सोरठा ॥

यहिविधि भूपहिदेखि हंसत भए पाञ्चालसब। चेतिसुयोधन तेखि भिरो भीमसोंगरजिकै ॥

चौपाई ॥

गरजि गरजि फिरि दोऊ भिरिकै। घोरयुद्ध कीन्हें तहं थिरिकै ॥ चक्र समान चपल ह्वै गतिसों। दोऊ लरे भरे रिसि अतिसों ॥ दोऊ प्रबल प्रचण्ड उकाढ़े। हनि हनि हनत गदा अति गाढ़े ॥ विविधि भांतिसों गात बचावैं। करैं कुघात घात जहं पावैं ॥ भीमगदा तो सुतके उरमें। समय ताड़ि ताड़त भो तुरमें ॥ लागे गदा गिरो नृप तैसें। पुष्पित साल वायुवश जैसें ॥ लखि सब पाण्डव गण अति हरषे। मोदित सुमन सुमन तहं बरषे ॥ तुरित चेति भूपति भो ठाढ़ो। सरते उठै द्विरद जिमि बाढ़ो ॥ भिरो वृकोदरसों फिरि राजा। भो अति चिन्तित शत्रु समाजा ॥ भूप तहां अति तुरता धास्यो। गदा भीमके उरमधि मास्यो ॥ गिरो भीम तब मोहित ह्वैकै। अति पीड़ित भे पाण्डव ज्वैकै ॥ चेति भीम फिरि जयसों रतिकै। भिरो भूपसों विक्रम अतिकै ॥ नृपति युधिष्ठिर गुणिके मनमें। केशवसों बूझे तेहिक्षणमें ॥ इनमें न्यून अधिक को कहिये। यह सुनि कृष्ण कहे जो सहिये ॥ है उपदेश तुल्य युग जनकों। बलमें अधिक भीम सब गणकों ॥ गदा युद्धके दीह जतनमें। अधिक सुयोधन शत्रु हतनमें ॥

दोहा ॥

भीम लरै जौ न्याय तजि बधै याहितौ भूप। नातरु भीमहि बधिहि यह भूप भयानकरूप ॥ प्रबलशत्रुसोंमिलतजय करि माया तजिन्याय। लह्यो दृत्तसों शक्रजय मायाबल अधिकाय ॥ एहिविधि के शठ शत्रु सों एहि प्रकार जयपाय। भूपति कोऊ करत है द्वन्द्वयुद्ध गहि न्याय ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

कह्यो सभामैं जौन ऊरू तोरण भूपकी । भीम करैं अब तौन नहिं अधरम पाल्लव बचन ॥

चौपाई ॥

ऐसे बचन कृष्ण के सुनि कै । बीर धनञ्जय मनमैं गुणि कै ॥ तकि रहि जुरै डीठि पणि धरिकै । कह्यो भीम सों संज्ञा करिकै ॥ बाम ऊरूमैं गदा प्रहारो । बधि सुयोधनहि बिजय सुधारो ॥ संज्ञा जानि भीम पण लैकै । लरत भयो बधमैं मन दैकै ॥ गदा युद्धमैं परम बिचक्षण । लरत सुयोधन करि निज रक्षण ॥ खेलत खरे खेलारी दोऊ । देखत खेल खरे सब कोऊ ॥ बिबिधि भांतिकी घातैं करि करि । लरे अनेक भांतिसों चरि चरि ॥ गगन गदन गरजनिकी धुनिसों । पूरित होत गयो दश गुणिसों ॥ लागै गदा गात पर तड़ तड़ । बोलै बड़ी कवचकी कड़ कड़ ॥ करि अस्थान भेद चरि अड़दै । मारैं गदा गदापर धड़दै ॥ कबहू लरैं चक्रसम फिरिकै । कबहूं गहैं बक्रगति भिरिकै ॥ कबहूं गरजि उछलि ह्वै ऊरध । गद प्रहारि करैं तकि मूरध ॥ परम निसाक हांक दैदैकै । हनैं बचावैं गति लैलैकै ॥ दोऊ दोउन को वध चाहत । अतुल पराक्रम नद अवगाहत ॥ करदम भरे महिष युग जैसे । लरैं लसे तहं युग भट तैसे ॥ सिंह सिंह वृष वृष गज गजसों । लरैं लरे तिमि युगभट सजसों ॥

दोहा ॥

एहिप्रकारलरि समितह्वै छूटिघरिक फिरिजूटि । गरजिगरजि लागेलरनउभैसुभटजयऊटि ॥
गदा चलायो भीम तेहि टरि तो तनय बचाय । हन्यो भीम के गात मैं गदा सिंहसम जाय ॥
लगे गदा कछु मोह गहि कीन्हें गदा उकाढ़ । डीठि डीठि कै नीठिकै भीमगयो रहिठाढ़ ॥
तोसुत जान्यो है गहे गदा हननकी घात । ताते नहिं मास्यो रह्यो तकत गदा को पात ॥

सोरठा ॥

क्षणमैं चेति अमान भीमगदा वाहत भयो । किए कठिन घमसान एहि प्रकार दोऊ सुभट ॥

रोला छन्द ॥

भीम बिक्रम भीम तैसो भीम बिक्रम भूप । करि समरण्डल लरे वृत्रासुर अखण्डल रूप ॥
कूदि चाह्यो भूप मारण गदा ताके गात । भीम तौलों गदा मास्यौ जांघ मैं लहि घात ॥
वज्रसम सो गदा लागत गई ऊरू टूटि । गिरो महि पर भूप मूर्च्छित गयो धीरज छूटि ॥
भयो उलकापात तेहिक्षण कह्यो भीषम बात । भए बर्षत पांशु शोणित करण अति उत-
पात ॥ यक्ष भूत पिशाच राक्षस किए नभमैं सोर । गृध्र बायस आदि पक्षी किए भीषम
रोर ॥ देखि असगुण महा शङ्कित होत भे तेहिकाल । जानि कछु भवितव्य पाण्डव सकल
अरु पाञ्चाल ॥ सुमन ऋषि गन्धर्व किन्नर गए निज निज धाम । कहत परम बिचित्र भारत
युद्ध भो अभिराम ॥ भीम दुर्योधन नृपतिको युद्ध वर्णत भूरि । सिद्ध किन्नर आरि सुरगण
गए आनंद पूरि ॥ केहरीको बधो मत्त मतंग सम तेहिठौर । परो भूपति भीम तासों
कहत भो एहि डौर ॥ सभामैं धन जीति कीन्हे हास्य जो बहुवार । द्रोपदीको कियो अति
दुर्दशा अंसुकहार ॥ आजु ताको लहौ फल तुम भीम एहिबिधि भाखि । कहत भो इमि
बामपद तल शीश उरपर राखि ॥ सभामैं सह बन्धुतो कहं बधन भाष्यो जौन । मारि क्रमसों
आजु पूरण कियो हम सो तौन ॥ भूमिपतिके शीश पहं तेहि चरण राखे देखि । भीम
अनुचित करत भाष्यो धर्म भूपति तेखि ॥ बन्धु भूपति परम मानी परो बिगत सहाय ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महापातक करत राखत तासु शिरपर पाय ॥ जियत लों है बैर बैरन मरे करत सुजान। करण हम कहं परी इनकी क्रिया सहित विधान ॥ भाषि एहिबिधि धर्म भूपति तजत चख सों वारि। नृप सुयोधन सों कहत भे शोच अतिशै धारि ॥ भूमि धनको लोभ गहि परि मोहवश तुम तात। किए अनुचित कर्म ताते लहे इमि महिपात ॥ गए ताते बधे सुत हित बन्धु साथी सर्व। एक तुम रहि परे एहिबिधि खोइ विक्रम गर्व ॥ बड़ो दुख नहिं तुम्हैं तुम तौ भए तनतजि पार। हमैं भोगन परो अब यह शोक निरय अपार ॥ भूरि बिधवनके रुदनको सुनव मेरे भाल। लिखे हो कर्त्तार तिनको सुनव शाप कराल ॥ ऊबि ऊबि उसास लै लै भाषि इमि क्षितिपाल। रुदत भे चिरकाल लों तहं गहे शोक विशाल ॥ कहे नृप धृतराष्ट्र तेहिक्षण रहे तहं बलिराम। भीमको लखि युद्ध अधरम कह्यो कछु बलधाम ॥ कहे संजय राम सों लखि क्रोध करि अतिमान। भए धृष्टत भीम कहं कहि बचन सहित विधान ॥ गदायुद्ध विशालको है शास्त्रमें यह लेख। गदा मारब उचित नहिं अधअंगमधि सविशेख ॥ भाषि इमि हल पाणि मधि लै चले मारण ताहि। कृष्ण बारण किए तब कहि बचन ऐसे चाहि ॥ मित्र आपन मित्रको जो मित्र तिमि अरि जौन। तिन्हैं मानव मित्र अरि निज वृद्ध हित मतिभौन ॥ पितृभग्नी पुत्र अप्रिय मित्र मम अवदात। मित्र इनको मित्र मम अरि शत्रु मम हे तात ॥ सभामधि हो भीम कीन्हे बर प्रतिज्ञा एक। तोरिहौं मैं जांघ तेरी गदा मारि सटेक ॥ भीम पाल्यो वचन निज नहिं कियो अधरम नेक। वचन पालन करव उचिहि परम धर्म बिवेक ॥ दिए हो मैत्रेय इनकहं शाप ऐसो पूर्व। भीम ऊरु तोरि हैं तो गदा हनि अतिगूर्व ॥ भयो सो तुम तजौ रिसि सुनि क्रोध तजि बलिराम। बिदा ह्वै चढ़ि सुरथपर गे द्वारिका मतिधाम ॥ कृष्ण चिन्तित देखि धर्महि कहे करि अनुमान। भूप चिन्तित होत कत लहि हर्षदिन मतिमान ॥ धर्म बोले कृष्ण हम गुणि दए शोच बिहाय। भीम गुणि कृतकर्म ताको धस्यौ शिरपर पाय ॥ भीम भूपहि सोम लखि ढिग जाय युगकर जोरि। कह्यो शत्रुहि बध्यो हम जो दीह ऊरु तोरि ॥ भूप सो तो भाग्यको अरु धर्मको अधिकार। लहि अकण्टक भूमिको अब करौ भोग उदार ॥ नृप युधिष्ठिर कह्यो केशव जासु संग सहाय। औशि पावै विजय सो इत कौन अचरज भाय ॥

दोहा ॥

यहसुनिकैफिरिकहतभोशोकाकुल क्षितिपाल। नृपबधलखिकाकरतभेसब शृंजयपाञ्चाल ॥
यहसुनिकै संजयकह्योसुनोभूप तेहिकाल। बिहंसिबिहंसि बलकतभएसब शृंजय पाञ्चाल ॥
कितने टङ्कारत धनुष बोलते गर्वित बैन। किते बजावत शङ्ख अरु किते भेरिलहि चैन ॥
किते प्रशंसत भीमकहं किते धर्मको भाग। किते प्रशंसत केशवहि गहे परम अनुराग ॥

सोरठा ॥

तेहिक्षणकृष्णबिचारि नृपति युधिष्ठिरसोंकहे। निजकृतकोफलधारि बधौगयोयहमूढ़शठ ॥

चौपाई ॥

गुरु गुरुजन को कह्यो न मान्यो। भरो लोभ निज स्वारथ जान्यो ॥ बीस बिस्वे अधरम उर आन्यो। दुष्टनके मतको पग ठान्यो ॥ यहि तबहीको बधो बिचारो। नृप मति गुणो आजुको मारो ॥ हठ गहि कर्म कियो शठ जैसो। आजु सबन्धु लह्यो फल तैसो ॥ शोचन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग न यह रणचारी। इतसों चलो धर्मपथ धारी ॥ कृष्णचन्द्रकी सुनि यह बानी। सहि न सको तो सुत अभिमानी ॥ धरि धीरज उठि बैठि यतनसों। कहत भयो यदुवंश रतनसों ॥ तो मातुल पितु सेवक मेरो। गोपगेह वर्धित तन तेरो ॥ तोहि न लाज लगत इमि बोलत। मोहि मरो गुणि निज मति खोलत ॥ अधरम करिबो सूचित करिकै। मोहि बधायो तूं अघ भरिकै ॥ पण्ड शिखण्डिहि आगे धरिकै। भीष्महि तूं बधवायो छरिकै ॥ गज बधाय द्विजसुत बध कहिकै। द्रोणहि बधवायो छल गहिकै ॥ कर्ण अमोघ शक्ति जो पाये। सो राक्षस पर व्यर्थ कराये ॥ व्यर्थ निरायुध अभुज अदायो। भूरिश्रवहि तुमहि बधवायो ॥ बाणरूप पन्नगसुत धायो। तेहि कटाय अर्जुनहिं बचायो ॥ महिते चक्रनिकासत गहिकै। कर्णहि तूं बधवायो कहिकै ॥

दोहा ॥

इतनेअधरम तुम किये उन्हैं कराये सीखि। अधरमयापत हमहिपर करिअधरमजयईखि ॥
भीष्म द्रोण आदिक जिते रणमें मरे अभर्म। कारण ताको कठिन है तो छल कपट कुकर्म ॥
मांगे दए न पाण्डवन पिता अंशकी भूमि। हमबुझाय बिधिवत तुम्हैं गए नाश गुणिधूमि ॥

चौपाई ॥

तुमही भीमहि जहर पियाए। राखि लाह गृह आगि लगाए ॥ किए दुर्दशा द्रुपद सुताकी। एक बसन रजुधर्म युताकी ॥ करि अधर्म रचि छलके पासे। हरि सरबस फिरि बिपिनि निकासे ॥ अर्जुन सुतहि अकेलो लहिकै। बधे निलज बहु सुभट उमहिकै ॥ ताते बधे गए तुम ऐसे। भो जगको क्षय इते अनैसें ॥ ऐसें बचन कृष्णके सुनिकै। बोलो नृपति सुयोधन गुणिकै ॥ प्रबल अरिष्ट करिकै बनबासी। भोग्यो सर्व भूमि सुखरासी ॥ इच्छित महि धन मिचन दीन्हों। जेहिक्षण जौन रुचो सो कीन्हों ॥ जिमि सुरगण मधि सुरपति भ्राजत। तिमि हम हे नृपगण मधि राजत ॥ शक्र लहत सुख जौन अरोगे। हम सो सकल भूमिपर भोगे ॥ इबिधि भोगि रणमें तन त्यागत। नहिं दुख सोच लेसुको पागत ॥ नहिं बधि सके पाण्डवन रणमें। इतो शोच पूरित मम मनमें ॥ सुनि भूपतिकी ऐसी बानी। बर्षे सुमन सुमन सुखदानी ॥ लखि यहिबिधि पूजन तो सुतके। विस्मित भए लोग सब उतके ॥ भीषम कर्ण द्रोण धनु साधन। भूरिश्रवा अरु नृपति सुयोधन ॥ इनको बध अधरमसों जानी। रहे शोचि उतके भटज्ञानी ॥

दोहा ॥

सोगुणिकैकेशवकहे जौ एहिबिधिकेकर्म। करिउनकोबध होतनहिं तौ न मिलतजय पर्म ॥
इमि कहि मोदित करि भटन कृष्ण कृपाके ऐन। शयनहेत डेरन चलन कहे पाण्डवीसैन ॥
धृष्टद्युम्न युगबन्धु अरु द्रोपदेय सब भाय। निज निज डेरन जात भे जे हतशेष सचाय ॥
पांचै पाण्डव सात्यकी सहित आपु कंसारि। दुर्योधनके बारुगृह आवत भए बिचारि ॥

जयकरी छन्द ॥

दुर्योधनके डेरन आय। पाण्डव सहित कृष्ण गहि चाय ॥ कहे पार्थसों धनुष तुणीर। लै पहिले उतरो तुम बीर ॥ सुनि लै धनु तुणीर अभिराम। उतरे प्रथम पार्थ मतिधाम ॥ फेरि सुरथ ते घोरे छोरि। उतरे कृष्ण कुशल बिधि जोरि ॥ भे ध्वजस्थ कपि अन्तरध्यान। गयो भस्म ह्वै सुरथ महान ॥ तब कर जोरि पार्थ मतिभौन। बूझत भे हो कारण जौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशव कहे सुनो सो शास्त्र। द्रोण कर्णके वर ब्रह्मास्त्र ॥ नितसों भस्मित हो रथ एह। मम प्रभावसों बचो सनेह ॥ अब रणकर्म पूर्ण भो जानि। कियो विसर्जन हम अनुमानि ॥ ताते भो अब भस्मा शेष। पारथ याको इहै विशेष ॥ इमि कहि केशव करत बिनोद। मिले युधिष्ठिरसों गहि मोद ॥ कहे भाग्य बश दैवाधीन। लहै विजय बधि अरि अतिपीन ॥ बन्धुन सहित कुशल तुम भूप। पाए विजय भाग्य अनुरूप ॥ यह सुनि बोले धर्म अगर्व। प्रभु तो कृपा बचे हम सर्व ॥ भीषम द्रोण कर्णकहं मारि। विजय दयो तो कृपा मुरारि ॥ यह सुनि कह्यो रुक्मिणी रौन। अब करतव्य करो सब तौन ॥ अब यहिनिशि मधि रहौ सयत्न। रक्षत रहैं पार्थ भट रत्न ॥ रहि कछु क्षण सब पाण्डव बीर। जात भए फिरि सरितातीर ॥ जाय तहां नृपधर्म सनेम। कृष्णचन्द्रसों कहे सप्रेम ॥ सादर गांधारीके पास। जाय आप करिये आश्वास ॥ सुनि दारुकिसों रथ सजवाय। कृष्णचन्द्र तहं गए सचाय ॥ यह सुनि जनमेजय क्षितिपाल। बूझे कहौ विप्र मतिआल ॥ कृष्णहि गान्धारी के तीर। भेज्यो धर्म सुमति गंभीर ॥ यामें किए भेद कछु भौन। कहौ प्रगट करि कारण तौन ॥ यह सुनि कह्यौ सुमुनि मतिमान। सुनो हेतु सो भूप सुजान ॥ गुण्यो धर्मभूपति मनमांह। करि अधर्म गो वधि नरनांह ॥ गान्धारी सुनि गहि सुतशोक। क्रोध अग्नि भरि मानसओक ॥ दुसह शाप दै अनरथ जोहि। भस्मित करिहि बन्धु सह मोहि ॥ यह बिचार करि भूप सचेत। प्रथमहि क्रोध समनकेहेत ॥ कृष्णचन्द्र कहं सविधि प्रशंसि। भे जे तहां मंत्र अवतंसि ॥ रथ चढ़ि केशव गहे सनेह। गे धृतराष्ट्र भूप के गेह ॥ रथते उतरि कृष्ण शुभभेग। गए जहां धृतराष्ट्र नरेश ॥

दोहा ॥

लखिशोकाकुल दम्पतिहि करि अभिवाद सुजान। गहि सुपाणिधृतराष्ट्रकोरोदन किएमहान॥
करि मुहूर्तलों रुदन फिरि वारि मांगि मुख धोय। कहन लगे धृतराष्ट्रसों वचन शान्ति रसमोय ॥
भूपति दृढ़ सुजान तुम जानत शास्त्र अनूप। समय पायकै होति मति भावी के अनुरूप ॥
किए पाण्डवनको जितो तोसुत नृप अपकार। सो सब तुम जानत गुणो कस न होइ संहार ॥
किए द्रोपदीकी अपति दिए विपिनिको वास। तहां लहे वै जौन दुख सो गुणि उपजत त्रास ॥
युद्धयोग लखि आय हम कह्यो बहुत समुझाय। पांच ग्राम मांगे तऊ दए न तुम क्षितिराय ॥
भीष्म द्रोण कृप विदुर अरु सोमदत्त बाल्हीक। कितो कह्यो मान्यो न तुम गहि कुमंत्रकी लीक॥
भूपति दोष न आपको काल लेत हरि ज्ञान। होनीके अनुसार मति उपजति और न आन॥
ताते दोष न पाण्डवनको कछु करौ विचारि। प्रथम भई मति आपकी होनीके अनुसार ॥
नतरु पण्डुके सुवनको हरि सरवस एहि रीति। मांगे दए न भूप तुम पांच ग्राम करि प्रीति॥
सुवन पण्डु से बन्धुके भरे भूरि गुण सर्व। ताहि निकासे भूप तुम हरि सरवस करि सर्व ॥
करि अतिदुख फिरि समय लहि ह्वै सपक्ष सह सैन। कुल रक्षण हित ग्राम कछु मांगे वै मतिऐन॥
सोऊ तुम दीन्हे नहीं गहि भावीको भाव। ताते उनको दोष कछु मति मानो तजि चाव ॥
गुणि भावी कहं प्रबल अब धीर धरौ क्षितिपाल। मृत्युलोक यह प्रगट है सबकहं कर्षत काल ॥
इमि कहिकै गान्धारजा सों बोले यदुराय। अब धरौ तुम धीर नहिं विधि लिपि मेटी जाय ॥
तुमहूं नृप दुर्योधनहि कितो कही समुझाय। एक न मान्यो कालवश विधिसों कहा बसाय॥
तातें धीरज धारि अब सहो शोकको दाप। पण्डुसुतनके नाशको मति आनो उरपाप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम चाहो तौ लोक सब करौ भस्म सबिधान। पर अब कुल रक्षण करब उचित करो अनुमान॥
एहि प्रकार कहि शापकी ही मति ताहि दुराय। द्रोणतनयको शङ्क गहि विदा भए यदुराय॥
वन्दि दम्पतिहि व्यासके चरण परशि तेहिठौर। रथ चढ़ि आए कृष्ण जहं हे पाण्डव भटमौर॥

रोला छन्द॥

ऊबि ऊबि उसांस लै लै गहे शोक महान। कहे नृप धृतराष्ट्र सञ्जय कहो सहित विधान॥
पुत्र मम भै हतपराक्रम परो जब गतचैन। भीम राख्यो चरण शिरपर कहत गर्वितबैन॥
परम मानी पुत्र मम तब भयो कैसो तत्र। एक कोऊ आपनो हित परो देखि न यत्र॥ कहे
संजय गए हम तहं गयो जब अरि सैन। किए हो नृप जहां क्षत्रिहि स्वर्गदायक सैन॥ मोहि
लखि क्षितिपाल धीरज धारिकै उठि बैठि। वीररससों भरो केश सुधारि मूछन ऐंठि॥
कह्यो संजय सुनो होनिहि सकत नहिं को टारि। द्रोण भीषम कर्ण जा संग लहैसो इमि
हारि॥ द्रोण सुतकृप कर्णसुत भगदत्त शकुनि नरेश। आदि एकादश अक्षोहणि जासु
संग शुभेश॥ परे सो ह्वै धूरि मधि इमि बिना संग सहाय। खबरि यह सुनि जनक जननी
कहा करि है हाय॥ पुत्रसौ अरु पौत्र जाके मरे अगणित तौन। धरिहि कैसे धीर ताहि
बुझाइ सकिहै कौन॥ सुतनको सुत सुतनकी सब तियनको अतिमान। सहो कैसे जायगो
हा रुदनको आह्वान॥ भीम मास्यो गदा मोकहं धर्मको करि त्याग। सदा अधरम किए
पाण्डव अनय उनके भाग॥ नृपहि सबधि बुझाइओ तुम काल गति दरशाय। इन्द्रसम करि
भोग रणमैं मरब मंगल चाय॥ भूप इतने मैं नृपतिकी खबरि सुनि चयबीर। द्रोणसुत कृप
भूप कृतबरमा महा रणधीर॥ चढ़ि रथनपै हांकि जबसों शीघ्र आए तत्र। भरो शोणित
धूरि करदम परोहो नृप यत्र॥ गृध जम्बुक योगिनी जुरि भूत घेरे ताहि। यथा जाचक जूह
घेरत सधन दातहि चाहि॥ देखि भूपहि उतरि रथसों करत रोदन भूरि। जाय बैठे निकट
नृपके महादुखसों पूरि॥ द्रोणसुत परि मोहबश इमि लगो करण प्रलाप। इन्द्रसम महि-
पाल रजमधि परो पूरित ताप॥ द्रोण भीषम करण दुःशासन शकुनि भट और। गएकित
तुम बिजन एहिबिधि परेहौ एहि ठौर॥ बिजन चामर छत्र औ पर्य्यङ्क दासी दास। गये कित
इतमाम करता लोग सब तजि आस॥ भाषि एहि बिधि करत रोदन द्रोण सुतकहं देखि।
तजत चखते बारि भूपति कहत भो अवरेखि॥ जौन प्रगटत आइ इतसों नशत भोगि स्वकर्म।
भयो हम कहं प्राप्त सो अब जौन इतको धर्म॥ शक्रसम करि भोग रणमैं मरेको नहिं खेद।
लहे पाण्डव विजय अति दुख होत यह गुणि भेद॥ हन्यो भीम अधर्म करिकै गदा मम अधअंग।
नहीं जीत्यो मोहि करिकै न्याय विक्रम संग॥ आपनो करि लए तुमसों जननि कहं हम
पूर्व। तऊ एहि बिधि परे भावी होति है अति गूर्व॥ भाषि एहि बिधि नृप सुयोधन तजत
चखते नीर। रहो चुप ह्वै भए व्यापित दुसह दारुण पीर॥ द्रोणसुत सुनि वचन नृपके
महारिसि बिस्तारि। कहे वै सब मूढ़ जब मम पितहि डारे मारि॥ मोहि भो नहिं इतो
दुख तब जितो तो दुख देखि। सुनो ताते कहत हौं अब इतो प्रण करि तेखि॥ बनिहि जिमि
तेहि भांति एहि निशि बधब सब पाञ्चाल। जान कहं तहं मोहि आज्ञा देऊ हे क्षितिपाल॥

दोहा॥

भूपति सुनि ऐसे वचन अति आनंद उरआन। कृपाचार्य्यसों कहत भे राजनीति अनुमानि॥
हे आचारय पूर्णजल सादर कलस मंगाय। द्रोणसुतहि सैनाधिपति करौ सबिधि गहिचाय॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहसुनि कलस मंगाइ क्षप सहित विधानविवेक । द्रोणसुतहिसैनेयको करत भए अभिषेक ॥
द्रोणतनय सैनेयको लहि अभिषेक अनूप । गयो भूपसों ह्वै विदा भयो भयानक रूप ॥

सोरठा ॥

रामरामसियराम जपतसुयोधनतहंरहो । चाहिविजयअभिराम द्विजसुतको आगम लखत ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे गदापर्व समाप्तिर्नाम तृतियोऽध्याय: ॥ ३ ॥

माघ शुक्ल ४ बुध वासरे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

सौप्तिक पर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि। बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान। तेहि भरतहि भजि भणत यह भाषा भार्त महान ॥
जेहि रघुवरप्रभुके चरित वक्रशत कोटि अमन्द। ताहि सुमिरि भारतरचत भाषाविरचि मुकुन्द ॥
पारथके स्वारथ भए सारथि परम अनूप। ते सारथ रचि देहिं यह भारत भाषा रूप ॥

सोरठा ॥

बन्दौं कपिवर बीर रामपरम प्रिय पारषद। मंगल मूरति धीर भारत खस्थ्वजस्थ्वर ॥
सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी। भारत समुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहत तस्यो ॥

दोहा ॥

सौतुक सौप्तिक सपनकी दशामध्य जोप्राप्त। भाषा सौप्तिक पर्व यह रचत ताहि गुणिआप्त ॥

संजयउवाच जयकरीछन्द ॥

सीतारामहि सुमुरि नरेश। सुनो तदनु जो भो तेहिदेश ॥ जब ह्वै नृपसों बिदा सगर्व। चलो द्रोणसुत सुभट अखर्व ॥ तब कृप अरु कृतवर्मा भूप। चले तासु संग सुभट अनूप ॥ ते त्रय रथी बीर बलधाम। अरिदलके ढिग जाय सकाम ॥ तहं चैतन्य शत्रुदल जानि। सुरुकि बिपिनि मधि गे अनुमानि ॥ तहां निकट बट वृक्ष निरेखि। बैठे उतरि मंच अवरेखि ॥ यह सुनि शोका कुल नृपवृद्ध। कहत भयो करि स्वास प्रवृद्ध ॥ बात जात करि युद्ध अधर्म। बधत भयो मम सुवन अभर्म ॥ संजय मम हिय महाकठोर। सहत इतो दुख दुसह अघोर ॥ शतसुत तिनके सुवन अनेक। को बध सुनि दहि कटत न नेक ॥ दम्पति वृद्ध सुतनसों हीन। किमि हम बसब शत्रु आधीन ॥ कह्यो बिदुर जो नीति सुनाय। अबसो परो प्रतक्ष लखाय ॥ क्षत्रबंशको भयो विनाश। सब सुत मरे न पूरी आश ॥ अब कछु संजय बटतर जाय। किए कहा त्रय भट दृढ़घाय ॥ यह सुनिकै संजय मतिमान। कह्यो जाय तहं बीर अमान ॥ गुणि तो पुत्रनको बध भूप। अरु क्षत्रिनको नाश कुरूप ॥ कहि कहि करुणा शोच बढ़ाय। कृतसों पोड़ित परे अचाय ॥ भे निद्रावश कृप कृतवर्म। गह्यो न निद्रा द्विजभट पर्म ॥ अमरष क्रोधभरो द्विजबीर। निरखन लागो बिपिनि गंभीर ॥ बिपिनि लखत निरख्यो द्विजराय। वृक्षन बसे काग समुदाय ॥ सब निद्रावश ह्वै कलपाय। निर्भय सोवत शोच बिहाय ॥ तहां उलूक बिहग तेहिकाल। आयो बायस कुलको काल ॥ सो क्रमसों प्रति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीडन जाय । भो कतरत कागनको काय ॥ कितनेके काट्यो पग पच्छ । कितनेके उर फाड्यो दच्छ ॥ भो काटत अगणितको शीश । सो कौशिक कागा दह दीश ॥ एहिबिधि करि कागन को नास । कौशिक पत्नी गो निज बास ॥ इमि निज शत्रुन मारत ताहि । द्रोण तनय तेहि निशिमें चाहि ॥ गहत भयो मनमें सो भाव । मनु पायो उपदेश बनाव ॥ इमि भो मनमें करत बिचार । पाण्डव प्रबल ससैन उदार ॥ नहिं सन्मुख वधिबेके योग । ताते यह बिधि अमिट प्रयोग ॥ अमरषबश नृपके ढिग जौन । हम पण करि कीन्हो दूत गौन ॥ धर्म धरे ते मरण न आन । यह बिधि पण सधिबेको ठान ॥

दोहा ॥

द्रोण न बधि यह द्रोणअरि द्रोण बधनको बेश। दूरि कर्ण कहं द्रोण सम कियो आइ उपदेश॥
द्रोण बधन द्रोणारिको द्रोण दए दुख तौन । दूरि करन अरि द्रोण मनु कहे द्रोण अरि द्रौन॥
न्याय सहित लरि शत्रुसों हारे सर्वस जात । करि अधर्म जीते रहत सर्वस जीति कहात॥
समित कार्य्यतत्पर भजत निजन निरायुधपाय। सोवत निशिमेंसमय लहि शत्रुहि मारब न्याय॥
इमिगुणिद्विज सोवत बधब ठीक मंच ठहराय। तिन युगभटन जगायभोकहत सबिधि समुझाय॥

रोला छन्द ॥

भीम दुर्योधननृपतिके धरो शिरपर लात । समुझि सो मम हिए अनुक्षण क्रोध बाढ़त जात ॥ भूपकी लखि दशा शत्रुन बधनको पण ठानि । सहित तुम युग भटन आये इहां जय अनुमानि ॥ एकदश अक्षोहणी नृप सैन अति उद्दण्ड । भीष्म द्रोणादिकन सह भे बधत पाण्डव चण्ड ॥ सदल तिनके बधनको हम गहे ईहा तात । कहो ताको मंच जेहि बिधि मिलै जय अवदात ॥ द्रोणसुतके बचन सुनि कृप कहे सुनहु सप्रेम । जिते जन्मत आयते सब मरत हैं यह नेम ॥ दैवके अरु कर्मके बल सधत सिगरे काज । एकसो नहिं पुरुषसाधि न सकत है निजराज ॥ प्रघट निघट प्रसिद्ध सबथल ब्याप्त सुनिये चाहि । शिखरपर जमि वृक्ष बाढ़त दैव सींचत ताहि ॥ बिना सींचे होत केते सींच तौ कुंभिलात । दैव कर्म सहाय बलकी होत अभिगत बात ॥ ध्याय दैवहि शोधि कर्महि धर्म पथ गहि जौन । गुरुन मंचित कार्य्य रक्षन सिद्ध सब बिधि तौन ॥ लोभबश परि नृप सुयोधन कियो तासु बिरुद्ध । लियो तिनको मंच जिनकी बुद्धि निपट अशुद्ध ॥ कहो भीषम बिदुरको नहिं गुणो सुख दातार । लहै ऐसी दशा किमि नहिं जासु यह ब्यापार ॥ मंच बूझत हौ हमहिं तौ कहत इमि अनुमानि । चलो नृप धृतराष्ट्रके ढिग बचन श्रेयद जानि ॥ भूप गान्धारी बिदुरसों बूझि बिधिवत मंच । कहैं वै जो भांति जेहि सो करो आय खतंच ॥ कृपाचारय के बचन सुनि द्रोणसुत अनखाय । कह्यो निज मति श्रेष्ठ सब कहं परत जानि सचाय ॥ कारनान्तर योगमें मति बुद्धि पलटति तात । है विचित्र मनुष्य को चित ठीक नहिं ठहरात ॥ भिषज भैषज देत जीवन हेत समुझि निदान । कालबश वह मरत तौ सब कहत तेहि अज्ञान ॥ पुरुष सिंह प्रबीण भूपति कियो राज सधर्म । गयो काज नशाय अब सब कहत कुत्सित कर्म ॥ बिप्र हम निजधर्म तजिकै गह्यो क्षत्री धर्म । कर्म क्षत्रिनको करब अब उचित तजिकै भर्म ॥ झूठ कहि तजि धर्म उन मम पितहि डास्यो मारि । तथा अब हम बधब उन कहं नीति धर्म बिसारि ॥ पाय जय बजवाय दुन्दुभि सुचित पाण्डव सैन । सैन करि परि नींदबश अब परे पूरित चैन ॥ जाय अब हम शिविर सबके काटि सबको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीस। धृष्टद्युम्नादिकन बधि जय लेव विश्वेबीस ॥ धर्म आदिक पाण्डवन बधि काललोक पठाय। होव उचित भूपमों यह परम धर्म सुन्याय ॥ द्रोणसुतके बचन सुनिकै कह्यो इमि आचार्य्य। करब ऐसे कर्म कुत्सित उचित तुमहिं न आर्य्य ॥ लेहु करि बिश्राम एहिनिशि भोर धनु टङ्कारि। हमहिं युग भट सहित लरिकै लेहु जय पण धारि ॥ बाण बर्षत तोहि लखि कै सुभट ऐसो कौन। जीति को उत्साह गहि जो करै सन्मुख गौन ॥ दुसह तो कृत बाण झरि नहिं शक्र सहिवे योग। और मानव कहै को तो दिव्य अस्त्र प्रयोग ॥ तथा हम तिमि भूप कृतबर्मा दुसह रणधीर। बधब तिमि अरि सैन जिमि बन दहत अग्नि समीर ॥ समित हम अरु भूप तुमहूं लेहु करि बिश्राम। बधब सब पाञ्चाल सेना भोर करि संग्राम ॥ सुनत मातुलके बचन ए द्रोणसुत भट चण्ड। क्रोध भरि करि अरुण ईक्षण कह्यो वचन उदण्ड ॥ कहां निद्रा आतुरहि अरु भरो अमरष ताहि। कहां निद्रा ताहि घेरे महा चिन्ता जाहि ॥ सकल ए मम हिये पूरित कहो निद्रा मोहिं। पिताके बध ते अधिक दुख कौन बूझत तोहिं ॥ धृष्टद्युम्नहिं बधे बिनु मम हिये परचत तात। बधे बिनु पाण्डवन नहिं मम शोक करुणा जात ॥ दोहा ॥

तातेएहिसौप्तिक रजनि मधिबधिअरि समुदाय। दुखदुराइ सबकरब हमसुख बिश्रामसचाय ॥
अश्वत्थामाके बचन सुनि कृप सुमति सुधाम। कह्यो न सोहत है तुम्हैं ऐसो कुत्सित काम ॥
बिनु जानेहू शस्त्र करि शास्त्रज्ञन को संग। जानत अधरम धर्म नर सुकरम कुकरम अंग ॥
जानन हित सत असत मग भजत पण्डितन लोग। तुम पण्डित ह्वै आपु कत गहत अधर्म प्रयोग ॥
पापात्मा सब जन्मके करत सपातक कर्म। जे सब दिनके पुण्यकृत ते निति गहत सुधर्म ॥
लक्ष्मी आवै जाय कै रहै न रहै सप्रेम। धर्मशील नर नहिं तजत धर्म सुपथको नेम ॥
तुम सर्वविधि शास्त्रज्ञ पटु धर्म कर्म करतार। मतिहठगहिकरि वोगुणोयहकुत्सित उपचार ॥
त्यक्त शस्त्र बिनु कवच रथ भागत सोवत जौन। आरत कहि आवत शरण तिन्हैं बधब अघ भौन ॥
लरि बहुदिन अति समितह्वै सोवत आयुध त्यागि। तिन्हैं बधब सो है चलब रौरवके मग लागि ॥
ताते ऐसी कुमति तजि करि निशिमें बिश्राम। भोर प्रचारि प्रचारिकै बधब शत्रु बलधाम ॥
सुनि अश्वत्थामा कह्यो सत्य कहे तुम तात। पैजो करिबो अवशि तहं नहिं अधरम लखिजात ॥
भीष्म द्रोण भूरिश्रवा कर्ण सुयोधन भूप। तिन्हैं बध्यौ तिन विजय हित कौन धर्म अनुरूप ॥
नहिं मोसों सहि जात अब पितुबधको दुख घोर। इमि कहिकै चढ़ि सुरथपर चलो सैनकी ओर ॥
कृप कृतबर्मा चलत भे तासु अनुग ह्वै भूप। सैन द्वार पर जात भे ते चय सुभट अनूप ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥

सैन द्वारपर जाय ते किए कहा कछु तौन। यह सुनिकै संजय कह्यो सुनो तौन मतिभौन ॥
तहां जायकै द्वारपर देख्यो पुरुष उदण्ड। सूर्य्य सरिस बरचस भरो बाहत परम प्रचण्ड ॥
व्याघ्रखाल को बसन अरु भूषण व्याल कराल। जाके सहसन मुख चखन कढ़त ज्वालके जाल ॥

सोरठा ॥

प्रलयकालके सूर सम सोहत सो पुरुष तहं। कढ़त तेजको पूर चख मुख नासा श्रवण मग ॥
तिन तेजन ह्वै भूप प्रगटत अगणित बिसु प्रभु। चारु चतुर्भुज रूप चक्र आदि आयुध गहे ॥

चौपाई ॥

द्रोणतनय सो लखि तेहि क्षणमें। गुणि प्रभाव ह्वै चिन्तित मनमें ॥ धीर धुरीन शोच

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि हरिकै। दिव्यअस्त्र बर्षो पण धरिकै॥ नृप सो पुरुष अस्त्र सब तैसे। ग्रस्यो सरित-जल सागर जैसे॥ अस्त्रन व्यर्थ देखि भटनायक। तज्यो अमोघ शक्ति बध लायक॥ पुरुष प्रभाव शक्ति सो भारी। होत भई ऊरधपथ चारी॥ विप्र कोपि तब खड्ग चलायो। पुरुष व्यर्थ करि ताहि गिरायो॥ तब द्विज तज्यो गदा अति घोरा। ग्रस्यो ताहि सो पुरुष कठोरा॥ मारि अस्त्र सब गुणि बध ताको। करि व्यवसाय विप्र सुत याको॥ देखि जनार्दन मय अध परध। विप्र विचारि कियो अध मूरध॥ तब कृप बचन विचारि हियेमें। गुण्यो विपति हठि कर्म कियेमें॥ शास्त्र रीति युत दृढ़ शिखापन। नहिं हम गुण्यो पालि हठ आपन॥ सपना सौतुक सौतुक सपना। होत दैव बश ब्यर्थ कलपना॥ चाहत दैव होत सो सबहूं। नर चाहत सो होत न कबहूं॥ जौन करत नर कर पग मुखसों। सो सब होत दैवके रुखसों॥ यह बिचारि कारज मग लागो। रथ तजि शिवहि प्रशंसन लागो॥ रथते उतरि विप्र सुद लीन्हे। सबिधि शंभुकी अस्तुति कीन्हें॥ उग्रहि आदि नाम सब कहिकै। महिमा कह्यो भक्ति अति गहिकै॥ अस्तुति करत तत्वके भेदी। प्रगटि भई काञ्चनकी बेदी॥ तापहं चित्रभानु प्रभु राजे। नभ दिशि बिदिशि तेजसों छाजे॥ अगणित शिर चख कर पग सोहे। सेवत खरे दिव्यगण मोहे॥ गण समूह सोहे बहु बिधिके। अति अभिराम धाम रुचि निधिके॥ बहु प्रकारके आनन जिनके। बेष बनाव बिबिधबिधि तिनके॥ बिबिध भांतिके आयुध धारे। निरतत हंसत यथा मतवारे॥ कितने आयुध किए उकाढ़े। गरजत फिरत बिन्ध सम बाढ़े। कितने खरे धनुष टङ्कारत। अश्वत्थामहि किते प्रचारत॥ कितने शिवहि प्रशंसत थिरि थिरि। कितने हर हर टेरत फिरि फिरि॥ यह अद्भुत लखिद्विज सुत योधा। धरि धीरज करि मन अवरोधा॥ पाणि जोरि इमि शिव सों भाष्यो। भयो व्यर्थ हमजो अभिलाष्यो॥ प्रभु हम तन होमत एहि ठांई। मम आत्मा बलि लेहु गोसांई॥ इमि कहि अग्नि ज्वलित तहं करिकै। प्रविशत भो द्विज धीरज धरिकै॥ ज्वलित अग्नि मधि द्विजहि निहारी। शम्भु कृपा करि कहे बिचारी॥ हम प्रसन्न तो पहं भट नायक। अब निज इच्छित करु दृढ़ घायक॥

दोहा॥

इमिकहिशिव द्विजवरहिदे खड्गदिव्य परभाव। गुणिभावी सब गणन सहगुप्तभए गहिचाव॥
गहिसो असि अतिमुदितह्वै अश्वत्थामावीर। सैनद्वारमधि प्रविशिगो शिविरन प्रतिरणधीर॥
सुनि बूझे धृतराष्ट्र तहंकियो कहा द्विजजाय। कृप कृतबर्मा का कियो सो सब कहो बुझाय॥

सञ्जय उवाच॥

जब शिविरन मधि जात भो विप्र भयानक रूप। खरे रहे तब द्वार पर कृप कृतबर्मा भूप॥

सोरठा॥

कृप कृतबर्महि राखि द्वार देशमें विप्रभट। बध करिबो अभिलाखि धृष्टद्युम्नके शिविरगो॥

रोलाछन्द॥

तहांशुचि पर्य्यङ्क सोवत धृष्टद्युम्नहि देखि। लात मारि जगाइ दीन्हों नीतिमग अवरेखि॥
जागि विप्रहि चीन्हि लागो उठन पर सैनेश। झपटि तौ लगि भयो पटकत विप्र गहि कै केश॥ कण्ठउरपर लातधरिकै दाबि बैठो ताहि। भरो आलसतौन नहिं करि सको विक्रम चाहि॥ द्रोणि सों इमि कह्यो मोकहं अस्त्र सों बधु विप्र। पाय तोपरसंग जाते जाउंसुरपुर क्षिप्र॥ विप्र यह सुनि कह्यो रेगुरु बधिकसों गति तोहि। भाषिइमिभो बधत मरमहि दाबि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदसों कोहि ॥ रहोरक्षक तासु युवती तहांते सब जागि । देखि विप्रहि भूतगुणि परिरहीं भयसों पागि ॥ द्रोणसुत तब शिविरते कढ़ि सुरथ पर चढ़ि भूप। परम गर्वित भयो ठाढ़ो महा भीषम रूप॥ युवति कीन्हों सोरतब जगि आइ तहं सबलोग । धृष्टद्युम्नहिं मरोलखिकै भएबुझत योग ॥ कह्यो युवतिन दनुज कै धौं मनुज बधिकै ताहि । खरो रथ चढ़ि सुभट तब बढ़ि घेरि लीन्हें चाहि ॥ द्रोणसुत तिन भटन परकरि रुद्रअस्त्र प्रहार । तूल राशि समान सबको करत भो संहार ॥ शीघ्र उतमौजा नृपतिके शिविर मधि चलि जाय । धृष्टद्युम्नहि बध्यो जिमि तिमि बध्यो अमरष छाय ॥ युधा मन्यु महीप तुरतहि जागि अन रथ मानि । द्रोणसुतके हन्योउरमें गदा राक्षस जानि ॥ खड्गसों बधि ताहि द्विजसुत भयो बधत सटेक । नींदबश परि परे थरथर घूमि सुभट अनेक ॥ द्रोणसुत ह्वै चपल कीन्हें न्याय धर्महि दूरि । परे सोवत तुरंग गज भट भयो मारत भूरि ॥ जगे जेऊदेखि तेहि ते रहे नैनन मूंदि । तिन्हें बधि भो बधत सोवत भटन पायन खूंदि ॥ करत निरजन शिविर सिगरेगयो द्विजभटवीर। रहे सोवत द्रोपदीके सुवन जहं रणधीर ॥

दोहा ॥

तेहिक्षण तहंके सुभट सब जागिकरत भे सोर । जागि द्रोपदीके सुवनकरपे धनुषकठोर ॥ धृष्टद्युम्नकोमरण सुनिजागि शिखण्डी दक्ष । द्रोण सुवन कहं घेरिकै बरपे विशिष सपक्ष ॥

जयकरीछन्द ॥

तहं गहि खड्ग चर्म बलधाम । द्रोणसुवन भट अश्वत्थाम ॥ द्रुपदसुताके सुतन प्रचारि । भो प्रतिविंध्यहि बधत प्रहारि ॥ तब सुतसोम पास हनि ताहि । असि गहि चलत भयो बध चाहि ॥ तब अश्वत्थामा गहि बेग । वाहि रुद्रप्रद खड्ग असेग ॥ दक्षिण भुजा काटि कै तासु । काट्यो शीषवाहि असिआसु ॥ शतानीक रथचक्र उठाय । तज्यो विप्रपहं ओजबढ़ाय ॥ गहिसो चक्र विप्र भट नाह । हन्यो नकुल सुतके उर माह ॥ लागे चक्र गिरो सो भौरि । तब शिर काटि लियो द्विज दौरि ॥ तब श्रुतकर्मा परिघ उठाय । बढ़ि मारत भो द्विज के काय ॥ सो सहि बलकरि विप्रन भीच । खड्ग हन्यो ताके सुख बीच ॥ तब श्रुतकर्मा सुभट अमान । गिरो भूमि पर ह्वै गत प्रान ॥ सो लखिकै श्रुतकीर्ति उदार । द्विजपर बरषो शायक धार ॥ सब शर धारि चर्म पर विप्र । काट्यो तासु शीष बढ़ि क्षिप्र ॥ द्रुपदसुताके सुत सब मारि । सुभट शिखण्डिहि बध्यो प्रचारि॥ इन सुभटन कहं बधि तेहि ठौर । बधत भयो सब भटन सडौर ॥ काल कराल सदृश तेहि याम । विलसत भयो विप्र अभिराम ॥

दोहा ॥

जितने मत्स्य प्रभद्रगण अरु पाञ्चाल विशेष । रहेजिते हतशेष सो द्विज बधिकियो अशेष ॥ फिरि पाण्डवदल सृंजयनमध्य प्रविशि द्विजवीर । हयगज भटहत शेषसब बधत भयो बेपीर ॥ तहं जे भट जागत रहे ते निरखे तेहिकाल । प्रथम जाति काली बधति पीछे विप्र विशाल ॥

चौपाई ॥

चेति भिरैं द्विजवर सों जेते । कटिकटि परैं भूमिपर तेते ॥ काहुके पग कटि भुजकाटत । कितने शीष काटि महि पाटत ॥ कितने हय गज काटि धितावत । लमो रुद्र जिमि कलप बितावत ॥ कितने घोर शब्द सुनि जागैं । कहा होत इमि बूझत भागैं ॥ कितने नींद भरे नहिं बूझैं । कहा होत को आयो कूझैं ॥ जागत सोवत बैठे भागत । बधत विप्र कछु दया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न पागत ॥ हाहा कार भूप तेहि पलमें । होत भयो सब पाण्डव दलमें ॥ धुनिसुनि द्विरद तुरंगभय पागे । तोरि सुबन्धन धावन लागे ॥ तिनके घात लाततर परिपरि । मरतभए भट हाहा करि करि ॥ उड़ी धूरि अतिशै तम छायो । सबके मन विभ्रम भरि आयो ॥ बिनु चीन्हें आपुस में लरि लरि । मरे असंख्यन धीरज धरि धरि ॥ कितने पिता बन्धु सुत टेरैं । कितने हय गज रथ धनु हेरैं ॥ भागि द्वारपर जाहिं सभर्मा । बधैं तिन्हैं कृप अरु कृतबर्मा ॥ नृप इतने में अश्वत्थामा । आगि बारि फूंक्यौ पटु धामा ॥ तीनि ओरसों आगि लगायो । पूरि उजेरो असि फरकायो ॥ अंग भंग करि हय गज योधन । करत भयो निज पण विधि शोधन ॥ कितने मरे अग्निमें जरिकै । कितने मरे परस्पर लरिकै ॥ सुभट असंख्यन द्विजसुत मार्यौ । प्रलय कालको पूर पसार्यौ ॥ बधै पशुनकहं पशुपति जैसे । हय गज भटन बध्यो द्विज तैसे ॥ निशि युगयाम गए सुनु राजा । भो अशेष अरि सैन समाजा ॥ राक्षस भूत पिशाच घनेरे । भक्षण लगे मांस करि डेरे ॥ खुशी खबीस योगिनी फिरि फिरि । शोणित पिएँ ग्रीवसों भिरि भिरि ॥ निरतत बलकत फिरत अनेरे । खात गूद लखि बीर बडेरे ॥ चौपद पक्षी मांस अहारी । मांस खात अति सुदिन निहारी ॥ एहि-प्रकार सब अरिदल बधिकै । निजपण पूरि मोद हिय मधिकै ॥ सैन द्वारके बाहेर आयो । निज कर्तब युगभटन सुनायो ॥ नृप धृतराष्ट्र दशा यह सुनिकै । संजयसों बूझत भो गुनिकै ॥ एहिनिशि विप्र कर्म जो कीन्हों । प्रथमहि कत यह पण नहिं लीन्हों ॥ जब जूझो ममसुत नृप आरज । तब कत करत भयो अस कारज ॥ सो बुझाइ कछु संजय ज्ञानी । सुनि बोलो संजय अनुमानी ॥ कृष्ण आर्जुनके भय पागे । नहिं आगे द्विज एहि-मत लागे ॥ सात्यकि सहित उन्हैं एहि निशिमें । अनत जानि प्रविशे एहि दिशिमें ॥

दोहा ॥

बधि हतशेष समस्त दल करि पूरण पण आस । कृप कृतबर्मा सहित गो दुर्योधन के पास ॥
शेषप्राण सह भूमिपर परो भूप तेहिकाल । शोणित मुखसों बमत अरु श्वासा बढ़ी कराल ॥
दुर्योधनकी लखि दशा ते चयभट तहं बैठि । रुदन करण लागे महाशोक समुद में पैठि ॥
गुण विक्रम ऐश्वर्य्य सब कहिकहिगहिदुखभूरि । किएबिलापप्रलापगतिलहिअतिदुखसोंपूरि ॥
नहिंबोलो जब नृपति तब कह्यो द्रोणसुत एक । स्वर्ग जात नृपअवनसुख बचन इतो सुनिलेक ॥
धृष्टद्युम्न आदिक सकल बधि परभट समुदाय । द्रुपदसुताके सुतनकहं बधि यमलोक पठाय ॥
जारि सिविर पाण्डवनके हम आए तुव पास । सात सुभट उत बचिरहे बसि अनतै गहिचास ॥
पांचौ पाण्डव कृष्ण अरु सात्यकि योधा जौन । तीनि सुभट हम इत बचे सुनो बुद्धिबल भौन ॥
सुनिसुद गहि तोसुत कह्यो तुम उचिण भे आजु । भीष्मद्रोण अरुकर्ण नहिं कीन्हों करिसोकाजु ॥
इमिकहिचुपरहिक्षणकगुणिकहिकहिसीताराम । नृपतिसुयोधनत्यागितनगोसुरपतिकेधाम ॥

जयकरी छन्द ॥

रामकृष्णकी कृपा अनूप । लहि जय लह्यो युधिष्ठिर भूप ॥ राम कृपाते का नहिं होत । रामकृपा सब सुखको सोत ॥ रामकृपा इच्छित फलदानि । रामकृपा सुद मंगल खानि ॥ रामकृपा लहि सुर सुरराज । निरभय विलसत सहित समाज ॥ रामकृपाते दम्पति पूर्व । इत पायो निज तपफल गूर्व ॥ रामकृपाते विश्वामित्र । पूर्ण कियो मख परम पवित्र ॥ रामकृपाते गौतम बाम । लही पूर्वतन अतिअभिराम ॥ रामकृपाते सुर सरिबार । केवट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरो सहित परिवार ॥ रामकृपाते जनक बिदेह । निज पण पूरण लह्यो सनेह ॥ रामकृपा लहि राम प्रयुक्त । भे निजधर्म कर्मसों युक्त ॥ रामकृपाते कोशल ग्राम । राम निवास भयो छविधाम ॥ रामकृपा लहि परम विचित्र । भो निषाद अतिपावन मित्र ॥ रामकृपाते तीरथनाथ । पाइ नाथपद भयो सनाथ ॥ रामकृपाते ऋषि बाल्मीक । हे चाहत देख्यो सो नीक ॥ रामकृपाते चित्र सुकूट । निरख्यो विष्णु चतुरधाजूट ॥ रामकृपाते असुर विराध । फिरि गन्धर्व भयो निरवाध ॥ रामकृपाते ऋषि शरभंग । लह्यो परमपद दाहिसुअंग ॥ रामकृपाते ऋषि समुदाय । दण्डक बसे अराक्षस पाय ॥ रामकृपाते तस्यो जटाय । बस्यो कबन्ध पूर्वपद जाय ॥ रामकृपा लहि आनंद ओक । सेवरी पायो उत्तमलोक ॥ रामकृपा लहिकै सुग्रीव । राज्य पाय भे कपिकुलसीव ॥ रामकृपाते सुकपि उदार । जाय वायु सम वारिधपार ॥ रामकृपा गुणि सीतहि देखि । लङ्का दाह कियो अवरेखि ॥ रामकृपाते फिरि फिरि आय । खबरि सुनायो श्रुति सुखदाय ॥ रामकृपाते कपि जय हेत । बांधत भे सागरमें सेत ॥ रामकृपाते लक्षिमण बीर । बध्यो मेघनादहि रणधीर ॥ राम कृपाते रावण आदि । राक्षस मुक्त भए अघबादि ॥ रामकृपा लहि विखेबीश । भयो बिभीषण लङ्काधीश ॥ रामकृपाते अवध अधार । फेरि भरत भो मंगलचार ॥ रामकृपाते धनपति फेरि । पुष्पक पायो आनंदमेरि ॥ रामकृपाते भरत सप्रेम । रामहि लखे पालि व्रत नेम ॥ रामकृपाते सहित विवेक । पुरजन लखे राम अभिषेक ॥

स्वस्ति श्री काशीराज महाराजा धिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे सौप्तिकपर्वनाम प्रथमोऽध्याय: समाप्त: ॥

माघ शुक्ल ५ गुरु वासरे संवत १९३० ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पणे ॥

ऐषिक पर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कारनारायणहि करिनरोत्तमहिनौमि । बन्दिगिराव्यासहिरचत भारतभाषासौमि ॥
भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनत यह भाषा भारत महान ॥
जेहिरघुवरप्रभुकेचरित बहुशतकोटिअमन्द । ताहिसुमिरिभारतरचत भाषाविरचिसुछन्द ॥
पारथके स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारतभाषा रूप ॥

सोरठा ॥

बन्दौं कपिवर बीर राम परमप्रिय पारषद । मंगलमूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ वर ॥
सुमिरिउच्छलनिअच्छ उदधिउलंघनसमयकी । भारतसमुद्रप्रतच्छ भाषाकरि चाहततस्यो ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

धृष्टद्युम्नको सारथी बचि सौप्तिक निशिमाह । भोरभए चलिजात भो जहां धर्मनरनाह ॥

जयकरी छन्द ॥

जाय धर्मभूपतिके पास । कहत भयो लै ऊवि उछ्वास ॥ एहिनिशि द्विजसुत कियो अनर्थ । बधि डास्यो तो सेना व्यर्थ ॥ द्रुपदसुताके सुत सब जौन । युगभट द्रुपदतनय बलभौन ॥ युधा मन्यु उतमौजा आदि । सबको बध भो करत प्रमादि ॥ सब हय गज योधा समुदाय । बध्यो द्रोणसुत निशिमें जाय ॥ सोवत जागत निशिमें भीति । सब कहं बध्यो विप्र तजि नीति ॥ दियो शिविरमें आगि लगाय । बन सम काट्यो भटन बनाय ॥ रहे द्वारपर ठाढ़े तब । कृप कृतबर्मा गहि धनु पच ॥ द्विजसों भागि बाचि तेहि ठौर । गयो बध्यो तेहि तिन गहि गौर ॥ यथा तथा भगि दैवाधीन । बचे एक हम दुखसों छीन ॥ यह सुनि धर्म नृपति मतिशोक । गिरो भूमिपर गहि सुतशोक ॥ तब सात्यकि गहि लियो उठाय । कियो प्रलाप भूप बिलखाय ॥ होत अनर्थ अर्थके हेत । है अनर्थको अर्थनिकेत ॥ यह जब यमजाया सम घोरे । भयो अजय सो अधिक अथोर ॥ सेवक सखा सुहित सरदार । मरे सुसनबन्धी परिवार ॥ अब लै राज्य करब का हाय । इमि कहि रोवे धर्म अचाय ॥

दोहा ॥

भीष्म द्रोण कर्णादिकेरण समुद्रको जैन । द्रोणतनय अधरम सरितमधि डूबी मम सैन ॥
पिता बन्धु पितृव्य गणको सुनि मरण मलान । पाञ्चाली कैसे सहिहि सुतबधवज्र समान ॥
भूरिप्रलापप्रकार एहिकरिप्रालब्ध निहारि । नृपति युधिष्ठिर नकुलसोंबोले समय बिचारि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

तुम कृष्णापहं जाय कहो भयो अनरथ जितो। कहि भावी समुझाय लै आवो पुचन लखै॥
द्रुपदसुताके ओक नकुल गए चढ़ि सुरथपर। बन्धुन सहित सशोक भूप गए रणअजिरमें॥

रोला छन्द ॥

जाय तहं लखि मरे पुचन किए रोदन भूरि। भे बुझावत नृपहि सात्यकि भीम दुखसों पूरि॥ सखा सुहितन मरो लखि नृप रहे शोचत यच। विकल कृष्णहि सुरथपहं लै नकुल आए तच॥ देखि पुचन गिरी महिपर रुदत करि हा हाय। भीम गहि बैठाय स्वासित किए सबिध बुझाय॥ करत रोदन धर्मनृपसों कही कृष्णा बाम। द्रोणसुतको होय बध तौ जियों मैं एहियाम॥ कियो जैसो कर्मकुत्सित लहै तिमि फल तासु। नतरु गे जहं सुवन तन तजि तहां जैहों आसु॥ धर्मनृप सुनि कहे गुरु सुत गयो अब कढ़ि दूरि। धर्म चारिणि धीर धरु बिधिअंक असिट बिसूरि॥ बचन यह सुनि द्रुपदतनया कही भीमहि टेरि। कीचकहि तुम बध्यो समहित बधो बिप्रहि हेरि॥ परम मणि है तासु शिरमें ताहि बधि सो ल्याय। भूपके शिर करो राजित मोर दुख तौ जाय॥ भरो अतिदुख बचन नहिं सहि सको भीम अमान। चढ़ो रथपर नकुल कहं करि सारथी बलवान॥ धनुष टङ्कारत बिशिष गहि गुणत बिक्रमघोर। बेगसों हकवाइ रथ ओ चलत उत्तरओर॥ भीम रथ चढ़ि गयो जब तब कृष्ण करि अनुमान। धर्मनृपसों कहत भे इमि सुनो भूप सुजान॥ क्षीण अति सुतशोकसों भट भीम गहि रिसि चण्ड। गयो द्रोणिहि बधन सो वह बिप्र सुभट उदण्ड॥ अस्त्र उत्तम ब्रह्मशिर है द्रोण दीन्ह्यों ताहि। भाषि कबहूं मनुज पर मति तजेहु एहि जय चाहि॥ द्रोणसुत कछु दिवसमें नृप सुनो समपुर जाय। कछूदिन रहि भयो हमसों कहत अवसर पाय॥ ब्रह्मशिर है अस्त्र परम अमोघ हमसों लेहु। तासु प्रति उपकारमें निज चक्र हमकहं देहु॥ कह्यो तब हम अस्त्र आपन देहु मति तुम मोहि। चक्र तुमकहं देत हैं हम लेहु श्रेयद जोहि॥ भाषि इमि निज चक्र हम धरि दए तब उठि बिप्र। बाम करसों चक्र गहिकै लगो करषण चिप्र॥ उठो नहिं तब लगो करषण पाणि दक्षिण लाय। थको बल करि उठो नहिं तब रहो शीश नवाय॥ बिप्रसों तब कह्यो हम सुनु बिप्र अर्जुन राम। साम्ब गदन प्रद्युम्न मांगे चक्र मम अभिराम॥ प्राण सम प्रिय मोहिं ते नहिं कबहुं मांगे जौन। किए बिनु अनुमान शठ सम आइ मांगे तौन॥ बचन सुनि मम द्रोणसुत इमि कह्यो गहि सतिभाव। सुनो चाहि अजेय हवो कह्यो हम एहि छाव॥ हेम मणि दै कियो तब हम बिदा ताको भूप। सुनो ताते द्रोणसुत है कुटिल ताको रूप॥ भाषि इमि निजसुरथ पर सब पाण्डवन बैठाय। बेगसों तहं गए जहं गो भीम ओज बढ़ाय॥ द्रोणसुतकी लेत सुधि गो भीम सुरसरि तीर। हांकि अश्वन साथही तहं गयो केशव धीर॥ ऋषिन सह तहं रहे बैठे व्याससुनि तपधाम। रहो ऋषि सम तहां बैठो वीर अश्वत्थाम॥ द्रोणसुतकहं देखि टेरत भयो भीम प्रचारि। देखि भ्रातन सहित भीमहि द्रोणतनय बिचारि॥ मानि अनरथ बाम करसों गहि इषीक अरोग। दिव्यअस्त्र सुब्रह्मशिर को करि अमोघ प्रयोग॥ कुरु अपाण्डव भाषि इमि तेहि तजत भो गहि डौर। चलो सो दिशि ज्वाल जालन पूरि कै तेहिठौर॥ लोकनाशक अस्त्र सो लखि कृष्ण करि अनुमान। दुचित ह्वै कै पार्थसों इमि कह्यो सहित बिधान॥ ब्रह्मशिर जो अस्त्र है तो हियेमें तेहि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षिप्र । अस्त्र प्रसमनहेत त्यागो न तरु जोतत विप्र ॥ कृष्णके सुनि बचन पारथ उतरि रथसों भूप । देव गुरुहि मनाइ त्यागत भयो अस्त्र अनूप ॥ चलो गर्जत ज्वाल माला बमत अस्त्र विशेष । भिरे मगमें अस्त्र युग ते यथा तक्षक शेष ॥ भई अतिहै घोर धुनि तहं प्रलयकाल समान । भई कम्पित भूमि ऋषिगण भरे भीति महान ॥ जानि जगको नाश तेहिक्षण सुमुनि नारद आय । उभै अस्त्रन मध्य ठाढ़े भए ओज बढ़ाय ॥ उभै अस्त्रन मध्य ह्वै इमि कह्यो सुमुनि अभर्म । पूर्व धनुधर भए ते नहिं कियो ऐसो कर्म ॥ तजत कोऊ अस्त्र यह तुम कियो साहस कौन । नाश ह्वैहै लोकको यह भयो कारज तौन ॥ पार्थ नारदहि देखि तहं अरु बचन सुनि निरधारि । करत भे निज अस्त्र बरको संजहार विचारि ॥ संजहार सु अस्त्रको करि कह्यो सुनिसों टेरि । विप्रके बर अस्त्रको अब समन कीजै हेरि ॥ द्रोणसुत निज अस्त्रको नहिं सको करि संहार । दीनमन ह्वै व्याससुनिसों कहत भो एहिचार ॥ भीमको भय पाय कैनिज प्राण रक्षण हेत । शीघ्र तासों तज्यो हम यह अस्त्र ह्वै गतचेत ॥ बध्यो दुर्योधनहि करि कै भीमसेन अधर्म । तज्यो ताते अस्त्र यह हम जानि दुस्कर कर्म ॥

दोहा ॥

नाशहेत पाण्डवनके तज्यो अस्त्र यह चण्ड । संजहार नहिं बचत यह बिनु बध लखै अखण्ड ॥
व्यास कह्यो सब अस्त्रमें पारथ परम प्रवीन । करिहि समन एहि अस्त्रको त्यागि शस्त्र अति पीन ॥
अस्त्र ब्रह्मशिर अस्त्रसों बधो जात है यच । विप्र सुनो द्वादशबरिष बारि न बर्षत तच ॥
ताते अब एहि अस्त्रको करौ शीघ्र संहार । तुम्हैं न बधि है पण्डुसुत कर्तविशद विचार ॥

चौपाई ॥

तोशिरमधि जो है मणि नीकी । सो प्रिय द्रुपदसुताके जीकी ॥ बिनु बध कीन्हें सो मणि पैहैं । तौ पाण्डव सुखसों फिरि जैहैं ॥ द्रोणतनय बोलो यह सुनिकै । मम मणि चहत कहा वै गुणिकै ॥ मणि समूह कुरुपतिके घरमें । सो लहि तोष न आनत उरमें ॥ हम निज मणि नहिं देन उमाहैं । पाण्डव करैं जौन कछु चाहैं ॥ नहिं यह अस्त्र समन के लायक । ताते कहत सुनो मुनि नायक ॥ गर्भ उत्तराको जो तामें । प्रेरित करत अस्त्र जयकामें ॥ यह सुनि व्यास कह्यो करु सोई । मति करु आन अनर जेहि होई ॥ व्यास बचन सुनि द्विज सुद लीन्हों । अस्त्र गर्भमधि प्रेरित कीन्हों ॥ कृष्णचन्द्र यह गुणि तहं हंसिकै । कह्यो विप्रसों अनुपम लसिकै ॥ सुता विराट नृपतिकी जोई । पार्थ सुवनकी तिया सोहोई ॥ सो है गर्भवती यह मानो । है इमि भाषै विप्र सयानो ॥ कुरुकुलके परिक्षीण भएपै । लहि सुपास कछुमास गएपै ॥ ह्वै है पुत्र परीक्षित कीजो । नाम परीक्षित ताकहं दीजो ॥ तातें वंश वृद्धिके कारज । है भवितव्य परीक्षित आरज ॥ विप्र बचन नहिं मिथ्या ह्वैहै । प्रगटि परीक्षित आनंद ग्वैहै ॥

दोहा ॥

कृष्णचन्द्रके बचन सुनि कह्यो द्रोणसुत दुष्ट । व्यर्थ न ह्वै है अस्त्र यह गर्भ न ह्वैहै पुष्ट ॥
यह सुनिकै केशव कह्यो अस्त्र न होइहिव्यर्थ । प्राप्ति उदरमें मृतक सम गर्भहि करीसमर्थ ॥
फेरि गर्भ चैतन्य ह्वै ह्वै दीर्घायुष पर्म । समय पाय होइहि प्रगट पालक महो सधर्म ॥

चौपाई ॥

तुम पापात्मा सहसा कर्मी । बालघात कृत परम अधर्मी ॥ अब यहि अधरमको फल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैहै। तीनिहजार बरिष इत रैहै ॥ निरजन थलमें फिरि है व्याकुल। रहिहै महा रोगसों आकुल ॥ अर्जुन सुतको पुत्र अमाना। प्रगटि परीक्षित नृप बलवाना ॥ कृपाचार्य्य सों धनु विधि लैकै। भोगिहि भूमि बिशद यश जैकै ॥ बिप्र अमोघ अस्त्रके भरसों। दाहित गर्भ भरो दुख धरसों ॥ हम तेहि जीवित करि यश लेहैं। पण्डुसुतनकहं आनंद देहैं ॥ ममतप बिक्रम लखु द्विज दोषी। प्रगट करत गति अमल अनोषी ॥ अश्वत्थामा बिप्रहि ऐसे। कृष्ण कहे जब बचन अनैसे ॥ तब सुनिव्यास बिप्रसों बोले। तुम हठ गहि सतपथ तजि डोले ॥ तजि सुधरम अति अनरथ कीन्हों। याते कृष्ण रोष अति लीन्हों ॥ अब मणि दैकै आनंद लहिकै। बसो बिपिनिमें सुनिव्रत गहिकै ॥ द्रोणतनय यह सुनि हित चीन्हें। सुमणि पण्डुसुतके कर दीन्हें ॥ मणिदै बिपिनि गयो द्विज आरय। सुनि निनौमि पाण्डव करि कारय ॥ हांकि बेगसों रथ मनभाये। सादर द्रुपद सुतापहं आये ॥ रथते उतरि कृष्ण सह शोचित। बैठे अतिदुख गहे अरोचित ॥

दोहा ॥

लहि आज्ञा नृपधर्मकी भीमसेन बलभौन। द्रुपदसुताके पाणिमें देत भए मणि तौन ॥
मणि दैकै इमि कहत भे तजो शोक धरिधीर। क्षत्रवंशको धर्म गुणि मति उपजावो पीर ॥
हम बधिकै दुःशासनहिं पियोरुधिरलहिचैन। शकुनि कर्ण दुर्योधनहिं बध्यो सबन्धुससैन ॥

जयकरीछन्द ॥

जाय द्रोणसुत वीरहि जीति। मणि लीन्हें बिक्रमसों रीति ॥ बध्यो न गुरुसुत बिप्र बिचारि। मणिलै जानदियो पण धारि ॥ मणि लखि मोदि द्रोपदी बाम। कही धरैं मणि नृप अभिराम ॥ तब नृप मुकुट मौलपर राखि। शोभित भयो शोच सब नाखि ॥ सुमणि धारि नृपधर्म बिचारि। कहे कहो केशव निरधारि ॥ द्रौपदेय अति प्रबल अमान। धृष्टद्युम्न अतिशै बलवान ॥ तिनकहं मारि द्रोणसुत एक। बध्यो असंख्यन सुभट सटेक ॥ यह गुणि मोहिं होत अति शोच। कत मम सुभट गए ह्वै पोच ॥ यह सुनि कह्यो कृष्ण मतिमान। करि शिवकी अस्तुति मनमान ॥ द्विज शिवकी अनुकम्पा पाय। सिद्ध कियो यह कर्म अन्याय ॥ पाय अमरता बिक्रमवान। कियो भटनको नाश महान ॥ इमि कहि केशव सरस सुभाव। विधिवत कह्यो शम्भु परभाव ॥ सर्व भूत गणको प्रभु शम्भु। अन्त मध्य अरु प्रथम अरम्भु ॥ बेधा जगरचना अवरेखि। सबके प्रथम गिरीशहि देखि ॥ कह्यो रचौ भूतन सविधान। सो सुनिकै शिव करि अनुमान ॥ करण लगे तप जलमें पैठि। बहुतकाल बितये तहं बैठि ॥ तब बिचारि फिरि शिवढिग जाय। कह्यो पितामहं प्रेम बढ़ाय ॥

दोहा ॥

शीघ्र सृष्टि रचना करौ तब बोले शिव बैन। मम अग्रज कोउ होहु नहिं तब हम रचैं सचैन ॥
एवमस्तु तब विधि कह्योसो सुनि शिवहरषाव। परमप्रजापति सप्तदश प्रगटकिये मनलाय ॥
ते सब बिरचे चारिविधि भूत ग्रामसमुदाय। प्रगटि क्षुधितह्वै तेचले प्रजापतिन कहं खाय ॥
भीति प्रजापति भागि तब बिधिसोंबोलेजाय। शीघदेहुभोजन इन्हें तब हम बचत सचाय ॥
तब बिचारि करि पितामहं रचे अहार समेत। दए थावरन औषधी अन्त जंगमन हेत ॥
कछुदिनमेंकढ़ि सलिलते देखिप्रजनकीवृद्धि। रिसि गहिकै बर्धित किएलिंगदेतजो सिद्धि ॥
तासों भो सब लोकमें संकीरन सुनु तात। तब बिरञ्चि शिवसों कह्यो बचन परम अवदात ॥
कियेकहाउमसलिलमें करिनिवासचिरकाल। बरधित कीन्हेंलिंगनिज कारणकौनकराल ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवउवाच ॥

सकल प्रजा औरन रच्यो कारज कहा हमार । अब अब ते ह्वै ह्वै प्रजा किए लिंग व्यापार ॥
इमि कहिकै उर्जवत गिरि पहुंचे श्रीईशान । तहां जायकै करत भे तप अति उग्र महान ॥
तहां पृथक् कीन्हें सकल मख गुणि वेद प्रमान । भागयोग जे देवता अरु सब हविष विधान ॥
यज्ञफलद गुणि शम्भु कहं सुरन दएनहिं भाग । तबशिव धनुकल्पित किए पूरि जयद अनुराग ॥
क्रियायज्ञ गृहयज्ञ अरु लोकयज्ञ नृपयज्ञ । लोकयज्ञ नृप यज्ञसों धनु बिरच्यो सरवज्ञ ॥

चौपाई ॥

पांच किष्कुमित गरुई धनुषा । वषट्कार जाकी ज्या परुषा ॥ गहि सो धनुष शम्भुरिसि पूरे । गए यजत जहं सुरगण रूरे ॥ देखि पिनाकिहि महि तेहिक्षणमें । कम्पित भई डरे सुर मनमें ॥ डरे पवन सब गवन भुलान्यों । अनरथ होनचहत सब जान्यों ॥ पावक सहित यज्ञ भय पागो । ठहरि न सको मृगाह्वै भागो ॥ भागि जाय दिवमधि सो राजत । सोई रूप धरे छविछाजत ॥ तहां शम्भु प्रभु गौरव कीन्हों । सुरन धनुषके मधि करि लीन्हों ॥ वषट्कारमय ज्या अतिभाकी । बाणी काटि दई तब ताकी ॥ तब सुर यज्ञ सहित सुद राखे । शरणागत आरत ह्वै भाखे ॥ तब करि कृपा शम्भु प्रभु मानद । जलमधि दियो क्रोध सो सानद ॥ सो वह क्रोध अग्नि ह्वै लसिकै । सोषो करत वारि तहं बसिकै ॥ ताते सब मख ईश्वर अरपन । करिबो नीक अविघनक वरपन ॥ प्रभुके कोप किए सब व्याकुल । होत कृपा लहि सुदसों आकुल ॥ ताते शिवप्रसाद लहि राजा । बध्यो द्रोणसुत सैन समाजा ॥ कृष्ण कृपा लहि पाण्डव बाचे । रामकृपा सुद मंगल राचे ॥ रामकृपा ईछित फलदाता । रामकृपा निति सबघर चाता ॥ रामकृपा सबठौर सहाई । रामकृपा सुत पितु हितभाई ॥ रामकृपा रुज आपद हरता । रामकृपा बुधि विभ्रम भरता ॥ रामकृपा सन्तति सुखदायक । रामकृपा सम्पति प्रद चायक ॥ रामकृपा यशकीरति करणी । रामकृपा भवनिधिकी तरणी ॥ रामकृपा दुख दारिद दरता । रामकृपा बिनु चिन्ता करता ॥ रामकृपा धीरजको धरता । रामकृपा कृत सतपथ चरता ॥ रामकृपा करता गुरुनामी । रामकृपा करता बरधामी ॥ रामकृपा निति शुचि मति पोषति । रामकृपा कुत्सित मति सोषति ॥ रामकृपा करता बर पण्डित । रामकृपा कृत महिमा मण्डित ॥ रामकृपा दायक पटु संगी । रामकृपा प्रद सब रसरंगी ॥ रामकृपा अनुक्षण मतिशोधति । रामकृपा कुमतिहि अब रोधति ॥ रामकृपा तन रोग न आवत । रामकृपा वपुओज बढ़ावत ॥ रामकृपा प्रद सुबुधि सुस्वामी । रामकृपा प्रद शुचि अनुगामी ॥ रामकृपा प्रद पतिव्रत धरणी । रामकृपा गृहसम्पद भरणी ॥ रामकृपा दायक मनभायक । रामकृपा युत सुवन सुलायक ॥ रामकृपा पालनि पण भारी । रामभक्ति दै वरधनहारी ॥ दोहा ॥

रामकृपा सत सत्यको नेम निवाहति आम । रामकृपाते सुजनको न्यून होत नहिं नाम ॥
रामकृपाते सुजनको दिनप्रति बरधत भाग । रामकृपाते सुजनकहं कबहुं न लागत दाग ॥
रामकृपाते सधत इत कर्म योग बेवहार । रामकृपाते मिलत उत उत्तम सुपद उदार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेऐषिकपर्वप्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

माघ शुक्ल ७ संवत् १९३० ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारत दर्पण ॥

विशोक पर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कारनारायणहि करिनरोत्तमहिनौमि । वन्दिगिरा व्यासहि रचत भारतभाषासौमि ॥
भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनत यह भाषा भार्त्त महान ॥
जेहिरघुवरप्रभुकेचरित बहुशतकोटिअमन्द । ताहिसुमिरिभारतरचत भाषाविरचिसुछन्द ॥
पारथके स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारत भाषा रूप ॥

सोरठा ॥

बन्दौं कपिवरवीर राम परम प्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत सुख ध्वजसुवर ॥
सुमिरिउच्छलनिअच्छउदधिउलंघनसमयकी । भारत समुद प्रतच्छभाषाकरि चाहततस्यो ॥

जनमेजय उवाच ॥ जयकरीछन्द ॥

सुनि दुर्योधनको बध भेद । किए कहा धृतराष्ट्र सखेद ॥ कृप आदिक चय सुभट अभर्म । किये कहा सह बन्धुन धर्म ॥ दृढ़नृपतिकी दशा निरेखि । कहे कहा संजय अवरेखि ॥ सुनि बैशम्पायन मतिमान । जनमेजयसों कहे बिधान ॥ वज्रपात सम सुतबध कर्णि । शोकाकुल नृप बचन विवर्णि ॥ बैठि मूक ह्वै शीश नवाय । शोचत सुतन बिकलता छाय ॥ देखि कह्यो संजयमति ऐन । नृप कत शोचत भए अचैन ॥ जिमि करतव्य प्रेतविधि जौन । धरि धीरज करवावो तौन ॥ यह सुनि गिरो भूप लहि शूल । जिमि अशाख तरु उखरे मूल ॥ गहि धीरज संजय तन हेरि । कहत भयो अतिदुख मनमेरि ॥ हतसुत हतसेवक समुदाय । क्षीणपक्ष पक्षीगति पाय ॥ नात गोत गणसों ह्वै हीन । अब जिय रहे होत दुख पीन ॥ नारद व्यास कृष्णके वैन । रहे सुखद सो मान्यों मैंन ॥ भीष्म द्रोण कृप विदुर सचेत । कहे बुझाय कुशलके हेत ॥ सो हम किये श्रवनसों दूरि । कत न दहै हिय दुखसों पूरि ॥ शकुनि दुशासन कर्ण सुवीर । दुर्योधनके बचन गंभीर ॥ सुनि हम दीन्ह्यों नीति भुलाय । कत न दहै हिय दुखसों छाय ॥ अब सब महिपर मोहिं समान । को अभाग्य दुख भरो महान ॥ एहि प्रकार हठ गहि निज हाथ । आनै विपतिमोट निज माथ ॥ यह सुनिकै संजय मतिमान । कहत भयो सुनु भूप सुजान ॥ दृढ़ तपस्वी हित मतिभौन । तिनको कहो न मानत जौन ॥ लोभी तरुण मूढ़ युत गर्व । तिनको कहो करत जो खर्व ॥ सो पावत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिपदाको धाम। दहत हियो लहि सोच अछाम ॥ सो तुम किए कहत हौ सांच। कत न दहै हिय दुखके आंच ॥ ऐसी दशा लहे सुनु भूप। कहत सकल मतिमान अनूप ॥ पहिले करिये काज बिचारि। पटु वृद्धनको सुमत सुधारि ॥ सो बिनु किये किये हठि काज। प्राप्त होत जब बिपति समाज ॥ तब करि हिय पोढ़ो धरि धीर। सहिबो उचित परै जो पीर ॥ बिपति परे पर धीरज धर्म। राखै सोई सुकृती पर्म ॥ गुरुजनकी बाणी अनुमानि। रहै बिपतिपै धीरज आनि ॥ शोकाकुल संजय महिरौन। तासों भाष्यो नारद जौन। सो गुणिकै धीरज अधिकाय। करौ प्रेतबिधि शोच बिहाय ॥

दोहा ॥

निजकर तूल भरायकै निजकर अग्नि लगाय। जारिदेइ निज गेहसो फेरिकहा पछिताय ॥
पावकाग्निमें लोभ घृत डारि बातकरिबात। सैनसमिधतोसुतजरे सलभसरिस करिपात ॥
मधुलोभी धसिगिरि दरी गिरै होइ तनभंग। तौनयथा पछितातनृप तुमशोचततेहिरंग ॥
प्राप्तहोइ नहिं बिपतिसों पहिले करैबिचारि। सोपण्डितआए बिपति रहै सुधीरजधारि ॥
नृप इतने पै भूपसों बोले बिदुर सुबैन। भूप सुनो यहि लोकमें मरिबो अचरज हैन ॥
समजेहिकर्षतजेहियुगुतिसो तिमितनतजिजात। उकुतिनरनकीव्यर्थ सबकालयुगुतिकेपात ॥
जात युद्धमें बचत सो घरवारे मरिजात। सबप्रमाण भरि जियतहैं नहिं प्रमाणटरिजात ॥
दिनलहिकर्षतजीवनिति कालहिकछूनछोह। कालनकाहूको अहित नहिंहित त्यागोमोह ॥
जिमिरज तृणआदिकनको है संयोग बियोग। मारुतबश तिमि दैववश है जीवनको भोग ॥
प्रथम और फिरि तो भए फेरि औरकेऔर। नहिं ते तुव उनके न तुम कौन शोचको ठौर ॥
मरे स्वर्ग जीते सुयश नीको उभै प्रकार। लहे स्वर्ग तो सुवन नृप तजौ शोच सञ्चार ॥
यथा करत है कर्म नर तथा लहत फल याप। सुखपावत करिशुभ करम दुखपावत करि पाप ॥
मित्र आपनो आपुही आपुहि बैरी रूप। आपुहि साक्षी आपनो कृत अकृत अनुरूप ॥
कियो होत है प्रगट नृप अकृत न करत उदोत। तुम समानकी मति पलटि कियोकर्म फल होत ॥

धृतराष्ट्र उ बाच ॥

बिदुर तिहारे बचन सुनि दूरि भयो मम शोच। और सुन्यो चाहत कछू कहो तौन मतिओक ॥
बिनुइच्छितकोप्राप्त अरुइच्छितकोमिटिजाब। किमितेहिदुखसों छुटतजिमिद्विरददशनकोदाब ॥

बिदुरउबाच ॥

जब इच्छित टरि जातहै बसति आपदा आय। तब धीरज धरि पटु पुरुष सहि दुख देत दुराय ॥
सुखलहि भोगतशान्ति गहि नरप्रवीण तजि दम्भ। है असार सबसार नृपजिमि कदलीको खम्भ ॥
सुनो होइ धनवान कै निधन मरत सब लोग। यश अपयश रहि जात है मलिन प्रशस्त प्रयोग ॥
स्वर्ग नर्क सुख दुख मिलत कर्महिके उपचार। सन्मय पाचनको यथा है आधे अबिचार ॥
मूर्तिमान भो पाच तब फूटत सुनो निदान। सूखो ओदो पाकिकै लहि बहुदिन परमान ॥
तिमि गर्भहि कै जनमि कै बाल युवा कै वृद्ध। देह नशति सबकी सुनो आदि सुमन ऋषि सिद्ध ॥
कर्म भोगसों सब गयिन करत लोक संचार। यह साश्वति गति समुझि नृप तजो शोचको चार ॥
यह सुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे कहो समुझाय। केहि प्रकार बसि गर्भमें प्रगट होत सब आय ॥

बिदुर उबाच ॥

सुनो भूप मिलि रेत रज होत बुद बुदाकार। मांसपिण्डहू होत फिरि सकल अंग उपचार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमसों धचये मास नृप पुष्ट होत सब अंग। तब प्रविशत है जीव तहं लिए कर्मफल संग॥
बसि तहं दुख सहि समयलहि बात बीतिक्रम पाय। ऊर्द्ध चरणअधशीश ह्वै कढ़त योनिमगआय॥
क्रमसों इन्द्रिय सहित फिरि पुष्ट होत है तौन। विषय भोगमें लिप्त फिरि होतसुनो मतिभौन॥
काम क्रोध लोभादिवश कितने करत कुकर्म। कितते ज्ञानी सुपथ गहि साधनकरत सुधर्म॥
मूरख पटु निधनी धनी अरु कुलीन अकुलीन। मास रुधिरमेंभेद नहिं कर्म प्रशस्त मलीन॥
यहिविधिसुनिगुणिसमुझिजेसतपथसहित विचार। उत्तमगतितेलहतहैं दुहुंदिशिआनंदचार॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥

गहन धर्मपरचरतनर जिमिगहि बुद्धिविधान। पृथक्पृथक्अवसोकहौविदुरविदितमतिमान॥

विदुर उवाच ॥

तो प्रश्नोत्तर कहत हम प्रभु स्वयंभुवहिनौमि। यथा कहत संसारकी गति जिनकी मति सौमि॥
भूप सुनो संसारमें अति भीषम बन माह। प्रविशो कोऊ विप्र जहं बसत घने मृगनाह॥
गैबर रिच्छ वराह गणसो आकुल बन तौन। निविड़ भयानक देखि अति डरोविप्र मतिभौन॥
तब लागो इत उत लखन देख्यो तहां विवेक। बंधो वृक्षसो रज्जुसों गहे खरीतिय एक॥
पंच शीरषा नाग फिरि देख्यो शैल समान। लख्यो द्विरद षटमुख चरण द्वादशको बलवान॥
बझो लतनमधि चलत सो मन्द मन्द गहि ठान। ताहिदेखिडरिकूप मधि गिरो विप्रमतिमान॥
तामधि लपटि लतानसों रह्यो बीचही तौन। ऊर्द्ध चरणभो शीश अध बिनु हरि काढ़ैकौन॥
सुनो तहांकी विपति तहं रह्यो भयानक व्याल। सो विप्रहि लखि डसनको लायो घात कराल॥
और सुनो तहं मधुप हे लाए मधुको छात। ते उड़ि उड़ि बोलत भयद करत महा उतपात॥
स्वत कृष्ण द्वैमूष तहं काटत वल्लीमूल। जामधि लपटो द्विज परो खटकि रह्यो बिनु कूल॥
तहां गिरत मधु छातसों मधुकी धारा भूप। ताहि वदन पहं लै पिवत भयो कृतारथ रूप॥
ऐसेहु पै सो विप्र तहं जियो चहत बहुकाल। जीवेकी आशा नहीं छूटति हे क्षितिपाल॥
यह सुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे अहो अतिखेद। कौन देश वह विप्रको विदुर बुझाओ भेद॥
कहेविदुर नृप सुनहु सो विपिनि गहन संसार। जरा युवति सो व्याल वह व्याधा सुनो उदार॥
विप्र जीव है कूप तन आयू लता महान। कूपमध्य जो व्याल सो काल कराल अमान॥
संवत्सर सो द्विरद है ऋतु मुख द्वादश मास। मूषक निसुदिन तौन है सुनो भूप मतिरास॥
कामादिकते भव रहै कामाशा मधु तौन। नृप एहि वन परि सुखित सो आशहि जीतै जौन॥
यह सुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे कहौ फिरि तात। महा गहन संसारकी कछु वार्ता अवदात॥
कहे विदुर यह वचन सुनि भूप सुनो मनलाय। रूपवान चर अचर जे प्रगटत हैं इत आय॥
शब्द स्परश अरु रूप रस गन्धमए सब होत। व्याधिजरावश होत सब सबको नाश तनोत॥
रथ शरीर अरु सारथी शील सुनो मतिमान। कर्म बुद्धि है बाग सब इन्द्री तुरंग अमान॥
जात जितै इन्द्री तितै गौन करत है तौन। एहि संसार सुचक्रमें भमो करत है तौन॥
जो रोकतपै नहिं रुकत इन्द्री यह सुंहजोर। सोऊ भरमत पै न तेहि व्यापत मोह अघोर॥
ताते सर्व प्रयत्न करि इन्द्रिय जीतत दक्ष। रहत सदा सन्तुष्ट सो मोदत दोऊ पक्ष॥
जे नहिं जीतत इन्द्रियन करत लोभ वश काज। भूपति आपुनके सरिस ताको होत अकाज॥
दुःखव्याधिको एक है औषध ज्ञानमहान। दुःख व्याधि बरधित करन कुपथ बिसन अज्ञान॥
जे नव साधन परम हय शान्ति रज्जु अवदात। मानस धितिरथ चढ़ि चरत ते उत्तमपद जात॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतमात्रकहं महा भय मरण सुनो नृप मर्म। ताते सिगरे भूतपहं दया करव अति धर्म ॥

चौपाई ॥

ऐसे बचन बिदुरके सुनिकै। भूपति मरण सुतनको गुणिकै ॥ गिरो भूमिपर मूर्छित ह्वैकै। दुचित भए सब सो गति ज्वैकै ॥ भे सीचत गुलाबके पानी। बीजन किए परमहित जानी ॥ कछु छिन गए चेति नरनायक। कियो बिलाप महा दुखदायक ॥ नृप बिलाप सुनि व्यास सुनीशा। कहे शोक त्यागौ अवनीशा ॥ मृत्युलोक यह इत गति ऐसी। नचति रहति निति मृत्यु अनैसी ॥ जाते मरे न सो बिधि लोचत। जब मरि गयो न तब बुध शोचत ॥ नहिं तुम प्रथम मरण बिधि वारे। अब कत शोचत भए दुखारे ॥ तुम तो भूप परम मेधावी। मतिहि पलटि प्रगटति है भावी ॥ देवनको ईछित जो कारज। सो हम प्रगट सुने सुनु आरज ॥ हम हे गए सभा सुरपतिके। तहां रहे सुर मुनिवर मतिके ॥ तहां आइ पृथ्वी सुरगणसों। कहत भई अति मोदित मनसों ॥ बिधि ढिग मम कारज करिबे की। किए प्रतिज्ञा धुर हरिबेकी ॥ करौ शीघ्र सो सुमन समाजा। यह सुनि बिष्णु कहे सुनु राजा ॥ अब तो काज करी कछुदिनमें। जो दुर्योधन नृप नृपतिनमें ॥ करि लघुभार करिहि सो परणी। यह सुनि गई मुदित ह्वै धरणी ॥

दोहा ॥

बिधि सुर सुरपति बिष्णु को यह सम्मत हो भूप। कहो तौन कैसे टरै युद्ध भयानक रूप ॥ है कलियुग को अंश नृप तोसुत जेठो जौन। क्षत्र वंश को नाश यह हठि करवायो तौन ॥ कर्ण शकुनि दुश्शासनौ ताही के अनुरूप। तथा होत परजा सखा यथा होत है भूप ॥

रोला छन्द ॥

सुसुनि नारद सबिधि जानत भूप यह बिरतान्त। भयो दुर्योधन नृपति सब जगत को किरतान्त ॥ सुनो ताते धीर धरि अब तजौ शोक सरूप। पाण्डवन कहं पुत्र जानौ धर्म शील अनूप ॥ शास्त्रबिधि सब मर्मज्ञाता धर्म भूप सधर्म। करिहि सेवन आप को निति सहित आदर पर्म ॥ शोकबस जौ मरौगे तुमदुइ दम्पति तात। धर्मनृप तौ शोक गहि नहिं राखिहै निज गात ॥ धर्म नृप पहं दया गहिकै सुहृदसुत अनुमानि। भूप राखौ प्राण मम मत मानि बिधि गति जानि ॥ धीर धरि तजि शोक अब करतव्य तप चिरकाल। परम प्रज्ञा बिपिनि मधि बसि सुनति सुनि गण नाल ॥ व्यासके ए बचन सुनि नृप कहे करि अनुमान। आपको मत समुझि अबहम सहब शोक अमान ॥ धीर धरिकै समुझि बिधि गति करब धारण प्रान। पूर्वइत कृतकर्मको फल भयो और न आन ॥

दोहा ॥

भूपतिके ए बचन सुनि व्यास मुनीश महान। कहि नृपसों निजआश्रम गे ह्वै अन्तर ध्यान ॥

स्वस्ति श्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे विशोकपर्वनाम प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥

माघ शुक्ल ९ चन्द्रवासरे संवत् १९३० वि०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

स्त्री पर्व दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । वन्दि गिराव्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥
भूभृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनत यह भाषा भारत महान ॥
जेहि रघुवरप्रभुके चरित बहुशतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा विरचिमुकुन्द ॥
पारथ के स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारत भाषा रूप ॥

सोरठा ॥

वन्दौं कपिवर वीर रामपरम प्रिय पारषद । मंगलमूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ वर ॥
सुमुरिउच्छलनिअच्छ उदधिउलंघनसमयकी । भारतसमुद्रतच्छ भाषा करि चाहत तस्यौ ॥

दोहा ॥

जेहि सकलाकी शुचिकला सकला इस्त्रीभेद । ताहि सुमिरि इस्त्रीपरव भाषा रचत अखेद ॥

जनमेजयउवाच ॥ चौपाई ॥

व्यास गए ह्वै अन्तरध्यान । तब का कियो भूप मतिमान ॥ अरु पाण्डव जो किए सचाय । मुनिवर सो सब कहौ बुझाय ॥ सुनि वैशम्पायन अनुमानि । कहे सुनो नृप धीरज आनि ॥ तेहिक्षण संजय समय विचारि । कहे भूप अब धीरज धारि ॥ उत चलिकै करि हियो कठोर । कीजै प्रेतकर्म अति घोर ॥ सुनि संजयके ऐसे वैन । गिरो नृतक सम भूप अचैन ॥ महामोह वश नृपहि निहारि । बोले विदुर नीति निरधारि ॥ भूपति उचित न ऐसो शोक । समय पाय विनशत सब लोक ॥ प्रथम अभाव होत फिरि भाव । फिरि अभाव यह अमिट प्रभाव ॥ मरो फिरत नहिं कीन्हें शोच । ताते तजौ शोच गुणि पोच ॥ मरि रणमधि ते सुरपुर भोग । करत न अब सब शोचनयोग ॥ यज्ञ दान तप मख करतार । नहिं तिमि पावत स्वर्ग विहार ॥ जेहि विधि स्वर्ग लहत है शूर । औरहि दुर्लभ सो सुखपूर ॥ क्षत्रिहि युद्ध परम गति भूप । तज्यौ शोच धरि धीर अनूप ॥ लहे स्वर्ग सब पालि सुधर्म । अब चलि करौ उचित जो कर्म ॥ नृप यह सुनिकै भूप विचारि । चढ़े सुरथ पर समय निहारि ॥ भूपतिको अनुशासन पाय । रुदन करत गान्धारी आय ॥ कुन्तिहि आदि युवति समुदाय । पीड़ित करत प्रलाप अचाय ॥ चढ़ि सुरथन पर विकल अचेत । नृपसंग चलीं जहां रणखेत ॥ रहीं जिती कुरुकुलकी नारि । रुदत चलीं अति दुख विसारि ॥ नृप तेहि समय रुदनको शब्द । जानि परो अब बेधत अब्द ॥ जे नृप पत्नी सुष भा मूर । जिन्हैं न कबहूं देख्यो मूर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिन्हैं लखैं सब जन तेहिकाल। व्याकुल रोदन करत कराल ॥ तजे अभूषण छूटे केश। एक बसन धारे गतबेश ॥ चलीं पयादे सहसन बाम। करत प्रलाप पूरि दुखदाम ॥ नाथ नाथ कहि रुदत अचाय। उर शिर ताड़त लाज बिहाय ॥ महा मोहबश बिकल अचेत। गिरत उठत उत जैबे हेत ॥ नाथ बन्धु पितु सुत सुत टेरि। रोदत चलीं दुसह दुख मेरि ॥ एकहि एक नाहिं लपटाय। रुदन करैं अतिशोक बढ़ाय ॥ गहे एक एकनिको पानि। चलैं बुझावत बिधि अनुमानि ॥ एहि बिधि युवतिन सहित नरेश। पुरबाहेर भो भरो कलेश ॥ शिल्पी बणिक सुद्र गतरंग। रोवत चले भूपके संग ॥

दोहा ॥

इमि पुरते कढ़ि कोश भरि आयो नृपति अचाय। कृप कृतबर्मा द्रोणसुत तहां मिलत भे आय ॥
बारिधार चखसों तजत ते चय सुभट अखेद। कहत भए धृतराष्ट्रसों गहे महा निरबेद ॥
नृप तोसुत बन्धुन सहित सहित सखा बलऐन। क्षात्रधर्म प्रतिपाल करि सुरपुर गयो ससैन ॥

चौपाई

एहि प्रकार भूपतिसों कहिकै। ते चय योधा धीरज गहिकै ॥ एहिबिधि गान्धारीसों भाखे। तो सुत सुभट स्वर्ग अभिलाखे ॥ लरि निर्भय धरि धनुबिधि शोधन। करि बिक्रम बधि अगणित योधन ॥ तन तजि तजि भिदि आयुध घातन। धारि दिव्य पूरित परभातन ॥ दाता शूर अभय कृतकारज। सुरपुर बिलसत सुरसम आरज ॥ क्षत्रिहि अति उत्तम गति तैसी। तोसुत सदल लहे गति जैसी ॥ निरखि भूपको निधन अनैसो। हम फिरि कीन्हें कारज ऐसो ॥ निशिमें पाण्डु सैनमधि धसिकै। ह्वै अतिचपल रुद्र सम लसिकै ॥ धृष्टद्युम्न आदिक पांचालन। बध्यो बध्यो सब दल पण पालन ॥ द्रुपदसुताके सुतन संहार्यो। करि निश्शेष शत्रुदल मार्यो ॥ यहि बिधि श्रुतिसुख नृप श्रुति डार्यो। सुनि सुद गहि नृप स्वर्ग पधार्यो ॥ शोक त्यागि उर धीरज आनौ। क्षात्रधर्मकी बिधि अनुमानौ ॥ अब यह सुधि सुनि पाण्डव ऐहैं। लखि हम कहं फिरि युद्ध मचैहैं ॥ ताते अब हम नहिं इत रैहैं। बिदा करौ कहुं अनतै जैहैं ॥ इमि कहि बिदा भए दुख भरिकै। सादर नृपहि प्रदक्षिण करिकै ॥ कृप कृतबर्मा अश्वत्थामा। सुरसरि ओर गए बलधामा ॥

दोहा ॥

कृपाचार्य्य रथ हांकिगो हास्तिनपुर तेहिधाम। जात भयो निज नगरप्रति कृतबर्मा मतिधाम ॥
जात भयो मुनिव्यासके आश्रम सुरसरि तीर। सुरथ हांकि अति बेगसों द्रोणतनय रणधीर ॥
अनुदित रबिके द्रोणसुत गो सुरसरितट भूप। तदनु जाय भीमादि तहं लीन्हें सुमणि अनूप ॥

रोलाछन्द ॥

सहित युवतिन दृढ़ नृपको आगमन तेहि याम। सुन्यो धर्ममहीप बन्धुन सहित दुखसों छाम ॥ सुभट सात्यकि भट युयुत्सुहि सहित बल बुधिधाम। द्रोपदी अरु और जे पाञ्चाल गणकी बाम ॥ तिन्हैं सह बढ़ि धर्म नृप गे दृढ़नृपके पास। दुहूंदिशिके रुदन धुनिसों गयो पूरि अकास ॥ भए बन्दत पितहि कहि कहि परस्पर निज नाम। धर्म अर्जुन भीम सहदेव नकुल जय यशधाम ॥ पुत्र बध करता समुझि नृप गहे अतिशै कोप। भयो तिनसों मिलत कीन्हें कोप अघको गोप ॥ धर्म नृपसों मिलो पहिले रोकि दीरघ श्वास। फेरि भीमहि भयो टेरत गुणत कीबो नास ॥ कृष्ण आशै समुझि नृपको राखि भीमहि दूरि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीम आयस मयो आगे दए करि भयपूरि ॥ समुझि यह वृत्तान्त प्रथमहि भीमसम बरगात। लोहप्रतिमा बिरचि लीन्हें रहे अति अवदात ॥ मिलो तासों भूप गहिकै दाबि उर कोदण्ड। जानि भीम उदण्डबल करि करत भो बड़ खण्ड ॥ अयुत गजबल भूप कीन्हों दूतो बल तेहिकाल। कढ़ो शोणित बदन मग ह्वै लखत अति बिकराल ॥ दाबि प्रतिमहिं परो महि पर तौन संजय हेरि। पकरि भूपहि समित कीन्हों उचित सुवचन टेरि ॥ त्यागि तेहि गत क्रोध भूपति मरो भीमहि जानि। भीम हाहा भीम कहि भे रुदत करुणा आनि ॥ बिगत क्रोध बिचारि भूपहि कहे केशव बैन। भीम गुणि नृप बध्यो जेहि सो भीम योधा हैन ॥ दुसह बिक्रम आपु को गुणि समुझि यह वृत्तान्त। लोह प्रतिमा दयो हम मति शोच कीजै दान्त ॥ दूरि रहिकै आपुसों है भीम बांचो भूप। भीमको बध समुझि नृप मति होहु शोचित रूप ॥ शास्त्र हौ तुम पढ़े जानत बेद भेद विधान। सुने सकल पुराण शोखे राजनीति निदान ॥ योग्य और अयोग्य विधि जो तासु हौ ज्ञातार। करत इमि रिसि करत निज अपराध कौन विचार ॥ भीष्म हम अरु विदुर संजय कहे कितक बुझाय। धर्म बिक्रम शूरता में अधिक पाण्डवराय ॥ बलाबलहि बिचारिकै अरु देश काल निहारि। वैर प्रीति बिबेक करिबो उचित नृपहि सिहारि ॥ आपनो अरु औरको गुणि कर्म दोष अदोष। किएको फल लहे पर नहिं उचित करिबो रोष ॥ कृष्णके ए वचन सुनिकै भूप करि अनुमान। कहे केशव कहत तुम सों सांच सब नहिं आन ॥ नेहबश परि पुत्रके हम गह्यो कुत्सित टेक। आपु एहिक्षण कियो वारण बड़े अघको एक ॥ अङ्क लायो चहत हम अब पाण्डवन कहं तात। वचन यह सुनि मिले नृपसों भीम भट अवदात ॥ मिले अर्जुन मिलत भे फिरि नकुल अरु सहदेव। मिले रोदन करत भूपति भरे दुखके भेव ॥ पाय आज्ञा भूपकी तब कृष्ण पाण्डव साथ। गए ढिग गांधारजा के सुनो कुलकुल नाथ ॥ क्रोधबश गांधारजाकों जानिकै तेहिठौर। ब्याससुनि ह्वै प्रगट तासों कहत भे एहि तौर ॥ पाण्डवन पहं कोप अब मति करहु अनरथ ठानि। दया करिकै करौ रक्षण पुत्र आपन जानि ॥ लहे तो सुत दशा तैसी किए जैसी चाहि। विदुर हम तुम कहक बार बुझाइ हारे ताहि ॥ धर्म जहं जय तहां हम इमि कहे कैयक बार। युद्ध करि जय लहे पाण्डव धर्मके अधिकार ॥ मानिकै मम बचन अब निज धर्म कर्म विचारि। क्रोध तजिकै क्षमा आनहु दैवगति निरधारि ॥ ब्यासके ए वचन सुनि गांधारजा हित मानि। कहो मों मन होत विह्वल पुत्रबध अनुमानि ॥ बधव कै बधि जायबो लरि मिलत है गति एक। गए बधि मों सुवन जो गहि लरे अधरम टेक ॥

दोहा ॥

जूटि परस्पर लरि मरे नहिं याको कछु दोष। भीम बध्यो दुर्योधनहिं होत तौन गणि रोष ॥
दुरो तालमधि पुत्र मम ताहि प्रचारि निकारि। बध्यो गदा हनि जांघमें यह अधर्म पणधारि ॥

चौपाई ॥

सुनि गांधारसुताकी बानी। अति भय भरो भीम अभिमानी ॥ धीरज धारि नम्र ह्वै बोलो। देवि कही तुम वचन अतोलो ॥ करि अधर्म हम भूपहि मास्यौ। बिनु अधर्म नहिं जीति निहास्यौ ॥ पै यह समुझि क्षमा करु माई। हम पाल्यो निज पण प्रभुताई ॥ द्रुपदसुतहि दुःशासन ल्यायो। तब भूपति निज जांघ देखायो ॥ तब हम टेरि कह्यो इमि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपी तासु तिय रुदति ढिग चाहि दाहिबो अंग। उत्तम घरमें चहति है वास कियो पतिसंग ॥
सोमदत्त की तिय रुदति गहि पति सुतको शोक। पुत्रबधुनको रुदन सुनितज्यो चहति यह लोक॥
उभय भूप आवंतपति अरु केकय क्षितिपाल। अरु कलिंगपति मरि परो काहि न भक्षत काल ॥
जयत्सेन श्रुतिसेन अरु सल उलूक रणधीर। परे भूमिपर कालवश देखि होत अति पीर ॥
इनसबकी तरुणी तरुणि उरशिर ताड़ि समोह। रुदन करत कहि कहि बिकल नाथतजे ममछोह॥

रोला छन्द ॥

नृप दृढ़ह्वल परो महिपर भरो शोनित गात। घेरि ताकहं रुदति युवती शोक नहिं सहि जात ॥ द्रोणके दिव्यास्त्रकी झरि दुसह दाव समान। दहे तासों नृपनके सुतपरे ह्वै गतप्रान ॥ मत्स्य सृंजय अरु प्रभद्रक परे बेधितकाय। रुदत तिनकी युवति व्याकुल कहत बचन अबाय ॥ मरे नृप पाञ्चालके सुत सुभट हय गज भूरि। परे लुंठित जम्बुकनसों धूरि शोनित पूरि ॥ सुवन सब नृप सुतन के अरु पाण्डवन के बार। परे ह्वै गतप्राण महिपर ढारि शोनितधार ॥ कृष्ण आपुन की कृपा से पांच पाण्डव बीर। भीष्मद्रोणादिकनसों बचि रहे योधा धीर ॥ बिदुर भीषम व्यास संजय कहे आगम जौन। किए हठ गहि कर्म प्रगटित भयो आपद तौन ॥ भाषि इमि गांधारजा ह्वै मोह बस तेहिकाल। परी महिपर मृतक सम ह्वै मनहु गरस्यो काल ॥ चेति छिनमें भूप पतनी भूरि ईर्षा भारि। कृष्णसों इमि भई भाषत महा रिसि बिस्तारि ॥ कृष्ण अनरथ चाहि कारि परिपञ्च बैर बढाय। नाश करवाये यथा मम बंशको गहि चाय ॥ तथा अबसों गए छत्तिस बरिष सब तोबंश। आपुसै मों लरि मरैं गे पूरि तामस अंश ॥ सखा सुत परिवार सब लरि मरैं गे करि द्रोह। पाइ हैं जो युवति मम सम छोह उद्भव मोह ॥ बचन यह गान्धारजा को कृष्ण सुनि लहि चैन। कहे हम यह रहे चाहत कही तुम जो बैन ॥ रह्यो जगमें और नहिं जो शस्त्रके उपचार। करै लरि कै युद्धमें यदुवंश को संहार ॥ सुनो ताते नाश तिनको करण परतो मोहि। तौन विधि तुम करो कलपित मनहुं मम मत जोहि ॥ कृष्णके ए बचन सुनिकै सुहित पाण्डव बीर। नाश यदु कुलको ससुझिकै भए दुखित अधीर ॥ फेरि इमि गान्धारजासों कहे कृष्ण अबाध। नाश भो कुरु बंशको तो भूपके अपराध ॥ कुटिल कपटी अधम द्रोही दुष्ट तेरो पुत्र। होइ कत नहिं इतो अनरथ जहां ताको सुत्र ॥ बचन यह सुनि रही चुप ह्वै भूमिपतिकी नारि। नृप युधिष्ठिरसों कहे तब दृढ़ भूप बिचारि ॥ जीव कितने तजे तन रणखेतमें लहि घात। कहौ तौन प्रमाण सो जो तुम्हैं जानोजात ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ दोहा ॥

साठिकोटि षटकोटि अरु बीस सहस दशलाख। तीससहस अरु पांचशत भट जयके अभिलाख ॥
मरे सुभट हय द्विरद को नहिं कहि सकै प्रमान। यह सुनिकै धृतराष्ट्र नृप कहे सुनो मतिमान ॥
लहे कौन गति ते सकल कहौ तौन ससुझाय। यह सुनिकै पाण्डव नृपति कहत भए हरषाय ॥
जे सुद गहि लरि बढ़ि मरे ते पाए सुरलोक। मरे धर्म गुणि ते लहे पुरगांधर्व अशोक ॥
जे भय गहि कछु सुरि मरे ते गे गुह्यकधाम। मरे लरत बिनु ते सबै गे उत्तर कुरु ग्राम ॥
घायल भए निरा युधौ बढ़ि बढ़ि मरे सप्रेम। ब्रह्मसदन ते जात भे क्षत्री शूर सनेम ॥

जयकरी छन्द ॥

यह सुनिकै धृतराष्ट्र महीप। कहत भए सुनु सुत कुलदीप ॥ कौन ज्ञानते यह सिद्धान्त।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम जानत सो कछु है दान्त ॥ यह सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। जब तुम शासन पाय अनूप ॥ तहां आइ लोमस तप अंग। तीरथ यात्रा के परसंग ॥ दिव्य दृष्टि दीन्हें गहि नेत्र। ताते हम जानत सब एत्र ॥ इमि कहि कै नृपधर्म विचारि। कहे विदुरकी ओर निहारि ॥ तुम युयुत्सु अरु संजय तात। इन्द्रसेन आदिक अवदात ॥ सूत सेवकन लै निजसात। जारौ सब सुभटनको गात ॥ यह सुनि बिदुर आदि सबलोग। करि घृत ईंधन को संयोग ॥ पृथक् पृथक् रचि चिता सुजान। पहिले लखि लखि पुरुष प्रधान ॥ जितने नृप नृपपुत्र समस्त। जास्यो तिनको गात प्रशस्त ॥ लहि निज सुत पति करत कराह। कीन्ही अगणित युवतिन दाह ॥ फेरि जुगुतिसों काठ धराय। डारि तेल घृत अग्नि लगाय ॥ जारे सब मनुजनके अंग। कहैं कहांलों तौन प्रसंग ॥ धूम धारसों भरो अकाश। नहिं इमि कबहुं भयो जननाश ॥ इमि कहि वैशम्पायन आप। कहत भए उर आनि उताप ॥ भई रजनि तब नृप धरि धीर। गे युवतिन सह सुरसरितीर ॥ तहां उदकविधि कीन्हीं वाम। रुदन करत गहि शोक अछाम ॥ श्रुति नासा कर भूषण त्यागि। उदक दान कीन्हीं दुखपागि ॥ तेहिक्षण कुन्ती करि अनुमान। रुदन करत करि मनहि मलान ॥ कही धर्मनृपसों गहि मोह। पीड़त मोहिं कर्णको छोह ॥ मम गुरुपुत्र कर्ण रणधीर। बन्धु तुम्हार विदित बर वीर ॥ कुण्डल कवच धरे अभिराम। जो प्रगटो बल विक्रम धाम॥ कर्ण तुम्हार सहोदर भाय। वध्यो जाहिपारथ दृढ़घाय ॥ यह सुनि नृप गहि परम उताप। कहे जननिसों करत प्रलाप ॥ किमि तो पुत्र कर्ण कछु तौन। तब सो कहीरही विधि जौन ॥ सो सुनि नृप अतिदुखसों पूरि। कहत भए करि करुणा भूरि ॥ प्रथम न कहे मातु यह हेत। होत कहा अब कीन्हे चेत ॥ जौ यह देती प्रथम जनाय। तौन होत विग्रह यह भाय ॥ इमि कहि बन्धुन सहित नरेश। कर्णहि दए तिलांजलि वेश ॥ तासु कलत्र ल्याय निज गेह। किए अनन्तर क्रिया सनेह ॥ सुनो भूप तेहिदिनको खेद। समुझत अजहुं होत निर्वेद ॥

दोहा ॥

राम कृष्ण जो चहत सो होत होत नहिं आन। रामहि कृष्णहि जपत जो सो प्रवीण मतिमान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेस्त्रीपर्वप्रथमोऽध्याय: ॥

सम्पूर्ण समाप्त:

फाल्गुण कृष्ण चयोदश्यां शनिवासरे संवत् १९३० वि०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पणे ॥

शान्ति पर्व राजधर्म दर्पणः ॥

दोहा ॥

करिप्रणाम नारायणहि नर नरोत्तमहि नौमि । वन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥

कवित्त ॥

धाम आपने को धाम धाम धाम पूरणकै धारत धरणि जो बसै आधाम धामको । याम याम जाको यश जल सब याम जमो जाहिर जगत है जगै आजाम यामको । सोई अभिराम राम दायक अराम मोहि गोपीनाथ सुनि गावै भेद याके नामको । मत्स्य कोल कछप औ नारसिंह बामन त्यों भृगुराम राम कृष्ण बौद्ध बलिरामको ॥ अपर वारिजातिहूं ते अवदात गात हैं बिभात सोतै सम शील सिन्धु सांई के शयनके । सुनि मनरंजन प्रभंजन तनैके प्राण खंजनते नीके हैं अखंजन नयनके । साधी गोपीनाथके प्रमाथी वीररस भरे हाथीके चढ़ैया कृपा कारणी कयनके । ऐन सुषमाके जैन मैनहूके नैन ऐन चैन दशु नैन राम राजिव नयनके ॥ अकथ कहानी मोसों जाति न बखानी कछु जानती हैं ज्ञानी जेहैं ध्यानी सब यामके । जन मन रंजन मुदित महा मोहन है शोभाके सदन सदा शीतक हैं सामके । गोपीनाथ कवि कामधेनु कलपद्रुमसे कौतुक करत दाता कमनीय कामके । दैतनको नरसिंह नखसे अनख भारे साधुनके रखवारे चख रामके ॥ रङ्क भे निरङ्कनोकता से वङ्क वकता जे लङ्कपति आदि हे निशङ्क कीन्हें तचना । स्वान मघवान को महान भो अमान महागान सो करत हैं जहां न मानि जचना । गोपीनाथ करता सनाथ कौन तोसो नाथ जाहिर सुकण्ठ औ बिभीषण की रचना । रोचनता गहे चारु लोचन तिहारे राम मोचन सुलोचनके शोचनकी सचना ॥ कछु कमनीयता औ मछु खच्छ धरममें शील सिन्धुकछु जासु पलकै सुभेशके । रच्छ काम क्रोधसो अगछ चाव यच्छ वान दच्छजारमन अच्छ भोगी जेहि देशके । यच्छणके नाथ होत लच्छण हे गोपीनाथ तच्छण निरखि जासु लच्छण अशेषके । पच्छ निज जनके प्रतच्छ दच्छ रच्छणमें लच्छ दशमच्छ राम अवधेशके ॥

दोहा ॥

कपिकुलकाननकल्पतरु कविकुलनायकस्वच्छ । सुमिरिताहिचाहतरच्यो भारत भाषास्वच्छ ॥

सोरठा ॥

सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधिउलंघन समयकी । भारत समुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहततस्यो ॥

कवित्त ॥

गोपीनाथनन्दन प्रभंजनको लङ्का बीच कूदो देखि साहस सरासरके सरके । तालदेत जाके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालकालको कराल भयो छूटिगे हथ्यारजे कराकर के करके । खलभलह लङ्के खलनके दहलके महलके बराबरके बरके । डरि डरि ढरि गये अडर डराय ठह ठर ठरके धरा धरके धरके ॥

अपरं ॥

गोपीनाथ आन न समान जासु बलवान बीर हनुमान जासु धरणी सुढारसी । बानन बिधानन अमाननके प्राणन के हरता के करता कुशलता टुटारसी । शक्र सान भाननकी दैत पञ्चाननकी बाणि धाम सानननकी करता रुढारसी । धीग धांक टाननकी हांक बिकटाननकी कानन दशाननके कानन कुढारसी ॥

कवित्त ॥

धरखि धकेतन बधै तनको वधकरि कर तास धूमधाम रावणके धामको । तीक्षण निरीक्षण ह्वै ग्वै ईक्षणकी बीक्षणसों शीक्षण रुदन अरुराधिपकी बामको । दोना सम लायो द्रोणाचल जो दुवन दौनावीर बातकौना जोना भूलै प्रण रामको । गोपीनाथ कोमल कठिन कमनीय जौन करता कहायो कल्पद्रुमके कामको ॥

दोहा ॥

परब्रह्म परमात्मा दाशरथी प्रभु दान्त । ताहि सुमिरि भाषा रचत शान्तिपर्व सिद्धान्त ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥

सुरसरितटपाण्डवनृपति उदकक्रियाकरिभूप । सहितबिदुरधृतराष्ट्रअरु सहसबतियगतरूप ॥
मास एक निवसत भए पुरके बाहेर जाय । व्यासदेव आए तहां अरु नारद सुखदाय ॥
देवल देवस्थान अरु कण्व महामुनि राज । और बेदबिद बिप्रवर प्रज्ञावान दराज ॥
शिष्यन सह आए तहां सुनो भूप तेहि पर्व । देश काल अनुरूप ह्वै पूजित बैठे सर्ब ॥
शोकाकुल कुरुपति नृपहि करि आश्वासित तत्र । नारदमुनिबोले सुनहु नृप करि मन एकत्र ॥

जयकरीछन्द ॥

तुम अति भाग्यवान नृपधर्म । केशव जासु सहायक पर्म ॥ निज सुधर्म बलते तुम भूप । प्रबल शत्रु बधि बिजय अनूप ॥ पाय गहत अब कत निरबेद । जय लहि क्षत्रिहि उचित न खेद ॥ तुम बहुदिन पाले निजधर्म । उन सबदिन कीन्हें हटकर्म ॥ तुम सब बिधि उन कहं समुझाय । नहिं माने तब लरे सचाय ॥ क्षात्रधर्म करि महि श्री पाय । अब इमि खेद करब अनिआय ॥ क्षात्रधर्मको करि अनुमान । मोद गहौ गुणि भाग्य महान ॥ यह सुनिकै नृपधर्म बिचारि । मुनिसों कहत भए निरधारि ॥ कृष्णकृपा अरु बिप्र प्रसाद । भीम आर्जुनके बल नाद ॥ पाय बिजय भू लही समस्त । प्रबल शत्रु दलबल करि अस्त ॥ पै मुनि मोहिं दुसह दुख तौन । ज्ञाति बन्धुको क्षय भो जौन ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु उदार । भीषम द्रोण आदि सरदार ॥ कर्ण बिदित बल सोदर भाय । गुणि तिहिको न बखानो जाय ॥ मुनि इन सबको बध करवाय । बिजय लह्यौ दारुण दुखदाय ॥ यमजाया सम बिजय कठोर । समुझि समुझि बिहरत हियमोर ॥ पतिसुत जिनके मरे बिचारि । किमि धीरज धरि हैं ते नारि ॥

दोहा ॥

सुमुखि सुभद्रा द्रुपदजा कैसे धरिहैं धीर । मरे परमप्रिय जासु सुत बिदित बीर रणधीर ॥

जयकरी छन्द ॥

अयुत नागसम बली अमान । मरो कर्ण मम बन्धु महान ॥ प्रथम न हम यह जान्यो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाय। कर्ण हमारो सोदरभाय ॥ पूर्व कह्यो नहिं माता मोहि। यह वृत्तान्त कहत सति तोहि ॥ नातरु तासों हेत बढ़ाय। देइत आपद बिघन बराय ॥ मरो आरजुनके कर जौन। परशुरामसों शिक्षित तौन ॥ भृगुपति कर्णहि दीन्हों शाप। सुनि हम सुनें कहो सो आप ॥ काहे शाप दयो भृगुराम। लहि ऐसो प्रिय शिष्य सकाम॥ यह सुनिकै नारद मतिऐन। धर्मनृपतिसों कहे सुबैन ॥ द्रोणाचारय सों तुम सर्व। धनुविधि सीखत रहे अखर्व ॥ तब एकान्त द्रोण कहं पाय। कर्ण कह्यौ करि बिनै सचाय ॥ सहरहस्य ब्रह्मास्त्र बिख्यात। हम सीखो चाहत हैं तात ॥ अर्जुनके सम करिबो युद्ध। हम चाहत हैं गुरता शुद्ध ॥ यह सुनि द्रोण कपट गुनि तास। कहत भए करि क्रोध प्रकास ॥ हैं ब्रह्मास्त्र बिप्र कहं योग। अथवा क्षत्रिहि उचित प्रयोग ॥ नहिं शूद्रहि ताको अधिकार। निज लायक गुण लेहु उदार ॥ यह सुनि कर्ण जानि सिद्धान्त। जात भयो पहं भृगुपति दान्त ॥ हे महेंद्रगिरिपैं भृगुराम। गो तहं सुमिरत रघुवर राम ॥

दोहा ॥

निकट जाइ भृगुरामके करिप्रणाम मतिधाम। हम ब्राह्मण इमि कह्यौ सुनिकृपा कियो भृगुराम॥
नामगोत्र सब बूझि अरु बूझि आगमन हेत। लगे सिखावन धनुषविधि धनुविधि बिशद निकेत ॥
देव यक्ष गन्धर्वगण राक्षस गणसों तत्र। भयो समागम कर्णसों भृगुपति बिलसत यत्र ॥
एक दिवस शर धनुषगहि करण चरत बनबीच। बिप्रधेनु लखि जानि मृग शर हनि बधो न भीच॥

रोला छन्द ॥

जाय कै ढिग धेनु लखिकै मनहि मन पछिताय। मुनिहि क्रोधित देखिकै इमि कहत भो गहि पाय ॥ भ्रान्ति मृगके वध्यौ हम एहि क्षमा कीजै तात। बड़ेनके हिय क्षमा निवसति लघुनके उतपात ॥ भ्रान्तिवश कृत कर्म लखि नहिं दोष मानत दान्त। बिनै मम सुनि क्षमा कीजै समुझिकै सिद्धान्त॥ करणके सुनि बचन बोलो बिप्र पूरित क्रोध। औगि है वध योग शठ तू मूढ़ मत्त अबोध ॥ जानि जीतन हेत शठ तू करत धनुषाभ्यास। जूटि है जेहि देव तासों आनि जयकी आस ॥ प्रगट ह्वै है तौन दिन यह पाप तो शिर घूमि। चक्र तेरे सुरथके गहि ग्रसन करि है भूमि ॥ तदनु तेरो शीष छेदन करिहि शत्रु अमान। कर्ण यह सुनि गुण्यौ भावी होति है बलवान ॥ भाषि इमि द्विज रहो चुप नहिं सुने ताके बैन। करण आयो रामके ढिग भरो शोच अचैन ॥ रहन लागो पूर्ववत फिरि रामके ढिग तौन। करत सेवा सविधि निशदिन उचित जेहि क्षण जौन ॥ देखि विक्रम बुद्धि गुण शुचि कर्म ताके राम। देत भे ब्रह्मास्त्र बिधिवत सहित अंग ललाम ॥ धनुषवेद पढ़ाय बिधिवत कियो अनुपम दक्ष। एक दिनको सुनो कौतुक भयो जो परतक्ष ॥ करणके धरि जानुपै शिर शयन कीन्हों राम। तहां आयो कीट शोणित अमिष आगी आन ॥ महा दारुण जानु वेधन लगो सो अध आय। धीर धरि नहिं जानु कम्पित कियो करण सचाय ॥ बही धारा रुधिरकी तब जागिकै भृगुराम। देखि शोणित भए बूझत तासु कारण छाम ॥ करण भाष्यौ कीट कीन्हो जानु वेधन तात। तुम्हैं निद्रित जानि हम नहिं कियो कम्पित गात ॥ राम देख्यौ कीट शूकर रूप बसुपदमान। दशन शूची सरिस तीक्षण रोम भयद महान ॥ लखतही भृगुराम के वह कीट भो गतप्रान। तुरित राक्षस रूप ठाढ़ो भयो घोर अमान॥ श्यामतन अरुनील ग्रीवा मेघ बाहन तौन। जोरि कर भृगुरामसों इमि कह्यो विक्रम मौन ॥ मुक्तभे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम नरक तें अब दरश प्रभु तुव पाय। देहु शासन जात हम निज देश शोच विहाय ॥ कहो तब भृगुराम को तुम असुर वपु है गूर्व। कह्यौ सो हम असुर है सुनु दंशनामक पूर्व ॥ देवयुगमें हरी भृगुकी तिया हम मतिमन्द। पाय भृगुको शाप तब भे कीट रूप सदन्द ॥ बिनय बहु सुनि शापको सुनि अन्त भाषे टेरि। पाय दरशन रामको तुम असुर ह्वै है फेरि ॥ पाय दरशन आपके मम छुटो अघको धर्ष। भाषि ऐसे नौमि रामहि गयो असुर सहर्ष ॥ क्रोध करि तब राम भाष्यो करणसों तेहिकाल। बिप्र नहिं सहि सकत ऐसो दुसह दुःख कराल ॥ गहत ऐसो धैर्य क्षत्री कौन तू कहु सांच। बचन यह सुनि करण भाष्यो पाय तपकी आंच ॥ ब्रह्म क्षत्री मध्य मैं लहि जन्म हम है तात। राधेय सूतज करण हैं सब जगत में बिख्यात ॥ अस्त्रके बर लोभ काजे हम छिपाई जात। क्षमा करिये दोष मेरो कृपा करि अब-दात ॥ पिता गुरु मैं भेद कछु नहिं जानि हम यह हेत। गोत्र तब सो कह्यौ आपन प्रथक् करिकै चेत ॥ अस्त्रलोभी दास हम प्रभु क्षमो मम अपराध। भाषि इमि ह्वै नमित महिपरि करत भो अवराध ॥ कहो तब भृगुराम जेहि हित कही मिथ्या मोहि। समै लहि ब्रह्मास्त्र सो नहिं प्राप्त ह्वै है तोहि ॥ जाहु अब नहिं मोहि भावत कहत मिथ्या जौन। होहुगे तुम महा उद्भट परम बिक्रमभौन ॥ बन्दि रामहि आइ निजपुर करण भट शिरताज। कह्यौ नृपसों लहे हम सब अस्त्र शस्त्र समाज ॥ करण एहि बिधि रामसों लहि अस्त्रबिधि अरु शाप। भयो कुरुपति साथ राजित भरत दारुण दाप ॥

दोहा ॥

सुनो भूप अब कर्णके बिक्रमके इतिहास। जो कलिंगपुरमें कियो दुस्तर बीर बिलास ॥ रच्यो स्वयम्बर सुताको चित्रांगद क्षितिपाल। आए तहं राजा सकल जे भट बीर बिशाल ॥ कर्ण सहित तहं जात भो दुर्योधन क्षितिकन्त। रंगभूमिमें आइ तहं बैठे नृपति अनन्त ॥ जरासन्ध शिशुपाल अरु भीष्मक नील शृगाल। महाबली नृपभोज अरु अरु बिशोक क्षितिपाल ॥ अरु कपोतरोमा नृपति शतधन्वा महराज। और तहां बैठत भए अगणित भूप समाज ॥ कन्या तहं आवति भई गहि जयमाल अनूप। रंगभूमि महिमधि चली बिरद सुनत लखि रूप ॥ दुर्योधनको पास लहि बंश बिरद सुनि तासु। नहिं मेल्यो जयमाल तिहि चली औरिपै आसु ॥

चौपाई

सो न सको सहि नृप दुर्योधन। कन्याको कीन्हों अवरोधन ॥ पाणि पकरि रथ पर बैठाई। चलो कर्ण सह ओज बढ़ाई ॥ सो लखि सब राजा रथ चढ़ि चढ़ि। चले भटन सह टेरत बढ़ि बढ़ि ॥ सो सुनि फिरो कर्ण सह राजा। बर्षत अबिरल बिशिख समाजा ॥ भूप भई तहं तुमुल लराई। अति रण कियो कर्ण दृढ़घाई ॥ रथ धनु ध्वजा गदा शर रूरे। अगणित शक्ति काटि महि परे ॥ अगणित हय गज सूतन बधिकै। अगणित योधन मारि बरधिकै ॥ निशिसम अन्धकार अति भरिकै। तुमुल युद्ध कीन्हों तहं थिरकै ॥ जीति पराजित करि सब राजन। चलि बजवावत बिजई बाजन ॥ रचत दुर्योधन क्षितिपालहि। आयो हास्तिन नगर बिशालहि ॥ ऐसो करण दुसह रण करकस। रहो बिदित भट बली अधरकस ॥ और सुनो ताकी प्रभुताई। कहत सांच नहिं झूठ बड़ाई ॥ कर्ण वीर को बिक्रम सुनिकै। जरासन्ध नृप जियमें गुणि कै ॥ कर्णहि बोलि आपु बढ़ि आगे। कीन्हो द्वन्दयुद्ध भय त्यागे ॥ प्रथम सुरथ चढ़ि शर धनु गहि गहि। कीन्हो युद्ध भागु मतिकहि कहि ॥ दिव्य अस्त्रकी बर्षा धरि धरि। दिव्य अस्त्र सों बारन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि करि ॥ दोऊ घोर युद्ध तहं करि कै । ह्वैह्वै विधनु खड्ग कर धरिकै ॥ महा युद्ध करि गौरव लीन्हे । बाहु युद्ध फिरि रम्भन कीन्हे ॥ नृप तब कर्ण महाबल चीन्हों । दाबि सन्धि सन्धित करि दीन्हों ॥ तेहि क्षण लखि विकार निज तनको । तज्यो युद्ध नृप ह्वै ऋजु मन को ॥ सादर कर्णहि भयो सराहत । हम प्रसन्न इमि कह्यो उछाहत ॥ नगरि मालिनी पति करि सादर । अंगदेश दीन्हो करि आदर ॥ तबसों करण भूमिपति ह्वैकै । कुरुपति संग लसो सुद ग्वैकै ॥ करण सकल जग जीतन लायक । जो नहिं शाप देत भृगुनायक ॥

दोहा ॥

विप्र न देतो शाप जो कवच न लेत सुरेश । तौ को लरि कै करणसों लहत विजय को लेश ॥
क्षात्रधर्म प्रतिपाल करि मरो युद्ध में तौन । क्षत्रिहि उत्तम और नहिं शोच करत हौ कौन ॥
कुन्तीसुतसों बचन इमि कहिकै नारद प्रज्ञ । होय रहे चुप कछु न पुनि बोले सुनु धरमज्ञ ॥

जयकरीछन्द ॥

अति शोकाकुल सुतहि निहारि । पोंछति तजति चखनसों बारि ॥ कुन्ती कही तजो सुत शोक । कालसदनमें सबको ओक ॥ ताहि बुझायो हम बहुबार । सूर्य्य सुनायो गिरा उदार ॥ कर्ण नहीं मान्यो पण ठानि । शोक तजो ध्रुव भावी जानि ॥ सुनत बचन यह धर्ममहीप । चख जल तजत कह्यो कुलदीप ॥ यह वृत्तान्त करो तुम गुप्त । ताते यह दुख भयो अलुप्त ॥ सो गुणि शाप दियो करि कोप । तिय मति मंत्र सकै करि गोप ॥ इमि कहि शोक भरो कुरुभूप । भो सधूम पावकके रूप ॥ सो लखि अर्जुनको दिशि मान । कहत भयो ऋजु बचन महान ॥ राज्य लोभ लगि अनरथ भूरि । हम कीन्हों निरदय पण पूरि ॥ जो हम गह्यौ राज्यकी आश । ताते क्षात्रवंशको नाश ॥ भयो दोष ताते मम सर्व । हम लरि कियो कर्म अति खर्व ॥ बधि धृतराष्ट्र तनय सब भाय । लहब कौन गति कहो न जाय ॥ नात गोत हित बन्धु अनन्त । पुत्र सुपौत्र सखा क्षितिकन्त ॥ जाके हेत बधाये हाय । लहब कौन सुख सो महि पाय ॥ मोदत खान चाबि जिमि अस्थि । तिमि एहि राज्य मही सुख अस्थि ॥ सो यह राज्य न भावत मोहि । बन्धुवर्ग बिनु अवनी जोहि ॥ दुर्योधन की मति अनुसार । क्षात्र वंश को भो संहार । तुम मम राज्य हेत अवदात । कीन्हे भूरि पराक्रम तात ॥ तुम अब लेहु राज्य अधिकार । पालौ प्रजा सहित ब्यौहार ॥ हम अब करब विपिनि मधि वास । सुनिन संग लहि परम सुपास ॥ मोहि न राज्य भोग को काम । इमि कहि मौन रहो नृप छाम ॥ धर्म नृपति के ऐसे बैन । सुनि बोले पारथ मति ऐन ॥ नीति निपुण तुम धर्म नरेश । जानत सकल धरम सविशेश ॥ कत भाषत जिमि कहत अयान । जे वैकल्य अरु क्लीव समान ॥ धरम पालि द्विज सम बन घूमि । क्षात्रधर्म करि दीन्हों भूमि ॥ तामें कौन पाप अधिकार । नशत काल लहि सब सन्सार ॥ जब जाके कर जाको घात । तौन होत कछु लहि उतपात ॥ सोई भयो न तो कछु दोस । नाहक भूप करब अपसोस ॥ प्रबल शत्रु बधि इमि जय पाय । खेद करब है अति अनियाय ॥ एहि विधि राज्य पायकै त्याग । करत न कोऊ पूरण भाग ॥ राज्य त्याग को देखि प्रयोग । तुम कहं कहा कहैंगे लोग ॥ जेहि लगि कीन्हें ऐसे कर्म । ताको त्यागब कौन सुधर्म ॥ कुटिल पापरत भूपति जौन । भिक्षा रटन करत है तौन ॥ दिन प्रति जासु वृद्ध अधिकात । ताको भाग्य परम अवदात ॥ ऋद्धि वृद्धि हित भूपति सर्व । निसु दिन शोचत नीति अखर्व ॥ दारिद सर्व पाप को मूल । दारिद है रौरव को कूल ॥ जिमि पापी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोचत दिन रैन। तथा दारिद्रहि कबहु न चैन ॥ भूपति भयो दारिद्री जौन। ताकी दशा सकै कहि कौन ॥ त्यागि सुधन दारिद सों प्रेम। करब न नीति निपुण को नेम ॥

दोहा ॥

सकै न कछु करि दारिद्री दोऊ दिशा नसात। होत सधन मतिमानकों दोऊ दिशि अवदात ॥
सधन पुरुषके सधत हैं अर्थ धर्म अरु काम। होत काज धनहीन को ग्रीषम सर सम छाम ॥
धनतें धन है होत अरु धनतें होत सुकर्म। धनतें प्रगटत धर्म जिमि गिरितें सरिता पर्म ॥
काम क्रोध अरु हर्ष मद धीरज बड़ो बिचार। धनतें प्रगटत भूप अरु सधत सकल उपचार ॥
सो पण्डित गुणवान गुरु दाता शूर सुजान। दास बन्धु हित तासु सब जो जगमैं धनवान ॥
गो हय सेवक बन्धु हित बिनुहै जो कृश तौंन। नहिं शरीर कृश तौंन कृश धन बिनु कृश सब भौंन ॥
मुनिनसंगमहिअजिनधरिदर्भकमण्डलुपानि। हौनो भूपहिउचितनहिं राज्यकरोहितमानि ॥

सोरठा ॥

अर्जुनके ए बैन सुनि सुधर्म रत धर्मनृप। मर्म सहित मतिऐन कहे कर्म बनबासके ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ रोला छन्द ॥

मूल दारिद पापको तुम कहे सति नहिं आन। सधत धनते काम सिगरो इहौ सत्य विधान ॥ सुनौ तौन गृहस्थको ए उभय सुख दुखदानि। भयो मृगबत बिपिनिबासी ताहि बन सुखखानि ॥ ताहि धनसों काम नहिं नहिं दरिद कछु दुख देत। ताहि देत दरिद्र दुख है जासु धनसों हेत ॥ औशि चहत गृहस्थकों धन बिपिनिबासी वारि। मूल फल कुश अजिनते सन्तुष्ट पुष्ट बिचारि ॥ सुनो ताते त्यागि ममता बसब बनमें जाय। धारि मुनि ब्रत मृगण संग करि मृगणसम दृढ़काय ॥ भूपके ए बचन सुनिकै भीमसेन सुजान। कहत भे अनखाय ऐसो कहत नहिं मतिमान ॥ रहौ ऐसी बुद्धि तुव तौ प्रथम कहते तात। ग्रहन करत न शस्त्रको हम होत नहिं उतपात ॥ भीखि मांगत मोक्ष हित नहिं करत दारुण युद्ध। जानि जौ यह परत भूपहि बिजै होति अशुद्ध ॥ छली गरबो प्रबल अरि धृतराष्ट्रपुत्रन मारि। लहब अब फल कौन तुम महि तजत धर्म बिचारि ॥ यथा प्यासो जाय सरतट फिरत पियतन बारि। वृक्ष चढ़ि मधुपाय जिमि मधु पियत नहिं भयभारि ॥ यथा सहसन कोश चलि तेहि नगरके ढिग जाय। फिरत प्रविशत नगरमधि नहिं महा भ्रम हिय छाय ॥ क्षुधित भोजन शिद्ध करि नहिं खात जिमि अनखात। यथा कामी तरुणि नहिं लहि करत रति तजि जात ॥ भई तैसी दशा मम लहि बिजै त्यागत राज। भलो हमकों हारिहो का बिजै लहि भो काज ॥ पाय ऐसो बिजै यश फिरि अयश चाहत लेन। कहत ताहि कपोत सब जो अमिष त्यागत मेन ॥ हारि सरवस किए तेरह वर्ष तब वनवास। युद्ध करि सो त्यागि चाहत फेरि बिपिनि बिलास ॥ सगर नहुष ययाति आदिक भूप करि रण भूरि। राज्य करिकै नरक पाये सुने निकटन दूरि ॥ महिष कोल बराह दुरदै मृगै पावत स्वर्ग। बिपिनि बसि अरु ग्राम्यजन सब लहत हैं अपवर्ग ॥ इहौ अबलौं सुने नहिं नहिं सुने करि सन्यास। वृक्ष सिगरे सुक्त भे तजि जगत जनको पास ॥ सुनो भूपति बसति नहिं गृह त्यागमें अति सिद्धि। सिद्धि बसति सुकर्ममें अरु पुण्यधनकी वृद्धि ॥ जीव सिगरे लहत हैं गति कर्मके अनुसार। सुनो नृप करतव्य ताते करम के व्यवहार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

भीमसेन के बचन ए सुनि अर्जुन मतिरास। धर्म नृपतिसों कह्यो नृप सुनो पूर्व इतिहास ॥

अर्जुन उवाच ॥

कोऊ विप्र गृहस्थ गुणि चलेबिपिनि गृहत्यागि। इन्द्रधारिखगवपु तिन्हैं निंदित भे हितलागि ॥

जयकरी छन्द ॥ खगउवाच ॥

धन्य विद्याग्रासी नर जौन। नहिं उच्छिष्ट भोजन कृत तौन ॥ सो सुनिकै ते विप्र सचेत। कहे विहग कछु याको हेत ॥ कौन विद्याग्रासी मतिमान। को उच्छिष्ट भोजन कृतवान ॥ पक्षी बोलो सुनो यथेष्ट। गऊ चतुष्पद हृदमें श्रेष्ट ॥ द्रव्यन में सुबरण बर होत। शब्दन में बर मंत्र उदोत॥ द्विपदन में बर विप्र महान। ता कहं वैदिक कर्म प्रधान ॥ ऋतु मासादिक व्रत मख सर्व। करै करावैं विप्र अखर्व ॥ यज्ञ स्वर्ग को पंथापर्म। ताते उत्तम वैदिक कर्म ॥ है गृह आश्रम महा अनूप। परम सिद्धिको क्षेत्र स्वरूप॥ देव पितरको अरचन यज्ञ। अतिथिन को आश्वासन तज्ञ ॥ सर्व कर्म को जहं अधिकार। ताको आश्रित सब सब सार ॥ जे विधिवत शुचि अन्न बनाय। देव पितर कहं अरपि सन्याय ॥ फिरि सादर आगतन खवाय। सह परिवार खात सुखपाय ॥ सुनो विद्याग्रासी ते ख्यात। लहत स्वर्ग ते अति अवदात ॥ जे उच्छिष्टआशी सुनु तौन। तजिकै गेह किए बन गौन ॥ तजि परिवार गहे सन्यास। देव पितर कहं किए निरास ॥ धूरि धूसरित गात मलीन। बनमें फिरत क्षुधाते क्षीन ॥ खग मृग क्षमिके जूठे पात। फल अरु मूल नित्य सो खात ॥ सो उच्छिष्ट भोजन कृत तात। पूर्व कर्म को लहि उतपात॥ यह दुख सहि चाहत जो क्षेम। तौन मिलै जौ निबहे नेम ॥

दोहा ॥

शक्र विहग के बचन ए सुनिके विप्र सुजान। फेरिपलटि गृहबास करि किए कर्म सुखदान ॥ ताते तुम धर्मज्ञ प्रभु धीर धारि तजि मोह। पालन कीजै महि प्रजा सहित सुहित संदोह ॥

मोरठा ॥

भरे अर्थ गंभीर अर्जुन के ऐसे बचन। सुनि सुनकुल मतिधीर कहत भए नृपधर्म सों ॥

चौपाई ॥ नकुलउवाच ॥

तात सुनो मम बचन सुहाए। वैदिक कर्म देत मनभाए॥ निवसत सुमन कर्म फल माहीं। बिना कर्म कोउ निवसत नाहीं ॥ उत्तम कर्म गृही को गावत। करि सुकर्म नर सुरपुर पावत ॥ गृह को त्याग न त्याग कहावत। ममता त्याग त्याग सुख छावत ॥ हठ व्रत धारि देह जो त्यागत। तामस त्याग नाम सों पागत ॥ गृह तजि रहत मूल फल लागी। सुनो भूप सो भिक्षुक त्यागी॥ गृह बसि कर्म गृही को धारत। वेद उक्त निज धर्म बिचारत॥ मतिमानि नको पथ मन भावन। गुणत न गहत विकार विभावन ॥ सुख दुख फल मधि भाव न लावत। सो त्यागी आनंद सरसावत ॥ सम दम धीरज सत्य बढ़ावत। शुचि रहि पालन कर्म पढ़ावत ॥ देव पितर अरु अतिथिन पूजत। वेद पुराण बारता कूजत॥ उतपति करत प्रजा सुखदायक। पालत धरम पालिबे लायक ॥ करत कर्म सब त्यागि फलासा। सो त्यागी नहिं करि बनबासा ॥ उतपति करत प्रजा विधि गुणिकै। करिहि यज्ञ मम बाणी सुनिकै॥ करत न यज्ञ धर्म धन लहिकै। सो गृहस्थ शठ कि लिप गहिकै॥ ताते गहौ प्रजा प्रतिपालन। यज्ञ करो इत उत हित चालन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

प्रजा न पालत नृपति जो देत न बिधिवत दान। लेत न राजित राज्यसुख सो नृप महा नदान ॥
नहिं पालत शरणागतन अरिन न देत सजाय। सरद मेघ सम भूप सो प्रगटत जाय नशाय ॥
तजौ शोच नृप नीति गुणि करो राज्यसुख भोग। छत्रीबन्धु बधि महि लियो क्षात्रधर्म उपयोग ॥

सोरठा ॥

सुनत नकुलके बैन चैन भरे सहदेव अति। सुद मंगलके ऐन कहे धर्म क्षितिपालसों ॥

सहदेवउवाच ॥ चौपाई ॥

भूपति सुनो भूमि नहिं त्यागे। होति न सिद्धि विपिनि अनुरागे ॥ मनकी वृत्ति छुटै जब भाई। बरधति तबै सिद्धि प्रभुताई ॥ राग द्वेष ममता मद त्यागी। पटु गृह चरत धर्म पथ लागी ॥ अक्षर दोय मृत्यु कहवावत। अक्षर तीनि ब्रह्म पटु गावत ॥ मम यह बुद्धि मृत्यु सुनु स्वामी। नहिं मम भान ब्रह्म अनुगामी ॥ सेवत ब्रह्म बुद्धि जो आरज। ताहि न दोष किए कछु कारज ॥ नहिं आपुहि करता अनुमानै। न्यामक ईश्वरकी गति जानै ॥ इत उत सुखी रहत सो राजा। गुणत ब्रह्ममय सृष्टि समाजा ॥ वेदउक्त पथ चरत सुभावन। सोनृप चरत मोद मनभावन ॥ ताते तजि निरवेद अलायक। विलसौ भूमि भूमिके नायक ॥ जो नृप भूमि पाइ नहिं भोगत। निष्फल ताको जन्म प्रयोगत ॥ भोगो भूमि तजो मति ऐसी। महिलहि त्यागव नीति अनैसी ॥ जब सहदेव कही इमि वाणी। तब इमि कही द्रोपदी राणी ॥ नृप तोबन्धु बचन तो दूषत। गुणि वृत्तान्त सुमन सम सूखत ॥ मोहित इन्हैं करौहित करिकै। भूमि भोगकी ईहा न गहिकै ॥ ऐ तो धर्म हेत बल ग्वैकै। बन दुख सहे बिप्रसम ह्वैकै ॥

दोहा ॥

द्वैतबिपिनिमधि भ्रातरन अतिपीडित लखि नाथ। कत भाखे दुर्योधनहि बधब बन्धुगणसाथ ॥
बधि सगर्ब दुर्योधनहि भूमि भोगि धन जोरि। यज्ञ करब दै द्विजन कहं सुबरण कइक करोरि ॥
निजसुख ऐसो भाषि नृप अब कत गहत गलानि। राज्य करो नृप नीतियुत क्षात्रधर्म अनुमानि ॥
वीर वधत है अरिन कहं वीर भोगवत भूमि। वीर करत है दान मख नहीं षण्ड रणजूमि ॥
दुर्योधन कर्णादिके समुझि अर्म उतपात। राज्य करो निरबेद तजि बूझि क्षात्रपद ख्यात ॥
प्रथम जुवामैं हारि सब करवाए बनबास। फिरि करवाए युद्ध करि क्षात्रबंश को नाश ॥
फिरि भाषति बनजान अब प्रभु यह कौन सुधर्म। तुम सर्वज्ञ उदारमति त्यागे चहत सुकर्म ॥
प्रभु तो सिगरे बन्धु जो होते मत्त सुभाव। तौ करि कारागृह तुम्हैं करते राज्य बनाव ॥
राज्य छोड़िकै आपदा कत चाहत क्षितिपाल। अम्बरीष अरु नहुष सम भोगो भूमि बिशाल ॥

सोरठा ॥

द्रुपद सुताके बैन सुनि अर्जुन जगजैन भट। कह्यो भूप कछु मैंन राज्यकरो सुदऐन गुणि ॥

अर्जुन उवाच ॥ रोला छन्द ॥

साम दान बिभेद दण्ड उपाय नृपके चारि। प्रथम कीन्हे तीनि मानो नहीं शठ हठ धारि ॥ दण्ड करि निज भूमि लीन्हे कौन दोष बिचार। प्रबल नृप कहं दुष्टके हित दण्ड अति उपचार ॥ सुनो भूपति दण्ड प्रदको सधत सिगरो काज। दण्ड देन अशक्त तासु न रहत अविचल राज ॥ दण्ड पालन प्रजा राखत अर्थ धर्म सकाम। धान्य धन गृह नगर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचत दण्ड जगमें आम ॥ अश्व गज बश होत दीन्हे दण्ड पशु नर सर्व । दण्डते न उपाधि ठानत काग आदिक खर्व ॥ व्याल बाघ बराह आदिक दुष्टजन्तु समस्त । दण्डके भय रहत गोपित होत हैं न प्रसस्त ॥ बाकदण्ड द्विजाति चत्री बाहुदण्ड अमान । दानदण्ड वैश्य सेवा दण्ड शूद्र न आन ॥ दण्डके भय रहत आश्रम वरणको मर्य्याद । दण्डके भय मत्त जन नहिं सकत करि उन्माद ॥ भार वाहन भार वाहत दण्डभय बिनु तात । बाल पढ़त न दण्डभय बिनु करत तिय उतपात ॥ दण्डभय बिनु प्रजा त्यागत पूर्व पथ शुचिगात । दण्ड दायक नृपति नय जुत लहत वृद्धि बिभात ॥ इन्द्र वृत्तहि मारि भूप महेन्द्र भो विख्यात । तथा शत्रुन दण्डदायक नृपति भो अवदात ॥ आततायिहि दण्ड देकै लई पैचिक भूमि । भूप भोगो राज्य मति दुख रहौ वनमें घूमि ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥

अर्जुनके ए वचन सुनि बोलो भीम अमान । किए कछू राते नयन सुनो भूप मतिमान ॥

भीमसेनउवाच ॥

हम न कहो चाहत नहीं कहे बिना रहि जात । सुनो भूप ताते कहत नीति उचित जो बात ॥

रोला छन्द ॥

व्याधि दोय प्रकारकी नृप होत सुनिये तौन । एक देहिक मानसिक सुनु भेद इनमें जौन ॥ शीत आतप बातसो जो होत है उतपात । तौन देहिक व्याधि है इमि कहत मति अवदात ॥ सत्य रज तम जनित है उतपात जाहिर जौन । तौन मानस व्याधि जानो सुनो नृप मतिभौन ॥ दुःख हर्षहि दूरि करता हर्षि दुःखहि दुरि । दुःखमें सुख होत सुमरण हर्षमें दुख भूरि ॥ हर्षमें सुख स्मरत तुम नहिं स्मरत दुखमें हर्ष । देव गति यह भोग पूर्वक करत मति को कर्ष ॥ पूर्वको अपकर्म उनको करत सुधि नहिं तात । बिपिनि को दुख भूलिकै अब विजय लहि पछितात ॥ समुझि भूप विराटपुर को गुप्तहित उपयोग । युद्ध को दुख समुझि त्यागो ग्लानि दारुण रोग ॥ भाग्य बल नृप विजय पाए करो उरवी भोग । यज्ञ दान विधान करिकै करो मोदित लोग ॥

दोहा ॥

सीता रामहि सुमिरि कै शान्तिपर्व सुखदाय । यह बाइस अध्याय को कहो एक अध्याय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि राजधर्म्मेप्रथमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

भीम आदिक पाण्डवन के सुनिकै वचन अहीन । व्यासदेव नृपधर्मसों कहे वचन अति दीन ॥

व्यास उवाच ॥

सुनो भूपतुव बंधु सब कहत उचित शुचि बैन । गेह त्यागि वनवास नहिं उचित तुम्हैं मतिऐन ॥ देव पितर अरु अतिथगण भृत्य दारदी जूह । तोषत धनी गृहस्थ सो पशु सब जीव समूह ॥ पिता पितामह राज्य यह पालन करो महीप । सम दम संजम क्षमा गहि यज्ञ करो कुलदीप ॥ द्रव्य जोरिबे मो निपुण पाच विचारि उदार । दण्ड धारिबे मो कुशल यह नृप नीति विचार ॥ नृप सुदुम्न बरधित भयो दण्डधारि हे भूप । सुनो तौन इतिहास हम कहत अनूपम रूप ॥ शङ्ख लिखित द्वै विप्र हे भ्राता अति मतिमान । वनमें आश्रम पृथक् रचि हे तप तपत महान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरीछन्द ॥

लिखित एक दिन गयो बिभात । शङ्ख बिप्रके आश्रम तात ॥ शङ्ख नहो निज आश्रम मांह । जाय लिखित तहं सुनु नरनांह ॥ देखि धरो फल आश्रम बीच । सो लै लागो खान न भीच ॥ इतने में तहं आयो तौन । लिखित गयो हो बन मधि जौन ॥ तहां लिखित फल खात निहारि । इमि बूझत भो हिये बिचारि ॥ कहं पायो यह फल अभिराम । निज अरजित सम खात अछाम ॥ सो सुनि कह्यो लिखित हत रूप । इतही यह फल लह्यो अनूप ॥ तब इमि कह्यो शङ्ख अनुमानि । तुम फल तेय कियो अघखानि ॥ लेत परोक्ष दियो बिनु जौन । पाप लहत तस्कर सम तौन ॥ जब सो लहै दण्ड अघयुक्त । तब फिर होइ पापसों मुक्त ॥ ताते जाय भूप के पास । निज कुकर्म यह करो प्रकास ॥ दण्ड देइ जब नृपति सुधर्म । तब गत पातक होइ अभर्म ॥ यह सुनि लिखित पापके शङ्क । जाय भूप सों कह्यो कलङ्क ॥ फल अदत्त हम खायो भूप । दीजै दण्ड धर्म अनुरूप ॥ पूजित द्विजको ऐसो बैन । सुनि सुदुम्न भूपति मतिऐन ॥ पाणि जोरि कै बिप्रहि नौमि । कहत भयो बाणी अति सौमि ॥ उचित कहत तुम बिप्र उदार । भूपहि सदा दण्ड अधिकार ॥ तुम तप करता बिप्र अहीन । तुम कहं जात दण्ड नहिं दीन ॥ मांगो और तौन हम देव । नहिं अघहेत निठुरता लेव ॥ तब द्विज कीन्हों हठ अधिकार । तब नृप कियो दण्ड स्वीकार ॥ छेदन करवाए युगपानि । गयो बंधु ढिग द्विज हित मानि ॥

दोहा ॥

शङ्ख लिखित कहं देखिकै कहे करो मतिखेद । सरित बाहुलामधि करो मज्जन तजिनिरबेद ॥
लिखित जाइ तब सरित मधि समरण लागो भूप । तहां पाणि बूतन कढ़े बारिजात के रूप ॥
पाणि देखिकै लिखित ह्वै बिस्मित बाहेर आय । भयो देखावत शङ्ख कहं महामोह हियछाय ॥
शङ्ख कहे तब लिखित सों यह मम तप परभाव । लिखित कहे कतनहिं किए तुमहो दण्ड बनाव ॥
शङ्ख कहे नहिं बिप्र कहं दण्ड देव अधिकार । दण्डधर्म है नृपति को हरता पाप पहार ॥
एहिबिधि भूप सुदुम्न नृप भयो दण्ड दैख्यात । दण्ड धर्म है नृपनको नहिं सुण्डन करि खात ॥

सोरठा ॥

कहि ऐसो इतिहास ब्यासदेव नृपसों कह्यो । गुणि निजधर्म प्रकाश राज्य करो सब खेद तजि ॥

रोलाछन्द ॥

बसत बनमें भीम आदिक बंधु तौ रणधीर । करि मनोरथ रहे भोग न देइ तौन गंभीर ॥ महा दुखको अंत लहि अब सुखहि भोगन देइ । पालि सुधरम यज्ञ करिकै परम पद गति लेइ ॥ धर्म शास्त्र बिचार पूर्वक करो रक्षण लोक । शास्त्रज्ञा मति प्रबल करिकै लहो आनंद ओक ॥ साधु सूर सुजान सुधनी शास्त्रबिद मतिमान । गुणिनको गुण पालि सादर करो राज्य महान ॥ निदरि इन कहं होत नृप जो बिषय मो लवलीन । शत्रु तस्कर राज्य ताको करत है अतिचीन ॥ नीति धर्म सुभूमि के हित मरत लरि क्षितिपाल । लहत है सुर लोक नृप सो सुयश होत बिशाल ॥ हयग्रीव महीप निरजन धर्म लगि लरि पूर्व । मारि शत्रुन जाय बधि जिमि लह्यो सुरपुर गूर्व ॥ समय लहि तस्करण सों लरि प्रजा हित क्षितिरौन । हयग्रीव महीप तन तजि कियो सुरपुर भौन ॥

दोहा ॥

ब्यासदेवके बचन सुनि कहे धर्म क्षितिपाल । नहिं कूटतमम ग्लानिगुणि बंशबिनाश कराल ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनिविलापसबतियनको धारतबनत न धीर। मोहि न भावतराज्यप्रभु मोहि देत अति पीर ॥

सोरठा ॥

सुनि भूपतिके बैन व्यासदेव इमि कहत भे। सुनो भूप मतिऐन मरत न कोऊ काल बिनु ॥
रचे बिधाता जौन काल पाय सो नगत सब। बिनु आये क्षण तौन नाशे कोऊ नगत नहिं ॥
निरमितबरधनकाल लहिबरधत अगुणीनरौ। लहिलघुदिन धनपाल गुणी जात ह्वै दारदी ॥

दोहा ॥

काल पायकै असित सित रैनि होति सुनु तात। वृक्ष लहत है फूल फल झरत कटत हैं पात ॥

चौपाई ॥

पूरब भूप शैनजित भाख्यौ। विधि जो क्षण निरमित करि राख्यो ॥ उतपति प्रलै तौन लहि होई। भावी कहवावत है सोई ॥ भूप होति है भावी जैसी। लहि सो समय होति मति तैसी ॥ पटु लहि प्रलय धीरता भेखै। और न लहै प्रलय सो देखै ॥ सम्पति पाइ कर्म्म अवरेखै। धनबाननकी कला निरेखै ॥ शोच न करत आपदा लहिकै। पटुदिन वितवत धीरज गहिकै ॥ दुख अस्थान सहस शत सुखके। मोहत मूढ़ न बिना कलुषके ॥ तृष्णारत कहं अतिदुख छावत। दुख आरत जो सो सुख पावत ॥ दुखको अन्त भये सुख आवत। दुखके अन्त सुखै मन भावत ॥ परदुख देखि गहत दुख भारो। सो नहिं कहूं होत सुख चारी ॥ ताते जो नहिं सुख दुख मानत। प्राप्त होत सो कर्मज जानत ॥ सोई मोद लहत सुनु राजा। नाशमान सब भूत समाजा ॥ इमि कहि गयो शैनजित भूपति। यह शुचि बाणी सुमति अनूपति ॥ ऐसे वचन व्यासके सुनिकै। भूप युधिष्ठिर मनमैं गुणिकै ॥ कहे फाल्गुणसों प्रियबानी। सुनो तौन जनमेजय ज्ञानी ॥ यह इतिहास परम मति दायक। नीति धर्मगति बरधन लायक ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ दोहा ॥

है सुधर्म श्रेयद महा लहत सुधर्मी सर्व। प्रजा पालि करि यज्ञ नृप पावत स्वर्ग अखर्व ॥
सधनीकोसब सधतहैनिधनीको कछुनाहिं। जीवदेह तजिकाल लहिफिरिआवैं फिरि जाहिं ॥
आप कहत सो सांच सब पै सुनिये मम बैन। समुझि मरण अभिमन्युको धीरज धरो रहैन ॥
द्रुपदसुता केसुवन सब अरु बिराट नरनाह। धृष्टद्युम्न अरु द्रुपद को मरण खुभत मनमाह ॥
धृष्टकेतु आदिक नृपन को गुणि मरण अवात। मोहिं सतावत शोक प्रभुनहिंधीरज धरि जात ॥

चौपाई ॥

जासु अङ्कमधि क्रीडा कीन्हे। जासों सुधरम शीक्षा लीन्हे ॥ विदित पितामह बर व्रत धारी। परशुराम केसम रणचारी ॥ जाके सगुण जात नहिं गाये। राज्यलोभ लगि ताहि बधाये ॥ पूजनयोग पूज्य सबहीको। विप्र अचारज धनुधर नीको ॥ योगी गुरु बीर गिणतीको। सब पाण्डव कहं आदर हीको ॥ तौन बीर सो सुत बध सुनिकै। बूझो मोहि सत्य बध गुणिकै ॥ सो हम राज्यलोभ अति गुणिकै। ताहि बधायो मिथ्या कहिकै ॥ हम अभिमन्युहि टेरि हठायो। व्यूह विदारणहेत पठायो ॥ सिंहगुहामधि मत्त द्विरदसों। प्रविशि मरो करि विक्रम हदसों ॥ सोदर बन्धु कर्ण धनुधारी। ताहि बधायो विजय विचारी ॥ हम लगि राज्यलोभ हे आरज। कीन्हे अगणित दुस्कर कारज ॥ ताते आशि देह हम त्यागब को लगि शोक अग्नि मन दागब ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

नृपतियुधिष्ठिरके बचन सुनिकै ब्यास मुनीश । पाणि पकरिकै कहत भे अस न कहो अवनीश ॥
बधे गए सब कालबश तुम न बधाए एक । करता मानत आपु कहं यह मत है अविवेक ॥
है संयोग वियोग ध्रुव प्राणीको सुनु तात । यथा बुदबुदा बारिमधि होत जुरत मिटिजात ॥
सुख दुख मोद गलानिकी थिति नहिं रहति सदैव । पूर्वकर्म सम होत ए पूर्वकर्म है दैव ॥
अब पूर्व इतिहास हम कहत सुनो तुम तौन । भूपति जनक बिदेहसों कहे अस्मसुनि जौन ॥
जनक अस्मसुनि सों कहे कहो बिप्र मुनिदक्ष । केहि प्रकार कल्याण नर लहत जोति अघरक्ष ॥

अस्मउवाच ॥

जन्म जरा अरु मृत्यु फिरि जन्म जरादिक रोग । नित्य दुःख है जीवकहं अन्तर सुखको भोग ॥
प्राप्त होत सुख दुःख सो किए बनत है भोग । निज मेटे नहिं मिटत है है कर्मज संयोग ॥
अधनी के सुत बढ़त नहिं एक धनीके होत । कर्म दैवकी गति कहूं एहिबिधि करति उदोत ॥
जियत दरिद्री बढ़त दिन थोरे दिन धनवान । दोऊ सुख दुख लहत हैं निज कृत कर्म प्रधान ॥
जियत बढ़त दिन दारदी दुख भोगनके हेत । भोगी सुखहि प्रालब्ध भरि धनी मरत यह नेत ॥
मंत्र औषधी टोटका धन सुत शस्त्र सहाय । टारि सकत नहिं मृत्युगति निरमित कालहिपाय ॥
सहसन माता पिता तिमि तिय सुत भाई रौन । क्रमसों संगम होत फिरि नशे कौनको कौन ॥
पथ संगम सम होत उर गृह कुल संगम भूप । नहिं पूरव नहिं पर कछू नाशवान सब रूप ॥
नित्य पक्ष मैं जीवते देह होति उत्पन्न । है अनित्य मैं देह जे जीवोत्पति आपन्न ॥
नहीं नित्य सम्वास है काहू को सुनु तात । पिता पितामह आदि तुव कहा सबन्ध बिभात ॥
किए कर्मको भोग है अचल चलत नहिं एक । ताते नृप कल्याणप्रद वैदिक कर्म बिवेक ॥
शास्त्र नयन हैं जगतके शास्त्र सुनो मति ऐन । बरण आशरमको धरम पालब दायक चैन ॥
अस्मबिप्रके बचन सुनि जनक यथा बिधि पूजि । गए मोह तजि निज सदन सबिनय बाणी कूजि ॥
तथा भूप तुम मोह तजि क्षात्रधर्म हित जानि । करो पैत्रिक राज्य यह उचित न गहब गलानि ॥
ब्यास देव के बैन सुनि रहो मौन ह्वै भूप । तब अर्जुन श्रीकृष्णसों बोले गिरा अनूप ॥
ज्ञातिशोकअतिउदधिमधि नृपबूडतकरिग्लानि । ताहि निकासोनाथकरि लम्बितबानीपानि ॥

सोरठा ॥

सुनि अर्जुनके बैन कृष्णचन्द्र नृपसों कहे । नृप कत होत अचैन लोक शास्त्र नृप नीति तजि ॥

रोलाछन्द ॥

क्षात्रधर्म बिचार करि करि मरे रणमें बीर । शोक कीन्हे मिलत नहिं ते भूप धारो धीर ॥ पूर्वको इतिहास अबहम कहत सुनिये तौन । दुखित सृंजय भूमिपतिसों कहे नारद जौन ॥ भाषि ऐसो कहे षोड़श राज्य को इतिहास । अभिमन्युको बध बिकल नृपसों कहे है जो ब्यास ॥ कथा सो श्रुतिपूर्व फिरि सुनि रहो मौन नरेश । ब्यासमुनि तब कहे धीरज धरो भूप सुभेश ॥ आततायी खलनको बध भूपतिनको धर्म । नीति पूर्वक प्रजा पालब करब वैदिक कर्म ॥ भूप करि निजधर्म अब इमि वृथा आनत शोच । रोच कीजै भूप पद सो खेद कीजै मोच ॥ ब्यासके सुनि बचन बोले धर्म उरबी रौन । धर्मकी नहिं मोहिं शङ्का सुनो सुनि मतिभौन ॥ राज्यकारण बधे बढ़त अवध्य हम हे तात । हियो दाहत शोक ताको धीर नहिं धरिजात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

धर्मनृपतिके वचन सुनि व्यास कहे सुनु भूप । ईश्वर करता व्याज करि करत कर्मअनुरूप ॥
ईश्वर न्यामक तासु बश पुरुष करत है कर्म । यथा पुरुष वस ह्वै परशु तरुछेदत यह मर्म ॥
जोकरतापुरुषहि गणो नहिं न्यामक है और । तऊ किये नृप नीति तुम शङ्क तजोनृपमोर ॥
कर्म किये को दण्डदै पुरुष न पावत पाप । सदा नृपतिको उचित है दण्ड दुष्टको थाप ॥
कियेअशुभशुभकर्मको फल पावतनर औसि । करिसुधर्मकततन तजत लेऊ राज्यसुख हौसि ॥
रचेविधाताजासुजिमिमरणमरततिमितौन । करमरूपनिरमितकरतविधिआगमथितिगौन ॥
ज्ञाति बन्धुके मरणको दोष न तुम कहं तात । जय विभूति यश हित मरे लरि क्षत्री अवदात ॥
सुने नहीं जो पूर्व भो देवासुर संग्राम । एक पिताके पुत्र हे दोऊ बली अछाम ॥
असुर रहे जेठे रहे छोटे सुमन उदार । दोऊ लरे विभूति हित बत्तिस वर्ष हजार ॥
बधिअसुरनकरिरुधिरमय महो सुमनससुदाय । विलसतभएचि लोकपति महा प्रशंसापाय ॥
बधत दुरात्माहि लहत सो धर्म सुनो उपचार । लहतपाप जो दुष्ट कहं पालत करि उपकार ॥
नहिं इच्छित हे युद्ध तुम नहिं आनत हे रोष । भयो युद्ध क्षय भटनको दुर्योधनके दोष ॥
राज्यकरोतजिशोच नृप तुम हितनेकुकलङ्क । अश्वमेध मख करहु जो गहत पापको शङ्क ॥
असुरनबधिसुरपतिकिये क्रमसों मखससुदाय । ताते शतक्रतु ख्यात ह्वै विलसतओजबढ़ाय ॥
तैसेतुमह्वै भूमिपति विलसो सहित समाज । नृप पुत्रनकहं दीजिये निजनिज पुरकोराज ॥
पुत्र पौत्र न होहि जेहि ताके कन्यनदेहु । आश्वासितकरिनृप तियन मख करिआनद लेहु ॥

युधिष्ठिरउ वाच ॥

कौन कर्मते होत है पाप कहो सुनि तौन । कौन कर्मते छुटत है पाप होत है जौन ॥

व्यासउवाच ॥ रोलाछन्द ॥

किये अविहित कर्म मिथ्या कहे कपट बढ़ाय । उदित रवि औ मुदित बेला किये शैन बनाय ॥ प्रथम ब्याह कनिष्टको अरु ज्येष्ट को भो पूर्व । तौन दम्पति होत प्राश्चित योग यह मत गूर्व ॥ करत व्रतको त्याग जो अरु मांस बेचत जौन । दान देत अपात्रको अरु पात्रको नहिं तौन ॥ आगि लावत ग्राममें जो करत गुरु कुल घात । वृथा मारत पशुहि जो विश्वास घाती ख्यात ॥ महा पातक लहत ए अब सुनो नृपमणि दक्ष । लोक वेद विरुद्ध करिबे योग नहिं परतक्ष ॥ त्याग करब स्वधर्मको अरु गहब परको धर्म । शरण आवै तासु त्याग अभक्ष भक्षण कर्म ॥ भृत्यको नहिं करब पोषण रसनको क्रय नेम । वधब तिर्य्यगयोनि को नहिं उचित देत अक्षेम ॥ पितासो जु विवाद करिबो तियहि ऋतु दिन दोच । कर्म ए करतब्य हैं नहिं किए बरधत शोच ॥ कर्म कितने लखत अनुचित किए लखत न दोष । वधे द्विज जो बधन आवत लए शस्त्र सरोष ॥ रोगवश ह्वै मरत मदिरा पिए औसर देत । किए पान अज्ञानबश तौ संस्कार सुनेत ॥ कहे अनुचितकर्म इतने जौन ते सब भूप । छुटत प्राय-श्चित्त कीन्हे शास्त्रमत अनुरूप ॥ और जनको आपनो कै प्राणरक्षण जानि । कन्यकाके ब्याहहित कै गुरुहिको हित मानि ॥ जात सरवस आपनो जो कहै मिथ्याबैन । पाप ताको होत नहिं यह कहत हैं मति ऐन ॥ स्वप्नमैं परदारसों रति किए धर्म न जाहि । पुत्रहित गुरु बन्धु तियके कहे रति अघनाहि ॥ परे आपद लेइ गुरुधन वितरि तस्कर कर्म । नहीं पातक होत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामें महाबेध सकर्म ॥ समय लहिकै देइ ताको अधिक धन करि प्रीति । छुटत प्रापत दोष ताको शास्त्रकी यह रीति ॥

दोहा ॥

तृण अंकुर लगि गउतहित बन दाहे नहिं दोष। सुनो भूमिपति करत हैं दान सकल अघसोष॥
अब सुनिये भूपालमणि प्रायश्चित बिधान। ब्रह्मचर्य्य व्रत गहि रहै द्वादशवर्ष समान॥
रहि अक्रोध करै पाच ह्वै भिक्षुक भमि बहु ठांउ। एक बार भोजन करै रटि रघुवरको नांउ॥
होइ अपातक ब्रह्महा सुनो भूमिभरतार। कै कीन्हे तेहि षट बरिस कृच्छ्रायन उपचार॥
कै सरबस दे द्विजन कहं फिरै तीर्थ समुदाय। होइ अपातक ब्रह्महा रामराम रट लाय॥
गोब्राह्मणके प्राणको करत सुरक्षण जौन। गोब्राह्मण हित लरि मरै होत अपातक तौन॥
देइ सुपाचन प्रेम करि लाख गऊ नर जौन। ब्रह्मघातके दोषसों छूटि जात है तौन॥
कपिला गऊ सबत्स जो देइ पचीस हजार। ब्रह्मघातके दोषसों छूटन को उपचार॥
शत घोरे खासे बने देत द्विजन कहं जौन। इतरपापसों छुटत है भूप सुनो नर तौन॥
अरथी मांगे देइ सो सुनो भूप नर तौन। सकल पापसों छुटत है ताको सम है तौन॥
सुरा पियत जो आपसो तौन मरे मरुजाय। कै पावक मधि धसि मरै तौ पातक मिटि जाय॥
एकबार पीवै सुरा फेरि न पीवै जौन। संस्कार करि शास्त्रमत शुद्ध होत है तौन॥
शिला लोहकी तपित करि सोवै लिंग लगाय। गुरुतल्पग इमि देह त्यजि शुद्ध होइ अघ जाय॥
परतियगामी वर्ष भरि कृच्छ्रायनव्रतधारि। शुद्ध होइ रहि नेमसों शास्त्ररीति निरधारि॥
लघुसोदरके पूर्व गुर व्याहि जात है जौन। कृच्छ्रायन द्वादश दिवस किए शुद्ध है तौन॥
चारिमास गहि नेम करि अंचायन तिय तौंन। शुद्ध होत तिय अनुजके पीछू व्याही जौंन॥
परपतियके अभिगमनकीशङ्कातियमैं होति। रजउदभवलहि तरुणि सोनिरभय शुद्ध तनोति॥
बधै जुतिर्य्यगयोनि अरु तरुबहु काटै जौंन। बायु अशन करि तीनिदिन शुद्ध होत है तौंन॥
करैं अगम्यागमन जो सुनो तासु प्रतिहार। ओदवसन रहि भसम पर करैं मास षट पार॥
एहिविधि कुत्सित कर्म प्रति है प्रायश्चित्त अनेक। आस्तीकनके हेत नहिं नास्तीकन कहं एक॥
जप तप व्रत मखदान अरु तीर्थगमन सब पर्व। लिए नाम सियरामको छूटत पातक सर्ब॥
करिबो उचित सुकर्म निति कुत्सितको परित्याग। निशिदिन रहत सुकर्मरत ते नर पूरणभाग॥
व्यासदेवमुनिराजके ऐसे बचन अनूप। सुनि चट पट बोलत भयो सुपटु युधिष्ठिरभूप॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

कौन पदारथ भक्ष कौन अभक्ष्य अपाच को। कौन पाच है लक्ष्य कहो तौन मुनि पितामह॥

जयकरीछन्द ॥

पूरब इहै प्रश्न सुनु भूप। स्वायम्भुव मनुपास अनूप॥ मुनिगण कीन्हे तव मनुदक्ष। भाषे भक्ष्य अभक्ष्य प्रतक्ष॥ पूरबको इतिहास महान। सो हम कहत सुनो मतिमान॥ भक्ष्य अभक्ष्य कहैं मुनि जौन। पाच अपाच बताए तौन॥

दोहा ॥

कमट बिना जलजन्तु सब बिप्रहि सदा अभक्ष्य। कहत सल्लकी जाहि सो है ब्राह्मण कहं भक्ष्य॥
चक बक हंस सुपर्ण अरु श्येन उलूकौ काग। चारि डाढके जन्तु सब हैं अभक्ष्य त्यजि राग॥
उटिनी भेडी स्त्रीको दूध न ब्राह्मण योग। द्वादश दिन मिति गऊको पय ब्रह्मणहि अभोग॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेतअन्न जो प्रगट अरु सूतिकान्न जो खात । बिनु पति सुतकी तियाको अन्न अभच्य कहात ॥
खात पिआय न सकत जो ताको अन्न अभच्य । गणिका शूद्र सोनारको अन्न अच्य प्रतच्य ॥
प्रथम होमके होमकृतको है अन्न अखाद्य । अन्न पुंश्चलीको सदा है अखाद्य करि बाद्य ॥
अन्न ग्रामरखवार को औ बटुआको अन्न । रजक जुआरी चोरको होत अभच्य अपन्न ॥
देव पितर अरपण बिना है अभच्य सब अन्न । उचित गृही भोजन करैं तोपि अतिथ आपन्न ॥
सुनो भूप अब जो कहे मनु प्रभु दान अपाच । तिन अपाच ते इतर द्विज तिनकंह जानो पाच ॥
भीतद अयशी कौतुकी नृत्य गीत कृतहास । अंग भंग जारज कुटिल अरु अव्रत अरु दास ॥
सेवक उपकारी भिषज दानपाच ऐ नाहि । ब्राह्मण विद्यामान सो श्रेष्ठपाच जगमाहि ॥
विद्या बिनुको विप्र जिमि बारि बिनाको कूप । शोची ब्राह्मण क्रियायुत है अति पाच अनूप ॥
जैसें ओदो काठ लहि पावक बरधत नाहिं । तिमि अपाचके दान को सुफल नहीं सरसाहिं ॥
उदर भरेको पाच है क्षुधावान निरधारि । नहीं क्षुधित के उदरमैं पाच अपाच बिचारि ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

एहि प्रकारकी वारता सुनिकैं धर्म महीप । अद्वा धरि सुनि व्याससों कहत भयो कुलदीप ॥
सुनि हम चाहत सुनो अब राजधर्म व्यवहार । अरु आपत अरु दान अरु मोक्षधर्म व्यवहार ॥
भूपति के ए बचन सुनि कहे व्याससुनि दच्च । सुनो भूप इन धर्मको ज्ञाता भीष्म प्रतच्च ॥
भृगु गुरु जानत धर्म जो सो भीषम मतिभौंन । मार्कण्डेयमुनीशसों लह्यौ धर्म सब तौंन ॥
सर्व ब्रह्मऋषि पूर्व हे जासु सभासद पर्म । सो भीषम सर्वज्ञ पटु है ज्ञाता सब धर्म ॥
चलि ताके ढिग प्रश्न करि सुनो धर्म समुदाय । शोक मोह सजि नीति गुणि पालो प्रजा सचाय ॥
व्यासदेव के बचन सुनि मौन रहो क्षितिपाल । तब यदुकुलमणि कृष्ण प्रभु बोले बचन बिशाल ॥

कृष्णउवाच ॥ सोरठा ॥

शोक मोह त्यजि भूप व्यास कहत जो सो करो । शुचि करतव्य अनूप व्यास कहत सो मंच मम ॥
करिकै नगर प्रवेश इष्ट ग्राम्य कुलदेव द्विज । पूजि दान देवेश राज्य ग्रहन विधिवत करो ॥
बंधु प्रजा समुदाय मोदित करि विप्रण सहित । तदनु भीष्मपहं जाय सुनो जौन चाहत सुधा ॥

महिखरी छन्द ॥

सुनि कृष्ण प्रभु जगदीशके ए बचन शुचि सधरम मए । नृपधर्म क्षणक बिचारि विप्रण नौमि उठि अभरम भए ॥ लखि कृष्णके पदकंज कृष्णहि सुरथ पर थापित करे । धृतराष्ट्र नृपहि चढ़ाइ शिविका सुरथ चढ़ि आनद भरे ॥ तहं भीम सारथिपनो कीन्हे छत्र गहि पारथ लसे । सहदेव चामर ब्यजन कीन्हे लए कर रथपर बसे ॥ सब सुभट सात्यकि औ जुजुत्सुहि आदि रथ चढ़ि चढ़ि चले । चढ़ि बाजि कुंजर सुरथ सांवय चले छावत सुद भले ॥

दोहा ॥

बन्दीजन अस्तुति पढ़त द्विज स्वस्तयन अनूप । बजत शङ्ख दुन्दुभि घने पसरो आनद रूप ॥
गान्धारी धृतराष्ट्र कहं आगे करि क्षितिपाल । हास्तिनपुर प्रति चलत भे पूरणप्रभा बिशाल ॥
कुन्तादिक रनिबास सब गए बिदुर के संग । चले बिदुर लीन्हे तिन्हैं शिविका सुरथ प्रसंग ॥
पुरजन आवत नृपहि सुनि लैलै कलस सुधार । तिय गावत ठाढ़ी भईं बितरत मंगलचार ॥

रोला छन्द ॥

देत विप्रण दान मंगल सुनत अति अवदात । कियो नगर प्रवेश राजा शक्र सरिस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिभात ॥ प्रजन पेखत देत आनद सुनत श्रुति सुख बैन । जाय नृपगृह द्वार उतरो भूप दायक चैन ॥ नैमि बिप्रण सुनत आशिष जाय गृह मधि भूप । पूजिकै कुल देव बाहेर कढ़ो आनदरूप ॥ धौम्य आदिक द्विजन कहं तहं नैमि बिधिवत पूजि । बसन भूषण हेम गो मणि दए सुचकन कूजि ॥ सहित बन्धुन भूप बिप्रण भयो पूजत यत्न । पुण्य घोष महान भभलों भयो पूरित तत्र ॥ सखा दुर्योधन नृपतिको चारबाक अमान । रहो राक्षस तौन आयो गहे कपट महान ॥ निचिदण्डी द्विजन संग लै जाय जहं अवनीश । कह्यौ ऋजुता गहे पूरित कपट बिबेबीश ॥ ज्ञातिघाती मूढ़ नृप तूं तोहि धिक सबकाल । ज्ञातिक्षय करवाइ भोगन चहत भूमि कराल ॥ धर्मनृप यह बचन सुनिकै गहे शङ्का भूरि । कहे मोहि न कहो धिक हमरहे करुणा पूरि ॥ धौम्य आदिक बिप्र गुणि कै ताहि राक्षस जानि । हुङ्कार करिकै किए भक्षित नृपतिको हित मानि ॥ अधिक खेदित नृपहि लखि तब कहे केशव दान्त । खेद मति नृप गहो याको सुनो जो वृत्तान्त ॥ चारबाक कुनामको यह रहो राक्षस दुष्ट । सखा दुर्योधन नृपति को छली पापी पुष्ट ॥ मित्रबधके बैर तुम ढिग आइ ऐसो भाषि । कह्यौ इमि तुव राज्यपद में बिघ्न अति अभिलाषि ॥ समुझि यह वृत्तान्त आस्यौ द्विजन एहि करि रोष । कहो याको गुणो मति मति मरेको कछु दोष ॥ बचो सो यह एक ताको सखा सोऊ मूढ़ । मारो एहिबिधि आइ यह तोभाग्य महिमा गूढ़ ॥ राजि सिंहासन बिमल पर गहौ नृप अभिषेक । करो पालन प्रजनको करि नीति धर्म बिबेक ॥

दोहा ॥

कृष्णचन्द्रके बचन ए सुनिकै धर्मनरेश । सिंहासन पर बैठिकै राजो यथा सुरेश ॥
कृष्ण भीम अर्जुन नकुल सात्यकि अरु सहदेव । यथा उचित बैठे सबै बिदुर जुजुत्सु सुमेव ॥
गान्धारी धृतराष्ट्र अरु धौम्य आदि द्विज जूह । बैठी कुन्ता द्रोपदी अरु सब युवति समूह ॥

रोलाछन्द ॥

तहां योजित देखि सब अभिषेकको सामान । कृष्ण धौम्यहि दए शासन जानि समय महान ॥ द्विजन सह उठि धौम्य बेदी बिरचि पूरब ओर । बाच चरम बिछाइ ताढिग सुनत मंगल सोर ॥ द्रुपदजा सह धर्म भूपहि तहां करि आसीन । किये मंगल होम बिधिवत पढ़त सुबचन पीन ॥ कृष्ण पूजित शङ्ख गहि तब मुदित सहित बिबेक । बारि भरि भरि धर्मनृपको करत भे अभिषेक ॥ बजे तेहिक्षण शङ्ख दुन्दुभि आदि बाजन भूरि । बेद अरु स्वस्त्ययनको धुनि रही नभलों पूरि ॥ रजत भूषण बसन सुबरण सुमणि गाय अमेय । पूजि बिप्रन्ह दयो बिधिवत भूमिपति कौन्तेय ॥ करत अस्तुति सूत मागध लहे सादर मौज । हेम हय हथियार हाथी भूमि भूषण सौज ॥ देत दान महान सुनि स्वस्त्ययन सुयश अमन्द । लसो शुभ सिंहासनो पर शक्रसो कुलचन्द ॥ तहां भूपहि भए पूजत बन्धबर्ग समस्त । भानुसम नृप उदित भो करि शत्रु सगरब अस्त ॥ राजि सिंहासन बिमल पर धर्म भूपति दच्छ । बन्धु सेवक पौरजन सों कहत भो परतच्छ ॥ महाराजाधिराज नृप धृतराष्ट्र मम गुरु पर्म । प्राण राख्यौ तासु सेवा हेत हम गुणि कर्म ॥ तासु शासन बिषे थिरि ह्वै रहेहु निति तुम सर्व । इहै मम प्रिय हेत अतिशै नीति धर्म अखर्व ॥ पौरजन कहं बिदा कीन्हे नियम कै यह काज । तदनु भूपति भीमसेनहि करत भे युवराज ॥ किए नकुलहि सैनशीलक पुर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरीक्षक वेश । आत्मरक्षक करत मे सहदेव कहं सब देश ॥ शत्रु मर्दन काज सौंप्यो पार-थहि कुरुभूप । दिए धौम्य पुरोहितहि द्विज देव अरचन रूप ॥ विदुर अरु संजयहि मंत्री किए करि अनुमान । नियमि भूपहि सदा सेवत रहेहु सहित विधान ॥ तदनु भूपति कियो रन्मन श्राद्धको गहि नेम । इरावाण विराटको अरु द्रुपदको करि प्रेम ॥ द्रौपदेयन कर्णको अभिमन्युको करि गौर । धृष्टद्युम्न घटोत्कचादिक सुहित हे जे और ॥ द्रोणको करि श्राद्ध दीन्हें दान सबके हेत । पृथक् पृथक् उचारि करि करि नाम गहि गहि चेत ॥ दए भोजन भूरि विप्रण धर्म करि सन्मान । रहे आश्रय हीन तिन कहं कियो आश्रय मान ॥ राजपतिनी रहीं तिनको कियो अति सत्कार । भृत्यगणको सविधि पोषण कियो भूभरतार ॥ श्राद्ध कीन्हें सुतनको धृतराष्ट्र नृपति सुडौर । दए भूषण वसन भोजन गाय वसु सब ठौर ॥ नहीं जिनके श्राद्ध करता रहो तिनको नाम । पिण्ड दैदै धर्मभूपति दयो दान अकाम ॥ श्राद्ध करि एहिभांति सबसों अक्षण ह्वै क्षितिपाल । देव पूजन कियो विधिवत पूरि प्रेमविशाल ॥

दोहा ॥

राम कृष्णकी कृपातें विजयपाय नृपधर्म । लहि सुराज्य राजित भयो करता कौलिककर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि राजधर्मेयुधिष्ठिरअभिषेकोनामोद्वितीयोऽध्याय: ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥

लहि अभिषेक महात्मा भूपयुधिष्ठिर भूप । कह्यो श्यामघन रूपसों वचन समय अनुरूप ॥

कवित्त ॥

महाराज कृष्णचन्द्र जानै आपुकी कृपाते विजयबानो पायो मानो आपनी धरी रही ॥ आपुकी कृपाते तौन अग्नि वतानी जौं बलभौन बन्धुनके हियेमें वरी रही । गोपीनाथ आपुकी कृपाते भूमि पाई जौ विक्रमी प्रतापी क्षितिनायकी हरी रही । आपुकी कृपाते भरी संपदा परी लखि ज्यों धरी संपदा की सर्वदाकी भूरि संपदा भरी रही ॥

अपरं ॥

आपु वैकुण्ठ विष्णु कृष्ण पुरुषोत्तम हौ हृषीकेश हरि हर हंसता गहतहौ । दृढ़दभानु अग्नि वराह उग्र सेनानी चिदिव चिविष्टप चीणैनता लहतहौ ॥ आदित्य अच्युत अखिल लोक कृपाल आपु महाक्षची सबक्षेत्रमो रहतहौ । आपु राम दाम याम यामिनो दिवस धाम अभिराम राम कामक्षाम औ महतहौ ॥

दोहा ॥

उत्पतिथितिपालनकरन आपुजगतजगओक । वेदसिन्धुगिरिमंत्रविभु प्रभुतुमलोकपलोक ॥
एहिप्रकार श्रीकृष्णकी अस्तुति करि नृपधर्म । नमस्कारकरि नमित ह्वै भयो कृतारथप्रर्म ॥
तदनु धर्म क्षितिपालमणि बन्धुन सहित सनेह । यथायोग लखि देत भे भरै सम्पदा गेह ॥
लै आज्ञा धृतराष्ट्रकी दुर्योधन के गेह । देइ दुकोदर कहं दए पूरि हिएको वेह ॥
दुश्शासन को गृह दए श्वेतवाहनहिं चाहि । दुर्मर्षनको गृह दए नकुल बन्धु जो ताहि ॥
दुर्मुखको गृह देत भो सहदेवहि क्षितिरौन । भरे सम्पदा सकलघर यथा धनदके भौन ॥
संजय विदुर युयुत्सु अरु धौम्य सुधर्मा जौन । तिन्है कहे भूषित करो वसि वसि निज निज भौंन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

नृप आज्ञा लहि सर्व जात भए निज निज सदन। सात्यकि सह तेहि पर्व कृष्ण पार्थ के गृह गए ॥

जयकरीछन्द ॥

यह इतिहास मनोरम रूप। सुनि बोलो जनमेजय भूप ॥ ताके पर प्रपितामह दक्ष। किए कहा सो कहो प्रतक्ष ॥ सुनि जनमेजय नृपके बैन। बोलो व्यास शिष्य मतिऐन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अनुपम राज्य पाय नृपधर्म। सुनो किए जो सुधरम कर्म ॥ आश्रम वर्ण धर्म व्यवहार। रक्षण किए लिए अधिकार ॥ विप्रणको दीन्हे धन भूरि। आश्रित भृत्यन कहं सुदपूरि ॥ नाट्य बाद्य कौतुक बिद जौन। सबको पोष कियो क्षितिरौन ॥ जौन गुरुकी वृत्ति अमंदे। कृपहि दए सो पूरि अनंद ॥ यथाउचित सबको सतकार। करत भयो नृपधर्म उदार ॥ नृप तेहि दिनकी निशा बिताय। सानद पास कृष्णके जाय ॥ ध्यानावस्थित कृष्णहि देखि। एहिबिधि बूझत भे अवरेखि ॥ प्रभु पुरुषोत्तम आदि अनादि। तुम क्षर अक्षर कहत श्रुतिनादि ॥ तुम करता जगदीश बनाय। तुम केहि ध्यावत इमि मनलाय ॥ सुनि प्रभु बोले बचन गंभीर। शरशय्यागत भीषम बीर ॥ अबिचल धारि रहो मन ध्यान। तहां बसो मम मन मतिमान ॥ सुनि बशिष्ठको शिष्य ललाम। भीषम ज्ञान धर्मको धाम ॥

दोहा ॥

बर्तमान अरु भूत जो अरु भविष्य है जौन। सो सब जानत धर्मबिद भीषम महिमा भौन ॥ ताते ताके पास चलि भूप सुनो सबधर्म। ह्वैहै ताके दिन गए अस्त ज्ञान जो पर्म ॥ केशवके ए बचन सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। नाथ कृपा एहि भांति की मोपै करत अनूप ॥ तौ रथ चढ़ि मोहि संग लै चलो तहां मतिरास। देऊ सुदरशन भीष्मकहं सुनो धर्म इतिहास ॥ कृष्ण सात्यकी सों कहे रथसम लावऊ साजि। दारुकि सात्यकि बचन सुनि ल्याये सुरथ ससाजि ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

उतै भीष्म कहं घेरिकै बैठे मुनि समुदाय। नाम तासु मंगल करण सुनो भूप मनलाय ॥

छप्पै ॥

जैमिनि देवस्थान व्यास नारद गुरु भृगु मुनि। अस्मक बात्स्य हरीत पैल लोमस मौद्गल गुनि ॥ दुर्वासा बाल्मीक कपिल काश्यप क्रतु तुम्बरु। भार्गव सनत्कुमार पुलह पिप्पल पुलस्ति अरु ॥ कच गालव गौतम धौम्र मुनि काश्य अंगिरा तत्वधर। अरु बिभाण्ड माण्डव्यमुनि भौतिक भाष्करि विप्रवर ॥

दोहा ॥

पवन मरीच सुमन्त अरु मार्कण्डेयं महान। अरु सम्बत उलूक अरु अरु तृणबिन्दु सुजान ॥ पर्वत धौम्य पराशर देवल आदि अनेक। बैठे चहुंदिशि भीष्मके सुनत सुबचन बिबेक ॥ तहं भीषम श्रीकृष्णकी अस्तुति कीन्हे भूरि। सबयरव्यापी कृष्ण प्रभु सो सुनि आनंद पूरि ॥ रथ चढ़िकै सात्यकि सहित चले प्रदायक क्षेम। एक सुरथ चढ़िकै चले पाण्डव पूरित प्रेम ॥ कृप युयुत्सु संजय विदुर चले सुरथ चढ़ि तच। कुरुक्षेत्र मधि ह्वै चले युद्ध भयो हो यत्र ॥

सोरठा ॥

तहं माधव अनुमानि नृपति युधिष्ठिर सों कहे। भार्गव इत रण ठानि शोणित पूरे पांचसर ॥ केशवके सुनि बैन चैन भरे भूपति कहे। कहो कृष्ण मतिऐन जन्म कर्म भृगुरामके ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण उवाच ॥ रोला छन्द ॥

सुनो भूपति रहो पूरब जन्हुभूप महान। सुवन तासु बलाकाश्वो तासु कुशिक अमान ॥ शक्र ताहि महान गुणि कछु अंश सुत भे तासु। गाधिनाम अगाध महिमा सुयश पसरो जासु ॥ सत्यवती भई कन्या गाधिको तपधाम। भूप ताहि ऋचीकमुनि कहं दई गुणि अभिराम ॥ कछु दिनमें सुमुनि तामैं पुत्र उपजन हेत। गाधिनृपके पुत्र नहिं हो तासुहित करिचेत ॥ दोय वेदि बनाय तिनपै अग्नि करिकै दीप्त। दोय पात्र सुचरु बनाए मंत्र करि अवलिप्त ॥ चात्र मंत्रन एक मंत्रित कियो मुनिमणि दत्त। ब्रह्ममंत्रन एक मंत्रित किए अतिशै स्वत्त ॥ एक चरु निज तियहि दीन्हे भाषिकै परभाव। देहु यह निज जननि कहं कहि दए एक बनाव ॥ भाषि इमि युगभाग चरु दे बिपिनि गे मुनिराज। इतै महं तहं गाधि आए सहित तिय सह साज ॥ विप्र तिय युगभाग चरु निज जननि आगे राखि। आपको यह भाग मम यह कहो पुत्रद भाखि ॥ भूपतिय कछु भेद गुणि निजभाग दीन्ही ताहि। भाग ताको आपु लीन्ही पुत्र अनुपम चाहि ॥ गयो भूपति धाम अपने सुमुनि आश्रम आय। जानिकै वृत्तान्त तियसों कहत भे समुझाय ॥ भाग तो तुव जननि अरु तुम लयो ताको भाग। पुत्र ह्वैहै तासु तापस परम पूरब भाग ॥ पुत्र तेरो महा दारुण गहे क्षत्री धर्म। होयगो यह चरु विपर्यय भयो ताको कर्म ॥ विप्रतिय यह बचन सुनिकै जानि भीषम रूप। कहो पग धरि करो प्रगटित पुत्र निज अनुरूप ॥ बचन यह सुनि कहे मुनि नहिं मंत्र निष्फल होत। करी जामै जौन विधि तिमि तौन करिहि उदोत ॥ विप्रतिय तब कही इमि मति होइ मुनि शिर मौर। पुत्र मति इमि होउ होउ पउत्र वरु एहि ठौर ॥

ऋचीकउवाच ॥

प्रिये बचन तथास्तु तो नहिं पुत्र पौत्रहि भेद। पौत्र तो अनुरूप चरके होयगो त्यनुखेद ॥

श्रीकृष्णउवाच ॥

भयो सुवन ऋचीक के यमदग्नि वर बसधाम। गाधि नृपके भयो बिश्वामित्र तपनिधि आम ॥ भयो सुत यमदग्निके भृगुराम दारुण दत्त। धनुर्वेद महान को जो लह्यो अन्त प्रतत्त ॥ गन्धमादन शैलपै बहु दिवस शिवहि अराधि। लह्यो शस्त्र अनेक जो अरु परशु वर व्रतसाधि ॥ परशु पाणि अमान ह्वै जो भयो लोक विख्यात। महा प्रज्वलित अग्नि सम यमदग्निसुत अवदात ॥ रहो पूरब भूमिपति कृतवीर्य्य नाम महान। पुत्र ताको कार्तिवीर्य्य महीप भो बलवान ॥ सुमुनि दत्तात्रेय की लहि कृपा सो रणधीर। सहस भुज लहि होत भो जगजैन अनुपम बीर ॥ जीति सातौ दीप सब यज्ञ कियो अगणित यज्ञ। नाम सहसार्जुनौ है हय नाथ सो सर्वज्ञ ॥ तासु बाणज अग्नि बढ़िकै एक दिन सुनु भूप। बिपिनि जारि वशिष्ठ मुनिको कियो भस्म स्वरूप ॥ कछु दिनमैं आइ मुनि तहं जरो आश्रम देखि। शाप सहसार्जुनहिं दीन्हे महा अघ अवरेखि ॥ जरत आश्रम बिपिनि मेरो नहीं वारै जौन। करैगो तो बाहु छेदन राम बिक्रम भौन ॥ कछु दिन मैं भूप सुत यमदग्निके घर जाय। देखि अनुपम चले हरि लै बत्स सहित सुगाइ ॥ रामसों रण भयो ताहित गयो अर्जुन तत्र। राम काट्यौ तासु सहसौ भुजा करि रण शत्र ॥ भूपको बध देखि भाजे तासु सुत समुदाय। राम ल्याए बत्स आश्रम बीच आनद छाय ॥ कछु दिनमैं कार्तिबीर्य्य महीपके सुत सर्व। यमदग्निमुनिके गए आश्रम गहे अतिशै गर्व ॥ समिधे कुश हित बिपिनि मधि कहं गए हे भृगुराम। जाय तब यमदग्नि को शिर दए काटि निकाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

भृगुपति बनते आइ तब दशा जनककी देखि । क्षत्रवंशके नाशको पण कीन्हे अति तेखि ॥
परशुपाणि चढ़ि जाइकै कार्तिबीर्य्यको वंश । पुत्र पौत्र सगोत्रको करत भयो विध्वंस ॥
सहसन हैहय सुभट बधि कियो रुधिरमय भूमि । कियो भूमि बिनु भूमिपति बधि सब क्षत्री घूमि ॥

जयकरी छन्द ॥

भूमि अराजक करि भृगुराम । कियो जाय गिरि कानन धाम ॥ तेहि दिशि बीती बरिस हजार । तब कौशिककौ पौत्र उदार । द्वैशत असित करण दै बाजि । प्रगट कियो जेहि कौशिक राजि ॥ जौन रैभ्य नामक अभिराम । ताको पुत्र परावसु नाम ॥ सो भृगुपतिसों बोलो तब । आपु कहत महि कियो निक्षत्र ॥ मिथ्या किए प्रतिज्ञा तात । शत सहस क्षत्री चढ़े बिभात ॥ तुम क्षत्रिणके भय इत आय । दिन बितवत अबिरल बन पाय ॥ बचन परावसुके सुनि राम । फिरि गहि शस्त्र चलो बलधाम ॥ जे क्षत्री हे भोगत भूमि । तिन्हैं बधत भो सब दिशि घूमि ॥ बाल प्रभृति बधि फिरि बन जाइ । दीन्हों बज्रशत बर्ष बिताइ ॥ तब जे रहे गर्भ मधि बाल । ते सब बढ़ि बढ़ि भे क्षितिपाल ॥ तब फिरि आइ बीर बल-रास । लरि सब तिनको कियो बिनाश ॥ बधि फिरि जाइ बसो बन माह । फिरि गर्भस्थ भए नरनाह ॥ सो सुनि फेरि आये बलभौन । कीन्ही भूमि बिना क्षिति रौन ॥ एहिबिधि फिरि फिरि एकइस बार । कीन्ही भूमि बिना भरतार ॥ तब गुणि अश्वमेधमख तर्पि । भूमि कश्यपहि दई समर्पि ॥ कश्यप तासों लै महि दान । क्षत्रिणको हित करि अनुमान ॥ कहे रामसों सुनु मतिमान । उरबी मोहि दए तुम दान ॥ तुम कहं उचित न यापैं बास । जाहु याम्यदिशि सागर पास ॥ सो सुनि राम उचित गुणि बैन । गो दक्षिण दिशि बिक्रम ऐन ॥ तहां समुद्रसों महिलै दच्छ । रचि सुर्पारिक देश अति स्वच्छ ॥ कीन्हें बास जानि रमणीय । महिमा जासु अनिरबचनीय ॥ इत कश्यप बिप्रण दै देश । तप हित कीन्हे बिपिनि प्रबेश ॥ बिनु रक्षक कछु दिनमैं क्षुद्र । भरे प्रमाद बैश्य अरु शुद्र ॥ देन लगे बिप्रण दुख भूरि । तब ह्वै पीडित भूरि बिसूरि ॥ रक्षक बिना बिकलता छाय । चली रसातल अति अकुलाय ॥ सो लखि कश्यप मुनि मनुमानि । ऊरूते धास्यौ हित मानि ॥ ऊरूते धास्यो मुनि आम । ताहीते भो उरबी नाम ॥ तब उरबी रक्षनके हेत । मुनिसों बिनय करी करि चेत ॥ नाथ भयो है हयकुल लुप्त । तामैं कछु बांचे रहि गुप्त ॥ ते मम रक्षण करैं सडौर । तौ हम रहैं न बिधि है और ॥ सो सुनि कश्यप करि स्वीकार । कीन्हे तिन्हैं भूमिभरतार ॥

दोहा ॥

जासुनाममहिकहिदईतिन्हैंल्याइअभिषेकि । निरभयकरिक्षितिपतिकिएकश्यपनीतिबिवेकि ॥
एहि प्रकारकी बारता कहत सुनत मतिऐन । निकट जाइ भीष्महि लखे शर शय्या कृत सैन ॥
सेवत मुनि समुदाय जेहि बिधिवत सब दिशि बैठि । मध्य भूमिगत भानु सम रहे तत्वमधि पैठि ॥
दूरहिते रथते उतरि केशव आदिक सर्व । नमस्कार करि जाय ढिग बैठत भए अखर्व ॥

चौपाई ॥

मुनिगण धर्म सकृष्णहि परखत । रङ्क पाइ धन जिमि भे हरषत ॥ तहं क्षण बितै कृष्ण अनुमानी । भीषमसों इमि कहे सुबानी ॥ हे गांगेय धीर जग जेता । सर्व धर्मबिद ऊरध रेता ॥ तुम देवन कहं शीक्षन लायक । तुम सब मतिमानन के नायक ॥ भावी वर्तित भूत विधाना ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हिय कर आमलक समाना ॥ सम दम दान सत्य मख सागर। धनुष वेद ज्ञातन मैं आगर ॥ वेदशास्त्रविद तत्व विशारद। तुम्हैं प्रशंसत भृगु गुरु नारद ॥ अष्टवसुनके अंश सुलक्षण। तुम वसु नवम विख्यात विचक्षण ॥ परम भक्त तुम मम मनभाए। सुनौ जौन हित हम इत आए ॥ जो जेठो सुत पाण्डु नृपति को। धर्मशील सम दम सति अति को ॥ क्षाचवंश को क्षय लखि भारी। शोक भयो ताको हिय चारी ॥ ताते कहि सब धरम नियामक। लोपित करो शोक दुखदायक ॥ सांख्य योग इतिहास पुराने। आश्रम वरणक धरम न माने ॥ देश जाति कुल रीति विधाना। वेद लोक श्रुति शास्त्र पुराना ॥ भीषम तुम सब जाननहारे। नृपति युधिष्ठिर पौच तुम्हारे ॥ होहिं अशोक कहो सो बानी। सुख दुख सम ज्ञाता तुम ज्ञानी ॥

दोहा ॥

तुम समान नहिं जगतमें तत्व बुझावन हार। धर्मनृपतिके शोकको शीघ्र करो संहार ॥
कृष्णचन्द्रके वचन सुनि भीषम शुभदिन जानि। ईषद उन्मुख बदन करि कहे जोरि युगपानि ॥

जयकरी छन्द ॥

नम: कृष्ण गोविन्द उदार। हृषीकेश अज जगकरतार ॥ नमो विश्वआत्मा भगवान। योगीश्वर जगदीश महान ॥ दिव तो शीश भूमि तुव पाय। रवि तुव नैन जगत सुखदाय ॥ दिशि तो भुजा कहत श्रुति वेद। घ्राण अश्वनीसुवन अखेद ॥ अतसीपुष्परंग घनश्याम। पीत बसन तड़िता अभिराम ॥ सदा निरखि हम होत सनाथ। अयेद बचन कहो यदुनाथ ॥ यह सुनि कहे कृष्ण अनुरक्त। भीषम तुम मम अविचल भक्त ॥ ताते तुम देखत मम रूप। नहिं अभक्तजन लखत अनूप ॥ चढ़ि विमान सुर वसु गन्धर्व। सेवत तुम्हें गुप्तरहि सर्व ॥ तुम्हैं गएते ऊरध ओक। बिनु ज्ञानी होई यहलोक ॥ ताते सब आए तो पास। ज्ञान धर्म सुनिबेकी आस ॥ सो गुणि ज्ञान धर्म सब भाषि। देहु भूप हिय आनदराखि ॥ कृष्णचन्द्रके ऐसे बैन। सुनि भीषम बोले लहि चैन ॥ तुम्हरे आगे भूभरतार। हम का कहैं ज्ञान व्यवहार ॥ बैठो जहां गुरू तेहि ठौर। शिष्यन कथत ज्ञान यह तौर ॥ लहि गुरुशासन कहिबो योग। इत तुम करत निदेश प्रयोग ॥

दोहा ॥

तुम आज्ञा लहि नाथ नहिं कहिबे मैं सन्देह। पै बाणनके घातसों है वेधित सब देह ॥
जीव होत पीडित महा मति न होति असफूर्ति। कथा पुरातन धर्मकी नहीं गहति है मूर्ति ॥
तपत मर्म लहि अतिव्यथा जीवमहा अकुलात। भ्रांति बरधि घेरत मनहिवचन नहीं कहिजात ॥
ज्ञान धर्मकी बारता किमि भाषैं यदुराय। तुम अनन्त बैठे जहां अरु सबऋषि समुदाय ॥

रोला छन्द ॥

भीष्मके ए बचन सुनिकै कहे यदुकुलचन्द। भीष्म धीर धुरीण तुम मतिमान वीर अमन्द ॥
देत हैं बरदान हम नहिं रहैगो तनताप। मोह पीड़ा सिथलता भ्रम करहिंगे नहिं दाप ॥
सुमति तो असफूर्ति ह्वै है मूर्ति ह्वै है सर्व। कढ़ैगी तो बुद्धिगत ह्वै कथा जौन अखर्व ॥
भए पूजत कृष्णके ए बचन ऋषिगण मोदि। किए सुरगण सुमन वर्षा गगण मध्य विनोदि ॥
इतैमैं सब अस्तगिरि पैं प्राप्त सूरहि देखि। नौमि उठि उठि करि प्रदक्षिण भीष्मकहं अवरेखि ॥ कृष्णसों ह्वै बिदा ऋषिगण गए निज निज धाम। कृष्ण पाण्डव सुरथ चढ़ि चढ़ि गए नगर अक्षाम ॥ करि अहार बिहार आदिक क्रिया रजनि बिताय। भोर फिरि सब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मके ढिग गए आनद छाय ॥ जाय तहं लखि ऋषिनकहं ते किए सविधि प्रणाम। भए बैठत भीष्मके ढिग कृष्ण पाण्डव आम ॥ बिदुर अरु धृतराष्ट्र संजय और नृप हतशेष। रहे जे ते भए बैठत तहां अति अवरेष ॥ जनमेजयउवाच ॥ तदनु वार्ता भई जो सो कहो सुनि परतत्त। कियो किमि को प्रश्न केहिबिधि कहे भीषम दत्त ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनो नृप जब भए बैठत कृष्ण भूप समाज। भूपसों तब कहे नारद मुनिनके शिरताज ॥ धर्मनृप जो सुन्यो चाहो धर्मको व्याख्यान। प्रश्न करि अब भीष्मसों सो लेहु सुनि मनमान ॥ बिना भीषम तासु वक्ता जगत में नहिं और। होन चाहत अस्त रबिसो भीष्म ज्ञानी भौर ॥ कृष्णके ए बचन सुनि नृपधर्म धरिक बिसूरि। कृष्ण प्रभुसों कहे सुबचन परम आनंद मूरि ॥ प्रथम बूझि न सकत हैं हम धर्मगति की बात। प्रश्न करिए प्रथम किमि यह होत संशय तात ॥ आपुहौ सर्वज्ञ कीजै प्रश्न योग बिचारि। आपु करता प्रश्न वक्ता भीष्म तिमि निरधारि ॥

दोहा ॥

नृपति युधिष्ठिरके बचन सुनि माधो अनुमानि। प्रश्न हेत उन्मुख भए जग उपकारक जानि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि गोकुलनाथ कबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना बिरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शांति पर्वणि राजधर्म्मे तृतीयोऽध्याय: ॥

जयकरी छन्द ॥

कृष्णउवाच ॥ भीष्म गई सुखसों यह राति। मति बुधि कछू प्रकाशि बिभाति ॥ खेद मूर्च्छा भ्रम भो दूरि। ज्ञान प्रकाशित भो सुदमूरि ॥ यह सुनि बोले भीषम धीर। लहि तो कृपा कृष्ण यदुबीर ॥ भ्रम गो भयो प्रकाशित चेत। ज्ञान पूर्ववत आनद देत ॥ मन बुधि मति कीन्ही असफूर्ति। भई सकल वार्ता की सूर्ति ॥ प्रश्न करैं जो धर्म महीप। कहब तौन जिमि निशि घर दीप ॥ यह सुनि कृष्ण कहे सुनु दच्छ। धर्मभूपको हिय अति खच्छ ॥ पूज्यन बधे राज्य के लोभ। ताते मन मैं आनत क्षोभ ॥ कछू लाज कछु भय हिय आलि। तो सन्मुख ह्वै सकत न बोलि ॥ यह सुनि भीषम कहे बिबेक। रणमैं बधे दोष नहिं नेक ॥ रणमैं बन्धु गुरू कै आन। प्रतिबादी सब शत्रु समान ॥ विप्रहि वर संध्यादिक कर्म। रण मैं मरब क्षत्रिको धर्म ॥ तजि गलानि नृप धर्म सुजान। सुनैप्रश्न करि धर्म बिधान ॥ यह सुनि धर्म नृपति हर्षाय। उठिकै गहे भीष्मके पाय ॥ भीषम बोलि शीश करि घ्रान। कहे बैठु सुत नृपमतिमान ॥ हे सुत त्यागि लाज भय मानि। प्रश्न करो हिय श्रद्धा आनि ॥

दोहा ॥

भीषम के ए बचन सुनि मोदि युधिष्ठिर भूप। नौमि भीष्म अरु कृष्णकहं कीन्हें प्रश्न अनूप ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

है शीक्षक सब धर्मको राजधर्म अभिराम। जिमि अंकुश मैगलनकहं घोरहि यथा लगाम ॥ सो बिचारि भाष्यो प्रथम राजधर्मव्यवहार। नृपहि उचित पहिले सुनै राजधर्म अधिकार ॥

रोला छन्द ॥

नृप युधिष्ठिर के बचन सुनि कहे भीषम दच्छ। नमो बिप्रण नमो धर्मन नम:कृष्णहि अच्छ ॥ सुनि युधिष्ठिर कहतहैं हम राजधर्म अनूप। देवता अरु द्विजन अरचत रहैं गति अनुरूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रालब्ध अरु पौरुषै मानै श्रेष्ठ त्याज्य न एक। करै पौरुष सिद्धि नहिं तब गुणै कर्म विवेक ॥ भूपतिहि है ऋद्धि धारण सत्यते नहिं और। लहत आनद दुहूं दिशि जो सत्यरत नृपमौर ॥ दान्त धर्मी गुणी सुन्दर मृदु जितेंद्री दच्छ। शान्तशील सुअहिंसक जो लोभ जित है स्वच्छ ॥ दान शील प्रसन्न मुख अरु शिखै सबगुण चोप। रहै निरखत रंध्र पर निजरंध्र राखै गोप ॥ महा मृदुता गहै नहिं नहिं महा उग्र सुभाव। महा मृदुता व्यरथ शासन महाउग्र अचाव ॥ नीति विधिते वधन लायक कर्म द्विजको चाहि। बधै नहिं निज देशतें गहि करे बाहेर ताहि ॥ पुरुष सज्जन करै करिकै दान मान यथेष्ट। आत्महित सब दुर्गते नर दुर्ग जानै श्रेष्ट ॥ कोष गिरि गढ़ नदी बन दल दुर्ग ए षट नाम। दलहि सबते अधिक जानै भूप सो मति धाम ॥ पुरुष को गुण दोष परखै करै तिमि सत्कार। विरह विषयाधीन नहिं नहिं तजै आत्म विचार ॥ आत्मसंगम गर्वयुत तिय तजै ताहि न भूप। क्षुद्रजनसों कहै कबहु न हास्य वचन विरूप ॥ आपनो प्रिय तजै ते जो प्रजन को हित होय। तजै भूपति ताहि राखै धार धर्म समोय ॥ रहै राखे शास्त्र को अरु शस्त्रको अभ्यास। रहै राखै कर्म करिकै चारि फलकी आस ॥ रहै रक्षत धर्म आश्रम बरण को मनलाय। बरनशङ्कर होन देइ न दण्ड भय अधिकाय ॥ काम सौंपे जाहि तामैं गहै ना अविशास। विश्वास अतिशै गहै नहिं नहिं कहै काहू पास ॥ भिरै छोटेहु शत्रुसों तौ चलै आज बढ़ाय। रहै लाए भेद ताके फौजमें मनलाय ॥ भार राखै भटन पै नहिं रहै गाफिल नेक। आपु रहि चहूतन्य नियमित रहै युद्ध विवेक ॥ रहै कर्षत सुधनु नययुत तथा बर्षत पेखि। करै अर्जन कोषको नृप नीति परम विशेखि ॥ वृद्ध सुगुणी सुबुधि धर्मी गणिक भिषज सयान। शकुन ज्ञातन संग राखै भूप सो मतिमान ॥ शूर कवि निज भक्त अरु निज नात निज कुल जात। साधु विद्यामान नृपतिहि मान्य निति ए सात ॥ करै आत्म सहायताको करै आपु सहाय। पक्ष निज परपक्ष निरखत रहै निति मनलाय ॥ रहै सबको वित्त सबकर रहै जो भयदेत। शीघ्र सो नृप क्रूर प्रकृती जाय बधि तेहि हेत ॥ दगा सहसा कर्म छल अनियाय कर्म बलात। सकै करि नहिं प्रजा जाके तौन नृप अवदात ॥

दोहा ॥

पुत्रपितकोगेहमें जिमि विलसत विनुभीत। तिमिविलसत जाके प्रजा सो नृप सदा अजीत ॥
चार जासु सब ठौर रहि गुप्त लखत व्यवहार। मंत्र जासु अति गुप्त है पटु सो भूभरतार ॥
पूर्व प्रचेतस मनु कहे षट विनसत सुनुतौन। विन बकता आचार्य्य अरु निपढ़ा ऋत्विजजौन ॥
भूप अरक्षित भूपतिय अप्रियवादिनि नाश। गोप नशत गृहवास करि नाऊ करिवनवास ॥
शत्रुहि दुर्बल देखिकै भूप न जानै छाम। समय पाय थोरौ अगिनि बढ़ि जारत सब ग्राम ॥
राजतंत्रअति कठिन है नहिं निबहत अल्पज्ञ। ताते आलस त्यागि नृप रहत सदा सर्व्वज्ञ ॥
भीषम यह नृपनीति कहि भाषे सुनु कुरुभूप। होइ कहूं संदेह तौ बूझो वचन अनूप ॥
यहसुनिनारदआदिसुनि कृष्णयुधिष्ठिरआदि। साधुसाधुभीष्महिकहे अतिऋजुसुवचननादि ॥
संध्यालखिकृष्णादितब द्विजन नौमिउठितच। करिसुप्रदक्षिणभीष्मकहं रथचढ़िगे गृहयच ॥
संध्यादिक करि निशि बितै प्रातकृत्य करिसर्व। रथ चढ़िचढ़ि कुरुक्षेत्र ह्वै गे जहं भीष्मअखर्व ॥
नौमि व्यास आदिकन कहं बैठे सब मतिमान। बन्दि भीष्मकहं कहत भे धर्म महीप सुजान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरउवाच ॥

भो राजा यह शब्द बर सो काहे मतिभौन । तुल्य पाणि पद शीश कटि उरग्रीवा अरु श्रौन ॥
जन्म मरण ब्यापार सम एकहि सेवत सर्व । पालत सब कहं एक यह कारण कौन अखर्व ॥
कहोपितामह सबिधिजेहि यहसंशय मिटिजाय । यह सुनिके भीषम कहे सुनो भूप कुरुराय ॥

कवित्त ॥

पूर्व कृतयुगमैं न राजा हो न रही राज दण्ड हो न रहो दण्डदायक जो कहिये । आपुसमैं प्रजा बूझि धरम परस्पर रक्षण करत रहै जहं जैसो चहिये ॥ कहै गोपीनाथ कछुदिन बीते बाढ़ो लोभ निज निज कारजकी सिद्धि कीन्हें सहिये । बिना दण्ड दाता निरभै ह्वै अनुमाने अब सोई करै जाते सुख शौर्य्य मोद लहिये ॥

अपरं ॥

बाच्य औ अबाच्य भच्या भच्य औ अगम्यागम्य अपनो औ परको बिचार छोड़ि सिगरे । दण्ड दाता रहो नहिं लोकलाज छोड़ि दीन्हें स्वारथके लोभ लागि देखि देखा बिगरे ॥ गोपीनाथ देखि तौन सुरगण पीड़ित ह्वै जाय पास बेधाको दशा समस्त निगरे । गोपी नाथ देखि तौन सुबेधा सुनि तौन घरी एक बूझि अनुमाने बिना दण्ड दाता एकएक भे अदिगरे ॥

दोहा ॥

तब बेधा अनुमान करि पद सहसन अध्याय । बिरचे जाके मधि कहे सब फल साधन न्याय ॥
पृथक् अर्थ गुण सब कहे अरु त्रिगर्व बिख्यात । स्थान षड्वित्तयके कहे देशकाल अवदात ॥
राजपुत्र लक्षण कहे अरु राजनकी नीति । मंत्र कहे फल मंत्रके देन कहे अरु रीति ॥
जात्राकाल त्रिवर्ग अरु पञ्चवर्ग सबिधान । बिरचे रचना सयनकी बिजयधर्म अनुमान ॥
शत्रु मित्रके गुण कहे कहे मार्गगुण तौन । अरु उत्पात निपात कहि कहे युद्ध जतिजौन ॥
अस्त्रशस्त्र सहमंत्र कहि कहे व्यूह व्यवहार । कहे अलभको लाभ अरु लाभ बिबर धनचार ॥
रक्षणबिधिसब प्रजनको पुर गढ़ रक्षण डौर । बरणे बिधि भगवान प्रभु जग प्रपञ्च सबऔर ॥
नीतिशास्त्रअतिबिमल सो महाअनूपमचाहि । प्रथम शंभु कीन्हें ग्रहण जगत प्रशंसत जाहि ॥
सो लखिकै अति मोद गहि कार्तिकेयबलरास । द्वेशहजार अध्यायको करत भए अभ्यास ॥
तदनु इन्द्र कीन्हें ग्रहन पांचसहस अध्याय । तीनिसहस अध्याय तब सुरगुरु गहे सचाय ॥
बार्हस्पत्य कहात सो जानत सब आचार्य्य । शुक्र सहस अध्याय सो बरणे योगाचार्य्य ॥
एहि प्रकारसबशास्त्रको उतपतिभोसुनुभूप । अबसुनुजेहि बिधिहोतभोनरपतिउतपतिरूप ॥
सुनिउतपति सबशास्त्रकी सुरगण आनन्द पाय । जाय बिष्णुके पास तिमि कहत भए ससुभाय ॥
सोसुनिहरि गुणिघरिकलौं जगशीक्षणकेहेत । प्रगटकिए निजतेजसों बिरजनामअतिचेत ॥
भयो प्रणीता तासु सुत कीर्तिमान भो तासु । कर्दम ताको सुत भयो तपप्रभाव अतिजासु ॥
ताकोसुतक्षितिपाल भो नामअनंग बिशाल । नीतिमान सुत तासु भो मृत्युनाम क्षितिपाल ॥
भई सुता नृप मृत्युकी नाम सुनीथा एक । बेणु नाम सुत तासु भो सो धास्यो अबिबेक ॥
मुनिगण ताकहं पकरिकै मंथे दक्षिणजानु । क्षुद्रपुरुष ताकौं कढ़ो जों निषाद बनमानु ॥
तबदक्षिण कर मथत भे ऋषिगण भरे उछाह । तहां शस्त्रसह शक्र सम प्रगटो पृथु नरनाह ॥
सर्व वेद वेदांग अरु धनुर्वेद ज्ञातार । पृथु बूझत भे मुनिन सों निज करतव्य अचार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबऋषिगणपृथुसोंकहे पालोप्रजा सुनीति । बिनु शीचक अधरम गहे सिगरे प्रजा अभीति ॥
इमि कहि सम्मत करि भए शुक्र पुरोधा तासु । बालखिल्य मंत्री भए गर्ग गणिक भे आसु ॥
अस्तुति हित प्रगटित भए मागध सूत अमन्द । बन्दीजन परबीण अति करता सुयश सुछन्द ॥
शिला ढेर सबथर परे भूमि विसम अति देखि । पृथु महीप बलवान प्रभु सम करिबो अवरेखि ॥
शिलाटारि धनुषाग्रसों थर थर कीन्हें शैल । तबते महि एहिविधि भई सम सरूप ऋजु गैल ॥
विष्णु शक्र विधि ऋषिगण सह किए तासु अभिषेक । शक्रधनद तेहि देत भे धन असंख्य सविवेक ॥
हयगजरथ कोटिन पुरुष भए मानसिक तास । पृथुसुभूमिपति करत भो सिगरो धर्म प्रकास ॥
पृथु दोहे गो रूप महि सचह शस्य महान । देव असुर आदिक सबै दोहि लए मनमान ॥
भूमि तासु पुत्री भई ताते पृथ्वी नाम । कीरत पृथु नरनाह की जग जाहिर अभिराम ॥
जन रंजन गुणते भयो राजा शुद्ध अनूप । क्षतते त्राण किए भयो क्षत्री गुण अनुरूप ॥
राजा मो बिलसत प्रविशि विष्णुतेज को अंस । ताते पालन गुण गहे राजा परम प्रशंस ॥
विधि कीन्हें सब शास्त्रजो सो राजनके हेत । ताते राजन कहं उचित सदा शास्त्र रत चेत ॥

सोरठा ॥

यह सुनि धर्म महीप भीषमसों फिरि कहत भे । अब कहिये कुलदीप धरम आश्रम बरणको ॥
राजधर्म मत जौन राजा बरधत जौन करि । राज्य प्रजा धन भौन बढ़त कहा कीन्हें कहो ॥
राज्यसहाईकोश मंत्रीऋत्विजत्याज्य कस । भरे कौन सो दोस त्याज्य अचार्य्य पुरोहितौ ॥
कैसो आरत पाय करब के सुविश्वास बर । केहि औसर मनलाय निज रक्षण अति दृढ़ उचित ॥

मधुपछन्द ॥ भीष्मउवाच ॥

द्विजन नौमि । वचन सौमि ॥ कहत तौन । चहत जौन ॥ बिना क्रोध । क्षमा सोध ॥ सत्य सोह । बिना द्रोह ॥ भृत्य पाल । शुचि रसाल ॥ निज सुदार । रत उदार ॥ धरम राग । कपट त्याग ॥ विप्र देव । भक्ति भेव ॥

दोहा ॥

नृप साधारण ए सदा तीनि बरणके धर्म । अब ब्राह्मण बर बरणके सुनो धर्म अरु कर्म ॥
प्रथम करै अध्ययन फिरि अध्यापन सुनु भूप । दान प्रतिग्रह जजन अरु याजन करै अनूप ॥
ब्राह्मणके षटकरम ए इनमें क्षत्रिहि तीनि । अध्ययन दान अरु जजन इमि कहत प्रवीण प्रवीनि ॥
युद्ध प्रजा पालन करब तस्कर बधकी चाह । पालन बरणाश्रम धरम राजनीति उत्साह ॥
दान अध्ययन यज्ञ अरु धन संचन व्यवहार । पालन सिगरे पशुन को वैश्यधर्म अधिकार ॥
पूर्वप्रजापति पशुनरचि भए वईश्यहि देत । ब्राह्मण क्षत्रिहि सब प्रजा दीन्हें पालन हेत ॥
सेवा करब त्रिवर्ण को धर्म शूद्र को पर्म । करि सेवा त्रय बरण की गहै जीव का कर्म ॥
सेवा हित त्रय बरणकीरच्यौ प्रजापति ताहि । शूद्रहि उचित न जोरिधन आपु पुजावै चाहि ॥
गहै सुश्रद्धा यज्ञकी शूद्र पाइ जौ गाय । फल पावै ताहशै करि सिद्ध विप्रके हाथ ॥
भूपति है सब बरण कहं यज्ञदान अधिकार । यज्ञदान सम और नहिं इतउत साधनहार ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

वर्णधरम एहि भांति कहि भीषम ज्ञाननिधान । कहत भए आश्रमधरम सुनोभूपमतिमान ॥
लहि संस्कार द्विजत्व लहि करै शास्त्र अभ्यास । तब सदार ह्वै कै गृही करै सुधर्म प्रकास ॥
देव पितर अरचन करै अतिथिन को परिपोष । पालन करै कुटुम्बको यह गृहधर्म अदोष ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै सहदार अदार कै करै बिपिनिमधि बास। तहां आरण्यक शास्त्रको सविधि करै अभ्यास॥
रहि सुजितेन्द्री तत्वबिद बानप्रस्थ बिधान। ऊरध रेता त्यागि तन पावत पद निर्बान॥
ब्रह्मचर्य्य ब्राह्मण गहै रहै निरासन तौन। राखै भोजन वृत्ति सो प्राप्त होइ जब जौन॥
मननशील अविकारनिति इन्द्रीजित निष्काम। ब्रह्मचर्य्य ब्रतसिद्ध करि पावत पद अभिराम॥
परमधरमसन्यासकोफिरि न ग्रहण करित्याग। एहिबिधिआश्रमधरमसबसाधतपूरणभाग॥
गृहीबिप्रकहंउचित है नितिषटकर्मबिधान। करिबनबास सनियम द्विज है कृतकृत्य महान॥
ग्राम्यजीविकाकुटिल द्विज शूद्र पुरोहित जौन। असिजीवी वृषलीपती बिप्र शूद्रसम तौन॥
कृषीकार हिंसक चुगुल लम्पट बिगत बिचार। बिप्रयज्ञ के गेह मो नहिं ताको अधिकार॥
जेहि प्रकार चयबरण कहं और आश्रम चार। सुनोतौनभूपालमणि कहत पृथक् व्यौहार॥
करि सेवा चयबरणकी करि पौराणिक कर्म। पुत्रोत्पति करि भूनृपति आज्ञा लै त्यजिभर्म॥
शुद्र और आश्रम गहै बिना अशिष सन्यास। बैदिक करि सन्यास बिनु बैश्यहि आश्रम बास॥
तिमि क्षत्रिनकहं उचित है करि कै पुत्र प्रधान। गहै और आश्रम तथा बिनु संन्यास महान॥
बैधकर्म करि नीतियुत प्रजा पालि सबिधान। कै अधिकी कै स्वल्प करि युद्ध भूरि दै दान॥
यज्ञ अश्वमेधादि करि पुत्रहि दै महिभार। पितृयज्ञ करि करि तथा देवयज्ञ अधिकार॥
भूरिदक्षिणा द्विजन दै प्रजन तोषि मतिरास। सुनो भूप भूपहि उचित और आश्रमबास॥
है सुधरम सब बरणके नृप सुधरम आधीन। नीतिनिपुण नरनाह तब होत धरम सब पीन॥

रोला छन्द॥

पूर्व मान्धाता महीपति रहो अति अभिराम। उग्रमख सो कियो बिष्णुहि लखनको करि काम॥ शक्रको गहि रूप श्रीजगदीश प्रभु तहं आय। कहे मान्धाता नृपतिसों सुनो नृप मनलाय॥ बिष्णुप्रभुके लखनको तुम किए काम महान। तासु दरशन हमहि दुरलभ लखै को नृप आन॥ और काम बिचार करिकै कहो जो मनमान॥ देब हम सो पूर्ण करि मति गहो हठ अनुमान॥ मान्धाता शक्रके ए बचन सुनि अनुमानि। कहे हम बनबास करिबो चहत निजहित जानि॥ बिष्णु सबसों कठिन कीन्हे राज धर्म ललाम। प्रजापालन बिप्र रक्षण दुष्टदण्डन आन॥ बरण आश्रम धरम रक्षण दुर्ग संचन सर्व। यज्ञ करतब शास्त्र चिन्तन दान ब्रत सब पर्व॥ बिना रक्षण किए नृपके नशत सिगरे धर्म। धर्म बिनशे प्रजा बिनशत धारि कुत्सित कर्म॥ भूपके ए बचन सुनिकै कहे शक्र सुजान। सत्य नृपके किए रक्षण रहत धर्म समान॥ योग्य तुम सब धर्म रक्षण करो नृप ब्रत राखि। उचित भूपहि प्रजापालन जगतहित अभिलाखि॥ मान्धातोवाच॥ यवन शक्र कांबोज बर्बर अरु पुलिन्द तुषार। पौंड चीन किरात भद्रक कङ्क अरु गान्धार॥ करत तस्कर कर्म ए सब बिदित जानत जौन। सहैं हम केहिभांति ए सब लहैंगे गति तौन॥ इन्द्रउवाच॥ पिता माता गुरू अरु आचार्य्य भूप अमान। तासु सेवन करत ते सब जानि धर्म महान॥ करत पोषण गोतको अरु अतिथको सतकार। दान बिधिवत देत बिप्रन समयके अनुसार॥ देत ज्ञातिन अन्न भोजन पाक यज्ञ बिख्यात। इहै उनको धर्म ताते लहत गति अवदात॥ मान्धातोवाच॥ और तस्कर बहुत जगमैं करत कुत्सित कर्म। तासु व्याख्या कहो सुरपति कौन जानत धर्म॥ इन्द्रउवाच॥ होत भूपति सिथिल मति नहिं दण्ड जानत दैन। बरण आश्रम धरम तब च्युत होत बाढ़त ऐन॥ धर्मशास्त्र पुराणके बिनु सुने जन ह्वै मूढ। करत तस्कर करम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिक करम कुत्सित रूढ़ ॥ भूमिपति चैतन्य धारत दण्ड नीति महान । चलत नहिं तब धर्म ताते भूपधर्म प्रधान ॥ श्रेष्ठ गुरु एहि लोकको नृप जौन सुधरम पाल । तासु शासन नहीं मानत मूढ़ सो चाण्डाल ॥ नीतियुत नहिं प्रजापालन भूप जानत जौन । शीघ्र विनशत तौन जैसे अन्ध करि पथ गौन ॥ भीष्म उवाच ॥ भाषि ऐसो शक्र रूपी विष्णु गे निजधाम । भयो मान्धाता महीपति राज्य रत अभिराम ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ सुने हम सब बरण करता सर्व आश्रम बास । कौन विधि यह पितामह सो करो सविधि प्रकाश ॥ भीष्म उवाच ॥ धर्मनृप सरबज्ञ तुम तुम नहीं जानत कौन । गुप्त विधि गहि धर्म बूझत कहत हैं हम तौन ॥ जो अकाम अद्वेष सुमती ज्ञान गति ज्ञातार । सुबुधि समदरशी सुदाता सावधान सुचार ॥ क्षमा सम दम धीरता गुण दया साधनहार । जौन निग्रह अरु अनुग्रह कर्म कुशल उदार ॥ सुहृद समदरशी अहिंसक अभय बर दातार । जौन पालत आगतन निति करत पर उपकार ॥ मान मानिहि देत जो सत्कार करि सुखरास । सुनो भूपति करत सो सब आश्रमको बास ॥

दोहा ॥

करत आह्निक यज्ञ जो देव पितृ मख जौन । देवार्चन रत पुरुष सब आश्रम बासिक तौन ॥
देशधर्म कुलधर्मको पालन करता जौन । परधन परतिय विमुख सब आश्रम विलसत तौन ॥
बरण आश्रम धर्म अरु सर्व धर्म चरितार । धर्मी पुरुष सदैव सब आश्रम विहरनहार ॥
बेदाध्ययन सुभाव जे शास्त्र निरीक्षण वान । तत्व मनन करता सकल आश्रम में परधान ॥
गुरुसेवी करता सुजप सदाचार रत जौन । सतसंगति रत पुरुष सब आश्रम बासी तौन ॥
गृह आश्रमते सधत है सब आश्रमको बास । ताते गृहआश्रम सरस जौ मति रहै अकास ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ सोरठा ॥

बरण आश्रम रीति इमि कहि भीषम कहत भे । पाले सुधरम नीति राज्य प्रजा धन सब बढ़त ॥
राज्य अराजक जौन कै अजान राजा जहां । औशि त्याज्य है तौन तासु दोष मन दै सुनो ॥
तहंननीतिकोलेस सबलनिबलकहंदेतदुख । जिमि जलजन्तुविशेष बड़े लघुन कहं खात गहि ॥
तहं सब धर्म नसात बढ़त पाप दायक निरय । विनशत गुण अवदात हाथ न आवत धन कबहुं ॥
सदाबसतिसबपास घोर भीतिपरसयनको । दिन लहिहोतविनाश घरधन ऊरमति जननको ॥
राजा जहां अज्ञान व्यर्थ तहां गुण गुणिनको । जिमि कामिनिको मान व्यर्थ नपुंसक पुरुष ढिग ॥
सुगुणी शूर सुजान सबको करतब व्यर्थ तहं । जहं भूपति अज्ञान बंध्यातिय मैथुन यथा ॥

दोहा ॥

इन्द्र यथा सुरलोकमधि भूप तथा एहिलोक । सुरपति पालत लोक सब तिमि भूपति सबओक ॥
ताते सर्वविधि प्रजन कहं रक्षणीय क्षितिपाल । धनतनमनदेकपटबिनु आलसबिनसबकाल ॥
पूर्व प्रजन मनुसोंकियो यहनिबन्धगहिराग । हमसबसेइव नृपतिनिति देतनमन धनभाग ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

परम देवता नृपति कहं किमि भाषत मतिमान । कहो तौन मम पितामह तुमसर्वज्ञ सुजान ॥

भीष्म उवाच ॥

अत्रपूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृप तौन । कियो जीवसों प्रश्न यह बसुमनउरबी रौन ॥
जीव प्रश्न सो सुनि कहे नृप सुनु भूप प्रभाव । कोपि भूपके भय दए प्रजा होत गतचाव ॥
नृपति मूल सब धर्मको लघु बरगति दातार । परालब्ध जस प्रजनको नृप महिस्य करतार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना उदय शशि सूरके यथा रहत तम छाय। तथा भूप बिनु देशमधि बसत आपदा आय ॥
जिमिजलसूखे होत है बिकल मीन समुदाय। नृपहिभएकुशप्रजनकहं तिमि आपद नगिचाय ॥
गोपबिनागोयूथजिमि जल बिनुशालीभाव। भूपबिना तिमिप्रजाजिमि कर्णधार बिनुनाव ॥

छप्पै ॥

हरै निबलको बित्त सबल जौ भूप न रक्षै। चोर निधन करि देहि प्रजन जौ भूप न रक्षै ॥ गुरुण न मानै मूढ़ धर्म जौ भूप न रक्षै। प्रजा अपाप न होहि धर्म जौ भूप न रक्षै ॥ लरि मरै सबल भिरि जौ न भूप रक्षण करै। नहिं चलै बनिज ब्यौहार मग जौ न भूप रक्षण करै ॥ बरण आशरम धर्म मिटै जौ भूप न रक्षै। होहि बरण संक्रमित लोक जौ भूप न रक्षै ॥ बेदउक्त मख कर्म मिटै जौ भूप न रक्षै। शास्त्र लोक कुलरीति मिटै जौ भूप न रक्षै ॥ बणिक करै दुरभिक्षभाव जौ भूप न रक्षै। यज्ञ दान व्रत न होइ जौ भूप न रक्षै ॥ मतिमान नृपति रक्षत रहै तौ न नेकु सुधरम टरै। समभाव धरम सुकरम रहै ओक ओक आनंद भरै ॥

अपरं ॥

भूप अग्नि रबि धनद मृत्यु यम बिष्णु सदृश निति। करत दण्ड दे शुद्ध प्रजनसों नृप पावक मिति ॥ चारु चक्षु करि लखत रहत परजन सों दिन मनि। बधत शत्रु समुदाय जौन सो मृत्यु सदृश बनि ॥ जौ देत अधरमिन दण्ड अति धरमिन पोषत तौन यम। धन देत रहत निति धनद नृप परजन पालत बिष्णु सम ॥

दोहा ॥

मित्रपुत्र दौहित्र हित अरु पितृव्य सुभाय। भूप न इनको हित करै लखि अन्यायकरिन्याय ॥
ऐसो समदरशी नृपति सुमन सदृश नहिं भेद। जासु कृपाते दुख मिटत कोपे उपजत खेद ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

जीतिलहतनितिअरिणसोंकेहिबिधकोक्षितिपाल। कहोपितामहनीतिवहतुमसमतिमानबिशाल

भीष्म उवाच ॥

जयशत्रुनसोंलहतसब इन्द्रीजित नृपजौन। आपुहि जीतिनसकतकिमि औरहि जीततौन ॥
बन उपवन सब नगर मधि बन्धु आदि जेऔर। राखैहित अनहित न प्रति गुप्त चार सबठौर ॥
समाचार जैसो सुनै तैसो रचै उपाय। गुप्तचार परदेसके बसन न पावै आय ॥
आदि दिवान सुमंत्रविद तिनसों मंत्रदृढ़ाय। आपु समुझि सिद्धान्त गुणि करै जौन सुखदाय ॥
प्रबल शत्रुसों लरै तौ करिकै भेद उपाय। लखन न पावै आपनो भेद शत्रु दृढ़घाय ॥
दान मान दै भटन कहं राखै सदा प्रसन्न। रहै मंगावत सयनमें तृण रस इन्धन अन्न ॥
परम्परा के सुभट हित शुद्ध सुबुधि बलवान। राखै अपने पासदै हय हथ्यार सन्मान ॥
निबल शत्रु कहं निबल गुणि लरैनबिनाउपाय। प्रबलशत्रु पहंचलै जिमि तिमिनिबलनपहं जाय॥
निज अपकारी होहिं तेहि मारै औसर पाय। उपकारी अवरेखि कै पोषै प्रीति बढ़ाय ॥
निबल भूप कर देइ तौ लरै न सहसा जाय। क्रमसो धनलै निधनकरि तब महिलेइ दबाय ॥
महाप्रबल अरि होइ जो नहीं लरनकेयोग। साम दामकरि फेरितेहि करै प्रबल उतयोग ॥
जौं नहिं मानै निबल गुणि लयो चहैमहिमारि। तौधन द्वारा पौरजन देइ प्रथमही टारि ॥
धनी प्रजा अरु कारणी बन्धु इन्हैं सन्मानि। टारै सबके संग करि संग दै भट अनुमानि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामी अपने अंग जे चाकर सखा दिवान। भेजै तिनके दार धन जहं निज दार समान ॥
आपु विपिनि गिरि अगढ़ गढ़ पकरि रहै थिर भूप। शत्रु हरै निज देशको यह नृपनीति अनूप ॥
रहै लगाए शत्रुके दलमधि चार अनेक। लेत रहै सब समयकी खबरि विचार विवेक ॥
साम दाम आदिकनकी दए रहै पैगाम। धन दै ताके सखनकों करै पक्ष अभिराम ॥
चोर लाय करषत रहै हय हाथी हथियार। ताहूके वधको तिन्हे दए रहै अधिकार ॥
लरै शतघ्नी लायकै नेकु न त्यागै धीर। समय देखि कै कढ़ि लरै सो जय लहै गंभीर ॥
ऐसे दिन हित गढ़नमें सराजाम को ढेर। सूचे रहै क्षितिपाल निति लगै न आये बेर ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

केहिप्रकार चरिभूप लहतसुयश इतस्वर्गउत। सो आचार अनूप कहो पितामह परम पटु ॥

भीष्मउवाच ॥ छप्पै ॥

राग द्वेष विनु करै धर्म अरु कर्म सुभावन। बिना निठुरता करै अर्थ संचन मनभावन ॥
ऋजु भाषै बिनुभीत दानपाचन दै मोदत। दया न त्यागै कबहु न निजगुण भाषि विनोदत ॥
गुणि बन्धुविरोध न हिय धरै नहिं अनार्य्यकहं हित करै। जे भरे लोभ यशहीन नहिं न्यायभार तिनपहं धरै ॥ अहित मीठ नहिं खाय करै नहिं तिय संगम अति। दया त्यागि नहिं गहै उग्रता कहै बचन सति ॥ विनु परिखे नहिं लेइ दण्ड नहिं मंच प्रकाशै। धन न साधुसों लेइ असाधुहि देइ न आशै ॥ नहिं देवन अरचै दंभसह लेइ न कुत्सित धन कबहु। निति देश काल परखत रहै रहि प्रसन्न दरशै सबहु ॥

दोहा ॥

गुरु मान्य अरु गुणिनमें गहै न माया भाव। कलबल शत्रु सबर्ग बधि गहै नहीं पछिताव ॥
गहि ऐसो आचरण निति भूपति भोगै भूमि। तासु चन्द्रिका सदृश यश लसै जगतमेंघूमि ॥
भूप प्रातही उठि धरै गुरु इष्टको ध्यान। प्रातकृत्य करिकै करै देवार्चन सविधान ॥
दानदेइफिरि द्विजनकहं सुनि आशिष सुखैन। राजकाजफिरि नीतिमग करैभूपमणिऐन ॥
आदि पुरोहित द्विजनको पूजन श्रीदातार। विप्र कृपाते नृपनकी बढ़ति विभूति उदार ॥
विप्र बदनतें बाहुतें क्षत्री भए अनूप। वैश्य उरूते होत भे पदते शूद्र सरूप ॥
विप्र जेठ सबतें गुरु सबविधि पूजनयोग। प्रगट विष्णुसुख सुदित सुखदाय कसकल प्रयोग ॥
भोजनते तोषे द्विजहि तोषत प्रभु जगदीश। विप्र पाणि सब जगतको गुरु लघु विश्वेवीश ॥
यथा पुरोहित नृपतिको पाप पुण्य परसूति। लहत पुरोहित नृपतिको पाप पुण्य परसूति ॥
बाहुजक्षत्रिहिविधिदयेदण्ड दान प्रतिपाल। द्विज क्षत्री निजधर्मगत तो अनंद सबकाल ॥
इमि पुरूरवा सों कहे पूर्व वायु समुझाय। सोई हम तुमसों कहे विप्रकृपा सुखदाय ॥
क्रियावान धरमी सुहृद बहुश्रुत शास्त्री दच्छ। चहो पुरोहित भूप कहं मंत्राभ्यासी स्वच्छ ॥
एहिविधि महिमा विप्रकी पुरूरवाके पास। कश्यप भाषे प्रश्न सुनि सुनो भूप मतिरास ॥
होत पुरोहित कुशल तब नृपहि कुशल सरवच। सुनो पूर्व इतिहास हम भूप कहत हैं अच ॥

चौपाई ॥

पूर्व भूप मुचकुन्द अमाना। जीति सकल पृथ्वी बलवाना ॥ भरो गर्व अति धनपतिजू पर। सैन सहित चढ़ि गो गिरि ऊपर ॥ धनपति असुरण शासन दीन्हे। ते लरि नृपदल मरदित कीन्हे ॥ तब मुचकुन्द द्विजनसों भाषे। खरे लखत हौ का अभिलाषे ॥ सो वशिष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरोहित सुनिकै । ए प्रभाव प्रगटत भे गुनिकै ॥ तपबल असुरण लोपित करिकै । पथ निरमल कीन्हे पण धरिकै ॥ धनपति तप प्रभाव यह ज्वैकै । कहे भूपसों प्रगटित ह्वैकै ॥ निज भुजबल प्रगटित करु राजा । दूरि राखि सब बिप्र समाजा ॥ भुजबल बिजय लहे तें कीरति । परबल बिजय न महिमा धीरति ॥ सो सुनि नृप मुचकुन्द रिसाई । कहे धनद तुम सुमति न पाई ॥ रचो स्वयंभु भूमि धुरधारण । ब्रह्म क्षत्रि जगपालन कारण ॥ बिप्र मंत्र तप बल सब लायक । क्षत्री अस्त्र बाहुबल चायक ॥ ब्रह्म क्षत्रि मिलि कारज साधत । सो हम किए दोष कत नाधत ॥ सुनि अलकेश मोद हिय आने । नृप मुचकुन्दहि अति सनमाने ॥ ह्वै मुचकुन्द बिदा धनपति सों । निजपुर आये आनंद अतिसों ॥ बिप्रण पूजि कूजि मृदुबानी । भो कृतकृत्य भूमिपति ज्ञानी ॥

दोहा ॥

एहिबिधि बिप्र प्रसादते बिजय लहत क्षितिपाल । नित्यधर्म है नृपतिको द्विजसेवा सबकाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणि राजधर्म्मेयुधिष्ठिरभीष्मसंबादोनामचतुर्थोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउ बाच ॥ दोहा ॥

भूपति जो आचरण करि बरधत प्रजन सदैव । कहो तौन आचरण प्रभु तुम वक्ता जिमि दैव ॥

भीष्मउवाच ॥

दानशील मखशील नृप तपब्रतशील सुजान । धर्मशील बरधित करत परजन सहित बिधान ॥ भूप गहत आचरण जो प्रजा गहति है तौन । होत यथा राजा तथा प्रजा धूरि जित पौन ॥ नृप रक्षित परजा करत अधरम सुधरम जौन । तासु भाग चौथो लहत भूप शास्त्रमत तौन ॥ चोर हरै धन प्रजाको चोरहि लहै न भूप । तौ तितनो धन तेहि प्रजहि देइ नीति अनुरूप ॥ ताते तस्कर गहन मैं मन राखै नृप जात । गहि नहिं छोड़ै बध करै तौन होइ उतपात ॥ हरै जीविका बिप्रको करै बिप्रसों बैर । ताहि निकासै देशते तौ न गहै खल मैर ॥ बिद्या लक्षण सहित जे समदरशी मतिमान । कर्मकुशल अरु बेदबिद सो द्विज ब्रह्म समान ॥ जन्म कर्म ते हीन जे बिद्याहीन अजान । शूद्र सरिस ते बिप्र हैं अरु निर्तन गुणवान ॥ जाहि ग्राम याचक कहत देवपुजेरू जौन । दानाध्यक्ष जहां जगत हीन शूद्र ते तौन ॥ जारक्षतिक मंत्री दूत अरु चार पुरोहित जौन । बिप्र तौन क्षत्री सदृश सुनो भूप मतिभौन ॥ जे हय रथ घोरे चढ़े ते वैश्य सम होत । इनसों भूपति लेइ कर जौं कृसको सतनोत ॥ ब्राह्मण तस्करता गहे लहि दरिद्रको बाध । गुणत सकल मतिमान तहं भूपतिको अपराध ॥ बिप्र अकर्मी तासु अरु तीनि बरण जे सर्ब । भूपति तिनके बित्तके स्वामी नीति अखर्ब ॥ द्विजहि अकर्मी मति चहै कबहु भूप सुनु भूप । नित पालै सब बरण कहं बरण आश्रम रूप ॥ अब पूर्ब इतिहास हम कहत सुनो नृप तौन । राक्षससों जो कहत भो केकय उरबीरौन ॥ ब्रतधारी केकयनृपहि राक्षस बनमधि पाय । गहत भयो केकय नृपति तब इमि कह्यो सचाय ॥ नहिं मद्यप मम देशमें चोर जुवारी नाहिं । नहिं बिश्वासघाती छली मम सुराज्यमधिमाहिं ॥ बिलसतनिजनिजधर्मगहिबरणब्राह्मणहिआदि । तथाआश्रमीनिजधरमनहिंतजिसकतप्रमादि ॥ यज्ञ दान तप ब्रत नियम लोक शास्त्र कुलरीति । यथा उचित मम सब प्रजा चरत देखिमनीति ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्य गुरुहि सेवत सविधि पुत्र रहत पितु भक्त। स्वामिभक्त सेवक तिया रहति पितहि अनुरक्त॥
विप्र रहत षटकर्म रत क्षत्री शस्त्रप्रवीन। युद्ध दान कीरति गहे धरम न करत मलीन॥
वैश्य कृषी वानिज्यरत गोरक्षणमें लीन। नहिं असत्य भाषत कबहुं होत न विषय अधीन॥
सेवारत त्रय वरणके गहत न मत्त सुभाव। निज सुकर्मरत शूद्र मम राखत धर्म बनाव॥
देव पितर अरचत सबै पूजत द्विजपदकंज। दान मान दे गुणिनको करत सदा मनरंज॥
अरथी तापस अतिथि ए सब घर लहत सुपास। निबल सबल मध्यम कबहुं करत न वैर प्रकास॥
नहिं परतिय रत पुरुष मम राज्य विषे कहुं एक। नहिं द्विजद्वेषी पुरुष कहुं हैं सब गहे विवेक॥
आत्मज्ञानी वेदविद तपकृत शास्त्री दक्ष। मम पुरोहित लोभ विनु है तिमि दानाधक्ष॥
राक्षस का करि सकत मम जहं अनीति नहिं नेक। जासु सहाई विप्रवर ज्ञाता तत्व विवेक॥

राक्षसउवाच ॥

जासु राज्यमें नीति इमि है सब ठौर अमेय। सो राक्षस आदिकनसों है नृप सदा अजेय॥

भीष्मउवाच ॥

इमि कहि कै राक्षस गयो नृप आयो निजधाम। सुनो भूमिपति नीति इमि दायकविजय अक्षाम॥

सोरठा ॥

वरण आश्रम धर्म निशिदिन नृप रक्षत रहत। विप्र न होइ अकर्म इतो मर्म निरखत रहै॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

विपति परे निज धर्ममैं लखै नहीं निस्तार। क्षत्रधर्म के करण को नहिं समर्थ अधिकार॥
सो ब्राह्मण केहि भांतिके करि वैश्यके कर्म। पालै निज परिवार किमि प्रभु कहिये सो धर्म॥

भीष्मउवाच ॥

कृषी करै तौ विप्रबल गो संग्रह अनुमानि। और वनिज व्यवहारसो करै जीविका जानि॥
सुरा लवण तिल अश्व पशु सिद्ध अन्न मधुमांस। इन्हें न बेचै द्विज कबहुं अरु नहिं बेचै कांस॥
इनके बेचै विप्रको बिगरत है परलोक। ताते एहि व्यापार को विप्रहि सब दिन रोक॥
वेद देवता यज्ञ तप नहिं बेचे द्विजराज। ताते भूपहि उचित है पोषै विप्र समाज॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

कृशबलराजाहोइजो प्रजा होहि बलवान। तौ नृप किमि शिक्षणकरै किमि पालै मतिमान॥

भीष्मउवाच ॥

दान यज्ञतप नियम करि अरु लहि विप्र सहाय। भूपति बल बरधित करै पालै प्रजा सचाय॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

अब लक्षण क्षत्रिजन के कहो तात परवीन। सो सुनिकै भीषम कहे क्षत्रिज कथा अहीन॥
सकल वेद वेदांगविद शास्त्र कुशल मतिमान। सब सुकर्म आचारयुत सत्यवाक सुखदान॥
विनु अभिमान अद्रोह अरु सम दम साधनहार। क्षमावान क्रीवान अरु व्रती अकाम उदार॥
स्वच्छ अहिंसक ज्ञानमय शुद्ध सुभाव अनूप। ऐसे क्षत्रिज सहित करि कर्म विवरधत भूप॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

प्रति यज्ञन मैं दक्षिणा भेद कहत हैं वेद। श्रद्धवान अद्रव्य किमि यज्ञ करै तजि खेद॥

भीष्मउवाच ॥

वेद कहत हित जननको नहिं माया अधिकाय। यज्ञ अंग है दक्षिणा फलदायक सुखदाय॥
द्रव्यहीन जन मख करै यथा शक्ति दे दान। द्रव्य हीन जन मख करै खलौ अधिक समान॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति क्षमधन श्रद्धा सहित लघुमति करि हे तात । पूर्ण पाच दे लहत है पूरण फल अवदात ॥
तप ब्राह्मण को यज्ञ है इहै बेद स्मृति पर्म । सत्य अहिंसा दम दया यह तप साधन धर्म ॥
बेद बचन मानै नहीं शास्त्र उलंघै जौन । निज मत मानै श्रेष्ठ जो अपुहि नाशै तौन ॥
ज्ञानी जन निति करत हैं यज्ञ ब्राह्मण लाय । चित्त स्रुवा घृत समिध मन हविष ब्रह्म शिखि पाय ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

कैसो देखि सुभाव सचिव करै मतिमान नृप ॥ कैसो देखि बनाव करै बिशास बिश्वास नहिं ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

मित्रचारिबिधि होत हैं सुनो भूप मतिमान । ते सहार्थ अरु सहज औ कृत्रिम अरु भजमान ॥
निजसहायहितमित्रता ठानत तौ न सहार्थ । पिता बन्धुसुत श्वशुर ए सहज सुमित्र यथार्थ ॥
सेवतधनहित मित्रह्वै सो कृत्रिम नहिं आन । व्यवहारा पूरुषन को तौन मित्र भजमान ॥
धर्मात्मा है पांचवो जाहिय के बल प्रीति । नहीं लोभको लेश कछु गहे मित्रता नीति ॥
कृत्रिमकोबिश्वासनहिं कबहूं करै नरेश । करे बिशास न तीनिको जहंकछु समय बिशेश ॥
धर्मात्मा जो मित्र है सब थर तासु बिशास । नृप मित्रनकी वृत्तिमें करै प्रमाद न पास ॥
भूपन के आचरण ते मित्र शत्रु ह्वै जात । शत्रु मित्रता गहत है तथा साधु द्वै धात ॥
जो अव्यवस्थित चित्त है तासु बिशास अयोग । काहू में बिश्वास अति नृपहि न उचित प्रयोग ॥
पुत्र बन्धु नायब बली तेहि एकंत थलमांह । राजनीति मग देखि नहिं बिश्वासैं नरनांह ॥
भूप आपने निकटको तेहि न बिशासै भूप । ताके हृदको नृपति तेहि मानै मित्र अनूप ॥
बकसी बैद्य दिवान अरु गणिक किले बरदार । धर्माध्यक्ष खजानची ए नृप प्रकृति उदार ॥
इनमें गहे बिशास पर परखत रहै सुभाव । सबसों रहै प्रसन्न सुख गहे दक्षता बाव ॥
शीलवान कुलवान अरु बुद्धिमान अतिधीर । धरमी सरमी निरखि नृपसौंपै काम गंभीर ॥
जितने ज्ञाति पराक्रमी अरु कछु दाएदार । तिनमें राखै दक्षता गहै न मित्र बिचार ॥
ज्ञातिहिनहिंभावतिकबहूं ज्ञाति बिभूति महान । ज्ञातिबर्ग पालत रहत रहि चैतन्य सुजान ॥
आहुकि अरु अक्रूर सों बैर भयो हो पूर्व । तब हरि नारद सों कहे ज्ञाति व्यवस्थागूर्व ॥
ज्ञाति बिनाशन होइ जेहि सो करिबो नृपनीति । यथा भागदै पालिबो उचित प्रगट करि प्रीति ॥
तहं नारद प्रभुसों कहे आपद दोय प्रकार । आभ्यन्तर अरु बाह्य ए तिनको सुनो बिचार ॥
बन्धुबर्गसों होत दुख सो आभ्यन्तर नाम । शत्रुआदि सों होत तेहि बाह्य कहत मतिधाम ॥
ताते बन्धु सबर्ग कहं पालब है नृपनीति । ज्ञातिहि मारे निज मरे दोऊ बिधि बिपरीति ॥
ज्ञातिबर्गको आदरब परम शस्त्र है भूप । तिनपै शस्त्र समाज सब जाने निष्फल रूप ॥
सुबुधि सुधरमी समुझि कै राखै डेवढ़ीदार । तिन्हैं सदा परखत रहै करत रहै सत्कार ॥
जिन्हैं आपनो सखा करि राखै निशुदिन साथ । तिनकहं धन मनमान दै कीन्हें रहै सनाथ ॥
आदि दिवान खजानची जे आमात्य महान । जो नर तिनके कपटको परखनहार सुजान ॥
नृप ताको रक्षण करै मनदै आपु अवाव । नातरु ते ता कहं वधैं कै करि देहिं खराब ॥
अचपूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृपतौन । क्षेम दरश कोशल नृपतिके गृहमधि भो जौन ॥
कटजुसुभाव भूपहि निरखि सब अमात्यगण तास । गुप्त कपट आचरण गहि लागे लहन सुपास ॥
कालवृक्ष नामक सुमुनि गुणिकै यह वृत्तांत । पंजरमधि लै काग गो भूपतिके ढिग दांत ॥
तहां जाइ कै बैठि करि कुशल प्रश्न व्यवहार । कह्यो भूप मम काग यह है सर्वज्ञ बिचार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनो काग यह कहत है तो अमात्य जे सर्व । ते सब मिलि तो बहुत धन हरण किए मतिखर्व ॥
सो सुनि भूपति और जनते बूझे यह भेद । तेऊ भाषे बचन यह साच न झूठो खेद ॥
तदनन्तर रात्री भई सुनि कीन्हे विश्राम । तब अमात्य तेहि कागको बध कीन्हे मतिछाम ॥
भोरविप्रकागहिनिरखि नृपते कह्यो बुझाय । देखोमम कागहि बध्यो तो अमात्य अनखाय ॥
महाग्राह संकुल नदी ढिगतो सम ढिगबास । ताते अब हम जातहैं गहिनिज बधको त्रास ॥
अबतुमइनआमात्यसों निति रहियो चइतन्य । कपट गहत आमात्य तब करत चहत जो अन्य ॥

भूपतिउवाच ॥

भए एक मत ये सकल कहो करैं विधिकौन । यहसुनिकैब्राह्मण कह्यो सुनो उचित अब जौन ॥
गोपि कछू दिन दोष यह क्रमसों करि बलहीन । एक एक कहं पकरिकै दण्ड दीजियोपीन ॥
कालहुत्त सुनि इमि शिखै गो निज आश्रम ओर । भूपतिक्रमसों तौन करि आनंद लहे अथोर ॥

भीष्मउवाच ॥

शुचि धरमी सर्वज्ञ हित मंत्रिहि मित्रवनाय । करै कार्य्य सब मंत्र करि देशकालमन लाय ॥
सुरपतिते सुरगुरु कहे एहि प्रकार के बैन । जैसो मंत्री होत नृप तैसो पावत चैन ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

सुयशलहतक्षितिपाल प्रजनपालिकैकौनविधि । सोशुभनीतिविशाल कहोपितामहकृपाकरि ॥

भीष्मउवाच ॥

बितरि शुद्ध व्यवहार जो भपति पालत प्रजा । सो इत सुयश उदार लहत लहत सुरलोक उत ॥

दोहा ॥

राखै मंत्री आठ नृप कारज करैं विचारि । व्यवसाई धर्मी सुबुधि संग्रह करै विचारि ॥
और करै अपराध लहि औरहि दण्डनदेइ । देइयथा अपराध तिमि दण्ड न्याय लखि लेइ ॥
मंत्र प्रकाशित नहिं करै करैपरम पटु जानि । जे मंत्रज्ञ तिन्हैं रहै पोषत निज सम मानि ॥
कच्छप छिपवत अंग निजतिमि छिपवैनिजदोष । शत्रुदोष निरखत रहै करै गुणिनको पोष ॥
मंत्री जासु प्रवीणअति मंत्र जासु अतिगुप्त । मंत्र बिना नहिं करत कछु ताको सुयश अलुप्त ॥
मंत्र सुनत शङ्का करै समाधान सुनि फेरि । करि शङ्का उत्तर सुनै एहि प्रकार मति मेरि ॥
निरनयकरिमंत्रिनसहित अविचलमतठहराय । भूमिपाल कारज करै सदा तेज अधिकाय ॥
बधै नदूतहिकबहुं नृप कितनो कहै कठोर । बधत दूत कहं नृपति सो नरकलहत अतिघोर ॥
सतिवक्ता अति दक्ष अरु अतिवक्ता स्मृतिमान । शुचिकुलीन सतसंगती दूत सदा सुखदान ॥
धर्मशास्त्र तत्वज्ञ अरु ज्ञाता सन्धि विधान । धीर साहसी शूरअति कला कुशल मतिमान ॥
व्यूहभेद ज्ञाता चतुर हससुख सौम्य सुभाव । अरु कुलीन सेनाधिपति ऐसो देत सचाव ॥
सबप्रकारधरमीनिरखि करै अमात्य नरेश । अधरम भरे अमात्य तिजु नृपहि देत अधदेश ॥
करै अमात्य बिचारि नृप चलै नीतिपथदेखि । कर्म करै बेदोक्त लखि गहि सत्संग विशेखि ॥
ऐसो नृप आनंद लहै कीरति अति अधिकाय । स्वर्ग लहै संदेह बिनु बरधै वंश सचाय ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

भूपति सह परिवार निवसै कैसे नगरमधि । रचना कौन प्रकार करि परिखा प्राकारकी ॥
भूपतिके ए बैन सुनि भीषम भाषत भए । सुनो तौन मतिऐन जनमेजय क्षितिपाल मणि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

गिरिगढ़बननदनिकटलखिनिरमितनगरअघोर।बरपरिखाप्राकारदृढ़जहंबिरचितचहुंओर॥
चहुंदिशियूथप नियमि तहं राखै ठौर बनाय। चारिद्वार राखै तहां राखै भट समुदाय॥
बिनाहुक्म जन बाहिरो नहिं आवै नहिंजाय। सधनीचारौ वर्ण जहं बिलसैं आनंद छाय॥
बापी सरवर कूप बहु बिरचै ठौर निरेखि। घटन न पावै अन्नको कबहूं भाव विशेखि॥
संग्रह राखै अन्नको आप सालप्रति लेइ। सदा बरत शुचि अन्नको सदा याम सहदेइ॥
व्यापारिन रक्षत रहै कर अधिकी नहिं लेइ। चोर लै भगे ठगनको लेश न वाचन देइ॥
सिल्पीगण सब तरहके राखै सबिधि बसाय। भिषज जोतिसी शास्त्रविद राखै प्रीति बढ़ाय॥
गुणी देश परदेशके आवैं जाचन हेत। मान सहित धन दै तिन्हैं बिदा करै करि चेत॥
असिजीवी आवैं जिते प्यादे कै असवार। नहिं राखै तौ दै कछू फेरै करि सत्कार॥
हय हाथी हथियार गढ़ पुर परिखा बन सैन। मास मासमधि भूमिपति आपु लखै मतिऐन॥
सालभरेमें आपु काढ़ि लखै आपनो देश। हद बारे भूपति तिन्हैं दरशावै दलबेश॥
यज्ञ दानको नगरमधि राखै अति अधिकार। घटै न पावै नगरमें दैबारा धनचार॥
निबल सबल मध्यम पुरुष रहैं यथा व्यवहार। कोऊ काहूको कबहु करि न सकै अपकार॥
बिधवा तपसी आदि जे जिन्हैं न आमद डौर। दियो करै निज कोषते तिन्हैं भूप शिरमौर॥
राखै सबघर नगरमें हरकारे मतिमान। बन गिरि गढ़ सब घरनकी खबरि सुनै सबिधान॥
एहिप्रकारकेनगरमधि इमि बिलसैंक्षितिपाल। निकट न आवै आपदा आनंद होइ बिशाल॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

एहिबिधिभूपसुभेश एहिप्रकारकेनगरबसि। किमिपालै निजदेश लेइ सुधनकिमि सो कहो॥

भीष्म उवाच ॥ रोला छन्द॥

धीर शूर सुजान धरमी शास्त्रविद मतिमान। नगर जनक सभासद कै नात गोत महान॥
तिन्हैं शतभट सहस भट द्वै सहस भट दै संग। भेजि चहुंदिशि ठौर ठौरनि राखि सहित उमंग॥ करै पालन प्रजनको अरु सुधन करषै भूप। वत्स गोपहि लाय पय जिमि लेत स्वामि अनूप॥ खबरि ते तिन घरनकी निति लिखै भूपति पास। जमा करि कै द्रव्य भेजै जतनते प्रति मास॥ लिखै आमद डौरते प्रतिग्राम को तेहि साथ। प्रजा पीड़ित होहिं नहिं तिमि लेहि सबसो गाथ॥ भिन्न तिनसों चार राखै लिखैं ते सब डौर। सुनै जो सो परखि कै फिरि करै करतब तौर॥ जमा आमद खरच निज प्रतिमास लखि सुनि लेइ। द्रव्य करतब हाथ जिनके तिन्हैं अभय न देइ॥ सदा रक्षण कोषको यह परम है नृपनीति। अन्न धन भट शस्त्र संग्रह देत भूपहि जीति॥ हदद पैदल रहै नियमित बसै दुर्ग बनाय। देशमें परचक्र भय नहिं यथा व्यापै आय॥ रहै रक्षत प्रजन तिमि जिमि निकट होइ न खेद। अमै बिलसै देशमें व्यापार करता भेद॥ वत्स जैसे पियत पय अरु मधुप जिमि मधु लेत। जिमि जलौका पियत सो नित नेकु दुख नहिं देत॥ सुनो जिमि निज बाल सुखते पकरि कै लै जात। होत ताके गातमें नहिं दशनको कछु घात॥ प्रजनसों धन लेइ तेहि बिधि भूप सहित बिवेक। रहैं ते सब देत धन नहिं लहैं पीड़ा नेक॥ ग्राम ग्रामन मुख्य जन जे मिलैं तिनसों चित्त। तिन्हैं करि लै अग्रभागी लेइ सबसों बित्त॥ देशमें धनमान तिनसों लेइ धन गुणि नीति। मधुर तिनकों बचन कहि कै करै मुदित सप्रीति॥ प्रजनसों धन लेइ करि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनियाय दुःख दै ताहि। देइ विधिवत दण्ड भूपहि प्रजनको हित चाहि ॥ चोर खलते रहै रक्षत प्रजन गहि कै रीति। दान मख निति करै जिहि नहिं होइ व्यापित ईति ॥

दोहा ॥

अनावृष्टि अतिवृष्टि अरु आखु शलभ शुक जौन। ईति कहावत गजदल पाला पाथर तौन ॥
एहिप्रकार धन लेइ नृप एहि विधि पालै देश। लखत रहै निज राज सब चारचक्षु करिवेश ॥
निजबल परबल शत्रुहित देश काल वय वृद्धि। रहै विचारत नृपति निति बरधै सदा समृद्धि ॥
धरमिन को संग्रह करै धरै धर्म व्यवहार। वरण आश्रम धरम निति पालै भूप उदार ॥
मान्धाता जुवनाश्व सुत रहो भूमिभरतार। सुनि उतथ्यासों कहे राजधर्म उपचार ॥
धर्मात्मा क्षितिरमण जो अविचल लक्ष्मी तासु। धर्महीन क्षिति रमणको लक्ष्मी गच्छति आसु ॥
भूप रूप सब जगत को कुत्सित रूध्य अनूप। पाप पुण्य बरधत नशत यथा अचारत भूप ॥
सब बरधत सुधरम बढ़े अधरमते सब जात। ताते जगपालक नृपति पालै धर्म बिभात ॥
विप्र धर्म की योनि है पूजैं तिन्हैं सदैव। विप्र अग्नि ए विष्णु मुख इच्छित दाता दैव ॥
अनसूया करि विप्रसो भयो विरोचन हीन। विप्रकोपते क्षीण सब विप्र कृपाते पीन ॥
पाषण्डी उनमत्त अरु अधम अधर्मी जौन। पर द्रोही जे तासु नहिं संग करै क्षितिरौन ॥
अक्षाता अरु खैरिनी बिनु व्याही जो नारि। बंध्या अरु परतरुनि सों रति नहिं करै विचारि ॥
नृप प्रमाद जब गहत तब विनशत प्रजा समाज। तातें भूपति धर्म हित पालै सुधरम साज ॥
भूपति गहत अधर्म तब बढ़त उपद्रव भूरि। होत प्रजा सब पाप रत अति प्रमादसों पूरि ॥
होत समय बरषी जलद धर्म चरत जौ भूप। भरति सम्पदा प्रजन घर राजधर्म अनुरूप ॥
दण्ड नीति करि प्रजनको पाप देत नहिं खोइ। सो भूपति जिमि रजक जो बस्त्र न जानत धोइ ॥

छप्पै ॥

पालै प्रजा सनीति बधै चोरण कहं गहि गहि। युद्ध करै अरि देखि द्विजन पूजै हित कहि कहि ॥ नहिं मेटै मर्य्याद करै मख दान सरुचि अति। अतिथिन को सत्कार करै निति कहै बचन सति ॥ जो लोक वेद कुल शास्त्र मत बरण आश्रम धरम गणि। निति नेम सहित रक्षण करै तौन विचक्षण भूपमणि ॥

दोहा ॥

नृप अविचक्षण प्रजनको करि न सकत प्रतिपाल। तातें लक्षण नृपनके कहे समक्ष विशाल ॥
सुनि उतथ्यके बचन ए सुनि मान्धाता भूप। गहि सुधर्म एहि जगतमें बिलसो शक्र स्वरूप ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

धर्म विषे थिति चाहि कौन आचरण नृप गहै। केहि बाधै केहि पाहि लहै सुयश इत स्वर्ग उत ॥

भीष्मउवाच ॥

अब पूर्व इतिहास सुनो भूप हम कहत हैं। बामदेवके पास नृप बसुमन बूझत भए ॥
सुनि बर कहो अनूप धर्म बारता नृपनकी। सो सुनि तेहि अनुरूप प्रजा पालि हम सुद लहैं ॥

देवाऋचु: ॥ दोहा ॥

धर्मबिषे थिति करहु नृप धर्म देत फल चारि। धर्म देत जय जगतमधि बिलसौ धर्म सिहारि ॥
जो अधर्म चारी नृपति मिथ्या जलपनहार। थोरेदिनमें अवशि सो लहत आपदा भार ॥
सति वक्ता धरमी सुबुधि दानी मख करतार। नीति सहित पालक प्रजा अरु इन्द्री जेतार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र पुरोहित बन्धु भट सम्बन्धी परिवार । अर्थी मानी गुणिनको करत उचित सत्कार ॥
सो भूपति बरधत सदा छावत सुयश अमन्द । सहसा करमी अपटु नृप शीघ्र लहत है दन्द ॥
सहसाकरमी पापरत झूठ अधर्मी जौन । नहिं गौरव इत लहत उत रौरव पावत तौन ॥
भूप जासु अप्रिय करै औगुन करै प्रिय तास । तेज सुयश तेहि नृपतिको अतिशै करत प्रकास ॥
दुखी मृगया द्यूत खल नाद करत क्षितिपाल । नहिं जीतत इन्द्रियनसो लहत आपदा जाल ॥
गहत लोभ आलस तरफ न्याय लखत जो भूप । अतिपातक सो लहत है नर बधके अनुरूप ॥
निज रक्षण करि युगुति सों रक्षण रक्षत जौन । तासु प्रजा बरधत सदा भरति सम्पदा भौन ॥
दूरि करत निजबर्ग जो परबर्गन संग लाय । सो नृप टेरत आपदहि दोऊ भुजा उठाय ॥
आपुहि जानि अशक्तकै शत्रुहि दूरि निहारि । क्षीण करत दल नृपति सो लहत आपदा हारि ॥
शत्रु सैन बधि युद्ध करि भूमिजीति क्षितिपाल । धर्म सहित पालत प्रजा सो धर्मी सबकाल ॥
मंत्र चिन्तवन युद्ध बिधि अनुशासन अरु न्याय । धर्मप्रजा रक्षण कुशल भूप सदा अधिकाय ॥
सकल एकसों धरत नहिं ताते पुरुष प्रवीन । प्रति कारज मैं नियमि नृप परखत रहै अहीन ॥
शास्त्र ज्ञान बय वृद्ध जे तिनके धारत बैन । तिन्हैं काम सौंपै नृपति तौ निति बरधै चैन ॥
जे सुवचन सुनि गहत नहिं निजलघुमति गुरुमानि । तिन्हैं काम सौंपै नहीं राजतोनि अनुमानि ॥
ताते राजहि उचित है पुरुष परीक्षा भूप । परखि बुद्धि व्यवसाय तब काम देय अनुरूप ॥
जेहि अमात्य कहं बन्दि गृह अधिराखैगहिटेक । अरु दुखीहयगजअहिहि नहिं बिश्वासै नेक ॥
सब शुभ गुण पूरित पतिहि दुष्टातिय दुख देति । ताते भूपहि उचित है पुरुष परीक्षा चेति ॥
लरे बिना पावत अजय जे भूपति दृढ़मूल । लरे बिना पावत अजय अदृढ़मूल लहि शूल ॥
जासु सचिव मतिमान अरु जासु सुभट संतुष्ट । सो दृढ़मूल महीप है जासु प्रजा धन पुष्ट ॥
सचिव मूढ़ भूखे सुभट प्रजा दरिद्र स्वरूप । आपु असति बादी सदा अदृढ़ मूल सो भूप ॥
निजजनमधिभाषितअसित देतभूपतिहिशूल । जिमिकुठारमधि दारुलगि छेदत है निजमूल ॥

भीष्म उवाच ॥

बामदेवके बचन ए सुनि बसुमन क्षितिपाल । यथापालि सुधरम सहित पायो सुयशविशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि राजधर्म्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादेपंचमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

करिसुयुद्ध लहि विजय जो अमल करै परदेश । कौन भांति तिनके प्रजन पालै तौन नरेश ॥

भीष्मउवाच ॥

जाय तहां नृप प्रजन कहं देइ अभय बरदान । अबतुम मम पालव तुम्हैं हम निजपुत्र समान ॥
यथा रहत हैं तिमि रहो तुम सिगरे तजिखेद । यथा देत हैं कर तथा देहुन मानो भेद ॥
बूझि सकल वृत्तांत तहं सदल सुअंगी राषि । आवै अपने राजप्रति नीति बारता भाषि ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

युद्ध धर्म व्याख्यान जो क्षत्रिण को धर्मवर । कहो तौन सविधान ज्ञानवान मम पिता मह ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

युद्ध धर्म यह परम है लरै एक सों एक । सम बाहन भिरि भिरि लरै गहै नीतिकी टेक ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हतवाहन जो सुभट अरु सुभट निरायुध जौन। तजै न तापै अस्त्र यह युद्धधर्म चिति रौन ॥
जान हारि आरत कहत जौन भगो तजिखेत। ताहि कदापि न भट वधै युद्ध धर्म करि चेत ॥
धर्मयुद्ध करि जय लहत सोई विजय प्रशस्त। जो अधर्म करि जय लहत होत तासु यश अस्त ॥
धर्म राखिकै निधनको होव श्रेष्ट है भूप। धर्म त्यागि जय लहव सो है पातक को रूप ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

पैठि समर मधि वीर देह तजत जे शूरभट। तिनको लोक गंभीर कहो जाय जहं बसतते ॥

रोला छन्द ॥

पर्वको इतिहास इत हम कहत सुनिये भूप। अम्बरीष महेन्द्र को सम्वाद जौन अनूप ॥
अम्बरीष न भाग को सुत शक्र पुरसें जाय। लखे शक्रहि सहित सुरगण ऋषिगण के समुदाय ॥ लखे निज सैनेश कहं तहं चढ़ो चारु विमान। धर्म सबके चरत सुखसों भरो तेज महान ॥ देखि तहं सैनेश कहं तहं अम्बरीष महीप। शक्रसों इमि भयो भाषत सुनो नृप कुलदीप ॥ सागरांता भूमिको हम किये विधिवत भोग। वरण आश्रम धरम पालन कियो सहित प्रयोग ॥ किए मख व्रत अतिथि पूजन दक्षिणा दे भूरि। वेद शास्त्र अभ्यास कीन्हें परम श्रद्धा पूरि ॥ प्रजा पालन किए विधिवत राजनीति विचारि। देव द्विज ऋषि पितृ पूजे भक्ति पूरण धारि ॥ सुनो मम सैनेश कीन्हों नहीं ऐसो कर्म। लसत हमसों उच्च पद लहि कौन ऐसो धर्म ॥ इन्द्रउवाच ॥ युद्ध मखमें देह आहुति दयो एहु रणधीर। लसत ताते उच्च पद लहि धारि दिव्य शरीर ॥ द्विरद क्षत्रिज जहां हय अध्वर्जु अति बलवान। गृद्ध काग शृगाल श्येन सदस्य तहं अतिमान ॥ प्रास तोमर शक्ति इन्धन भूमि कुण्ड महान। बाण स्रुव जहं रुधिर आज्य कृपाण ज्वलित कृशान ॥ मांस हविष अनूप यच कवन्ध जूप विभात। मारु मारयौ मरयो धुनि सो रिच धुनि अवदात ॥ भेरि उद्गाता जहां तन दक्षिणा जेहि ठौर। रुधिर धारा जहां मज्जन सरित जहं भय भौर ॥ करत ऐसो यज्ञ जो मम लोक ताको ओक। चहै सो जहं तहां विलसै सकै को करि रोक ॥ वरत ताहि वरांगना सो लहत प्रभुता पर्म। सुनो भूपति लसत यह लहि युद्ध मखको कर्म ॥ अम्बरीष महीप सुनि कै शक्रके ए वैन। परम सिद्धि सुभटन की गुणि लहे अतिशय चैन ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

पूर्व प्रतर्दन काशिपति जनक भूप मिथिलेश। युद्ध किए तेहि समयकी वार्ता सुनो नरेश ॥
लखिसभीतनिज भटनकहं जनकयोग अवराधि। स्वर्ग नर्क निज भटनकहं दरशाये विधि साधि ॥
शूर वीर लरि मरत जे ते पावत यह स्वर्ग। भीति भागि जे मरत ते ते पावत यह स्वर्ग ॥
सो लखि योधा नृपतिके भरे वीररस आम। इमि बुझाइ निजभटन नृप कियो घोर संग्राम ॥
सुनो भूप भूपहि उचित भटन बांटि दै तोपि। व्यूह विरचि कै अरिनसों लरै ओज गहि रोपि ॥
रथराजीमधि गजनके रथमधि तुरग सवार। मधि मधि रहै सवारके पैदर सुभट उदार ॥
दशपति शतपति सहसपति जूथप धरे उमंग। आदर करि तिनपै धरै युद्धभार परसंग ॥
बोलि एक ते भटनकहं सौंपै दशा विभाग। गहे ज्ञातिकी ईरिषा जाते लरै अदाग ॥
रथी गजी भटघोर अरु जुथप जुथप गंभीर। अरु पैदर समुदाय लै सेनानायक धीर ॥
दलके आगे रहि लरै रहै मध्यमैं भूप। बहु वाहन बहुअस्त्र निज राखै तहां अनूप ॥
बन्धु मित्र आमात्य भट जिनको अतिविश्वास। हयगज पैदर तहं रहै चहुंदिशि बिनु अवकास ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ सुभट यूथप जिते राज पुत्र सरदार। सदल पृष्ठरक्षक रहैं पैदर सुभट उदार ॥
इमि चहुंदिशि चतुरंगिनी व्यूहभेद रचि राखि। सबदिशिमैं सरदार भट राखै सुबचन भाखि ॥
निजथरसों सबदिशनमैं दल जैबेकी राह। जतन सहित राखे रहै गहे जोतिकी चाह ॥
हरकारे सब थरनमैं राखे रहै सनेम। अनुक्षणमैं सब थरनकी सुनै खबरि दुख क्षेम ॥
आपु सदा चैतन्य रहि लखत रहै सब ओर। लखै पराक्रम भटनको मध्यम गुरु अरु थोर ॥
जहां लखै अति भीर तहं भेजै कछू सहाय। दबत लखै निजभटन तहं आपु सैन सह जाय ॥
सब दिशिके जूथपन पहं भेजत रहै संदेस। लरो मोहि निजढिग गुणे गहौ न कछू अंदेस ॥
शस्त्रपाणि क्षत्रियन कहं युद्ध बिजय सुरलोक। जो जनमत सो मरत निजु कौन सकत करि रोक ॥
बिजय लहे धन सुयश इत मरे बसन कहं स्वर्ग। भरे अयश धन हानि इत मरे मिलत अपबर्ग ॥
याही दिन लगि हम तुम्हैं सौंपो प्रीति बढ़ाय। हाथ तुम्हारे शरम मम जीवन मरण बनाय ॥
लखत रहत सब भटन कहं हटन न पावै नेक। कै जीतब कै लरि मरब गहे रहै यह टेक ॥
होइ निरायुध सुभट कै होइ अबाहन जौन। बाहन आयुध शीघ्र तेहि भेजि देइ क्षितिरौन ॥
रहै जहां सरदार ते गहे नीति एहिडौर। नृप सम जानै भट तिन्हैं मानै शासन गौर ॥
बाजन बजवावत रहै शङ्ख दुन्दुभी आदि। जाते योधा चाव गहि मारैं मरैं प्रमादि ॥
लरण चलै जब नृपति तब लेइ सुदिन ठहराय। काल योगिनी चन्द्रमा दिशा भेद मनलाय ॥
इष्टदेव कुलदेव अरु ग्रामदेव कहं पूजि। दान देत विप्रन भटन तोषत सुबचन कूजि ॥
सुनत सुभट सुस्तयन अरु ध्यावत गुरु पदकंज। बजवावत बाजे घने करत सुभट मनरंज ॥
बन्दीजन गण बदनसों सुनत बिरदके छन्द। लरण चलै नृप तिमि लरै पावै बिजय अनन्द ॥
निशि निवास जेहि थर करै तहां रहै चैतन्य। चौकी राखै दूरिलों धसन न पावैं अन्य ॥
शत सह भट सन्नद्ध ह्वै फिरत रहै चहुं ओर। बहु बिधि हरकारे रहैं पर दलमैं सब ठौर ॥
सभा बिरचि बैठै तहां आवैं यूथप जूह। सेनापति सरदार सब आवैं जे खुसरूह ॥
युद्ध व्यवस्था तहं सुनै भटन प्रशंसै भूप। मंच करै परदिवस के लरिबे को जयरूप ॥
मरे होहिं जिन भटनके पिता बन्धुसुत आदि। तिन्हैं ग्राम हय द्विरद दे तोषै सुबचन नादि ॥
होहिं सुभट घायल जिते तिनकों करै उपाय। घायल जे सरदार तेहि लखै आपु तहं जाय ॥
चौकीदारन नियमि चहुं दिशिकी खबरि मंगाय। शयन करै क्षितिपाल मणि रहि चैतन्य सचाय ॥
प्रातकृत्य करि पूर्ववत चलै लरै क्षितिपाल। रामचन्द्र की कृपा ते पावै बिजय बिशाल ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ सोरठा ॥

एहि प्रकार रणनीति करणि युधिष्ठिर नृप कहे। अब कहिये करि प्रीति लक्षण सूर सुबीरके ॥
सो सुनि भीष्म सुजान शूरण के लक्षण कहे। अब एहि समय विधान करै शूरता शूरसों ॥

दोहा ॥

मृगपतिगामी पुरुष जो मृगपति चख भट जौन। घनखर गजचख पुरुष जो शूर होत है तौन ॥
होत प्रमत्त सुभाव जो क्रोधित सो रुख जासु। केते मृदु प्रकृती पुरुष होत शूरता रासु ॥
पिंग नयन भृकुटी विकट नकुल नयन नर जौन। जासु नयन उन्नत अरुण शूरबीर नर तौन ॥
उग्रप्रकृति अरु उग्रवपु उग्रतेज नर जौन। क्रोधवान अरु उग्रखर शूर होत नर तौन ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

अब कहिये मतिऐन शकुन बिजय अरु अजयके। सुनि भीषम लहि चैन कहत भए सुनु नृपतिसो ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोला छन्द ॥

बिप्र आवै कोप कीन्हें कछू कारण पाय। अजय जानै भूप तब मति शत्रु मांहे जाय ॥ होय जाके सुढक बाहन खिन्नमन रणजात। चण्डगति गहि जासु सन्मुख सुरज आवत बात ॥ इन्द्रको धनु कढ़त सन्मुख शब्द करत शृगाल। गृद्ध आवत उड़त सन्मुख तासु अजय अचाल ॥ जासु योधा गहत आनन्द चलत पीछू पौन। वाम ह्वै मृग जात पीछू जासु जीतत तौन ॥ सामबिधि करि लेइ पहिले करै पीछे युद्ध। लरत बिप्रण पूजि नृप सो बिजय पावत शुद्ध ॥ शुद्ध शूर उदार वंशज अर्द्धगत रणधीर। एकमत ह्वै मारि सहमन लेत बिजय गंभीर ॥ युद्धमधि नहिं गहै मृदुता रहै तीक्षण भाव। साम दान बिभेद लखि तब गहै दण्ड बनाव ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

कहां भूपति गहै मृदुता कहां तीक्षण भेव। तौन कहिये पितामह अज्ञान धन के भेव ॥

भीष्मउवाच ॥

पूर्वके इतिहास इत हम कहत सुनिये तौन। सुमनपतिको प्रश्न सुनिकै कहे सुरगुरु जौन ॥

इन्द्रउवाच ॥

अहितसों आचरण कैसो गहै उरबीपाल। कहो गुरु बीनीति सो प्रभु सहित परबी चाल ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥

अहित लखतहि नहीं ठानै कलह क्रोध बढ़ाय। नहीं जाने सरिस मृदु ह्वै रहै रीति बढ़ाय ॥ बिहग गहिबे हेत जैसे रहत ब्याधा मौन। तथा तासों कहै नहिं नृप पुरुष बर्त्ता जौन ॥ मंत्रविद आमात्य निज जो तौन जानै भेद। और जन जो लखै तौ तेहि जाति दीन्ह उमेद ॥ रहै निरखत समय ताको छिद्र नृप मनलाय। रहै लाए तासु जनमें भेद दान उपाय ॥ समय लहि आमात्य गण सह पकरि मारै ताहि। त्यागि मृदुता तीक्षणता इमि गहै औसर चाहि ॥ सदा मृदुता गहै नहिं नहिं सदा तीक्षण सुभाव। गहै मृदुता दुष्टजनको होत चाव चढ़ाव ॥ इन्द्र यह सुनि कहे लक्षण दुष्टजनको जौन। दुष्ट जानो परै जाते तात कहिये तौन ॥ कहे सुरगुरु सुनो लक्षण दुष्टजनको एह। जहां प्रापति लखत नहिं तहं नहीं राखत नेह ॥ कहै पीछू अगुण सबको प्रगट गुण सो गोपि। और कोऊ कहै गुण तहं रहै और अचोपि ॥ बक्र चख करि हंसै कछु कछु ग्रीव देत हलाय। सांच जो गुण कथन ता कहं देत झूठ लखाय ॥ हंसत बातै कहत हसिबे को न कारण यच। औरको भल सुनै जहं अति होत पीड़ित तच ॥ लग न पावै कानसों तहं करै पर अपराध। ठौर ठौरन आपनो गुण रहै कथत अबाध ॥ लगि सबानक मानके सम भूमिपतिके कान। रहत जीवन वृत्ति जनको बाण जैसे प्रान ॥ भूप भाषै द्विज बधन तौ कहै सुधरम एज्ञ। सार्व भौमनको करम यह भूप यह व्रत लेज्ञ ॥ जासु ऐसी बारता तुम तिन्हैं जानो दुष्ट। रहत पर उपकारते जो साधु सोई पुष्ट ॥

दोहा ॥

सुरगुरुको अरु शक्रको यह संवाद सुनीति। सुनो धर्मक्षितिपालमणि है निति दायक जीति ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

धार्मिक भूपति जौन सो अमात्यके कपट सो। होइ अधन नृप तौन सुख चाहै तौ किमि लहै ॥

भीष्मउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

अब सुनो पूरब इतिहास। क्षेमदरश भूपति मतिरास ॥ कोशलपति सो परम प्रबीन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भो अमात्यछलते धनहीन ॥ कालकृत्त सुमुनि पहं जाय । कहत भयो निज व्यथा बुझाय ॥ निज अमात्यके कपट कुठार । हम तरु भए बिना धन डार ॥ धन बिनु भूप बिहग बिनु पत्त ॥ करि न सकत करतव्य समत्त ॥ मो मन मधि यह व्याधि महान । प्राण हरण सम भई अमान ॥ ताते गहे शरण तुम्ह तात । कहिये उचित मंत्र अवदात ॥ मुनिरुवाच ॥ भूपति प्रथम न कीन्हे चेत । अब कत शोच करत ता हेत ॥ बर्तमानको रक्षण योग । गतको शोच न उचित प्रयोग ॥ है अनित्य सब सार समस्त । नयन उदय को ह्वैबो अस्त ॥ कहं तो पिता पितामह पूर्व । कहां गए सब योधा गूर्व ॥ प्रगटत जिते होत ते गुप्त । मूर्तिमान नहिं कबहुं अलुप्त ॥ रक्षण करो धर्म सबकाल । महिपालत अधनौ क्षितिपाल ॥ जे भूपति तुमसे मतिमान । तिन्हैं न उचित शोच एहि मान ॥ जौन अनागत अरु गत जौन । उचित न तासु शोच महिरौन ॥ पुत्र पउत्र बन्धु धन भूरि । ज्ञानी त्यागत आनद पूरि ॥ है अनर्थको अर्थ स्वरूप । है अनर्थ मधि अर्थ अनूप ॥ कहुं अधन तौ आनंद दानि । हित अनहित सब परत पिछानि ॥ सदा अधनता रहत न छाय । सदा न धनै रहत सरसाय ॥ कितने लहि धन सुख अतिमान । नहिं जानत दूजो कल्यान ॥ कितने बर्मै जानत श्रेय । धन लघु जानत धर्म अमेय ॥ केते धन हित त्यागत प्रान । जीवनते धन गुणत महान ॥ केते धन लहि करत न भोग । नहिं जानत निज मरण प्रयोग ॥ धर्महि बर जानत ते श्रेष्ट । अरु सब मध्यम अधम यथेष्ट ॥ होत पुरुषते धन उतपन्न । पुरुष सुधन जे धर्मापन्न ॥ इन्द्रिन मोषि पोषि संतोष । कछुदिन सहो अकिञ्चन दोष ॥ ममगृह आवत नृप बैदेह । तुमसों तासो बढ़ी सनेह ॥ ताहि सहाई लहिकै भूप । होहु पूर्वबत धनी अनूप ॥ जे अमात्य कीन्हे अनियाय । पहिले तिनमें संधि कराय ॥ यथा बेल हनि फोरत बेल । तिन्हैं निपातौ रचि सो खेल ॥ करि अमात्य धरमी मतिमान । उरबी भोगौ सहित विधान ॥ सुनिके घर बैदेह नरेश । जब आए तब सुमुनि सुवेश ॥ क्षेमदरश कोशलपति तासु । करि सुप्रशंसा बोले आसु ॥ नृप तुम इनसों प्रीति बढ़ाय । उचित बूझिकै करो सहाय ॥ इन्हैं अमात्य दए दुख भूरि । तुम दुख तौन देहु करि दूरि ॥ सो सुनिकै बैदेह महीप । भूपहि बोलि मिलो कुलदीप ॥ सैन सहित निज घर लै आय । पूजन कियो प्रेम सरसाय ॥ बिधि पूर्वक निजकन्या ब्याहि । धन असंख्य दीन्हो हित चाहि ॥ कोशलेश अति आनंद छाय । निजपुर आयो आज बढ़ाय ॥ पालो प्रजा धर्म अधिकाय । कीन्हे यज्ञ दान सुखदाय ॥

दोहा ॥

इमि मतिमान सुपुरुष सो करिकै मंत्र विचार । मोद सुधन भूपति लहै सुनो भूमिभरतार ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

कहो तात यह मर्म काको सेवन श्रेष्ठ अति । देह धरेको धर्म देनहार अति परमगति ॥

भीष्मउवाच ॥ चौपाई ॥

माता पिता गुरुको पूजन । एहि सम तात और जन दूजन ॥ ए परतत्त्व देव सबहीके । सेवनयोग्य पूज्य अति नीके ॥ ए त्रय अग्नि कहत श्रुति मानो । गार्हपत्य अग्नि पितु जानो ॥ माता दक्षिण अग्नि अनूपा । आहवनीय गुरु सुनु भूपा ॥ पिता अग्नि एहिलोक उबारति । मातागिनि परलोक सुधारति ॥ ब्रह्मलोकमधि गुरु बसावत । इमि ए त्रय त्रयलोक बनावत ॥ सन्तति सम्पति सुधरम बरधत । तेज सुयश बढ़ि कबहु न अरधत ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनमें अधिक गुरु हम जानैं । जाकी कृपा मोक्षपद ठानैं ॥ सिरजत देह जनम दै पालत । अङ्क लगाइ प्राणसम लालत ॥ बढ़त सहत न गहत निठुराई । गुरु सम जनक जननि सुखदाई ॥ जो ए चरै कुयुग अनुरूपा । तबहूं सेवनयोग अनूपा ॥ धन दै पालै करि सनमाना । सो प्रभु जननी जनक समाना ॥ तेहि प्रकार विद्या गुणदायक । जनक जननि सम पूजनलायक ॥ जे सुकर्म करि सुधरम ईछत । तिनकहं बेदनीति यह शीक्षत ॥ गुणि गुरुजनकहं पूजत जोई । सकल पदारथ पावत सोई ॥ करि अनुशासन सुवचन कूजत । जनक जननि गुरुजनको पूजत ॥

दोहा ॥

ध्यावत पूजत गुरुहि सो ब्रह्महि पूजत ध्याय । चहत परम पद गुरुहि सो सेवत मन बुधिलाय ॥
मातु पिता अरु गुरुको करत निरादर जौन । आदि भ्रूनहा तासु सम और पातकी कौन ॥
मित्र द्रोही पुरुष जो पुरुष कृतघ्नी जौन । तियबध कृत गुरुघात कृत महापातकी तौन ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

अब सुधर्म व्याख्यान सत्य असत्य विधान सब । कहिये तात सुजान सत्य समान न और कछु ॥

चौपाई

सुनिये तात धर्म व्यवहारा । सत्य असत्य विधान अपारा ॥ सत्य समान न मख अवराधन । नहिं असत्य सम पातक बाधन ॥ सत्य समान पुण्य नहिं दूजा । सत्य समान न तीरथ पूजा ॥ है असत्य सम पातक मूला । रौरव आदि नरक कर कूला ॥ कतहूं असत्य पुण्य सरसावत । कबहूं सत्य पाप उपजावत ॥ गति हिंसा परपीडा आदिक । मेटत जौन असत्य प्रबादिक ॥ तौन असत्य पुण्यप्रद राजा । भाषत सिगरे सुबुधि समाजा ॥ जौन सत्य हिंसादिक साधै । सो पातक दै परगति बाधै ॥ हिंसा परम अधर्म कहावत । हिंसा अगणित जन्म नशावत ॥ हिंसा युद्धयज्ञमधि कीन्हे । धर्म बढ़त नहिं अधरम लीन्हे ॥ पर उपकार धरम अति पावन । परपीडा अधरम अघ छावन ॥ परम धर्म है दान सोहायो । पुण्यपयोधि दानते जायो ॥ पापिहि दान देत जो कोई । धरम नशत तहं अधरम होई ॥ जातिधर्म अति सुधरम जगमैं । आश्रमधरम पुण्यप्रद अगमैं ॥ परम सुधर्म प्रतिज्ञा पालन । अति सुधरम सतपथ मतिचालन ॥ सतसंगति बर धरम गोसाईं । पारश संग लोहकी नाईं ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

गहि गहि भाव अनेक नर बहुविधि सहतकलेश । कहो पितामह सबविधि अबसो सबधर्म विशेश ॥
यथा उक्त आश्रम चरत लागि दम्भ छल जौन । सुनो भूप भवसिन्धुतरि पार लहत है तौन ॥
जे नहिं हिंसा करत नहिं जीवन पीडा देत । दान देते नहिं लेत जे ते नर परपद लेत ॥
जे नर करत न पाप कछु अतिथिन देत सुपास । जे अलोभ अरु सत्यबद तासु स्वर्ग मधि बास ॥
परतिय जानत जननि जे राजसतामस हीन । देव पितृमख करत जे ते पावत मतिपीन ॥
युद्धमध्य अतिशूर जेजिन्हैं मरण भय नाहिं । बिजय चहत करि धर्म विधि तेनर सुरपुर जाहिं ॥
जो तप करता बिप्र बर बेदव्यासी जौन । अध्यापक जापक निपुण तरत दुर्ग यह तौन ॥
निज सम जानत जगत सब राव रंक समभाव । तरत दुर्ग सब सार यह जो छल छोछाव ॥
परिबिभूति लखि मुदित जे मानिनको सत्कार । तरत दुर्ग यह करतजे मानिनको सत्कार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्संगतिरत पुरुष जो गहे सत्य गुण नेम। तरत सिन्धु यह गहत जो राककृष्ण पद प्रेम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शांति पर्वणि राजधर्म्मे युधिष्ठिरभीष्मसंवादोनामषष्ठोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

सौम्य रूप असौम्य कछु सौम्य असौम्यस्वरूप। किमिपिछानितेपरत सो कहियेसुमति अनूप ॥

भीष्म उवाच ॥ जयकरीछन्द ॥

अब कहत इतिहास अनूप। सुनो तौन कुरुनायक भूप ॥ पौरिक नाम नृपति हो पूर्व। सो हिंसारत हो अति गूर्व ॥ समय पाय तन तजि क्षितिपाल। दुतियजन्ममैं भयो शृगाल ॥ तहं करि पूरब परगति चेत। भयो अनामिष बर व्रत लेत ॥ गिरो परो फल पावै जौन। बितवै दिवस पाइकै तौन ॥ तासु वृत्ति यह अनुपम देखि। और शृगाल दुष्ट अति तेखि ॥ तासों कहत भए छलवैन। यह मृगवृत्ति हमारी हैन ॥ हिंसा करब मांसको खाब। मम सुजाति कहं बड़ो सवाब ॥ मांस खाइबेको व्रत लेऊ। आपु खाऊ ज्ञातिनकहं देऊ ॥ यह सुनि तौन शृगाल प्रबीन। इमि भाषत भो बचन अहीन ॥ तुम सब गहि यह वृत्त कुराग। लाए जम्बुक कुलमें दाग ॥ हम चाहत सो वृत्त अचार। जाते पसरै सुयश उदार ॥ वंशहि करत प्रशंसित जौन ॥ ध्रुव उत्तम गति पावत तौन ॥ आत्महि अमल करै अनुमानि। हम यह वृत्ति गहे हित जानि ॥ जाते ऐसो जन्म मलानि। फेरि न लेन परै दुखदानि ॥ जैसो कर्म करै तन पाय। तैसो जन्म लहै फिरि आय ॥ स्वर्ग नर्क सुख दुख लघु पर्म। है सबगतिको कारण कर्म ॥ तेहि शृगालके सुनि ए बैन ॥ मौन रहे जम्बुक अघ ऐन। हो तहं मृगपति सो सुनि तौन। जान्यो ताहि महामति मौन ॥ गुणि इमि कहत भयो मनलाय। तुम मम मंत्री होऊ सचाय ॥ अति मतिमान देखि करि प्रीति। सचिव करब राजन की नीति ॥ ताते तुम्हैं जानि मतिमान। सचिव करत हम देखि बिधान ॥ यह सुनिकै गोमायु सुजान। मृगपति सों बोलो अनुमान ॥ तुम यह उचित कहत मृगराज। अपहि चाहत सुबुधि समाज ॥ जैसो होत अमात्य सुभेश। तैसो बरधत बिभौ बिशेश ॥ तो मंत्री ह्वैबेको चाव। नहिं हम धारत जानि सुभाव ॥ तुम बनचर बलवान अपार। नहिं प्रशस्त सेवा ज्ञातार ॥ पूर्व अमात्य तुम्हारे जौन। छली चुगुल कुत्सित मति तौन ॥ दुष्ट होत सहबासी यत्र। साधु प्रबोध न निबहत तत्र ॥ प्रभु अविवेकी साथी दुष्ट। तहं साधुन कहं कुशल न पुष्ट ॥ उनके बचन न मानै नेक। हमैं न देऊ दण्ड अविवेक ॥ यह दृढ़पण कीजै खीकार। तो हम मंत्री होहिं तुम्हार ॥

दोहा ॥

यह निबन्ध करि कै भयो मंत्री तौन शृगाल। तासु रंध्र निरखन लगे जे जम्बुक बदचाल ॥
तेहि मृगपतिके खानको मांस धरो हो ताहि। घरमें साधु शृगालके धरि आए बध चाहि ॥
कछु क्षणमेंअति क्षुधित ह्वै जागिउठोमृगराज। मांसकहाभोइमिकह्यो करिकैक्रोध दराज ॥
सो सुनि दुष्ट शृगाल सब कहत भए मनमान। खायो मांस शृगाल जो मंत्री साधु सुजान ॥
दरशावत है साधुता इविधि करत है कर्म। क्षुद्र गुणत तुम कहं सदा आनतकछू न भर्म ॥
सुनि पण तजि मृगराज वह गह्यो जातिके तौर। लियो साधु गोमायुके बध करिवे की डौर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेहि मृगपतिकी जननि तब बहुविधि ताहि बुझाय। सादर साधु मृगालके प्राणहि दई बचाय॥
तजि बाघहि गोमायु वह और विपिनि मधि जाय। कछुदिनमें सो देहतजि लह्यो स्वर्ग सुखदाय॥
ह्वै महीप करणी कियो जाते भयो मृगाल। करि संजम गोमायु ह्वै सुरपुर लह्यो विशाल॥

युधिष्ठिरउवाच॥ मोरठा॥

अब कहिये मतिभौन होत किए आलस कहा। दोष देखावत कौन बिनु बिचार के करम जे॥

भीष्मउवाच॥

अचपूर्वइतिहास सुनो आलसी ऊंटको। करि अविचार प्रकास नाश लह्यो जिमि विपिनिमधि॥

जयकरीछन्द॥

पूर्व रहो हो ऊंट उदार। सो बनमधि तप कियो अपार॥ तप निरेखि विधि भए प्रसन्न। तहं आए जहं सुतरासन्न॥ वरं ब्रूहि बोले वरदान। तब इमि बोलो ऊंट नदान॥ देहु कृपा करिकै विस्तारि। ग्रीव हमारि कोश शतचारि॥ इत बैठे सागर मधि वारि। पिएं चरैं सब विपिनि निहारि॥ सो सुनि बेधा गे निज धाम। शतयोजन करि ग्रीव ललाम॥ लहि वर ग्रीव ऊंट अति मोदि। लागो सब दिशि चरण विनोदि॥ बैठो रहि ताही थर धीर। चरै बदन करि सागर तीर॥ एक दिवस चरि ग्रीव पसारि। सोयो बदन दरीमधि डारि॥ तेहि थर दम्पति जम्बुक जाय। ग्रीव देखि अति आनन्द पाय॥ मांस काटिकै लागे खान। जगो ऊंट लहि क्लेश महान॥ जो लगि ईंचै घींच विशाल। तौलगि दीन्हें काटि मृगाल॥ एहिविधि गहि आलस अविचार। भयो निधन इमि ऊंट अगार॥ मूल मोदको बुद्धि अनूप। है अविचार आपदा रूप॥ आलस ते सब होत अकाज। व्यवसाई को सुधरत राज॥ भूप करत जो जैसो कर्म। प्रगट होत तहं ताको मर्म॥

दोहा॥

करै सुकर्म विचारिकै गहै न आलस लेश। सहबासिन तोषत रहै बरधै तौन नरेश॥

युधिष्ठिरउवाच॥ मोरठा॥

जाको प्रबल अमित्र गहै कौन आचरण सो। प्रभु यह नीति विचित्र सुनो चहत है चित्तसम॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥

अब पूर्वइतिहास हम उदाहरण मतिमान। सागर अरु सरितानको जो इतिहास महान॥
सब सरितन तन देखिकै सागर कह्यो विवेक। टूटि उखरि तो धार परि आवत वृक्ष अनेक॥
बेनु बेत आवत नहीं ताको कहत निदान। सो सुनिकै गंगा कही सुनो भूप मतिमान॥
धार चलत अतिवेगसों तरुगण तासोंजुटि। करे रहत तेहि अगुणसों उखरि जात कै टूटि॥
जब प्रबाह मधि परत है वेणु बेत समुदाय। सुनो जात तब नम्र ह्वै ताते बचत सचाय॥
जब प्रबाह कढ़ि जात है तब फिरि होत उतंग। निंद्यकठिनता प्रबलसों सुगुण नम्रता ढंग॥

भीष्मउवाच॥

इमि कठोरता नम्रता गुण औगुण दरशाय। गंगा सागर को कियो समाधान सुखदाय॥
प्रबल शत्रुसों नम्रता गहि नृप रहै सचेत। समय पायके उच्चता गहि सो आनंद लेत॥

युधिष्ठिरउवाच॥ मोरठा॥

ह्वै प्रगल्भ हठ ठानि मूरख पण्डितसों लरै। तहं पण्डित अनुमानि केहि विधि करै प्रवीणता॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥

तहं पण्डित ताके सहै सिगरे कुत्सित बैन। ताके बातन के सरिस बातैं आपु कहैन॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निंदै कै अस्तुति करै श्रोता जिते नदान। काक संग जल्पत नहीं सुगुणी हंस सुजान ॥
निजसमबातैंकरतसो तेहिक्षण स्रुतदुखदेत। प्राणघातनहिं करत है यह बिचारि करिलेत ॥
जानै मूढ़ मयूर सम निरतत पूंछ उठाय। निलज लाज आनत नहीं गुदा दोष दरशाय ॥
कितनेआगे गुण कहत पीछे जल्पत दोष। पण्डिततिनके बचनसुनिकबहुंन न आनत रोष ॥
चलनीसम गुणअघकरत दोष देखावत भूरि। तासोंसरवरकरतनहिं पटुनितिनिवसत दूरि ॥
जेहिबिधि दोषीश्वानसों दूरिरहतनरजानि। तेहिबिधिऐसेनरनकहं पटुत्यागत अनुमानि ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

कहो पितामह दक्ष अक्ष नीति नरपतिनकी। जासु प्रभाव प्रतक्ष आनंद लहत समक्ष नृप ॥

भीष्म उवाच ॥ रोला छन्द ॥

परम उत्तर राजबिधि हम कहत तुमसोंतात। होत नृपके अनुग जैसे तथा बिधि सरसात ॥
बर्तमान भविष्य भूत त्रिकालजाहि बिचार। देश अरु कालज्ञ जिनकी प्रकृति साधु उदार ॥
शास्त्रबिद धर्मज्ञ धरमी शुद्ध सरमी स्वच्छ। सावधान सुशील सम दरशी सुज्ञान समच्छ ॥
शूर व्यवसाई सुबुधि सर्बज्ञ सब गुणमान। सखा सचिव सुमित्र सुहित अमात्य जासु महान ॥ प्रजा ताके लहत सुख अरु रहत सुधरम पूरि। होत ताके सुधन बरधित तेज बरधत भूरि ॥ बढ़त दल चतुरंगिनी भट रहत मोदित सर्ब। शत्रु होत न कबहुं सम्मुख सुनत त्यागत गर्ब ॥ होत ताके देशमें नहिं पापको संचार। बरण आश्रम धरम को नहिं घटत नेकु बिचार ॥ लहत आनंद दुहूं दिशि सो भूमिपति मतिमान। होत जासु अमात्य सिगरे कहत जौन बिधान ॥ सुनो ताते नृपनकी येह परम नीति अनूप। लखि सुबंशज परखि सबगुण देखि शुद्ध स्वरूप ॥ करै ताहि अमात्य सुधरै तासु सिगरो काज। नहिं सुबंशज कपट आनत नहीं बिगरत राज ॥ करत कुटिल कुबंशजहि आमात्य भूलि नरेश। औशि सो बढ़ि कपट ठानत त्यागि सुधरम लेश ॥ पूर्व को इतिहास इत हम कहत सुनिये दान्त। कहे मुनि गण बिपिनि मैं भृगुराम को वृत्तान्त ॥ मुनिउवाच ॥ महा निरजन बिपिनि मैं तप करत हे मुनिराय। रहत हो तहं ग्रामबासी श्वान एक सचाय ॥ तहां आयो एक दिन जो मारि श्वानहिं खात। शास्त्र मैं तिहि कहत द्वीपी इतै हाठा ख्यात ॥ देखि ता कहं श्वान मुनिसों कहो आरतबैन। सुमुनि तब करि दए द्वीपी श्वान कहं बलऐन ॥ कछू दिनमैं बाघ आयो डरो द्वीपी हेरि। सुमुनि तब करि दए द्वीपिहि बाघ अति बलमेरि ॥ मत्त मैगल तदनु आयो बाघ डरपो चाहि। सुमुनि तासों प्रबल मैगल किये बाघहि चाहि ॥ कछू दिनमैं तहां आयो सिंह अति बलवान। सुमुनि तब तेहि गजहि कीन्हे सिंह प्रबल महान ॥ कछू दिनमैं तहां आयो सलभ नामक जौन। आठपदको प्रबल सिंहहि बधत जो बलभौन ॥ देखि सलभहि सिंह डरपो सुमुनि तौन निहारि। कियो सिंहहि सलभ तासों प्रबल अतिपण धारि ॥ देखि मुनिहत सलभ कहं डरि सलभ भागो तौन। लगो बिहरण बिपिनि मैं तहं सलभ मुनिहत जौन ॥ खाय लीन्हो बिपिनिके बधि मृगनके समुदाय। बचे हे ते बिपिनि तजिकै दूरि निवसे जाय ॥ एकदिन मृग लह्यो नहिं अति गह्यो आमिष चोप। मुनिहि चाह्यो खान सो लखि सुमुनि कीन्हे कोप ॥ नीचजनकी नीचता नहिं जात बात बिसूरि। फेरि ताकहं श्वान करि कै किए बनते दूरि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

कुलहीनहिं बरधितकरत नहिं कितहू नृपनीति। पुरुषपरखि बरधितकरत सोबिलसत जगजीति॥
उपकारी सतसंगती क्षमावान मतिमान। भूपति करै अमात्य जेहि धर्मी कहे सुजान॥
परखि बुद्धि व्यवसाय बल गुण ताही अनुरूप। कारज सौंपै जनन कहं शुचित रहै सो भूप॥
जहां सिंहको काज है तहं जौ नियमै श्वान। श्वानठौर गोमायु करि लहै आपदा न्यान॥
द्विरदभार हयपर धरै हयको मेढहि देइ। अपटु कहावत नृपति सो आपु आपदा लेइ॥
जैसे होत अमात्य अरु सखा संगती सर्व। तैसी गति भूपति लहत मध्यम खर्व अखर्व॥
परदेशी जन सुभट पुर सखा अमात्य निरेखि। जानत मति गति नृपतिकी राजनीति अवरेखि॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

राजनीति अभिराम तात कहे बहुभांति तुम। अब कहिये करि आम राजनीतिको तत्व जो॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

रक्षण सिगरे भूपकी परम सुलक्षण भूप। दक्षणको संगति करव पक्षन करव अनूप॥
उग्र प्रकृति ऋजुप्रकृति अरु निरदय सदय सुभाव। दुष्टसाधु रिपु हितमधी भूपति गहै बनाव॥
मोर अहिनकहं खातहै जिमिगहि बहुरग पक्ष। तिमि बहुरग गहि खलनकहं दंडै भूपति दक्ष॥
शस्त्र शास्त्र विधिमधि निपुण हय गजरोह प्रवीन। जल तरिबे मैं दक्ष अरु विप्रभगति मैं पीन॥
सफल वृक्षसम सुजनको करत रहै उपकार। दुष्ट मृगन पहं बाघ सम दये रहै डरभार॥
निज रक्षणमैं भूमिपति दए रहै निति चित्त। देशकाल परखत रहै को वैरी को मित्त॥
मंत्रिनसों मंत्रित बिना कारज करै न नेक। सो मत निजमति लायकै समुझि लेइ सविवेक॥
धर्म राखि भूपति करै सबहीके प्रिय कर्म। रहै सदा बरधित करत धन दल विक्रम मर्म॥
निरलोभी शीक्षित सुबुधि धरमशील पहिचानि। सब काजन थापित करै सतवक्ता अनुमानि॥
दान धर्म अरु न्यायविधि सौंपै जाहि नरेश। भले परखलै प्रथम फिरि परखत रहै हमेश॥
वार्त्तान्तरमैं सखनसों बूझि लेइ वृत्तान्त। अधिकारी जे काजके तिनके शान्त अशान्त॥
निजपीड़ा सब कहत जो भूप सखन पहं जाय। छपत नहीं नृप सखनसों काहूको अन्याय॥
निसुदिन जे संग रहत हैं मोदत यथाविधान। नृप मनगति ज्ञाता चतुर तेई सखा न आन॥
जासु अनुग्रह छपत नहिं मंत्र प्रगट नहिं होत। सोभूपति यश जय लहत प्रतिदिन बरधित होत॥
धन दल गढ़ गज तुरंग बन प्रजा देशव्यवहार। आयुध अरु आमद खरच दान धर्म उपचार॥
आमद बरधन ठौर अब युद्ध समान स्वरूप। मन लाए निरखत रहै विजय लहत सो भूप॥
पालि प्रजन कहं धेनु सम दोहै धन पयपूर। राखै कोष सुपात्र में तहां न निवसै कूर॥
ताहि तहां पचवै सरुचि शासन आंच लगाय। नित्य खर्च व्यवहारमें प्रथम देइ उफनाय॥
बढ़ि असंथाई रहै जोता कहं देइ जमाय। समय पाइ तेहि मधि लहै धर्म सपर सुखदाय॥
अपटु अधर्मी लालचिहि कबहू न सौंपै काम। खेल न राखै अहितको चिन्तित रहि सब काम॥
बाल वृद्ध बलहीन लखि शत्रुहि तजै न शोच। रहै शत्रुके नाशकी विधिको करत सुलोच॥
चारु सुबुधि बरधित करै बुधिते बरधत राज। बुधिते जीतत अरिनकहं बुधि सब सुधरम साज॥
बुद्धिमान व्यवसाय करि लहत विचारत जौन। बुधि विद्या व्यवसाययुत बली भूमिपति तौन॥
जासु अमात्य महानमति बढ़त शक्रसम तौन। ताते परखि सुभाव मति करै सुअमात्य सुरौन॥
तप बल विद्या धन बढ़त किए बुद्धि व्यवसाय। सब सुधरत व्यवसायते बुधिको लहै सहाय॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाहि कहत उद्योग है सो व्यवसाय सुनाम । महालोभ बिनु सो किए होत सुयश अभिराम ॥
लोक शास्त्र कुलरीतिको करत उलंघन जौन । धरम छुटत है जासु बश महालोभ है तौन ॥
ताते दण्ड स्वरूप गुणि सबदिन करै सुकर्म । दण्ड गुणे बरधत नहीं लोभादिक सब मर्म ॥

युधिष्ठिरउ बाच ॥ सोरठा ॥

सबथर थिति करि तासु आपु प्रशंसत दण्डको । सो अब कहिए आसु रूप भेद गुण दण्डको ॥

भीष्मउवाच ॥ रोला छन्द ॥

पूर्व मनु एहि भांति भाषे दण्डको व्याख्यान । दण्ड कीन्हें धर्म बर्धत दण्ड धर्म महान ॥
प्रजापालन धर्म जासो दण्ड है अभिराम । श्यामरूप अनूप आभा महाबलको धाम ॥
चारिभुज अरु चारि दांतै आठपद चख एक । दोय जिह्वा ताम्रमुख मृगराज सम अतिटेक ॥
धनुष शर असि गदा सुङ्गर सुषल आयुध जासु । प्रबल सबसों क्रोध पूरित नाम रक्षक
तासु ॥ साधुजनको करत रक्षण खलन मर्दत जौन । भूप दण्ड न देत असतिहि दुर्जन
मर्दत तौन ॥ लोकपाल दिगीश शिव प्रभु बिष्णु ताको नाम । जगद्वाची गिरा लक्ष्मी दण्ड
नीति अक्षाम ॥ दैव मोक्ष अमोक्ष भय दम अभय संजम दादि । नाम अगनित दण्डके हैं
तीक्षण मृदुता आदि ॥ दण्ड विधि करि प्रजन रक्षत भूमिपति जो चेत । दण्ड प्रभु तेहि
करत बर्धित परम सुधरम हेत ॥ वर्ण आश्रम धर्म बरधित दण्डके परभाव । होत तप व्रत
दान मख सब जासु जैसो छाव ॥ सहित सुरगण शक्र सुद लहि अन्न अतिशै देत । प्राण
रक्षण जगतको है अन्न ते तेहि हेत ॥ दण्ड व्रत गहि प्रजापालन उचित भूपहि रोज ।
दण्ड है ऐश्वर्य्य ईश्वर तेज दल बल ओज ॥ तुरग रथ हय पतित जन अरु भार बाह
कपाठ । अस्त्र सब अरु देशजन परदेशजन ये आठ ॥ गनिक तंची कोष मंची मित्र धान्य
सुसौज । अंग पन्द्रह भूपके तिमि दण्ड दायक मौज ॥ दए ईश्वर भूमिपतिकहं दण्ड उत्तम
पर्म । पाप प्रगट न होत जाते करत बरधित धर्म ॥ दण्ड प्रत्यय जौन सो व्यवहार आत्मक
तात । बेद बिषयात्मक बिदित व्यवहार स्मृति जो ख्यात ॥ व्यवहार स्मृति सो बेद है अरु
बेद सोई धर्म । धर्म सोई शुभद सतपथ नहीं अन्तर मर्म ॥ बिना नृपके दण्डभय नहिं धर्म
निबहत एक । उचित ताते भूमिपतिकहं दण्ड धारण टेक ॥ पिता माता बन्धु भार्य्या अरु
पुरोहित जौन । धर्म त्यागे दण्ड भूपहि सुनो उरबी रौन ॥ पूर्वको इतिहास इत हम कहत
सुनिये तौन । अंगपति बसुहोम भूपति रहो बलबुधि भौन ॥ सहित भार्य्या गयो सो नृप
सुंजष्ट सुशैल । तहां तप करि लह्यो सो नृप देवऋषि सम फैल ॥ मान्धाता भूमिपति चलि
गयो तहं सुनु भूप । अर्घ दै बसुहोम तेहि बैठाय भो कृतरूप ॥ कुशल सुनि बसुहोम बूझे
आगमन को हेतु । मान्धाता भूप तब इमि कह्यो आनंद लेत ॥ मान्धातोवाच ॥ जीवकृत
जो शास्त्र अरु औशनसशास्त्र महान । तासु ज्ञाता भूमिपति तुम बिदित अति मतिमान ॥
सुनो चाहत तौन हम नृपनीति धर्म विचारि । दण्ड प्रगटित भयो किमि कित कहो सो
निरधारि ॥ बसुहोमउवाच ॥ दण्ड उत्पति भयो जिमि सो सुनो उरबी रौन । आत्मसम
बिनु लखे क्षत्रिज गुन्यो बिधि ह्वै मौन ॥ शीशमधि धरि गर्व राखे सहस बर्षि बिचारि ।
तदनु प्रगटित किये ता कहं नाम छुप निरधारि ॥ किये बेधा यज्ञ क्षत्रिज ताहि करि
सबिधान । यज्ञरत बिधि रहे तब भो दण्ड अन्तरध्यान ॥ दण्ड अन्तरध्यान भो तब बढ़ी
अति अबिबेक । आत्म पर धन धर्म हृदको रहो भाव न नेक ॥ बूझि सो वृत्तान्त ब्रह्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु प्रभुहि अराधि। कहे फिरि मर्य्याद थापित करो प्रभु बत साधि ॥ विष्णु तब निज आत्माते किये प्रगटित दण्ड। शूल आदिक धरे आयुध उग्रवपु अतिचण्ड ॥ तदनु प्रभु भगवान कीन्हें अधिप पालन हेत। सुरनके पति किये शक्रहि तेज सत्वनिकेत ॥ पितृ वैवस्वतनके पति यमहि कीन्हें चाहि। अधिप कीन्हे यक्षगण के धनद कहियतु जाहि ॥

दोहा ॥

परवतपतिमेरुहिकिये सिंधुहिसरितानाथ। जलपतिअरुसुरपति किये वरुणहिदेवरगाथ ॥
कीन्हें रुद्रनकेअधिप शम्भुप्रभुहि अनुमानि। कियेवशिष्ठहिविप्रपति लखि तप बरचस खानि ॥
कीन्हें अधिपति वसुनके जातवेद सहिदेखि। तेजमानके पतिकिये प्रभु भास्करहि निरेखि ॥
एहिप्रकार निर्मितकिये सिगरे अधिपअमन्द। दण्डनीतिकरितेसकल पालत प्रजा अदन्द ॥
क्रमसोंसबभूपति लहे दण्ड प्रभुहिसहनीति। क्रमसों पालत प्रजनकहं पालिसुपूरुवरीति ॥

भीष्मउवाच ॥

सुनि सुबचन बसुहोम के मान्धाता गे धाम। दण्ड नीति परभाव जो है नृप धाम अछाम ॥

सोरठा ॥

एहिविधि दण्ड प्रभाव दण्डकुशलसों कुशल नृप। रामचन्द्र गहि चाव दीन्हे दण्ड दशाननहि ॥
जोरि बानरीसैन सेत बांधि तरि घेरि पुर। कौणपदल बलऐन मरदि बधे परिवार सह ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शांति पर्वणि राजधर्मे दण्डप्रभावबर्णनो नामसप्तमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

अर्थ धर्म अरु काम अरु मोक्ष जौन सुखदाय। इनको कहिये मूल अरु प्रभव भेद समुभाय ॥

भीष्मउवाच ॥

अर्थ धर्म अरु कामको है द्वैविधि वृत्तान्त। तौन कहत मन दै सुनो भूप युधिष्ठिर दान्त ॥
ऋतुदिन लखि निजधरम गुनि पुच अर्थ अभिराम। करत जौंन व्यापार सो अर्थ धर्म अरु काम ॥
मूल अर्थको धर्म है मूल कामको अर्थ। ऋतुक्षण तिनको प्रभव है सतमति करत न व्यर्थ ॥
करत धर्म परलोक के अर्थ जौन अभिराम। अर्थ धर्म सो तासु फल प्राप्त जौन सो काम ॥
अर्थमूल वह धर्म है धर्ममूल वह काम। प्रभव तासु सङ्कल्प है प्रभु यह भेद अछाम ॥
मोक्ष बिलक्षण रूप है निस्सङ्कल्प अमन्द। मिलत सच्चिदानन्द में ध्याय सच्चिदानन्द ॥
अर्थ धर्मयुत काम जो सो प्रशस्त सबकाल। अर्थ धर्म बिनु काम जो सो अति निंद्य कराल ॥
अंगरिष्ट नृप सोइ बिधि कहे सुमुनि कामन्द। अर्थ धर्म बिनु चरत जो काम तौन मतिमन्द ॥
मूढप्रकृति ऐसो नृपति अबिबेकी कृतपाप। सो दुखदायक प्रजन कहं जिमि गृहबासी सांप ॥
निजअघगुणिहियग्लानिगहिसत्संगतिलहितौनसुनिसुबचनधरिनियमकरिफिरिसुधरतमहिरौन॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

जगत प्रशंसत धरम सुभाव। धरम प्रकृतिते बरधत चाव ॥ सो हम सुनो चहत हे तात। जाते मिलै धर्म अबदात ॥ भीष्मउवाच ॥ नृप तो राजसूय मखमांह। गो धृतराष्ट्रतनय नरनांह ॥ तो बिभूति लखि अमरष परि। निजपुर आइ मोहभरि भूरि ॥ शकुनि दुशासन कर्ण समेत। बैठि जनक ढिग कुत्सित चेत ॥ निज परिताप कह्यो क्षितिरौन। सुनि धृतराष्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे सुनो तौन ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बन्धुविभूति देखि अभिराम । कत गहि शोच होत अति छाम ॥ शील गहौ जेहि बरधत राज । जो गहि बरधै भूप समाज ॥ धर्मशील जो भूप अमेय । तीनिलोक नहिं ताहि अजेय ॥ धर्मशील मान्धाता भूप । एकदिवस चरि दिन मनि रूप ॥ नृप ययाति दिन तीनि अखण्ड । सातदिवस जाभाग प्रचण्ड ॥ सुरथिन सहित सकलदिशि घूमि । निज बश कीन्ही सिगरी भूमि ॥ सो आचरण गहो पण ठानि । जो नृपवर धन आनद नानि ॥ दुर्योधनउवाच ॥ केहिबिधि तौन शील सुखदाय । प्राप्त होत सो कहो बुझाय ॥ जौन किए ते भूमि समस्त । शीघ्र मिलति सो कहो प्रशस्त ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ अब पूर्व इतिहास महान । कहे सुसुनि नारद मतिमान ॥

नारदउवाच ॥ दोहा ॥

पूर्व दैत प्रहलाद गुणि धारि शील शुभ ओक । हस्यो राज्यपद इन्द्रको वश करि तीनौ लोक ॥
तब सुरपति अति दीन ह्वै जाइ बृहस्पति पास । प्राणि जोरिकै निजव्यथा कहत भये जिमि दास ॥

इन्द्रउवाच ॥ रोलाछन्द ॥

तात कहिये कृपा करिकै ज्ञान श्रेयद जौन । ज्ञानवार्त्ता शक्रते तब कहे गुरु मति भौन ॥ शक्र सुनिकै कहे कहहु विशेष याते और । जीव भाषे कहैं गे सो शुक्र ज्ञानीमौर ॥ शक्र तबह्वै बिदा गुरुते शुक्रके ढिग जाय । कहे कहिये तात जौन विशेष ज्ञान सुभाय ॥ शुक्र भाषे ज्ञान जौन विशेष अनुपमरूप । तौन जानत एक जो प्रहलाद दैत अनूप ॥ शक्र तबही शुक्रसों ह्वै बिदा बनिकै बिप्र । दैतपति प्रहलाद हो जहं गयो तेहियर क्षिप्र ॥ जाय तासों कहत भो हम सुनो चाहत तौन । ज्ञान धर्म विशेष वार्त्ता परम श्रेयद जौन ॥ कहे तब प्रहलाद इमि अवकाश मोहि न आम । काममैं त्रयलोकके आशक्त हम सबयाम ॥ शक्र द्विज तब कहे जेहिक्षण लहौ तुम अवकाश । कहो तेहिक्षण ज्ञान करि आचार्य्य नीति प्रकाश ॥ दैतपति तब मुदित ह्वै लहि समय अनुपम ज्ञान । कहे सुरपति बिप्रसों गुणि शिष्य परम सुजान ॥ शिष्य सम ह्वै नम्र सबिनय समुझि तत्व बिधान । कहत भे प्रहलाद सों फिरि शक्र करि अनुमान ॥ भए तुम त्रैलोकपति गहि परम सुधरम जौन । सहित कारण कहो प्रभु हम सुनो चाहत तौन ॥ बिप्रके ए बचन सुनि प्रहलाद आनद ऐन । कहे हम द्विजचरण लखि कै लहत अतिशै चैन ॥ द्विजहि क्रोधित करत नहिं हम रहत मोदत नित्य । काव्य करता बिप्र केढिग बसत निति मम चित्त ॥ बिप्र बचन प्रभावते ऐश्वर्य्य बरधत पर्म । बिप्र पूजन प्रजा पालन शील श्रेयद धर्म ॥ भाषि इमि परसन्न ह्वै कै कहत भो दैतेश । देत हम बरदान मांगौ चहो जो बर वेश ॥ दैतपतिके बचन सुनिसो बिप्र आनद पाय । दैतपतिहि प्रशंसि कै इमि कह्यो प्रीति बढ़ाय ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

देहु आपनो शील जौ देन चहत बरदान । यह सुनि कै शङ्कित भयो दैतनाथ मतिमान ॥
घरीएकलों शोच करि कहै तथास्तु बिचारि । शक्र बिप्र तब ह्वै बिदा गे निज सुदिन निहारि ॥

पंकजबाटिकाछन्द

दैतनाथ करि निश्चल लोचन । लगे बिप्रको कारण शोचन ॥ ताक्षण तासु गात करि मोचन ॥ शील कढ़ो रुचि ले जिमि रोचन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

मूर्त्तिमान निजशील लखि कहत भयो दैतेय । को तुम इत प्रगटित भए जान चहत केहि देय ॥
शील कह्यो दैतेय ते हम तुम शील अमंद । दान दए जेहि विप्र कहं तापहं जात स्वछंद ॥

चामरछन्द ॥

शक्र पास आसु तासु शील यों महान गो । भास मानके समान तेजता विधान गो ॥
मर्म देखि पर्म कर्म धर्म मूर्त्तिमान गो । देह धारि त्यों पुकारि सत्यचार दान गो ॥

दोहा ॥

तदनुवृत्ति अरु बल गए तदनु कढ़े श्रीताहि । देखि कह्यो दैतेय इमि शोच सिन्धु अवगाहि ॥
श्रीदेवी तुम सति कहो रहो विप्र वह कौन । श्री बोली वह शक्र हो गयो शील लै जौन ॥

निशिपालिकाछन्द

शील शुभ भाव गहि आपु सब लोक ले । देवपति ताहि करि ऊन सुद ओक ले ॥
राजि सब राज शिरताज पद रोकले । जीति यश चीति लिय धर्म करि भोक ले ॥

दोहा ॥

ताते सुरपति आइकै मांगि लई तुव शील । बसत सकल ऐश्वर्य्यतहं शील बसत जेहि डील ॥
त्यजत धर्मबल वृत्ति अरु सत्य तुम्हैं अब त्यागि । गए शक्रपहं जातहम शोचो निसुदिन जागि ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

सुरपतिएहिविधिशीललहिविलसेनिजपदपाय । एहिप्रकार सबनृपनकहं शील होत सुखदाय ॥

भीष्मउवाच ॥

यहसुनि दुर्योधन कहे अब कहिये हे तात । तत्व शीलको जेहि किए बढ़त शील अवदात ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ मनोरमा छन्द ॥

बिनु द्रोह रहै सब भूतन में निति । सुदया अरु दान सुभाव करै थिति ॥
उपकारक वाणि गहै निश्चै चिति । करि पौरुष पालइ राजनकी मिति ॥

दोहा ॥

धर्मनीति सह प्रजनको पालन करै सनेम । सुयश प्रभवके करमसें निसुदिन रहै सप्रेम ॥
इन्हैं आदि सुकरम सकल गुणि गज्ञ पुच सुजान । इनबिनु बरधत नृपति सो नशत सरद घनमान ॥

भीष्मउवाच ॥

एहिप्रकार धृतराष्ट्र नृप कहे शील व्याख्यान । शुद्धशील गहि धर्म नृप बिलसो शक्र समान ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ मोरठा ॥

शीलवानता जौन तौन कहे तुम पितामह । अब कहिये मतिभौन व्याख्या आशा अमितकी ॥
आशा छुटति न नेक लाशासी लपटी रहति । जौन रहति गहि टेक लासा फासा जनम यह ॥

भीष्मउवाच ॥ दोधक छन्द ॥

पूरब को इतिहास लहो सो । नाम सुमित्र महीप रहो सो ॥
गो बनमें मृग हेत बहो सो । आशहिके बर पास नहो सो ॥

दोहा ॥

जाय तहां मृगजूथ लखि मास्यो तीक्षण बान । तासों बेधित एक मृग भागि चलो अतिमान ॥
ताके पीछू नृप चलो चपल तुरंग दौराय । चहुंओर भरमत फिरो आशावश बौराय ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरी छन्द ॥

भूपहि यौं भरमाइ बली मृग । आवत भो जहं है सिगरे मृग ॥ बाण तजे नृप देख बहै मृग । भागि गए युगकोश सबै मृग ॥

दोहा ॥

बाणगिरो जब भूमिमधि तबराजा अकुलाय । मृगजित गे तित बिपिनमधि गयो मारुजकुलाय ॥
जाय बिपिनमधि दूरिलों मृगहि न देख्यो भूप । देखे आश्रम ऋषिणको अति रमणीयअनूप ॥
उतरितुरंगतेऋषिणढिगजायनौमिचितिपाल । यथाउचितसतकारलहिबैठोसुमतिबिशाल ॥
सुनि नृपसों बूझत भए देश वंश अरु नाम । सो सुनिकै तिन सुनिनसों कह्यौ भूप मतिमान ॥

मौक्तिक छन्द ॥

हम हैहयके कुलजात नरेश । मम नाम सुमित्र सुभाव सुभेश ॥ मृगयारत कीन्ह अरण्य प्रबेश । लहि पूरब पुण्य लहे यह देश ॥

दोहा ॥

मृग अनुआशा बहु हम भमि पाए अतिखेद । ताते प्रभु बूझत तुम्हें आशा बासा भेद ॥
मेरु महोदधि गगणको यथा मिलत नहिं अन्त । तैसे आशा प्रबल अति जानी परति दुरन्त ॥
ताते आशा सहित नृप तासु कहो वृत्तान्त । सो सुनि नृपसों कहत भो ऋषिभ नाम सुनिदान्त ॥

तोटक छन्द ॥

हम पूरब तीरथहेत गये । बदरीबनमें अति मोद भए ॥ जगदीश जहां युग रूप लए ॥ तप उग्र करैं अतिउग्र भए ॥

दोहा ॥

नृप हम कीन्हे बास तहं सुनि तनु नाम सुछन्द । मम सन्मुख आवत भयो पूरित प्रभा अमन्द ॥
लखि उठि करि दण्डवत हम आसन दीन्हे पूजि । सुनि लागो तिरपित करण तत्व बारता कूजि ॥

चंचला छन्द ॥

आइगो तहां तबैहि बीरद्रुम भूमिपाल । चारु बाजिपै सवार बेग जासु तेजचाल ॥ सोम सूर रूप देखि नौमि नौमि ह्वै रसाल । पास बैठिकै लगो दशा कहै महा कराल ॥

बीरदुम्नउवाच ॥ दोहा ॥

भूरिद्रुम्न मम पुत्र सो लुप्त भयो बनमांह । आशाबश खोजत फिरत ताहि तरुणकी छांह ॥
यह सुनिकै अधशीश करि तनुसुनि रहो चुपाय । तब नृप तापसरूप गहि बैठत भयो सचाय ॥

संयुता छन्द ॥

नृप देखिकै ऋषियौं कह्यौ । हम खेद आशहिते लह्यौ ॥ यह होति है कश क्यों चह्यो । एहि शोच मो मन है नह्यौ ॥

ऋषिरुवाच ॥ दोहा ॥

नहिं आशा सम अवरणहि आशा त्याग समान । आशाबश जीवत पुरुष त्यागे चहत न आन ॥
जो अलभ्य अरु जौन गत जौन अग्राह्य विधान । जहंनिरमितअपमानतहं आशहितजत सुजान ॥
आशायुत अरथी निरखि आशा पूरत जौन । कैलाशी काशीअधिप सम सुखराशी तौन ॥
पहिले आशा देइ फिरि करै निराशा जौन । बारिबताशा होत तिमि बातबताशा तौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारक छन्द ॥

क्षणगात मुनीश्वरको सुनि बातै । क्षितिपाल लहे अति आनंद पातै ॥
तेहि आश्रहि दूरि दिए करि ताते । बढ़ि शोक नजीक लगे नहिं जाते ॥

दोहा ॥

करि दण्डवत प्रणाम फिरि कहत भयो कर जोरि । दूरि भई तो बचन सुनि जो कुत्सित मति मोरि ॥
तब मुनि तपप्रभाव ते भूरिदुम्न सुत तासु । करि आकरषण भूपतिहि देत भए तहं आसु ॥
पुत्र पाइ नृप मुदित ह्वै गयो आपने धाम । भूपति हम इमि तहं सुने आशा कथा अछाम ॥

भीष्मउवाच ॥

नृप सुमित्र मुनि ऋषभके सुनिकै बचन अमन्द । आश्रहि क्षणकरि निजभवन आवत भयो सुछन्द ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ सोरठा ॥

धर्म सिन्धुको स्रोत तो सुवचन सुनि अमृत सम । मो मन तृप्त न होत ताते कहिये और कछु ॥

भीष्म उवाच ॥ आगता छन्द ॥

पूर्व एक इतिहास लहेहे । गौतमेश मुनि जौन चहेहे ॥
सोजमेश अनुमानि कहेहे । तौन साधु सनमानि गहेहे ॥

दोहा ॥

पारिजातिगरिबिसदपहं गौतममुनिवरजाय । सुबरिससाठिहजारतहं तपकीन्हें मनलाय ॥
धर्मराज आए तहां मुनिलखि विधिवत पूजि । प्रश्नकिये अनुमान करि कुशलबारता कूजि ॥

गौतमउवाच ॥

किमिचरिमातापितासों अऋणहोतमतिमान । कौनकर्मकरि लहत हैं उत्तमलोक महान ॥

धर्मराजउवाच ॥ मौक्तिकदामछन्द ॥

करै तप पूरसु शौच निबाहि । धरै व्रत दीननको गण पाहि ॥
सुधर्म बढ़ाय कहै सति चाहि । करै मखदान कहै पटुताहि ॥

सोरठा ॥

सोपटुदुर्लभलोक लहतवातयहअमिटहै । मातुपितहिसबओक होत प्रशंसितकरिअ ऋण ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

जो नृप आपद पाय होत क्षीणधन तौनन्नृप । करिकै कौन उपाय लहै राज्यधन धर्मसह ॥

भीष्मउवाच ॥ सुश्रीछन्द ॥

भूपति बूझे सुकठिन नीतै । जो पटु ज्ञानी कहब न चीतै ॥
आपदमें जो सुधरम धीतै । नाहक कीन्हें अधरम कीतै ॥

दोहा ॥

आपदलहिनृपप्रजनको करषै धनससुदाय । जिमिपावै तिमि लेयगुणि सोईसुधरमन्याय ॥
जौ परजनपर दयाकरि बसै विपिनिमें जाय । तौवह भूपति मृतकभो खोइ वंशव्यवसाय ॥
न्याय प्रबल अरि लेइगो धनहरि दुखदै भूरि । ताते आपुहि कर्षि धन अचल रहै बलपूरि ॥
सधनप्रजानहिंनृपतिको करत सुरक्षणजाय । सधन भूप रहि प्रजनको रक्षण करतबनाय ॥
ताते धन लै प्रजनसों आपद मेटब नीति । धनते बरधत धर्म अरु धनते बरधत जीति ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारंगरूपक छन्द ॥

ज्यों यज्ञमें छाग आदीक जंतून । को घात कीन्हें नहीं होत श्रीऊन ॥
कीन्हें बिना होत है यज्ञ सो शून । कीन्हें लसै यज्ञको अर्थ द्वै दून ॥

दोहा ॥

तिमिधनलैथिरिपालि फिरि शोभितहोतसुभेश । आपदबशह्वैराजतजि जीवत मृतकनरेश ॥

तोमरछन्द ॥

यहसमुझिबरधतकोष।नृपपरमसुधरमपोष॥लहिनिधनबरधतदोष।नितबढ़तअतिअपसोष॥

दोहा ॥

यज्ञ दान करि समय लहि मेटै ताको पाप । लघुकर लै फिरि प्रजनके मनको मेटै ताप॥

महिखरीछन्द ॥

निति सधन रहिबो नृपनकी अतिनीति हम सबथल सुने । इमि कहत जे मतिमहत निरखे शास्त्र लौकिक श्रुति गुने ॥ सियराम चाहत होत वह कै जौन बिधि गुण लखि बुने । पर भूप हंसहि कुशल निजु नृप नीतिनिधि सुकता चुने ॥

दोहा ॥

राम कृष्णकी कृपाते तुम सरबज्ञ सधर्म । प्रजन पालिहौ धर्मयुत सुयश चालि हौ पर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणि राजधर्मेअष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥

चैत्र कृष्ण ८ बुध वासरे संवत् १९३१ वि०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

शान्ति पर्व आपद् धर्म दर्पणः ॥

दोहा ॥

नमस्कार नारायणहि करिनरोत्तमहि नौमि। बन्दिगिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥
सीतारामसुस्वामिप्रभु न्यामकअन्तरजामि। सुजनअकामिहि सर्वप्रद सन्ततिनहिनमामि ॥
जापद तापद दैअतन धापद सुजन सुकर्म। आपददर तापद सुमिरि बरणत आपद धर्म ॥

सूतउवाच ॥

राजधर्म इतिहास सुनि जनमेजय क्षितिपाल। वैशम्पायनसों कहे पूरित प्रीति विशाल ॥

जनमेजय उवाच ॥

राजधर्म सुनि धर्मनृप किए प्रश्न फिरि कौन। उत्तर दीन्हे भीष्म जो सुनि अब कहिये तौन ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

करि अराज सब राजबल राजि सभा रचिपर्म। राजधर्म सुनि राजमणि बूझे आपदधर्म ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ कवित्त ॥

परम प्रवीण परसिद्ध पितामह सुनो तुमसो सुबाणी को कहैया कौन जगमें। स्मृति धृति मेधा निति बरधति रावरेकी सरधति मो मति सुनति ज्यौं ज्यौं अगमें ॥ ताते और बूझत न सूझत जो औरै नाथ साध दुख सम्पदा लिखी है करपगमें। तापद दुसह दुख आपद लहत जे ते खपद लहत फेरि लागि कैसे मगमें ॥

दोहा ॥

क्षीणसैन धनहीन हित मित्र प्रवीण न जासु। मंत्र जासु परसिद्ध ते लहत आपदा आसु ॥
लोभी जासु अमात्य अरु शत्रु जासु बलवान। बिनु विचार कारज किये लहत आपदा न्यान ॥
दीर्घसूत्रता गहत जो भीतवान नृप जौन। लहत आपदा फिरि लहत खापद किमिचरितौन ॥

भीष्म उवाच ॥ रोला छन्द ॥

कहे औगुण जौन तुम तेहि गहे बिनशत भूप। फेरि सम्पद लहत जेहि सो सुनो यत्न अनूप ॥ धर्म चिन्तन करै शुचि रहि इष्टदेवहि ध्याय। जीतिबेकी विधि बिचारै नीति मंत्र दृढ़ाय ॥ रहै निति चैतन्य बदन प्रसन्न धीरज धारि। तोष गहि नहिं यतन त्यागै सहमि हियसों हारि ॥ आत्मरक्षण करै खरचै धनहिं विधि अनुमानि। रहै सञ्चय किए धनको समय भावी जानि ॥ शत्रुदलमें सन्धि लावै दान भेद उपाय। द्रव्य खरचै तजै आलस भीत औसर पाय ॥ द्रव्य खरचै लहै महि तौ देइ आनंद जूमि। द्रव्य संग्रह करै फिरि नृप रहै

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो गहि भूमि ॥ द्रव्य खरचे लहे जौलौ आपदाको पार । आपु चढ़ि नहिं लरब तौलौं भूपतिहि अधिकार ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हिये पीड़ित बाह्य कोपित भयो भूपति जौन । आपदा सहि सकत नहिं सो करै कारज कौन ॥ भीष्म उवाच ॥ भेद दान उपाय कीन्हे सधे नहिं जब साम । भूप तब ह्वै प्रबल प्रकृती लरे जै यश काम ॥ शुद्ध सेवक सुभट योरेऊ लहत भूपति जीति । शूरता गहि लरत जो लहि बिजय बिधिकी नीति ॥ शत्रुबध करि भोगवे सहि परम जय यश पाय । पाय बध कै बसब दिवमधि उभय बिधि सुखदाय ॥ लरै यह सिद्धान्त करि सो अवशि पावै जीति । मरे उत्तमलोक ताकहं परम पावनि नीति ॥ देखि बिक्रम अधिक ताको शत्रु प्रबलौ शोचि । देत ताकहं भाग महिमें नीति सामहि लोचि ॥ प्रबल अरि गुणि मानि सामहि बसै नृप लै भाग । गहै नहिं बिश्वास ताको रहै जैसे काग ॥ कोष मंत्री सुभट सुधरम रहै सरधत यत्न । समय लहि करि मंत्र चढ़ि लरि लेइ उरबीरत्न ॥ नीति त्यागे बिना आवति आपदा नहिं भूप । नीति सेवन किए बिनशत आपदाको रूप ॥

दोहा ॥

नृप स्वराज परराजतें करषि बढ़ावै कोष । कोष परम नृप धरम है निरधनता अतिदोष ॥ मूल राज्यको कोष है राजहि बरधनहार । बरधन पालन कोषकर नृपति नीति अधिकार ॥ होइ न निस्पृह नहिं गहै अतिशै लालच रूप । मध्यम पद गहि कै करै संग्रह पालन भूप ॥ होतअबलकहंशोचनहिंशोचबिनाबलजाहि । राज्यहोहिनहिंबलबिनाराज्यबिनाश्रीकाहि ॥ गोपतिनृपके पातकहि श्रीकरि पूरणचाव । तियतनकहं गोपनकरत बस्त्रयथा तेहिभाव ॥ उच्चवृत्तिते पतन जो सो है मरण समान । ताते धन दल मित्र हित बरधै भूप सुजान ॥ रहै कोष दल वृद्धिको यत्न करत क्षितिपाल । चोर शत्रु नहिं लग लहै यथा रहै सब काल ॥ करत रहै उतयोग नृप है पौरुष उतयोग । कै भगवत बनमधि बसै त्यागि सृष्टि संयोग ॥

कवित्त ॥

महाअरि प्रबल सों लागै न उपाय जो तौ संग तस्करण लै कै तस्करता करै । दिन बसै बिपिनमें छिन न एकत्र रहै निशि फिरि चारौंओर मारि सुधनै हरै ॥ यह नहिं सधै तौ पठाय चोर ग्रामनमें सुधन चोराय मांगि अरजन कै धरै । लक्ष निहारि जोरि लक्षन सयन चारि पक्षन सुधारि ह्वै प्रतक्ष अरिसों लरै ॥

दोहा ॥

तीनि कर्म तस्करणहं बरजित हैं बिख्यात । जिय धरषण सरबस हरणनिद्रित जनको घात ॥ ऐसेहु पै नृप द्विजनको वित्त न हरै कदापि । रहै धरम पालन करत बिकल न होइ उतापि ॥ निरखै धरम अधरम के फलको जो परिपाक । बरण आश्रम धरमको पालनपरखे पाक ॥ सुधरमते बल बढ़त है बलते सब बश होत । दल अमात्य धन तेज श्री एबलकरत उदोत ॥ बल मधि मोहत धरमजिमि जंगम धरणीधूम । तथा अनुगमत धरमबल जैसेमारुत धूम ॥ है जनमहि द्रुमलता समबलसुधरम परधान । दुराचार रत क्षीणबल लहत न कबहूं चान ॥ सुधरम बश बलवान के यह परमाण अशुद्ध । भोगी के बश सुख यथा दानीके बश पुण्य ॥ बलवानहिं सबसाध्यहै निबलहिकछूनसाध्य । बुद्धिमानबलवानसों करत असाध्यहि साध्य ॥ दुराचार रततेलहत दुखहित अनहितसर्व । जिमिपुरजनबनचरणबज्र टकदुखदेत अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सताचार रत पुरुष को सुधरम दुनोलोक । सताचारते हीन तेहि सब घर पूरित शोक ॥
नशत पाप आचार्य्य के सेवन तें ध्रुव एऊ । नशे पाप आपद नशत यह श्रुति सम्मत लेऊ ॥
वरण आशरम धरमके पाले पाप न होत । जौ विचारि सुकरम करै वरण आशरम सोत ॥
सहन शीलता सुख्समें दुखमें निस्पृह बानि । रामनाम सुमिरत रहै लहै न कबहूं हानि ॥

सोरठा ॥

अब पूर्व इतिहास कहत सुनो सो भूपमणि । जिमि तस्कर मतिराम दुहूं ओर आनंद लह्यो ॥

जयकरीछन्द ॥

कामी क्षत्री सुत अभिलाषि । बहु दिन रमो निषादिनि राषि ॥ तासों भयो पुत्र अभिराम । कियो तासु कापव्य सुनाम ॥ बरधित ह्वै कापव्य प्रवीन । कियो उभय कुलको गुण पीन ॥ विपिनि वास करि मृगयाशक्त । रहै क्षुधित पोषण अनुरक्त ॥ बसै विपिनिमें तापस जौन । मृगफल तिन्हें देइ निति तौन ॥ संग लै तस्कर ज्ञाति समूह । तस्कर करम करै करि ऊह ॥ निशिमें फिरि ग्रामन मनमान । दिनमें पाय पथिक धनमान ॥ अनधन करषै सहित विचार । पोषै ज्ञाति स्वजन परिवार ॥ पालै विप्रन को गण भूरि । देइ बसन भोजन सुद पूरि ॥ गहि ताको आश्रय तहं जाय । चहुंदिशि बसे विप्र समुदाय ॥ सो लहि भोजन बसन सुछन्दि । ताहि देहिं आशिष आनन्दि ॥ इमि रहि कै कापव्य सुचीति । रहै तस्करन शीलत नीति ॥ करो सुजाति कर्म नहिं दोष । मति करियो हिंसा गति पोष ॥ मति सर्वस हरियो हित हेति । सबथर द्विजहि बरायहु चेति ॥ बलते परतिय धरषण काज । मति करियो लहि समय समाज ॥ मति हरियो परअस्व कदापि । विप्रभक्ति हित राखेहु थापि ॥

दोहा ॥

सुपतनिरायुधभगतडरि आरत कहत सधर्म । मृगहि छोंड़ि पशुतिय बधव जानहु हिंसा पर्म ॥
देवपितरअर्चा करव द्विजपोषव अतिधर्म । मोक्षद जानेहु ब्राह्मणहि शासन नाशक कर्म ॥
गुरु शिक्षा आनंद भरण ताहित निरमित दण्ड । शिक्षहि बाधत तासु है दण्ड बधवहै चण्ड ॥
यहमतगहि कै करतजे तस्कर कर्म अडोल । लहत न पापन सहत दुखते गति लहत अतोल ॥

भीष्मउवाच ॥

लखि करतब कापव्यको मानि शिखापनमर्म । तिमि चरिते सब लहत भे परम सिद्धि तेहिधर्म ॥
यहचरिचकापव्यको नितिसुधि करिहैं जौन । नहिं अरण्यआरण्यकनते भयलहि हैं तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि आपद्धर्म्मे कापव्यचरिचोनामप्रथमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥

सुनो भूमिभरतार यह गाथा पूर्बन कह्यौ । कहत तौन उपचार जिमि राजा संचत सुधन ॥

दोहा ॥

प्रजा सर्ब क्षत्रियगके नहिं औरन के नेक । बल मख द्वित करषै सुधन भूपति सहित विवेक ॥
देवपितृमखयाचकननहिं अरचतधनजोरि । तेहिधनतेन अनर्थ कछु औरअधिकसबथोरि ॥
जोरि सुधन जे सुधरमें नहिं खरचत मतिमंद । हरैतासु धन भूमिपति रहन न देइ सुछंद ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरै असाधुनके धनहिं गुणिसाधुन कहंदेइ । परमधर्म विद भूप वह दुहुं दिशि आनंद लेइ ॥
प्रगटत पाप अधर्म ते अकस्मात् तिमि भूप । यथा भूमिते होत है प्रगट धूरि को रूप ॥
बढ़त पुण्यजन धरम ते सुनो भूपतिहि भाव । प्रगटि बीजते वृक्षजिमि बरधत शाखा छाव ॥

कवित्त ॥

होत तीनि बिधिके पुरुष सुनो क्षितिपाल दीर्घ दरशी औ प्राप्त कालज्ञ मतिमान ।
आनंद लहत ते न आपद लहत नेक लखत बिचारि जैसो तैसो करै सावधान ॥
होत है तृतीय दीर्घ सूची तौन मतिमंद आपद लहत न सकत आपनो कै ज्ञान ।
जैसे सरिता में एहि तीनि बिधिके हैं मीन पीन हीन दशाते लहे सो सुनो उपख्यान ॥

गुरुतोमरछन्द ॥

बहु मीन सरितासोतमें । परि रहे पूरित ओतमें ॥ कछु गारता मधिमें रह्यौ । मगमेल में कृशता गह्यौ ॥ सो दीर्घ दरशी देखिकै । यह सूखिहै अवरेखि कै ॥ पाठीन सबसों यों कह्यौ । इत बास योग न मैं चह्यौ ॥ मग सूखि है दिन चारि में ॥ केहि भांति चलिहौ धार में ॥ इत क्षीण जल लखि आइकै । बध करिहि धीबर पाइकै ॥ अब कह्यो मेरो मानि कै । कढ़ि चलो जीवन जानि कै ॥ है उचित करिवो शोचि कै । मतिमान की गति रोचि कै ॥

दोहा ॥

सुनतप्राप्तकालज्ञ इमिकहतभयो समुझाय । प्राप्तकाल लहिकै करबनो कछु उचित उपाय ॥
कह्यो दीर्घसूची वृथा शोच करत करि गौर । होनी सबयर होतिहै कौन फिरैबहु ठौर ॥
गमन दीर्घ दरशी कियो सुनि तिनके ए बैन । सरिता पूर प्रवाह परि पायो पूरण चैन ॥

बसुकलाछन्द ॥

दिन पांच सात । जब भये जात ॥ रवि किरण पूखि । मग गयो सूखि ॥ सो लखि निषाद । लहि सुख प्रमाद ॥ तहं जाल डारि । करयौ सुधारि ॥

दोहा ॥

तौनप्राप्तकालज्ञलखि करतभयो अनुमान । जालकोर गहि दशनते रहिगो बझो समान ॥
जालहिऐंचिसमेटि जबधीवन लगोनिषाद । तबहिप्राप्तकालज्ञतजि जाल लह्यो अहलाद ॥
जौन दीर्घ सूची रह्यो मरो तौन बझि जाय । ताते आगम शोचिकै करिबो उचितउपाय ॥
देशकाल परखत रहै निशुदिन बारह मास । जानि परे जामें कुशल सो गति करै प्रकाश ॥
चारों फलके अर्थको करत रहै अनुमान । सिद्ध होहि चारों यथा तिमि बिचरै मतिमान ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ सोरठा ॥

भीषम के ए वैन सुनि बोलत भे धर्मनृप । को जगमें मति ऐन तुम समान हे पिता मह ॥

जयकरीछन्द ॥

अब यह बूझत समय बिचारि । उत्तर तासु कहो निरधारि ॥ एक भूप कहं औसर पाय । घेरत बहुत शत्रु नृप आय ॥ एक आपु अरि जुरैं अनेक । तौ किमि थिरै पालि पण टेक ॥ जौन समय अति बिषम बिभात । असती मित्र शत्रु ह्वै जात ॥ शत्रु मित्रके अंतर मांह । करै कौन चेष्टा नरनांह ॥ बिग्रह कासों करै अभीति । कासों करै सन्धि गुणि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति ॥ नृप बलवानौ ह्वै असहाय । किमि जीतै अरिदल समुदाय ॥ तासु उपाय कहो हे तात । नहिं तुम सम वक्ता अवदात ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

तातकहे तुम प्रश्न यह तेहि आपदको धर्म । कहत सुनो जो सुखद अति करिबे लायक कर्म ॥ कबहुं अमित्रौमित्रहै मित्रन अरिकरिदेत । सोबिचार करि देश पति मति ह्वै रहै अचेत ॥ निज मित्रन हित लेइ करि करै अमित्रहिदूरि । निज पक्षिण पोषत रहै दान मान दै भूरि ॥ सन्धि लगावै अरिन में करिकै भेद उपाय । निज अंगिन में सन्धि पर लगन न पावै आय ॥ करै शत्रुते मित्रता मित्रहि अरि करि देत । अवशि लहत सो आपदायह आपद के हेत ॥ करै अमित्रहि मित्र नृप औसर परे बिचारि । बीति गए औसर अरिहि देत युगुतिसों टारि ॥

रोला छन्द ॥

प्रबल अरिको दाप लखि युग शत्रु मिलि ह्वै मित्र । करत बचिबे को युगुति निष्कपट ह्वै निह चित्र ॥ मिटे अरिको दाप तिनको उचित नहिं विश्वास । सुनो कहियत भूमि-पति इत पूर्वको इतिहास ॥ मूष अरु मार्जार को संवाद बनको जौन । होत भो बट वृक्षतर अब कहत सुनिये तौन ॥ रहो कानन बीच कछु बटवृक्ष अति कमनीय । चहुंदिशि ते लतन छाजित निविड़ अति रमणीय ॥ विहंग अगणित भांतिके तहं रमत बोलत बैन । मृगा आवत तासु तरते लहत अतिशै चैन ॥ पलित नामक मूष शतमुख बिवर करि तर तासु । भयो निवसत अति विचक्षण चपल लक्षण तासु ॥ बसत हो बट वृक्षपै मार्ज्जार लोमस नाम । गहि अनुच्छिन खात पक्षिण कृत अदक्षिण काम ॥ जात जाल पसारि व्याधा तहां सांझहि जाय । राति निवसत गेहमें फिरि लखत भोरहि आय ॥ रहत बझि जे मृगा तामें तिन्हें गहि लै जात । रहो अमरष करम जाको मरम नहिं सरसात । एक दिन मार्जार लोमस बझो तामधि पापि । परो व्याकुल कल्पनो करि मरण अपनो यापि ॥ बझो लखि अखुभुकहि अखु कढ़ि लगो चरण निशंक । परे आपद प्रबल खल पै होत मोदित रंक ॥ जाल बन्धन दण्ड पै चढ़ि लगो आमिष खान । प्रबल शत्रुहि बझो लखिकै हिये अति हरषान ॥ आइकै बटशाखपै तेहि समय ढूक उलूक । भरत भय मनु धरत निरखत करत भीषम कूक ॥ आइ उत मग रोकि बैठो नकुल गहिबो चाहि । ताहि क्षण हिय दाहि अखु रहि गयो एहि ओहि चाहि ॥ उभै शत्रुन देखि कछुक्षण शोकसों रहि ग्रस्त । भयो मनमें गुणत कैसे होइ आपद अस्त ॥ रहों इत तो खात कौशिक नकुल महि मगजात । जाल मधि जौ दुरौं तौ मार्जार खाइ अघात ॥

दोहा ॥

सब प्रकार नहिं बाचिबे की कछु दशा देखाइ । ऐसे आपदमें कियो चहिये बुधि व्यवसाइ ॥ जीवरहे लो जियबको करिबो उचित उपाय । बुद्धिमान तरिआपदा लहत पार सुखदाय ॥ तीनि शत्रु मम तीनि दिशि नहिं बचिबेकी राह । है उपाय इत एक अब साधक सीतानाह ॥ है स्वछन्द ए दोय अरि तीजो जो मार्जार । है ता पहं आपद परो प्रान घात उपचार ॥ है यहदोउ न ते प्रबल याढिग मोकहं जोहि । आइसकत ममनिकट नहिं नकुलउलूकौकोहि ॥ बन्धन काटि छोड़ाइबेको विधि याहि सुनाय । करौं मइत्री याहिसों तौ संशय मिटि जाय ॥ प्रकृतबिरोधीउभयजो होतआपदाधीन । मिलेलखत निज भलोतो करत बिरोधहि छीन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीतिज्ञनकीनीतियह है बिलार नीतज्ञ। अब डर तजि याके निकट चलिबो उचित अदज्ञ ॥
इतै रहत ए खात हैं औ आपौ बचिजात। जौ यह मूरखता करिहि तौ बधिजाइहि प्रात ॥
हैदृढ़एहिमार्जारकहं देशकालकहंज्ञान। ममभक्षण नहिं करिहि यह समुझिआपनो चान ॥
पण्डितअरिसों श्रेष्ठअति नहिंहितमूरखजौन। नीतिसमुझिपण्डित करतशठमनआवततौन ॥

सोरठा ॥

इबिधि शोचि वह मूष जाय निकट मार्जार के। बोलो बचन अदूख सीतारामहि सुमिरि कै ॥

चौपाई ॥

कछू दूरि रहि मूष प्रबीना। कहतभयो सुबचन अवलीना ॥ हे मार्जार राज मतिमाना। तुम कालज्ञ नीत बिद जाना ॥ हम कछु कहत तौन हित जानऊ। कहत काकु इमि मति अनुमानऊ ॥ है मम तुव जीवन बिधि जामैं। सो उपाय अब चहत कहा मैं ॥ बाझि परे न सकत निछुटाई। मोरहि बधी बधिक दुखदाई ॥ जो उपाय मम तुव बचिबेको। सो हम जानत सुख सचिबेको ॥ जौ तुम मोहि बधौ मति मोही। तौ हम बचव बचाउब तोही ॥ मम बिल ओर नकुल रिसराता। खान चहत ह्वै आतुर ताता ॥ तरुपर बैठि उलूक भुखाना। मोहि भोजन रुख राखि रुखाना ॥ इनते करो मोर तुम रक्षण। ए शठ मोहि न पावहिं भक्षण ॥ इनके भय मम मति भइ भोरी। करि नहिं सकत युगुति जति जोरी ॥ जौ तुम करऊ मइची मोसों। होइ अभै इनसों अरु तोसों ॥ शत्रु न बंचि बचैहौ बचिहौ। सानद प्रात नचैहौ नचिहौ ॥ हौ तुम परम प्रवीण बिचक्षण। जानत देशकाल को लक्षण ॥ अब मम मरे मरत तुम भाई। तुम मम हम तुम सखा सहाई ॥ बिना परस्पर रक्षण कीन्हे। मरत उभय जन शठता लीन्हे ॥

दोहा ॥

हित रक्षण करि परस्पर जीयब युगुति न आन। तरब आपदा आपगा नाविक नाव समान ॥
पलित मूषके बचन ए सुनि लोमस मार्जार। लहि जीवन आशा मुदित कह्यौ उचित व्यवहार ॥

चौपाई ॥ बिड़ालउवाच ॥

हे मतिमान साधुता भूषित। कीन्हे जाति बिरोध अदूषित ॥ तजि बिरोध मम जीवन ईछे। नीति बिधान गुरू सम शीछे ॥ लखि बर बुद्धि बिचार तुम्हारे। हम प्रसन्न हिय आनद धारे ॥ नकुल हरित नामक बलहीना। चन्द्रक नाम उलूक मलीना ॥ ए डरि भगैं न तुम ढिग जूटैं। जौ हम मित्र जालसों छूटैं ॥ तुम मम सखा सहायक भाई। करो शीघ्र करतब सुखदाई ॥ अब भय त्यागि लागु मम धोरे। तुम सम दुतिय सुहित नहिं मोरे ॥ त्यागि नकुल कौशिकके भीतहि। ह्वै निश्चिंत छोड़ावऊ मीतहि ॥ मारजारके बचन सोहाए। सुनि मूषक बोलो मनभाए ॥ सत्य मित्र मोहि कस पण करिकै। अभय दान दे दृढ़मति धरिकै ॥ तौ तो निकट आइ ह्वै निरभय। काटब जाल रदिहि अरि निरदय ॥ गुणि मूषकके बचन बिधाना। बोलत भयो बिलार सयाना ॥ शीघ्र आउ हे सखा सयाना। प्राणदानि प्रिय प्राण समाना ॥ को शठ प्राण दायकहि पीड़िहि। दैवहि बिसरि ज लोकहि ब्रीड़िहि ॥ हम तुव बुद्धि प्रसाद न भीवत। अब आपुहि जाने जग जीवत ॥ संकट ते छुटि तो हित चाहब। जीवन प्रभृत सुप्रीत निबाहब ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

उपकारीके सरिस नहिं प्रत्युपकारी जौन । बिन कारण उपकार जो करत श्रेष्ठ अति तौन ॥
तजि संशय आयो निकट करो मित्र उपकार । हम सुमित्र मेइब तुम्हें पालि प्रीति बेवहार ॥
सुनि बिलारके वचन ए देशकाल अनुमानि । ह्वै निशङ्क मूषक गयो तास पास हित जानि ॥

बरबीर छन्द ॥

तहं मूष जाय । संशय बिहाय ॥ सुत सम सचाय । पितु सरिस भाय ॥ बसि तासु गोद । फिरि सकल कोद ॥ कीन्हो बिधान । बनि प्राणदान ॥ यह मिलनि देखि । अचरज परेखि ॥ अवसर बिसेखि । हिय हारि रेखि ॥ रहि घरिक मूक । फिरि करत कूक ॥ गो उड़ि उलूक । भरि हिये दूख ॥ नहिं लहब जानि । हिय आनि ग्लानि ॥

दोहा ॥

जानि तिन्हें मतिमान अति परम देशकालज्ञ । आशफास फसि थिरि रह्यो नकुललालची अज्ञ ॥
पलितललितसुखलोमसहिकियोहलितसुखसिन्धुखलितपंगुकहंचकितजिमिचाहिचढ़ायोबिन्धु

बीरबान छन्द ॥

है इमि आनंद ॥ मूषक मानंद ॥ लाग्यौ काटन । बन्धन ठाटन ॥ हरए काटत । लघु गति ठाटत ॥ इत उत जोवत । फिरि परि सोवत ॥ लोमस जालस । ताकहं सालस ॥ लखि ह्वै दोचित । बोलत शोचित ॥ मूषक आरज । करु तुर कारज ॥ मोहिं भितावत । राति बितावत ॥

दोहा ॥

दुखद जाल कहं शीघ्र अब काटु मित्र मतिमान । भोर होनचाहत बधिक आय करिहि गतप्रान ॥
लोमसके ए वचन सुनि बोलो पलित सुजान । तात देशकालज्ञ हम मति भय गहौ महान ॥

चौपाई ॥

तुरता करण कहो मति आरज । होत भलो नहिं तुरता कारज ॥ बिना काज लहि कारज कीन्हे । होत अनर्थ अहित बिनु चीन्हे ॥ समय लहे बिनु काटे बन्धन । तुमते मोहिं होइ भय बन्धन ॥ ताते शुभद समय हम परखत । थिरता लखि तुम नाहक धरपत ॥ जब हम व्याधहि देखब आवत । तब बन्धन काटब भय पावत ॥ तेहि लखि मुक्त भूरिभय पैहौ । लै निज जीव तुरित कढ़ि जैहौ ॥ दौरि भागिबो तजि मम धरिबो । तुमकहं जानिपरी निज मरिबो ॥ निज रक्षण तजि कारज दूसर । करत देखि है शिरपर मूसर ॥ जब तुम भीति जालते कढ़िहौ । आतुर भागि वृक्षपर चढ़िहौ ॥ तिमि लखि ताहि नकुल भय पाइहि । अरु तुव कढ़ब देखि भगि जाइहि ॥ तब हम तुरित जाब बिलमाहीं । सुचित रहौ कछु संशय नाहीं ॥ इबिधि मूषकी बाणी सुनिकै । लोमस कहत भयो इमि गुणिकै ॥ तात कहे तुम कारज जैसो । नहिं सत मित्र करत हैं तैसो ॥ मति हमते निज कहं भय मानो । निज सम गुणो न असती जानो ॥ मम तुव भलो होइ जेहि कीन्हे । सो अब करो शीघ्रता लीन्हे ॥ मम उपकार औशि जो करिबो । तौ मति गहौ गहरता धरिबो ॥

दोहा ॥

जौन औशि करतव्य है तौन शीघ्र करतव्य । गहर पियत करतव्यके रसहि वत्स जिमि गव्य ॥
जिमिजिमिबीतति रजनितिमि ममजियसुखतजात । ताते दूषतयहि दशागहत न नीकीबात ॥
हम कीन्हे अज्ञानते जौन पूर्व अपराध । सुधि मति कीजै तौन अब करि सुमित्रता साध ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाम छन्द ॥

लोमस जौन बोलो तौन । सुनि वह मूष भाष्यौ रूप ॥

दोहा ॥

सुनो मित्र पर सिद्ध यह अरथीलखत न दोष । निजरक्षण विधिसाधिसब करत औरकोपोष ॥
आपुहिरक्षत रहत नहिं शत्रुहि करिकैमित्र । सोअपथ्यभोगीसरिस नाशलहतनहिं चित्र ॥
काहूको कोउ मित्र नहिं सेवक सखा न स्वामि । सब अधीन हैं अरथके अर्थहि सदा नमामि ॥
अरथ अर्थसों बरधत यथा पीलसों पील । बिना अर्थ साधत अरथ सो नर दैवी शील ॥
अर्थीकारजसिद्धिलों करत रहत मनुहारि । काजसधेकरतहि गुणत सहजयथाजनचारि ॥
सिद्धिहोइनिजकाजतब कारज करीअशेष । कारजआरज सुबुधिको साधब उचितविशेष ॥
तातेंचिन्ताकरहुमति तबकाटब यहजाल । हमकहं तुमकहंविघ्न नहिं प्रापिहि जबनेकाल ॥

लीलावती छन्द ॥

लोमस पलित कहत हे एहि बिधि तौ लगि भयो भोर जू सुनिये । रजनी भई वितीत सीत तजि डरो बिलार जान बध जुनिये ॥ परिघ नाम चांडालो तेहिक्षण लीन्हें संग श्वान अरु शुनिये । आयगयो सन्मुख लख बदले अतिदुरमुख दुखदायक दुनिये ॥

दोहा ॥

देखिताहि लोमस डरपि बोलो आरतबैन । तात आय पहुंचो बधिक मोसन भयो अचैन ॥
देखिताहिभागोनकुल तब तेहिनिकटनिहारि । जालग्रन्थिकाटतभयो मूषक समयबिचारि ॥
जाल कटत सटपट निकसि भागोझपटिबिलार । मूषजातभो बिवरमधि डारचढ़ो मार्जार ॥

काव्य छन्द ॥

देखि कढ़ि निजजाल घटिकलो अति पछितानो । ब्याधा जाल समेटि गयो घर विस्मय सानो ॥
महाभीतते निछुटि बिलार हिए हरषानो । समुझि मूषको संग समो गुणिगुणि पछितानो ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

आयो सन्मुख मूषके तब बिलार अनुमानि । प्रीत भरे शब्दन लगो कहन चातुरी आनि ॥ कहन चातुरी आनि लगो बहुविधिकी बातै । बातै कहत बनाय कहत निज हित की घातै ॥ घातै करिबो जानि जाल जोरत मन भायो । मन भायो हित सरिस साधु बनि सन्मुख आयो ॥ भाई मूषक आव अब मिलिये अङ्क लगाय । हम तुम बाचे अग्निसों तुम सुबुद्धि व्यवसाय ॥ तुम सुबुद्धि व्यवसाय बचे अब आनंद कीजै । कीजै विशद बिहार चार तारणको लीजै ॥ लीजै अब गति तौन जौन साधुनकी गाई । गाई मम गति जौन तौन हम त्यागे भाई ॥ भाई मूष निशंक अब रमु कुंजनमैं पैठि । सुखकरिबेकी समय कत रहे बिवरमैं बैठि ॥ बैठि बिवरमैं रहो कहा कढ़ि बाहेर आओ । हम तुम संग रमैं सुकरम फल पाओ ॥ पाओ अति ऐश्वर्य्य डरैं तुम सबै अदाई । सबै अदाई दहैं रहैं संग सिगरे भाई ॥ मोरी तजि विश्वास करि जोरि मइची पर्म । जीवनदान कराय करि अब कत आनत भर्म ॥ अब कत आनत भर्म मर्म का हिय मैं आनै । आनै अधम बिलार सरिस का मोहुहि जानै ॥ जाने निशिरहि संग कछू असती मति मोरी । मोरीकों मति तोरि भई जाते अति भोरी ॥

सोरठा ॥

पिता पुत्र हित मित्र हौ मम विश्वेबीस तुम । गहे कौन गति चित्र मित्र न जाते मिलत कढ़ि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनिबिलारके बैन श्रुतिचैनद भैनद दुखद । कह्यो मूष मति ऐन हम तुम मिच न कबहुंके ॥

गमक छन्द ॥

मिचनर । शचुकर ॥ जाहिकहि । नामनहि ॥ नेमधरि । संगकरि ॥ चेतगहि । भेदलहि ॥ सधबिधि । साधिगिधि ॥ मिचअरि । चीन्हिचरि ॥ दूरिलग । सोधिमग ॥ जाहिसुख । ताहिदुख ॥

दोहा ॥

मिचरूप कछु शचु अरु शचुरूप कछु मिच । जानि परत पाये समय जो पबिच अपबिच ॥
सुनो मिचता शचुता अमिट नाम नहिं होत । करत शचुता मिचता कारण सरिस उदोत ॥
तौलगि निबहत मिचता जौलगि स्वारथ आस । स्वारथकी आशाछुटे कौन स्वामिको दास ॥

छप्पय ॥

मिचशचु ह्वै जात शचुह्वै मिच बिराजत । स्वारथके पर संग दशा सब स्वारथ साजत ॥
बन्धु सखा सम्बन्ध स्वामि सेवकके भावहि । राखत सदा समर्थ अर्थ स्वारथ दै चावहि ॥
तिमि कारणबश मम भई क्षणक मइची चिच लगि । वह समय भयो गत चहत कत स्वारथ साध्यो मोहिं ठगि ॥

दोहा ॥

प्रबलशचुकहंमिचगुणि भूलिकरत बिश्वास । ताकहंकुशल न कबहुंसो औगुणि लहत हैनास ॥
नहिंबिश्वासनयोगकर नहिं करियेबिश्वास । मिचनहुमेंनहिंकरिय अति बिश्वास प्रकास ॥

रामगीती लक्षण छन्द ॥

हम बचे तुमव्यवसायसो तुम बचे मम बल पाय । तहं मिच हे अब मिच नहिं अब गहे पूर्व सुभाय ॥ तुम क्षुधित ह्वै इत आइकै मोहि मिच कहि कहि मोरि । करि बिवरबाहेर खान चाहत पीठि पांजर तोरि ॥ सुनु आत्मरक्षण करब सबकहं उचित सुचित लगाय । मणि हेम धन दै ग्राम तजि कढ़ि देश तजि बढ़ि जाय ॥ तुम मिचता प्रतिपाल हौ गहि खायगो तुव भाय । नहिं शचु के संग रहे कबहुं कुशल जानब न्याय ॥ सुनि मूषके ये बचन लोमस छपकि महिमें लागि । बहुभांतिके करि शपथ लागो कहन अति अनुरागि ॥ मम मिच परम कृतज्ञ तुम मम किये अति उपकार । हम आत्मरक्षण चहत चलि तुवबुद्धिके अनुसार ॥ तुम परमधर्मी गुणी सुकृती सुजन अति मतिमान । यह समुझि राखन चहत तुमसों मिचता सविधान ॥ हम सुज्ञानी धर्मबिद नीतज्ञ सदयाचित्त । तजि दये हिंसा लए दृढ़व्रत जानि जगहि अनित्त ॥

दोहा ॥

सुनि बिलारके बचन ए लखि छपकनि अनुमानि । मूष मूषभुकसोंभयो कहत आतुरी आनि ॥
तू हिंसक चाण्डाल शठ नाहक बकत बनाय । कौन बिशासै तोहि कछु कूटत जाति सुभाय ॥

हरिगीतीछन्द ॥

सुनि मूषके ए बचन लोमस हिये अमरष आनिकै । जहं रहो तहं सों झपटि बिलपै गयो गहिबो जानिकै ॥ चलि मूष गो निज बिवरमधि रहि गयो तब अरसाइकै । हिय गुण्यो कारज सधो नहिं निजनीति इमि सरसाइकै ॥ इमि एक सुबुधी बहुत अरिसों लहत जयपण ठानिकै । जिमि पलित मूषक नीतिबिधि करिनीति बिधि अनुमानिकै ॥ यह ज्ञानधर्म स्वरूप तुमसों कहे बिधि उपचारि कै । लखि समय अरि हित मध्य बिचरब उचित नीति बिचारिकै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

राम नाम सुमिरत रहै गहै नीति व्यवहार । जीतै अगणित अरिनकहं लहै आपदा पार ॥

स्वति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि आपदधर्म्मे मूषकबिलार सम्बाद बर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय: ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

एहि बिधि मूष बिलारकर सुनि इतिहास अनन्द । फिरि भीषमसों कहत भे धर्मभूप कुलचन्द ॥

अपतालिक अपरान्तिकाछन्द ॥

आपु पितामह नीति सिखायो । सो हम आनददायक पायो ॥ शत्रुनको बिश्वास न गायो । भूप चरै किमिकै मनभायो ॥

भीष्मउवाच ॥ सवैयाछन्द ॥

सुनु भूपति भइ पूरब जो गति ब्रह्मदत्त भूपतिके गेह । पूजनि नाम शकुनि अति चातुर नर पति पाले पूरि सनेह ॥ सो सर्बज्ञ तत्त्व सब जानत नर सम बोलै बचन अबेह । हो सुत तासु ताहि नृपके सुत बधो निरखि तेइ कीन्हो तेह ॥

चिरभंगीछन्द ॥

देखि मरो सुत अतिदुख पूरित रोदन करत कही इमि बानी । नहिं बिश्वास क्षत्रियनको कछु निरदय हिंसक अति अभिमानी ॥ पर अनहित निजहित करि डारत कुकरम करत न गहत गलानी । इमि कहि नृप सुतके चख नख करि दूरि रही बसि नहिं नियरानी ॥

दोहा ॥

फूटि आंखि नृप सुवनकी सोर भयो घरमांह । सुनत तुरित आयो तहां ब्रह्मदत्त नरनांह ॥ पत्नीके पुत्रहि निरखि अरु निजपुत्रहि देखि । निज कृत फल पावत भयो इमि मान्यो अवरेखि ॥

बक्र छन्द ॥

सुजान भूप या बोलो । न खेद नेकही ओलो ॥ डरै कहा न मैं भोलो । फिरो थिरो नियो जोलो ॥

दोहा ॥

उचितदण्ड मम सुतहि दै कीन्हो मोहिं अदोष । आउ अभय बसु हम नहीं गह्यो सुनेको रोख ॥

पत्निरुवाच ॥ पद्मावती छन्द ॥

करिकै अपराध नहीं उचितै सुचितै बिश्वास करै अरिको । नहिं बैर बिसारत हैं अरि जे अरि बंशज ते यह लै हरिको ॥ बिश्वास करै अरि को जन जो नहिं बाचत सो कबहूं घरिको । अरि के बिश्वासहिमें डरको घर है न नशै तेहिमैं परिको ॥

दोहा ॥

ताते एहि कांपिल्लपुर अब नबसब नरनांह । हम पत्नी निबसब निबिड़ बन वृक्षनकी छांह ॥

ब्रह्मदत्तउवाच ॥

सुतबध लखि फोरे चखहि तोहि नलगोकलङ्क । बैरभाव हम नहिं गह्यो पूजिनि निबसु निशङ्क ॥ एहिप्रकार बहुबार कहि भूप दयो बिश्वास । यापि दोष बिश्वासमैं पूजिनि कियो न वास ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

कथि विश्वासमैं दोष पूजिनि उड़ि अनतै गई। भूप कियो अपसोस सुमिरि तासु मतिमानता ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शांति पर्वणि आपद्धर्म्मेब्रह्मदत्तपूजिनिसम्वादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

धर्मीनृपके राज्यमधि तस्करको उतपात। होइ महा तब नृप करै कौन नीति अवदात ॥

भीष्मउवाच ॥

नृप यह आपद तस्करी सुनो इहां की नीति। पूरबको इतिहास यह आपद नाशनि रीति ॥

रोला छन्द ॥

पूर्व शत्रुञ्जय रह्यो सौवीरपुरको भूप। पाय आपद तस्करी सो भयो पीड़ित रूप ॥ जाय भारद्वाज सुनिपै भयो बूझत तौन। जुगुति जाते होइ प्रगटित उकुति सुअरथमौन ॥ किमिअलब्धहि लहै लब्धहि करै वरधित भूरि। करै बर्धित को सुपालन नीतिविधि किमि पूरि ॥ पालितहि किमि नमित राखै समित होइ न भूप। कहो देश विचारि सुनि उपदेश परम अनूप ॥ भूपके सुनि बचन बोले सुसुनि भारद्वाज। सुनो भूप उदण्ड साधत दण्ड सिगरो काज ॥ रहै परिखत प्रजन भृत्यन बन्धुबर्गन रोज। छिद्र लखि नहिं क्षमा साधै दण्ड देइ सओज ॥ दण्ड नीतिहि बुध सराहत दण्ड राखत धर्म। दण्ड पालत प्रजन सब क्षण दण्ड लक्षण पर्म ॥ दण्ड भय हित रहत हित अरि सेइ चाहत छाह। दण्ड दायक नृपति को सब जगत पूजत बाह ॥

दोहा ॥

मंत्रपराक्रमसमर अरुकवज्ञं पराजयरूप। समयदेखि करिबोनृपहि शीघ्र नीति अनुरूप ॥ मंत्र चूकि आपत्य लहिहोइ शत्रु आधीन। पाणिजोरिअति नमित ह्वै जलपैनृपति प्रवीन ॥ चखजल ढारै नीति गुणि बोलै आरतबैन। दै बिशास आपुहि बचै निकट बसै मतिऐन ॥ समय पाय शत्रुहि बधै सधै आपनो काज। सैन जोरि ह्वै प्रबल बसि करै पूर्ववत राज ॥

द्विगकमलछन्द ॥

इविधि। सुसिधि ॥ नृपहि। लिपहि ॥

मुग्धविलरसछन्द ॥

बक रूप रूपइ अर्थ। हरि रूप भूप समर्थ ॥
निज छिद्र राखइ गोपि। पर छिद्र देखइ चोपि ॥

बर्त्माछन्द ॥

सङ्कत्यागि। अङ्कलागि ॥ भूपराति। सोचनाति ॥

संमोहाछन्द ॥

आनै मै दीबो। आपै लै लीबो ॥ धै राखै जीमें। नाखै हीमें ॥

दोहा ॥

पिता पुत्रकै बन्धु जो बांधै अपनो अर्थ। बधै ताहि नृप बरु तदनु रोवै सोवै व्यर्थ ॥
रहै सदा चैतन्य नृप रहै विचारत मंत्र। चार चक्षु करि जग लखै काज न करै स्वतंत्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा अमात्यन धर्मयुत राखै भाखै नीति । मृदुता लखिते अभयह्वै गहत कापटी रीति ॥
सुनिसुनीतिनृपती तिगुणि धर्मभूपसुखपाय । फेरिबरधिकृष्णहि किए प्रश्नहि कृष्णहिध्याय ॥

झूलनाछन्द ॥

पर्म जो धर्म सो गुप्त जब होय गो धर्म हत हीन जग जीव ह्वैहै । पूर्व की लीक सों गूर्वता त्यागि है भूप तजि नीति शुभ रीति खैहै ॥ लोभबश मोहबश क्षोभी नर भूलि यर कीर सम पीर लहि धीर खैहै । क्षीणमति दीनगति पाइ यहि भांतिकी चेति है तौ युगुति कौन ज्वैहै ॥

दोहा ॥

बंचकता लगि हैं करण आपुस में जन सर्व । पीड़ित ह्वैहैं बिप्रगण बर्षा होइहि खर्व ॥
लहिऐसी आपद दुसहनरकिमि लहिहैपार । कहोपितामहपरमपटुपरउपचर उपचार ॥

सावित्रीछन्द ॥

हीमैं मौदै राखे । ऐसे प्रश्नै भाखे ॥ सो कानै दै लै कै । भीष्मौ बोले जैकै ॥

भीष्मउवाच ॥ गोमतीछन्द ॥

धर्मशास्त्र जे सुनैं । राम राम ही गुनैं ॥ कालते सभय रहै । नामते अभय रहै ॥

प्रमाणिका छन्द ॥

रमेशको सदा जपै । महेशको हिये थपै ॥ अभै रहै प्रभै महै । सुखै लहै सुजै चहै ॥

दोहा ॥

देवाराधन ते मिटत भूपति सकल कलेश । देवाराधन ते बढ़त धृतिमति ज्ञान बिशेश ॥

तोमरछन्द ॥

इत भूप और बिचार । सुनु तौन नीति उदार ॥ युग चारि जे अनकूल । क्षिति नाथ ता कर मूल ॥

बिराटछन्द

राजा जो गति धारि कै चरै । सोई लै परजा सदा अरै ॥ ताही को सम को समौ लसै । तैसोई सबके हिये बसै ॥

दोहा ॥

समय पाय पलटै प्रकृति बसति दीनताआय । दीनदशा लहि करत सब हीन काज दुखदाय ॥
अचपूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृप तौन । कौशिक अरु चाण्डाल सों भई बारता जौन ॥
त्रेता द्वापर की रही सन्धितासु गति जानि । नृप भइ द्वादश बारषी अनावृष्टि दुखदानि ॥
रह्यो अवर्षण नव बरिस भूप सुनो तेहिकाल । अस्थिमई ह्वै मेदिनी भई महा बिकराल ॥

महिखरीछन्द ॥

मुनि त्यागि निज निज थान इत उत भ्रमत अति व्याकुल भए । लड़ि मरे अगणित गृही पुर अरु नगर निरजन गनिगए ॥ अति भई भीषम रूप भूमि न भूप सब भाषत बनै । तरु भए बिनु रस पात गात सुजात जीवन को गनै ॥ तेहि समय विश्वामित्र ऋषि अति क्षुधित ह्वै पीड़ित महा । उठि भए भ्रमत अहार खोजत कछु अहार मिलै कहा ॥ मुनिदूरिलों भ्रमि फिरे नेकु अहार नहिं कितहूं मिलो । अति क्षुधित आरत समित भे नहिं जात कहि नेकहूं हिलो ॥

दोहा ॥

लखि ऐसी आरत दशा लखे बिपिन में तत्र । अति मलान चांडाल को गेह अस्थिचय यत्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि चलि ताके गेहमधि गिरे दीनगति पाय। तहं लखि जंघा श्वानकी धीरज धरेसचाय ॥

रोला छन्द ॥

किए सुनि अनुमान मनमें होइ कछु अंधियार। श्वान जंघा लेइ भागों करों जाइ अहार ॥ इतेमें चाण्डाल बोलो परो को इत आय। वेगि नाम बताउ नातरु देत आयुध घाय ॥ सुनत सो डरि कहे सुनि मैं सुमिनि विश्वामित्र। नाम सुनि सो निकट गो हिय गुणत बात विचित्र ॥ दूरिते करि दण्डवत उठि खरो रहि करजोरि। कह्यो सुनि तुम आगमनते दशा जागी मोरि ॥ आगमनको हेत कहिये देत आनंद मोहि। सुनत सो भगवान ऋषि इमि कहे ताकहं जोहि ॥ क्षुधित हम अति भए आरत मिलो कछु न अहार। श्वानजंघा देहु तौ हम करैं भोजन चार ॥ सुसुनिके सुनि बचन सो चांडाल हियरे पीड़ि। जाय नियरे कह्यो सियरे कौशिकहि इमि ईड़ि ॥ उग्रतपकृत परम प्रभु भगवान ऋषि तुम ख्यात। छोड़ि धीरज कहत कत इत महा अनुचित बात ॥ कहे सुनि हम महापीड़ित कढ़न चाहत प्रान। दशा यहि नहिं उचित भक्ष्या भक्ष्यको अनुमान ॥ श्वपच बोलो ब्रह्मऋषि सुनि विनय मम सुनि लेहु। महातप निज श्वानजंघहि खाइ खोइ न देहु ॥ श्वान मलिन श्वगालते अति मलिन जंघा तासु। ताहि भक्षण चहत प्रभु तुम राखि जीवन आसु ॥ महा कुत्सित कर्म त्यागव धर्मको सुनिराय। और भोजन हेरि लीजै ग्राम जनपहं जाय ॥ कहे सुनि नहिं औरभोजन मिलत हारे हेरि। क्षुधा काढ़न चहति तनते प्राण पीड़ामेरि ॥ पाय यह गति नहिं अभक्ष्यहि किये भक्षण दोष। विप्र अग्नि समान भक्ष्य अभक्ष्य भक्षण तोष ॥ श्वपचउवाच ॥ पञ्च सुनखी पञ्च विप्रहि भक्ष्य पञ्चहि त्यागि। श्वानभक्षण करहु मति द्विज धर्म ध्वंसन लागि ॥ यथा शास्त्र प्रमाण करिबो उचित तुमकहं रोज। पूर्व पूर्वज तजे सो मति करो अधरम भोज ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ क्षुधित कुम्भज मांस खाए असुरको जिमि पूर्व। क्षुधित हम तिमि श्वानजंघहि खात दोष न गूर्व ॥ श्वपचउवाच ॥ विना जाने मांस खायो असुरको मुनिराज। श्वान लखि तुम खान चाहत महा अनुचित काज ॥ इविधि श्वपच बुझाय हारो सुसुनि मानो नाहिं। अचलमन करि लाय राखे श्वानजंघामाहिं ॥ करत वार्ता श्वपचसों उठि खरे ह्वै मुनिराय। झपटि कै लै श्वानजंघा भगे आनंदछाय ॥ विपिनि में परिपाक करिकै राखि पचन पाह। लगे अरपण देव पिचन सुनो भूपपनाह ॥ देव पिचन अरपि कीन्हें रचो जो व्यापार। इन्द्रसों लखि डरत भे गुखि जगतको संहार ॥ दए साशन लगे वर्षण मेघ महि पै वारि। भयो पूरित आप जगको ताप दाप विदारि ॥ औषधी फल मूल प्रगटित भए सिगरे अन्न। समो लहि सुख लहे दुख नहि प्रजा भे सम्पन्न ॥

दोहा ॥

फिरितपनिधिकौशिकलहे तपकरिपूरणसिद्धि। आपदगतमतिमानइमि बुधिबलसाधतवृद्धि ॥
दैव दैव करि परि हरत मरिजे निपट नदान। बुद्धिमानव्यवसायकरि साधतकार्य्य महान ॥
समय परे जैसे बनै तैसे रक्षै प्रान। प्राण रहे हरि भजनते सुधरत उभय विधान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिगोकुल नाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि आपद्धर्मे विश्वामित्र श्वपचसम्वादो नाम चतुर्थोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

शरणागतके पालिबे को जो धर्म अहीन । सो कहिये मम पितामह जाहिर धर्म धुरीन ॥

भीष्मउवाच ॥

प्रश्न कियो नीको निपट सुनो युधिष्ठिर भूप । शरणागतके पालिबे को अतिधर्म अनूप ॥
अब पूर्वइतिहास हम कहत तौन अभिराम । कहे भूप सुचकुन्दते भार्गव बर तपधाम ॥

सोरठा ॥

जोसुप्रश्न अवनीप तुम हमसों कीन्हें सरुचि । सो सुचकुन्द महीप मुनिवर भार्गवसों कहे ॥
सुनि भार्गव मतिऐन कहे सुनो सो भूपमणि । जो दायक अतिचैन सुने गुणे पातक हरण ॥

जयकरी छन्द ॥

यह सुप्रश्न सुनि अति अभिराम । कहत भए भार्गव तपधाम ॥ निज सुप्रश्नको उत्तर बेश । सुनो सरुचि सुचकुन्द नरेश ॥ रहो एक ब्याधा मतिहीन । कालो काल सरिस अति पीन ॥ बनमें जाय बिहंग बझाय । क्रय करि लेइ दाम बधि खाय ॥ यहि प्रकार करि पाप अमेय । बितयो बहुत दिवस बन सेय ॥ फिरो एकदिन बनमें थीति । मिलो न बिहंग गयो दिन बीति ॥ बीतत दिवस घेरि चहुंओर । बारिद बरषे बारि अथोर ॥ तेहिक्षण ह्वै ब्याकुल बिहगाद । सीतारत ह्वै लह्यौ बिषाद ॥ फिरि मिटिगो सब जलद पसार । उयो कलानिधि प्रभा अपार ॥ ब्याधा कपत मझावत बारि । चलत भयो थल अजल निझारि ॥ मगमें तहां कपोती एक । भीजे पक्षण साहस नेक ॥ थल गहि बैठि रही लखि ताहि । लयो उठाय मोद अब गाहि ॥ मर्ण दशा कहं प्रापत आप । औरहि गहिबेको अतिथाप ॥ ब्यालगलस्थ भेक जेहि भाव । किमि न गहन चाहत गहि चाव ॥ पिंजरमध्य कपोतिहि डारि । गिरत उठत गो सुथल निहारि ॥ वृक्ष तरे हो निरजल ठौर । तहं गिरिपरो मृतककी डौर ॥ दोहा ॥

बिरहाकुलतेहिवृक्षपर ब्याकुलबैठिकपोत । कहतभयोअतिदुखमयो बचनबिपितिबसहोत ॥

कपोत उवाच ॥

अजौ प्रिया आई नहीं रही कहां केहिहेत । बात बायुबस मरी कै परी कहूं हतचेत ॥
बिना प्रिया जीवन वृथा ब्यथा होति मनमाह । कामानलगत पुरुष कहं नारी नदी पनाह ॥

बरवै छन्द ॥

गृह बन सम बिनु गृहणी गृहणी काम । तिय पति प्रिय असवृहणी दायक काम ॥
नहिं गृह गृह गृह गृहणी गृहणी मोद । गृह बसि हिय गृह गृहणी गृही बिनोद ॥
चित्रांगी प्रियबैनी आयत नयनि । मम हिय शय्या शैनी चौरनि चैनि ॥
मन रंजनि यहि रजनी आवति जौन । तो बिनु सब सुख सजनी जीवन कौन ॥

दोहा ॥

धर्म कर्म सुखशर्म की साधक आनंदखानि । प्रिया भार्य्या कित रही हाय परत नहिं जानि ॥
यहिबिधिके निजसुपतिके सुनिकै बचन अनन्य । पिंजरस्थ पक्षी कही जानि आपुकहं धन्य ॥

चौपाई ॥

हे पति हमैं गहे यहव्याधा । येइ नितिइहैवृत्ति अवराधा ॥ आरतदशा पाय यहि क्षणमें । तरुतर पस्यौ मरन गुणि मनमें ॥ तरु अधीश तुम हौ एहि ठाईं । अब यह तुव शरणागत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साईं ॥ शरणागत को पालब सुकरम । परउपकार करब अति सुधरम ॥ है पति सुनो अतियको पूजन । धर्म गृहीको सुवचन कूजन ॥ अतिथिन पूजि मोद सरसावत । सो उत्तम उत्तम पद पावत ॥ निजशरीर को शोच न कीजै । आइ बियाधहि आनंद दीजै ॥ ऐसे बचन प्रियाके सुनिकै । सुबुधि कपोत हियेमें गुनिकै ॥ तुरित उतरि तरुके तर आयो । टेरि बियाधहि वचन सुनायो ॥ हे खगाद अब शोच न करहू । दीनदशा तजि धीरजधरहू ॥ तुम एहि समय शरण मम पाए । इमि मानहु मनु निजघर आए ॥ निजहित कहौ करैं हम सोई । अतिथिहि पोषब परम निकोई ॥ सुनि अतिप्रिय कपोतकी बानी । ब्याधा कहत भयो मनमानी ॥ एहिक्षण सीत देत दुख भारी । उचित उपाय करो उपकारी ॥ बात बियाधा के ए सुनिकै । उड़ो बिहंग हियेमें गुणिकै ॥ जाय अगिनि करमीके घरमें । लै सु अगिनि आयो तेहियरमें ॥

दोहा ॥

कछुईंधनधरिअगिनिधरिपक्षआपनोराखि । बारितपायोबधिककहंअतिप्रियसुबचनभाखि ॥
अगिनितापितनतपितकरिसीतभीतकरिभंग । कह्यौ बिहगसोंबिहगहा अबमैंक्षुधितबिहंग ॥

सोरठा ॥

सुनिकपोतहाकेबैनहंसिकपोतइमिकहतभो । मम गृह संग्रह हैनहमपक्षीउड़िफिरिचरत ॥
इमिकहिधरिकबिसूरिजानिक्षुधारतअतिघतेहि।महाशोचसोंपूरिफिरिधरिधीरजकहतभे ॥

रामगीति छन्द ॥

ऋषि देवता पितृनको यह सुने सम्मत पर्म । जग आये पूजन अतिथिको है गृहिनको अति धर्म ॥ तन आपनो हम देत भोजन तुम्हैं लीजै तौन । मन आपने मति खेद कीजो अमर जग में कौन ॥ इमि भाषि पक्षी भांति अच्छी अगिनि कहं फिरि बारि । करि पांच परदक्षिण धसो रघुबरहि हियमें धारि ॥ तेहि देखि प्रतपत अगिनिमें बिहगाद पूरो खेद । लखि तासु सुधरम अतिथ पूजन प्रगट भो निर्बेद ॥ गुणि निन्दि अपनो कर्म नीति को कियो मनते त्याग । मनमें कपोतहि गुरु जान्यौ गह्यौ दृढ़ बैराग ॥ गहि कपोतिहि छोड़ि दीन्हो करत खेद प्रलाप । छुटि कपोती बिना पति जग जिअब जान्यौ पाप ॥ करि पांच परदक्षिण सबिधि धसि जरी पावक मांह । तन त्यागि गहि तन दिव्य देखत भई अपनो नांह ॥ सुर रूप बैठि बिमान पहं सुरनाथ सरिस बिभात । तहं जाय बैठी बामदिशि अतिप्रभा पूरित गात ॥

दोहा ॥

निरखिकपोतीकोमरण भरिअतिशैनिरबेद । मोहत्यागितेहिबिधिमरणगुन्यौव्याधगहिखेद ॥
चितै तत्व रजनी बितै थितै ज्ञान घनसार । तितै चैलो अतिवन जितै तितै मोह परिवार ॥
दूरजाइबननिबिड़मधि दावालगोनिहारि । व्याधातुर तेहिदिशिचलो निश्चैमरणबिचारि ॥
जाय दवामधि धसि मरो राम राम रटि लाय । उपकारीकोसंग लहि लह्यौ स्वर्गसुखदाय ॥
यहिबिधिलोंशरणागतहिपालबउचितअनोत।जिमिव्याधहिशरणागतहिपाल्यौसरुचिकपोत॥

सोरठा ॥

पायो स्वर्ग कपोत पालि बधिक शरणागतहि । दिव सागरको स्रोत शरणातको पालिबो ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिगोकुलनाथ कबीश्वरात्मजेनगोपीनाथेन कबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिआपद्धर्मे ब्याधकपोतोपाख्यानोनाम पंचमो ऽध्यायः ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

मिटै पापको दाप किमि कहिये सो उपचार । यह सुनिकै भीषम कहे सुनो भूमिभरतार ॥

भीष्मउवाच ॥

अब पूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृप तौन । जनमेजय क्षितिपति रहे तो पूर्वज मतिभौन ॥

हरिगीती छन्द ॥

तेहि पाइ कारण भई घेरत ब्रह्महत्याआइकै । नृपऔशि भाबी होति है नहिं टरति औरुर पाइकै ॥ तेहि त्यागि दीन्हे बिप्र अरु उपरोहितौ अघ देखिकै । तब राज्य तजि कढ़ि गयो बनमैं भूप अघ अवरेखिकै ॥ तहं पेखि शौनक मुनिहि नृप उत भयो उगरत धाइकै । लखि ताहि गुणि पापात्मा मुनि कहत भे अनखाइकै ॥ इत आउ मति तो अङ्गते दुरगन्ध प्रगटित होतहै । निति संग कीन्हें पातकीको बढ़त पातक मोतहै ॥ सुनि भूमिपति यह बचन मुनिसों कहत भो कर जोरिकै । मति नाथ त्यागो मोहिं तुम मम ओरते मन मोरिकै ॥ सब बिप्रकी लहि कृपा सुधरत अवशि उबरत दोषते । अपराध मम प्रभु क्षमा करिकै सुगति दीजै तोषते । सुनि भूपके ए बचन सुनि लखि रहे सुदया पूरिकै । ढिग जाइ नृप करि दण्डवत भो खरो अस्तुति भूरिकै । तब देखि सदया मुनिहि नृप करजोरि बोलो प्रेमसों । चय ताप कैसे मिटैं मानस लहै सुख केहि नेमसों ॥

दोहा ॥

एहिप्रकार नरनाहके सुनि अति आरतबैन । कहत भए शौनक सुमुनि देत भूपतिहि चैन ॥
हिय प्रगटे आरतदशा बढ़े ज्ञान निरबेद । अरु कीन्हें भगवतभजन मिटत पापको खेद ॥
यज्ञ किए दक्षिणा दिए सेए द्विजपद कंज । काशिकादि तीरथ किए बढ़त पुण्य मनरंज ॥
काशी काञ्ची द्वारिका मथुरा अरु हरिद्वार । माया औध अवन्तिका मेटत पाप पहार ॥
सुरसरि यमुना सरस्वती गोदावरी प्रयाग । पुण्यक्षेत्र सिगरे हरत पापताप को भाग ॥
लोभ मोह ममता करब काम क्रोध ए पाप । महा पाप मिथ्या कहब दुऊंदिशि बाढ़त ताप ॥
सत्य करब सुधरम गहब शुचिमन रहब सदैव । दान दया उपकार ये तीरथ यथा तथैव ॥

सोरठा ॥

नृपययाति मतिमान पूरब इमि गाथा कहे । किए तीर्थ मखदान तप ब्रतते पातक नशत ॥
सत्यवतीतेहिरीति निज कुमारसों इमिकहो ॥ किये पुण्यसों प्रीति पुण्य होतपातकनशत ॥
इमि सुरगुरु समुझाय पूर्व कहे हे सुरनसों । मिटत पाप दुखदाय दान तीर्थ तपमखकिए ॥

भीष्मउवाच ॥ महिखरीछन्द

यहिभांति नृपहि प्रबोधि मुनिवर परम आनंद भरतभे । हयमेद मख करवाय द्विजन पुजाय पातक हरतभे ॥ नृपधर्म जानो औशि तप मख तीर्थ ब्रत संजम किये । अरु दान पर उपकार कीन्हें दया अरु सुधरम लिये ॥ लहि सुगुरु प्रगटे सुमति गुणि निजपाप अति आरत भए । सत्संग कीन्हे सबिधि हरि हर राम रतिरस रगरये ॥ अरु अतिथ पूजन किये क्षुधितन उदर भरि भोजन दिये । निज नशत पातक मृत्यु हिय सन्तोष सुद अमृत पिये ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

कहत पूर्व इतिहास हम सुनो तौन मतिरास । नैमिषारमधि गृद्ध अरु जम्बुकको इतिहास ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

मरो एक द्विजको सुत कोई। हो अप्राप्त योवनवय सोई ॥ लै तेहि रुदन करत अति आरत। गे मसान महि द्विज दुखभारत ॥ धरि मसान महिपर तेहि गहि गहि। रुदन लगे शिशुता सुख कहि कहि ॥ गहि गहि रुदन करैं दुखपागी। नहिं घर जाइ सकैं तेहि त्यागी ॥ सो लखि एक गृद्ध तहं आयो। तिनसों कहत भयो मन भायो ॥ मृत्युलोक यह तुम नहिं चाचत। जे जनमत ते मरत न बाचत ॥ मरत भोगि जो विधि लिखि दीन्हें। मरो न जियत रुदनके कीन्हें ॥ ताते मोह त्यागि घर जाहु। औगि होति विधिकी लिखि काहु ॥ इविधि गृद्धकी वाणी सुनिकै। ते घर चले सुतहि तजि गुणिकै ॥ सो लखि कै जम्बुक अति बोलो। बिलते निकसि द्विजनते बोलो ॥ तुम सब कहै कौनके लागे। सुत सनेह तजि चले अभागे ॥ सुतसनेह त्यागत जन कोई। ताकर भला कबहु नहिं होई ॥ ताते पलटि पुत्र पहं जाई। वदन बिलोकहु अङ्क लगाई ॥ सो सब सुनहु मोहवस ह्वैकै। पलटे रुदत पुत्र कहं ज्यैकै ॥ तिनसों कह्यो गृद्ध इमि तबलों। मरे सुतहि सेवहुगे कबलों ॥ अल्पबुद्धि जम्बुककी वाणी ॥ सुनि सुत निकट चले सति मानी ॥

दोहा ॥

जीवगयो कढ़ि काठ सम परी अचेतन देह। गलि जैहै कछु दिवसमें राखि सकत नहिंनेह ॥
भयो होइ निर्वेद तो नेह मोह भ्रम त्यागि। जाय करो तपज्ञानगहि जग यामिनिमधि जागि ॥
तपतें पातक मिटत है तपतें बाढ़त धर्म। दीर्घायू सुत मिलत है तपतें सधत सुकर्म ॥

सोरठा ॥

इतने में तहं आय बोलो छली शृगाल वह। अल्पबुद्धि व्यवसाय गृद्ध तासु मानत बचन ॥

दोहा ॥

देव पितर परिवार कर तोषक दायक चैन। पुत्र ताहि चाहत तजन सुनि कुजंतुके बैन ॥
सेवहु पुत्रहि नेह गहि जीहै हमैं बिशास। अर्थ सधत उद्योगतें सिद्धि प्रदनके पास ॥

चौपाई ॥

सुनि शृगालकी बाणी ऐसी। कह्यो गृद्ध गति चाहति जैसी ॥ वर्षहजार है मैं भो पेखत। जन्मत युवा दृढ़ अवरेखत ॥ जन्मत मरत करोरिन देख्यो। मरो न कबहुं जीवत पेख्यो ॥ भ्राता पिता पुत्र अतिप्यारे। जे नहिं होत नैन ते न्यारे ॥ मरतहि तिन्हें गेहते काढ़त। इंधन अग्नि लाइ तन डाढ़त ॥ तजि मसान महिपै घर आवत। दुख सहि करत कर्म जो भावत ॥ जग अनित्य नितते सब जानत। तुम गहि मोह अविधि बिधि ठानत ॥ तजि गो जाहि जीवत न सोई। तुम नहिं तजत कौन विधि जोई ॥ गुणि मम बचन जाहु निज गेहा। मृतक न जियत बढ़ाये नेहा ॥ यह सुनि ते सब धीरज धरिकै। चले मृतकको त्यागन करिकै ॥ सो लखि कै जम्बुक भो बोलत। कत तजि सुतहि गेह सुख डोलत। बर-धक बंश पिण्डजल दायक। सुत पदार्थ नहिं तजिबे लायक ॥ मरो विप्रको सुत मनभायो। सुनियतु ता कहं राम जियायो ॥ हे राजर्षि श्वेत सुखदाई। मृतक पुत्रकहं लियोजियाई ॥ सुमन सिद्ध ऋषि मृतक जियावत। आरत दशा देखि ते आवत ॥ सो सुनिते अति करुनापागे। जाय सुतहि गहि रोवन लागे ॥

दोहा ॥

जान कहै इमि गृद्ध अरु भाषै रहन शृगाल। जाय सके नहिं ते सबै फसे मोहके जाल ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीतिगयो दिन निशि रुदत भयो भोर जेहि पर्व । इतनेमें आये तहां करुणा निधि प्रभु सर्व ॥
रुदत देखि तिनकहं शिवा शिव दाया बिस्तारि । बरंबूहि द्विजसों कहे बोलो बिप्रविचारि ॥
कहो चिराय सुवन यह शम्भु कृपाते तौन । उठि बैठो हर्षे सकल किये शिवा शिव गौन ॥
लैपुचहि आनंद भरो बिप्रसरिसपरिवार । तजिस्मशान निज नगरमधिकियो प्रवेश उदार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ
कबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि
आपदधर्म्मे वृद्धजंबुकसम्बादबर्णनोनामषष्ठोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ दोहा ॥

जासोंनितिअभिरोरहत शत्रुमहाबलवान ॥ । किमिबुधिबलकरिसोवचै तौनकहोमतिमान ॥

भीष्मउवाच ॥

अब पूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृपतौन । शाल्मलितरु अरु पवनसों भई बारता जौन ॥

रोला छन्द ॥

बिपिनि मधि हो महा उन्नत वृक्ष सेवर नाम । किए छाजित दूरि लों बढ़ि जासु शाखा दाम ॥ बिहंग बहु बिधि के बसत जहं बहुगा निबसत भूरि । बणिक पंथी आइ जेहि तर करत पथ श्रम दूरि ॥ सुमुनि नारद एक दिन तेहि वृक्षके तर जाय । कहत भे हे शाल्मली तुम परम उन्नत काय ॥ पौन सों कछु प्रीति तुमसों कहो कारण तौन । नहीं तोरत तुम्हें जाते रहत रक्षत पौन ॥ सदा तोरत रहत शाखा तरुन के अति गूर्व । गिरन-हको करत पीड़ित पवन प्रबल अपूर्व ॥ एक शाखा भंग नहिं तुव परत ताते जानि । सख्य तुमसों पवनसों तेहि हेत रक्षत मानि ॥ बचन नारद सुमुनिके सुनि कह्यो सुनिये एहु । पवनसों नहिं सख्य हमसों नहीं मनमें नेहु ॥ नहीं मम बल सदृश नारद पवन को व्यवसाय । हीनबल ह्वै जात मारुत लागि मोपहं आय ॥ सकत है न प्रबेश करि मम दलनमधि करि जोरि । बल न लागत हारिकै तब जात औरी ओरि ॥ नारदउवाच ॥ सुनो शाल्मल कहत तुम बिपरीति बचन बिधान । इन्द्र बरुण कुबेर यमते पवन अति बल-वान ॥ होत चेष्टित जगत सो सब पवनही को अंश । कहत हौ अज्ञान बश तुम पवन बलको ध्वंस ॥ वृक्षसों इमि भाषि नारद पवनके ढिग जाय । बचन ताको कहो जो सो दए ताहि सुनाय ॥ सुमुनि नारद के बचन सुनि शाल्मली के बैन । जाय तासों कह्यो मारुत किए राते नैन ॥ मारुतउवाच ॥ शाल्मली तुम गर्बसों मम बलहि निंदे जौन । जाय मम ढिग कहे सो सब सुमुनि नारद तौन ॥ पवन हम परभाव निज दरशाइयतु हैं तोहि । देखु मम बल बेग जा कहं निदरि मोदे मोहि ॥ जोव के बिश्राम हित बिधि तोहि निरख्यो अब । बूझि यह करि दया हम नहिं कियो चालन पच ॥ दया मम नहिं गुणे तुम निज बलहि जाने पुष्ट । दया जानत साधु निज परभाव जानत दुष्ट ॥ भीष्मउवाच ॥ मरुत के ए बचन सुनिके कह्यो तरुवर तौन । मोहि कबहु न आशहो तुम दयाकी है पौन ॥ निबल को बलवान जनकी दया चाहति आम । अधिक तुमसों बली हम तुव दयाको नहिं काम ॥ करो जो बल होइ तुममें करो जो करतव्य । क्रोध करि मम कहा करिहौ जाहु सब्य असब्य ॥ वृक्षके सुनि बचन मारुत कालबश तेहि जानि । गए निज थल भोर तेहि निरमूल करिवो मानि ॥ गयो मारुत तहांते तब वृक्ष कीन्हों सोच । निबल हम अति प्रबल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभुते वैर कीन्हों रोच ॥ करै गो निरमूल मो कहं पौन भोरहि आय । मूल घात न होइ जाते तौन कौन उपाय ॥ बड़ेसों हठि वैर कीन्हें लघुहि कुशल न होत । बड़ो जो सो दैव लघुको स्वामि सज्जन गोत ॥ घरीलों इमि शोचि तरुवर चाहि राख्यौ मूल । त्यागि दीन्हें आपने फल पत्र शाखा फूल ॥ त्यागि शाखा फूल फल दल भयो कुत्सित काय । महत जन सों वैर कीन्हें मिलत फल सो पाय ॥ भोर होतहि पवन आए किए वेग अमंद । शाल्मली की देखि गति हंसि कहे सुवचन छंद ॥ शाल्मली करि वैर हमसों लहे कैसो हाल । रहे उन्नत काय अति बलवान शाख विशाल ॥ गए ह्वै एहि भांति किमि बिनु किए हमसों युद्ध । कहे गरबित वचन तब करि प्रगट खलता शुद्ध ॥ गयो वह बल गरब कित फल फूल शाखा पत्र । मूल महिमें राखिबो गुणि भए ऐसे अत्र ॥ पवन मान अमानको सुनि बचन शाल्मलि तौन । दीनगति लहि भयो लज्जित देइ उत्तर कौन ॥ क्षीणगति लहि महा लज्जित देखि मारुत ताहि । गए निज बल त्यागि ता कहं आपनी दिशि चाहि ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

यहि प्रकार नृप निबल जो गहिकै गर्व गरूर । करत बड़ेन सों वैरसो लहत आपदा पूर ॥
जिमि दुर्योधन मोहवश तुमसों लरो सगर्व । जासु सहाई कृष्ण प्रभु करता खर्व अखर्व ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि आपदधर्म्मेपवनशाल्मलीसंवादोनामसप्तमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

अब बताइए पितामहं जौन पापको मूल । पाप दाप कितते बरधि देत दुहूं दिशि शूल ॥

भीष्मउवाच ॥

एक लोभते अगुण है मूल पाप को तौन । पाप लोभते होत है देत दुसह दुख जौन ॥
क्रोध लोभते होत है होत लोभते काम । क्षोभ मोह भ्रम लोभते प्रगटत औगुण ग्राम ॥
दंभद्रोह अरु पिशुनता प्रगत लोभते होत । त्याग कराइ सुकर्म कर गहत अशुचता स्रोत ॥
लोभ भए तोषत नहीं सिन्धु समान अथाह । है आकर सब अगुणको लोभ सुनो नरनाह ॥
लोभ क्रोध भ्रम मोह मद हर्ष शोक अरु दंभ । अविवेकी अज्ञान के हिय घरके अस्तंभ ॥
सताचार रत पुरुषको अब कहियतु व्याख्यान । उभय लोकके भीतकोजासुहियो अस्थान ॥
सुखदुख जिनकहं सम सदाराखत इन्द्री मोष । उपकारी दाता सुबुधि गहे रहत संतोष ॥
करत धर्म ब्यापार निति साधुवृत्ति अवराध । लोभ क्रोध मोहादिकर करतनियम तेबाध ॥
सत्संगति सेवन करत चरत बेद अनुसार । ते महान जन धरणिपहं करता तत्व विचार ॥
ज्ञानवान मतिमान कर सुधरतसिगरो काज । अज्ञानीकहंकुशलनहिं विनसतसबैसमाज ॥
मोषकरब इन्द्रियणको दम कहियतु है ताहि । दमसाधनते सधत सबसाधुसमागम चाहि ॥
कामक्रोधमद लोभभ्रम हिंसा ममता मोह । दमसाधन कीन्हें दुरत बरधत सुधरम छोह ॥
परम धर्म को मूल है दम साधन शुभकर्म । दम विशेषते विप्रको परम सनातन धर्म ॥
दम सुतेज बरधित करत मेटत सकल अनर्थ । मन प्रसन्नकृत दोषहर दम फलदानि नव्यर्थ ॥
दमसाधन करिशुद्धमतिज्ञानी सरबस त्यागि । त्यागि अविद्यादिकक्रियाविलसत आनंदपागि ॥
ब्रह्मलोक पर्य्यन्त लहि विलसत योगी तौन । दम साधन कृत दांतकहं अकम लोक है कौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तप सबगतिसाधक नृपति तप बिनु सधत न एक। तपप्रभाव प्रभु पितामह बिरचत जगतबिबेक ॥
तपते पाए बेद ऋषि तपते भए महान। तपते कामद मंच सब तपसब सिद्धि निदान ॥
तपते मिलत अलभ्य अरु होत असाध्यौ साध्य। नहिं अप्राप्य कछु तपकृतहि ईहा तासु अबाध्य ॥
ऋषि सुर सुरपति पितरगण दिगपालक गन्धर्व। तप करि के पाए सुपद तपहि सराहत सर्व ॥

बैशम्पायनउवाच ॥

दम तपको परभाव सुनि कहे युधिष्ठिर भूप। सत्य धर्मकी अब कहौ महिमा परम अनूप ॥
परम धर्म सब बरणको सत्य सुनो नरनाह। सत्य सनातन सिद्धिप्रद धर्मसिन्धु अवगाह ॥
सत्य चयोदश भांतिको होत भमिभरतार। सत्य क्षमा समता दया त्यागो तत्वबिचार ॥
दम अक्रोध धृति ध्यान अरु आर्जव लज्जा जौन। अन अमरष ए चयोदश सत्य सुनो मतिभौन ॥
परम धर्म है सत्य नृप सबयज्ञनतें श्रेष्ठ। ते योगी अति धन्य जे सेवत सत्य यथेष्ठ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

क्रोधादिकअरितौनजेहिप्रकारबरधतप्रगटि। कहौ पितामह तौन जेहिप्रकार फिरिनशतए ॥

भीष्मउवाच ॥ रोला छन्द ॥

क्रोध प्रगटत लोभते सो नशत प्रगटे शान्ति। कामसो संकल्पते तेहि जहत प्रज्ञा कान्ति ॥
क्रोध अमरष लोभ ए अज्ञानताते होत। तत्वज्ञान बिधान प्रगटे नशत है सहसोत ॥ प्रीति
रीति बियोग पाए शोक बरधत आय। गुणत ताहि निरर्थ जबहीं मूलते मिटि जाय ॥ अति
असूया बढ़त लहि कै क्रोध लोभ बिभाग। दया प्रगटे भगत सो जिमि चोर जाने जाग ॥
सत्य सेवन बिना ममता बढ़त हे नरनाह। नशत सो सतसंग कीन्हे बसे साधुनमाह ॥ बढ़त
है ऐश्वर्यतें मदताहि नाशत ज्ञान। तीव्र तहि आमर्ष प्रगटत दया ताको भान ॥ होति
ईर्षा कामते बढ़ि बुद्धि नाशति ताहि। लोभ कुमतिहि नशत जगहि अनित्य जाने चाहि ॥
मोह प्रगटत जीवके अबिचार ते सब काल। नशत तौन बिचार कीन्हे तत्वके क्षितिपाल ॥
ए चयोदश दोषकरता एक बढ़त अनर्थ। हे सुयोधन मध्य ए सब लरै कत नहिं व्यर्थ ॥
बैशम्पायनउवाच ॥ पितामहके बचन सुनिकै धर्मनृप सुख पाय। फेरि बूझत भए हियरे
परम आनंदछाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अब पितामह कहौ लक्षण निन्द्य जनको जौन। जासु
संगति सुजन बरजत यथा कंटक गौन ॥ कृपी अयशी क्षुद्र हिंसत भोगरत सब याम। पर
सुनिन्दक दुष्टजन जो करत कुत्सितकाम ॥ छली गरबी पापरत परदोष प्रगटनहार। भलो
काहुहि गुणत नहिं निज भावके अनुसार ॥ भलो देखत औरको तौ हिये पीड़ित होत।
भलो अपनो बुरो सबको चहत त्यागें ओत ॥ करत जो उपकार ताकहं ठगन चाहत आप।
दान मान सुजानजनको करत कबहुं न थाप ॥ होत यहिबिधिके कुलक्षण निन्द्यजनके भूप।
अब सुलक्षण सुनो जैसो उचित पावनरूप ॥ बेदबिद वेदांगबिद द्विज नृपति राखहु सेइ।
करै सुरमख पितर पूजन दान विधिवत देइ ॥ होइ बहुधन बिप्र जो नहिं करै मख अरु
दान। भूप ताको हरै धन तेहि छोड़ि शेष समान ॥ यज्ञघरमें शूद्र कबहु नहीं पावै जान।
करै पीड़ितद्विजहि क्षत्रीहरै ताको मान ॥ इष्टि वैश्वानरी प्रतिदिन करै भूप सुजान। परम
धर्म गृहस्थको है अतिथपूजन दान ॥ होत दुःसह तेज नृपको पाय बिप्र प्रसाद। यज्ञ
कीन्हे दान दीन्हे जाचकन अहलाद ॥ बाहुबलते तरत आपद बीर क्षत्री क्षिप्र। तरत
धनबल वैश्य शूद्रो मंत्रबलतें बिप्र ॥ युवति अपटु अमंत्रबिद अरु असंस्कारी जौन। अग्नि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होत न करै कबहु किए निरयो तौन ॥ रहि जितेन्द्री करत मख जो दक्षिणा दे भूरि। दुहुंदिशि सो लहत ईछित परम आनंदपूरि ॥ यज्ञ करि कै दक्षिणा नहिं देत जो संविधान। प्रजा पशु दिव हरत ताको यज्ञ जानो न्यान ॥ कामवश परतियहि भोगत एकनिशि द्विज जौन। साधि निति व्रत तीनि बरिस अपाप ह्वै तौन ॥ कनकतेई विप्रधनहर सुरापानी मूढ़। अरु अगम्यागमन करता पतिहि पापी रूढ़ ॥ पाइ सतगुरु होइ इनके ग्लानि जौ गुणि कर्म। किए प्रायश्चित्त तीर्थ व्रत बढ़त इनको धर्म ॥ धर्म मख व्रत तीर्थ तप ए हरत पातक सर्व। मिटत प्रायश्चित्त तें पातक त्यागि गौरव गर्व ॥ भ्रूणहा निजपाणि निजतन काटि कीन्हे होम। होत है शुचि शुद्ध सब मिटि जात पातक तोम ॥ गरम मदिरा पान करि कै त्यागि तन गहि ग्लानि। लहत मदिरा पिशुनगति मिटिजात पातक कानि ॥ लोहप्रतिमा गरम करि कै लपटि त्यागै देह। लहै गुरुतल्पग सु गति तौ धरमसो करि नेह ॥

दोहा ॥

लिंग वृषन युगुपाणितें गहि चलि दक्षिण ओर। जीभि दशनते काटिकै मरै ग्लानि गहि घोर ॥ कै अग्निष्टोमादि मख उत्तम करै सनेम। तौ गुरुतल्पगको मिटत पाप लहत है क्षेम ॥ ब्रह्मचर्य्य द्वादश बरिस गहि तप करै अनूप। होत अपातक ब्रह्महा तौ जिमि पावन रूप ॥ लगै सगर्भा ब्राह्मणीबधको पातक जाहि। दुगुण पाप तेहि लगत है दुगुण नेम व्रत ताहि ॥ बधि वैश्यहि द्वै बरिसमें एक वृषभ शतगाय। दै विप्रनकहं होत है अघगत शुद्ध सुभाय ॥ एकवृषभ शतगाय दै आठ बरिसमें दान। होत अपातक शूद्रहा तजि अघ करिबो ठान ॥ श्वान बराह बिलार खर हिंसे हत्या होत। अहि अखु दादुर काकके मारे पातक सोत ॥ पशुबधको प्रायश्चित्त नर करि होत अपाप। धर्मशास्त्रमें जो कहे सोई सबघर थाप ॥ बिनु कारण माता पितहि तजे पातकी होत। अशन बसन छाजन सबिधि दीबो धर्म तनोत ॥ बिनु बिभिचारिणि भार्य्याहित्यजिपरतियते भोग। करत तौनचान्द्रायणहिकीन्हे होतअरोग ॥ नृपतिदेइअतिदण्ड तेहिगरमलोहधरि अंग। दुगुणदण्डव्रततेहितियहिरमैजोपरपतिसंग ॥ मदिरापीके बदनको गन्ध लहै द्विज जौन। तीनि दिवस जल उष्ण पय पियैतीनि दिन तौन ॥ एहि बिधि पातक प्रति कहे प्रायश्चित्त महान। तजि बिकार बेवहार सियरामहिभजतसुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि आपदधर्म्मे प्रायश्चित्तीयो वर्णनोनामअष्टमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥

पाय कथान्तरतेहि समय खड्ग युद्धबिदद्ध। नकुल पितामह सों भए बोलत बचन प्रतद्ध ॥ बिरथ बिधनु ह्वै जात भटघेरि लेहि तेहि टूटि। गदा शक्तिधर धनुषधर बधकरिबो गुणिजूटि ॥ तब सो भट किमि खड्ग गहि तिनसों लरै अभर्म। सो बताइये पितामह खड्ग युद्ध बिद पर्म ॥ बचन नकुल के सुनि कहे धनुष बेद पारद्ध। जो तुम बूझत शिष्य सम सो हम कहत अदद्ध ॥

चौपाई ॥

जगहित प्रगटि पितामह आरय। बिरचे महि दिव ऋषि आचारय ॥ रचे प्रजापति अति मत भावन। बेद बेदबिद बिरचे चावन ॥ अस्थावर जङ्गम बहु बिधिके। सुर गन्धर्व आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब सिधिके ॥ उद्भिज स्वेदज अण्डज जेते । और जरायुज प्रगटित तेते ॥ क्रोध लोभ भय प्रगटित कीन्हे । मोह गर्व आदिक रचि दीन्हे ॥ बिरचे असुर हिरण्याक्षादिक । बिप्र चिन्ति सुचि प्रभृत प्रमादिक ॥ ते सब धर्म अति क्रम करिकै । बिहरण लगे पराक्रम भरिकै ॥ ऋषि मुनि प्रजन सतावन लागे । देवाधिपहि दबावन लागे ॥ भरे दरप नहिं सतपथ बूझैं । सुरगणतें समदाय अरूझैं ॥ सो बिलोकि बेधा गुणि मनमें । गे हिमवत गिरिपै ऋषि गणमें ॥ उन्नत शृंग तरुणते छाजित । जल फल फूल बिशेष बिराजित ॥ तहां ऋषिण सह राजित ह्वैकै । कीन्हे यज्ञ युगुति जति ज्वैकै ॥ तहां हजार बरिस जब बीतो । यज्ञ अनल तब अद्भुत पीतो ॥ भोतहं बिमल अग्नि ते प्रगटित । नीलोत्पल छबि छटा अरगटित ॥ तीक्षण बदन कृशोदर भीमा । छोटोगात बिभात अधीमा ॥ नाशनिश्वासन अशनि समाना । तेजपुंज जगजैन अमाना ॥

दोहा ॥

ताके उत्पति होत भो भूमिकम्प तेहिकाल । तरुसीदन उल्कापतन सिन्धु क्षुभित दिशिलाल ॥
तेहिक्षण ऋषिगण सों कहे बेधा आनंद देत । प्रगट कियो असिनाम यह असुर बिनाशन हेत ॥
इतो कहत बिधि के सुनो वह सरूप तजि तौन । तीक्षण तन ह्वै लसत भो रूप प्रगट अबजौन ॥

तोमर छन्द ॥

निज पाणि मधि सो आनि । अनुमान हियमें ठानि ॥ बिधि दिए शिवके पानि । अति प्रबल प्रभु अनुमानि ॥ गहि अमल असि अति रूप । प्रभु रुद्र अनघ अनूप ॥ करि चारि भुज अति ऊर्द्ध । दिनमणिहि परशर मूर्द्ध ॥ करि बज्रचख भूभाल । अति सृजत चखते ज्वाल ॥ बज्र मार्ग बिरचि सनेम । भे चरत गहि रणप्रेम ॥ किये घोर धुनिह्वै चण्ड । गुणि खलन दीबो दण्ड ॥ प्रभु शूलधर तेहिकाल । भे काल सरिस कराल ॥

दोहा ॥

सुनी रोद्रता रुद्रको दानवकुल भट सर्व । चलि निजथरते जाय तहं लरण लगे गहि गर्व ॥
गदाशक्ति पाषाण शर पट्टिस भल्ल अनेक । डारण लागे रुद्रपहं गहि गिरि टारन टेक ॥

चौपाई ॥

गहि अस्थान भेद बिधि चरिकै । प्रभु असिपाणि चपलता धरिकै ॥ सब असुरणके आयुध काटत । जूटि सबनसों सबकहं डाटत ॥ काटत अगणित कर पग शीसा । लखि असुरनको धीरज खीसा ॥ एक शिवहि अगणित करि जाने । काल कराल सरिस अनुमाने ॥ सबकहं बधन चहत है क्षणमें । गुणि हत शेष भरे भय मन में ॥ नहिं थिरि सके भगे तजि धीरज । बिप्रचित्त आदिक जे वीरज ॥ कितने गए रसातलमाहीं । किते दिगन्तन धीए नाहीं ॥ किते गगनमधि इत उत धाए । किते कन्दरन दुरि दुख पाए ॥ शंभु असंख्यन असुरण हतिकै । रुण्डमुण्डमय धरणी अतिकै ॥ रणमहि त्यागि रौद्रता तजिकै । शिव स्वरूप भे सुषमा सजिकै ॥ सो लखि सुर ऋषि आनंद लीन्हे । महादेवको पूजन कीन्हे ॥ तब शिव सो असि बिष्णुहि दैकै । गे कैलाश बिजै यश लैकै ॥ बिष्णु मरीचहि दीन्हे सोई ॥ दिए मरीच इन्द्रकहं जोई ॥ दिए लोकपालहि सुरनायक । लोक पाल मनुकहं गुणिलायक ॥ असि दै कहे नीति करि लालन । यहि गहि करो प्रजाप्रति पालन ॥ दिहेहु दण्ड अधरम कर तारण । हरेहु भूमि धन धरि असिधारण ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

मनु निज सुत क्षुपकहं दए क्षुपते लहे इक्ष्वाकु । तासों आयू आयुते लहे नहुष भरताकु ॥
तासों लहे ययाति फिरि तासों पुरु महिरौन । एहि प्रकार नृपवंशमें रही बहुत दिन तौन ॥
लहे ताहि ऋषिदर्भ फिरि लीन्हे भारद्वाज । लहे द्रोण फिरि कृप लहे तासु प्रयोग समाज ॥
अब पाण्डव असिको सुनो आठ सुनाम रहस्य । असि विषसन अरु खड्ग अरु नाम दुरासदतस्य ॥
तीक्ष्णधार श्रीगर्भ अरु धर्मपाल अभिराम । विजय सुनो माद्रीतनय ए बसु असिके नाम ॥

सोरठा ॥

ए बसु असिके नाम जे नितिपढि हैं पूजि असि । ते क्षत्री बलधाम जय कीरति लहि हैं सदा ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शांति पर्वणि आपदधर्म्मेखड्गोत्पत्तिर्नामनवमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

इमि बार्ता कहि जब रहे मौन भीष्म मतिखानि । तब भाषे नृप धर्मते विदुर धर्म अनुमानि ॥
दया यज्ञ श्रद्धा क्षमा सत्य क्रया अरु दान । बहुश्रुत सुधरम शील ए आत्म सम्पदा यान ॥
धर्म मूल कल्याणको सबकहं बरधत धर्म । धर्मवान सुकरम करत धर्म देत पद पर्म ॥

वैशम्पायनउवाच ॥

बचन बिदुरके सुनि कहे अर्जुन बचन प्रसस्त । कर्म भूमि यह भूमिपति इत कढ़ि बढ़त समस्त ॥
कृषी वणिज गोरक्षण अरु शिलपादि अखिन्न । ए सब हीके अर्थ है नहीं कर्मते भिन्न ॥
अर्थवान विषई सुबुधि साधत सदा सुधर्म । धर्म काम ए अर्थके अबए किए सु कर्म ॥
तजि हियते सुख दुख ग्रहण त्यागि फलाशा जौन । अर्थ धर्म कामादि महं चरत किते मति मौन ॥
अर्थ धर्म अरु कामकहं त्यागि किते मतिमान । मोक्षहेत बन गिरि गहन चिन्तत ते सुखदान ॥
जाति बरणके कर्म रत किते तकत नहिं और । किते चहत केवल अरथ गुणत न ठौर कुठौर ॥
किते होत आस्तीक अरु किते होत नास्तीक । करत कर्म जो जौन सो भोगत नीक अनीक ॥

नकुलउवाच ॥

चलत सुपत बैठे खरे करत उचित जे कर्म । अर्थ योग साधन करब है गृहस्थको धर्म ॥

सहदेवउवाच ॥

अर्थ धर्मसों युक्त जहं धर्म अर्थते युक्त । ते मधु मिश्री मिलित सम देत स्वाद सुख उक्त ॥

भीमसेनउवाच ॥

भूपति काम विशेष है सब साधत निजकाम । ऋषि साधत तप कामबश शास्त्र पढ़त द्विज नाम ॥
गोरक्षण वाणिज्य अरु कृषी आदि व्यापार । यज्ञ दान आदिक क्रया काम सिद्धि उपचार ॥
किते काम लगि उदधिमें धसत किते बनशैल । परअधीन कितने रहत किते चलत निति गैल ॥
अर्थ धर्मते कामकहं साधत हैं मतिमान । जिमि पयते नवनीत घृत काढ़त सहित विधान ॥
श्रेष्ठ तेल तिलते सुना दधिते घृत अभिराम । श्रेय पुष्प फल काठते अर्थ धर्म ते काम ॥

वैशम्पायनउवाच ॥

सुनि गुणि बन्धुनके बचन कहे युधिष्ठिर भूप । हौ तुम सब मतिमान अति जानत यतन अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मशास्त्र मत तुम कहे सुनो तत्व सुखदान । लोह कनक सम भाव जेहि सो नर अतिमतिमान ॥
पाप पुण्य सुख दुख जिते अर्थ धर्म अरु काम । एकौ में रति जासु नहिं सो ज्ञानी अभिराम ॥

खंजा छन्द ॥

करता आपुहि गुनत न कबहु गुनत सदा यह भेव । चरत चरावत जिमि हृदिस्थ प्रभु जो निति न्यामक देव ॥ सुनि ऐसे सुबचन भूपतिके बन्धुन किए प्रणाम । क्षण रहि मौन भूप भीषमते किए प्रश्न अभिराम ॥

दोहा ॥

मित्रद्रोही दुष्ट जो होत कृतघ्नी जौन । तिनकी वार्ता अब कहौ जेहि निन्दत मतिभौन ॥

भीष्मउवाच ॥

अब पूर्व इतिहास हम कहत सुनो नृप तौन । उत्तर दिशिमहं बिप्र शठ कियो दुष्टता जौन ॥

रोला छन्द ॥

मध्यदेशी रहो कोऊ बिप्र विद्याहीन । बहुकुटुम्बी रहो सो फिरि भयो धनते हीन ॥ गेह तजि कै बिप्र सो कढ़िगयो उत्तरओर । निकट गिरिके ग्रामपायो बसत हे तहं चोर ॥ चोरपति मतिमान अति हो जानि द्विजहि कुलीन । बसन भोजन दियो तेहि दै सदन चारु नवीन ॥ बांधि भिक्षा वर्षकी तेहि राखि सु बचन भाषि । दिए प्रोषितभर्तृका तिय शुभग सुत अभिलाषि ॥ पाय भोजन बसन गृह तिय बिप्र गौतम मोदि । लगो तहं वसि दिवस बितवन तरुणि संग बिनोदि ॥ वाणबिधि शिखि लगो बनमें चरण लै धनुवान । लगो मारण मृगा तस्कर संग तिन्ह हि समान ॥ बहुतदिन तहं कियो हिंसा निवसि तस्कर संग । एक दिनतेहि ग्राम आयो बिप्र बुद्धि सुढंग ॥ देखि सब गृह त्यागि गौतम बिप्रको गृह देखि । प्रविशि भीतर भयो ठाढ़ो बिप्रको गृह रेखि ॥ इतेमें चक्रांग पक्षी मारि लीन्हे तच । भयो आवतविप्र गौतम भए उभय एकच ॥ रुधिरसों सब गात पूरित लिए धनुषा वाण । मृतक पक्षी धरे कांधे बनि किरात समान ॥ देखि ताकहं बिप्र तपसी कह्यो सुबचन मर्म । मोह-बश परि गहि कुसंगति करत कौन कुकर्म ॥ बेद शास्त्र सुभाव स्मृति निज वंशको गुणि तौन । त्यागि कै यहवृत्ति गहु द्विज वृत्ति जाहिर जौन ॥ बिप्रको सुनि बचन गौतम कहत भो ससुझाय । क्षीणधन हम हीनबिद्या बसि यहिथर आय ॥ आपु यहि निशि रहो इत हम चलब तुव संग भोर । राति बसि द्विज भोर तेहि लै चलो उत्तरओर ॥ गए कछुं अति विपिनिमधि कढ़ि दैववश तहं आय । वध्यौ तपसी द्विजहि गहि कै मत्त मैगल धाय ॥ देखि गौतम बिकल भाग्यो जाइ उत्तरकोद । लख्यौ गिरि ढिग बिपिनि जहं बसि विहग करत विनोद ॥ पनस ताल तमाल साल रसाल आदि उतंग । फले फूले वृक्ष फूले मधुप अद्भुत रंग ॥ दिव्य थल अवलोकि सो तहं वसो गौतम जाय । होत संध्या तहां आयो बिहग अनुपमकाय ॥ देवकन्या पुत्र सो बकराज अति मतिमान । नाम नाडीजंघ कश्यपको सुवन सुखदान ॥ सखा बिधिको तासु दूजो राजधर्म सुनाम । होत संध्या तौन पक्षीराज सुखमा-धाम ॥ आइ कै निज आश्रममें दयो परमा पूरि । निरखि ताकहं बिप्र हियमें गह्यौ विस्मै भूरि ॥ मणिनके आभरण भूषितराजधर्म सधर्म । देखि बिप्रहि कह्यौ सुबचन देत आनंद पर्म ॥ बिप्र आइ सुआश्रम मम किए पावन रूप । हमहिं तुव सत्कार करिबो उचित धर्म अनूप ॥ भाषि इमि सुरसरितते पाठीनपीन मगाइ । अगिनिमें परिपाक करिकै

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दियो द्विजहि सचाइ ॥ अशन वास कराय विप्रहि पास बैठि सप्रेम । भयो बूझत विप्रको द्विज नाम गोत्र सनेम ॥ नाम गोत्र बताय अपनो कह्यो विप्र अधीर । हम दरिद्री द्रव्य अरथी जात सागर तीर ॥ विप्रके सुनि वचन बोलो पक्षिपति सुदमीन । चारिविधिको होत धन सो कहत सुनिये तौन ॥ परंपरिक सुपूर्व कर्मज काम्य मैत्र महान । मित्र मम तहं जाय लेहु सुमैत्रधन सुखदान ॥ तीनि योजन इहांते है मेरुव्रज वरग्राम । तहां राक्षस राज रहत विरूप अच्छ सुनाम ॥ मित्र मम सो जाहु तहं तुम लेहु धन मनमान । सुनत दुजके वचन द्विज तहं चलो पुलकित प्रान ॥ खात पथमें सुफल निरखत विपिनि शोभा वेश । लख्यो राक्षस राजको पुर द्वार अनुपम देश ॥ जानि सो वृत्तान्त राक्षसराज करि अनुमान । भृत्य भेजि बोलाय विप्रहि पूजि दीन्हों मान ॥

दोहा ॥

पूजिसबिधि फिरि कहत भो विप्र बसत केहि देश । पढे कहाको तवतिया कहिये क्रिया विशेश ॥ विप्र कह्यो हम बसत हैं मध्यदेशमें भूप । है द्विज गौतमगोत्र हम जो जग प्रगट अनूप ॥ हम अभाग्यवश नहिं पढ़े गहे न क्रिया सुवेश । तिया लहेहैं शूद्रिनी सत्य सुनो दनुजेश ॥ सुनि राक्षसपति गुणत भो श्रेष्ठगोत्र कुलमात्र । निरविद्या शूद्री रमण यह द्विज महाकुपात्र ॥ दानपात्र तौ है नहीं पै भेज्यौ मम मित्र । औशि याहि दीबो पस्यौ मित्रप्रभाव विचित्र ॥

चौपाई ॥

मित्र साधु नहिं एहि लखि लीन्हों । यह कुत्सित कर्मी हम चीन्हों ॥ इमि गुणि सावधानता गहि कै । भोर कार्तिकीपूनो लहि कै ॥ मणिमाणिकको ढेर लगायो । सादर अगणित द्विजन बुलायो ॥ पूजि कह्यौ उमगाइ सुनेहू । जासों जौन चलै सो लेहू ॥ इतनो सुनत विप्र सब हरषे । युगहाथन मणि माणिक करषे ॥ बसन पसारि मोटरी बांधे । चले बिदा ह्वै धरि धरि कांधे ॥ तेहिक्षण बोलो राक्षसराजा । बेगि जाहु कढ़ि विप्र समाजा ॥ भोर जाहि राक्षस ढिग पैहै । बिनु विचार ताकहं धरि खैहै ॥ सुनि ब्राह्मण अति पायल डगरे । नांघि राक्षसी सीवा अगरे ॥ गौतम विप्र मोट लै मणिको । आयो विहग पास बनि धनिको ॥ देखि सधन तेहि खगपति मोदो । सादर ढिग बैठाय बिनोदो ॥ फल मंगाय भोजन करवायो । निज समीप आसन धरवायो ॥ करत बारता प्रेम समोयो । निद्रित ह्वै पक्षीपति सोयो ॥ सोइ गयो पक्षीपति जबहीं । सो शठ विप्र विचास्यो तबहीं ॥ होइहि भोर दूरि पथ चलिबो । मगमें कहूं न जनपथ हलिबो ॥ नहिं अहार कछु पाइब मगमें । मोटो मोट लहब दुख अगमें ॥

दोहा ॥

इविधिचिन्तिसोविप्रशठफिरिइमिगुन्यौविचारि । मांसरासिममढिगपरोपक्षीपतितेहिमारि ॥ याहीक्षण लै भगि चलैं मगमें करब अहार । इमि विचारि उठि विहंगपतिको कीन्हों संहार ॥ रोम पक्ष सब करि जुदो चलो कन्ध धरि ताहि । दुष्ट कृतघ्नी विप्र वह करि कुकर्म भल चाहि ॥

चौपाई ॥

उतै भोर राक्षस पति जागो । खगपतिके छोहन अनुरागो ॥ निज सुपुत्रकहं निकट बुलाई । कहत भयो इमि मोह बढ़ाई । मो कहं जानि परत यहि निशिमें । भयो अनर्थ मित्रकी दिशिमें ॥ हो वह ब्राह्मण शूद्राचारी । अति मूरख अरथी अविचारी ॥ मित्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहगपति साधु महाना। तासु दोष गुण नहिं पहिचाना ॥ करि विश्वास निकट तेहि राख्यौ। सो अरधी अनरथ अभिलाख्यौ ॥ ताते तहां जाऊ तुम आसू। देखि खबरि लै आवऊ तासू ॥ सुनत हि सो अनुचर सह धायो। खगपति बसत रहो तहं आयो ॥ तहां न राजधर्म कहं देख्यौ। रोम पक्ष लखिकै अति तेख्यौ ॥ जान्यौ राजधर्म कहं बधि कै। गयो बिप्र लै मांसु सरधिकै ॥ दियो अनुचरण कहं अनुशासन। धाय धरो बिप्रहि करि ग्रासन ॥ सुनत अनगिने अनुचर धाए। बिप्र कृतघ्निहि धरि लै आए ॥ शिरमणि मोट कान्धपै पत्ती। ल्याए ईंचि असुरपति पत्ती ॥ तिमि लै असुराधिपपहं आए। लखि कौणपपति अतिदुख पाए ॥ मित्र विहंगपतिको तन लै कै। रुदन कियो अति करुना कै कै ॥ कश्यपतनय सुर मिते जायो। तेहि बधि गात कृतघ्नी खायो ॥

दोहा ॥

एहिविधिकहिकहिरुदनकरिपुचहिदियोनिदेश।कह्यौयाहिबधिखाहिंसबअसुरभयानकभेश॥
यह सुनि सब राक्षस कहे जोरिजोरि युग हाथ। मांस कृतघ्नीदुष्टको हम न खाइ हैं नाथ ॥
तब राक्षसपति कहत भो खण्ड खण्ड करि याहि। देहु किरातन खाहिं लै मांस बिप्रको चाहि ॥
खण्ड खण्ड करि ताहि ते दए किरातन आनि। नहिं खाए तेऊ असुर दुष्ट कृतघ्नी जानि ॥

चौपाई ॥

तब राक्षसपति चिता सजायो। चन्दन अगर सुगन्ध धरायो ॥ प्रेतकर्म करिबो अनुमान्यौ। यह गति सब दिववासिन जान्यौ ॥ सत्य राम राक्षसपति भाख्यौ। लै बकपतिहि चितापहं राख्यौ॥ ऊपर तासु सुरभि तेहिक्षणमें। आवत भई क्रोध करि मनमें ॥ लखि पयस्विनी भई सु माता। बकपति सुख पय दयो बिधाता ॥ पय परसत बकपति भो तैसो। सुन्दर गात रहो नहिं जैसो ॥ तुरित चिताते बाहेर आयो। राक्षसपति हंसि अङ्क लगायो ॥ तेहिक्षण तहं अति आनंद छायो। बकपति नयो जन्म फिरि पायो ॥ तेहिक्षण सुरनायक तहं आए। अन्तरिक्ष रहि बचन सुनाए ॥ बकपति बिधिकी सभा न जाई। तब बिधि दीन्हे शाप रिसाई ॥ जो बकपति मम सभा न ऐहै। तौ खलके करते बधि जै है ॥ शाप भाव तेहि बकपति धरते। इमि बधिगयो दुष्टके करते ॥ जीवत भो अस्तके सींचे। मोहगईं सुरभीके ईंचे ॥ यहिविधि गिरा इन्द्रकी सुनिकै। बिप्रहि मरो परो लखि गुणिकै ॥ बकपति कह्यौ बिनै अति करिकै। नाथ कृपा मो पहं हिय धरिकै ॥ यह मम सखा बिप्र बधि डारो। तेहि जियाइ मम जन्म सुधारो ॥

दोहा ॥

बकपतिकी बाणीविमल सुनिसुरपति सुखपाय। सींचिअस्त तेंब्राह्मणहि तुरितहि दएजियाय॥
बकपति बिप्रहि लाइ उर मिलो प्रेम अधिकाय। मिलो बिप्र चखनत किए कहा कनौड़ी जाय ॥
तेहि बिप्रहि मणि मोटसह करिकैबिदा सप्रेम। जायसभाबिधिकीबिहगआदरलह्यौसनेम ॥
क्रमते शूद्रहि के सदन आयो ब्राह्मण तौन। अन्तकाल रौरव लह्यौ लहत कृतघ्नी जौन ॥
पूर्व कृतघ्नी को कह्यौ नारद यह उपखान। नृप हम सो तुमसों कह्यो ऐसो दुष्ट न आन ॥
सब पापिन ते सरिस है मित्रनद्रोही दुष्ट। मित्रद्रोही ते न बिधि देइ मित्रता पुष्ट ॥

सोरठा ॥

मर्य्यादाको धाम मित्रमिलै बिधिदेइ तिमि। सुग्रीवहि जिमि राम मिले पारथहिकृष्णजिमि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैशम्पायनउवाच ॥

एहिविधि आपदधर्म भूपतिते भीषम कहे। सुमिरि व्यासपदमर्म नृप सो हम तुमसों कहे ॥
पाइ कृपा अनुकूल सीतापति रघुनाथकी। सरस सम्पदा मूल बरणे आपदधर्म इमि ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिगोकुलनाथ
कवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिआपद्धर्मेदशमोऽध्यायः॥
इति आपद्धर्म्मः सम्पूर्णः शुभमस्तु ॥

चैत्र शुक्ल २ गुरुवासरे संवत् १९३१ वि० ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारतदर्पण ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्मदर्पणः

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीतीछन्द ॥

वर राजधर्म विशिष्ठ अति शुभ खच्च आपद्धर्म । सुनि पितामह तुम कह्यो पूरब कृपा करिकै पर्म ॥ अब कहो जो आश्रमिन को है श्रेष्ठ धर्म अनूप । हौ आपु कहिबे योग्य याते कहौ भीषम भूप ॥ भीष्मउवाच ॥ शुभ धर्म ज्ञान सु कह्यो सब आश्रमिन में शुभवेद ॥ मैं कहत तिनको तुम्हैं फल हौं सुनहु तौन अखेद ॥ है देत औरै लोकमें फल धर्म अपनो खच्च । शुभज्ञान सों फल देत एही देहको परतच्च ॥ नृप भई ह्वै है शङ्क तेरे हिए सुनि मो बात । नहिं धर्म को फल दृष्टि ह्वै है ज्ञान फल विख्यात ॥ है व्यर्थ करनो धर्म याते ज्ञानही है सार । यहि लोक में जो देत एही देहको फल चार ॥ नृप सुनहु सो शुभ धर्म कीन्हें कामनाके हेत । यहि लोकही में धर्मह्व यह देहको फल देत ॥ सुनु धर्म है बहुद्वार शंका नेक करिहे तून । वर कहत हैं बुध क्रिया विफला होति है कबहून ॥

दोहा ॥

काम स्वर्ग पुत्रादि के अरु वेदान्त विचार । इनबिच जिहिमें होत है निश्चय जाहि सुढार ॥ तिहिको ही कल्याण कर जानत है वह भूप । ससुझत है नहिं अन्यको दायक मोद अनूप ॥ जानत तृणकीतुल्य है जिमि जिमि जगको सर्व । तिमि तिमि होतविरागहै प्रापतसुखद अखर्व ॥ बुद्धिमान सब लोकको जानि दुःखमय भूरि । मोक्ष होनके यत्न को करै ज्ञान सों पूरि ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥

धनके नष्ट भए अरु पूत । पित अरु दार मरे अनकूत ॥ होत शोक जो जासों दूरि । सो गति कहो कृपा करि भूरि ॥ भीष्मउवाच ॥ नष्ट भएते धन अरु दार । पिता पुत्रके मरे अपार ॥ दुख विचार मैं जगको सर्व । जानि अनित्य सुप्रच्च अखर्व ॥ हरणि शोककी करै उपाय । चिन्ता चितकी सर्व बिहाय ॥ यह जो प्रश्न कियो तुम जौन । ताके माहि तात बुधि मौन ॥ एक इतिहास कहत हौं आम । वर प्राचीन ज्ञानको धाम ॥ एक हो भूप सेन जित नाम । कष्टित पुत्र शोकसों माम ॥ ताको मिल्यौ एक वर विप्र । सुहृद दूरि कर शुककों क्षिप्र ॥

दोहा ॥

पुत्रशोकसोंलखि भयो विह्वल औ अतिक्षीण । जानि मूढ़मन भूपको ऐसे कह्यो प्रवीण ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल छन्द ॥

का तू शोच करत है भूपति । है तू मूढ़ शोच्य तौ तुहि अति ॥ तुमको शोच करत लखिहैं डरि । बान्धवादि सब तब शोचैं करि ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनु आतमा तो मो सबै औ देह इन्द्रिय जौन । सब जहां सों आगमन कीन्हों तहीं जैहैं तौन ॥ यह जानि कै तुम रहौ धीरज धारि तजिकै शोक । सुख हेतु है तुम बसो यातें ज्ञानवारे ओक ॥ सेनजितउवाच ॥ बर कौनसी वह बुद्धि है अरु कौनसो तप बिप्र । अरु कौनसो है ज्ञान उत्तम कहो हमको क्षिप्र ॥ स्मृति भई तुमकों कौनसी है प्राप्त हे द्विजराज । कबहूं न तुमको ब्याप्त तासों शोकयोक दराज ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ तुम अहो भूपति लखो सब संसार में जे भूत । हैं किते उत्तम किते मध्यम किते अधम अकूत ॥ फल कर्मकेसो दुःख करि कै युक्त हैं भूपाल । निज हृदय खच्छ सुढार में यह कै बिचार बिशाल ॥ है कर्मदाता दुःख सुखको करत शोक न हर्ष । एक औरौ मैं कहत कारण सुनहु नृप उत्कर्ष ॥

दोहा ॥

यह जो आत्मा सो नहीं है मेरो सुनु भूप । अच्युत को आभास है सो ही नित्य अनूप ॥ आत्माही जौ मो नहीं तौ पृथ्वी सुत दार । कैसे अपने जानि कै तिनसों करत पियार ॥ आत्मामें जौ तौ सबै मैंही हैं भूपाल । ज्यौं मम त्यौंहीं अन्य को जानो सत्य बिशाल ॥ ऐसीमति प्रापत भए हमको शुक औ हर्ष । होत न कबहूं सेनजित सुनो भूप उत्कर्ष ॥

सवैया छन्द ॥

जिमि द्वै काष्ट सुबहत बहत मिलिजात समुद में । कछू दूरि मिलि बहत फेरि परि लहरि बिहद में ॥ भिन्न भिन्न ह्वै जात तिमिहि है भूतसमागम । ऐसेहि पुत्र पउत्र ज्ञाति बान्धव जानो तुम ॥

दोहा ॥

तिनसों नेह न कीजिये सुनहु भूप मो बैन । पुत्रादिक जेते सबै ध्रुव दुःखहि के ऐन ॥

सोरठा ॥

रह्योपुत्र तव जौन अच्युतते आयो हुतो । तहहिं गयोपुनि तौन शोच करत तू क्यों नृपति ॥ तेहिनजानत जौन रह्यो पुत्रहौं भूपतव । अरु जानत बुधिभौन तुहूं ताहि क्यों करत शुक ॥

दोहा ॥

शोच करत है कौनको पूछत हौं मैं तोहि । अच्युतके आभासको की शरीरको जोहि ॥ शोच करत है देहको तौ सुनु जड़ है देह । काष्ठादिकहूको करो शोच परम करि नेह ॥ अच्युतके आभासको शोच करत जौ भप । तौ सुनु अच्युत एक है होय रह्यो जगरूप ॥

रामगीता छन्द ॥

दुख होत तृष्णा नाशते है भए दुखको नाश । सुख होत है पुनि दुखहु पीछे करत दुःख प्रकाश ॥ दुखके अनन्तर होत सुख है होत पुनि दुख वक्र । सुख दुःख दोऊ मानुषन के फिरत इमि जिमि चक्र ॥ यहि हेतु ते दुखभयो तुमको सुख अनन्तर भूप । सुख होय गो जू तुम्हैं प्रापत फेरि परम अनूप ॥ जन लहत है नहिं नित्य आनंद लहत नित्य न दन्द । सुख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दु:खको यहमै शरीरहि धाम भूप विलन्द ॥ सुनु जौन जौनसु देह करि कै करत देही काम । निश्चयहि भोगत तौन तौन शरीरहीसों आम ॥ नृप होत है उत्पन्न संगहि अल्प थूल शरीर । करि विविधि रूप प्रकाश संगहि रहत जगमें धीर ॥

सोरठा ॥

संगहि होत विनाश अल्प स्थूल शरीरको । जिनके ज्ञान प्रकाश भयो तौन जानत मनुज ॥

प्रवङ्गम छन्द ॥

सुवनादिक के नेह रज्जुसों जौन है । बन्धु रहत जन अक्षतारयहि तौन है ॥ नष्ट जात ह्वै इमि जिमि सेत सुरेतको । यहि जगतीके बीच लखे मैं केतिको ॥

हरिगीती छन्द ॥

अति अहंबुद्धिज क्लेश जो सो कर्षि करि कै प्रेमसों । उत्पत्ति मृत्युहि चक्रमाहीं रहित करि कै क्षेमसों ॥ इहिभांति पेरत तिलनकों जिमि तैलकार नृपाल है । यह कह्यौ मैं तिहिमांहि करु थिरि चलहि मनहिं विशाल है ॥ सुवनादि पोषण अर्थ मानव करत जौन कुकाम है । दुख लोक माहीं सोय पावत क्लेशकों अतिमाम है ॥ शुकपंक सागर माहिं परि सुवनादिमें रत जौन है । दुख लहत है इमि विपिनिको जिमि टट्ट मैगल तौन है ॥

सोरठा ॥

सुत बित ज्ञाति सुबीर नष्ट भएते अक्षते । अतिही पावत पीर हाय हाय करि रुदन बहु ॥

दोहा ॥

सुख दुख अरु उत्पत्ति अरु नाश भूप ए सर्व । भाग्यहिके आधीन है निश्चय जानु अखर्व ॥ जे जन हैं बहुशत्रु अरु जे जन हैं बहुमित्र । अरु जे हैं सह अक्ष अरु जे सह प्रक्ष पवित्र ॥

आभीर छन्द ॥

भाग्यहिते ते सर्व । दुख सुख लहत अखर्व ॥ दुख सुख दीबे माहिं । कोऊ समरथ नाहिं ॥

दोहा ॥

धन सुखकारक है नहीं बुद्धि द्रव्य भूपाल । यामें संशय है नहीं भनत बुद्धि सुविशाल ॥

तोमरछन्द ॥

नहिं लाभ होत महान । वरबुद्धि सों बुधिमान ॥ अरु मूर्खता करि होत । नहिं हानि है बुधि पोत ॥ सब भोग्य वस्तु सुजान । तिनको सु जो निर्मान ॥ तिहिमाहिं निश्चय जौन । वर प्रक्ष जानत तौन ॥ बलवान औ बलहीन । अरु शूर भीरु प्रवीन ॥ जड़ मूढ़ पण्डित जौन । तिनमाहिं है बुधि भौन ॥

दोहा ॥

सुखभागी हैं जौन जन ते सुख लहत महान । दुखभागी हैं जौन जन ते दुख लहत सुजान ॥ बछरा स्वामी गोप अरु लोभी चोर अखर्व । एक सुरभी को कहत ए अपनी अपनी सर्व ॥ पै इन सबहिन माहिं जो पीवत दुग्ध प्रवीन । सुरभी ताही की गुणो औरै काहू की न ॥ ऐसेहि माता कहति सुत अपनो करिकै प्यार । पिता कहत अपनो सुवन करिकै प्रीति अपार ॥ भगिनी अपनो कहति है भाई करि अति प्रेम । इमि कुटम्बके और सब अपनो कहत सक्षेम ॥

सोरठा ॥

पै इन सबमें जौन तासों जो सुद लहत है । ताहीको बुधिभौन जानो वह नहिं अन्यको ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

ब्रह्मज्ञानको प्राप्त भे जे निश्चय करि पर्म। अरु जे मानत मूढ़ अति जगके माहिं सुकर्म ॥
तेई अति आनन्दको प्राप्त होत भूपाल। और दुःखको लहत हैं कहत सुप्रज्ञ बिशाल ॥
ब्रह्मज्ञानमें रमत हैं मन थिर करिकै जौन। अरु सुसुप्तिमें रमत जे अन्तरमत नहिं तौन ॥
प्रापति ज्ञान सुसुप्तिको ताहि कहत आनन्द। अन्तर इन दोऊनको ताहि कहत बुधवृन्द ॥
परम ज्ञानके मोदकों सुनो लहत है जौन। काहूसों नहिं ईर्षा करत तौन बुधिभौन ॥
अर्थ अनर्थ न देतहै तिनकों श्रेय अश्रेय। महत प्रज्ञ ते कहत है मनहि ज्ञानमें देय ॥
प्राप्त भए नहिं ज्ञानको तजै मूढ़ता जौन। अतिहि मोद शन्तापको प्राप्त होत जन तौन ॥

अरिलछन्द ॥

तिनहीं रहत मूढ़ हैं सुदमय। ज्यों सुरलोकमाहिं सुरकेचय ॥ महत गर्ब सो लहत अनादर। तबहूं ज्ञान गहत नहिं सादर ॥

तोमर छन्द ॥

नहिं मूढ़ हैं जन जौन। रत ज्ञानमें बर तौन ॥ मन नित्य राखत भूप। सुखदाय जानि अनूप ॥

दोहा ॥

सुखकों देखि दुखान्त अरु दुखकों देखि सुखान्त। प्राप्त होनको ज्ञान बर साधन करै नितान्त ॥
बसति बिभूति सुदत्तमें प्रियसमेत मति ऐन। निश्चय जानहु भूप बर बसति आलसी मैन ॥
प्राप्त जौन हैं दुःख सुख अप्रिय प्रिय भूपाल। तिन सबहिनको भोगिये धीरज धारि बिशाल ॥
सहसन लक्षण शोक अरु साध्वसके हैं गेह। तिनको प्रापत होत है मूढ़ नहीं बुधिगेह ॥

अरिलछन्द ॥

ज्ञानवान बेदज्ञ सुमति मत। अनसूयक अरु इन्द्रियचितजित ॥ जे जन हैं ते जन कबहू नहिं। प्राप्त होत हैं शोकघोक महिं ॥

दोहा ॥

बर बुधजन यह जानि कै कामादिक जे सर्ब। तिनसों मनको गुप्त करि चलत नरेश अखर्ब ॥
जिहिकारणते होय दुख शोक ताप श्रम भूरि। सो अंगमें जो होय तौ अंगहु कीजै दूरि ॥
ममता सों कल्पित कछू बस्तु होय भूपाल। सोई सबपरितापको प्रापत करत बिशाल ॥
तजिदे जो जो कामना सोसो देति अनन्द। कामहिं पीछे नशत जन जौन सकाम नरेन्द ॥
जौन कामना को शरम लोकमाहिं यहि सर्ब। स्वर्गमाहिं अरु प्राप्तिको जो है शर्म अखर्ब ॥
पै तृष्णाक्षयतें परम होत शरम है जौन। षोडशांश सम तास ए होत नहीं बुधिभौन ॥
जैसे पूरबदेहकृत कर्म अशुभ शुभ भूप। तैसे भोगत भीरु भट मूरख प्रज्ञ अनूप ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

जीवनमें सुख औ दुख नितिही। फिरत प्रकाश किए हैं अतिही ॥ यह गुणि कै बुधजन हिय माही ॥ बैठे रहत सुचित्त सदाही ॥

दोहा ॥

सबकामनके द्वन्दकों निन्दि निन्दि ते सर्ब। करत पीठि पीछे परम दुःखद जानि अखर्ब ॥
देहिनमें यह काम जो जानहुं सोई क्रोध। देहि होत जिमि दुग्धको जानत लोन सबोध ॥
लेश केलि सबकाम जब जिमि कूरम तनखच्च। आत्मजोति तब होत है आपुहिमाहिं प्रतच्च ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरै आपु काहूनसों अरु न आपुसों कोय। ऐसी विधि सेतीरहै कामादिकको गोय ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

न राखै विरोधै न कामैहि राखै। कबौंहू नहीं झूठ औ सांच भाखै ॥ सबै छोड़ि दे शोक आनन्द थोकै। तजै प्रीय अप्रीय इन्द्रीय रोकै ॥ जबै सर्वप्राणीनमें पाप भावै। करैकी कबौहूं मनोमैं न लावै ॥ तबै जात है होय जू ब्रह्मप्रानी। निसन्देह मानो कहैं ब्रह्मज्ञानी ॥

दोहा ॥

कुबुद्धीनसों जाति है छोडि दुःखसों जौन। दृढ़ होत जिमि मनुज तिहि होति सुपौढ़ी तौन ॥ महारोग प्राणांत जो तृष्णा ऐसी भूरि। ताहि तजेसों रहत जन महत मोदसों पूरि ॥

रामगीती छन्द ॥

वर कही गणिका पिंगलाकी कथा एक अनूप। मैं कहत यहि परसंगहीमें तौन तोकों भूप ॥ सुनि पिंगला अति कष्टवारो भए प्रापत काल। शुभ सनातन धर्मको सो भई लहति विशाल ॥ नृप अर्थ रहिता भएतें संकेतमें विनपीय। गतकष्टमें ह्वै कै अनन्तर शांति मति गहि हीय ॥ गुणि पिंगला जो कह्यौ सो मैं कहत हौंसुनु भूप। हियरमण अति आनन्दरूप सु विद्यमान अनूप ॥ च्युत होत नहिं कबहूं न ऐसो कांत जो है ताहि। मैं दयो ढपि अज्ञानसों जान्यो नहीं अवगाहि ॥ एक घृण है अज्ञान ताके माहिं ऐसो आम। यह जो शरीर अगार पार्थिव दुखद अतिही भाम ॥ मैंनासिकादिक द्वार ताके ढांपि दैहौं सर्व। उत्पन्न जो भो ज्ञान तासों सुखद परम अखर्व ॥ हिय रमण सुदमय नित्य जो है कांत ताकों जानि। अब कौन अज्ञज कान्त कान्ता भावको है मानि ॥ अब ठगि न सकि हैं मोहिं छटसों नरकरूपी पर्म। मैं भई ज्ञाता औ अकामा जगति हौं सह शर्म ॥ वर पूर्व कृत सो किधौं सुरकी कृपातें अभिराम। जौन अर्थ अनर्थ हमको अर्थ भो सो भाम ॥ अब विषय रहिता ज्ञानरूपा भई हौं अतिस्वच्छ। वस भई मेरे सर्व इन्द्रिय भए ज्ञान प्रतच्छ ॥ निति सोवते हैं श्रेय सो है रहित आशा जौन। यहि हेतुतें नैरास्य जान्यो महाआनंदभौन ॥

दोहा ॥

आशा कों तजि पिंगला प्राप्त भए तें ज्ञान। निर्भय ह्वै सोवति भई आनंद सहित महान ॥ ज्ञान भएते परम ए सुनि सुविप्रके वैन। पुत्रशोक तजि सेनजित होतो भयो सचैन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे प्रथमो ऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥

आशा जीति महान करै सुइच्छा मोक्षकी। यह तुम कह्यौ सुजान तात पूर्व अध्यायमें ॥

दोहा ॥

सुन्यां तौन थिर करि मनहि अब ए कारण और। पूछत हौं मैं तौन तुम कहौ तात करि गौर ॥

जयकरी छन्द ॥

सबको नाश होत जिहि मांहि। होत वितीत कालकों ताहि ॥ कौन श्रेयकर की जै तौन। कहौ पितामह प्रज्ञाभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगके माहीं भूप। कहत एक इतिहास अनूप ॥ पिता तुमको तामें पर्म। है संवाद असन्द सुकर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगीती छन्द ॥

वर एक द्विज है परम धर्मी बेदपाठी साम। भो होत ताके पुच उत्तम महामेधा धाम ॥ अभिधान ताको होत मेधावी भयो भूपाल। सो लोक कारज मेऊ तो मति ओक दच्च विशाल ॥ अरु मोक्षधर्मज्ञ मांहि सो हो बिचक्षण अवदात। गुणि भयो पूंछत पिताकों इहि भांतिसों हे तात ॥ पुचउवाच ॥ सुनु पितर हे जब असद सदको होय प्रापत ज्ञान। तब कहा करिये कहौ मोकों आपु प्रश्न महान ॥ मैं जानि तिहिकों करौं जू आचरण सुनि बिख्यात। निजु मनुष्यन की आय जो सो नशत क्षिप्रहि तात ॥

पितोवाच ॥ सोरठा ॥

पूंछो तुम यह जौन सो अति उत्तम प्रश्न है। सुनऊ तात बुधिभौन गुणि कै तुमसों कहतहौं ॥

दोहा ॥

ब्रह्मचर्य्य बत करि सबिधि पढ़ै प्रथमही बेद। करै फेरि पितृकार्य्य कों करि कै मनहि अखेद ॥ तदनन्तर इच्छा करै पुच प्राप्तिकी तात। बिधिसों अग्नि स्थापि पुणि करै यज्ञ अवदात ॥ बसै बिपिनमें जाय पुनि होय सुमुनि अभिराम। यहि धर्महि को गहत सो लहत मोद है नाम ॥

पुचउवाच ॥ सोरठा ॥

ताड़ित है यहलोक अरु चऊधांसों ग्रसित है। आयु हरणि बुधिओक जामेपरति प्रतक्ष यह ॥

दोहा ॥

आपु स्वस्थसे ह्वै कहत ह्वै कै महत सुजान। यातें अचरज होत है मो हिय मांहि महान ॥

पितोवाच ॥

कासों ताड़ित लोक अरु ग्रसित कौनसों तात। आयु हरणि है कौन तुम कहौ मोहिं बिख्यात ॥

पुच उवाच ॥

ताड़ित है यह मृत्युसों ग्रसित जरासों लोक। आयुहरणि तामें परति निशा तात बुधिओक ॥

आभीर छन्द ॥

जानत हौ तुम कौन। तात परम बुधिभौन ॥

दोहा ॥

नितिहीं आवति जातिहै आयु हरणि निशि जौन। मृत्यु जानिबे में कहा तौ संशय बुधिभौन ॥

सोरठा ॥

आगे करिहै धर्म यहितें किमि इच्छा करै। यह हे तात सधर्म हम सब छादित प्रकृतिसों ॥

अरिल छन्द ॥

सुनो निशा बीततिहै जिमि जिमि। आयुष अल्प होतिहै तिमितिमि ॥ जादिन नहीं श्रेय कर कारज। होत तौन दिनको बत आरज ॥ निष्फल कहत उदासीसो अति। पलऊ लहत न आनंदकी गति ॥ प्रापत काम होत जनको जब। थोरे जलके मच्छकलौं तब ॥ कोऊ सुखको होत प्राप्त नहिं। कहत सुबुध है ज्ञान परम गहि ॥ काम्यकर्म फल जौन बिचारत। शास्त्र दृष्टिसों होय महारत ॥ काम्यकर्महीमें मन यापत। तिनकों मृत्यु होय कै प्रापत ॥ लेय जात ऐसे हैं गहि करि। जैसे टकी वोरणकों धरि करि ॥

दोहा ॥

ताते जू शीघ्रहि करो श्रेयकारजे काज। खोवो व्यर्थ न काल यह गहिकै ज्ञान दराज ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरी छन्द ॥

अकृत कार्य्यहीमें सुनु तात। अन्तक प्राणीको ले जात ॥ तातें करनो प्रातःकाल। जो कारज सो करिये हाल ॥ आपरान्ह में कीवे जौन। पूर्वान्हहिमें कीजै तौन ॥ जनको कियो अनकीयो काज। मृत्यु बिचारत नहिं बुधराज ॥

दोहा॥

मृत्यु कालह्वैहै अबहि किहिको जानत कौन। यातें शीघ्रहि कीजिये धर्ममार्गमें गौन ॥

मोरठा ॥

किए धर्म अवदात होति कीर्ति यहिलोकमें। निश्चय जानहु तात होत श्रेय परलोकमें ॥

दोहा ॥

पिता मात औ भ्रात सुत तिनके पोषणकाज। मोहि मोहि पगिकै महत जो जन करत कुकाज ॥

बरवै छन्द ॥

जात मृत्यु है ऐसें लैकैताहि। व्याघ्र सोवते मृगको जैसे चाहि ॥ जौन कामन सों जन तृप्त न तात। नितिही करत कुसंग्रह अतिहर्षात ॥ जात मृत्यु तिनको हू लै इमि आय। पंचानन गहि पशुको लै जिमि जाय ॥ इच्छा सुखाशक्त है अरु जन जौन। फलहि कर्मके प्रापत होत न तौन ॥ अरु जे रहत गृहादिकहीमें पागि। पुत्र पौत्रनवारि सुरतिमें लागि ॥ मृत्यु जात तिनकोहू लै करि तात। क्षिप्रहि गुणिकै कहत सुबुध अवदात ॥

दोहा ॥

मृत्यु बिचारै दुर्बलहि नहिं बलवतहि न अक्ष। नहिं मूर्खहि नहिं कादरहि नहीं शूर नहिं प्रक्ष॥

हरिगीती छन्द ॥

है जरा औ बहु व्याधि दुःख अनेककारण देहमें। तुम स्वस्थलौ बैठे कहा है तात सुनिये गेहमें ॥

दोहा ॥

जराकाल अरु जननको कीवे काज विनाश। सो हे आवन लगत है जन्मतही बुधिराश ॥ इन दोउनसों युक्त है जीव चराचर सर्व। यह विचार हिय में करै प्रज्ञावान अखर्व ॥ ग्रामजननकी प्रीति जो सो है अन्तकथान। सभासदन आरण्यहै देवनको मतिमान ॥ प्रीति बन्धनीरज्जु है ग्रामजनन की तात। याहि काटि धर्मात्मा मुक्ति लहत अवदात ॥ जो जन है पापात्मा काटि सकत नहिं तौन। प्रीति रज्जु में बंधि खिचत इत उत दुर्मतिभौन ॥ जो जन मन बच कर्मसों हिंसा करत कबौन। बन्धनमें नहिं परत है सो जन प्रज्ञाभौन ॥

रामगीतीछन्द ॥

जो चली आवति मृत्यु बारी चमू बुद्धिअगार। सुनु सकत मारि न ताहि कोऊ कहत करि निर्धार ॥ अति जौन उत्तम ज्ञान सो हनि सकत है अवदात। बरज्ञान माहीं रहत है अमरत्व निजु हे तात ॥ जो ब्रह्म प्रापति होनको जन करत है जप नेम। अरु ब्रह्म माहीं मिलनको जो क्रिया करत सप्रेम ॥ श्रुति औ गुरुके वाक्यको है सत्य मानत जौन। निज सुनहु पित बर ज्ञानसों अन्तकहि जीतत तौन ॥ अमरत्व मृत्यु सुरहत दोऊ देहहीमें तात। अमरत्व प्रगटै ज्ञानतें अरु मृत्युसों मोहात ॥ ह्वैकै अहिंसक सत्यबादी क्रोध तजि अरु काम। सुख दुःखकों सम जानि करिकै ज्ञानसों शुचि माम ॥ निजु छोड़ि हौं इमि मृत्युको जिमि दई तजि सुरज्येष्ठ। इन्द्रियनकों सब जीति हौं है ज्ञानसों मैं श्रेष्ठ ॥ बर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोक्षपथ अभ्यासमें निति निरत रहिहौं तात। अरु मनन शील सुहोयके श्रुति पढ़नमें अवदात ॥ निति स्नानादिक क्रियाहूमें निरत ह्वै हौं दक्ष। अरु गुरुबारी भक्तिमाहीं सहित प्रीति प्रतक्ष ॥

दोहा ॥

पशुमखमें कैसे करों सुनहु तात सबिबेक। मोमें औ पशु माहिंमें जानत आत्मा एक ॥

आभीर छन्द ॥

जाके है आधीन। मन औ बाक प्रबीन ॥ योग त्याग तप पर्म। सो जन लहत सधर्म ॥

जयकरी छन्द ॥

चक्षु नहीं है ज्ञान समान। औ न सत्य सम तपस महान ॥ राग समान दुःख नहिं तात। त्याग समान आनंद अवदात ॥ करत बिचार नित्य यह प्रक्ष। कबहुं बिचारत है नहिं अक्ष ॥ ब्रह्मरूप करि ब्रह्महि माहिं। भयो न पितसों माता माहिं ॥ अरु मैं ब्रह्महि माहिं सुजान। ब्रह्मरूप करि कै सुख मान ॥ ह्वैहौं पुत्ररूपसों नाहिं। निश्चय है नारी के माहिं ॥

रामगीती छन्द ॥

जो बास निर्जनथानमें औ सबनमें समभाव। आचरण में अरु जो प्रशंसा योग्य बर बुधराव ॥ अरु त्याग हिंसाको महा अरु सत्यभाव अखर्ब। बर क्रिया जेती करी उत्तम त्याग तिनको सर्ब ॥ है बित्त जैसो बिप्रके यह है न तैसो और। सिद्धांत जानो महत यह तुम कहत हम करि गौर ॥

दोहा ॥

जौ तू मरि है तात तौ कहा द्रव्यसों सिद्धि। अरु दारादिकहून सों कहा सिद्धि बुधि निद्धि ॥ बुद्धिमांहि जो प्राप्त है ब्रह्ममोद मय पर्म। करिकै तास बिचारकों होहु तात सहधर्म ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

मेरो अन्तकाल किमि जानो। जौ तुम ऐसे मोहि बखानो ॥ तौ मैं कहत तुम्हें हो सुनिये। मेरे बचन हियेमें गुणिये ॥

दोहा ॥

गये पितामह तब कहां अरु तव पिता सुजान। यहिते जानत तुमहु निज मरिहौ गुणहु नआन॥

भीष्म उवाच ॥

पिता बचन ए सुवनके सुनिकै बर बुधिगेह। ज्ञान भए करतो भयो मोक्षधाम सों नेह ॥

मोरठा ॥

तिमही कुन्तीनन्द मोक्षधर्मसों नेह करु। गहि कै ज्ञान बिलन्द तजि प्रमादताको परम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्मे पितापुत्रसंबादो नाम द्वितीयो ऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥

युवा अवस्थाहीमें साधन करै मोक्षको खक्ष। पितापुत्रके संबादैकहि तुम यह कह्यौ प्रतक्ष ॥ सो बिन यक्षन होत है धन बिन होत न यक्ष। यातें निधनी पाय है मोक्ष कहौ किमि प्रक्ष ॥

भीष्मउवाच ॥

कह्यौ मोहिं सम्याकऋषि एक इतिहास अनूप। यहि प्रसंगमें कहत हौं सो मैं तुमकों भूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजुगिता छन्द ॥

धनहीन सो द्विज पर्म है। अरु बुद्धिमान सुधर्म है ॥ बर तेजको वह धाम है। अरु सत्यमान ललाम है ॥ अति भूषण बस्त्रमलीन सों। दुखयुक्त दारिद पीनसों ॥ इमि मोहिं सो द्विज चाहिकै। कहतो भयो अवगाहिकै ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ उत्पन्न जे यहिलोकमें। सुख माहिं कबहूं शोकमें ॥ सब होत प्रापत हैं सुनो। यहि माहिं संशय ना गुनो ॥ मति मानते यह जानि कै। बर बुद्धिसों अनुमानि कै ॥

दोहा ॥

हर्षित तौ नहिं होत है प्राप्त होय जौ शर्म। दुख प्रापत जौ होय तौ कष्टित होत न पर्म ॥ कामना न तुम करत हौ तऊ मुक्तिपद जौन। ताके सोहें चलत हो क्यों न आपु बुधिभौन ॥ गहि सुप्रतिज्ञा सर्वदा धीरज धारि महान। क्यों न करत बश आपने मनकों हे मतिमान ॥ त्यागीजन चहुंधां फिरत महत लेत कल्यान। सुखसों सोवत उठत है कहत न भीति सुजान ॥ याते हे गंगासुवन त्याग सोय आनन्द। त्यागहि है बर मोक्षको मार्ग चारु निर्द्वन्द ॥ यह मारगकों लहत हैं योगीजन अवदात। लहत कबहुं भोगी न निजु जानो गंगा तात ॥ अरु कामी जन जौन ते लहत न पथ यह पर्म। यहि मारगमें चलत जे कामी हैं न सधर्म ॥ रहित रागसों जौन जन तासम और न कोय। परम ज्ञान गहि रहत सो महामोदसों भोय ॥ त्यागभाव अरु राजको तोलत भो मैं दक्ष। कौन श्रेष्ट यह जानिबे बुद्धि तुलामें स्वच्छ ॥ गरू भयो अतिराजसों त्यागभाव सों पर्म। मैं निश्चय करिकै कहत गंगा सुवन सुकर्म ॥

सोरठा ॥

यतो विशेष महान त्यागभाव अरु राज्यमें। निति क्लेशित धनवान मृत्युवदन गतलौं रहत ॥

चरणा दोहा ॥

अग्नि चोर भय मृत्यु भय इन्द्रियपीड़ा जौन। जगत आश धनत्यागिको ए सु होत कबहौन ॥

जयकरी छन्द ॥

सदा कामचारी हैं जौन। अरु भूसाईं जे बुधिभौन ॥ जाकी शान्तप्रकृति अति होय। तिन्हैं सराहत हैं सुर जोय ॥ क्रोध लोभसों युत धनमान। नितिही रहत सुनो मतिमान ॥ मूखे बदन रहत हैं नित्य। तिनके बोलत रहत असत्य ॥ चलैं बक्र ह्वै तिनके नैन। बसे रहत पापहि के ऐन ॥

अरिल छन्द ॥

टेढ़ी भ्रकुटी नित्यहि राखत। कुत्सित बचन नित्यही भाषत ॥ तिनके पास जात नहिं बुध बर ॥ रहत दूरिही जानि दुष्टतर ॥

दोहा ॥

कमला ऐसे हरति मन मूरख को मतिमान। वारि बाह को लेतहै जैसे हरि पवमान ॥ अविचक्षण के चित्तको जब कमला हरिलेत। गहिकै धन कुल रूपको गर्वहि गहत अनेत ॥ गहिकै गर्वहि कहत इमि मैंहौं महा कुलीन। चाहौं जो मैं सो करौं मैं हौं परम प्रवीन ॥

सोरठा ॥

धन स्वरूप कुलगर्व प्राप्तहोत जब अबुध को। सुनिये अतिहि अखर्व प्रापत होत प्रमाद है ॥

दोहा ॥

ह्वै मदांधपुरुषान के धनको करिकै महान। भए दरिद्री चोरि महि करत प्रहति अज्ञान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि मर्याद को जहं तहां लेत द्रव्यअज्ञान । पावतखेद सो भूपसों ज्यों मृग वधिकके बान ॥

जयकरीछन्द ॥

कहत पीर इमि और अनेक । तऊ न छूटत है अविवेक ॥ याते ध्रुव भावी दुख जौन । दूरि करण के काजै तौन ॥ निन्दि देह इन्द्रिय को सर्व । करै उपाय सुपर्म अखर्व ॥ त्याग बिना नहिं कोऊ होत । सुखको प्राप्त सुनो बुधि पोत ॥ त्याग बिना नहिं ब्रह्म अनूप । प्रापत होत अनन्द स्वरूप ॥ त्याग बिना नहिं निर्भै कोय । कबहूं कहूं सकत नहिं सोय ॥ याते सबही को तुम त्यागि । सुखी होऊ मोमति में पागि ॥

सोरठा ॥

जबसों यह इतिहास श्रवण कियो वा विप्रसों । तबसों आनन्द रास जानत हौं मैं त्याग को ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी वासिगोकुल नाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे सम्याकगीता नाम तृतीयोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

त्याग मोक्षको हेतु है कहो मोहिं तुम तात । ताकोगुणि निश्चय कियो मैंमनमें अवदात ॥

सोरठा ॥

एक संशय मैं और पूछत हौं तुम तौनहू । कहिये करिके गौर बुद्धि गेह सन्देह हर ॥

रामगीती छन्द ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥

बर कृषी आदिक द्रव्य प्रापति होनकी सुउपाय । लगि करै तिनको तऊ कबहूं द्रव्य हाथ न आय ॥ निति रहै तृष्णा द्रव्यकी सो अतिहि पीड़ित जौन । जन कहा कीन्हे होय सुखकों प्राप्त भूपति तौन ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणादोहा ॥

कर्ममाहिं ईहा अभाव अरु सबमें भाव समान । अरु द्रव्यार्थमाहीं जो है आश्रमभाव सुजान ॥

दोहा ॥

सत्य और निर्वेदए पाँचौ जाके होय । सुखी सोय जन रहत है और सुखी नहिं कोय ॥

चामर छन्द ॥

मोक्षके स्थान पञ्च ए सुजान नानु है । शर्मकार भूरिदु:ख दूरिकार मानुहै ॥ धर्महै इन्हे नरेश जे महान प्रज्ञ है । धारिते सकै नहीं कबौऊ जौन अज्ञ है ॥

दोहा ॥

कहत एक इतिहास हौं यही प्रसंगमें भूप । प्राप्त भए निर्वेद ऋषिमंकी कह्यौ अनूप ॥

रामगीती छन्द ॥

बर ऋषीमंको द्रव्यकाजै करै बहुत उपाय । पै होय सिद्धि न एक पुनि पुनि व्यर्थहीह्वै जाय ॥ जो रह्यो बाकी द्रव्य तासों बत्स लीन्हे दोय । दृढ़ बांधि करिकौ तिन्हें शिच्याकाज निकस्यो जोय ॥ बलवान दोऊ बत्स पथमें ऊंट बैठो देखि । चकि भए धावत मध्यमें कै रह्यो मंकी पेखि ॥ ते भए प्रापत कन्धमें अनशील उष्टर होय । अति भयो धावत शीघ्र गति लै बच्छरनकों दोय ॥ गर ऊंटके में तहां मरते बच्छरणकों देखि । इमि कहत भो सो ऋषीमङ्को चित्तमें अवरोख ॥ धन जो नहीं है भाग्यमें बर दच्छहूं तौन । हमको सु निश्चय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयो प्रापत होत है कबहौंन ॥ फलकी सुप्रापति मांहि करि निश्चय सुभांति अनेक । लगि कर्म केते करो पैहै होत सिद्धि न एक ॥ भो द्रव्यके व्यापारमें मो पूर्व हो परिभाव । करि समाधान सुचित्त को हम कियो फेरि उपाव ॥ अब ऊंट औ बछरानके सम्बन्ध करिकै मोर । हा दैव कृत यह लखो जो भो है उपद्रव घोर ॥ हे कहा मेरे बत्स अरु यह कहा उष्टर हाय । दैवकृत पर संगसों मो दुखो बत्स उठाय ॥ धावतो है कुपथमाहीं विषम गहि कै चाल । बत्समेरे परम प्यारे ऊंट दुखद विशाल ॥ ऊंट गरमें बत्स झूलत चारु मणिलौ दोय । भाग्यमें जो लिख्यो सोई होत और न होय ॥

तोटक छन्द ॥

पुरुषारथ सों धन होत कहै । जन जे जगमें बर प्रज्ञ नहै ॥ धन होत नहीं पुरुषारथसों । हम जानि लयो मतिके पथसों ॥

दोहा ॥

पुरुषारथसों धन मिले भाग्यमांहि जो होय । भाग्यमें न जो होयतो परै नहीं कछु जोय ॥ ताते जो वैराग्य है धारण कीजै ताहि । जो धारत वैराग्य सो सुखसों रहत सदाहि ॥ धन साधनके मांहि मन सो जन लावत है न । जौन धरत वैराग्यकों करत सदा है चैन ॥ सर्वकामना सों छुटे श्री शुकदेव सुजान । महत ब्रह्मज्ञानी छते धारे मोद महान ॥

मौनी छन्द ॥

तिन यह भांति कह्यो है करि सिद्धान्त । जो जन भो सब कामहि प्राप्त नितान्त ॥ अरु कामनको त्यागे जो जन सर्व । तिन दोउनमें त्यागी श्रेष्ठ अखर्व ॥ अन्त सर्व कामनको जो है ताहि । प्राप्त भयो है कोऊ पूरव नाहि ॥ जब लग जीवत मानव मूढ़ अखर्व । तबलग बाढ़ति तिनकी इच्छा सर्व ॥

अरिलछन्द ॥

कामी निर्वेदै गहु तू अब । निवरत होत कामनासों सब ॥ कितो वार तव भयो अनादर । तऊ वैराग्य चहत नहिं सादर ॥ अविनाशी मोकों जो जानत । मोसह जो तु विहारहि ठानत ॥ तो मति लोभ संग मोकों करि । कहत वित्तकामुक तोसों अरि ॥ तैंसञ्चित धन कीन्हौं जब जब । होय गयो है नष्टहि तब तब ॥ धनकामुक कबहूं ज्ञानै गहि । धन छाहि तजिहै को तू नहि ॥

दोहा ॥

मेरो है मूढ़त्व यह जासों तैं करि ख्याल । राख्यो करि वश आपने मोकों दुखद विशाल ॥

जयकरीछन्द ॥

कामवान जो हो तो तून । परदास्यहि करतो को ऊन ॥ पूरव अपर समयके माहिं । काम अन्तगो कोऊ नाहिं ॥ याते धन उपाय सब त्यागि । मैं प्रतिबुद्धि भयों अब जागि ॥ है तव हियरो बज्र समान । मैं निश्चय है कियो महान ॥ युक्त अनर्थ बढ़नसों जौन । तउ बन होत विदीरण तौन ॥ जैसो तूहै तैसो आम । अब हम जानि लयो है काम ॥

बारछन्द ॥

और जौन तेरे प्रिय तेऊ हम जाने । जैसो तू तैसे तव प्रियहू सब माने ॥
तेरे प्रिय जेहैं तिन मांहो निति पागे । आतम सुखके न कबौं निकटै हम लागे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरीछन्द ॥

मूल तिहारो अब है आम। जानि लियो है सुनुहे काम ॥ मन सङ्कल्प करत अवतार। तेरो हैहै दुखद अपार ॥ करिहौ सङ्कल्पहि अब नाहिं। जासों तू न होय मो मांहि ॥ धन इच्छा सो दुखद महान। लब्ध करै धन चिन्तावान ॥ धनकी प्रापति मृत्यु समान। भूरि दुखद है कहत सुजान ॥ धन प्रापति ह्वै है की नांहि। संशय तास उपायहि मांहि ॥ दासत्व कीन्हें मिलत न जौन। तासम दुखद और है कौन ॥ लब्ध द्रव्यसों तोषत नाहिं। धनकी रहै उपायहि माहिं ॥ धन सों तृष्णाकार बिशाल। जैसे गंगा को कीलाल ॥ नाश यत्नको जाके मांहि। ऐसो द्रव्य दुखद है ताहि ॥ अब हम जानि लयो है आम। ताते हमैं छोड़ि दे काम ॥ मो शरीर आश्रितहै जौन। दारा पुत्रादिक सब तौन ॥ बसै जहां मन आवै नाहि। हमसों कछूकाम है नाहि ॥ पिता पुत्र अरु पौत्र सुदार। तिनमें है नहिं प्रीति हमार ॥ ताते सब कामनको त्यागि। रहिहौं सत्व सुगुण में पागि ॥ सर्व भूतमय आतम जौन। हृदय कमल में लखिकै तौन ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

मतिको योगमांहि में धरिकै। श्रुतिमें चित्त एकाग्रहि करिकै ॥
मनकों ब्रह्ममांहि में धरिहौं। राग द्वेष सबही परिहरिहौं ॥

हरिगीतीछन्द ॥

सुख सहित मैं करिहौं बिहारहि काम तोको त्यागिकै। नहिं प्राप्त ह्वैहौं फेरि दुखमें काम तामें पागिकै ॥ जो योग माहीं धरी मेधा तिहि बिना न उपाय है। है और तोसों छुटनको हम कहत निजु दुखदाय है ॥ श्रम शोक अरु जो महत तृष्णा तास तूही धामहै। जे तजत तोकों प्राप्त ते जन होत सुखकों मामहै ॥ हमको परो अब जानि धन दुखदाय अतिही होतहै। जब नाश ताकों लहतहै तब करत क्लेश उदोत है ॥

कमलाछन्द ॥

धन गहनहि जानिकै। चौर बहु आनिकै ॥ पकरि धनवानकों। बांधिकै पाणिकों ॥
महत अति मार दै। शिर उपर भार दै ॥ देत बहु क्लेश है। खैंचिकै केश हैं ॥

तोमर छन्द ॥

एहिहेतुतें धनमांहि। मनमैंलगैहौं नांहि ॥ अरुकाम तोहु नगीच। मनहौंन देहुं न नीच ॥

शोभाछन्द ॥

बहुत दिननसों तेरे। जानत हौं गुणएरे ॥ दुख अरु चञ्चलता है। तोमें और कहा है ॥

अरिलछन्द ॥

जगमें जो तू बस्तु निहारत। तिन सबको तू लेन विचारत ॥
अनल अघात नहीं कबहू जिमि। कबहू अघात नहींहै तू तिमि ॥

रामगीतीछन्द ॥

हैसुलभदुर्लभवस्तुतिनको तू विचारतनांहि। तू असन्तोषी परमहै सन्तोषी नहिंतवमांहि ॥
जिमिभरतकाहूको भरो कबहूनहींपाताल। तिमि भरतहै कबहून तूहू अरे कामविशाल ॥

दोहा ॥

युक्त मोहिं तू दुःखसों कियो चहत है फेरि। सो अब मैं ह्वैहौं नहीं कहत तोहि हौं टेरि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणा दोहा ॥

अब प्रवेश कीवेकी मोमें शक्ति न तोमें काम । तोहि तजेते मोकों एरे प्राप्त भयो सुखमाम ॥

जयकरीछन्द ॥

दुःख पायहौ मोबिन माम । ऐसें कहे मोहि जो काम ॥ तौ सुनु एरे दुखद अखर्व । महत कलेश सहोंगो सर्व ॥ पै अब अमति मानलौ भूरि । नहिं चहिहौं तोकों रज दूरि ॥ धनबिनसे हानिन्दित पर्म । पै सो वहौंगो मैं सह शर्म ॥ मैं चितकी गति तजिकै सर्व । तोहिं तजतहौं काल अखर्व ॥ तातें कबहुं न संग हमार । बसिहै तू सुनु दुखद अपार ॥

चरणा दोहा ॥

मैंसुनिकैअपमानकारकेबचन नकरिहौंक्रुद्ध । क्षमाधरेहौरहिहौं नितिअबकीवेकोंमनशुद्ध ॥

सारंग ॥

सुनु मारि हेजौनजन मोहिं अब आय । मैं मारिहौं ताहि नहिं क्रोध धरि धाय ॥ करि श्रवण अप्रीय बैरीनके बैन । गुणि हौं न अप्रीयमैं कहतहौं ऐन ॥ बैरीनकोकहौंगो मिष्ठमैं बोल । कबहुं न धरिहौं हिए भावको लोल ॥ अरु दया सबजीवकी धारिहौं माम । नहिं चाहिहौं ताहि हे कबहु मैं काम ॥

दोहा ॥

इन्द्रियको जो जीतिबो सुखअरु क्षमा अक्रोध । शांति तृप्ति निवद अरु अरुजो है वरबोध ॥ इन सबहिनको प्राप्त भो मोहिंजानु हे काम । ताते होहु नपास मम लोभादिक सब माम ॥

तोमर छन्द ॥

अब छोड़ि दे तू मोहि । सुनु हे कहौ हौं तोहि ॥ अब सत्व गुण अभिराम । तिहि प्राप्त ह्वै करि आम ॥

दोहा ॥

ब्रह्म नगरको मैं कियो परम धान तजिसर्व । अब लोभादिकके नहीं मैं वशमाहिं अखर्व ॥

कमलाछन्द ॥

अन्न जिमि भूरि है । रहत दुख पूरि है ॥ तिमि न दुख पाय हौं । काम दुखदाय हौं ॥ कामना जौन है । सर्व दुख भौन है । छोड़ि दे जौनहो । देति सुख तौनहो ॥

रंगिकाछन्द ॥

महत रजो गुणको परकाश परम दुखद हम जानो ।
ताते अमरष काम बिशाल हो निजुहि अनुमानो ॥

दोहा ॥

तिहितेछोड़ि रजोगुणहि ब्रह्मनगरके माहिं । बसिहौंमैं ऐहौं नहीं कामादिक के माहिं ॥

रंगिकाछन्द ॥

ग्रीषम में पावत नहिं ताप ह्रद अगाध में जैसे ।
छोड़ि सब कामादि कलाप दुख न लहत है तैसे ॥

मौनीछन्द ॥

कामादिक को छोड़ि लह्यो अनन्द । नष्ट गए ह्वै मेरे सब दुख द्वन्द ॥
मोद कामको जोहै यहि जग माहिं । अरु जो प्रापत को है देवन पाहिं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृष्णा बिनशे जो सुख करत उदोत। षोड़शांश सम ताके सो नहिं होत॥
याते तृष्णा जाने दुखदा पर्म। दई छोड़ि तिहिते मैं भयों सशर्म॥

कबित्त॥

अन्नमय प्राणमय मनमय ज्ञानमय आनन्दमय पांचकोष ए बखाने हैं।
षष्टम समाधि ताते सप्त है काम साम दुखदाई ताहि छोड़ि अरिलौं महाने हैं॥
मङ्की इमि कहत महत मोद भयो होय प्रापत अवध्य ब्रह्म पुरको पुराणे हैं।
भूपलों महान होय कै प्रतापमान अति सुखको निदान पाय बैठे हरषाने हैं॥

भीष्मउवाच॥ सोरठा॥

ऐसी मतिको होय प्रापत मङ्की सुऋषि बर। महा मोदसों भोय निर्वेदहि पावत भयो॥
तजि कामन को पास पायो ब्रह्मज्ञान को। भए बछन को नाश अमृतत्वहि पावत भयो॥
इच्छावृक्ष अमूल कीन्हों ज्ञान कुठार सों। तासों भयो अतूल प्रापत मङ्की मोदका॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिगोकुलनाथ कबीश्वरात्मजगोपीनाथशिष्येनमनिदेवेनकबिना बिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मे चतुर्थोऽध्यायः॥

भीष्मउवाच॥ चरणादोहा॥

उदाहरण एक और देत हैं यहि प्रसंग सें प्रश्न।
कहि इतिहास जनक भूपति को कह्यौ परम धरमश्न॥

जनकउवाच॥ सोरठा॥

द्रव्यादिकहै जौनतिनको अपनो जानिबो। भ्रान्ति माच है तौन रज्जु मांहिज्यों उरग की॥
प्राप्त भए तप ज्ञान मोको होत न दुःख है। लागे अग्नि महानजरति देखि मिथिलापुरी॥

दोहा॥

बुधजनएहिप्रसंग में उदाहरण एक और। देतबोध्य बरविप्र को कहि वृत्तान्त सगौर॥
सुनो युधिष्ठिर कहतहौं तुमको सो उदहार। नहुष भूप पूंछत भयो बौद्धहि बुद्धिअगार॥
भयो शान्तिको प्राप्त सो लहि निर्वेद महान। शास्त्रमाहिं प्रज्ञान जो तासों तृप्त सुजान॥

नहुषउवाच॥

अहो बौद्ध बर मोक्षको करहु मोहिं उपदेश। कौन सुमतिवह आपुसों पूंछतहौं शुभवेश॥
ताकोप्रापतहोय तुम सहित शांति आनन्द। रहत नित्य सो मोहिं तुम कहिये बुद्धि बिलन्द॥

बौद्धउवाच॥

उपदेशन हम करत हैं काहू को भपाल। औ काहू को करत हैं शिक्षा नहीं बिशाल॥
मोक्षको सुउपदेश जौ ताको लक्षण जौन। आपुहि लेहु बिचारि नृप कहत तुम्हें हम तौन॥
अहि सारंग औपिंगला बेश्या औशरकार। औकुमारिका कुररए हैं षट गुरू हमार॥

सोरठा॥

गृहारंभ दुखदाय सुखदायक कबहूं नहीं। परकृतगृहमें जाय बसेरहत सुखसों उरग॥

अरिलछन्द॥

भिक्षावृत्ति आश्रित हैं जे मुनि। सुख सह जीवत ते भूपति सुनि॥ छोड़ि द्रोह सब जीवन को जिमि। सुखसों रहत बिहंग सारंग तिमि॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

आशा सों अति कष्ट है सुख नैराश्य महान। सूती वेश्या पिंगला आशा तजे सुजान ॥
विरचत हौं एक तीरको तीरकार मनलाय। जान्यो वै नहिं निकट है ताके गो नरराय ॥

सोरठा ॥

कुमारिका के धाम सन्यासी कहुंते चले। आए तपके धाम तेज भरे औ सत्वमय ॥
तिनके भोजन काज लगी बनावन धानको। बरमें चुरी समाज कीन्हों शब्द दराज अति ॥
तब सब डारी फोरि राखी करमें एक एक। भयो न सब्द बहोरि लगी बनावन शंक तजि ॥
ऐसें आपुहि एक रहै लहै तो मोदकों। करि कै परम विवेक सुनहुं नृपति तुमकों कह्यौ ॥
सुख नैराश्य महान वेश्यासों सीख्यो सु यह। सुनो नृपति मतिमान त्यागभाव सो कुररसों ॥
नित्यहि परकृतधाम रहिबेसों है होत सुख। सुनो नहुष अभिराम यह मत सीख्यो उरगसों ॥
द्रोह न राखत जौन काहूसों सो रहत है। महामोदके भौन यह सीख्यो सारंगसों ॥
मन लगायबो भूप सीख्यो हम शरकारसों। प्रज्ञावान अनूप धाम शील शुभधर्मके ॥
रहब अकेलो जौन ताहीसों सुख होत है। सीख्यो है हम तौन कुमारीकी चुरनसों ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येनमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांति पर्वणि मोक्षधर्मे पंचमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥

ऐसो खच्च सुव्रत है कौन। सुनहु पितामह कीन्हे तौन ॥ रहित सर्व शोकन सों होय। रहै महीमें सुखसों भोय ॥ औ ऐसो है कौन सुकर्म। ताहि किये उत्तमगति पर्म ॥ ताकों प्रापत प्राणी होय। कहिये ज्ञान नैन सों जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ वर इतिहास अच मैं एक। कहत सुनहु सो नृप सविवेक ॥ अजगर सुमुनि और प्रहलाद। तामें है तिनको सम्वाद ॥ हो कोऊ एक विप्र सचेत। तिहि द्विजको प्रहलाद सहेत ॥ पूछत भो ऐसे मतिमान। करिकै आदर तास महान ॥

प्रहलादउवाच ॥ अरिलछन्द ॥

तुम दम्भादिक को नहिं धारत। खस्थ रहत वर वाक उचारत॥ करत असूया काहूकी नहिं। कुत्सित वचन रहत सबके सहि। धरे रहत हौ बाल सुभावहि। लाभ मार्गमें देत न पावहि ॥ नितिहि तृप्तसे तुमको देखत। काहूको न अनादर लेखत ॥

चरण दोहा ॥

कामादिक जलके प्रवाहमें वहति प्रजाकोआपु। देखिदेखिकै लेखिलेखिकै होत सहित सन्तापु॥

हंसा दोहा ॥

अर्थ धर्म अरु कामना तिनमाहीं व्यापार। करत नहीं हौ कबहुं तुम लहिकै यह संसार ॥

चतुराननछन्द ॥

लगन देत नहिं विषयमांहि तुम परिभव इन्द्रियको कै। शाचीलों रहते हौ नित्यहि छोड़ि हर्ष औ शोकै ॥ कौन शास्त्र अरु कौन बुद्धि वह कौन वृत्ति है जाको। प्रापत होय भए हौ ऐसे धारे ज्ञान महाको ॥ मधुभार छन्द ॥

सुनिए सुबैन। वरबुद्धि ऐन ॥ सो विप्र दच्च। बोल्यो प्रतच्च ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिगीती छन्द ॥

लखि जगत में प्राणीनके हम ह्रास वृद्धि विनाशको । नहिं धरत हैं पग लाभ मगमें भूर धरिकै आशको ॥ अरु पुत्र पौत्रादिकन को संयोग ताको देखिकै । निजु है वियोगहि मुख्य ताके अन्तमें अवरेखिकै ॥ अरु और सञ्चय सर्व तिनको अन्त नाशहि जानिकै । मनमें न लावतहैं कबोहूं दैत्यपति अनुमानिकै ॥ है ह्रास वृद्धि विनाश ताकों सुनो जानै जौनहै । जन सोय देखत अन्त वत जन सगुणको बुधि भौनहै ॥

दोहा ॥

ह्रास वृद्धि अरु नाशको जो जानत दैत्येश । तिहि जनसों नहिं रहत है कारन कौनो शेश ॥ जंगम थावर भूत सब लोकन मांहि जितेक । समय पाय सब मृत्यु को प्रापत होत तितेक ॥

मोहा छन्द ॥

सब भूतनकों देखिकै । मृत्युयुक्त अवरेखिकै ॥ मैं न करत व्यापारकों । औ नहिं दुःख अपारकों ॥ जगमें जीवति ते कहै । जो गति लहत तितेकहैं ॥ सोई मैं हौ पायहौं । यह बिचारिकै रायहौं ॥ सोवत रहत अनन्दसों । रहित होयकै दन्दसों ॥ कबहु अनेक प्रकारके । भोजन अन्न सुढारके ॥ कबहुं मिलतहैं ना कबौ । शोच करत हम ना तबौ ॥

नरेश छन्द ॥

कबहूं कोऊ जन आयकै । लखि मोहिं दयासों छायकै ॥
बहु भोजन मधुर सुल्यायकै । देजात प्रेम सर सायकै ॥

दोहा ॥

कबहूं अल्पहि मिलत है कबहुं जीवका काज । कनहिं चुनतहैं विप्रवर हमहे दानवराज ॥

प्रवङ्ग छन्द ॥

कबहूं मांस अरु ओदन उत्तम खातहैं । कबहूं मध्यम कबहूं क्षुधित रहि जातहैं ॥ कबहूं भोजन प्राप्त होत है जौ बरै । पुनि प्रापतिकी तृष्णा मो मन तो करै ॥ कबहूं हम हे सोवत पलंग सुठान पै । कबहूं धरणी मांहि कबहुं पाषाण पै ॥ कबहूं सोवत चित्रित चारु अगारमें । पुष्प सुगन्धित वारी सै सुढारमें ॥ कबहूं वसन हम ओढ़त सुखद विशालकों । कबहुं चीर वलकलहि कबहुं मृगछालकों ॥

दोहा ॥

कबहूं सनके वसन अरु कबहुं रेसमी चारु । धारत पै निर्लोभता राखत बुद्धि अगारु ॥

जयकरी छन्द ॥

अचल अशोक अनाशित जौन । पावन परम श्रेयको भौन ॥ सुबुधनके मत मांहि अमन्द । प्रापत अच्युतको निर्दन्द ॥ जानत मूढ़ न नीको जाहि । ऐसो अजगर व्रत जो ताहि ॥ मैं हौं करत सुनो प्रहलाद । बुद्धि अचलको छोड़ि प्रमाद ॥

मारङ्ग छन्द ॥

लोभादिके दृन्दको सर्व मैं त्यागि । वर आजगर सुव्रतकों करत हौं लागि ॥ धरत जे धीर्य्यकों करत ते याहि । सकत करि कादर न याहि अवगाहि ॥

दोहा ॥

नियत न यामें भक्षको औ फलको नहिं दक्ष । ऐसो जो व्रत आजगर ताकों करत प्रतक्ष ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगीती छन्द ॥

यह करौं मैं यह करौं यहि तृष्णाहिते अभिभूत। नहिं होत प्रापत द्रव्य यातें लहत क्लेश अकूत ॥ सुनु प्रश्न दानवनाथ ऐसो द्विजनको लखि हाल। व्रत ज्ञानसों मैं जानिके यह करत सुखद विशाल ॥ अति दीन ह्वैकै द्रव्यकाजै भए आयित देखि। वर बुधनकों अति अबुधजनके बुद्धिसों अवरेखि ॥ ह्वै चित्तजित अरु शान्ति गहिकै परम उज्जल होय। व्रत आजगर को करत हौं लोभादिको मैं गोय ॥ रति अरति लाभ अलाभ ये आनन्द औ नानन्द। अरु मरण जीवन जौन हे प्रह्लाद प्रश्नविलन्द ॥ सब जानि भाग्याधीन ये वरज्ञानते अवदात। व्रत आजगरको करत हौं मैं धीर्यता गहि ख्यात ॥

दोहा ॥

अहि अजगरको देखिमैं रागादिकको त्यागि। सुव्रत आजगरकों करत धीरजतामें पागि ॥
सत्य चित्तकी शुद्धता इन्द्रिय निग्रह जौन। इन सबसों हम युक्त हैं दानवपति बुधिभौन ॥

चरणा दोहा ॥

नियत न मेरे शयनाशनकों जानहु तुमसिद्धान्त। सर्वव्रतनके सञ्चयसों हमछूटैं दानवकान्त ॥

मनोहर छन्द ॥

छूटो चिदानन्दते जौन। रूपादिक इच्छासों तौन ॥ अन्तकालमें दुखद महान। तिहिसों चपल न कोऊ आन ॥ नित्य रहत है जौन सकाम। ताहि दुखद जानत बुध माम ॥ ऐसो जो मन दानवराज। ताहि सथावरकीवे काज ॥ करत आजगरव्रत हम खच्च। अति सुखदायक जानि प्रतच्च ॥

रामगीती छन्द ॥

जिन कह्यो ग्रन्थनिमाहिं निरणय ब्रह्मकों अतिस्वच्च। अवगाहि तिनकों जानि निरणय तौन सुनु वरदच्च ॥ मत आपने औ औरके मतसों विचारत जौन। वर प्रश्न ऐसे कह्योतिन यह आजगरव्रत तौन

दोहा ॥

नाशलहत जामें सकल भिन्न ब्रह्मते जौन। अन्तरहित अरु दोषसों भरो भूरि है तौन ॥
ऐसो जो है जगत यह ताको देखि प्रतच्च। तृष्णासों अरु दोषसों रहित होय कै दच्च ॥
रहत सदा हौं नरन संग पै तिनके जो कर्म। तिनमें लावत हौं न मन सुनु दानवपति पर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

रहित होय रागादिसों अजगरव्रतको जौन। प्रश्न विचारत बुद्धिसों सुखी रहत हैं तौन ॥

मधुभार छन्द ॥

पूछो सु जौन। तुम बुद्धिभौन ॥ हम कह्यौ तौन। सुनु भूमिरौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मे आजगरमुनिप्रह्लादसम्वादेषष्ठो ऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

रहित होय रागादिसों अजगरलों थितिजौन। करै सोय सुख लहत है कह्यौ आपुबुधिभौन ॥
सो पूछत हौं आपुसों जनमनकी थितिजौन। कहौ सोहिं अवगाहिकै ताको साधन कौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांधव है की बित्त है की प्रज्ञाकी कर्म। यहि मेरे तुम प्रश्नको गुणिये मतिसों पर्म ॥

भीष्मउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

जनके मनकी है थिति जौन। ताको साधन मति मतिभौन ॥
मोक्ष साधनज्ञ मतिही जानु। यातें अतिश्रेष्ठा अनुमानु ॥

दोहा ॥

प्रज्ञाहीसों प्राप्तभो परम पदहि बलिभूप। औ प्रह्लाद सु नमुचि औ मङ्की सुऋषि अनूप ॥

आभीर छन्द ॥

प्रज्ञाके सम तात। और कछु न अवदात ॥ जानहुं यह सिद्धान्त। सुनहु प्रज्ञ बितिकान्त ॥

दोहा ॥

कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसंगमें भूप। काश्यपको अरु इन्द्रको है संवाद अनूप ॥

तोमरछन्द ॥

एक वैश्य हो धनवान। अतिगर्ववान महान ॥ रथपै चढ़ो सह हर्ष। कहुं जात हौ उत्कर्ष ॥

दोहा ॥

पथमेंतिहिरथसोंदयो काश्यपऋषिहिगिराय। तिहितेकाश्यपक्रोधयुत होतभयोदुखछाय ॥
अतिहीआरतहोयकै मनके माहि बिसूरि। कहत भयो यहिभांतिसों परम ग्लानिसोंपूरि ॥
निधनीको निर्वाह नहिं माहि लोकके हाय। ताते मैं तन ओकको दैहौं निजुहि बिहाय ॥
करि मरिबेकी कामना बैठो ह्वैकै मौन। धरि चितमाहीं दुचितई पथमाहीं बुधिभौन ॥
धरिकै रूप शृगालको देवतेश तिहि पास। आय कहत ऐसे भयो करिकै बुद्धि प्रकास ॥

मोदकछन्द ॥

मानुषयोनि महासुख दायक। या सम और नहीं मतिनायक ॥
राखत को नहिं है यहिकी टट। भाषत हैं हम सत्यहि तोटट ॥

दोहा ॥

करत प्रशंसा सर्व हैं मनुज योनिकी पर्म। ताहू में ब्राह्मण्यकी अतिही करत सुकर्म ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

मनुजयोनि सुखदा तुम पाई। ताहूमें ब्राह्मण्य सुहाई ॥ ब्राह्मण्यहु लहि श्रोत्रिय नीके। भए आपुहो अरु शुभ श्रीके ॥ यह दुर्लभता लहि मनमाहीं। आपु बिचारत हौ ऋषि नाहीं ॥ अल्प दोष है दारिद बारो। ताते तुम हौ मरण बिचारो ॥

चरणा दोहा ॥

लाभहोतसब साभिमान है जानत हौ ऋषिदत्त। करतनहीं हौ याते जान्यो हौ प्रज्ञावत खत्त ॥

मोरठा ॥

सिद्धि होतहै अर्थ तिनसों जिनके पाणि हैं। तेई परम समर्थ तिन सम कोऊ न और है ॥

दोहा ॥

तिनकी इच्छा करत हौंमैं जिनकेहैं पानि। पाणिवानको देखि कै मुदिता लहत महानि ॥
निधनी जैसे करत है धनकी इच्छा पर्म। पाणिनकी मैं करत हौं इच्छा तिमिहि सुकर्म ॥
पाणिलाभकी सम न है और लाभ मतिमान। काढ़ि सकत कंटकुनहीहमदुखलहत महान ॥
दशत जीव लघु अलघु जब मेरे तनमें आय। बिनपाणि न सहिरहत नहिं सकत खुजाय उड़ाय ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं दशांगुली पाणिवर जिनके तौन सदाहि । रक्षाको निजु अंगकी करत यत्न अवगाहि ॥
अन्न वसनके सुखनकों भोगत हैं ते पर्म । अरु चढ़ि अश्वादिकन पै पावत हैं अति गर्म ॥
मैगलादिकों करत हैं वश करि बहुत उपाय । और कार्य्य बहु करत हैं सिद्धि परम सुखदाय ॥
जिनकी जिह्वा होति है वाकशक्ति बिन विप्र । प्राप्त होत हैं दुखनकों तेऊ पुनि पुनि चित्र ॥

सोरठा ॥

अरु जे जन हैं दीन अल्पबली औ पाणि बिन । तेई रहत मलीन सहि दुख विविधि प्रकारके ॥
तैसे तुम हौ नांहि काश्यप सुनिये विप्रवर । दुख सागरके मांहि क्यों बूड़त उतरात हौ ॥

दोहा ॥

प्राप्त भए कृमि योनिमें औ नहिं भए श्रृगाल । पशु पक्षी मण्डूक अहि भए न बिल्ल बिशाल ॥
पापयोनि जे और हैं भे न प्राप्त तिनमांहि । उत्तम ह्वै कै विप्र तुम हर्ष लहत क्यों नांहि ॥
देखि अवस्था आपु सम गुणिये हियके मांहि । मो शरीरको काटिकै कृमि दुख देत सदांहि ॥
काटि सकत नहिपाणि नहिं तकत रहत मतिमान । पैशरीर त्यागतनहींगुणिकै कलुष महान ॥

अरिलछन्द ॥

यहिते पापयोनिमें और न । पाऊं यह सुनु करिकै गौर न ॥
तजत देहहौं पावत दुखतर । सुनु हे काश्यप विप्र सुबुध बर ॥

रामगीतीछन्द ॥

हम लही योनि श्रृगालकी है पापयोनिन बीच । है यहुंते हे और काश्यप योनि केती नीच ॥ दुख लहत प्राणी जन्महीसों किते आनंद पर्म । हम लख्यौ काहूके निरन्तर नहीं पावत शर्म ॥ जन कृपणको जौ द्रव्य प्रापत होय तौ मतिमान । है करत इच्छा राजकी सन्तोष नहिं अज्ञान ॥ जौ प्राप्त कबहूं दैवते वर राज्यपदहू होय । तौ करत है पुणि देव पदकी कामना को सोय ॥ जौ देवपदहू होय कबहूं प्राप्त हे बरविप्र । तौ करण लागत इन्द्रपदकी कामनाकों चित्र ॥ तुम द्रव्यकों जौ पायहो तौ राज्य नहिं अभिराम । अरु राज्यपदहू पाय हौ तौ देवपद न ललाम ॥ वर देवपदहू पायहौ तौ देवतेश न आपु ॥ जौ देवतेशहू होहुगे मिटिहै न काम कलापु ॥ जन तृप्ति नाहीं होत कबहूं लोभमें द्विजराज । जिमि शान्तहोत न नीर सों है तृष्णा सु परमदराज ॥ सो बढ़ति ऐसो नीरसो जिमि समिधसों सुहुशान । मैं कहतहौं अवगाहि तुमकों विप्रवर मतिमान ॥ है तुमहि माहीं हर्ष औ है तुमहि माहीं शोक । अरु मोह परम विवेक तुमही मांहि दुख सुख ओक ॥ तुम करत क्यों हौ दुःख याते विप्रविज्ञ महान । तव दशा लखिकै भयो अचरज मो हिये मतिमान ॥ सब कामना अरु कर्मको जो हेतु इन्द्रियग्राम । यहिभांति रोकै ताहि जिमि पक्षीहि पंजर धाम ॥

सोरठा ॥

कामकर्म को हेतु यह जो इन्द्रियग्रामहै । रोके ताहि सचेत साध्य सहोत न निजु गुणो ॥
यह जो इन्द्रियग्राम सोई भयको हेतु है । और न है बुधधाम भयकारण निजुकै कहत ॥

दोहा ॥

शीतादिक है औरहू डरके हेतु अनेक । जौ तुम यह गुणिकै कहौ तौ सुनिये सविवेक ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरी छन्द ॥

बुद्ध्यादिकको कीन्हे रोक। शोतादिक बारो जो थोक ॥
तिहिते होत नहीं है त्रास। यह निश्चय जानो बुधिरास ॥

दोहा ॥

याते करिकै रोध तुम बुद्ध्यादिक को सर्व। दूरि कीजिये ग्लानिकों प्रज्ञावान अखर्व ॥

आभीर छन्द ॥

एक हेतु मैं और। कहत सुनो करि गौर ॥ प्राणिवान बलवान। होत सोइ धनवान ॥
यामें संशय नाहिं। कहत सुगुणि तो पाहिं ॥

जयकरीछन्द ॥

केते पै सपाणि प्रभु होत। केते दास होत बुधिपोत ॥
यातें भाग्य जानु बलवान। निश्चय करिकै बर मतिमान ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

बध बन्धन क्लेशनसों भारे। जे जन पुनि पुनि होत दुखारे ॥ तेई फेरि विहार करतहैं। हंसत रहत बहुमोद धरतहैं ॥ और लखो जे बलवन पानी। है जिनकी बर बुद्धि महानी ॥ पाप वृत्ति करते हैं भारी। जैसे करत महंत अविचारी ॥ पावन वृत्ति करणके काजै। उदित रहत हैं सकुल समाजै ॥ पै भवितव्य कर्मते जोई। निश्चय विप्र होत है सोई ॥ चण्डालहु मरिबेकी नांहि। करत कामना है मनमांहि ॥ अपनी योनिहिमांहि रहतहै। मोदित कबहुं न ग्लानि लहत है ॥ यह माया प्रभुकी तुम देखो। अपने चित्तमांहि अवरेखो ॥ रोग-ग्रसित प्राणिनको देखे। औ चखपाणि होनको पेखे ॥ रोग रहित चख पाणि सहित जे। जानत लब्धहि लाभ महत जे ॥

दोहा ॥

रोग रहित है आपु अरु अंगशुद्ध तन सर्व। रहत वेदमें नित्य है तत्पर प्रज्ञ अखर्व ॥
याते है तुम विप्र नहिं धिक्कत जगमें दत्त। आपु विचारत आपुको क्यों है नहीं प्रतत्त ॥
लाग्यो अहत कलङ्क जो अरु जो सो अपमान। देहत्याग कोऊ करत तातें नहीं सुजान ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

गुणिहो जो तुम बचन हमारे। शुद्ध विवेक परमसों भारे ॥ अरु सुनिकै जो श्रद्धा करिहो। तो तुम महामोदको धरिहो ॥ जो वेदोक्त धर्म है पावन। तास पायहो सुफल सोहावन ॥ पढ़न पढ़ावनमें तुम रत हो। अग्निहोत्र ताको प्रापत हो ॥ अप्रमत्त ह्वै पालो सत्यहि। रोको इन्द्रियको तुम नित्यहि ॥ निन्दा स्तुती न काहूकेरी। कीजै यह लहु शिक्षा मेरी ॥ जे रत पढ़न पढ़ावनमें हैं। ते काहेको शोच करे हैं ॥ औ जे यज्ञकरण में रतहैं। तेउ शोचसों रहत विगतहैं ॥ अरु जे विधिवत यज्ञ करावत। तेउ न शोच करत सुद पावत ॥ करत अमंगलकी सुधि नाहीं। कबहू किए सुकर्म सदाहीं ॥

दोहा ॥

इच्छा करै विहारकी ते कबहूं जो विप्र। होत विहार आनन्दको प्रापत तो वे चिप्र ॥
सुन्दरतिय सुनत्तवमें औ सुसुहृदत मांहि। उद्भव तिनको होत है यामें अहत नांहि ॥

जयकरी छन्द ॥

शक्ति पूर्वक देत सुदान। विधिवत यज्ञ करत मतिमान ॥ सुतको ईहा में अभिराम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करत यत्न बहुविधि बुधिधाम ॥ करत रहत हैं नित्य सुकर्म । करत नहीं हैं कबहुं कुकर्म ॥

मोरठा ॥

पढ़न पढ़ावनमाहिं करण करावन यज्ञमें । जे जन प्रापत नाहिं सुनहुं व्यवस्था तौनकी ॥
योनि आसुरी बीच कुतिथि सुहरत नखत में । जनि सो लेत नगीच कबहुं होत न धर्मके ॥

दोहा ॥

न्यायशास्त्र मैं हौ पाढ़ौ रहो कुपण्डित पर्म । निन्दा नित्यहि वेदकी मैं हौ करत कुकर्म ॥

जयकरी छन्द ॥

वेदज्ञनको करि अपमान । वचन कहत हौ होय अमान ॥ नास्तिक हौ औ मूर्ख महान । मानत हौ मैं परम सुजान ॥ श्रृगालत्व प्रापत जो मोहि । ताहीको फल है यह जोहि ॥ कबहुं जौ सुनु सुमति अगार । मनुज योनिमें जन्म हमार ॥ ह्वैहै तौ तपमें अतिप्रीति ॥ राखौं गो मैं सहित सुनीति ॥ दै हौं दान सुकरि हौं यज्ञ । अप्रमत्त ह्वै कै सुनु प्रज्ञ ॥ ह्वै सचेत मैं पढ़िहौं वेद । त्याज्य त्यागिकै होय अखेद ॥ सुनि श्रृगालकी वाणी विप्र । अचिरज मानि उठो अतिक्षिप्र ॥ कहत भयो इमि सुनहुं श्रृगाल । है तूं पण्डित परम विशाल ॥ ज्ञान नैनसों द्विज मतिभौन । देखन लगो श्रृगालहि तौन ॥ देखै तौ है निर्जर-पाल । बाढ़ो अतिही मोद विशाल ॥ जानि इन्द्रकों काश्यप विप्र । पूजा कीन्ही विधिसों क्षिप्र ॥ फिरि मघवाको आज्ञा पाय । गयो गेहको वर द्विजराय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाणो वासिगोकुल रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मेइन्द्रकाश्यपसंवादोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिल छन्द ॥

जनके मनकी थितिको कारण । कह्यो बुद्धि तुम करि निरधारण ॥
पूछत हौं एक हेतु और वर । कहौ तात तुम तौन सुमतिवर ॥

दोहा ॥

यज्ञ तपस्या औ गुरू सुश्रूषा अन्न दान । कालान्तरमें बुद्धिके एई होत निदान ॥
कै कछु कारण और हैं परम बुद्धिको सत्त । कहो पितामह मोहि तुम सरल रीतिसों रत्त ॥

भीष्म उवाच ॥

सुनो युधिष्ठिर बुद्धि है कामादिक युत जौन । तासों करत प्रवेश है मन कलापके भौन ॥

कवित्त ॥

जे ते जगमांहि पापकारी जीव तेते सब दुर्भिक्ष ताते दुर्भिक्षको लहत हैं ।
भय तातें पावत हैं भयकों महान अति औ कलेश तातें लहि क्लेशकों सहत हैं ॥
औ जे शुभकारीते धनाढ्य ताकों पाय करि उत्सवतें उत्सवको लहत महत हैं ॥
आनन्द तैं पायकरि आनन्द द्विजन्द फेरि आनन्दके पायवेको मैनकों गहत हैं ॥

मोरठा ॥

चिदशालयतें होत चिदशालयको प्राप्त पुनि । सुनहुं सुमतिके ओक परहुपुच पालक धरम ॥

दोहा ॥

जामें बहु उन्मत्त गज चौर व्याघ बहु सर्प । ऐसो जो आरण्य है तामें भूप सदर्प ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नास्तिकके कर बांधिकै दूरिहि दे पहुंचाय। तहां लहत बहुदुःख हैं नास्तिक भयसों छाय ॥

सोरठा ॥

सुनु पाण्डव मतिमान सत्यमान बर धर्मधर। यहिते दुःख महान और कहा है लोकमें ॥

दोहा ॥

जाकों प्रिय है देव अरु साधु अतिथि निति भूप। अरु उदार जो लहत सो मारग सुखद अनूप॥
पाय गर्तकी उपमा नष्ट अन्न भो जौन। ताके सम है मनुज जे धर्म करत नहिं तौन ॥

उकछाछन्द ॥

किए कर्म हैं जौन। संग रहत निति तौन ॥ पलक न छोड़त साथ। जानहुं निजु नरनाथ ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

शीघ्र चलत ताहूके पाछे। लागो रहत करम है आछे ॥ सोय जात तौ आपुहु सोवै। उठि जावै तौ आपहु जावै ॥ चलन लगै तौ साथहि चालै। बैठै तौ बैठत नहिं हालै ॥ प्राणी कर्म करै जो कोई। आपहु करत छांह लौं सोई ॥ जेजे कर्म पूर्व जनि माहीं। कीन्हे तिते रहत सब पाहीं ॥

अरिलछन्द ॥

यह प्राणी तिनको है भोगत। तिनही की रतिमें ह्वै कै रत ॥ जब बीतत है कर्मण को फल। तबहि लगावत नहिं एको पल ॥ काल चहूं दिशिते है करषत। भूतग्राम को फेरि न परषत ॥ जैसे वृक्षलता अप्रेरित। फूलै फलै समय को जो मित ॥ ताको कबहूं करत उलंघन। तैसे करमहु छोड़त संगन ॥ कर्म अशुभ शुभ जिहि जिहि बयमहि। करत होत प्रापत तिहि तिहि महि ॥

आभीरछन्द ॥

जिमि गो सहसन माहिं। माता अपनी पाहिं ॥ पहुंचत बत्स सुधर्म। तिमहिं पूर्व कृत कर्म ॥ जैसे बसन अमन्द। होत पङ्कसों मन्द ॥ सो सुबारिसों स्वच्छ। होत तिमिहिं सुनु दच्छ ॥ महत कलुष सों जौन। भे मलीन जन तौन ॥ बिषय त्याग सो पर्म। निर्मल होय सुकर्म ॥ मोक्ष शर्मको होत। प्रापत ते मतिपोत ॥

मधुभारछन्द ॥

बर बिपिन बीच। ह्वैकै निभीच ॥ तप जो बिलन्द। कीन्हों अमन्द ॥ बहुकाल भूप। तिहिसों अनूप ॥ भे स्वच्छ जौन। मानव सुतौन ॥ बर लहत ज्ञान। मोदत महान ॥

दोहा ॥

ज्ञान लाभ जब होत तब सद्य मोक्ष जो भूप। ताको प्रापत होत है मानव बिच्छ अनूप ॥
पक्षिण के आकाश में जिमि नहिं पांव दिखात। तिमिहीगतिज्ञानीनकीजानीजातिन तात ॥
होति हिये सद्वासना किये भूप सत्कर्म। सत्कर्महि है बुद्धिको कारण बिमल सुकर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजगोपीनाथस्यशिष्येनमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे अष्टमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिलछन्द ॥

है सत्कर्म बुद्धिको कारण। कह्यो मोहिं तुम करि निर्धारण ॥
सुन्यो तौन एक प्रश्न औरहम। करत कहौं अवगाहि तौन तुम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामगीतीछन्द ।

यह भयो किहिते जगत है वर चराचरमय सर्व । अरु होत है किहि माहिं प्रापत प्रलय माहिं अखर्व ॥ सब सहित सागर गगन सह सह शैल सह घन योक । वर सहित अचला अग्नि मारुत सर्व जो यह लोक ॥ है भयो निर्मित कौनसो कहिये कृपा करि आपु । अरु भयो है किहि भांति सो यह सर्व भूप कलापु ॥

दोहा ॥

औ भो वर्ण विभाग किमि शौचअशौचसुजान । तिनको कहियेमोहिंतुम करिकै गौरमहान ॥
औ जो धर्म अधर्म विधि वर्णकिहै हेतात । परमतिसों अवगाहिकै कहौ मोहि विख्यात ॥
तिनको कैसो जीव है प्राणी जीवत जौन । जात कहां यहि लोक ते जौन मरत है तौन ॥

भीष्मउवाच ॥

यहिप्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अनूप । सोअतिहो प्राचीन है मनथिरि करि सुनुभूप ॥

मनोहरछन्द ॥

गिरि कैलाश शृंगपै स्वच्छ । बैठेहुते सुऋषि भृगु दच्छ ॥ तिनको लखिकै भारद्वाज । करत भए यह प्रश्न दराज ॥

रामगीतीछन्द ॥

यह लोक किहिते भयो है वर चराचर मय सर्व । अरु होत है किहि माहिं प्रापत प्रलय माहिं अखर्व ॥ सब सहित सागर गगन सह सह शैल सह घनयोक । अरु सहित अचला अग्निमारुत सर्व जो यह लोक ॥ है भयो निर्मित कौन सों है कहौ मोको आपु । अरु भयो है किहि भांतिसों यह सर्व भूत कलापु ॥

दोहा ॥

औ भो वर्ण विभागकिमि शौचअशौच सुजान । सो तिनकोकैसे भयोकहुकरि गौर महान ॥
औ जो धर्म अधर्म विधि वर्णकि है हे तात । भईकौन विधिसों कहौ आपुमोहिं विख्यात ॥
तिनको कैसो जीव है प्राणी जीवत जौन । जात कहां यहि लोकते मरत जौन हैं तौन ॥
भरद्वाज को प्रश्न यहसुनि ऋषिभृगु मतिमान । भरद्वाजको कहतभे इमि भृगु भूप सुजान ॥

भृगुरुउवाच ॥

सुन्यो एक इतिहास है हम ऋषीन सों दच्छ । इहि प्रसंग में कहत हौं तुमको तौन प्रतच्छ ॥
आदि अन्तसों रहित है अजर अमर है पर्म । ऐसो सबते पूर्व अरु जगको हेतु सधर्म ॥
रहत निरन्तर है महत कीन्हें परम प्रकाश । है अव्यक्त अभेद्य अरु निर्विकार बुधिराश ॥
ताको मानस नाम है तातेही सब भूत । होत प्राप्त पुनि होत मरि ताही माहिं अकूत ॥
महा तत्वको सृजत भो तौन देव भरद्वाज । अहंकार को सृजत भो महातत्व बुधराज ॥
अहंकार नभको कियो अरु नभते भो वार । भए वारते दोय शिषि मारुत तथा उदार ॥
तिन दोउन के योगते भई भूमि भरद्वाज । तदनु स्वयंभू ते भयो होतो पद्म सुसाज ॥

हरिगीतीछन्द ॥

तिहि पद्मते उत्पन्न ब्रह्मा होत भो श्रुति साम है । सुनु लोकपति है सोइ सोई अहंकार सुजान है ॥ है पञ्चतत्त्वहु सोय सोई भूत कारो पर्म है । है शैल ताके अस्थि सब अरु अवनि आमिष चर्म है ॥ है रुधिर जाको सरित्पति अरु उदरसों आकाश है । अरु नदी नाड़ी तेज हुतभुक वायु जाको श्वास है ॥ है भानु औ सितभानु जाके दुऔ लोचन भुज दिशा । है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्द्ध को आकाश जाको शीश औ पद है रया ॥ सुनु सुऋषि भारद्वाज जिहिको सकत सिद्ध न जानि है। है विष्णु सोई शंभु सोई कहत बुध अनुमानि है ॥

दोहा ॥

सोई सब भूतस्थ है सुनु हे भारद्वाज। तिहि कीन्हो अहंकार सब भूत होन के काज ॥
भयो विश्व उत्पन्न है अहंकारसों सर्व। जानि सकत कोऊ नहीं तास प्रभाव अखर्व ॥

सोरठा ॥

जो तुम पूछ्यो तौन यहिप्रसंगमें हम कह्यौ। सुनऊ सुऋषि बुधिभौन और कहाअबपूछिहौ ॥

भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥

गगण भूमिदिशिवायुअरुतिनको कहाप्रमान। कहौ मोहिंअवगाहिअबयहतुम भृगुमतिमान ॥

भृगुरुवाच ॥ रामगीती छन्द ॥

सुनु सुऋषि भारद्वाज यह आकाश को नहिं अन्त। बरयुक्त नाना अयनसों है रम्य अति गतिवन्त ॥ है नित्य सेवित सिद्ध औ निर्जरनसों आकाश। गहि लहत कोऊ अन्त है आकाश को मतिराश ॥ अध ऊर्धमें रवि चन्द्रके करकी नहीं गति यच। अति भरे तेजस चण्ड भारे देवता हैं तच ॥ वरस्वयंज्योति सुभास्करसे अग्नि ऐसे चण्ड। नहिं लहत अन्त अनन्त ताते तेउ देव उदण्ड ॥ है सिंधु भूके अन्त में औ सिन्धु को जो अन्त। तुम तौनमें तिमरात में हैनीरबिन्दु अनन्त ॥ है रसातल अन्तमाहीं सलिल भारद्वाज। औ अन्तमाहीं सलिलके है परम पन्नग राज ॥ है पन्नगान्ते पुनह नभ औ नभांते कीलाल। परमाण है यह सलिल को वर सुनऊ बिन्दु बिशाल ॥ वर अग्नि मारुत तोयके आवर्ण भारद्वाज। सुरवरऊ जानत कष्टसो है कहत बिन्दु समाज ॥ क्षिति अग्नि मारुत तोयको आवर्ण है बुध जौन। सोहै अकाशहि सदृश जानत महत मतिके भौन ॥ जब होत ब्रह्मज्ञान तब आवर्ण भिद्यत सर्व। वर बिबिध शास्त्रनमाहिं वरणन करत सुमुनि अखर्व ॥ त्रैलोक्य सागरको कह्यो है मुनिन जौन प्रमान। हम कह्यो तुमकों तौन है गुणि भरद्वाज सुजात ॥ वर सिद्ध अरु निर्जरन को जो भोग व्योम महान। सो है अगम्य अदृश्य याते कहै कौन प्रमान ॥ जौ परै मित है जानि याको सुनऊ प्रज्ञा भौन। तौ होय जाय अनन्त की आनंत्य निश्चय गौन ॥ तुम नाम के अनरूपही भरद्वाज जानऊ याहि। यहि मांहि संशय है नहीं हम कहत हैं अवगाहि ॥

सोरठा ॥

मूर्तिमान सर्वज्ञ सो चतुरानन कमलते। भरद्वाज सुनु प्रज्ञ सो कर्ता सब जगतको ॥

भरद्वाजउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥

भयो पद्मते जो लोकेश। पद्महि तो है ज्येष्ठ सुवेश ॥ अग्रज कहत द्रुहिण को सर्व। यामें संशय होत अखर्व ॥ भृगुरुवाच ॥ मानस जाको नाम सुजान। सो यह भयो ब्रह्म भगवान ॥ आसन हेतु तास भू पद्म। सुनो भयो है प्रज्ञासद्म ॥

दोहा ॥

मध्यभाग तिहिपद्मको है सुमेरु भरद्वाज। सो ब्रह्मा तिहिमें स्थित बिरचत जगत दराज ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येन मणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे भृगुभरद्वाजसंवादो नाम नवमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरद्वाजउवाच दोहा ॥

मानस जाको नाम है परब्रह्म भगवान। सोई ब्रह्मा है भयो कह्यो आपु मतिमान ॥
जग जो विविधप्रकारको किमि विरचत है ताहि। चतुराननमतिमानभृगु कहो मोहि अवगाहि ॥

भृगुरुवाच ॥

जग जो विविधि प्रकारको तिहिकों श्रीलोकेश। मनसों विरचत है सुनो भारद्वाज सुवेश ॥

चरण दोहा ॥

रक्षा काजै सब भूतनको प्रथम तोय विधि कीन। प्राण सर्व जगको है सोई निश्चय मानु प्रवीन ॥
प्रजा बढ़ति है तोयसों तोयविना मिटि जात। बलित भूतसब जगत है तो यहिसों अवदात ॥
पृथ्वी पर्वत मेघ अरु मूरतिमान जितेक। वारिजही सब जानु तू भारद्वाज तितेक ॥

भरद्वाजउवाच ॥

भूमि अग्नि मारुत सलिल ए उत्पन्न सुजान। कहो भए किहि भांतिसों मोको आपु महान ॥

भृगुरुवाच ॥

ब्रह्मकल्पके बीच एक समय माहिं सुनु दक्ष। होतो ब्रह्मऋषीन को भयो समागम स्वच्छ ॥

मनोहरछन्द ॥

होत भयो तामें संदेह। यही कियो जो तुम बुधिगेह ॥ ते सु ब्रह्मऋषि ध्यान लगाय। मौनपै होय मौन बुधराय ॥ बैठत भए तिन्हें शतवर्ष। देवनके गत भए सहर्ष ॥ भई व्योमवाणी यह पर्म। भरद्वाज सुनु सुऋषि सशर्म ॥ पूरव तमसों युत है व्योम। भए नष्ट रवि मारुत सोम ॥ सोवत शोभा शत भो दक्ष। होतो भयो तदनु जल स्वच्छ ॥ जलको जो उत्पीड़ महान। ताते उठत भयो पवमान ॥ जलकों फोड़ि करत सो ध्यान। प्राप्त होय कै नभहि सुजान ॥ शांतिको न पावत उतकर्ष। वायु नीरको जो संघर्ष ॥ ताते होतो भयो कृशान। तौन मरुतयुत होय सुजान ॥ जलहि जरावत भो नभबीच। होय मरुत सो दीर्घ निभीच ॥

दोहा ॥

ह्वै सथूल नभते गिरो शिखिसों जोकी लाल। भयो सोय भूमित्वको प्रापत विक्ष विशाल ॥
सर्व पदारथ होत है तिहि भूमिहिके माहिं। भूमि योनि सब जानु तू यामें संशय नाहिं ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्र गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांति पर्वणि मोक्षधर्मे भृगुभरद्वाजसंवादोनामदशमोऽध्याय: ॥

भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥

सुनऊ महाऋषि प्रथमही पंचधातु संघात। तिनको विरचत भो द्विज जगत्कार विख्यात ॥
तिनधातुनहींसों सरब बलित भूत हैं लोक। महाभूत संज्ञक परम तेई हैं बुधिओक ॥
भूत सहस्रन रचत है नित्य नित्य सुरज्येष्ठ। महाभूत ए पांचही कैसे भे बुध श्रेष्ठ ॥

भृगुरुवाच ॥

सर्वभूत उत्पन्न ए इन भूतनते होत। तातें इनको योग्य है महाशब्द अतिपोत ॥
नासा कान अकाश है श्वास वायु द्रववार। उष्मा शिखि भूमांस है भौतिक देह उदार ॥
पंचभूतसों युक्त है जंगम थावर सर्व। इन्द्रिय संज्ञा इनहिकी है मतिमान अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिदाभासके रहत है आश्रित अग्नि सदाहि। करि परिपालन देहकोकहत सुगुणि तबपाहि॥
चिदाभास औ अग्निमें प्रापत ह्वै पवमान। देहनको प्राणीनकी चेष्टित करत सुजान॥

जयकरी छन्द॥

इन तीनहुको जो संघात। जीव प्रज्ञ सोई अवदात॥ सोय सनातन पुरुष अमन्द। अहङ्कार मन बुद्धि बिलन्द॥ सोई औ सुभूतगण सर्व। औ सुविषय सब सोय अखर्व॥ माया सहित होत जब दक्ष। जीव कहावत है सुनु खक्ष॥ माया रहित होत जब पर्म। ब्रह्म कहावत सोय सशर्म॥

दोहा॥

करत देहकी पालना बाहिर भीतर प्रान। फिरि समान ह्वैकै सुनो सोय प्राण पवमान॥
पहुंचावत रुधिरादिको निज निज गतिको पर्म। सोई मारुत प्राण जो होय अपान सुकर्म॥
शिखिके आश्रय होयकै अन्नादिकहि पचाय। मुच पुरीषहि देत है निज निज थान पठाय॥
यत्न कर्म जिहि बायुसों कीन्हो जात सुजान। औ जो बलमें रहत बुध ताको कहत उदान॥
मनुजादिक की देहमें सांध्यनमाहीं जौन। रहत बायु ताको कहत व्यान मनीषा भौन॥

सोरठा॥

यातु त्वगादिक जौन पावक तिनमें व्याप्त जो। प्रेरित ह्वैकै तौन बर समान पवमानसों॥

दोहा॥

अन्नादिक रस जौन अरु धातु त्वगादिक जौन। अरु पित्तादिक दोष जे तिनकों बर बुधिभौन॥
करत बिकारित है सुनो कहत प्रज्ञ प्राचीन। सब देहिनकी देहमें भारद्वाज प्रबीन॥

चरणादोहा॥

चलति आस्यतें गुदिकालों नाड़ी एक महान। ताते और चलति है केती लघुनाड़ी मतिमान॥
तिन नाड़िनसों होत सब बायुनको संयोग। अरु अग्निहुको होत है कहत प्रज्ञबर लोग॥
करत प्रकाशित बायुको अग्नि अग्निको बाय। लागत बायु गुदांत में अग्नि वेगसों जाय॥
बायुबेगसों अग्निसों ऊपर उठत सुजान। रहत देहके बीच है इमि पवमान छशान॥
औदर भय नहिं होत है कीन्हे बायु निरोध। बायुरोधते होत है इन्द्रियरोध सबोध॥
नाभि ऊर्द्धको भाग सो थान अन्नको तौन। अधको जो है भाग सो मलस्थान बुधिभौन॥
मारुत सूक्ष्मरूपसों रहति नाभिके माहि। कारज तिनसों होत सो कहत तिहारे पाहि॥
प्राण समान उदान अरु व्यान अपान सुजान। देवदत्त कूरम छकल नाग परम पवमान॥
औ सुधनंजय बायु ए दश हैं इनसों पर्म। नाड़ी प्रेरित होय कै तनके माहिं सुकर्म॥
प्राप्त करति है अन्नके रसको नित्य प्रबीन। गुणिकै तो सो है कह्यो है यह संशय हीन॥

बरवै छन्द॥

मुखते लैकै गुदलौं नाड़ी जौन। जानु परम योगिनको मारग तौन॥ मूर्द्धामें यहि पथसो योगी पर्म। प्राप्त करत है आत्माको सह धर्म॥

सोरठा॥

कीन्हें प्राण निरोध होत प्रकाशित ब्रह्म है। जानत जिनको बोध भयो परम है प्रज्ञबर॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येन मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे भृगुभरद्वाजसम्वादे द्वादशोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥

जीवत बोलत वायुही चेष्टा करत अनन्त। श्वास लेत जौ वायुही तौ निरर्थ यह जन्त ॥
अन्नादिकको उदरमें शिखिहि पचावत पर्म। तौ निरर्थ है जोर भृगु प्रज्ञावान सधर्म ॥
वायुनचेष्टासकतकरि शिखि नहिंसकतपचाय। जौतुमयह गुणिकै कहौतोसुनिए बुधराय ॥
ताको जीव न परत लखि जौन होतहैनष्ट। नगतिऊपमा तजत तन वायुहि कहतसपष्ट ॥
याते वायुवियोग जो मर्ण जानिये सोय। जीवै है न अनुमान ते कहत तुम्हैं हों जोय ॥
मिल्यो मरुतसों होयजो तौ मारुत मरुपर्म। जीव चलत जान्यो परै भृगुवर प्रज्ञ सधर्म ॥
औरसुनऊभृगु मरुतसों मिल्यो होतजौजीव। प्रथकहोतजब मरुतसों परतदेखि बुधिसीव ॥
जिमि जलमाहीं उपलसह डारी तुम्बीतौन। जब बन्धन गरिजात तब प्रथक्होतिबुधिभौन ॥
पञ्चभूतसों रहतिहै ऐसी जो यह देह। जीव कहा तिहिमाहंहै कांहिए वर बुधिगेह ॥

सोरठा ॥

मञ्चाको एकदेश ताको भए विनाश जिमि। नाहीं रहत बुधेश होत नाश सब मञ्चको ॥

दोहा ॥

इमिहि भूत संघातमें एकको भए अभाव। निश्चय होत अभाव है सबहिनको बुधराव ॥

सोरठा ॥

पुरुष मञ्चमें जौन नाश होत जब मञ्चको। देखि परतहै तौन प्रथक् मञ्चतें प्रज्ञवर ॥
ऐसेही जौ जीव होत भूत संघातमें। परतो लखि सतिसीव भए नाश संघातको ॥

दोहा ॥

जौन हेतुसों होत है नष्ट भूत संघात। तौन हेतु मैं कहत हौं तुमको बुध विख्यात ॥
सलिल पिए बिन सलिल अरु वायुरोधतेवाय। वायु भरे नभ उदरको नष्टहोत बुधराय ॥
बिन भोजन कीन्हें सुनो पावकसो नशिजात। नष्ट होत अरु व्याधिसों भूसिसुबुध अवदात ॥
इनपाञ्चऊमें एकजो पीड़ित होय अशेष। प्रथक् प्रथक् ह्वै जाय तौ सबहा भूत बुधेश ॥
प्रथक् होत जब भूत तब काहिके पीछे जात। जीव कहा जानत सुनत बोलतकऊ विख्यात ॥
याते जो संघात है सोई जीव सुजान। भिन्न और नहिं जीव है निश्चै कियो महान ॥
और जीव नहिं तौ सुनो नहिं परलोक समर्थ। जो परलोक नतौ सरव दानादिक हैं व्यर्थ ॥
यह सुगऊ परलोकमें करिहै सो उद्धार। यह विचारि जो देत जन भृगुऋषि बुद्धिअगार ॥
सो दै करि मरि जात है गो तारति है काहि। प्रज्ञावान महानप्रभु कहो मोहिअवगाहि ॥
दाता गो प्रतिगृहीता अर्चहि सब मरिजात। कहा समागम होत है तिनकोकऊविख्यात ॥
जौन जीव मरिजात है होत कहा पुनि तौन। पर्वतसों गिरि अग्निसों जरि करिकै बुधिभौन ॥

सोरठा ॥

कटो जौन है वृक्ष तास मूल नहिं लहत फिरि। ताके बीच प्रतक्ष प्रहत होतहै प्रज्ञवर ॥

दोहा ॥

होत बीजते बीजहै मृतक मृतक सब नष्ट। होय जात है सुऋषि भृगु मैं हौं कहत सपष्ट ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे भृगुभरद्वाज सम्वादे चयोदशोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

दानादिक औ जीव नहिं नष्ट होत बुधिगेह । देहान्तरको लहत है जीवनशत है देह ॥
नष्ट भएते देह नहिं जीव नष्ट ह्वै जात । दग्ध भएते काष्ट जिमि पावक नहीं नसात ॥

भरद्वाज उवाच ॥

दग्ध भएते काष्ट जिमि नष्ट न होत कृशान । तिमिहि नशे ते जीव मो नष्ट न होतसुजान ॥
कहतआपुइमितौसुनहु इंधन जबजरिजात । पावकनहिंलखि परत है सुनहुप्रश्नअवदात ॥
दृहह्वानु बर होतहै काष्ट बिना जब शान्त । जानत ताकों तष्ट मो तासगति न हमदान्त ॥

भृगुरुवाच ॥

बिन आश्रय जब होत शिखि सूक्ष्मह्वैनभमाहिं । प्राप्तहोतयातेबिना काष्टपरतलखिनाहिं ॥

मोरठा ॥

तिमिहि नशेते देह जीवरहतहै ब्यौमवत । जानोसो बुधिगेह जात अल्प ताते नहीं ॥

दोहा ॥

प्राणनकोंधारण करत शिखि आत्मामयजौन । देहनशेसो नहिं नशत शिखिआत्मामयतौन ॥
आत्मामय जो अग्नि जब तनहि तजत है दक्ष । तबसो तन मिलि जातहै भूकेमाहिंप्रतक्ष ॥
चर अचरणके मरुतनभ अग्निमहा नभमाहि । प्राप्तहोत अरु भूमिजल भूकेमाहि समाहि ॥
जहं अकाश तहं पवनहै पवन जहां सुक्षसान । है अमूर्त्ति ये देहमें होत सुमूरतिमान ॥

भरद्वाज उवाच ॥

जल भू नभ शिखि मरुतहो जौ शरीरके माहि । तौ लक्षण है जीवको कहा कहौ मोपाहि ॥
पञ्चभूतसों जो बन्यो पञ्च बिषयरत जौन । ज्ञानेन्द्रिय है पञ्च बर जिहिमाहीं बुधिभौन ॥
ऐसो जौन शरीर है तामें जो है जीव । ताहि जानिबेकी करत इच्छा हौं मतिसीव ॥
देह खण्डखण्डहु किएजीव परत नहिं देखि । मांस अस्थि शोणित बसा मेद परत है पेखि ॥
जौ हम भौतिकदेहमें जीवहि मानैं नाहिं । तौ जानतहैं दुःखकों को शरीर के माहिं ॥
जीव सुनत है बैन जो कहौ सुनहुं तौ पर्म । होत ब्यग्र जब चित्त तब जीव न सुनत सशर्म ॥
मोदित मनयुत चख लखत सबहि जगतके माहिं । ब्याकुल मन जब होततब लख्यो लखतहैनाहिं ॥
निद्रावश जब होत तब लखत न सुनत न बैन । सूंघत बोलत रस परश जानत नहिं बुधिऐन ॥
कौन क्रोध औ शोचको करत कौनको हर्ष । इच्छा दोषहि करत को बोलत को उत्कर्ष ॥

भृगुरुवाच ॥

अन्तरात्मा जीव जो सोय चलावत देह । नहीं चलावत भूत औ मन तनको बुधि गेह ॥
सोई जानत गन्ध रस सो अस्पर्श स्वरूप । सोई जानत शब्दको अन्य न सुबुध अनूप ॥
मन जिहि इन्द्रियके निकट होत सु इन्द्रिय तौन । ग्रहण करतिहैबिषयको कहत आपुबुधिभौन ॥
ताको कारण यह सुनो अन्तरात्मा जौन । मनके निकटै रहत है इहिते सुनु बुधिभौन ॥
मन बारे सह भावसों इन्द्रिय सर्व सुजान । ग्रहण करतिहै बिषयको जानो निजुहि महान ॥
अन्तरात्मा जीव बिन मन इन्द्रियसों सर्व । बिषय ग्रहण करवाय नहिं सकत सुप्रश्न अखर्व ॥
खत्त सुषुप्ति समाधिमें अन्तरात्मा पर्म । प्राप्त होत ब्रह्माण्डमें है बरप्रज्ञा सशर्म ॥
तब मन औ इन्द्रीय सब रहते हैं एकत्र । पै न बिषयको करि सकत ग्रहण न संशय अत्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लाछन्द ॥

जब शरीरको शान्त। अग्नि होत है दान्त ॥ नष्ट होति तब देह। आत्मा नहिं बुधिगेह ॥

चरण दोहा ॥

आत्मा सो चेतन्न कहावत गुणसंयुक्त सुवेश। निर्गुण भए कहावत सोई परमातमा धेश ॥

दोहा ॥

रहत देहके मांहि सो ऐसे हैं चेतन्न। रहत कमल के पत्रमें जैसे जलकण प्रन्न ॥
भेदे देहहि जीवको होत नहीं है नाश। कहत अबुधजन तौन है मिथ्या सुनु बुधिराश ॥
देहान्तर कों होत है प्राप्त जीव भरद्वाज। जानत है तब जीवको नाश अप्रन्न समाज ॥
सब भूतनमें फिरत है जीव गुप्त है पर्म। सूक्ष्ममतिसों लखत है ताकों प्रन्न सगर्म ॥
योग निरन्तर करत जे लघ्याहारी होय। आत्माको बरबुद्धिमें तौन सकतहै जोय ॥
जास विमल है हृदय सो कर्म शुभाशुभ त्यागि। रहत निरन्तर महत है मोक्ष मोदमें पागि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे चतुर्दशोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

पूरब पूछ्यौ आपु हौ भूत भए किमि सर्व। औ भो वर्णविभाग किमि सुनिए तौन अखर्व ॥

अरिलछन्द ॥

मरीच्यादि वरविप्र प्रजापति। तेजोमय शिखि सविता सम अति॥ तिन्हें बनावत भयो प्रथम विधि। तदनु सुनो भरद्वाज सुमतिनिधि ॥ सत्य वेद अरु तपस धर्मतर। आदिक आचार सर्ववर ॥ शौच सु प्रायश्चित्तादिक पुनि। स्वर्गप्राप्तिके काज द्रुहिण गुनि ॥ करतो भयो तदुन सुर दानव। राक्षस यक्ष नाग अरु मानव ॥ तिमिहि पिशाच भयो सो विरचत। बहुत रूप धारण में ते रत ॥

दोहा ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु शूद्र चारि ए वर्ण। तिनको करत विभाग भो तदनु द्रुहिण मतिधर्ण ॥
ब्राह्मणको शितवर्ण है अरु क्षत्रियको लाल। पीत वैश्यको शूद्रको श्याम सुप्रन्न विशाल ॥
ब्राह्मण के है सत्वगुण रज क्षत्रियको पर्म। श्वेत अरुण याते बरण हैं हे प्रन्न सगर्म ॥
रज तम मिश्रित वैश्य है तमहि शूद्रमें होत। पीत श्याम हैं वर्ण हे याते प्रन्नापोत ॥

भरद्वाजउवाच ॥

श्वेतादिक जे वर्ण हैं तिनसों कियो विभाग। विप्रादिक सब वर्णको तौ सुनिए बड़भाग ॥
सब वर्णनमें वर्णको शङ्कर देखो जात। किमि विभाग भो वर्णसों वर्णकोकछु विख्यात ॥
और सुनो जे वर्ण सब विप्रादिक बुधधाम। तिनमें भय चिन्ता क्षुधालोभ क्रोध श्रम काम ॥
तिमिहिं शोक लखि परत है क्षण क्षणमाहीं पर्म। कैसे वर्ण विभाग भो कहिए प्रकट सगर्म ॥
और सुनो तुम सबहिके तनते शोणित स्वेद। गिरत मुत्र पूरीष किमि वर्ण विभाग सवेद ॥

भृगुरुवाच ॥

ब्रह्मा कीन्हों जगत यह याते ब्राह्मण सर्व। है नहिं वर्णविभाग यह जानो प्रन्न अखर्व ॥
वर्ण ताहि प्रापत भयो कर्मनसों संसार। याते वर्णविभाग को कारण कर्म उदार ॥
काम भाग है प्रिय जिनहिं क्रूर क्रोधवश पर्म। रज गुणमय है तजि दियो अपनो जो है धर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसा करिकै करत है कर्म सदाहो जौन। ब्राह्मण ऐसे होत है क्षत्रिय बर बुधिभौन ॥
सुरभीसों अरु कृषीसों वृत्ति जे करत सदाहि। रज मतमय ह्वै करत जे अपने कर्महि नाहि ॥
ऐसे ब्राह्मण जौन हैं होत वैश्य हैं तौन। जानहु भारद्वाज यह निश्चय बर बुधि भौन ॥
जिनको प्रिय हिंसा अनृत लोभी तममय पर्म। करत जीविका आपनी जौन सर्व करि कर्म ॥
शुचितासों परिभ्रष्ट हैं ऐसे ब्राह्मण जौन। शूद्रताहि ते लहत हैं जानो निज बुधिभौन ॥

चरण दोहा ॥

इनकर्मनसोंवर्णान्तरको होत प्राप्त द्विजदक्ष। वर्णान्तरकीप्राप्तिको हम हेतुकह्योपरतक्ष ॥
धर्म जौन बेदोक्त है तामें तत्पर जौन। नीच जातिमें होत है प्रापत ब्राह्मण तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येन मणिदेवेन कविनाबिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि भृगुभरद्वाज संवादो नाम पंचदशोऽध्याय: ॥

भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥

ब्राह्मण उत्तम होत है कौन किएते कर्म। कौनकर्मसों होत अरु क्षत्रिय कहौ सधर्म ॥
औ सुनु वैश्यक शूद्रते कौनकर्मते होत। कहो आपु अवगाहिकै मोकों प्रज्ञापोत ॥

भृगुरुवाच ॥

प्रथम जन्मतहि होतहै संस्कार जो स्वक्ष। जातकर्म तिहिको कहत तिहिआदिकसुनुदक्ष ॥
चत्वारिंशत अष्ट औ संस्कार हैं पर्म। युक्त होय तिन सबनसों औ सुचि होय सुधर्म ॥
स्नान देवपूजन परम होम अतिथ सत्कार। संध्या जप ए नित्यके हैं षटकर्म उदार ॥
युक्त होय तिन सबनसों बिधिवत पढ़ै सुबेद। रहै गुरुको भक्तिमें तत्पर होय अखेद ॥
सत्यमाहिं तत्पर रहै नित्यहि लोभ बिहाय। ताको कहिए बिप्रबर भरद्वाज बुधराय ॥
युद्धमाहि तत्पर रहै पढ़ै बेद अवदात। दान देय बरद्विजनको आदर सह बिख्यात ॥
प्रजा पालिकै नीतिसों लेय आपनो भाग। क्षत्रिय ताको प्रज्ञबर कहिए सुनु बड़भाग ॥
करैं जीविका पशुनसों तिनहि कृषीसों जौन। बेदमाहिं तत्पर रहैं वैश्य कहावत तौन ॥
सदा सर्व भक्षण करै तिमिहि करै सबकर्म। बेद रहित आचारसों शूद्र कहावत पर्म ॥

चंचला छन्द ॥

बिप्रमाहिं बिप्रके न कर्म जो परैं लखाय। शूद्रमाहिं कर्म शूद्रके परैं नहीं दिखाय ॥
बिप्रकों सु बिप्र तो कहो न शूद्र शूद्रकौन। मैं कह्यो बिचारिकै तुम्है सुनो सुबुद्धिभौन ॥

रामगीतीछन्द ॥

बरबिप्रता को मूल कारण कहत हौं अब अच। तुम मनहि थिरि करि सुनहुं सो भरद्वाज प्रज्ञ पबिच ॥ निति करै निग्रह कामको अरु क्रोधको अतिमाम। ए करत दोऊ घात सुखकी परम प्रज्ञाधाम ॥ निति करै रक्षा लक्ष्मीकी क्रोधतजि भरद्वाज। तिमिछोड़ि मत्सर करै रक्षा तपसकी सुखसाज ॥ तजि औरको अपमानको औ आपनो अभिमान। नितिही सु रक्षण करै बिद्याको महा मतिमान ॥ कबहुं प्रमाद न करै मांगै कछू काहूसोन। निति कामनाबिन होम दानहि करतहै बुधि जौन ॥ है सोय त्यागी सोय प्रज्ञावान है अवदात। है तास सम नहिं और कोऊ जगतमें बिख्यात ॥ नहिं धरै हिंसा भावको भो रहै सबको मित्र। अरु बुद्धिसों इन्द्रियनको गण जीति प्रज्ञ पबित्र ॥ बर होय आत्मध्यान माहीं प्रज्ञ तत्पर पर्म। तजि सुतादिकको मोह करिकै स्वस्थचित्त सधर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

अजित जौन कामादिहैं तिन्हैं जीतिबे काज। इच्छा जौ मनमें करै तौ सुनिए भरद्वाज ॥
पुत्रादिकके संगमें रहै असंगी सोय। हर्ष शोक कबहुं न करै तिनके सुखदुख जोय ॥
अजित जीतिबेकी करै जौन कामना स्वच्छ। तौन करै जो योग वर सो हम कहत प्रतच्छ ॥

चौपाई दोहा ॥

जाकोहोतगृहणइन्द्रियसों तौनकहावतव्यक्त। अरुजाकोनहिंहोतग्रहण हैजानहुसो अव्यक्त ॥
गुरु औ श्रुतिके वाक्यमें राखियेसुविश्वास। अविश्वासमें राखिए कबहुं न मन बुधिरास ॥
ताहि जानिबेको परम इच्छा हियमेंराखि। रहै गुरुकी भक्तिमें तत्पर मिथ्या नाखि ॥
प्राणवायुमें धारिए मनको अरु जो प्रान। तिहिको धरिए ब्रह्ममें करिके योग महान ॥
बिन वैराग्य न होत है प्राप्त ब्रह्ममें प्रान। याते वर वैराग्यको साधन करै सुजान ॥
वैराग्यहिसो लहतहै ब्राह्मण ब्रह्महि पर्म। बिन वैराग्य न लहतहै जानु सुनिजुहि सुधर्म ॥
होत शौचसों युक्त अरु सदाचारसों स्वच्छ। अरु सब भूतनमें दया धारै जो द्विज दच्छ ॥
सो अधिकारी योगको होय विच्छ भरद्वाज। और योगको होतनहिं अधिकारी बुधराज ॥
अधिकारी जब होतहै परम योगके स्वच्छ। तब अधिकारी होतहै ब्रह्मप्राप्तिको दच्छ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांति पर्वणि मोक्षधर्मे भृगुभरद्वाजसंवादोनामषोड़शोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

शुक्ल विप्रको धर्महै कृष्ण शुद्रको धर्म। कह्यो पूर्व अध्यायमें तुम यह प्रच्छ सधर्म ॥
तिनदोउनकेरूपकों पृथक्पृथक् अभिराम। करि विवर्ण हमकों कहौ भृगुवरऋषिबुधिधाम ॥

भृगुरुवाच ॥ अरिल छन्द ॥

बेद ब्रह्मकों प्राप्त करावत। औ स्वधर्मह्न मति वरगावत ॥ एही दोऊ लोकहि धारत।
इनहींसों जन दिवहि पधारत ॥ सत्यरूप ए दुओ सुमतिघर। शुक्ल धर्म है विप्रणको वर ॥
धर्म शूद्रको जो है श्यामल। सुनहु तौन अब सो प्रच्छावल ॥

उछला छन्द ॥

बपु असत्यको श्याम। तिहिते मानव माम ॥ जात नरकके माहिं। लखत स्वर्गको नाहिं ॥
शुक्ल स्वर्गको स्वच्छ। श्याम नरकको दच्छ ॥ कहते हैं भरद्वाज। प्रच्छामान दराज ॥

रामगीती छन्द ॥

सितअसित सत्य असत्य दोऊ होत समजब प्रच्छ। तबमनुज योनिहि जीव पावत भनत हैं वरविच्छ ॥
तहं करत सत्य असत्य सेती धर्म और अधर्म। सुख दुःखकों है होत प्रापत भरद्वाज सधर्म ॥

मल्लिकाछन्द

सत्यत सु होत धर्म। धर्मतें प्रकाश पर्म ॥ जो प्रकाश है अमन्द। होत तौनते अनन्द ॥
औ असत्यते महान। होतहै अधर्म भान ॥ औ अधर्मतें नितान्त। होतहै सुजान ध्वान्त ॥
दुःख ध्वांतते अशेष। प्राप्त होतहैं बुधेश ॥

दोहा ॥

तनमनके जे दुःख सुख तिनसों युत जग सर्व। ताहि निरखि मोह न करै प्रच्छावान अखर्व ॥
लोकनमें जो श्रेय हैं दुःखहि ताके अन्त। मोक्षारथ साधन करैं याते प्रच्छ भनन्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक श्रेय शारीर है औ है मानस एक। श्रेय दोय परकारके होत सुनो सविवेक ॥
तिन दोउनकी प्राप्तिकों यत्न करत हैं सर्व। अर्थ मोक्षके करत हैं कोउ न यत्न अखर्व ॥

भरद्वाजउवाच ॥

अर्थ श्रेयकी प्राप्तिको यत्न करत सब कोय। कह्यो आपु यह सो नहीं कहत तुम्हैंहमजोय ॥
बड़े बड़े हैं सुऋषि जे तिन्हैं तपस्यामाहिं। प्राप्त रहत सब श्रेय हैं पै चाहत हैं नाहिं ॥
और सुनो सबलोकगत ब्रह्मा जो सरबज्ञ। एकाकी सो रहत नहिं चहत काम सुख प्रज्ञ ॥
भस्म दयो करि कामको महादेव भगवान। काम श्रेय जो चहत तो क्यों जारत मतिमान ॥
चहत काम सुख महत नहिंयातेंमोमनमाहिं। आवति नहिं जो तुम कही सुऋषि हमारे पाहिं ॥
और सुनो जो कहत तुम सुखते कछू न अन्य। सुख औ दुख द्वै परत हैं देखि जगतमें धन्य ॥
लहत पुण्यते श्रेय अरु अघते दुःख महान। यह तुमको अवगाहि मैं कहत सुऋषि मतिमान ॥

भृगुरुवाच ॥

होत तमोगुण अद्भुतते ताते है युत जौन। महत अधर्महिमाहिं निति प्रवृत रहत हैं तौन ॥
प्रापित भए अधर्ममें दोऊ लोकनमाहिं। बिबिधि भांतिके सहत दुख श्रेय लहत हैं नाहिं ॥

अरिल छन्द ॥

युक्त तमोगुण सों नहिं जे जन। सुखकों प्राप्त होत हैं ते जन ॥ जौन तमोगुण माहिं रहत रत। तौन दुःखहीमांहि रहत गत ॥ स्वर्गलोकमें है सुखही वर। मारुत बहत महा-शीतल तर ॥ छायो रहत गन्ध हैं सुन्दर। जड़ित हेमके हैं जहं मन्दिर ॥ जहं नहिं जरा पिपासा क्षुत श्रम। व्यापत है निश्चय जानो तुम ॥

दोहा ॥

सुख औ दुख यहिलोकमें व्यापित है वर प्रज्ञ। दुःखहि केवल नरकमें महतकहत हैं विज्ञ ॥
जानि अल्प यहिलोकके सुखको मानव दक्ष। करैं यत्न अवगाहिकै स्वर्ग प्राप्तिको खच्च ॥
स्वर्गहुको सुख जानिके तुच्छ दक्षवर जौन। करत मोक्षके यतनको भरद्वाज बुधिभौन ॥

आभीर छन्द ॥

जौन मोक्षको धर्म। नित्य जानु सो पर्म ॥ लोकान्तरको जौन। नित्य सरम नहिं तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसम्वादोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥

दोहा ॥

कहा सुफल है दानको कहा होमको पर्म। तपको अरु अध्ययनको फल है कहा सधर्म ॥
अरु कीन्हो जो धर्म है तासु कहा फल चारु। कहौ मोहि अवगाहिकै भृगुऋषिबुद्धिअगारु ॥

भृगुरुवाच ॥

भोग मिलत है दानसों नशत होमसों पाप। तपसों प्रापत होत दिव निश्चय जानहु आप ॥
विषयमें न मन लगत है कीन्हेते अध्यैन। यामें संशय है नहीं भरद्वाज मतिऐन ॥
दान दोय परकारको कहत मनीषी पर्म। ते दोऊ हम कहत हैं तुमको सुनहुं सधर्म ॥

जयकरीछन्द ॥

सुबुधनको दीन्हों जो दान। तिहिते मिलत स्वर्ग मतिमान ॥ औ अबुधनकों दीन्हों जौन। ताते सुनहु सुऋषि बुधिभौन ॥ कहहिं लोकमें कछु सुख होत। प्रापत कहत सु प्रज्ञापोत ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देत सुमानव जैसो दान। तैसो फल पावत मतिमान ॥ अपने धर्ममाहिं जन जौन। युक्त रहत है प्रज्ञाभौन ॥ ते जन जात स्वर्ग के माहिं। यामें नेकहु संशय नाहिं ॥

भरद्वाजउवाच ॥ सोरठा ॥

चारिहु आश्रम जौन कहे ऋषिनके प्रज्ञवर। तिनको तुम बुधिभौन मोहिं कहो आचरणसब ॥

भृगुरुवाच ॥ हरिगीती छन्द ॥

बरधर्म रक्षण हेतु ब्रह्मा रचे आश्रम चारि हैं। तिन सबनको आचरण तुमसों कहत हम निर्धारि हैं ॥ जो बास गुरुकुलमाहिं कीबो प्रथम आश्रम तौन है। तिहि माहिं शौच सुनियम व्रत गहि रहत बर बुधिभौन है। रवि अग्निकी अरु और देवनकी खरा है प्रेमसों। निति दुओसंध्यामाहिं स्तुतिहि करे मन गहि नेम सों ॥ अरु स्नान तीनहु कालमाहीं करै आलस त्यागिकै। गुरुदेवको निति नौमि बेदहि पढ़ै मतिमें पागि कै ॥ सुनि बारता बर धर्मबारी स्वच्छ अन्तहकरण कों। गुणिकै करै अरु करै होमहि नित्य कल्मष हरणकों ॥ निति करै सेवा गुरुकी धरि हिये माहीं प्रीतिकों। अरु गुरु आगे धरै भिक्षा ल्यायगुणिके रीतिकों। गुरुकी कृपाते प्राप्त भो अध्ययन नित्यहि तौनमें। रत रहै मनको लायकै यह कह्यौ निज बुधिभौनमें ॥

दोहा ॥

गुरुको जो आराधि कै पढ़त बेद अवदात। स्वर्गलोकमें प्राप्त है सो जन समुद बिख्यात ॥ करै जौन संकल्प है होत सिद्धि है सर्व। यामें संशय है नहीं सुनिए सुबुध अखर्व ॥ कहत सुमुनि गार्हस्थको आश्रम दुतिय अमन्द। ताको जो आचरण सो सुनहु सुऋषि निर्द्वन्द ॥ ब्रह्मचर्य्य आश्रमहि करि पूरण बिधिवत पर्म। फेरि गृहाश्रमको करे कीबे तियरुह धर्म ॥

आभीरछन्द ॥

धर्म अर्थ अरु काम। त्रिवर्ग इनको नाम ॥ इनके साधन काज। सुनिए भारद्वाज ॥

संजुगिता छन्द ॥

बिधिसों सुयज्ञ करायकै। अथवा सुजनहि पढ़ायकै ॥ अथवा प्रतिग्रह लेयकै। अथवा सुदेवहि सेयकै ॥ अथवा सुसागर माहिंते। अथवा सुपालय पाहितें ॥ धनलै गृहाश्रमको करै। कबहूं न धर्म तजै बरै ॥

दोहा ॥

सब आश्रमको मूल है गृहस्थाश्रम मतिमान। यामें संशय है नहीं बरबुध भनत महान ॥

त्रिभङ्गी छन्द ॥

जे गुरुकुलबासी अरु सन्यासी नेमबिलासी और तिते। गृहआश्रम नीको धर्म गतीको तासों निबहैं सर्व तिते ॥ यामें मति आनो संशय जानो निजुहि बखानो सत्य तुमैं। जे मतिसों छाए बरबुध गाए कहते आए तौन हमैं ॥

दोहा ॥

बिन बोए जे अन्न हैं तिनको खात सदाहि। रहै निरत अध्ययनमें करै क्रोधको नांहि ॥

चरणा दोहा ॥

ऐसे बाणप्रस्थ ते मतिबर सुनिए भारद्वाज। फिरण लगत हैं प्रथ्वीमाहीं तीरथयात्रा काज ॥ तिन्हैं लखै जो दूरिसों तो उठि सौहें जाय। लखै निकट तौ शीघ्र उठि आदर करै सचाय ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभीर छन्द ॥

कहै सुकोमल बैन । अतिही उज्जलऐन ॥ तामें चारु बिछाय । आसन अति सुखछाय ॥ बैठावै तिनमाहिं । करै असूया नाहिं ॥

चरणा दोहा ॥

अतिथि निराश होयकै जाके गृहते फिरै सुजान । तास पुण्य तौ लेय जातहै दैकै पाप महान ॥

नरेश छन्द ॥

गृहआश्रम माहिं सुजान है । मखसों सुरवृन्द महान है ॥ लहि तृप्ति प्रसन्न सुहोत है । सुखवृन्द बिलन्द तनोत है ॥

अरिलछन्द ॥

लहत श्राद्धसों पितर तृप्तिवर । अरु विद्या व्रत बरसों बुधिधर ॥ होत प्रसन्न सुनहु बुधिसागर । अरु अपत्यसों द्विजहित उजागर ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

दया सर्व जीवनमें राखै । बचन मधुर सबहोकों भाखै ॥ काहूको जो है दुखदीवो । अरु बिनाश काहूको कीवो ॥ अरु कुबैन जे क्रोध समेते । निन्दित कर्म गृहीके एते ॥ अरु जो अहङ्कार हिय धरनो । अरु काहूको परिभव करनो ॥ एऊ निन्दित परम गृहीको । कहत तुम्हें मतिमें करिजीको ॥

रामगीती छन्द ॥

अहिंसा औ सत्य और अक्रोध ये त्रय जौन । परम तपहैं सर्व आश्रम माहिं सुनु बुधि भौन ॥ बिबिधि बिधिके बसन भूषण नृत्य बाजन पर्म । श्रवणको सुखकर्णि वार्ता दर्श पर्श अभर्म ॥ बिबिधि बिधिके चारु भोजन चन्दनादि सुगन्ध । काम अरु व्यवहार जे बहु औ सुराग प्रबन्ध ॥ और बर इन सबनहीं को गृहाश्रमही माहिं । और आश्रममें नहीं है अच संशय नाहिं ॥ धर्म अर्थ सुकामको जिहि गृहीके आनन्द । श्रेष्ठजनकी गतिहि पावत गृही सो निर्द्वन्द ॥

सोरठा ॥

पसुन गृहस्थसु जौन उंछवृत्तिको गहत है । तिनको बर बुधिभौन स्वर्गलोक दुर्लभ नहीं ॥

आभीर छन्द ॥

कण चुनिबो है जौन । उंछ कहावै तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि भृगुभरद्वाज सम्वादे अष्टादशोऽध्यायः ॥

भृगुरुवाच ॥ सोरठा ॥

बानप्रस्थ हैं जौन पगे धर्ममें निशि दिवस । पुण्यतीर्थ हैं तौन स्नान जाय तिनमें करत ॥

हरिगीती छन्द ॥

मृग महिष औ वाराह गज शार्दूल हैं बन जौनमें । बर बानप्रस्थसु फिरत हैं तप करत अतिवन तौनमें ॥ तजि बस्त्रको हैं करत धारण चीरवल्कल चर्मको । अरु चारु भोजन छोड़ि भक्षत मूल अरु फल पर्मको ॥ नख रोम केशहि दुष्यकों सहि किए धारण रहत हैं । अरु स्नान तीनहु काल माहीं करत दाया गहत हैं ॥ महिंमाहिं अरु पाषाणमें अरु भक्ष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालुमें परे। कबहूं सुकङ्कर युक्त भूमें करैं शैन सुमति भरे ॥ निति करत बलि अरु होमको विक्षेपको नहिं करत हैं। कुश समिध कुसुम सुमूल फलके काज बनमें चरत हैं ॥ सुनु यही है विश्राम तिनकों दिन बितावनको महा। बहु शीत उष्ण सुपवन वर्षा सहत धीरज सों नहा ॥ दुख सहे ते शीतादिको त्वच उपढ़ि तिनके रहत हैं। तबहूं घरेहैं रहत धीरज ज्ञानमान सु महत हैं ॥ आहार लघु पञ्चाग्नि साधन किए भारद्वाज है। अरु फिरे शोणित मांस तिनके सूखिअस्थि सुसाजहै ॥ त्वच अस्थिही रहिजात बाकी सर्व तिनकी देहमें। गुण सत्वतें तिनको निवाहत कहत मति बुधिगेह में ॥

दोहा ॥

बाणप्रस्थ आश्रमहि जो करत नेमसों पर्म। शिखिलौं दोषनकों दहत निश्चय तौन सधर्म ॥
अतिहो दुर्लभ लोक जे तिनमें प्रापत होत। यामें संशय है नहीं भरद्वाज मतिपोत ॥

जयकरी छन्द ॥

सन्यासिनको जो आचार। सुनहु तौन अब बुद्धिअगार ॥

रामगीती छन्द ॥

अग्नि धन अरु भार्य्यादिक छोड़ि तिनहिं अभर्म। भोग सामग्री जितीसबतिती छोड़ि सधर्म ॥ नेह फांसी काटि करिकै कढ़ैं गृहते दक्ष। लखैं कञ्चन ढेल औ पाषाण समहि प्रतक्ष ॥ धर्म अर्थसु काम साधन माहि होय अशक्त। उदासीन सुमित्र अरि समभावमाहीं रक्त ॥ भूत थावर जंगमनमें करैं द्रोहै नाहिं। कहूं स्थान न करैं जंगम रहैं भूके माहिं ॥ फिरैं पर्वत माहिं औ तट नदीके बुधिधाम। देवतनके थानमें अरु विपिनमें अतिमाम ॥ बास काजै ग्राम अथवा नगर पासै जाय। पांच रजनी नगरमाहीं रहैं सुनु बुधराय ॥ ग्राममाहीं एकनिशि कै बास जाय अन्यत्र। जाय भोजनकाज द्विजके जानि परम पवित्र ॥ पात्रमें जो करै भिक्षा लेय सानंद ताहि। कबहूं काहू पाहि मांगैं आपु भिक्षा नाहि ॥

दोहा ॥

काम क्रोध अरु लोभ अरु मोह दर्प अभिमान। औ हिंसा निन्दा रहै इनसों विगत सुजान ॥
सब भूतनको अभय है फिरते हैं मुनि जौन। सब भूतनते भीतिको प्राप्त होत नहिं तौन ॥
देहमाहिं जो अग्निसो अग्निहोत्रकों मानि। तौन अग्नि माहीं कुतै भिक्षा हवि अनुमानि ॥
भिक्षाको जो भक्षिबो भक्षण समुझै नाहिं। होम करब समुझै परम अपने हियके माहिं ॥

जयकरीछन्द ॥

ऐसे सन्यासी हैं जौन। भरद्वाज सुनु प्रज्ञाभौन ॥ ब्रह्मकारके लोकहि पाय। रहत परम आनंदसों छाय ॥

दोहा ॥

सन्यासाश्रममें रहत विधिवत जे जन प्रज्ञ। ब्रह्मलोक में प्राप्त ते होत सुनहु धरमज्ञ ॥

भरद्वाजउवाच ॥

सुनते हैं हम ब्रह्मकों पै जानत हैं नाहिं। ताहि जानिबेकी कहो तुम उपाय मो पाहिं ॥

भृगुरुवाच ॥ रामगीती छन्द ॥

नाशिका को भाग उत्तर मध्य भ्रूको जौन। ब्रह्म प्रापत होन कोहै थान उत्तम तौन ॥
ब्रह्म को तहं लखत हैं बुध साधि प्राणायाम। कहत निजुकै तुम्हैं भारद्वाज मेधा धाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहित जे पापादि सों हैं पहुंचि कैते तच। निर उपद्रव होत हैं सुनु है न संशय अच ॥ ब्रह्म प्रापति होन को जो परम उत्तम थान। रहत हैं नित तहां जे बुध सुनहु बर मति मान ॥ ब्रह्महो में रहत तत्पर नित्यही सानन्द। अन्य में मनलीन देत न सुनहु सुऋषि अमन्द ॥ तृप्ति नित्यहि रहत हैं तहं महत सुखसों पूरि। करत हैं अशमारिकी इच्छा न यातें भूरि ॥ ब्रह्म प्रापति होनको भू मध्य जो है थाम। भए प्रापत तहां हे पै जौन हैं सह काम ॥ फेरि आगम होत तिनको जगत माहीं दच्छ। जे सकाम न ब्रह्ममें ते लीन होत प्रतच्छ ॥ साधि प्राणायामकों जन किते लहिकै सिद्धि। करत पर उपकारको हैं सुनहु बर बुधिनिद्धि ॥ राखत नहीं हियमाहिं ममता हेतु याते तौन। होत लिप्त न कर्मफलसों कहत प्रज्ञाभौन ॥ सिद्धि लहिकै किते स्वारथ माहिं तत्पर होत। कहत हैं अवगाहि तुमकों सुनहु प्रज्ञापोत ॥ सिद्धिको जे प्राप्त ह्वैकै करत पर उपकार। होत हैं आनन्द को ते प्राप्त बुद्धि अगार ॥ स्वार्थहो में रहत तत्पर सिद्धि लहिकै जौन। दुःखको हैं होत प्रापत सुनहु निश्चय तौन ॥ क्षुधाश्रम भय मोह अरु बहु लोभसों अति मास। बुद्धि थिर नहिं रहति तिनकी सुनहु मेधाधाम ॥ बात धर्माधर्मकी सुनि जौ न गुणि हिय माहिं। धर्महो में रहत तत्पर करत अधरम नाहिं ॥ पापसों ते होत लिप्त न सुबुध भारद्वाज। धर्म के परभाव करिकै कहत प्रज्ञ समाज ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

निन्दा परम कपट अरु चोरी। अरु चुगली दुख दाय अघोरी ॥ दोषा रोप सुगुण के माहीं। अरु बोलब मिथ्या सबपाहीं ॥ हिंसा पर अपकारहि करिबो। महत दम्भको हिय में धरिबो ॥ इन सबहिनसों खच्छ महानी। होति तपस्या नष्ट सुठानी ॥ जो इन माहिं लगत है नाहीं। तास तपस्या बढ़ति सदाहीं ॥

दोहा ॥

कर्म भूमिके माहिं बर कर्म करत शुभ जौन। शुभ फलकों ते होत हैं प्रापत सुनु बुधिभौन ॥ अशुभ कर्म जे करत ते अशुभहि फलको लेत। यामें संशय है नहीं ऋषिवर बुद्धि निकेत ॥

अरिलछन्द ॥

ब्रह्मादिक सुर अरु ऋषि बुधिधर। कर्म भूमि में करि कै तपबर ॥ भए सु ब्रह्मलोकमें प्रापत। हिए परम आनंदको थापत ॥

जयकरी छन्द ॥

होय ब्रह्मचारी गहि नेम। सेवा गुरु की करब सच्छेप ॥ जो सो सब लोकनको चारु। जानत मारग बुद्धि अगारु ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

जासों जाय ब्रह्मपद जान्यो। तौन धर्म तव पास बखान्यो ॥ धर्म अधर्महि जानत जोई। बुद्धिमान है जानहु सोई ॥

भीष्मउवाच ॥

भरद्वाज भृगुकी सुनि बानी। पूजत भए भृगुहि बर ज्ञानी ॥ सुनहु युधिष्ठिर भूप सयाने। तुम बूझो हम तौन बखाने ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यपुत्र गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे भृगुभरद्वाज सम्वादोनामोणविंशोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

होति बुद्धि आचरणसों बिमला परम ललाम । यातेतुम आचरण बर कहौ मोहि बुधिधाम ॥

भीष्मउवाच ॥

नित्य दुष्ट आचरणमें प्रवृत रहत है जौन । अरु साहस करिकै करत मन आवत है तौन ॥
अरु जिनकी मतिमें रहै कीवो पर अपकार । मानव तौन असाधु है भूपति बुद्धि अगार ॥
तत्पर जे आचरणमें ते मानव हैं साधु । कहत सुबुध अवगाहि कै जिनको सुमति अगाधु ॥

गम्भीर छन्द ॥

प्रातै उठै नित्यही नेम धारे । ध्यावै गुरुकों हिय प्रेम भारे ॥ स्नानादि क्रियाहिकै औरकामै ॥
नित्यै करै हे धरै सत्य मामै ॥ चालै न छोड़ै कबौ बंशवारी । देखै कबौहू नहीं अन्यनारी ॥

उप दोहा ॥

बिष्ठा मूत्र न करै कबहुं सूरयके औरै । राजमार्ग अरु गोनमांहि नहिं सुरगृह धौरै ॥
सदा आचमन लेय सु उतरै पार नदीके । दया धरेही रहै सर्वदा माही होके ॥
पाणि पांव मुख धोय न पोछै भोजन कालै । करै सुभोजन पूरब मुख सेष है प्रीतिबिशालै ॥
सदा भक्षिए मधुर मधुर कहि निन्दा कबहू । कीजै नहिं जौवनो होय नीको नहिं तबहू ॥

दोहा ॥

दोयकाल भोजन करै करै बीच नहिंफेरि । लहत तौन उपवास फल कहत सुबुध है टेरि ॥
कर्मसुजिहितिहिकालके तिहितिहिकालहिमांहि । कीजैमनहिलगायकै आलसकीजैनांहि ॥

तोटक छन्द ॥

नख काटत जो जन दन्तनसों । अशुभै न बिचारत है मनसों । अरु जो तृणको निति तोरत है । जन जो अरु लोष्टहि फोरत है ॥ नहिं आयु महा नहिं तौन लहै । बर मानव बिज्ञ बिचारि कहै ॥

संजुगिता छन्द ॥

गुरुको सुआसन दीजिये । उठिकै प्रणामहि कीजिये ॥ गुरुको सप्रेम सुपूजिए ॥
गुण तास बहु बिध कूजिए ॥ नगना नपरतिय देखिये । अरु भानु उवत न पेखिये ॥

रामगीती छन्द ॥

देवके आगारमें औ गौनमें भूपाल । और उत्तम क्रियामें औ तिमिहि भोजनकाल ॥
कीजिये द्वै सव्य कारन कहत आरज पर्म । औ तिमिहि शुभ कार्य कीजै होय कै आमर्म ॥

दोहा ॥

छिक्का के अरु छोरके तिमिहि स्नानके अन्त । अरु भोजनके अन्तमें प्रज्ञावान भनन्त ॥
बढ़ो आयुयह मनुज को कहिए बचन सदाहि । यहै बचन कहिए सदा व्याधिनहूके पाहि ॥

कोक छन्द ॥

बड़े जनहिं ना कबौ तुकारिए । औ कबौ न नामको उचारिए ॥ औ कनिष्ठ औ समान जौन है । भूप हे तुकार योग्य तौन है ॥ दोष नांहि सतनाम लेनमें । प्रज्ञपास ए सुने सबैनमें ॥

दोहा ॥

जौन छुपावत पाप है जनमहान के पास । ते बिनाशको लहत हैं क्षिप्र सुनहु बुधिरास ॥
करिकैकल्मषकोमहत छुपवत जौनअज्ञान । लखतनताकोमनुज जौ सुर तौ लखतसुजान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिगीती छन्द ॥

सुनु भूपहे मतिमान याते कियो अघ न उपाइए। बर बिज्ञजन जे महत तिनके पास जाय सुनाइए॥ सुनिए सुकल्मष छूटिबेकी सुविधि तिनके पासमें। करिए सुकल्मष दूरि गुणिकै देखि सुमति प्रकाशमें॥ अघ जो छपायो सो करावत पापहीकी बासना। मतिभौन सुनु सो धर्मको बर हो न देत प्रकाशना॥ अरु जो छपायो धर्म सो सुनु धर्मधर भूपाल है। नितिही करावत धर्मवारी बासनाहि बिशाल है॥ यहि हेतु ते अघ कियो जो है ताहि परगट कीजिए। अरु धर्मको नहिं प्रगट कीजै यह सुमत गुणि लीजिए॥ जन मूढ़ जो अघ कियो ताको करत समरण नांहि है। अघ समय लहिकै तौन निश्चय होत प्रापत पांहि है॥ जिमि शीत भानहिं होत है सुरभान प्रापत नृप सुनो। तिमि कियो जो अघ होत जनको प्राप्त संशय ना गुनो॥

दोहा ॥

जान बटोरो द्रव्यहै आसासों नरराय। जियके मांहि बिचारि यह यह कछु बीति न जाय॥
भोगत ताको दुःखसों मानव मूढ़ बिशाल। करत प्रशंसा हैं नहीं तिनकी प्रज्ञ नृपाल॥
तिनके भोग अपूरणहि औ धन जो है ताहि। काल बिचारत है नहीं तुम्हैं कहत अवगाहि॥

आभीर छन्द ॥

मनसों कीन्हों जौन। मुख्य धर्म है तौन॥

चरणादोहा ॥

याते सब भूतनको दीजै मनसों अभय सदाहि। नृप बिचारिए भैको दीबो कबहूं तिनको नांहि॥

जयकरीछन्द ॥

अग्निहोत्र आदिक जे कर्म। तिनके माहीं भूप अभर्म॥ भार्य्यादिककी चही सहाय। अरु जो ध्यान परम सुखदाय॥ ताके मांहि सहाय प्रबीन। चहिए कबहू काहूकीन॥ ध्यानहूंको जानो तुम धर्म। मनको कीन्हों भूप अभर्म॥

दोहा ॥

सुरता और मानुष्यता को है कारण पर्म। धर्महि निश्चय जानु तू मतिबर कहत अभर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना बिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्म्मे भृगुभरद्वाजसम्बादेबिंशोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरीछन्द ॥

आत्मा को है जौन बिचार। तास नाम अध्यातम चार॥ किहि बिधि मानव चिंतन तास। करै कहौ मोको बुधिरास॥

चरणाकुलकछन्द

अरु यह बिश्व चराचर मयो। सो उत्पन्न कौन ते भयो॥ प्रलय होत जब किहिके माहीं। प्रापत होत कहा मोपाहीं॥

भीष्मउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

अध्यातम को जो वृत्तांत। पूछो मोहिं सप्रीति नितांत॥ सो तुमको हम कहिहैं तात। प्रज्ञावान सुनहु अवदात॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिगीतीछन्द ॥

सब भूतकी उत्पत्ति जिहिते होति है बुधि धाम है। अरु होत जामें प्राप्त सबही प्रलय माहीं नाम है॥ सुनु ब्रह्म नित्यानन्द ऐसो ताहि जाने सो महा। सुख परम प्रापति होत जनको अच संशय ना कहा॥ अब वायु भू आकाश तेजस पञ्चभूत महान है। इन महा भूतन तेहि सब उत्पन्न होत जहान है॥ पुनि इनहिं माहीं होत प्रापत कहत बिप्र नरेश है। मैं कहत हौं तामाहिं संशय को नहीं है लेस है॥ अरु महाभूत सुब्रह्म तें उत्पन्न ह्वै सरसात है। पुनि प्रलय माहीं ब्रह्मही में लीन ह्वै सब जात है॥ जिमि होय सागर ते महा उत्पन्न लहरि अनेक है। पुनि समुद्रही में होत प्रापत सुनहु नृप सविवेक है॥ एक औरहु दृष्टांत तुमको कहत हौं मैं सो सुनो। सुनि तौन अपने हिए माहीं बुद्धिको तनिकै गुनो॥ जिमि कूर्म अपने अंगको फैलाय स्वेच्छासों सबै। आपुही लेत बटोरि है मनमाहिं आवत है तबै॥ इहि भांति भूतात्मा आकाशादि भूतन को महा। बिस्तारि लेत बटोरि है पुनि अच संशय ना कहा॥

दोहा॥

शब्द जौन भूतात्मा ताको जो है अर्थ। सो मैं तुमको कहत हौं भूपति सुनहु समर्थ॥

सोरठा॥

भूतहि जाको रूप तास नाम भूतात्मा। बर मतिमान अनूप जीव तौन है प्रश्न बर॥

चरण दोहा॥

भूतकारसब भूतनमाहीं महा भूतजेपञ्च। तिनकोकरत भयोसुनुमतिबर अचनसंशयरञ्च॥

दोहा॥

शब्द श्रोत्र अरु छेद्र ए नभते भेहैं तीन। भ्रमणादिक चेष्टा परश अरु त्वक सुनहु प्रवीन॥ इन तीनन को हेतुहै वायु सुनहु बुधिधाम। हमबर बिप्रन सों सुन्यो यह वृत्तांत ललाम॥ जठरा अग्नि सुरूप अरु चक्षु सुनहु ए तीन। इनको कारण तेज है सुमति कहत परवीन॥ जिह्वा रस अरु क्लेद ए चै जलके हैं पर्म। गन्ध घ्राण अरु देह ए भूके सुनहु सुधर्म॥ महाभूत ए पञ्च हैं छठयो मन बुधिधाम। महत प्रश्न धर्मज्ञ सुनु कुन्तीसुत अभिराम॥ मनसों औ इन्द्रियनसों होत जीवको ज्ञान। औ सु सप्तमी बुद्धिहै निश्चै करणि सुजान॥ अष्टम है क्षेत्रज्ञ सो कर्म साक्षी तौन। भूमिपाल अरिजालदर सुनहु तात मतिभौन॥ क्षेत्र देहको नाम है ताको जानत जौन। ताहि कहत क्षेत्रज्ञ हैं सुबुध जीव हैं तौन॥ जिह्वात्वकश्रुश्रोत्र अरु चक्षु घ्राणबुधिधाम। ज्ञानेन्द्रिय हैं पञ्च ए विषय कहत अवधाम॥ रस स्परस अरु शब्द अरु रूप गन्ध सुनु भूप। ए इन्द्रियके विषय हैं पञ्च सुप्रश्न अनूप॥ चक्षुआदिकइन्द्रिय सकल रूपादिकको जौन। गृहण करत तामें करत संशयमन बुधिभौन॥ निश्चयको मति करति है अरु जोहै क्षेत्रज्ञ। तौन कर्मको लखत है साक्षीवत है प्रश्न॥ साक्षी जो क्षेत्रज्ञ है बर चैतन्य अनूप। सब शरीर में रहत है जैसे व्यापत भूप॥ सर्व जगत में रहत है तैसे व्यापत सोय। यामें संशय है नहीं भनत सुबुधवर लोय॥ बुद्धादिक को साक्षी महा भूत युत जौन। ब्रह्म भाव तामें कह्यो जग व्यापक है तौन॥ श्रुति मनसोंऔ युक्तिसों सुनहु जानिए ताहि। ताको जाने होत सुख कहत तोहि अवगाहि॥ चक्षुआदिक इन्द्रीय जे तौन जानिए तात। तिनको जाने सत्व रज तमहु जाने जात॥ मनजिहि इन्द्रियके निकटरहत सुइन्द्रियतौन। ग्रहण करति है विषयको औरन इन्द्रियजौन॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥

यह बिचार है कीबो जोय । इन्द्रिय को जानब है सोय ॥

आभीर छन्द ॥

जिहि सों देख्यो जात । तौन चक्षुहैतात ॥ सुन्यो सु जिहिते जाय । श्रोत्र तौन नरनाय ॥

दोहा ॥

जाते सूंघो जात है घ्राण कहावै तौन । जीभ कहावै तौन है रस को जानति जौन ॥
जान्योजातपरशहै जातेत्वकताको है नाम । जो बिकारकोलहतितौनहैबुद्धिसुनहुबुधिधाम ॥

आभीरछन्द ॥

करत सु इच्छा जौन । जानहु मन है तौन ॥

दोहा ॥

जिनको भिन्न सु अर्थ है अरु मतिके आधार । तिनकों इन्द्रिय कहतहैं जे हैं बुद्धि अगार ॥
करत जीव चैतन्य है तिनको चेष्टित पर्म । जैसे चुम्बक लोहको चेष्टित करत सुधर्म ॥

रामगीती छन्द ॥

पुरुष में है बुद्धिजो सो कबहु सात्विक माहिं । होति कबहूं रजोगुण औ तमो गुणके पाहिं ॥
लहति कबहूं मोदको है कबहुं शोचहि पाय । प्राप्त कबहूं मोहमाहीं होति है नरराय ॥ नरन
केमनमांहि ऐसेप्राप्त मेधा जौन । प्राप्त सात्विक आदिकन को होति है बुधिभौन ॥ रहति
तीनहु गुणनमें पै भिन्नहै महिपाल । रहति है ज्यों बेलिवृक्ष पै सिन्धु पृथक् बिशाल ॥ भिन्न
तीनहु गुणनसों पै रहति गुणहिन माहिं । परम सूक्षम रूप करिकै अच संशय नाहिं ॥
रजोगुणकों प्राप्त ह्वैकै बुद्धि सुनु नरनाह । लावती इन्द्रियनकों है बिषय निज निज माह ॥
बिषयमें जो दोष लखिकै प्राप्त सत्वहि होय । होय भ्रम नहिं परै जैसो होय तैसो जोय ॥
तमोगुणको प्राप्त जो मति होय तो बुधिधाम । बस्तु जैसी होय तैसी परत लखि नहिं
आम ॥ शान्ति अरु इन्द्रियनको जो रोकिबो है तात । सत्व गुणसों प्राप्त तिनकों होहि
मति अवदात ॥ रजोगुणसों कामको अरु क्रोध को सो पाय । होति तमसों खेद भयको
प्राप्त मति नरराय ॥ दोहा ॥

कहो सर्वगति बुद्धिकी तुमकों हम हे भूप । सबइन्द्रियकों जीतिए भणत सु प्रश्न अनूप ॥

बरवै छन्द ॥

सत्व सु रज तमगुण ए तीनहु जौन । रहत माहि देहिनके सुनु बुधिभौन ॥

दोहा ॥

सुखकी जो है प्राप्ति नृप सत्व तौनही जानि । अरु दुखकी जो प्राप्ति है रज तौनहि अनुमानि ॥
प्राप्ति जौन अज्ञानकी सोई तम है भूप । सुनहु युधिष्ठिर धर्मधर मतिबर कहत अनूप ॥
प्राप्तहोय शुभकर्ममें जौन समयके माहिं । तौन समयमें जानिए सत्वहि अपने पाहिं ॥
अपनेकों नहिं प्रीतिकर औ दुखसों युत जौन । प्रवृती ऐसे कर्मको होय जबै बुधिभौन ॥
तबै रजोगुणकी प्रवृति जानी अपने माहिं । हम यह बरवृत्तातको सुन्यो सुबुधजन पाहिं ॥
युक्त जौन अज्ञानसों करम सुनहु नरनाह । आय सकै अरु जो नहीं मन बिचारके माह ॥
प्रवृती ऐसे कर्मको होय समयमें जौन । प्रवृति तमसकी जानिए भूप समयमें तौन ॥
हर्ष प्रेम आनन्द ए सात्विकके गुण पर्म । कबहूं प्रापत होत हैं भूपति सुनहु सधर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असन्तोष परिताप अरु लोभ अक्षमा शोक। रजगुणके ए चिन्ह हैं कहत सुमतिके ओक ॥
आलस निद्रा मोह अरु तैसेही अपमान। तमके गुण ए होत हैं प्रापत कबहु सुजान ॥

जयकरीछन्द ॥

जाके होय महान विचार। दीन बचन भाषै न उदार ॥ अरु उत्तम सुपदार्थ अनेक। जिनको जानै सहित विवेक ॥ सो दोऊ लोकनके माहिं। पावत आनंद संशय नाहिं ॥

दोहा ॥

बुद्धि और क्षेत्रज्ञको अन्तर है यह प्रश्न। करै अहङ्कारादिकों बुद्धि नहीं क्षेत्रज्ञ ॥
जैसे मिले सुरहत है मसक उदम्बर तात। तिमिहिं बुद्धि क्षेत्रज्ञ है मिले रहत अवदात ॥
है पै भिन्न सुभावसों बुद्धि और क्षेत्रज्ञ। जैसे जल मच्छी मिले रहत भिन्न पै प्रश्न ॥
देह अहङ्कारादि को जानत आत्मा पर्म। आत्माको जानत नहीं ते सब सुनहु सधर्म ॥
देह अहङ्कारादिको दृष्टा जो क्षेत्रज्ञ। जानत है बुद्ध्यादिको मिले आपुमें प्रश्न ॥
हम गोरे हम सांवरे हम अन्धे हम कान। हम कुरूप हैं परम अरु हम सुरूप बलवान ॥
दृष्टामें अरु दृश्यमें इन बचनन सों दक्ष। जान्यो जात अभेद है तुमको कहत प्रतक्ष ॥

आभीरछन्द ॥

दृष्टा ताको नाम। जो देखत है आम ॥ योग्य देखिबे जौन। दृश्य कहावे तौन ॥

दोहा ॥

बुद्ध्यादिक है दृश्य सब दृष्टा है क्षेत्रज्ञ। तौन निरन्तर लखत है बुद्ध्यादिक को प्रश्न ॥
इन्द्रिय मन अरु बुद्धि ए सब जड़ हैं सुनु भूप। इन्हैं प्रकाशित करत है आत्मा परम अनूप ॥
इनके संगमें प्राप्त ह्वै आत्मा नहिं जड़ होत। पै इनके संगमें मिल्यो रहत सुनहु बुधिपोत ॥
मनकोकरति प्रकाशमति मनगुणकोपरकाश। मतिकेआश्रय रहत नहिं आत्मा सुनुबुधिराश ॥

सोरठा ॥

मनसों कीन्हे रोक इन्द्रियवारी वृत्तिको। सुनहु तात बुधि ओक आत्मा करत प्रकाश है ॥

हरिगीतीछन्द ॥

तजि कर्मकों इन्द्रियनके जो आतमामें रति करै। अरु नित्य आत्माके विचारहि आपने हियमें धरै ॥ तब होत उत्तम गतिहि प्रापत अब संशय नाहिं है। सुनु भूमिपति धरमज्ञ बर हम सुन्यो बुधजन पाहि है ॥ जिमि बारि चरणहि होत पक्षी लिप्तवारिसु पर्म है। तिमि आतमामें निरत जे ते लिप्तहोत न कर्म है ॥ सुनु आत्मा नहिं कर्ममाहीं लिप्त कबहु होतहै। यह जो सु निश्चय तास करिकै हिये माहि उदोत है ॥ तजि शोच हर्ष सुलोभ क्रोधहि मोह काम मदै तथा। अरु तिमिहि मत्सर छोड़ि करिकै रहै बरज्ञानी यथा ॥

दोहा ॥

कोऊ ऐसे कहत बुध नाशित है गुण जौन। नष्ट नहीं ते होत है सुनहु तात बुधिभौन ॥
कोऊ ऐसे कहत हैं नाश गुणनको जौन। जान्यो नाहीं जात है चेष्टा करिकै तौन ॥
ग्रहण करति है विषयको जब ए इन्द्रिय सर्व। ताते तब सुख दुख नहीं प्रापत होत अखर्व ॥
तब हियमाहीं जानिए गुण मेरे हे जौन। सुख दुख कर्ता मोह अरु नष्ट भए सब तौन ॥

सोरठा ॥

ए दोऊ मत जौन तिन माहीं बरबिज्ञ जन। नीको देखै तौन गृहण करै सुनु भूपवर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तप्तलोह है जौन तामाहीं अरु अग्निमें। भिन्नभाव है तौन जान्यो नाहीं जात है ॥

दोहा ॥

ऐसेही क्षेत्रज्ञ जो शाक्षी है अवदात। तिहि माहीं अरु बुद्धिमें भेद न जान्यौ जात ॥

जयकरी छन्द ॥

इन दोउनमें एकी भाव। जानि परत है सुनु नरराव ॥
एकी भाव दुहुनको जौन। समुझब हृदय गृन्थि है तौन ॥

दोहा ॥

खोलत जे यहि गृन्थिको तेहैं जीवन मुक्त। यामें संशय है न जे कहत ज्ञानसों युक्त ॥
जैसे उज्जल करत तन पुरुष नदीमें न्हाय। तैसें बुध यहि ज्ञानसों अंतहकरण सचाय ॥
महानदीके पारको जन जानेहु तात। पार करण नौका बिना केहू जाय न जात ॥
अरु यह जो है जगनदी तास परात्मा पार। ताको जानेही तरत साधन बिनहु सुढार ॥
अर्थ धर्म अरु कामजे तिन्हैं जानि क्षयमान। छोड़त जे ते होत नहिं फेरि बासनावान ॥
इन्द्रिय करिकै आत्मा नाहीं देख्यो जात। अपनी अपनी विषयमें लगी रहत है तात ॥
यह जाने सो होत बुध और न कारण जानु। सुबुध होनको कहत हैं जे हैं सुबुध महान ॥

सोरठा ॥

आत्माको जो ज्ञान जाहि होत है प्राप्त नृप। ताहि कहत मतिमान होत न दृष्टादृष्टभय ॥

दोहा ॥

शत्रु आदिको जौन भय दृष्ट तौन दुख रूप। नरकादिकको जौन भय सो अदृष्ट है भूप ॥

हरिगीती छन्द ॥

सुनु देहको अभिमान जाको होय छूटो ज्ञानसों। नहिं होत ताको प्राप्त है भय सर्व जगत महानसों ॥ बर आत्मज्ञानी जौन पूरब जन्मके जे कर्म है। तिनकों सु भोग न काज कर्महि करत कहत सुधर्म है ॥ यहि हेतुते यहि जन्म माहीं करत कर्महि जौन है। सुनु कर्म सो परलोक में फल देत नहि बुधिभौन है ॥

दोहा ॥

आत्मज्ञानी जे नहीं करत कर्मते जौन। तिनते दृष्टादृष्ट भय प्राप्त होत बुधिभौन ॥
कामादिकमें पगि करत अहंभावसों कर्म। तास असूया करत है जे बरप्रज्ञ सुकर्म ॥
आत्मज्ञानी जे नहीं अहंभावसों तौंन। कामादिकमें पगि करत कर्म सुनहु बुधिभौंन ॥
तिहितें दृष्ट अदृष्ट भय प्राप्त होत है पर्म। जे आत्मज्ञानी नहीं तिनको जानु सुकर्म ॥

चरणा दोहा ॥

मरण भये पुत्रादिकको अरु नष्ट भये धन भूरि। अज्ञानी जन जौन सर्व ते रहत दुःखसोंपूरि ॥

आभीरछन्द ॥

अरु ज्ञानी हैं जौन। लहत दुःख नहि तौन ॥ पुत्रादिकको नाश। भये सुनहु बुधिराश ॥

दोहा ॥

जानत यहि वृत्तान्तको जे जन हैं अवदात। ज्ञानवान तेई परम सुनहु धर्मधर तात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे एकविंशोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

ध्यानचारि परकारको कहततेहि हौंतात। जिहिसों ऋषिवर लहत हैंपरम सिद्धि अवदात ॥

भ्रमरावली छन्द ॥

नहिं कामहि आदिक जे जिनके मनमें। हिम आदिक सर्व सहैं बसिकै बनमें ॥
जगको तजिकै जगमें पुनि आवत ना। रत ज्ञानहिमें मन वेग बढ़ावत ना ॥

दोहा ॥

कीन्हे मनगत मोक्षमें ऐसे हैं जन जौन। यथा योग्य ते करत हैं ध्यान सुनहु बुधि भौन ॥
इन्द्री सर्व बटोरिकै मन थिरि करिकै पर्म। काष्ठवत बैठै मुमुनि हैं तजिकै मै भर्म ॥
सुनै शब्द नहिं कानसों जिह्वासों रस नाहि। जानै अरु जानै नहीं स्पर्श त्वचाके माहि ॥
रूप न जानें चक्षुसों अरु नासासों गन्ध। करिकै ऐसी भांतिसों सब इन्द्रियको बन्ध ॥
मनकेमाहिं बटोरिकै विधिसों इन्द्रिय सर्व। आत्मा मांहि लगाय दे ज्ञानी परम अखर्व ॥
प्रथम हृदयाकाशमें ध्यान मार्गके माहिं। मन लगाय दे खस्थ ह्वै अंत लगन दे नाहिं ॥
मनको औ इन्द्रियनको है बटोरिबो जौन। मुख्य ध्यान यह भूप है कहत मनीषा भौन ॥

जयकरी छन्द ॥

इन्द्रिय सह रोक्यो जो तात। चञ्चल सुमन अलग ह्वै जात ॥ जिमि घनते है अलग बिशाल। चमकति चपला सुनु भूपाल ॥ जिमि जल विंदु पातके माहिं। लोल होत हैं ठहरत नाहिं ॥ इमिही ध्यान मार्ग में पर्म। होत लोल चित कहत सुधर्म ॥

दोहा ॥

ध्यानमार्गके माहिं रहि मन क्षणमात्र सुजान। होय जात पुनि वायुवत चञ्चल तात महान ॥
चञ्चलतासों चित्तकी नहीं अधीरज होय। फिरि लगाय दे ध्यानमें ज्ञाननैनसों जोय ॥
ध्यान करण जो लगत है ताको प्रथम बिचारि। प्रात होत पुनि होत है प्राप्त विवेक सुटार ॥
प्राप्त वितर्क सुहोत है फेरि सुनहु महिपाल। जानततेहैंयहक्रमहि जिनकोसुमति बिशाल ॥
ईश्वर को जो रूप है अति सूक्षम अभिराम। तामेंमनहि लगायबो हिय अकाश में आम ॥
अधिकारी जो ध्यानको मध्यहिमें सुनु भूप। तास बिचारक नाम है यह जो ध्यान अनूप ॥

चरण दोहा ॥

थूल रूप जो ईश्वर को है तामाही भूपाल। मन लगायबो जौन है कहत सुबुद्धि बिशाल ॥

दोहा ॥

अधिकारी जो ध्यानको अधम तास यह पर्म। ध्यानविचारक नाम है निजुमैं कहत सुधर्म ॥
क्रमसों आत्मा जानिबो तजि अज्ञान अपार। है उत्तम ध्यानीनको यह वर ध्यानविचार ॥
ईश्वरकी जो मूर्त्ति है तास अकारहि चारु। मन जब प्रापत होय वर कीन्हे ध्यानविचारु ॥
तब छुटाय आकार सों ईश्वर को परकाश। तामें मनहि लगायबो सो विवेक बुधिराश ॥

जयकरी छन्द ॥

मध्यमध्यानी को यह तात। ध्यान विवेक कह्यो अवदात ॥
अब उत्तम ध्यानी को जौन। ध्यान विवेक सुनहु तुम तौन ॥

दोहा ॥

निर्गुणमाहिं लगायबो चञ्चल मनहिं अपार। सोउत्तम ध्यानीनको ध्यान विवेक सुटार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु सों पाई युक्तिजो तासों क्रम ते पर्म। निर्गुण को जो चीन्हबो तौन बितर्क सुधर्म ॥

सोरठा ॥

यह जो बितर्कध्यान सो मध्यम ज्ञानीन को। अब बितर्क मतिमान सुनु ध्यानी उत्तमन को ॥

दोहा ॥

आत्मामाहिं लगावनो मनको जौन सुजान। ताते छूटे देहको जो अभिमान महान ॥
प्राप्त भयो आनंद जो तौनहु तजिके पर्म। मनको जौन लगावनो निर्गुण माहिं सुधर्म ॥

सोरठा ॥

यह जो बितर्क ध्यान सो उत्तम ध्यानीन को। कह्यो तुम्हैं मतिमान हम सुबुधनके पाहिसुनि ॥

रोला छन्द ॥

होय मनको ध्यानमें जौ प्राप्त क्लेश सुजान। ऊबितौ तजि धीर्य्यताको छोड़िए नहिं ध्यान ॥ धूरि भस्मकरीषमें जौ भारि शीघ्रहि नीर। जौ बनायो चहै कछु तौ बनै नाहीं धीर ॥ राखिए कछु काल जौ जलमाहि इनको डारि। जो बनावो बनै सो तब कहत हौ निर्धारि ॥ इमिहि इन्द्रिय एकठी मनमांहि करि अवदात। सहज सहज लगाइए मन आत्मामें तात ॥ सहित इन्द्रिय मनहि राखे ध्यान मारग बीच। नित्यके अभ्याससों मन शान्त होत निभीच ॥

दोहा ॥

मन रोकेसों जौन सुख प्राप्त होत है पर्म। तासम दोऊ लोकके सुख नहिं भूप सधर्म ॥
ता सुखसों हैं युक्त जे ध्यान कर्म में तौन। होत परम परसन्न हैं संशय नहिं बुधिभौन ॥

सोरठा ॥

यहिविधि कीन्हे ध्यानयोगीमोक्षहि लहत है। सुनहुभूप मतिमान संशय अब नरंच है ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाबिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्म्मे द्वाविंशोऽध्याय: ॥

इति अध्यात्म समाप्तम् ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

मनहिं लायबो ध्यानमें कह्यो पूर्व तुम तात। हम एकाग्र ह्वै चित्तकै सुन्यो तौन अवदात ॥
चञ्चल मन बिनजप किए लगत ध्यानमें नाहिं। याते जपकी बिधिकहौ आपुहमारे पाहिं ॥
चारिहु आश्रम के धरम मोहिं सुनाए पर्म। और सुनाई बहु कथा सह इतिहास सुधर्म ॥

नरेश छन्द ॥

हम सुनी तौन मन लायकै। अरु गुणी हिये बहु भायकै ॥
अब जापके फल पर्मको। तुम मोहि कहो तजि भर्मको ॥

आभीरछन्द ॥

जापक हैं जन जौन। कहा रहत है तौन ॥ कहो मोहि अरुतात। जपकी बिधि अवदात ॥

दोहा ॥

जापककहिएकाहिनृप अरुजपकहिएकाहि। यहसबमोकों करिकृपा कहोआपु अवगाहि ॥

भीष्मउवाच ॥

यहि प्रसंगमें कहत हौं एक इतिहास सुभूप। यमको द्विज को काल को है संवाद अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरीछन्द ॥

कह्यों योग वेदान्त विचार। मोक्ष दरशिन सुमति अगार ॥ जपको त्यागहि तिनके माहिं। हम यह सुनो बुधनके पाहिं ॥

दोहा ॥

लिख्यो वेदके माहिं है ब्रह्महिको सुविचार। यातें जपको त्याग है सुनु नृप बुद्धि अगार ॥
जगतमाहिं जो ब्रह्मको है बिबेक सुखदाय। ताहि कहत वेदान्त है जे बरबुध नरराय ॥

आभीर छन्द ॥

मन निरोधको योग। कहत बिज्ञ बर लोग ॥

दोहा ॥

होत सुअन्तहकर्ण है जप कीन्हे ते शुद्ध। होत नहीं साक्षात कार है आत्मा को नृप बुद्ध ॥
योग और वेदान्तमेंयहि कारण तें पर्म। उपकारी है औ नहिंऊ जप बुध कहत सुधर्म ॥

जयकरीछन्द ॥

यहिके माहिं सुकारण एक। है सो सुनु भूपति सबिबेक ॥ इन्द्रिय जीतब अरु मनरोध। सत्य बोलिबो तजिबो क्रोध ॥ अग्निहोत्रको करिबो जौन। अरु एकांतै रहिबो तौन ॥ अरु पबित्र भोजनको कर्म। हियमें निति अनसूया धर्म ॥ अरु सुजीति इन्द्रियकों पर्म। सत्वसुगुणके माहिं सुकर्म ॥ जो लगायबो है भूपाल। अरु जो धरिबो क्षमा बिशाल ॥ अरु न कामना करिबो जौन। अरु जो मनरोकब बुद्धिभौन ॥ जपके अंग सर्व एतात। कहत सुबुध मतिके अवदात ॥

बरवै छन्द ॥

सिद्धिहोत नहिं जप है इनबिन भूप। इनको धारण करिए प्रथम अनूप ॥ जे सकाम जनतिनकों जप अभिराम। कारण स्वर्गादिकका है बुधिधाम ॥ अरु सकाम नहिं जेहैं जन अवदात। साधन मोक्षहिको है तिनकों तात ॥ पैन्हि पबित्रा कर्म सुकुशकी चारु। अरु शिरमाहिं धारिकै कुशा सुढारु ॥ बैठि सुआसन कुशके पैअति स्वच्छ। और सु बज्र कुश धरिकै चहुंदिशि दच्छ ॥

दोहा ॥

मनको कर्षि सुबिषयते जीव ब्रह्म करि एक। करै जपहि सुनु भूपवर कहत सुबुध सबिबेक ॥
मनको करि एकाग्र तजि वार्ताको अधिकार। जानै एकहि ब्रह्मको अरु आपुहि सुउदार ॥

रामगीती छन्द ॥

ब्रह्ममें अरु आपुमाहीं एक जानै भाव। ताहि तजि कामादिमें पुनि परै नहिं नरराव ॥
होत है तब ब्रह्म सूक्ष्म देह तजिकै तात। है नहीं सन्देह यामें भणत बुध अवदात ॥

चरणा दोहा ॥

चहै भिन्न जौ रह्यौ ब्रह्मको प्राप्त होयकै पर्म। रहै भिन्न तौ ब्रह्मलोकमें लहत न जन्म सुकर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिटेवेनकबिनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे जापकोपाख्यानेचयोविंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥

जो उत्तम गतिपावत जापककहो तौनतुमतात। यहैएकही गतिपावनकी औरऊ गतिअवदात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥

उत्तमगतिहूको है पावत जापक परम अनूप । और अनुत्तमहू गतिको सुनु प्राप्त होत है भूप ॥

आभीर छन्द ॥

जापक जैसे जात । नरकमाहिं हे तात ॥ तैसे तू सुनु आम । छोड़ि दुचितई माम ॥

दोहा ॥

पूर्वकहो जैसी क्रिया जापककी अभिराम । करै न तैसी जाय तौ तौन नर्कमें माम ॥

मोहाछन्द ॥

करै जौन जप प्रेमसों । अरु जो करै न नेमसों ॥ सो जापक सुनु तात है । निश्चय नर्कहि जात है ॥

जयकरीछन्द ॥

गर्ववान अरु जापक जौन । पर अपमान करत अरु तौन ॥
निश्चय निरय लहत है तात । कहत सुबुध मतिके अवदात ॥

दोहा ॥

जहं जहंकी करि कामना करत जपहि जन जौन । निश्चय तहंतहं जातहै संशय नहिं बुधिभौन ॥
प्राप्त होव परब्रह्मको है उत्तमगति जौन । तासों है स्वर्गादिकी प्राप्ति निरय सम तौन ॥

आभीर छन्द ॥

जेजापक ज्ञानी नाहीं । प्रापतहोत मोहिमाहीं ॥ तातें नारकदुखकारी । लहिकै शोचकरभारी ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

उठि हैं हम यह कारज करिकै । हठ बिस्तावी नेमको धरिकै ॥
करत जौन जप नारक माहीं । परत तौन है संशय नाहीं ॥

दोहा ॥

जप नहिं पूरण होतहै तिनसों प्रन भूपाल । कोई उपद्रव होतहै प्रापत आय बिशाल ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

ब्रह्ममाहिं जो प्राप्त भो करत करत जप पर्म । सो पुनि कैसे देहकों प्रापत होत सुधर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

जपतौ परम प्रसस्तहै पै कीन्हे सह काम । प्राप्त होत जन निरय कों कहत सुबुध बुधिधाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे जापकोपाख्याने चतुर्विंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

जापक कैसे निरयको प्राप्त होत है तात । कहौ मोहिं अवगाहि कै आपु बिज्ञ अवदात ॥
सुने रावरे बचन ए भो आश्चर्य महान । सुकरम कीन्हे मिलत कहुं कुत्सितफल बुधिधाम ॥

भीष्मउवाच ॥

भयो धर्मके अंशते तू उतपन्न नरेश । है तेरी थिति धर्ममें बर सुभावते बेश ॥

आभीरछन्द ॥

धर्म जास आधार । ऐसो बचन सुढार ॥ तोहि कहतहौं तात । सुनहु तौन अवदात ॥

चंचला छन्द ॥

देवतानके सथान जौन हैं प्रकाशमान । रंगसों भरे उतंग हैं अनूप रूपमान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वदा अनन्ददाय है नरेन्द्र हे सुजान । स्वच्छभासके उदासभावहर्ण है सुठान ॥

दोहा ॥

इच्छा जहंकी होय तहं शीघ्र लेय है जात । ऐसे चारु विमान हैं तिनकेमाहिं विभात ॥

जयकरीछन्द ॥

लोक लोकपालनके पर्म । शुक्र तथा गुरुके सहधर्म ॥ विश्वे देवनको वरलोक । तथा मरुतको सुनु बुधिओक ॥ तिमिहि रुद्रको रविको पर्म । औ सुवसुनको सुनहु सधर्म ॥ ब्रह्म प्राप्तिसों हैं ए सर्व । जानहु नर्क समान अखर्व ॥

आभीर छन्द ॥

सुनहु ब्रह्मपद जौन । वर निर्भय है तौन ॥ सत्वादिकगुण तीन । तिनसों रहित प्रवीन ॥

जयकरी छन्द ॥

महाभूत मन इन्द्रिय सर्व । बुद्धि बासना कर्म अखर्व ॥ वायु तिमिहि अज्ञान महान ॥ इन आठहुसों रहित सुजान ॥ प्रियता अरु अप्रियता जौन । रहित इनहुंसों है बुधिभौन ॥ सुख दुख शोक हर्षसों भूप । रहित नित्यहै परम अनूप ॥ आदि अंतसों रहित नृपाल । तहां समर्थ नहीं है काल ॥ है सबको प्रभु तौन महान । ताहि भएतें प्राप्त सुजान ॥ रहत शोच नहिं महत अनेक । औ जितेक हैं दुःख तितेक ॥ कह्यौ ब्रह्मपद तोहि बखानि । हम नीके मतिसों अनुमानि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे पंचविंशोऽध्याय: ॥

रामगीतीछन्द ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥

कालको इक्ष्वाकुको अरु विप्रको बुधिधाम । मृत्युको अरु धर्मको संवाद तुमकों आम ॥ कहैं गे हम कह्यो हो तुम तात ऐसे मोहि । कहो सो अब कृपाकरिकै आपु मोतन जोहि ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत यहि परसंगमें इतिहास हो एक तात । सुनहुं सो तुम चित्तकों एकाग्र करि अवदात ॥ सूरसुत इक्ष्वाकुको अरु विप्रको अभिराम । कालको यम मृत्युको संवाद अति शुभ आम ॥ हुतो ब्राह्मणएक अति अभिराम वरबुधि धाम । धर्म में हो प्रकृत शुचि यश हुतो जाको माम ॥ कल्प औ व्याकरण जोतिष औ निरुक्त सुछन्द । औ सुशिक्षा वेदके षटअंग ए मनुजेन्द ॥ हुतो जानत तौन हो इन षटहुकों सुनु भूप । पैप्पलादि सु नाम ताको हुतो परम अनूप ॥ वेद अर्थज्ञ माहिंसो वर हुतो विप्र प्रवीन । शृंगपै हिमवानके सो हुतो रहत कुलीन ॥ नेम करिकै कियो जप तहं वर्ष एक हजार । छोड़िकै सब कामनाको माम बुद्धिअगार ॥

जयकरी छन्द ॥

जपसों गायची साक्षात । ह्वैकै ताहि कह्यौ इमि तात ॥ मैं प्रसन्न हौं तो पर पर्म । लखि तेरो जप विप्र सुधर्म ॥

उकठा छन्द ॥

गायची के बैन । सुनिकै द्विज बुधिऐन ॥ बोल्यो कछू न नाहिं । निरत रह्यो जपमाहिं ॥

दोहा ॥

तातें भई प्रसन्न अति करिकै कृपा विशाल । पुनि पुनि भई सराहती द्विजके जपहि नृपाल ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब जप विधि सह पूर्ण भो तब उठि करिकै क्षिप्र । शिर देवीके पायपै धरतोभयो सुविप्र ॥

हरिगीती छन्द ॥

तिहिके अनन्तर कहत भो सो ताहि ऐसे बैन । तू मोहि आई लखन तातें भयो देवि सचैन ॥ दे देवि यह बरदान हमको तू कृपा करिकै महा । मैं रहौं तत्पर जपहिसे रत प्रीति बन्धनसों नहा ॥ सावित्र्युवाच ॥ जपमाहिं तौ बर लगोई है चित्त तेरो विप्र हे । कछु और इच्छा होय जो सो मांगु दैहौं क्षिप्र हे ॥

दोहा ॥

सावित्रीके बैन ए सुनि इमि कह्यो सुजान । बढ़ो लालसा जपहिमें मम चहिए नहिं आन ॥

अरिलछन्द ॥

रहै चित्त एकाग्र नित्य मम । देहु देवि यह चाहत हैं हम ॥ सावित्री तिहिके सुवचन सुनि । कहति भई इमि मधुरबचन गुनि ॥

उल्लाला छन्द ॥

जिन लोकनमें जात अन्यऋषि तिनमें तू नहि । प्रापत ह्वै है विप्र प्राज्ञबर करु निजु हियमहि ॥ प्रापत ह्वै है ब्रह्मपदहि तू आनंदमें पगि । रहो चित्त एकाग्र नित्य तब जपहि माहि लगि ॥

सोरठा ॥

धर्म मृत्यु यम काल ऐहैं तेरे पास द्विज । धर्म विवाद विशाल तोसों उनसों होयगो ॥

तोमर छन्द ॥

अब जातिहौं निज धाम । सुनु विप्र हे अभिराम ॥ इमि विप्रको कहि बैन । नृपसों गई निजु ऐन ॥ तिहिके अनन्तर तौन । जपमाहिं लगि बुधिभौन ॥ सुरवर्षशतलों पर्म । भो गहत तब सुधर्म ॥

दोहा ॥

पैप्पलादिको पूर्ण भो जब जप विधि सह भूप । तास पास साक्षात तब आयो धर्म अनूप ॥

धर्मराजउवाच ॥ चरणाकुलकछन्द ॥

सुनो विप्रबर मतिसों छाए । तोहि लखन काजै हम आए ॥ तोहि मिली जपको फल ऐसो । बहुतन अबलौ लह्यो न तैसो ॥

दोहा ॥

देवलोक नरलोक अरु जीते ते मतिमान । गृह उलंघि तू सुरनके लहिकै उत्तम थान ॥

मौनी छन्द ॥

देहत्याग तुम करिकै विप्र सुजान । ईछित लोकहि जावहु गुणहु न आन ॥ देह तजे तुम लहिहौ इच्छित लोक । और कहैं का तुम हौ बरबुधि ओक ॥

चरणाकुलकछन्द ॥ ब्राह्मणउवाच ॥

दुखसों मिश्रित सुख जिनमाहीं । तिनलोकनको जैहौं नाहीं ॥ जाहु धर्म तुम अपने गेहै । तजिहैं हम नाहीं यहि देहै ॥ स्वर्गादिक लोकनके काजै । करु निश्चय हियमाहिं दराजै ॥ तन तजिहैं तब मुक्तिहि ह्वैहै । नहिं हम स्वर्गादिकमें जैहै ॥ पैप्पलादिकी बानी सुनिकै । धर्म कहत भो ऐसे गुणिकै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म्मउवाच ॥ दोहा ॥

तब अवश्यही छूटिहै है नहिं संशय अच । अरु सुब्रह्मपद पाय है तू बर बिप्र पवित्र ॥
बीचत्व स्वर्गके बासकों क्यों छोड़त आनंद । यह तोकों मैं कहतहौं गुण मम बचन अमन्द ॥

ब्राह्मणउवाच ॥

बिना ब्रह्म नहिं रुचत है हमैं स्वर्ग ते धर्म । याते श्रद्धा स्वर्गकी है नहिं मो हिय पर्म ॥

धर्मउवाच ॥

तनमें मन तुम लाउ मति तजि तन होहु सधर्म । बिना रजोगुण लोक जे तिनमें जाहु सुकर्म ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ चरणाटोहा ॥

होय कामना जैबैकी जो सतन स्वर्गके माहिं । जपके फलते जाय सतन तौ यामें संशय नाहिं ॥

दोहा ॥

स्वर्ग जायबेकी नहीं मो हिय इच्छा धर्म । याते हम जैहैं नहीं निश्चय जानहु पर्म ॥

धर्मउवाच ॥

पैप्यलादि तुम कहत यह हम तन तजिहैं नाहिं । लखो मृत्यु अरु काल तब आए हैं तव पाहिं ॥

भीष्मउवाच ॥

तदनन्तर यम काल अरु मृत्यु बिप्रको बैन । कहत भए ऐसे सुनहु भूप मनीषा ऐन ॥

कालउवाच ॥

कियो चारु आचरणते अरु जप सविधि महान । ताके फलकी प्राप्ति बर है द्विज तोहि सुजान ॥
मिल्यो तोहि फल सुजपको जाहु स्वर्ग तू आसु । जैबैको है समय है काल कहत तब पासु ॥

मृत्युउवाच ॥

पाय प्रेरणा कालकी सुनहु बिप्र बुधिरास । तोको लीबे काज हौं आयो मैं तब पास ॥

जयकरी छन्द ॥

यम अरु काल मृत्युके बैन । सुनिकै बिप्र मनीषा ऐन ॥ कहत भयो इमि बचन सुजान ।
आदर करिकै परम महान ॥ करौं काज मैं कौन तुम्हार । तुम सब आज्ञा करौं सुढार ॥

भीष्म उवाच ॥

धर्मवान पाण्डव बुधिधाम । तीर्थयात्रा करत ललाम ॥ आयो नृप इक्ष्वाकु पवित्र ।
तिही समयके माहीं तब ॥ सबकों करि इक्ष्वाकु प्रणाम । कुशल प्रश्न पूछत भो आम ॥
अर्घ्य पाद्य दै ताकों बिप्र । बैठाए आदर करि चित्र ॥ पूछि कुशल तदनन्तर चाहि ।
बचन कहत भो ऐसे ताहि ॥ कहो भूप इक्ष्वाकु उदार । करौं कौन तव काज सुढार ॥
सुनि ए बैन भूप इक्ष्वाकु । कहत भयो बिप्राहि इमि वाकु ॥ राजोवाच ॥ हम राजा तुम
ब्राह्मण पर्म । याते तुमको कहत सधर्म ॥ लीबो है द्विज कार्य्य तुम्हार । अरु दीबो है
कार्य्य हमार ॥ याते कछु हमहीसों लेहु । सुनहु बिप्र तुम बर बुधिगेहु ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

द्वै प्रकारके होत हैं बिप्र भूप बलवान । किते प्रतिग्रहमें प्रवृत किते निवृत धीमान ॥

सोरठा ॥

तिन्हैं देहु तुम दान जौन प्रतिग्रहमें प्रवृत । हम हैं निवृत सुजान याते लेहैं नाहिं कछु ॥

दोहा ॥

तपसों साधैं कौंन तब कारज हम हैं भूप । कहा देहिं हम तोहि अति प्रियहै कहा अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजोबाच ॥ सोरठा ॥

हम क्षत्रिय हैं उद्ध सुनहु बिप्र धरमज्ञ बर। मागैं तौ हम युद्ध जानत और न मांगिवो ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

जैसें तू निज धर्ममें है प्रसन्न सुनु भूप। तिमिहि आपने धर्ममें हौहु प्रसन्न अनूप ॥

राजोबाच ॥

देहिं कहा निज शक्तिसों तोको हम भूपाल। मोहि कह्यो तुम पूर्व हौ ऐसे बिघ्न बिशाल ॥

जयकरी छन्द ॥

सो तुमसों मागत हैं पर्म। जपको फल बर देहु अभर्म ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

जानत युद्धहि मांगि हम तुम इमि कह्यो समर्थ। सो मो संगन होयगो जानत हौ किहि अर्थ ॥

राजोबाच ॥ चरणादोहा ॥

बाकयुद्धके कर्ता हौ तुम यातें याचत तोहि। देहु बुद्धिबर शुद्ध द्विज बाकयुद्ध तुम मोहि ॥

ब्राह्मण उवाच ॥

मन सुप्रतिज्ञा छोड़ि हौ सुनहु भूप बुधिभौन। दे हम अपनी शक्तिभर कहौ जौन तुम तौन ॥

राजोबाच ॥ तोमरछन्द ॥

तुम कीन्ह जप शतवर्ष। मन लाय होय सहर्ष ॥ फल तास जो अभिराम। तुम देहु तौन ललाम ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ जप कीन्ह जो हम भूप। फल तास अर्ध अनूप ॥ तुम लेहु हैं हम देत। सुनु पर्म प्रज्ञ सचेत ॥ तुम जौ प्रसन्न न होत। लहि अर्द्ध फल बुधिपोत ॥ सब लेहु तौ अभिराम। हम देत हैं नृप साम ॥ सुनि बिप्रके बर बैन। इमि कह्यौ भूप सचैन ॥ तुम दीन औ हम लीन। फल जापको सुप्रवीन ॥ कहु मोहि बिप्र प्रतक्ष। हम हैं सुपूछत दक्ष ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ हम फलहि जानत नाहिं। सति कहत हैं तव पाहिं ॥ जप कीन्ह जो सो सर्व। हम दीन्ह तोहि अखर्व ॥ यम मृत्यु काल सुधर्म। सब साक्षि ए हैं पर्म ॥ राजोबाच ॥ फल बिना जान्यो जौन। तव जापको बुधिभौन ॥ मम कहा करिहै काज। सुनु बिप्र बिघ्न दराज ॥ फलजापको जो होय। हमको कहौ जो सोय ॥ हम तौ लहैं फल तौन। सुनु बिप्र प्रज्ञाभौन ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

बहुत बारता कथन हम करि जानत नहिं भूप। तुम फल मांग्यो जापको सो हम दयो अनूप ॥

उल्लाला छन्द ॥

तुम औ हम दोउनको सत्य पालिबो उचितहै। बिनासत्य पाले सु मो जीवहोतअतिदुचितहै ॥

दोहा ॥

करी कबहु नहिं कामना मैं जप मांहि सुढार। याते कैसे जापको जानो सुफल उदार ॥

चरणा दोहा ॥

देहुजापकोफलतुमहमकोंयहतुमकह्योनरेश। अरुदैंगेहमजपको फलबरयहहमकह्योसुबेश ॥

दोहा ॥

अपने अपने बचनको रक्षण उचित सुजान। बिन कीन्हे रक्षा नृपति ह्वै है दोष महान ॥

सोरठा ॥

कहत जौन मैं बैन तिनकों जौ नहिं मानिहौ। तौ तुम भूपति ऐन लहिहौ पाप असत्यको ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरीछन्द ॥

उचित नहीं तुमको भूपाल। झूठ बोलिबो प्रश्न विशाल॥ अरु हमकोऊ उचित है नाहिं। होनो प्रकृत झूठके माहिं॥ तुम जप मो मांग्यो हम दीन। करौ ग्रहण तुम तौन प्रबीन॥ तुम मेरे सुस्थानमें आय। जपको फल मांगो नरराय॥ सो तुम लेऊ सत्यके माहिं। पगि कै करिए नाहीं नाहिं॥ यज्ञ तिमिहि औ नेम नृपराय। सत्य समान नहीं सुखदाय॥

दोहा॥

करत भूप परलोक में जैसी सत्य सहाय। तैसी नाहीं करि सकत यज्ञ नेम नरराय॥

मोतीदाम छन्द॥

अनेकनवर्ष कियो तप जौन। सुनो नृप सत्य समान न तौन॥ करै रवि सत्यहि सों पर काश। हरै तम तुंगहि है बुधिराश॥ बहै अरु सत्यहिसों पवमान। प्रकाशित सत्यहि सों सु क्षशान॥ सुसत्यहि बोलत जौन हमेस। लहै दिवमें सुख तौन अशेस॥

दोहा॥

धरि सुतुलामें सत्य औ धर्महि द्रुहिण सधर्म। तोलत भो सो धर्मते सत्य गरू भो पर्म॥

बरवै छन्द॥

सुन्यो पूर्वहौ हम यह बुध जन पाहि। सत्य होत है ऐसो तजऊ न ताहि॥

दोहा॥

जहां सत्य तहं धर्म है बढ़त सत्यसों सर्व। क्यों तजि सत्य असत्यकी इच्छा करत अखर्व॥ सत्य भावको गहऊ तुम तजो अनृतको भाव। अनृत समान न और है पातक सुनु नरराव॥ मैं दीन्हो फल जापको ताको लेहौ नाहिं। छूटि धर्मसों विचरिहौ तौ लोकनके माहिं॥

राजोवाच॥

द्वै क्षत्रियके धर्म हैं सुनऊ विप्र मतिमान। पृथ्वीकी रक्षा करण अरु बरयुद्ध महान॥ क्षत्रियको दाता कहत बुधजन सुनु बुध पर्म। याते तो फल जापको कैसे लेहिं सुकर्म॥

ब्राह्मणउवाच॥ रामगीतीछन्द॥

अपने मनसों न तुमको कह्यौ हम नृप देन। औ सुनो इक्ष्वाकु हम नहिं गए तेरे ऐन॥ आपुहीसों आयकै नरराय तुम मो पाहिं। मांगिकै फल जापको अब लेतहौ क्यों नाहिं॥ धर्मउवाच॥ हौं तुम्हारे पास आयो मोहिं जानऊ धर्म। करो तुम मति बाद दोऊ दुओ सुनऊं सधर्म॥ सत्यको फल लहौ भूपति दानको तुम विप्र। तजो दोऊ तुम विवादहि कहे मेरे क्षिप्र॥ स्वर्गउवाच॥ धारिकै मैं रूप आयो स्वर्ग जानो मोहि। करो तुम मति बाद दोऊ सुनो मो तन जोहि॥ तुल्य फल तुम लहौ औ चुप रहो सुनि मो बैन। बैन सुनि ए स्वर्गके इमि भयो कहत सचैन॥

राजोवाच॥ बरवैछन्द॥

सुनऊ स्वर्ग तुमसों नहिं काम हमार। जिमि आए तिमि जावऊ करऊ न बार॥ होय कामना द्विजके जौ अभिराम। तुम्है प्राप्त होने की सुनु दिव आम॥ लेय पुण्यको फल तो चारु हमार। यह सुनि बोल्यो सो द्विज बुद्धिअगार॥ ब्राह्मणउवाच॥ अक्षभावसों लरिकइ नाहीं हाथ। कबऊं पसारो ह्वैहै हम नरनाथ॥ यज्ञ करण आदिक हैं जे षट कर्म। विप्रनके सुनु भूपति पर्म सुकर्म॥ याजनादि जे तिनमें सुकरमतीन। तिनसों जानऊ हमको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहत प्रबीन ॥ निहत धर्मको सेवत रहत हमेश । मोहि लुभावत क्यौं हो आपु नरेश ॥ अपनो कारज करिहैं हमही भूप । तब सुपुण्यको चाहत फल न अनूप ॥

राजोबाच ॥ जयकरीछन्द ॥

जो अपने जपको फल पर्म । हमको दीन्हो बिप्र सुधर्म ॥ तौ मम तब कछु है फल जौन । संगहि रहो नित्य द्विज तौन ॥ लेनो है द्विज कार्य्य तुम्हार । अरु देनो है कार्य्य हमार ॥ पै मांग्यो जप हम तब पाहि । ताके परे भोगके माहि ॥ अब एक कहत तुम्हें हौं बैन । सो मानहु तुम द्विज बुधिऐन ॥ मम तब फल राखौ एकच । अब तुम कहो कछू मति अच ॥

दोहा ॥

आपु कहो यह बचन जो प्रज्ञावान सुढार । कहा कहा फल भोगि है हम फल संग तुम्हार ॥ तौ मम फलको लेहु तुम तब फलको हम लेत । मानो मेरो बचन तुम यह बर बुद्धिनिकेत ॥

भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥

तिहीसमयके मांहि लरत लरत द्वै पुरुष नृप । आए तिनके पांहि गहे परस्पर फेटको ॥

दोहा ॥

नाम एकको बिहत हो एकको नाम बिरूप । धारे बस्त्र मलीन हे ते दोऊ सुनु भूप ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

सुनो बिहत हम पै ऋण तेरो । है इमि कहत बिरूप घनेरो ॥ कहत बिरूपहि बिहत सकोपै । ऐसे मम नहिं है ऋण तोपै ॥ कहि कहि इमि ते झगरा करते । ऐसे कह्यौ परस्पर अरते ॥ नृप इच्छाकु हमार तुम्हारे । करिहैं दूरि बिबादहि भारे ॥ कहि सुपरस्पर इमि रिषि पागे । ऐसे कह्यौ भूप के आगे ॥ तुम हो प्रतिपालक धरणीके । निपुण नीति के मांही नीके ॥ झगरा जो हम दोऊ न बारो । न्याय सहित ताकों तुम टारो ॥

बिरूपउवाच ॥ हरिगीतीछन्द ॥

हमहि धरावत बिहतको गोदानफल सुनु भूप हे । नहिं लेत ताको बिहत हे हम फेरि देत अनूप हे ॥ बिहतउवाच ॥ कछु ना धरावत है बिरूप हमार हम निजु कहत है । नहिं सत्य जानो बैन ए यह कहत मिथ्या महत है ॥

राजोबाच ॥ सोरठा ॥

कहु हे मोहि बिरूप कहा धरावत बिहतको । सुनि हम हिए अनूप कहिहैं तोहि बिचारिकै ॥ सुनि बिरूप ए बैन भूपति बर इच्छाकुके । सुनहु तात बुधि ऐन भूपहि कहत बिरूप भो ॥

तोमरछन्द ॥

हम हैं धरावत जौन । ऋण कहत तुमको तौन ॥ मनलाय सुनहु नृपाल । तजिकै प्रमाद बिशाल ॥

दोहा ॥

बिहत दई ही धेनु एक ब्राह्मणकों अभिराम । मांग्यो हो हम तास फल जाय बिहतके धाम ॥

रंगिकाछन्द ॥

बिहत सहितआनंद महान धेनुदानको नीको । देतभये फलहमैं सुजान लोभ नकियो न जीको ॥

मोनीछन्द ॥

तास अनन्तर लै हम कपिला चार । दुग्धवती बर बत्सा दोय उदार ॥
दई उंछवृत्ती बर द्विजको तौंन । बिधि सह आदर करिकै सुनु बुधि भौंन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरी छन्द ॥

तिनको सुफल विकृतको देत। करत हठहि सो फल नहिं लेत ॥ जैसे हम लीन्हों फल खच्च। तिमिहि विकृतहू लेइ प्रतच्च ॥

चरणा दोहा ॥

लीन्हों एक धेनुको फल हम पै दिन बीते भूरि। याते इ गोदानको सुफल देत याहि सुखपूरि ॥

सोरठा ॥

है ऐसो वृत्तान्त याको मतिसों विचारि कै। सुनिए श्रीक्षितिकान्त न्याय आपु करि दीजिए ॥

दोहा ॥

यासों हम गोदान फल जैसे लियो सुजान। तैसे हमसों लेत नहिं यह हठ करत महान ॥

सोरठा ॥

तुम विचारिकै न्याय झगरा हम दोऊनको। सुनिए वरनरराय शीघ्र दूरि करि दीजिए ॥

आभीरछन्द ॥ राजोवाच ॥

दीन्हों है चरण जौंन। तैं विरूपको तौंन ॥ फेरि लेत तू क्यौं न। कहौ विकृत बुधि भौंन ॥ जैसो होय करार। तैसो करो सुढार ॥

रामगीतीछन्द ॥ विकृतउवाच ॥

हम दियो नहिं यहि भाव सों गोदानको फल याहि। तिहितें नहीं कछु चहत मो मन होय यचहि जाहि ॥ राजोवाच ॥ यह देत औ तू लेत नाहीं विकृत सुनु मो पाहि। बिनभए चरण इ देत जगमें काहु काहुहि नाहि ॥ सुनि विकृत याते अनृत भाषत तूहि सत्य विरूप। है दण्डके तू योग्य निश्चय कह्यो ऐसे भूप ॥ विकृतउवाच ॥ हम दीन्ह भूप विरूप को गोदानको फल पर्म। पुनि दियो कैसे लेहिं हम नृप कहो आपु सुधर्म ॥ जौ दण्ड बर बश देत हौ तौ देहु इ भूपाल। पै दण्डके हम योग्य हैं नहिं नीतिसों सुविशाल ॥ विरूप-उवाच ॥ हम देत हैं तू लेत नाहीं विकृत सुनुयत जोहि। वर धर्मपालक भूपमणि यह दण्ड देहैं तोहि ॥

विकृतउवाच ॥ दोहा ॥

मांग्यो तुम गोदानको फल मेरे गृह आय। तोहि दयो हम फेरि सों कैसे लेहिं सचाय ॥ पुणि लीवे गोदानको दयो सुफल नहिं तोहि। याते सुनो विरूप तू कहा कहत हौ मोहि ॥

सोरठा ॥

बोल्यो पुणि न विरूप सुने बारता विकृतकी। तब बरविप्र अनूप कहत भयो इमि भूपको ॥

तोमर छन्द ॥

इन दुहुनके तुम बैन। नृप सुने बर बधि ऐन ॥ फल जापको हम देत। तुम लेहु तौन सचेत ॥ तुम अच और विचार। जिनि करौ सुमति अगार ॥

आभीर छन्द ॥ भीष्मउवाच ॥

ब्राह्मणको सुनि बाक। भूपति बर इक्ष्वाक ॥ मनके मांहि विचार। यह भो करत उदार ॥

दोहा ॥

इन दुहुनको न्याय जो भयो अबहि नहिं तौन। बीचहि देनो करत दृढ़ जापक बरबुधिभौन ॥ विप्र देत फल जापको मोको बर अभिराम। ताहि नहीं जौ लेहु तउ प्राप्त होत अघमाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरी छन्द ॥

जपको मांग्यो हमही अच । तिहितें द्विज क्यों देन पवित्र ॥
यह विचारिकै नृप बुधि ऐन । कह्यौ दुहुनकों ऐसे बैन ॥

दोहा ॥

तुम दोउनको न्याय निजु होय चुकै जब अच । तुम दोऊ तब जाइयो मन आवै जहं तच ॥

सोरठा ॥

करौं जौ न मैं न्याय नीति सहित दोऊनको । राज धर्म नशिजाय तौ यामें संशय नहीं ॥

आभीर छन्द ॥

स्वधर्म पालन जौन । उचित नृपनकों तौन ॥ जे नृप पालत नांहि । परत नरकके मांहि ॥

दोहा ॥

मोकों मो अज्ञानसों कठिन बिप्रको धर्म । प्रापत भो याते नहीं है मोमन सहशर्म ॥

ब्राह्मणउवाच ॥

दीन्हो जो फल जापको तुमकों हम अभिराम । ताहि धरे हैं भूप हम ऋणकी नाईं साम ॥

उकछा छन्द ॥

गृहण करो तुम तास । सुनहु भूप बुधिरास ॥ जो नहिं लेहौ आप । तौ मैं देहौं शाप ॥
ए सुबिप्र के बैन । सुनि ह्वै भूप अचैन ॥ कहत भयो इमि बात । बर बिप्रहि अवदात ॥

हरिगीती छन्द राजोवाच ॥

सुनु बिप्रवर यहि राजधर्महि नित्य है धिक्कार । जिहिमें प्रतिग्रह लेनको है परम दोष अपार ॥ हम करैं का हमकों प्रतिग्रह परो लेनो अद्य । किमि होय नाहीं प्रतिग्रह को दोष मोकों सद्य ॥ इहि भांति मनमें शोचिकै द्विजको कह्यौ इमि बैन । सुनु पैप्पलादि सुवचन मेरो परम प्रज्ञाऐन ॥ तुर लेय करिकै देन काजै हम प्रतिग्रह लेत । नांहि राखिबेकी कामना करि लेत बिप्र सचेत ॥ इमि बचन कहिकै बिप्रकों पुनि कहत भो इमि भूप ॥ तुम मोहि देनो कह्यो सो अब देहु शीघ्र अनूप ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ बर संहिताके जापसों हमकों मिल्यो फल जौन । तुम लेत सो हम देत तुमको सर्व प्रज्ञाभौन ॥ इहिभांति कहि जल छोड़ि दीन्हों भूपके कर माहि । नृप लेय सो सङ्कल्प ऐसें कह्यौ द्विजके पाहि ॥ हम लयो तुमसों जौन अबही देत तुमकों तौन । तुम लेहु सो बर धर्म धर द्विज परम प्रज्ञाभौन ॥ फल देय नृपकों जापको द्विज भयो रहित बिषाद । फिरि भूपकों कछु कह्यो नाहीं समुझि व्यर्थ बिबाद ॥

बिहूपउ बाच चरणा दोहा ॥

काम क्रोधहम दोउनकों तू जानु नृपाल महान । तुमसें हम परवेश करियह सब कियो सुजान ॥
लेय प्रतिग्रह ब्राह्मणकों तुम देन कह्यौ पुनि भूप । याते तुम दोऊ बरलहिहौ लोक समान अनूप ॥

दोहा ॥

तजी प्रतिज्ञा बिप्र नहिं औ न लोभ तुम कीन । पाल्यो क्षत्रियको धरम नृप इक्ष्वाकु प्रबीन ॥

आभीर छन्द ॥

याते लोक समान । लहिहौ दुओ सुजान ॥

काव्य छन्द ॥

द्विजसों जपफल मांगि आपु नहि लेन लगे जब । तब समुझावन काज कियो झगरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमनै तब ॥ सो जपको फल लीन्हे आपु पुनि हठ नहिं कीन्हो। अरु बर जानि सुभाय नहीं तिहिमें मन दीन्हो ॥

दोहा ॥

याते जौने लोककी करिहैं इच्छा आप। तौन लोकको जाय हैं नृप इक्ष्वाकु सदाप ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे कालमृत्यु इक्ष्वाकुपैप्पलादिसम्वादे षड्विंशोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

जापककों सुत होत फल जैसो। वर्णि सुनायो तुमको तैसो ॥ पढ़त संहिताकों द्विज जे हैं। प्राप्त होत विधि लोकहि तेहैं ॥ अथवा सूर्य्य लोकमें नीके। अथवा अग्नि लोकमें थीके ॥ करै काम बसिबे तिनमाहीं। लहै बास तौ रवि शिखि पाहीं ॥ रवि शिखि केहि सुगुणको धारैं। परम प्रचण्ड सुतेज पसारैं ॥

दोहा ॥

इमिहीं औरऊ लोक जे उत्तम परम विशाल। तिनमें जौ इच्छा करै जैबेकी महिपाल ॥

चरणा दोहा ॥

तौ तिनलोकनमेंह्वै प्रापत सांनद सुनुवरभूप। तिन लोकनकेबासिनको फल लहिकैर हैअनूप ॥

मोरठा ॥

ब्रह्मादिक को लोक तिनमें होय न जासरति। सो जन बर बुधिओक प्राप्त ब्रह्मको होत है

दोहा ॥

ब्रह्मपदऊ की प्राप्तकी इच्छा करै न जौन। तौ जैसी इच्छा करै तैसी पावै तौन ॥ जापक जैसी गति लहत वर्णि सुनाई तोहि। अब आगे का पूछिहो भूप पण्डुसुत मोहि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे सप्तविंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच मोरठा ॥

सुनि विरूपके बैन ब्राह्मण औ भूपाल वर। सुनऊं तात बुधिऐन कहा सुउत्तर देत मे ॥

दोहा ॥

सद्यमुक्ति क्रम मुक्ति ए दोय भांतिकी मुक्ति। औ उत्तम लोकहि लहब कीए पुण्य सयुक्ति ॥ इन तीनऊमें काहि वे प्राप्त भये भूपाल। कहा करत सम्वाद भे दोऊ विज्ञ विशाल ॥

भीष्मउवाच ॥ रामगीती छन्द ॥

धर्म यम अरु काल मृत्युहि यथा स्वर्गहि पूजि। औरजे द्विज रहे तिनकों पूजि सुवचन कूजि ॥ कहत भो भूपालको इहि भांतिसों द्विज बैन। लेऊ मेरे जाप को फल आपु प्रज्ञाऐन ॥ सुनो लेहौ फेरि मैं करि जाप अपने अर्थ। मोहि साबिती दयो वर यह सुभूप समर्थ ॥ रहैगी श्रद्धा तिहारी जापमाहीं पर्म। फेरि यातें शकत हौ करि जाप होय अभर्म ॥ राजो वाच ॥ पैप्पलादि सुविप्र तुम फल दयो जपको मोहि। दए ते जपदान भो वर पुण्य प्रापत वोहि ॥ होत जौ मैं विप्र तौ जप दानको फल जौन। अधिक तुमको प्राप्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होतो बिप्र प्रज्ञाभौन ॥ हौं सुक्षत्रिय भयो याते दान सम फल तोहि । भयो मम तब पुण्य मैं सब भाव तातें जोहि ॥ पुण्यके सम भावसों तुम बिप्र पर्म सुजान । चलौ उत्तम लोकको मम संग दक्ष महान ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ कहत हौ जौ भूप हमकों चलौ मेरे साथ । सासुहे धर्मादिके तौ सुनो बर नरनाथ ॥ योग्य मम तब पुण्यके जो लोक होय अमन्द । चलौ तौने लोक माहीं भरे भूरि अनन्द ॥ भीष्म उवाच ॥ जानि निश्चय दुक्षनके मतको सुरेश सुजान । आवतो भो पास तिनके सुरन सहित महान ॥ साध्य सब अरु मरुत त्योंही लोक पालक सर्व । नदी शैल समुद्र तीरथ जिते खक्ष अखर्व ॥ तिमिहि तप धरिरूप आवत भयो तिनके पास । सर्व औ हाहादि बर गन्धर्व सहित कुलास ॥ सिद्ध औ सुनि बेद सह बिधि भयो आवत तच । बिष्णु आवत भये तिमिही करण जनहि पबिच ॥ बिबिधि बिधिके बाद्य बाजन लगे नभके माहि । भाव करि बहु लगी नाचन अप्सरा तिनपाहि ॥ हर्ष सेती लगे वर्षण फूल देवत खक्ष । बिप्रकों तिहि समै मे इमि कह्यो स्वर्ग प्रतक्ष ॥ धन्य तुम हौ बिप्र बर औ धन्य तुमहू भूप । पुण्यके परभावसों तुम लही सिद्धि अनूप ॥ तदनु नृप इक्ष्वाकु औ बर पैप्यलादि सुबिप्र । भये कर्षत बिषयते इन्द्रियनको सब क्षिप्र ॥ प्राण व्यान अपान तिमिहि समान अरु सुउदान । थापि हियके मांहि पांचहु बायु ए मतिमान ॥ बायु प्राण अपान माहीं मनहि धारण कीन । किए प्राण अपान को भ्रूमध्य दुक्षन प्रबीन ॥ तत अनन्तर आतमाको प्राण सहित सुजान । कर्षिकै भ्रूमध्यमें ते हर्ष सहित महान ॥ धारि मस्तक माहिं दोऊ परम क्रमसों भूप । फेरिकै ब्रह्माण्डको भे जात दिवहि अनूप ॥ होत भो सर्वदिशिन मांही महत हाहाकार । जात भो बिधि पास द्विजको तेज खक्ष उदार ॥ देखिकै लोकेश ताको तास सोहें आय । सहित आदर लेत भे अति हर्ष हियमें छाय ॥ तत अनन्तर भए ब्रह्मा कहत ऐसे बैन । जापकनकों तथा औ योगीनकों मति ऐन ॥ होत है परतक्ष दरशन देवताको पर्म । होत पै जापकनको फल इतो अधिक सुधर्म ॥

चरणा दोहा ॥

दरशनही परतक्षहोतहै योगिनको अभिराम । प्रत्युत्थानऔ दरशनपावत जापक जौनललाम ॥

जयकरीछन्द ॥

उठिसादर जो लीवो आम । प्रत्युत्थान है ताको नाम ॥
प्रत्युत्थान पावत है जौन । जानो परम श्रेष्ट हैं तौन ॥

आभीर छन्द ॥

ब्रह्माके ए बैन । सुनिके द्विज मति ऐन ॥ ब्रह्माके मुखबीच । प्रापत भयो निमीच ॥

दोहा ॥

ऐसेही इक्ष्वाकु नृप बिधिके मुखमें भूप । प्राप्त होत भो बिप्र संग कीरतिमान अनूप ॥

मौनी छन्द ॥

तदनन्तर ब्रह्माको करि परणाम । बचन कहत भे ऐसे देव ललाम ॥ प्रत्युत्थान जापकको अधिक पबिच । जापक काजै हम सब आए अच ॥ लख्यो सुफल जापक को हम अतिमाम । लहत तिहारे पदको जापक आम ॥ नांघि सर्व लोकनको जापक पर्म । जात जहां मन आवै होय सधर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

पढ़त जौन मनुकी श्रुती अरु सुबेदके अंग । शिक्ष्यादिकको पढ़त जे धारे सुमति उतंग ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसिहि विधिसों तौनहू लोक हमारे माहिं। आय लहत आनन्दकों यामें संशय नाहिं॥
प्रकृत रहत जे योगमें तेऊ इहि विधि आय। रहत हमारे लोकमें महतमोदसों छाय॥

जयकरी छन्द॥

अब तुम जावो निज निज धाम। इहिविधि विधि देवनको आम॥ कहिकै भयो सु अन्तर ध्यान। देवऊ गे सब निज निज थान॥ कालादिक आए हे जौन। पास विप्रके प्रज्ञाभौन॥ धर्मको सु करिकै सतकार। करिकै बहु विधि स्तुतो अपार॥ पीछे लगे धर्मके सर्व। जात भए सुनु भूप अखर्व॥ दोहा॥

किए जाप जो मिलत फल सो हम कह्यौ अनूप। अब इच्छाहै सुननकी कहा युधिष्ठिर भूप॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मे अष्टाविंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥

जापककों फल मिलत जो तौन सुन्यौ हम तात। अब कछु पूछत औरहू कहौ तौन विख्यात॥

आभीर छन्द॥

जपके फल संग खच्च। योगऊको फल दच्च॥ कह्यो मोहि विख्यात। सुनऊ विप्रवर तात॥ तासकारण एक। पूछत हौं सविवेक॥ तौन हेतु तुम मोहि। कहौ कृपा करि जोहि॥

दोहा॥

ज्ञानसहित जो योग है तास कहाफलचारु। अरुवर ज्ञानहिंसहित जो वेदाध्ययन सुठारु॥
अरु सुअग्नि होचादिको फल है कहा अनूप। औकिमि जान्यो जातहै जीव कहौ वरभूप॥

भीष्मउवाच॥

कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसंगमें भूप। मनुको अरु वागीशको है सम्वाद अनूप॥

हरिगीतीछन्द॥

इतिहास यह अभिराम मनुको वृहस्पति पूछत भयो। परणाम करि करजोरिकै बुधि धाम अति रतिसों रयो॥ वृहस्पतिरुवाच॥ जिहि हेतु सुकरम काण्ड है अरु हेतु जगको जौन है। अरु ज्ञानसों उत्पन्न जो फल होत वरबुध भौन है॥ नहिं सकत ताहि जनाय वेदऊ तौन तुम प्रगटै कहौ। कहि मोहि तुम मनु प्रज्ञ मेरे हियेको संशय दहौ॥ अरु प्रज्ञवर करि यज्ञ अरु गोदान करिकै नेमसों। है करत इच्छा जौनको है तौन का कछु प्रेमसों॥ सो मिलत है किहि भांतिसों अरु कहौ सो कहं रहत है। अरु भूमि भूमिज बायु नभ जलजंतु अरु जल महत है॥ दिव औ दिवौकस सर्व ये उत्पन्न जाते होतहैं। तुम तौन प्रगटै कहौ मोको आप प्रज्ञा पोतहैं॥ वरप्रज्ञ जाके ज्ञानकी इच्छा सु होमें करतहैं। शुचिज्ञान ताको भए प्रापत महत आनंद धरतहैं॥ वरज्ञान ताको भए ताके प्राप्तकी है जो क्रया। तिहिमाहि मानव लहत है बुध अच मैं निश्चय किया॥ मैं ताहि जानत हौं नहीं विनु ताहि जानेते सुनो। किहि भांति ताके मार्गमाहीं लगौं मैं हियमें गुनो॥ हम वेद शास्त्रहि पढ़े हैं पै ब्रह्मकों जानत नहीं। तुम तौन मोहि बताय दीजै आपु विप्र महासही॥ अरु कहा है फल ज्ञानमें औ कर्ममाही महत है। अरु कहौ देही देहको तजि देह पुनि किमि लहत है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुरुवाच ॥ उकछाछन्द ॥

आपुको न प्रिय जौन । दुःख कहावत तौन ॥ आपुहि जो प्रिय साम । सुख ताको है नाम ॥ दुखको कीवे दूरि । औ सुख लीवे भूरि ॥ कर्महि जानो प्रज्ञ । बाचस्पति धर्मज्ञ ॥ जौन अर्थ है कर्म । तौन कह्यो हम पर्म ॥ ज्ञानको सुफल जौन । सुनहु प्रज्ञ अब तौन ॥

दोहा ॥

अप्रियप्रियको दुःखसुख होयनप्रापतमोहि । ज्ञानसुबुधि यहि अर्थहै सत्य कहतहौंतोहि ॥

अरिलछन्द ॥

जगमें महत प्रज्ञ हैं जे जन । ब्रह्म जानिबेको बर ते जन ॥ यज्ञादिकको करत सहित बिधि । यह सिद्धान्त कहत हैं बुधिनिधि ॥ बहु बिधिके जे कर्म बृहस्पति । करत सकाम तिन्हैं जे लघुमति ॥ ते जन चरण निरयको धारत । कहत ज्ञानसों जौन निहारत ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥

महत प्रज्ञ हैं जौन करत यज्ञआदिक करम । ब्रह्म जानिबे तौन कहत आपु ऐसे सुबुध ॥ जगके माहीं दुःख सर्ब निवारणको महत । अरु सुख लेन अखर्ब करत सबिधि यज्ञादि है ॥

मनुरुवाच ॥ दोहा ॥

लोकनके जे दुःख हैं तिन्हैं निवारण काज । अरु सुखकी प्रापति अरथ अर्थसुकर्म समाज ॥ नरक स्वर्गके माहि ते फिरत रहत हैं सर्ब । ब्रह्मपदहि ते लहत नहिं कहत सुबुद्ध अखर्ब ॥ स्वर्गादिक फल कर्मके तास कामना जौन । ताहि छोड़ि जे करत हैं कर्म परम बुधिभौन ॥ ब्रह्मपदहि ते लहत हैं जानु महत सिद्धान्त । कहत प्रज्ञ जे रहत रत शास्त्रहि मांहि नितान्त ॥ दुष्टकर्म कबहु न करै निशिदिन करै सुकर्म । पै हियमें राखै नहीं फलकी ईहा पर्म ॥ जे ईहा राखत न ते ब्रह्महि प्रापत होत । राखत ईहा जौन ते जगमें करत उदोत ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥

निश्चय बन्धक कर्म है तौन अबन्धक होय । कैसे कहिए मोहिं तुम ज्ञान नैनसों जोय ॥

मनुरुवाच ॥

बिधि मनसों अरु कर्मसों प्रजा बनाई सर्ब । दोय प्रजा उत्पत्तिके ए हैं हेतु अखर्ब ॥ मनमें ईहा राखिकै कर्म कियो है जौन । फलहि देतहै कर्म सो जानहु निजु बुधिभौन ॥ कण्टकादि जिमि लखत जन रबिके भए प्रकाश । तिमि बिज्ञान भए लखत अशुभकर्म बुधिराश ॥

सोरठा ॥

अति उत्तम फल देत ज्ञान महान सुजान सुनु । अरु अज्ञान सचेत अधमहि फलकादेतहै ॥

तोमरछन्द ॥

जन जौन है सहज्ञान । जन तौन सुनु मतिमान ॥ सर्पादिको पथ माहिं ।
लखि तास पास न जाहिं ॥ अरु जे न ज्ञान समेत । सर्पादिते भयलेत ॥

दोहा ॥

फल सु ज्ञान अज्ञानको ऐसो होत सुजान । कहूं दुःख नहिं लहत जन प्राप्त भएते ज्ञान ॥ सबिधिजापअरु सबिधिमख औरदक्षिणाचारु । मनसमाधि अरुअन्नको दानसुबुद्धिअगारु ॥ पांच कर्म ये पर्म हैं इनको करै सदाहि । पै ईहा राखै नहीं अपने हियके माहि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरी छन्द ॥

सात्विक राजस तामस पर्म । होत तीन विधिके हैं कर्म ॥ होत मंचहू विधिके तीन । सुनहु बृहस्पति परम प्रवीन ॥ कर्त्ताहू त्रय विधिके होत । सत्व रज तमको करत उदोत ॥

दोहा ॥

ज्ञानको सुफल दृष्ट है दृष्टकर्मको नाहिं । याते ज्ञानहिं कर्मते श्रेष्ठ गुणहु मनमाहिं ॥

आभीरछन्द ॥

जैसे जैसे कर्म । करत मनुज है पर्म ॥ तैसे तैसे तौन । पावत फल बुधिभौन ॥

दोहा ॥

जाते भो सब जगत है ताहि ज्ञानसों स्वच्छ । ज्ञानी पावत तौन है कहत तोहि हौं दच्छ ॥
आपु विषयते रहित है नित्यानन्द दराज । विरचत है सब विषयकों प्रजा भोगके काज ॥
नहिं नारी नहिं पुरुष है नहीं नपुंसक तौन । नहीं सूक्ष्म नहिं थूल है अक्षर अनंदभौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्य पुत्र गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्म्मे मनुबृहस्पति संवादे एकोणत्रिंशोऽध्याय: ॥

मनुरुवाच ॥ दोहा ॥

अक्षरतें भो व्योम अरु भयो व्योमते वाय । भयो वायुते तेज अरु ताते जल बुधराय ॥
जलते भई वसुन्धरा तामें भो जग सर्व । यह जानो उत्पत्तिको क्रम वागीश अखर्व ॥

हरिगीती छन्द ॥

जिहि भांति अक्षरतें भयो उतपन्न यह जग सर्व है । तिहिभांति विधि विपरीत सों संहार माहिं अखर्व है ॥ मिलिजात अक्षर माहिं जैसे नारमाहीं नौन है । है महत जिनको मनीषा यहि क्रमहि जानत तौन है ॥ बुध भूमि जलमें तेजमें जल तेजसों पवमानमें । पवमान नभमें मिलत नभ अक्षर सु आनंद वानमें ॥

दोहा ॥

अक्षर जान्यो जात है योगाभ्यास बिनान । यह तुमसों मैं कहत हौं वर सिद्धान्त महान ॥
अक्षर मृदु न कठोर है नहीं उष्ण नहिं शीत । नहिं कषाय नहिं अम्ल है नहीं मधुर नहिंतीत ॥
नहीं शब्दवत गन्धवत नहीं रूपवत पर्म । केहू जान्यो जात नहिं वरवागीश अभर्म ॥

तोमर छन्द ॥

विधि योगको अभिराम । सुनु बृहस्पति बुधिधाम ॥ तुमको कहैं हम आम । सुखदाय है अतिमाम ॥

दोहा ॥

इन्द्रिय निजनिजविषयकोजानतिहैमतिमान । जानिसकतिनहिंअक्षरहि जोहैनितिसुखदान ॥
विषयमाहि ते कर्षिकै त्वगादि इन्द्रिय सर्व । करसक जो इन्द्रियनको ताकों सुबुध अखर्व ॥
अक्षरते जानै प्रथक करिकै महत विचार । योग शास्त्र को स्वच्छ है यह सिद्धांत सुढार ॥
कर्ता कर्म सुकरण अरु आधेय आधार । सो अक्षर इन सबनको जानो हेतु अपार ॥
रहत मंचलौं गुप्त है सर्व जगत में तौन । सोई हेतु है और सब कार्य जानु बुधि भौन ॥
कर्म जन्य जो देह है ताके माहिं अनूप । परम प्रकाशित रहत है ज्ञान ब्रह्मको रूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होतप्रकाशितदीपसों जिहिबिधिगेहअखर्ब । तिमिहि प्रकाशित ज्ञानसों होतिसुइन्द्रियसर्ब ॥
जिमि भूपति के रहत हैं सदा भृत्य आधीन । तिमिहि ज्ञानके इन्द्रिय हैं आधीन प्रबीन ॥
एकआवतएकजात जिमि बायुवेगबधिगेह । तिमि आवति एकजाति है सबदेहिनकोदेह ॥
ज्ञान देह के मांहि रहत पै नशत देह संग नाहिं । नित्य ज्ञानहै ब्रह्मकोरूप जगतकेमाहिं ॥
काष्टमाहिंशिखि रहतहै परतनछेदे देखि । तिमिहि देहमें रहतहै ज्ञान परत नहिं पेखि ॥
मथन किएते काष्टमें परत धूम जिमि देखि । तिमिहियोगसों देहमें परतज्ञान बुधिपेखि ॥
देहांतर को होत जब प्राप्त जीव तब ज्ञान । जात जीव संग देह संग नष्टहोत न सुजान ॥

जयकरीछन्द ॥

उतपति वृद्धि घटन अरु नाश । ए शरीर को है बुधिराश ॥
है न शरीरी को ए सर्ब । जानो यह सिद्धांत सखर्ब ॥

दोहा ॥

जड़हैइन्द्रिय सर्बअरु आत्मा निति चैतन्य । यहि सिद्धांतहि योगबिद जानत हैं नहिं अन्य ॥
आत्माको जानति नहीं त्वगादि इन्द्रिय सर्ब । जानत सब इन्द्रियन को आत्मा सुबुध अखर्ब ॥
द्वितिय देहकी प्राप्तिजो पहिली देह बिहाय । तुमको तास प्रकारहौकहत सुनहुंबुधराय ॥

अरिलछन्द ॥

छोड़त देही प्रथत देह जब । पञ्च भूत के अंश प्रक्षतब ॥
लेय जात संग द्वितिय देह महिं । यह सिद्धांत जानु संशय नहिं ॥

दोहा ॥

पञ्च भूतके अंशते द्वितिय देह में जाय । अपने अपने गुणन सों युक्त होत बुधराय ॥

अरिल छन्द ॥

मन आधीन रहत इन्द्रिय गन । अरु मतिके आधीन रहत मन ॥
आत्माके आधीन रहत मति । जानत जिनको शास्त्रमाहिं गति ॥

दोहा ॥

किए पूर्ब के अशुभ शुभ कर्म रहत मनमाहिं । यहौ जन्ममें होत है ताते प्रापत पाहिं ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥

नित्य बासना कर्मकी रहती है मनमाहिं । जौ तौ कबहूं जीवकी मोक्ष होयगी नाहिं ॥

मनुरुवाच ॥

मैं हौं अक्षर आत्मा यह जो ज्ञान अमन्द । तासों मनको जात मिटि कर्म बासना वृन्द ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविना बिरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे त्रिंशोध्याय: ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ दोहा ॥

बुद्धि सहित जो आत्मा निर्विकार है तौन । पूर्ब कह्यो बहुबार तुम यह हमको बुधिभौन ॥
बुद्धि सहित जो आत्मा होत विकारी सोय । सोई होत स्थूल अरु दृश्यरूप सोई होय ॥
पै हम जानत आत्मा बुद्धि बिना नहिं भूप । याते कहिये फेरि तुम प्रज्ञावान अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुरुवाच ॥

इन्द्रिय मन सह आत्मा जाग्रत माहीं जौन। वस्तु उपत हैं स्वप्नमें फेरि लखत है तौन ॥
इन्द्रिय औ मन रहत है आत्मा संग न तच। पै जाग्रत ये वस्तु जो लखी लखत है यच ॥
इन्द्रिय मनबिन स्वप्नमें देखत जो है ताहि। आत्मा जानो ज्ञानसों कहत तुम्हें अवगाहि ॥
कहत आप बुधि बिन न हम जानत आत्मा और। सो जड़ है किमि स्वप्नमें देखै करिए गौर ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥

रहति मनोरथ मांहि ज्यो इन्द्रिय बासा रूप। तिमिहि स्वप्नमें रहित हैं बासा रूप अनूप ॥
इन्द्रिय बासा रूपते लखति स्वप्नके माहिं। याते निश्चय होत है आत्मा को मनु नाहिं ॥

मनुरुवाच ॥

भूत भविष्यत कालको जाहि होत है ज्ञान। ताकों जानो आत्मा सुरगुरु प्रज्ञ महान ॥
भूत भविष्यत कालकों नशति न इन्द्रिय प्रज्ञ। ज्ञान होत है दुजनको बाचस्पति धरमज्ञ ॥

चरणा दोहा ॥

जाग्रत स्वप्न सुषोप्ति ए यान बुद्धिके तीन। रज तमसों अरु सत्वसों तीनउ युक्त प्रवीन ॥
सुख दुःखादिकों आत्मा जानत तीनउ माहिं। पै भोगति है बुद्धिही आत्मा भोगत नाहिं ॥

अरिल छन्द ॥

स्वप्न सुषोप्ति अवस्थामें जिमि। बुद्धि सुखादिकको भोगति तिमि ॥ इन्द्रिय द्वाराहूं सों भोगति। सुख दुखादिकों सुनउ बृहस्पति ॥

रामगीतीछन्द ॥

जिहि भांति इंधन माहिं जो है अग्नि ताकों बाय। करिसो प्रकाशित देति जारति है नहीं बुध राय ॥ तिहि भांति आत्मा है प्रकाशित वर बुद्धिकों करि देत। सो करति भोगहि करत आपु न भोग सुमति निकेत ॥

चरणादोहा ॥

कह्यौ तोहि हम आत्मा भिन्न बुद्धिसों जौन। इन्द्रिय को विषयन है ताते जानिपरत नहिं तौन ॥

चरणादोहा ॥

आत्माहैयहिमांहिदिखायोहमसिद्धान्तमहान। अबनिषेदको आत्माकेहमकहतअभावसुजान ॥

सोरठा ॥

भूधर जो हिमवान ताको उत्तर भाग जो। अरु शशिकी मतिमान देखि परति नहिं दृष्टि है ॥

दोहा ॥

देखि परे बिन दुजनको ह्वैहै नहीं अभाव। तिमिहि अभाव न होयगो आत्माको बुधराव ॥
चन्द्रमांहि जो जगतको चिन्ह परत है देखि। पै काहूको जगतमें परत नहीं अवरेखि ॥
ऐसेही है आत्मा पै जानत नहिं कोय। ताहि जानिबे गुह है प्रकृत ज्ञानसों होय ॥

नरेश छन्द ॥ ब्राह्मणउवाच ॥

लखि परत जो न अखियान सों। तिहिकों सुप्रज्ञ अनुमान सों ॥
जानत है बाचस्पति सुनो। मति अच आपु संशय गुनो ॥

दोहा ॥

रूपमान जे चर अचर तिनको प्रज्ञ अरूप। आदि अन्तमें लखत है सुबुध नत्युको रूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

अतिहि दूरि तिहिते न देखि परति गति भानुकी । पै जानत बुधिऐन देहान्तरकी प्राप्तिसों ॥
ऐसेही वर प्रज्ञ ज्ञान दीपसों लहत है । आत्मा जो सरवज्ञ ताहि सुनो बागीश वर ॥

दोहा ॥

बिना उपाय न होत है वस्तु कौंनहू सिद्धि । यह सिद्धान्त महान है कहत परम बुधि निद्धि ॥

सोरठा ॥

जलके मांहि अथाह सदा रहत जल जन्तु है । तिनको लेत मलाह गहि सु सूतके जालसों ॥

अरिल छन्द ॥

अहिके चरणहि जानत है अहि । जगमें जानत और कोय नहि ॥
इमिहि आत्मा को है जानत । ज्ञानहि और नहीं अनुमानत ॥

दोहा ॥

आत्मा यो चैतन्य जो रहत देहके माहिं । पै घटादिके लखति तिमि ताहिलखति मति नाहिं ॥
आत्मा है यह ज्ञानजो जानति है मति ताहि । पै आत्माको लखति नहिं कहत तुम्हैं अवगाहि ॥

सोरठा ॥

नशे अमाके माहिं कला नशत नहिं चन्द्र है । इमिहि नशत है नाहिं देही संगमें देहको ॥

दोहा ॥

नशत न देही देहसंग जानि परत तो क्यौंन । जौ इमि तुम सुर गुरु कहौ तौ सुनु प्रज्ञाभौंन ॥

सोरठा ॥

कला भएते क्षीण शशि न अमामें परत लखि । देही इमिहि प्रवीन जानि परत बुध देह बिन ॥
फेरि कलाकों पाय देखि परत जिमि चन्द्रमा । जानि परत बुधराय देही पायेदेह तिमि ॥

दोहा ॥

पै ऐसे ते कहत हैं महत प्रज्ञ हैं जौन । आत्माको अरु देहको है सम्बन्ध कबौन ॥

जयकरी छन्द ॥

घटमें धरो सुदीपक जौन । तासों अरु घटसों बुधिभौन ॥
है सम्बन्ध न तिमिही देह । अरु आत्माको नहिं मतिगेह ॥

दोहा ॥

है सम्बन्ध न पै सुनो देही बिन जो देह । तास प्रकाश न होत है निश्चय हे बुधिगेह ॥

सोरठा ॥

देही हू बिन देह प्राप्त न होत प्रकाशको । सुनहु परम बुधिगेह यामें संशय है नहीं ॥

दोहा ॥

जैसे राहु अदृश्य है रवि शशि संग लखाय । परत तिमिहि संग देहके देही जान्यो जाय ॥
जिमि रवि औ शशिसों छुटे राहु परत नहिं देखि । तिमिहि छुटे ते देहकों देही परत न लेखि ॥

अरिलछन्द ॥

छुटत देहसों देही है जब । द्वितिय देहको पावत है तब ॥
कर्मनके फलसो सुरगुरु सुनु । अब नहीं संशय निश्चय गुनु ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी बासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे एकविंशोऽध्यायः ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥

देही तजिकै देह फेरि लहत याते भयो। निश्चय यह बुधिगेह छुटत देह सम्बन्ध नहिं ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनु जौ नहीं सम्बन्ध छूटत देहको हे भूप। तौ मोक्ष अर्थीको भयो सब यत्न व्यर्थ अनूप ॥
तुम कहौ यातें देहकी जो निवृत्ति ताको हेतु। हौ आपुही यहहेतु कहिबे योग्य बुद्धि निकेतु ॥

मनुरुवाच ॥ सोरठा ॥

लख्यौ स्वप्न है जौन व्यर्थ तौन तैसहि सुनो। है शरीर बुधिभौन व्यर्थ नित्य मति जानिए ॥

जयकरीछन्द ॥

थूल लिंग ए तन है दोय। जात सुषोप्तिमांहि जिमि सोय ॥ रहत भिन्न ह्वकै है ज्ञान। तैसेहि मोक्ष जानु मतिमान ॥ जैसें निर्मल जल जो होय। परै आख्य तौ तामें जोय ॥ ऐसेही जो इन्द्री सर्व। होहि विलमतौ सुबुध अखर्व ॥ आत्मा परै ज्ञानसों जानि। यह निश्चय मनमें अनुमानि ॥ रहे स्वच्छ जौ मन है दच्छ। तौ इन्द्रियहू रहैं सब स्वच्छ ॥ रहैं स्वच्छ सुरगुरु मन जौन। इन्द्रिय रहैं स्वच्छ सब तौन ॥

दोहा ॥

होत कुबुधि अज्ञानते ताके संगम दुष्ट। होत तास संग इन्द्रियहू होति दुष्ट है पुष्ट ॥
विषयमांह जो मग्न अति धरे महत अज्ञान। तौन जीव पुनि देहको प्राप्त होत मतिमान ॥
प्राप्त भएते देहको तृष्णा होति महान। सो तृष्णा तब मिटति है जब अघ नशत सुजान ॥

उल्लाला छन्द ॥

जे परम ज्ञानको छोड़ि निति विषयमाहि रत रहत हैं।
ते नहीं होत हैं ब्रह्मको प्राप्त महत बुध कहत हैं ॥

तोमर छन्द ॥

जब पाप मानसि जात। तब ज्ञान जो अवदात ॥ उतपन्न होत सुजान। सुखदान परम महान ॥ जब ज्ञान होत अमन्द। तब बुद्धिमें निरद्वन्द ॥ परमातमा सुखदाय। लखि परत है बुधराय ॥

दोहा ॥

इन्द्रिय जे रत विषयमें तिनते दुःखमहान। प्राप्त होत है जीवको निति निति सुनहु सुजान ॥

चरणा दोहा ॥

विषयमांहिते खैंची इन्द्रिय तिनसों अति आनन्द। प्राप्त होत है जीवकों होति सुबुद्धि अमन्द ॥

अरिलछन्द ॥

कारणमांहि मिलत है कारज। लयके मांहि करत है आरज ॥
अरु उतपन्न होत जब गुरु सुनु। कारण तासो होत कारज गुनु ॥

जयकरीछन्द ॥

लय जब होत विज्ञ अवदात। तब इन्द्रिय मनमें मिलि जात ॥ अरु मन बुद्धि मांहि मिलि जाय। बुद्धि जीवके मांहि समाय ॥ परमात्मा जो नित्यानन्द। तामें जीव मिलत निर्द्वन्द ॥ लयको हेतु कह्यो हम ऐन। अब उत्पतिको सुनहुं सचैन ॥ मति अव्यक्त ब्रह्म है जौन। तातें जीव होत है तौन ॥ तातें मतिको होत उदोत। मतितें मनको उद्भव होत ॥ मनते होति सुइन्द्रिय सर्व। विषयमांहि ते लगति अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल छन्द ॥

उत्पतिको तुमको हम कारण । कह्यो प्रगट करिकै निर्धारण ॥
हेतु मोक्षको जो है बर अति । कहत तुम्हैं अब सो वाचस्पति ॥

दोहा ॥

शब्दादिकजेबिषयहैं आकाशादिक मांहि । प्रथम छोड़ि तिनको न पुनि लागै तिनके पांहि ॥
शब्दादिकको छोड़िपुनि आकाशादिक सर्ब । तिनहूको छोड़ै समुझि गहिकै ज्ञान अखर्ब ॥

मोरठा ॥

आकाशादिक जौन तिनको जो आभाव है । हिय अकाशमें तौन रहत देह तजि तौन हूं ॥

आभोर छन्द ॥

फिरि जो सूक्षम देह । ताहि तजै बुधिगेह ॥ सूक्षम छोड़े पर्म । कहत मोक्षको शर्म ॥

मधुमारछन्द ॥

जिमि मारतण्ड । लहि उदय चण्ड ॥ करको पसार । है करत चार ॥
फिरि अस्त होय । कर लेत गोय ॥ रबि आपु बीच । सुनु गुरु निभीच ॥

हरिगीती छन्द ॥

यहि भांति हीं सो देहको आतमा प्रापत होय कै । बिस्तरत है इन्द्रियनको सब फेरि तिनको गोय कै ॥ जो आपनो है रूप ताको होत प्रापत तौन है । यह बारता है गुप्त तुमको कही जो बुधि भौन है ॥

दोहा ॥

पुनि पुनि कर्म प्रभावसों प्राप्त होत है देह । आत्मविद् है जौन जन तिनहूंको बुधिगेह ॥

चरणा दोहा ॥

पुनिपुनि जोहैप्राप्त देहकीतास निष्टतकेकाज । निष्टतधर्मको कहततुम्हैं हमसुनिएप्रश्न दराज ॥

मौनी छन्द ॥

बिषयमांहि इन्द्रियको लगन न देय । लगे बिषयमें देहैं दुख यह ज्ञेय ॥ दे तजि भोजन धरिकै धीर्य्य महान । इन्द्रिय निर्बल ह्वै काज सुजान ॥ रहत सबल हैं जबलौं इन्द्रिय सर्ब । कर्म होत है तबलों खर्ब अखर्ब ॥ निबल भए तें इन्द्रिय कौनहु कर्म । होत नहीं है केहु कबहु पर्म ॥ तजे भोजनहु जिह्वा निबल न होय । कीजै निरबल तिहिको आत्मा जोय ॥ ध्यानमांहि आत्माको जोए प्रश्न । निबल होति है जिह्वा बर धरमश्न ॥

दोहा ॥

बिषय संगसों रहित मति जब जिय मांहि समाय । प्राप्त होत तब ब्रह्मको जीव जीव बुधराय ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकबिना बिरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे मनुहस्पतिम्वादे द्वाविंशोऽध्याय: ॥

जयकरी छन्द ॥ मनुरुवाच ॥

योग मांहि जे बाधाकार । बहुत भांतिके दु:ख अपार ॥
देखै तिनकों कबहूं नाहिं । लागो रहै योगके माहिं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिगीतीछन्द ॥

करनो विचार न दुःखको जो चित्तमें मतिमान। नहिं दुःख प्रापत है सुनोको यही हेतु महान ॥ बरज्ञान जैसो दूरिकारक दुःखके समुदाय। दुख दूरिकारक और ऐसो हेतु नहिं बुधराय ॥ वय रूप योवन द्रव्य सञ्चय औ निरोगित अंग। अरु बामप्यारे पास जो है प्रीति सहित उतंग ॥ ए सर्व नाहीं नित्य हैं यह हेतु ते इनमाहि। कबहू न इच्छा राखिए करि ज्ञानको मनपाहि ॥ इन्द्रियनके जे विषय तिनमें निरत हैं जन जौन। सुख लहत हैं लघु कबहु बहु दुख लहत दीरघ तौन ॥ यहि लोकके सुख दुःखको जन जौन हैं तजि देत। सो ब्रह्मपदको होत प्रापत सुनहु बुद्धि निकेत ॥ दुख निवृत्तिको जो हेतु है सो कह्यो हम तव पास। अब जीवको अरु ब्रह्मको एकभाव सुनु बुधिरास ॥ जो ब्रह्म भो संसार है सो ज्ञान इन्द्रिय पास। जब होत है तब होति विषयाकार मति मतिरास ॥ सुनु प्रश्न जब मन बुद्धिको है होत एकीभाव। तब ध्यानसों परब्रह्म जानो जात है बुधराव ॥

सोरठा ॥

गिरितें जिमि कीलाल कढ़त तिमहि अज्ञानतें। प्रज्ञा कढ़ति विशाल सो लागति है विषयमें ॥

नगसरूपिनी छन्द ॥

अज्ञान नाश कालमें। सुसेसुषो विशालमें ॥ सु प्रज्ञ आतमा जबै। सु प्राप्त होत है तबै ॥

चरणा दोहा ॥

चीन्हि परत है ऐसे जैसे हेमकसोटी मांहि। प्राप्त भए मतिसें आत्माकों जानो जड़ तुम नांहि ॥

दोहा ॥

मन मतिके सह भावसों जो तुम कहो सुजान। ऐसे मतिमें प्राप्त भो आत्मा जौन महान ॥ ताहि लखै मनसो नहीं सकत देखि मन ताहि। दृष्टा है मन विषयको कहत तुम्हें अवगाहि ॥

चरणा दोहा ॥

थूल देहके नाश कालमें सत्वादिक गुण जौन। आकाशादिक भूतनकों लै निवृत होत है तौन ॥

दोहा ॥

ऐसेही इन्द्रियन सह मति मनमें मिलिजात। लयको है ऐसोहु क्रम सुनहु प्रश्न अवदात ॥ मति जब मनमें मिलति तब मति मनहीं ह्वै जाति। मनसों भिन्न न रहति है सह इन्द्रियकापाति ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥

पूर्व कह्यो तुम आतमा प्राप्त होत मतिमाहिं। अब मति मनकी एकता कही हमारेपाहिं ॥ यातें मन अरु आतमाको ह्वैहै सहभाव। मन जो है सो त्रिगुणमय है सुनु मनु बर राव ॥ मनके अरु आतमाको संग भावते पर्म। आत्मामाहीं होय गो मनको जो है धर्म ॥

मनुरुवाच ॥

संग भएतें आत्माको अरु मतिको है मतिमान। आत्मामें नहिं होत है मनको धर्म महान ॥

रामगीती छन्द ॥

है ध्यानतें उतकर्ष जामें सत्वगुण बुधिधाम। मन जौन ऐसो होत प्रकृतिहि प्राप्त जब बुधिधाम ॥ तब छोड़ि प्रकृतिहि तथा गुण सब निराकारहि पाय। बर निराकारहि मांहिसो मिलि जात है बुधिराय ॥

दोहा ॥

निराकार लखि परत नहिं है तुम दै दृष्टान्त। मोहिं बतावो जो कहो इमि तौ सुनु सिद्धान्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिबेमें आवत नहीं परत नहीं जो देखि। ताहि बतावै कौन विधि दै दृष्टान्तै लेखि ॥
याते जो अव्यक्त है आत्मा रहित अकार। श्रवण मननसों होय थिरि ताको करे विचार ॥
ब्रह्मज्ञानकों प्राप्त भो निश्चय है जन जौन। ब्रह्म मांहि अरु आपुमें भेद न जानत तौन ॥

अरिल छन्द ॥

जो सब गुणसों होय रहित मति। होय ब्रह्मको प्राप्त बृहस्पति ॥
निश्चय जौन मनीषा सह गुन। होति ब्रह्म को प्रापत कबहुन ॥

दोहा ॥

इन्द्रियरहतिबिमुक्तकर्मसोंजिमिसुषोप्तिकेमाहि।तिमिहिरहतहैप्रकृतिसोंब्रह्मबिमुक्तसदाहि॥

आभीर छन्द ॥

युक्त प्रकृतिसों जौन। रहत जगतमें तौन ॥ भए ज्ञानको द्योत।
रहित प्रकृतिसों होत ॥ जो जन तौन सुधर्म। मिलत ब्रह्ममें पर्म ॥

चरणा दोहा ॥

होत प्रलय तब मिलत प्रकृतिमें अज्ञानी जन जौन। मिलत जौन बर ज्ञानबान है निराकार में तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्मे मनुबृहस्पतिसंबादे चयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

मनुरुवाच ॥ दोहा ॥

जैसे मालामें रहत सूत्र कृष्णो हे प्रज्ञ। तिमिहि रहत है जगतमें परमात्मा सरबज्ञ ॥
मनमतिसों जब होय युत सबिषय इन्द्रिय सर्ब। ब्रह्मज्ञान तब होत है भणत सुबुध अखर्ब ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

परम हेमकी माल सुढारी। तिमिही माला मोतिन बारी ॥ अरु प्रबालकी माला भाकी। तिमिही जो माला मृतिकाकी ॥ तिनमें सूत्र रहत है जैसे। सुनहु बृहस्पति आत्मा तैसे ॥ रहत मनुज गो भैंगल हयमें। तिमिही पशु पक्षिणके चयमें ॥

चरणा दोहा ॥

जैसे जैसे तनसों जो जो जीव करत है कर्म। तैसे तैसे तनसों भोगत सो सो कर्म सुधर्म ॥
कर्मभेदतें बिबिधि देहको जो संजोग सुजान। मैं दृष्टान्त देतहौं तामें तुमको करि अनुमान ॥

सोरठा ॥

ब्रह्म भए क्षेत्रज्ञ जैसे जैसे करत है। कर्म सुनहु बर प्रज्ञ तैसे तैसे तन लहत ॥
जैसे धरणी माहिं जैसो बोयो जात है। यामें संशय नाहिं अन्न होत है सोइ है ॥

हास छन्द ॥

होति प्रथम इच्छा पुनि होत सुउद्योग। सिद्धि होत कर्म फेरि कहत सुबन्धु लोग ॥
कर्म भये सिद्धि फेरि ताको फल होत। जानत सो जाके हिय मतिको है द्योत ॥ प्रथम हेतु इच्छा है जानो तुम प्रज्ञ। लगे रहत याहीमें जे जन हैं अज्ञ ॥ जे हैं जन प्रज्ञ रहैं इच्छासों दूरि। दुःख दाय जानिहि येधारि ज्ञान भूरि ॥

दोहा ॥

योग्य जानिवे होयसो ज्ञेय कहावत दक्ष। जासों जान्यो जात है ज्ञेय ज्ञान सों खक्ष ॥
ज्ञेय जौन परमात्मा ज्ञान चक्षुसों ताहि। लखत सुबुध है अरु अबुध ताहि लखत है नाहि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोक छन्द ॥

पृथ्वीतें नीर महत है सुनो। नीरतें सुतेज महत है गुनो ॥ तेजसतें महत पवन जानिए। पवनहुतें महत व्योम मानिए ॥

दोहा ॥

व्योमहुतें है मन महत मनते बुद्धि महान। महत बुद्धिते काल है कालहुतें भगवान ॥

तोटक छन्द ॥

यह सर्व महा जग है जिहिको। जन कोउ न भेव लहै तिहिको ॥ जिहिकों बुध जे निति ध्यावत हैं। मनको नहिं अन्त लगावत हैं ॥

चरणा दोहा ॥

आदि मध्य अरु अन्त न जाको यातें अव्यय नाम। हैथी बर भगवान को सुनु सुरगुरु बुधिधाम ॥

सेनिका छन्द ॥

ताहि प्रज्ञ प्राप्त होत जौन हैं। कालसों विमुक्त होत तौन हैं ॥ ताहि जौन प्राप्त होत है नहीं। तौन होत प्राप्त दुःखकों सही ॥

दोहा ॥

इन्द्रिय निग्रह आदि जे हैं उपाय मतिमान। तिनसों प्रापत होत है ब्रह्महि मनुज सुजान ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

आदि मध्य अन्त न है जाको। नाम सु अव्यय याते ताको ॥
दुःख रहित है अव्यय तातें। सब जग होत प्रकाशित जातें ॥

वृहस्पतिरुवाच ॥ मौनी छन्द ॥

ब्रह्म ज्ञानीके सुखको नाश न होत। कहत आपु है ऐसे प्रज्ञापोत ॥ ब्रह्मज्ञानमें तौ सब लागत क्यौन। तुम बिचारि कै कहिए बर बुधिभौन ॥ मनुरुवाच ॥ ब्रह्म दृश्य नहिं यातें मानव सर्व। ब्रह्मज्ञानमें लगत न सुबुध अखर्व ॥ जे लागत हैं ते जन सों सुख लेत। कहत तुम्हैं मैं निश्चय सुमति निकेत ॥

दोहा ॥

जनको मनसो रहत है लगो विषयके माहिं। याते जनको ब्रह्म पर जानि परत है नाहिं ॥

नरेश छन्द ॥

जे अबुध मनुज हैं लोकमें। ते सर्व विषयके योकमें ॥
जो देखैं ताहीको करैं। इच्छा न और हियमें धरैं ॥

अरिलछन्द ॥

विषयहि मांहि निरत हैं जे जन। विषय रहित की इच्छा ते जन ॥
करत नहीं हैंसुनहु वृहस्पति। विषयहि मांहि रहत रति सों अति ॥

दोहा ॥

विषयमांहि रत रहतहैंनिशिदिनमानवजौन। विषयरहितपर ब्रह्मकोंजानिसकैकिमि तौन ॥

सारङ्ग छन्द ॥

करै शुद्ध वरज्ञानसों बुद्धिकों स्वच्छ। करै बुद्धिसों शुद्धमन परम ह्वै दक्ष ॥
इन्द्रियनको स्वच्छ मनसों करै बिप्र। सुनो होत है ब्रह्मको प्राप्त तब क्षिप्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

सुनत बारता ब्रह्मकी अरु सुबिचारत जौन । निर्गुण जो परमातमा ताहि लहत है तौन ॥

आभीरछन्द ॥

कामवान जन जौन । परमात्माकों तौन ॥ प्राप्त होत हैं नांहि । सत्य जानु मनमांहि ॥

जयकरी छन्द ॥

काष्टान्तर गत जौन कृषान । प्राप्त न होत ताहि पवमान ॥
जिमि तिमि कामवान जनजौन । प्राप्त ब्रह्मको होत न तौन ॥

दोहा ॥

जो बिचार अव्यक्तको करतै रहत सदांहि । अव्यक्तहि ह्वै जात सो अन्तकालके मांहि ॥

प्लवंगम छन्द ॥

जो इन्द्रिय लगिजाय विषयके वृन्दमैं । तौ जन निजु परजाय कामके फन्दमैं ॥
काम फन्द में परे दुःख अति होतहै । अति दुर्लभ ह्वै जात श्रेयको द्योत है ॥

दोहा ॥

आत्मा सूक्ष्म देहकों प्राप्त भए बागीश । पञ्चभूतके रहत है आश्रय कहत सुनीश ॥
भूताश्रय जब होत है लहिकै सूक्ष्म देह । परमात्माको भाव तब रहत नहीं बुधिगेह ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥

प्राप्ति देहकी जौन सो तो पुनि पुनि होति है । कैसे सुनु बुधिभौन आत्मा छुटि है देहसों ॥

मनुरुवाच ॥ दोहा ॥

अरणव मांहि जहाज जो ताहि हिलावत वायु । कबहू ताकों बायुही पार देति है लायु ॥

चरणादोहा ॥

भवसागरमें जीव जहाज हि कर्म बायु है जौन । देत बहाय प्रबल ह्वै कबहू पार लगावततौंन ॥

दोहा ॥

शुद्ध होत अन्तहकरण तेजे बिषयकों सर्व । प्राप्त होत तब ब्रह्म है निति अव्यय सुअखर्व ॥
ब्रह्मज्ञान है मोक्षको कारण है नहिं और । कह्यौ तुम्है सिद्धान्त यह मैं मनमें करि गौर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबाभिगोकुलनाथ
कबीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविना बिरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे
शान्तिपर्बणि मोक्षधर्मे चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

ब्रह्मज्ञान है मोक्षको कारण है नहिं और । कह्यौ पूर्ब अध्यायमें ऐसे तुम करि गौर ॥
निर्गुणको जो ज्ञान सो सुगुण बिना जानैन । होत सुनो महिपाल बर तात सुमतिके ऐन ॥
याते तुम श्रीकृष्णको कहौ तत्व पुनि मोहि । कौन लहत आनन्द है महत तिन्हैं जब जोहि ॥

भीष्मउवाच ॥ कलाछन्द ॥

परशुराम अरु व्यास सुनारद । बालमीक अरु परम बिसारद ॥
नारायणको चारु महा तम । है इनसबते सुन्यो प्रश्न हम ॥

सोरठा ॥

यह जो बर भगवान केशव प्रभु आनन्द मै । सोई सब तू जान महत महातम जास है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरीछन्द ॥

शारंगपाणि कृष्णको कर्म। जानत है बर सुबुध सुधर्म ॥ तुम्हैं कहत हौं ते बिख्यात। सुनहु धर्मधर कुन्तीतात ॥ महत भूत जे आकाशादि। बिरचित भे हरि तिन्हैं अनादि ॥ भूमि बनाय शीघ्रही सैन। करत भयो यो आनंद ऐन ॥ अहङ्कारको बिरच्यो तब। छाय रह्यो सो है सरबच ॥ भूत भविष्यत जेहैं भूत। धारत सो सब तौन अकूत ॥

दोहा ॥

नारायणकी नाभिमें तदनु होत भो पद्म। तौन पद्ममें होत भो ब्रह्मा बरमतिसद्म ॥

मौनी छन्द ॥

तदनु होत भो दानव मधु बलवान। करत भयो पुरषारथ तौन महान ॥ चतुरानन की रक्षा काजै ताहि। हनत भए श्रीमाधव रटसों चाहि ॥ ताहि हतेते नर सुर दानव सर्व। कहत भए मधुसूदन हरिहि अखर्व ॥ तदनन्तर बिरचत भो श्रीलोकेश। सप्त मानसिक पुत्र सुअतिहि सुभेश ॥

दोहा ॥

प्रथक् प्रथक् मैं कहत हौं तिनके नाम सुजान। सुनहु तौन तुम भूप बर कुन्तीसुत बलवान ॥
मरिचि अंगिरा अत्रिबर अरु पुलस्त्य मतिधाम। सुबुध पुलह क्रतु दक्ष अरु स्वक्ष दक्ष सो नाम ॥

अरिलछन्द ॥

कश्यप भयो मरीचीके सुत। मनते परम महत मेधायुत ॥
ब्रह्माके अंगुष्ठ तें उपजत। दक्ष भयो सुनु भूप सुमति मत ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

भई दक्षके तेरह कन्या। तिनमें दिती सुज्येष्ठा धन्या ॥ कश्यपको सुब्याहि ते दीन्ही। तिनको कश्यप मोदित कीन्ही ॥ फेरि भई दशसुता सुढारी। दई धर्मको ते सुदकारी ॥ भए धर्मके सुवन सुढारे। तिनमें अतिही बल गुणवारे ॥

दोहा ॥

साध्य रुद्र गण अष्टबसु अरु सुमरुत गण पर्म। औ बिश्वेदेवा लहे ए सुत तिनमें धर्म ॥
सत्ताइस कन्या भईं और दक्षके चारु। दई चन्द्रको ब्याहि ते करिकै प्रीति अपारु ॥

त्रिभंगीछन्द ॥

कश्यपकी नारी परम सुढारी बरतनवारी सुगुणरई। गोतरु गन्धर्वा तुरग अखर्वा हय सुख सर्वा जनति भई ॥ अरु अमर अरूपा अति शुभरूपा मोदिति दिति उत्पन्न किए। तिनके प्रभुबामन बिष्णु सचावन होय सुहावन मोद दिए ॥

चरणादोहा ॥

प्रभुबामनके पुरुषारथते देवनकोश्री पर्म। बढ़तिभईअरुभईपराजय असुरनकी शुभ कर्म ॥

तोटकछन्द ॥

दिति दैत्यनको उत्पन्न किए। दनु दानवकों सृजि मोद लिए ॥
बलवान भए सब ते अतिही। पुरुषारथ करत भए नितिही ॥

सोरठा ॥

दिन रजनी अरु काल पूरबान्ह अपरान्ह अरु। ऋतु षट्ऋ अरु साल मधुसूदन बिरचत भए ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकरीछन्द ॥

थावर अरु जंगम सब भूत। औ पृथ्वी सह जगत अकूत ॥ अरु मेघनके जूह सुजान। बिरचे नारायण भगवान ॥ तदन्तर माधव सबिबेक। अपने सुखते बिप्र अनेक ॥ बिरचत भे तेजोमय भूरि। तिनको सुजस रह्यो जग पूरि ॥

चरणा दोहा ॥

बाहुनते क्षत्रिय बिरचे बहु बैश्य उरनते भूप। अरु सुपदनते शूद्र बहु केशव रचे अनूप ॥

रामगीती छन्द ॥

उत्पन्न चारिहु बर्णको करि रमानाथ सुजान। बिधिको सुतिनको कियो अधिपति प्रीति सहित महान ॥ सब भूतगण अरु योगिनिनिको अधिप शिवकों कीन्ह। अरु यक्षराजहि परम धनकी अधिपताई दीन्ह ॥ जन पातकी है जौंन तिनको दण्ड दीवे काज। हरि अधिपताई दई यमकों सुनहु बहु नरराज ॥ अरु कियो अधिपति बरुणको जल जीवगण को सर्ब। सब देवतनको कियो इन्द्रहि अधिप बिष्णु अखर्ब ॥

दोहा ॥

सतयुग मांहीं नरनमें ऋतो न मैथुन धर्म। होतो रही अपत्यही संकल्पहि ते पर्म ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

जन जीवनकी इच्छा जबलौ। करत रहे जीवत है तबलौ ॥ यम कृत भयहि लहत है नाहीं। नित्य रहत है आनदमाहीं ॥

दोहा ॥

त्रेतामाहीं होतिही किए अपत्य स्पर्श। मैथुनधर्म न होत है सुनहु भूप उत्कर्ष ॥ द्वापरमें मैथुन धरम होत भयो भूपाल। कलि युगमें हू होत है मैथुन तिमिहि बिशाल ॥ दक्षिणबासी जौन जन तिनके मांहि पुलीन्द। गुह अन्धक चूचुक सबर मद्रक नीच नरीन्द ॥ उत्तरमें जे बसत जन तिनमें सबर किरात। गान्धार अम्बाज अरु तिमि जौनक बिख्यात ॥ बायस गृध खपाकको भूप सधर्म है जौन। सोई है इन सबनको धर्म सुनहु बुधिभौन ॥

आभीर छन्द

पूर्व प्रजापति जौंन। भयो कहौ बुधिभौंन ॥ दिशा दिशाके स्वच्छ। ऋषी कौन है दक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ प्रश्न कियो तुम जौन। तुम्हैं कहत हौं तौंन ॥ सुनिए प्रश्न नरेश। धर्मवान शुभवेश ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

चतुरानन भो पूर्व प्रजापति। तदनु तास सुत सप्त महामति ॥ बर मरीचि अरु अत्रि अंगिरस। अरु सुपुलस्त्य पुलह क्रतु बरजस ॥ परम बशिष्ठ श्रेष्ठ सब बिधिसम। ते सुप्रजापति भए सुन्यो हम ॥

दोहा ॥

इनते आगे और जे भए प्रजापति भूप। ते मैं तुमकों कहत हौं प्रज्ञावान अनूप ॥

हरिगीती छन्द ॥

नृप भयो श्रीप्राचीन बरही अत्रि ऋषिके बंशमें। बर प्रश्न जनमों सुन्यो है सुनु भरत कुल अवतंस में ॥ प्राचीन बरहीके भए दश पुत्र बर बलवान है। भो प्रचेता अभिधान तिन दशहूनको मतिमान है ॥ भो पुत्र तिन दशहूनके एक दक्ष ताको नाम भो। अरु परम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुऋषि मरीचिके कश्यप सुवर मति धाम भो ॥ भो नाम कश्यप एक तास अरिष्टनेमी दूसरो। अरु अत्रिके भो सोमसुत तिहि सुगनकों बाहन करो ॥

दोहा ॥

कश्यपके सूरय भयो तेजोमय बलवान। भुवननके ए अधिप हैं सर्व सुनहु मतिमान ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

शशबिन्दु नृपतिके रानी। होति भई दश सहस सुजानी ॥ सहस सहस एक एकके नीके। होत भए सुत भो अतिहीके ॥ परजापति आपुहिको जाने। और प्रजापति तिन नहिं माने ॥ बर प्राचीन विप्र मतिधारी। तिन यह बात कही बहु बारी ॥

दोहा ॥

प्रजा भूप शशबिन्दु की है यह सर्व महान। कुलमें यादव ऋषिके भयो जौन बलवान ॥ महत प्रजापति तौन है और न तास समान। कहे प्रजापति सर्व ए तुमकों हम मतिमान ॥

जयकरी छन्द ॥

चयलोकनके देवत तौन। अब मैं कहत सुनहु बुधिभौन ॥ भग अरु अंश अर्य्यमा मित्र। सविता धाता परम पवित्र ॥ बिवस्वान त्वष्टाअति चण्ड। पूषा तेजस भरो अखण्ड ॥ इन्द्र वरुण अरु बिष्णु सुजानु। ए कश्यप सुत बारह भानु ॥

दोहा ॥

दस्र और नासत्य ए अष्टम रविके तात। त्वष्टा सुरको सुवन है बिश्वरूप बिख्यात ॥

जयकरी छन्द ॥

अहिरबुध्न अरु अजैकपात। बिरूपाक्ष रैवत बिख्यात ॥ अम्बक है रजयन्त बहुरूप। अरु अपराजित आनन्द रूप ॥ अरु साबित्र पिनाकी पर्म। ए एकादश रुद्र सधर्म ॥ अरु बसु अष्ट देव ए सर्व। पांइले मनु हैं के सुअखर्व ॥

दोहा ॥

अर्वाबसु अरु परावसु औषिज कच्छीवान। यवक्रीत अरु रैभ्य बल ए जे देव सुजान ॥ नाम इनको है आंगिरश सब ए ब्राह्मण वर्ण। क्षत्रिय हैं आदित्य सब देवनमें सुदधर्ण ॥ बैश्य मरुत गण आश्विनी सुवन शूद्र हैं भूप। देवनके चारिहु बरण तुमको कहे अनूप ॥

सोरठा ॥

इनको लीन्हें नाम प्रातकाल उठि भूपबर। होति देह दुतिमाम पापसर्व कटि जात है ॥

दोहा ॥

कएव बर्णिषद आदि ऋषि प्राचीदिशिके पर्म। उन्मुच बिमुच सुप्रमुच अरु स्वस्त्यात्रेय सधर्म ॥ इध्मबाहु अरु दृढ़व्रत बीरजमान महान। अरु सुप्रतापी परम बर सुऋषि अगस्त्य सुजान ॥ दक्षिणदिशिमें रहतहैं ए ऋषि बीरजवान। एकत द्वित त्रित सारस्वत धौम्य उपंग सुजान ॥ परिव्याध अरु कवष ए सु ऋषि प्रतापी भूरि। पश्चिमदिशिमेंरहतहैं महत मोदमें पूरि ॥ दत्तात्रेय बशिष्ठ अरु कश्यप बिश्वामित्र। भरद्वाज गौतम परम ऋषि यमदग्नि पवित्र ॥ उत्तरदिशिमेंरहतहैं ए ऋषि उत्तम पर्म। दिशि दिशिके जे सुऋषि हम तुमकों कहे सधर्म ॥ पाप पुण्य जे करत हैं जगमें जनगण सर्व। तिनके साक्षी भूत हैं ए ऋषि परम अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभीर छन्द ॥

इनको लीन्हें नाम। जात छूटि अघ माम ॥ परमो होति अमन्द। प्रापत होत अनन्द ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे पंचविंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

पूर्व प्रजापति जौंन हे कहे तौंन तुम मोहि। औ दिशानके सुऋषिऊ कहे कृपासों जोहि ॥ अब कहिए पुनि कृष्णके तेजसको वृत्तान्त। औ कीन्हें जे कर्म हैं पूरब महत नितान्त ॥ अरु धारौ किहि कार्य्यकों माधव पशुको रूप। कहौ तौंन अवगाहिकै प्रज्ञावान अनूप ॥

भीष्मउवाच ॥ रामगीतीछन्द ॥

एक समयमें हम गए मृगयाकाजको वनमांहि। अति महत तामें रहत हे सिंहादि जीव सदाहि ॥ बहुवृन्द बिहरत रहे जामें विहंगनके चारु। फल फूलसों युत वृक्ष तामें ऊते खच अपारु ॥

दोहा ॥

तहां मारकण्डेयको ऊतो थान अति खच्च। हम तामें देखत भए वृन्द मुनिनके दच्च ॥

अरिल छन्द ॥

तदनु तिन सुपूजा कीन्हीं मम। ताते परम प्रसन्न भए हम ॥ कश्यप कथा कही तहं एक बर। तुम्हें कहत हौं तौन सुमतिवर ॥ नरकादिक दानव एति बलमय। क्रोध लोभ युत तिनके बहु चय ॥ तिमिहि और दानव बहु बरबल। अतिहि प्रमत्त महत तिनके दल ॥

चरणा दोहा ॥

देखिनसकेसमद्विसुरनकीतेसबसुनुभूपाल। दलिमलिडारेकोपिमहतअतिकरिकैयुद्धविशाल ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

हारी दानवनसों रनमाहीं। केहू धीर शके धरिनाहीं ॥ फिरत भए ते इत उत छपते। दानवान को बल गुणि कपते ॥ भीरि दानवनकी अति भारी। तासों धरणी भई दुखारी ॥ जलके माहीं बूड़न लागी। दानव भीर भारसों पागी ॥ देव समूह देखिकै ताको। कहत भए ऐसे ब्रह्माको ॥ दानव मर्दन कीन्ह हमारो। ताते हमकों भो दुख भारो ॥ भूमि भारसों आर्ता ह्वैकै। बूड़ि जाति भो हर्षको खैकै ॥ सुनिकै यह देवनकी वानी। बोले चतुरानन वर ज्ञानी ॥ विष्णु रूप शूकरकों धरिहैं। नाश सर्व दनुजनको करिहैं ॥ श्री अव्यक्त विष्णुकों नाहीं। जानत हैं अपने मन माहीं ॥ है मदान्ध सब बरबल धारी। वसत भूमितर हैरण कारी ॥

दोहा ॥

तहां जायकै मारि हैं सब दनुजनको वृन्द। शूकरको वपु धारिकै श्रीहरि नित्यानन्द ॥

शोभा छन्द ॥

ब्रह्माकी यह बानी। सुरगण सुनि सुखखानी ॥ आनंद हियमें धारौ। शोच समूह निकारौ ॥

दोहा ॥

तदनन्तर श्रीविष्णु वर धरि वराहको रूप। गे तित भूतर पैठिकै जित हे दनुज अनूप ॥ लखि वराह वपु विष्णुको दनुज सिकलिकै सर्व। गहत भए ते आयकै करिकै वेग अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेश छन्द ॥

सब खैंचत भे चहुओरसों। हरि शूकर रूपहि जोरसों ॥
थकगे सबकै कछु नासके। विषम लहि आपुस मैं तके ॥

दोहा ॥

तदनन्तर बाराह बपु बिष्णु भयङ्कर भूरि। करते भये निनाद सों गोलोकन ने पूरि ॥

चंचला छन्द ॥

त्रासमान होत भे महान शक्रआदि देव। केहु तौन नादको सुपाय तेके न भेव ॥
सर्वलोक मांहि ज्ञान काहुको रह्यो न खच्च। जीवबृन्द भूरि भीतिसों भरे परे प्रतच्च ॥

तोमर छन्द ॥

तिहि नादसों डरि पर्म। सब दैत्य होय सभर्म ॥ सबलौ परे भुव बीच।
पुरुषारथै तजि नीच ॥ तब बिष्णु शूकर रूप। सुर दुःखहर्ण अनूप ॥

चरण दोहा ॥

तिनके आमिष अस्थि मेदके संचयकों तहं भूप। भए बिदारत खुर अपनेसों श्रीहरि शूकररूप ॥
तदनन्तर सब देवता गे चतुरानन पास। चतुराननकों कहत भे ऐसे बचन उदास ॥

देवाऊचु: ॥ अरिल छन्द ॥

कैसो नाद भयो यह जगपति। कियो कौन यह नाद महत अति ॥
बिह्वल भयो जगत जिहिको सुनि। हमकों कहौ कृपा करिकै गुनि ॥

दोहा ॥

इतनहिंमें बाराह बपु बिष्णु जगत के हेत। महिमें तें निकसत भए सुनु नृप बुद्धिनिकेत ॥

पितामहउवाच ॥ दोहा ॥

देखो यह बाराह बपु बिष्णु महाबलपर्म। आवत दानव पतिनकों हति को उग्र सधर्म ॥
इनहिं कियो हो नाद अति दनुजनके बधकाज। तुमनडरो हियमें धरो आनंद परम दराज ॥

भीष्मउवाच ॥

जिहि काजै बाराह बपु धास्यो श्रीभगवान। कह्यौ तुम्हैं हम तौन अब सुनिहौ कथा सुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ
कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत
दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे श्रीकृष्णवाराह रूपमहात्म्ये षट्त्रिंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

सुन्यो महातम आपुसों शूकरबपुको पर्म। अब कहिए तुम मोक्षको मोहि उपाय सधर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

कहत एक इतिहास हौं इहि प्रसंग में भूप। तामाहीं गुरु शिष्यको है संबाद अनूप ॥
एक बिप्र हो बिज्ञ अति ताहि शिष्य बर तास। पाणि जोरिकै कहत भो ऐसे सहित हुलास ॥
भए कहांते आपु औ हम हे तात सुजान। कहौ मोहि अवगाहिकै वक्ता आपु महान ॥

अरिल छन्द ॥

और कहौ एक करि निर्धारण। पंचभूत है सबके कारण ॥
श्रेष्ठ अश्रेष्ठ ताहि कैसे जन। पावत संशयमें है मो मन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुरुवाच ॥ दोहा ॥

सुनहु शिष्य मैं कहत हौं तोहि गुप्त एक बात । तूहूं गुप्तहि राखियो मनमाहीं अवदात ॥
भयो सुयादव वृष्णिके बंशमांहि अवतार । बार्ष्णेय तातें भयो तास नाम सुखकार ॥
ऐसो जो परब्रह्म है बासुदेव भगवान । पुरुष सनातन ताहि बुध जानत हैं श्रुति मान ॥
करता उत्पति प्रलयको सोई और न कोय । ताहीते हम तुम भए औ सब जग यह जोय ॥
बासुदेव भगवान जो श्री परब्रह्म सशर्म । तिनको जामें अंश है अधिक श्रेष्ठ सो पर्म ॥
बार्ष्णेय भगवानको चारु महातम खच्च । सुनो तोहि मैं कहतहौं दायक मोद प्रतच्च ॥
चक्रारूढ़ पिपीलिका घूमति है जिहि भांति । बासुदेवके मांहि तिमि चयलोकनकी पांति ॥
महाप्रलय जब होत तब अव्यय विष्णु महान । फेरि प्रकृतिकों सृजत हैं जगके काज सुजान ॥
कृपे वेद युग अंतमें तिनको सुऋषि महान । आज्ञाविधिकी पायकै धारत भये सुजान ॥
वेदांगनकों वृहस्पति धारत भयो सप्रीति । नीति शास्त्रकों धारतो शुक्र भयो सह रीति ॥
नारद भो धारत परम खच्च शास्त्र गान्धर्व । धनुर्वेद धारत भए भारद्वाज अखर्व ॥
वैद्यककों धारत भयो कृष्णात्रेय सुप्रच्च । न्यायशास्त्रकों और ऋषि धारत भे धरमच्च ॥
वेद शास्त्रकों धारते भए सुऋषि सब खच्च । पै जान्यो अव्यक्त जो ब्रह्म ताहि नहिं दच्च ॥
भयो व्यच्च अव्यक्त जो नारायण भगवान । सोई आपु अव्यक्तकों जानत हैं नहिं आन ॥
नारायणते और ऋषि जानत हैं बुधिधाम । नित्यानंद सुब्रह्मको सुनहु शिष्य अभिराम ॥

सोरठा ॥

नारायण भगवान तिनकी इच्छाते प्रकृति । सुनु हे शिष्य सुजान करति महत तत्वादिकों ॥

चरण दोहा ॥

होत प्रकृतिते महातत्व है महातत्वते होत । अहङ्कार औ अहङ्कारते नभको होत उदोत ॥
नभतेवायुवायुते तेजसतेजसतेबुधि धाम । उद्भव जलको होत कहत है महत प्रच्चअभिराम ॥
पांचकर्मेन्द्रिय औपांचहिज्ञानेन्द्रियअतिखच्चइनतेहोतबिषआऔपांचहिमन षोडसहौदच्च ॥
ज्ञानेन्द्रिय ए श्रोत्र त्वक चक्षु सु जिह्वा घ्रान । कर्मेन्द्रिय ए लिंग गुद कर पद वाक सुजान ॥

बरवैछन्द ॥

गन्ध रूप अरु रस औ शब्द स्पर्श । प्राप्त सर्व इनमें मन रहत सहर्ष ॥

दोहा ॥

मन जिहि इन्द्रियके निकटरहतसुइन्द्रिय सोय । ग्रहण करतिहै बिषयको और न इन्द्रिय कोय ॥
दश इन्द्रिय सब भूत अरु षोडश हौ मन जौन । आज्ञामें चेतच्चकी रहत देहमें तौन ॥
जिह्वा जलको सुगुण है पृथिवीको गुण घ्रान । चक्षु अग्निको श्रोत्र है नभ गुणको मतिमान ॥

सोरठा ॥

मारुतको गुण पर्श महाभूतके सुगुण ए । सुनु हे शिष्य सहर्ष सब भूतनमें जानिए ॥

दोहा ॥

होत चित्त है सत्वते सत्व प्रकृतितें पर्म । ईश्वर मेंसो रहत है कहत सुप्रच्च सशर्म ॥
ईश्वर मांही रहत है सत्व सुगुण अवदात । यही हेतुसों सत्वसों ईश्वर जान्यो जात ॥

जयकरी छन्द ॥

भाव सर्व मायादिक जौन । सर्व जगतके कारण तौन ॥
चिदानन्द तिनको आधार । प्रकृति परे सा बुद्धि अगार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

मायादिकसों युक्त जो जा में हैं नवद्वार । ऐसो तन तामें रहत आत्मा सुमति अगार ॥

बरवै छन्द ॥

पुरुष कहावत है जन यहि ते जानु । जानत ते जिनको भो मतिको भानु ॥

आभीर छन्द ॥

लघु दीरघ जे देह । तिनमांही बुधिगेह ॥ आत्मा तुल्यहि जानु । संशय मति अनुमानु ॥
देखि परत है पैन । छेदेते तन ऐन ॥ अग्नि काष्टके माहि । देखि परति जिमि नाहि ॥

दोहा ॥

मथन किएतें काष्टको परत अग्नि है देखि । तिमिही योगाभ्यासमों परत आतमा लेखि ॥
आत्माको अरु देहको प्रथक् भाव है जौन । तन सम्बन्ध न छुटत है जानि जात जबलौन ॥
सरितामांहि नयो नयो आवत जिमि जल चारु । तिमिही देही देहको पावत बुद्धि अगारु ॥
सेन्द्रियआत्मा देहतजि स्वप्नमांहि जिमिजात । इमिहि देह तजि द्वितियको प्राप्त होत है तात ॥
ह्वैकै प्रेरित कर्मसों करत कर्म लहि देह । कर्महिसों पुनि लहत है द्वितिय देह बुधिगेह ॥
भूत चारि परकारके होत शिष्य सुनु दक्ष । प्रथक् प्रथक् मैं कहतहौं ते सब तोहि प्रतक्ष ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे गुरुशिष्यसम्वादे सप्तविंशोऽध्यायः ॥

गुरुरुवाच ॥ चरणा दोहा ॥

अण्डजस्वेदजऔर जरायुजऔ उद्भिजए भूत । जानेजात न जनन मरण है तिनके तात अकूत ॥

दोहा ॥

तनको जो संयोग है औ वियोग है तात । मन है ताको हेतु वर कहत प्रज्ञ अवदात ॥

सोरठा ॥

मन है मायारूप जनम मरणको हेतु सो । यहितें प्रज्ञ अनूप जानि परत जनमादि नहिं ॥

रामगीती छन्द ॥

जड लोह जो सो लोह चुम्बकके भएते पासु । चैतन्यलौ सो तास सोहै धावतो है आसु ॥ तिमहिं मनके लगे पीछे इन्द्रियादिक सर्व । मन जात जहं जहं जात तहं तहं कहत प्रज्ञ अखर्व ॥ है कर्मकेवश वासना अरु वासनावश कर्म । यह वासना अरु कर्मको जो चक्र प्रज्ञ सशर्म ॥ तिहि मांहि परिकै जीव अरु मन इन्द्रियादि समेत । है भ्रमत तबलौ चक्र जबलौ रहत बुद्धि निकेत ॥ फल वासनामें लागि करिकै कर्म कीन्हे जौन । सुनु देह प्रापत हैंनको है हेतु आगे तौन ॥ कर्म जो है हेतु अरु मायादि जे है सर्व । होत जब चेचक्रसों हैं युक्त प्रज्ञ अखर्व ॥ परस्पर मिलि जात है ए मिलत हैं जब देह । इस्य जगमें होत तासों करत है जन नेह ॥

चरणा दोहा ॥

ईश्वरके आश्रयमें ह्वैकै जीव पूर्व तजि देह । लोकान्तरको प्राप्त होत है सुनहु शिष्य बुधिगेह ॥

अरिलछन्द ॥

लोकान्तरको जात जीव जब । रज औ तम नहिं जात संग तब ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वच्छ सत्वगुण जात जीव संग । ते जानत जे गहत ज्ञानमग ॥

दोहा ॥

जात संगपै प्रथक् है जैसे रज अरु बायु । तिमिहि संग एजात पै जीव प्रथक् है सोउ ॥
आपो जान्यो जात है प्राप्त भएते ज्ञान । आपो जाने फेरि नहिं देह लहत मतिमान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्य पुत्र गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्म्मे गुरुशिष्य संबादे अष्टत्रिंशोऽध्याय:

दोहा ॥

उदयक्लेशको जौन है तास हेतु जो साम । सो मैं यहि अध्यायमें कहत तोहि हौं आम ॥

रामगीतो छन्द ॥

जन प्रकृत जे हैं कर्ममाहीं तिन्हैं प्रिय है कर्म । अरु प्रकृत जे बिज्ञानमाहीं रहत नित्य सधर्म ॥ प्रिय लगत है बिज्ञानही तिनजननको नहिं और । सुनु शिष्य तोसों कहत हौं यह बारता करि गौर ॥ बर कर्म मारग मोक्ष मारग कहे श्रुतिमें पर्म । तिनमाहिं जे हैं प्रकृत तेई बुद्धिमान सधर्म ॥तिन दुहुनहूमें मोक्षमारग मांहि रत हैं जौन । सो श्रेष्ठतर हैं तास सम जन और नहिं बुधिभौन ॥ तुम कहौ जो यहिभांति मेरे प्रगट सुनिए बैन । जन रहै जीवत करै तबलौं कर्म बर बुधि ऐन ॥ यह बेदमाहीं लिख्यौ है तौ सुनहु मेरी बात । जन करै कर्म न होय जबलौं ज्ञान बर अवदात ॥ नहिं ज्ञान प्रापत होय जो तौ कर्मको फल त्यागि । अति स्वच्छ कीवे चित्तको जन करै कर्महि पागि ॥ जिमि न कञ्चन लसत मलसों परम जो बिज्ञान । तिमिहि प्रकाशित बासना सों होत नहिं मतिमान ॥ लगि काम क्रोध अरु लोभमाहीं करत जौन अधर्म । नशि जात सो है लहत है नहिं ज्ञानको बर शर्म ॥ अनुराग सेती पञ्च जे हैं विषय तिनके मांहि । मनको न लावै बैठि कै बर बिज्ञ जनके पांहि ॥ मनकों लगाए बिषय माहीं क्रोध हर्ष विषाद । निति होत है जन कहत हैं ते तजें जौन प्रमाद ॥ जन अज्ञ जे ते बिषय माहीं लगे रहत हमेश । जन प्रज्ञ कबहु न लगत तिनमें जानि महत कलेश ॥ जिमि मृत्तिकासों जात लीप्यो मृत्तिकाको गेह । नहिं गिरत है तिहि भांति होसो प्रगट जो यह देह ॥ है पारथिब यहि हेतुतें पृथ्वी बिकारहि पाय । नहिं नष्ट ताको होत प्रापत कहत बुध सुखदाय ॥

जयकरीछन्द ॥

घृत गुड तैल दुग्ध अरु नौंन । आमिष धान्य मूल फल तौंन ॥ ए सब जानहु भूमि बिकार । नशत न इनतें देह सुढार ॥ दुर्घट मारगमें जिमि पर्म । जो सन्यासी जात सुकर्म ॥ मधुर सुभोजनकों ललचाय । मिलत न तब सुनि बाहन काय ॥ रहैं खाय कै ग्राम्य अहार । तैसेंही सुनु बुद्धि अगार ॥ जगतहि जो दुर्घट पथ भूरि । तामें रह्यो भीति बहु परि ॥ सुनिबेकों निशि दिन वेदांत । प्रापत ह्वै ज्ञान नितांत ॥ मिलै अन्न है सोई खाय । प्रज्ञा-बान निबाहै काय ॥

दोहा ॥

सत्य क्षमा अक्रूरता अरु धीरजता धारि । मनकी चञ्चलताहि अरु कुत्सित बचन बिसारि ॥
रोकै सब इन्द्रियनकों क्रमसों बर मतिमान । तपस्वीनके संग रहि करि तप परम महान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त होयकै गुणनसों प्राणी जगके माहि। घूमत है अज्ञानतें चक्र समान सदाहि ॥

आभीर छन्द ॥

यातें जो अज्ञान। दायक दुःख महान ॥ तजिवे ताहि सदाहि। बैठे प्रज्ञन पाहि ॥

मनोहर छन्द ॥

महाभूत अरु इन्द्रिय सर्व। अरु तीनहुं गुण सुबुध अखर्व ॥
इनसों युत लोकनको हेत। अहङ्कार है बुद्धि निकेत ॥

दोहा ॥

प्रकृति करावत ऋतुनकी जैसे काल सुजान। प्रकृति करावत कर्मकी अहङ्कार तिमि मान ॥
अहङ्कारके भेद चय तुम्हैं कहत हौं तौन। मन थिरि करिकै सुनहु तुम महत मनीषाभौन ॥

मनोहर छन्द ॥

तामस अहङ्कार है एक। अरु एक राजस है सविवेक ॥ सात्विक अहङ्कार एक धर्म। अहंकार ए तीन सुकर्म। तामस अहंकार है जौन। तमसों श्याम वरण है तौन ॥ ताको कारण है अज्ञान। मोह करावत तौन महान ॥ राज सुअहंकार को लाल। वरण तौन दुखकार विशाल ॥ स्वेत वरण सात्विकको स्वच्छ। प्रीतिकार सो है वर दच्छ ॥

कला छन्द ॥

अब विशेष तीनोंके गुण सुनु। सुनिकै तू तिनकों हियमें गुनु ॥ असंदेह अरु प्रीति मति धृति। अरु प्रसन्नता परम महामति ॥ ए विशेष सात्विकके गुण वर। अब राजसके गुण सुनु मतिधर ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह भय। अरु प्रमाद यह राजसु गुणचय ॥

दोहा ॥

मान कुटिलता दर्पता अरति विषाद सुशोक। ए गुण तामसके कहे तुमकों हम बुधिओक ॥
ए जे गुण तीनहुनके तिन्हैं धरत है जौन। तिनकों दोषहि होत है ए सब सुनु बुधिभौन ॥
इन दोषनमें कौन लघु औ है कौन महान। करिकै यह अनुमानवर हियकेमांहि सुजान ॥
क्रमसेती इनसबनको छोड़न लागै प्रज्ञ। इन्द्रियगणकों कर्षिकै मन सह वर धर्मज्ञ ॥
इन दोषनमें कौनसो छूटो दोष कितेक। यह विचार करतै रहै नित्यहि जन सविवेक ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

मनसों छोड़ि दिए है जौन। सिथिल किए अरु मतिसों तौन ॥ ऐसे दोष कौन तिन-माहिं। छोड़े छूटि सकत जे नाहिं ॥ अरु ऐसे हैं कौन सुदच्छ। छूटि छूटि पुनि होत प्रतच्छ ॥
यह संशय सो मनमें पूरि। रह्यो ताहि तुम करिए दूरि ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

जौन जात निर्मूल ह्वै तौन नहीं पुनि होत। जास लेस रहि जात सो पुनि पुनि करत उदोत ॥
महत होत अज्ञान है रज तमतें भूपाल। क्रोध लोभ भय होत हैं ताते दुखद विशाल ॥
इनको दाबे होत है पावन मानव धर्म। एई अघके हेतु हैं बुद्धि निकेत सुधर्म ॥
मायातें भगवानको नष्ट भयो है ज्ञान। जिनको तेई क्रोधकों प्रापत होत सुजान ॥
होत क्रोधते कामको प्रापत मानव मूढ़। अहंकार अरु दर्पको लोभहि तिमिहिं अगूढ़ ॥
अहंकारतें होत है कर्म कर्मतें नेह। होत नेह सम्बन्धतें शोक महान अछेह ॥
क्रिया पाप अरु पुण्यकी ताको जो आरम्भ। जनन मरणकों लहत है तातें मनुज सदम्भ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोणित मुत्र पुरीषको तामें है संघात। गर्भवास इहिभांतिको तामाहीं सुनु तात॥
प्राप्त होत है जौन जन पाप पुण्यमें शक्त। पाप पुण्यमें हूजिए याते नहिं अनुरक्त॥

मोरठा॥

जगतचक्र यह जौन ताहि चलावति नारि है। यह जानो क्षितिरौन निश्चय संशय नाच है॥

दोहा॥

मंचमई जो शक्ति है शत्रु संहारण हेतु। ताको छत्या नाम है तामस वाम सचेतु॥

मोरठा॥

अविचक्षण जन जौन तिनके मनको हरति तिय। जे जन बरबुधिभौन ते इनको संग करत नहिं॥

दोहा॥

मूरति जो इन्द्रियनकी छपी रजोगुणमाह। तातें होत अपत्य है नारिनमें नरनाह॥
अपनी छोड़ि अपत्य दे परकी ऐसी जानि। ऐसे देहज कृमिनकों तजत बीनि अनुमानि॥
लावै मन न अपत्यमें कबहूं हे भूपाल। रतिमें पगे अपत्यकी लहत न ज्ञान विशाल॥
जौन त्यागिबे योग्य ते कहे तोहि हम आम। योग्य जानिबे जौन सो सुनहु भूप बुधिधाम॥
तममें रज अरु सत्वगुण होय जात है लीन। प्राप्त होत तम ज्ञानमें भूपति परम प्रवीन॥
प्राप्त भयो है ज्ञानमें भूप तमोगुण जौन। अहङ्कार अरु बुद्धिसों युक्त होत है तौन॥
प्राप्ति देहकी जौन है सोय तास है हेत। कालयुक्त जो कर्म है तासों बुद्धिनिकेत॥
जीवहि यहि संसार में रहत फिरावत सोय। जानत यहि सिद्धान्तको जे हैं बर बुधि लोय॥

चरणा दोहा॥

रमतजीवमनसौ देहीलौंस्वप्नमाहिंजिमिदक्ष। जीवतिमिहि गर्भहुके माहीलगतबिषयमेंदक्ष॥

दोहा॥

बीज देहको कर्म जो ता करिकै भूपाल। जे जे इन्द्रिय होति है प्रेरित प्रज्ञ विशाल॥
युक्त होय अनुरागसों तेते इन्द्रिय भूप। अहङ्कारते होति है सब उतपन्न अनूप॥

जयकरी छन्द॥

सुनिबेकी इच्छासों कान। देही लहत सुनो मति मान॥ इच्छा किए रूपकी भूप। देही पावत चक्षु अनूप॥ किए गन्धकी इच्छा घ्रान। देहवान पावत मतिमान॥ अरु स्पर्श इच्छासों पर्म। प्राप्त होति है त्वचा सुकर्म॥

दोहा॥

कर्म बिना नहिं होति है इच्छा कौनहु भूप। याते कारण कर्मही जानो प्रज्ञ अनूप॥
प्राण अपान उदान अरु मारुत व्यान समान। इन पांचहुसों चलति है देह भूप मतिमान॥
आदि अन्त अरु मध्यमें दुःखहि जिनके मांह। ऐसे कर्मज गाचयुत जीव होत नरनांह॥

मोरठा॥

कीन्हें अंगीकार देहेन्द्रियको गर्भमें। भूपति बुद्धिअगार जीवहि जान्यो जात दुख॥

दोहा॥

दुःख बढ़त अभिमानते तिमिहि मरणते भूप। याते दुखके हेतुको कीजै रोध अनूप॥
दुख कारणके रोधकों जानत जौन सुजान। सोई छूटत दुःखसों कहत सुविज्ञ महान॥
प्रलय प्रभव इन्द्रियनको रजगुणहीमें होत। याते रज रोके नहीं इन्द्रिय करति उदोत॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ॥

तृष्णासों जन हीन तास न इन्द्रिय चलतिहै। इन्द्रिय जानु प्रवीन करण देहकी प्राप्तिको ॥

दोहा ॥

हीन करण जब होत तब देहीलहत न देह। यहि सिद्धान्तहि योगविद जानत हैं बुधिगेह ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिनाश्रीवन्दीजन काशीवासिगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मेबाणेय ख्यानेउणचत्वारिंशोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

इन्द्रियको जो जीतिवो ताके मांहि उपाय। शास्त्रचक्षुसों देखि हौ कहत सुनहु नरराय ॥
तिहि उपायको होत है प्रापत जौन सुजान। उत्तम गतिको पायकै होत तौन सुखमान ॥

मौनी छन्द ॥

श्रेष्ठ सर्व भतनमें मानव भूप। मनुजनहूमें द्विज है श्रेष्ठ अनूप ॥
विप्र श्रेष्ठ है द्विजनहूमांही पर्म। वेदशास्त्रको जानत जौन सुकर्म ॥

सोरठा ॥

नेत्रहीन जन जौन मार्गमांहि जिमि लहत दुख। ज्ञानहीन है तौन तिमिहि जगतमें लहत दुख ॥
करिकै शास्त्र विचार धर्महि धारण करत है। यातें बुद्धिअगार विप्रद्विजनमें श्रेष्ठ है ॥

दोहा ॥

सत्य क्षमा अरु शौच धृति धर्मनमांहीं सर्व। जन पावत है धर्मविद ब्राह्मण दक्ष अखर्व ॥

सोरठा ॥

जोग धर्म जो भूप सो प्रापक है ब्रह्मको। याते प्रज्ञ अनूप और धर्मते श्रेष्ठ है ॥

दोहा ॥

उत्तम विधिसों करत जो योग धर्मको पर्म। तौन ब्रह्मको होतहै प्रापत विप्र सुकर्म ॥
मध्यम विधिसों करत जो योग धर्मको खक्ष। सत्यलोक को लहत है विप्र तौन वर दक्ष ॥
जौन अधम विधिसों करत होतविप्रही फेरि। कह्यौ तोहि सिद्धान्त यह योगशास्त्रको हेरि ॥

आभीरछन्द ॥

दुखसों कीन्हों जात। योग धर्म अवदात ॥ तिहिके मांहि उपाय। मैंहौं कहत नृपराय ॥

दोहा ॥

बढ़े जौन कामादि हैं रोकै तिन्हैं हमेश। नारिनकी न कथा सुनै औ नहिं लखै नरेश ॥
कथा सुने नारीनको औ देखेते रूप। प्राप्त रजोगुण होत है दुर्बलहूको भूप ॥
मनमाहीं उतपन्न जौ भूप रजोगुण होय। प्रायश्चित द्वादश दिवस करै ज्ञानसों जोय ॥

जयकरी छन्द ॥

भोजन करै तीन दिन प्रात। सायंकाल तीन दिन तात ॥ करै नहीं भोजन दिनतीन।
देय कोऊ तौ करै प्रवीन ॥ करै तीन दिनलौं उपवास। धीर्य्य धारिकै वर बुधिरास ॥

दोहा ॥

यह है प्रायश्चित्त वर प्राजापत्य सुनाम। यहिसों रज उतपन्नको दोष जात मिटि माम ॥
पीड़ित शुक्राधिक्यसों होय अतिहि जौ भूप। करै नीरमें स्नान तौ पैठि सुप्रज्ञ अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्रपात जौ स्वप्नमें होय तौ सु चय बार। वर अघमर्षण मंत्रको जलमें जपै सुढार ॥
जौन रजोमय पाप है दाहै यहिविधि ताहि। करि बिचारको दक्ष बर ज्ञानचक्षुसों चाहि ॥
मल बन्धन है देहको जैसे तिमिही देह। आत्माको बन्धन सुदृढ़ जानो वर बुधिगेह ॥
व्यापत कफ पित बातसों है शरीर यह भूप। यहिमें रस नाड़ीनसों पहुंचत प्रज्ञ अनूप ॥
गुण पांचौ इन्द्रियनके प्राप्त करावति जौन। ऐसी दश हैं नाड़िका देहमाहिं मतिभौन ॥
तिन दशहू नाड़ीनसों होति सहस्रन और। चल दल दलकी नोक सम सूक्ष्म नृप गिरमौर ॥
नदिका जलसों भरति है सागरको जिहिभांति। पोषति तैसेहि देहको रससों नाड़ी पांति ॥
हृदय मध्य एक नाड़िका मनोवहा है नाम। प्राण विकार जब होत है तबै भूप बुधिधाम ॥
मनोवहासो शुक्रको सर्वदेहते कर्षि। करि उपस्थ के देति है सन्मुख समयो पर्षि ॥
है शरीर में नाड़िका बर महिपाल जितेक। मनोवहा अरु नयनमें लागी सर्व तितेक ॥
स्वप्नहुमें मनबीच नृप रजको भए प्रकाश। मनोवहासो शुक्रको छोड़ि देति है आश ॥
शुक्रहि कारण जातिके शङ्करको यह जौन। जानत है संसार में करत राग नहिं तौन ॥
दोष सर्वजरि जात हैं तिन मनुजनको सर्व। फेरि जनमके दुःखको पावत नहीं अखर्व ॥
औरहु देह अप्राप्तिको कारण परम अनूप। तुम्हें कहत हौं सो सुनो महत ज्ञानमय भूप ॥
निर्विकल्प जो ज्ञान है ताहि मनहिं सों स्वच्छ। प्राप्त होय तनको तजे फेरि लहत नहिं दक्ष ॥
जीवन मुक्तिहि जो करै ऐसो ज्ञान अमन्द। तास मार्गमें कहत हौं प्रज्ञाराशि नरेन्द ॥
मनहीं विषयाकार है यहजो ज्ञान नरेश। मनहीको सो होत है प्रापत भणत बुधेश ॥
निष्टत कर्म कीन्हें मनस होत न विषयाकार। प्राप्त होत है मोक्षको जो वर सुख आगार ॥
मारग दुर्ग उलंघिजन पावत सुख जिहि भांति। तिमहि मोक्षजन लहत हैं लंघिदोषकी पांति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे चत्वारिंशतमोऽध्यायः ॥

भीष्मउ वाच ॥ दोहा ॥

दुखद अन्तमें विषय अति तिनमाहीं रत जौन। कहत सुबुध जन लहत है महत खेदको तौन ॥
जे अशक्त हैं विषय में तौन परम गति लेत। जे जन ज्ञाता मरमके जानत बुद्धि निकेत ॥

चरणा दोहा ॥

जन्ममृत्युअरुआधिव्याधिसोंयुक्तजगतनितिदेखि। काजमोक्षकेयत्नकरतहैंबुद्धिमानअवरेखि ॥

दोहा ॥

मनसा वाचा कर्मसों रहै नित्यहो शुद्ध। करै गर्वकों नहिं धरै शान्तिहि होय अक्रुद्ध ॥
दयाहूसों भूत संग बन्ध होत है पर्म। धरै दयाहू नहिं करै याते संग सुकर्म ॥
करै कर्म जौ तौ शुभहि करै अशुभकों नाहिं। दोऊ भोगे जात हैं यह गुणिकै मनमाहिं ॥
उदासीन सबमें रहै शत्रु मित्रता त्यागि। परम गहे यह धर्म जन रहत शरमसें पागि ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

करै कामना कौनहुं नांहीं। गुणै न पर अनिष्ट हियमाहीं ॥ भार्य्यादिकके मरे न रोवै। कालव्यर्थ कबहूं नहिं खोवै ॥ मनकै स्वच्छ ज्ञानमें लावै। विषयमाहिं कबहूं न लगावै ॥ सूक्ष्म परम धर्म जो नीको। अरु सुवचन सुखदायक हीको ॥ इन दोउनकी इच्छा हीमें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै सुगुणि जो विमलाधीमें ॥ कहै वैन तौ सत्य सदाही । दुखद होहिं जे काहुहि नाही ॥ जामें चुगली काहू केरी । होय नहीं दुखदाय घनेरी ॥ अरु कठोरतासों विलगानी । ऐसी जो है सुन्दरि बानी ॥ तजि प्रमादता बोलै योरी । कबहूं न कहै भरी बरजोरी ॥ बहुत बारता कीन्हें जगमें । मन रंगि जात विषय रस रंगमें ॥

दोहा ॥

इन्द्रिय रजगुण युक्तसों करत जौन जन कर्म । तौन नरकको लहत है अच पाय दुख धर्म ॥ ताते आत्माको सदा राखै धीरज माहिं । लगन देय कबहूं नहीं दुखद विषयके माहिं ॥ कर्म न्यास हम कहत हैं तुम्हें सुनहु सो भूप । जानत ताकों सुखद है जे बर प्रज्ञ अनूप ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

जैसे तस्कर चोरी करिकै । लोभ माहिं पगि शिरपै धरिकै ॥ भागन लगत कुमगको लहिकै । बांधत तिन्हें ग्राम जन गहिकै ॥ तिमिहि अबुद्धनको दुख भारी । कुकरम देत बांधि बहुवारी ॥ वस्तुहि छोड़ि चोर जो भागै । तौ बन्धन दुखसों नहिं पागै ॥ इमिहि कुकर्म छोड़ि जो देई । तौ अशर्मको मनुज न लेई ॥ गृह आदिक संग्रहको तजिकै । एकान्तस्थलको लखि ब्रजि कै ॥ रहै तहां ह्वै अल्पअहारी । नाशि ज्ञानमों क्लेशहि भारी ॥ रहै तपस्यामें निति तत्पर । तौन लहत जन पावन पद पर ॥ धीरज मान महतहो ह्वै कै । दुःखद कामादिकको ग्वैकै ॥ मन चंचलको रोकै मतिसों । लगन न देय विषयमें रतिसों ॥ तिहिको महत जानि योगीश्वर । करत प्रशंसा अति ताकी सुर ॥ ह्वै कै प्रगट तास तट आवत । भरे शरम परमासों भावत ॥

दोहा ॥

मिलो जास मन सुरनसें ऐसो जोजन ताहि । ब्रह्मज्ञान बर होत है प्राप्त चहत सुर ताहि ॥ छूटि जात जब विषय तब पावत ब्रह्मज्ञान । याते विषयनको तजै दुःखद जानि महान ॥ जबलौं ब्रह्मज्ञान नहिं प्रापत होय अनूप । तबलों गाफिल नहिं रहै साधनसों सुनु भूप ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

साकादिकको भक्षण करि कै । बितवै काल सुमतिकों धरिकै ॥ करै तपस्या अपनी नाही । जाहिर राखै गुप्त सदाही ॥ करै सात्विकहि नेम अहारै । काल देश लखि करि सुविचारै ॥ प्रकृत कर्मसों योगै माहीं । विघ्न होन दे कबहूं नाहीं ॥ अल्प आगि जैसे सुलगावै । तिमहि ज्ञानमें चित्त बढ़ावै ॥ ऐसो जो जन है बरधीको । ज्ञान प्रकाश लहत सो नीको ॥ जौन प्रकाश ज्ञान को पावत । प्राप्त होय अव्यय कों भावत ॥

दोहा ॥

पावतज्ञान प्रकाश जो तिहि समान नहिं और । गावत जाके यशहि सुर सुनहु सुजानसगौर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

औरहु साधन कहत एक सुनहु तौन तुम भूप । थिर करिके चञ्चल मनहि कृन्ती सुवन अनूप ॥ निष्फल मख इच्छा करै ब्रह्मचर्य्य को जौन । स्वप्न दोष कों समुझिकै निद्रा तजि दे तौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणाकुलक छन्द ॥

रज औ तमसों स्वप्ने माहीं। आपु आपु को जातन नाहीं॥ देहांतर को लहिकै जैसे। डोलत पर्यो लोभमें तैसे॥ ज्ञानाभ्यास किए ते जागै। निद्रा बीच कबहुं नहिं पागै॥ स्वप्न मांहि कैसे बिनु देहै। चेष्टा करत कहौ करि नेहै॥ जो तुम कहो तात यह हमको। तौ तुम सुनो कहत हैं तुमको॥ यहि वृत्तांतहि ईश्वर जानै। ऐसे ऋषि बर वृन्द बखानै॥ मनके व्यापारहि तुम जानो। स्वप्न न और भूप अनुमानो॥ कारज मांहिं युक्त मन जाको। थिर न रहत कबहूं है ताको॥ जागत होत सङ्कल्पहि जैसे। स्वप्नहु मांहि मनोगत तैसे॥ जगमें कामवान है जो जन। जन्म असंख्य लहत है सो जन॥ मनमें जो जन जगको जानत। उत्तम पुरुष तौन दुख मानत॥ किए जौन हे कर्म पुराने। कहत सुबुध हैं परम महाने॥ तिनसों सत्वादिक गुण माहीं। जो जो प्राप्त होत है पाहीं॥ तौन दिखावत स्वप्नमें है। भूत आतमा को नगिचै है॥

दोहा ॥

सत्व सुगुणसों देवता रजसों नारि अनूप। तमसों राक्षस स्वप्नमें देखि परत हे भूप॥
बहु प्रकारकी परत लखि अपनीहु जो देखि। सत्वादिक गुण योगते कहत मनीषा पेखि॥
करत जौन सङ्कल्प है जाग्रतमें मनमांहि। स्वप्नमांहि सो परत लखि मनको अपने पांहि॥
निति अरोक मन रहत है सबभूतनके बीच। ताको आत्म प्रभाव ते जानै भूप निभीच॥
स्वप्न अवस्था हम कही तुम्हें भूप अनुमानि। अब सुषुप्ति हम कहत शुभ थिर तामें मन आनि॥
प्रापत होत सुषुप्तिमें साक्षी मांही सर्व। बुद्धि अहङ्कारादि नृप जानत प्रज्ञ अखर्व॥

चरणा दोहा ॥

स्वप्न सुषुप्ति अवस्था तुमकोकही भूपअनुमानि। संप्रज्ञात अवस्था तुमकोंअबहम कहत बखानि॥
मन वारे सङ्कल्प ते ईश्वरको गुण जौन। ताकी जो इच्छा करै स्वच्छ परम जन तौन॥

चरणाकुलक छन्द ॥

विषय गणनको नित्य नवीना। निरखे ते मन होत मलीना॥
विषय गणनकों छोड़े नीको। भासमानसो सोहत श्रीको॥

चरणा दोहा ॥

कहत दोयबिधिको देहीकोंब्रह्मभाव अभिराम। जगको कारण एक महतहैब्रह्म सुनोबुधि धाम॥

दोहा ॥

दूजो निर्गुण ब्रह्म है रहित विकार अनूप। सुगुण तौनही होत है निर्गुण जानो भूप॥

चरणा दोहा ॥

तपस अग्नि होचादि बताए देवनको लोकेश। असुरणको तममहत बतायो दुःखद परमअशेश॥

दोहा ॥

निर्विकार जो ब्रह्म है राख्यो ताहि छपाय। सुर असुरणके सुगुण है सत्व रज तम नरराय॥
असुरणके रज तम सुगुण सत्व सुरनको जानि। ब्रह्म गुणनके हे परे परत नहीं पहिचानि॥
निग्रहते इन्द्रियनके ब्रह्म परत है जानि। निग्रह बिन कीन्हें नहीं परत ब्रह्म अनुमानि॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे वार्णयात्मेध्याद्विचत्वारिंशोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

औरङ्ग साधन कहत हम सुनङ्ग तौंन भूपाल । जानि परत है ब्रह्म वर साधन किए बिशाल ॥
हैं सुअवस्था जीवकी स्वप्न सुषुप्ति सु दोय । ब्रह्मङ्गकी निर्गुण सगुण कहत प्रज्ञ वर लोय ॥
इन चारिङ्गको जो नहीं जानत जाग्रतमांहि । निर्विकार परब्रह्मको जानि सकत सो नांहि ॥
तत्वव्यक्त अव्यक्तको कह्यौ ऋषिन्ह है भूप । व्यक्त मृत्यु सुखगत अमृतहै अव्यक्त अनूप ॥

अरिलछन्द ॥

वेद कह्यौ है प्रकृत धर्मवर । तौनहिमें है मिथिल चराचर ॥ निकृति धर्मसो है नृप व्यक्त न । जानत प्रकृत मांहि जे शक्त न ॥ प्रापत प्रकृत धर्ममें जे जन । जनन मरणको पावत ते जन ॥ निकृत धर्ममें जो जन भावत । सो जन महत परम पद पावत ॥

दोहा ॥

माया अरु क्षेत्रज्ञते भिन्न ब्रह्म है जौन । तास विचार करै सदा बुध थिर करि मन गौन ॥
कारण है उत्पत्तिको माया त्रिगुण समेत । निर्गुण है क्षेत्रज्ञ सो जानत बुद्धि निकेत ॥
है सुमहत तत्वादि नृप प्रकृति विकार जितेक । द्रष्टा है क्षेत्रज्ञ सो तिनको वर सविवेक ॥
माया अरु क्षेत्रज्ञको भेद कह्यौ हम पम । अब ईश्वर अरु जीवके सुनो भेदको मर्म ॥
जीव औ सुईश्वर परम निराकार हैं भूप । होय सकत ताते नहीं तिनको ग्रहण अनूप ॥

चरणा दोहा ॥

बिन मायासो ब्रह्म कहावत सह मायासों जीव । इन दोउनमें एतो भेद है पण्डुसुवन मतिसीव ॥

सोरठा ॥

सत्वादिक गुण तीन तिनसों छादित जीव है । अरु जो ब्रह्म प्रवीन आछादित गुणसों न सो ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

इच्छा ब्रह्मज्ञानकी जाके । ऐसे जे जन वर मेधाके ॥ बाहिर भीतरि उज्जल है कै । द्वन्द बिलन्द कलुषके ग्वैकै ॥ करैं सुतप ह्वैकै निहकामैं । धारें रहैं दया हिय मामैं ॥ महत प्रकाश लोकमें जो हैं । भूप तपस्विनहीको सो हैं ॥ भानु औरं सित भानहि देखो । तेज तपस्याको अवरेखो ॥ रजे औ तमकों नाशव जो है । लक्षण तौन तपस्याको है ॥ ब्रह्मचर्य्य अहिंसा जो है । तप शारीरक जानो सो है ॥ रोकब जो है मन बानीको । मानस तौंन तपस है नीको ॥ धर्मवान वर विप्रन वारो । अन्न प्रसन्न सुलेय सुठारो ॥ ऐसो अन्न लिए तें भारो । राजस पाप नशत दुखकारी ॥ उदरहि काजै लेय सु अन्नै । अधिक लेय नहिं रहै प्रसन्नै ॥

दोहा ॥

ऐसो साधन कीजिए ताते भूप निभीच । ज्ञान होय मनमें महत अन्त अवस्था बीच ॥

सोरठा ॥

देहवानसों देहको तजि अभिमान नरेश । रहै सदा रत ज्ञानमें वर अति हरण कलेश ॥

दोहा ॥

देह रहै जबलों रहे सावधान ह्वै भूप । पावत है देहान्तमें पावन मोक्ष अनूप ॥
भूतनके जननादिको जानु कर्म है हेत । मोक्ष सुधर्मनको महत यह सिद्धान्त सचेत ॥
मन इन्द्रियको खैंचि कै विषयमाहिं ते सर्व । धारे योगी धीर्य्य सों देहै रहत अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानि शास्त्रसिद्धान्तको ज्ञानमार्ग के बीच। किते चलत जानत न पै ब्रह्महि परम निभीच ॥
ज्ञानमार्गके बीच वर किते लेत हैं जानि। बिमल भएते हृदय अति तुम्हैं कहत अनुमानि ॥
करिकै तास उपासना जानत केते भूप। जानत हैं अभ्यास करि केते सुबुध अनूप ॥
एते सर्ब महातमा पावत हैं गति पर्म। किलबिषमों ह्वै कै रहति कीन्हें सो तप कर्म ॥
सूक्ष्मताकों ब्रह्मकी शास्त्रचक्षुसों पर्म। देखै त्याज्य स्थूलता हियमें समुझि सुकर्म ॥
ईश्वरमें मन लायबो तास धारणा नाम। तामें जो आशक्त है ऐसो योगी नाम ॥
परब्रह्म कों हृदयमें जानत मति बिस्तारि। मृत्युलोकते जात है छूटि गुणनकों टारि ॥
रागादिकसों छूटिजन पावन गतिकों लेत। कह्यौ वेदविद बुधन यह भूपति बुद्धि निकेत ॥
ज्ञान भयो है शास्त्रतें जिनको परम अमन्द। भयो न साक्षात्कार है ऐसे जौन नरेन्द ॥
तौनहुं जन बैराग्यसों पावन गतिकों लेत। मृत्युलोक सों छूटिकै धर्म सुधर्म निकेत ॥
जौंन ज्ञानसों तृप्त अरु तजे कामना सर्ब। तौनहु अव्यय बिष्णुकों प्रापत होत अखर्ब ॥
आतमस्थ परब्रह्मको जो जानत हैं तात। तौंन छूटि संसारतें पावत गति अवदात ॥
तृष्णासों जग बद्ध है घूमत इमि जिमि चक्र। जो यामें तत्पर रहत तौंन लहत दुखबक्र ॥
जिमि मृणालको तंतुसों सर्बनालमें पूरि। रहत तिमिहि तृष्णा महति रहति देहमें भूरि॥
जो माया अरु जगतकों जानत असत नरेश। सत जानै परमेश्वरहि सो सुख लहत अशेश ॥
यह वर साधन मोक्षको कह्यौ प्रगट अभिराम। नारायण करिकै कृपा भूतन पै अतिमाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाबिरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे बार्ष्णेयाध्यात्मेत्रिचत्वारिंशोऽध्याय:

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

सो साधन है मोक्षको तृष्णाको जो त्याग। कह्यो पूर्ब अध्यायमें यह भीषम बड़भाग ॥

सोरठा ॥

यह सुनिकै भूपाल धर्म धुरन्धर धर्मसुत। तृष्णा त्यागि बिशाल दुर्लभ है भूपतिनकों ॥
यह बिचारि हियमांहि मेधाकों बिस्तारिकै। गंगासुतके पांहि फेरि प्रश्न यह करत भो ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

जनक कौन आचरण करि तजि भोगनकों सर्ब। भयो मोक्षको प्राप्त वर प्रज्ञावान अखर्ब ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

जनक सुभूप मोक्षपद पायो। जौंन आचरणसों मन भायो॥ सुनहु तौंन हम तुम्हैं कहतहैं।
थिरकै चंचल मनहि महत हैं ॥ मोक्षधर्मके परम बिचारै। करण लग्यो नृप जनक सुढारै ॥
प्रथक् प्रथक् वर धर्म सुतिनके। अतितेजस्वी कल्मष बिनके ॥ ऐसे सत आचारय ताके।
गृहमें हुते महामेधाके ॥ तिनके प्रश्न धर्मकों सुनिकै। होत प्रसन्न नहीं नृप गुणिकै ॥
निश्चत धर्मको गुणि हियमाहीं। तामें लागो रहत सदाहीं ॥ कपिला नामा बिप्रा ताको।
पुत्र महा मुनि भूरि प्रभाको ॥ तास पञ्चशिख नाम सुमेधा। अन्तरक्ष जैसो वर बेधा ॥
फिरतो तौन भूमिके माहीं। जात भयो मिथिलाके पाहीं ॥ आसुरि नामा द्विजको नीको।
पहिलो शिष्य हुतो वर श्रीको॥ सहस वर्ष द्विज आसुरि नामा। मनमें कियो ध्यानअभिरामा ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

ब्रह्मज्ञान बिचारसों जुतो युक्त मतिमान । औ तपसों हो युक्त वर वेद उक्त शुभ ठान ॥
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञको जो है भेद अनूप । ताहि भयो जानत सुद्विज आसुरि सुनु वर भूप ॥
सगुण भएते रूप बहु निर्गुण भए न एक । आसुरि ऐसे ब्रह्मको जानत भो सविवेक ॥
तास शिष्य हो पञ्चशिख तेजस्वी धीधाम । कोईही एक ब्राह्मणी कपिला ताको नाम ॥
प्राप्त तास पुत्रत्वको होत भयो सो भूप । कापिलेय ताते भयो ताको नाम अनूप ॥
ज्ञानवती जो बुद्धि है प्राप्त होत भो ताहि । कह्यो मारकण्डेय है मोको यह अवगाहि ॥
बहुधर्मोआचार्य्यजे तिनमेंलखिसमभाव । मिथिलाधिपको पञ्चसिख मुणिकैवर बुधिराव ॥
सबआचार्य्यनकों महत ज्ञानवादके माहि । करत परासत भो सुमुनि जनक भूपके पाहि ॥
तासदरशतेंजनकसब आचार्य्यनकोत्यागि । पञ्चशिखहिको अनुगगुणि होतभयो अनुरागि ॥
जनकनृपहिसोपञ्चशिख मोक्षकहतभोआम । स्वच्छससुभिताको हृदयदक्षपरम अभिराम ॥
मोहविनाशो दुखदहै अरु चल जनक नरेश । कीजै नहिं विश्वासको यामें जानि कलेश ॥
कर्मनको फल चहतहैं मोहहि ते जन सर्व । होय फलाशा मांहिरत धर्महु करत अखर्व ॥
नाश परत परतक्ष है देखि जगतके बीच । है यह मिथ्या जान तउ थारे होय निभीच ॥
आत्माको जो देहतें भिन्न मानिबो जौन । मोह भएते सो नहीं नोको मत है तौन ॥

सोरठा ॥

लोकायत है जौन मानत है ते लोकही । तिनको है बुधिभौन तुमसों जो यह मत कह्यो ॥

दोहा ॥

लोकमांहिजोहैनहीं ताकोकहिबोजौन । अजरअमर जिमि भूपको कह्योवचनश्रुति तौन ॥
भूपति श्रुतिके वैनते अजर अमर नहिं होत । यहिप्रतक्ष बिरोधते मिथ्या श्रुति मति पोत ॥
अनुमानहुमेंहै नृपति दुःख न सुनिए तौन । तहंअनुमानन होतहै व्याप्तिनजहं बुधिभौन ॥
पावकके अनुमानकी व्याप्ति धूम्र है जानु । लखे धूम्र बिन होत नहिं पावकको अनुमानु ॥

सोरठा ॥

है धौ नहीं अभाव गतिको तारा चन्द्रमें । लखि न परत नरराव यातें गुण्यो अभाव है ॥

दोहा ॥

देशान्तरकी प्राप्तिसों कीन्हेंते अनुमान । शशि उड़को गति भावसो जानिपरत मतिमान ॥
देखे बिना पदार्थके होत नहीं अनुमान । अनुमानहुसो परत नहिं जानि अदृश्य सुजान ॥
और एक वृत्तान्तमें कहत भूप तव पांहि । भिन्न देहसों जीव नहिं नास्तिकमतके मांहि ॥
दूषत हैंमैं ताहि यह नास्तिकको मत जौन । आस्तिकके मतसों महत भूप मनीषा भौन ॥
देह भिन्नसों आत्मा जानि परत इमिजौन । जौन देहको तजत है चेष्टा करति न तौन ॥
औरहु एक प्रमाण है यामें विज्ञ नृपाल । सो गुणि तुमको कहत हौं तिनकेबुद्धि विशाल ॥
आत्मा माने देहको जौन देहके कर्म । ते नशि जैहैं देहके संगहि भूप सशर्म ॥
भिन्न देहते आत्मा याते जान्यो जात । आत्मा पावत कर्मसों दुतिय देह विख्यात ॥
नास्तिकहीके भेदमें सौगत है मत तास । खण्डन काजै कहत हौं सो सुनिए बुधिरास ॥
तृष्णा अरु अज्ञान जो अरु जो है नृपकर्म । फेरि देहकी प्राप्तिको सो कारण है पर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोरठा ॥

अरु लोभादिक सर्व तौनहु पुनि तन प्राप्तिके । कारण गुणो अखर्व सोमत ऐसे कहत है ॥

दोहा ॥

कहत चेत अज्ञानको बीज किए जो कर्म । तृष्णाकों जल कहत है भूपति प्रज्ञ सुधर्म ॥
अज्ञानादिक सर्वजे तिनते पुनि पुनि होत । बहु प्रकारकी देहजो ताको भूप उदोत ॥

मोरठा ॥

अज्ञानादिक सर्व नष्ट भएते ज्ञानसो । पावत मोक्ष अखर्व फेरि देह नहिं होत है ॥

दोहा ॥

यह है मत सौगतनको दूषत हौं मैं याहि । बिमलामति बिस्तारिकै तास बीच अवगाहि ॥

मोरठा ॥

सौगत मतके मांहि ज्ञान रहत है एक क्षण । फेरि रहत है नांहि ताते यह दूषन लगत ॥
नष्टहोत जो ज्ञान नशि है अज्ञानादि किमि । अज्ञानादि महान नशें बिना नहिं मोक्ष है ॥
सौगतके मतते न याते ह्वैहै मोक्ष नृप । यह जानो तुम ऐन गुणिकै सूक्षम बुद्धि सों ॥

दोहा ॥

कर्महु क्षणभर रहत है सौगत मतके मांहि । क्षणभरहीजौकर्मतौ दानादिक फलनांहि ॥
बीज देहको कर्म है कह्यो पूर्व यह जौन । सौगत मतमें जानिए याते ब्यर्थहि तौन ॥
नहीं दुःख सुख होत बिन पूरव कर्म समर्थ । याते क्षणभर कर्मकों कहत तौनहु ब्यर्थ ॥
तिनते दुख सुख लहत अब किए पूर्व जे कर्म । करत जौन अब तौन ते आगे लहिहैपर्म ॥
जौन मरत सो कर्मसों फेरि जन्म है लेत । याते धारा कर्मकी जानो बुद्धि निकेत ॥
ज्ञानहु धारा महति है ताको पाए पर्म । जन पबिच ह्वै लहत है मोक्षहि भूप सुकर्म ॥
क्षणिक ज्ञानबादीनकी मोक्षहु भए सुजान । होय जात च्युत है परम बिना निरंतरज्ञान ॥
जैसे फल यज्ञादिको जबलौ रहत अनूप । तबलौ जन स्वर्गादिमें रहत तदनु नहिं भूप ॥
बहुमतकी बहुतर्कना मनमें आवति भूप । होत नहीं है एकको पै निर्द्धार अनूप ॥
जे बिचार जन करत हैं तिनकी मेधा यच । लगति तहांही जाति ह्वै जीरण भूप पबिच ॥
बहु प्रकारके शास्त्र जे ते जनको भूपाल । खैंचे खैंचे फिरत हैं मत मतमांहि बिशाल ॥
जे जे मत ते ते महत बादहिके हैं सर्व । साधन ब्रह्मज्ञानके हैं नहिं प्रज्ञ अखर्व ॥
मत बादहि करते सबै बादी है मरिजात । पावत ब्रह्मज्ञानको कबहु नहीं अवदात ॥
सबको तजिकै जात मरि फिरि आवत है नाहि । मोह किएतौ है कहा पुत्रादिकके माहि ॥
सुमुनि पंचशिखके बचन सुनिए जनक नृपाल । फिरिपूछनको उदितभो लहिकै मोदबिशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेपंचशिखोपाख्यानेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

सुमुनिपञ्च शिखको जनक प्रज्ञावान नितान्त । फेरि मोक्ष संसार को पूछत भो वृत्तान्त ॥

जनकउ वाच ॥

जैसे मूर्छा सुप्तिमें पूरव स्मृती रहैन । मोक्षहु में तिमि रहति नहिं पूर्व स्मृति बुधिऐन ॥
होत सुमुनि अज्ञान सों मूर्छा सुप्ति महान । होत मोक्ष है ज्ञान सों महत कहत मतिमान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनो ज्ञान अज्ञान में तौ भी कहा विशेष । कहौ मोहि जासों हिए रहै न संशय रेष ॥
ज्ञान और अज्ञानमें जौ विशेष नहिं पर्म । । तौ ज्ञानारथ क्लेशजो व्यर्थहि गुणो सुकर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

वैनजनककेए सुने सुमुनि पञ्चशिख प्रश्न । कहत भयो अवगाहि कै यहिविधिसों धर्मज्ञ ॥
निर्णय ज्ञानाज्ञानको कहत तुम्हैं हौं भूप । सुनिये थिरता मांहि करि चञ्चल मनहि अनूप ॥
आरोपित अज्ञान सों आत्मा मांहि अनूप । बुध्यादिक गण होत जब तास अभाव सुभूप ॥
तबअनर्थमिटिजात सब जानत आपुहि आप । निर्विकार आनन्दमय ब्रह्म सुबुद्धि कलाप ॥
बुध्यादिक को होत है नहिं अभाव विज्ञान । याते ज्ञान उपायमें क्लेश न व्यर्थ सुजान ॥
देहादिकहि अनात्मा कहिबे को भूपाल । देहादिक के मूलको प्रगट कहत हौं हाल ॥
पञ्चधातु जे देहमें ते तबलौंहि एकत्र । प्राणी जबलौं जियत है है नहिं संशय अत्र ॥
देहादिकको मूल है पञ्च धातु संघात । जानो इन्हैं अनात्मा जनक प्रश्न अवदात ॥

सोरठा ॥

बुध्यादिक सब जौन तौनहु सर्व अनात्मा । इन माहीं चितिरौन आत्म भावसो दुखद अति ॥

दोहा ॥

जानेइन्हें अनात्मा मैं अरु मम यह भाव । जौन बुद्धिसों कहत हैं रहत सोन नरराव ॥
सांख्यशास्त्र अभिराम जो तास विचार अनूप । सो अति उत्तम अत्र है तुम्हैं कहत सो भूप ॥
करि हौ जो भूपाल तुमतिहि विचारको पर्म । प्राप्त होइगेमोक्षको तौ तुम सुबुधि सुकर्म ॥
जोजन चाहै मुक्तिसो करै त्यागको सर्व । त्याग बिना मोक्षहि चहत सोदुख लहत अखर्व ॥
सर्व कर्म ह्वै जात है त्याग किए ते द्रव्य । होय जात है सर्व व्रत भोग त्याग ते भव्य ॥
औ सुख त्यागे होत है औ तप योग विशाल । सर्व त्यागते होत है सबही ए भूपाल ॥
सर्व त्यागके मार्गको जे जन जानत भूप । ते तापै चढ़ि लहत हैं मानव मोक्ष अनूप ॥
मतिके ऊपर रहत मन ज्ञानेन्द्रियन समेत । इनहूं को मति त्यागमें याते गुणो सचेत ॥
कर्मेन्द्रिय सहबल रहत मनपै चपल विशाल । याते मति के त्यागमें सबको रहत नृपाल ॥
कर्णशब्द अरु चित्त ए हेतु श्रवण में तीन । रूप परश रस गन्धके ज्ञानहुं माहिं प्रवीन ॥
कर्णादिक है कर्णसब अरु शब्दादिक कर्म । अरु कर्त्ताहै चित्तनृप जानो प्रश्न सुधर्म ॥
व्योमाश्रित है श्रोत अरु श्रोताश्रित है रावं । जिह्वाश्रित रसजलाश्रित जिह्वाहैवधराव ॥
ऐसेहिइन्द्रिय औरसब महाभूताश्रित भूप । इन्द्रिय आश्रित विषय है जानो प्रश्न अनूप ॥
इन्द्रिय सब मनमें रहति याते मन आधार । है तिनको महिपाल वर प्रज्ञावान उदार ॥
नृप दशहूं इन्द्रियनके ज्ञान कर्म है जौन । जानत याही हेतु ते है मन धिषणा मौन ॥
द्वादश हौ जो बुद्धि है मनको जानति तौन । इनते जानत भिन्न है आत्महि ज्ञानीजौन ॥
जाग्रत में देखो सुनो विषय जौन है भूप । सुनु सूक्ष्म इन्द्रियन सों तिनको जीवअनूप ॥
युक्त होय कै गुणनसो स्वप्न अवस्था मांहि । देखत है प्रत्यक्ष लौं दक्ष होय कै पांहि ॥
तमसों युक्त सुचित्त जो सब इन्द्रियते स्वच्छ । देत आत्महि भिन्न है करि सुषोप्तिमें दक्ष ॥
भिन्नभए इन्द्रियन सों नृप सुषोप्ति के बीच । होत जौन सुख नाम है तामस तामसनिभोच ॥
जैसेसरम सुषोप्तिमें तैसो मोक्षहु माहिं । पै सुमोक्ष सुख रहत है निति सुषोप्ति सुखनाहिं ॥
मोक्षहि मांहि सुषोप्ति लौं अहंकारादिक सर्व । रहत नहीं भूपालमणि प्रज्ञावान अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतादिक समुदायको नाम क्षेत्र है भूप। जो अधार समुदाय को सो क्षेत्रज्ञ अनूप ॥
मिले सुकर्म प्रभावसों क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ। इनमें सत्य असत्य नृप कहिए किहिको प्रज्ञ ॥
जबलौ कर्म प्रभाव है तबलौही ए सर्ब। रहत फेरि नहिं कहत हैं जे हैं प्रज्ञ अखर्ब ॥
जिमि नदिका नद सिन्धुमें तजत नाम अरु रूप। प्राप्त भएते ब्रह्ममें तैसिहि ए सब भूप ॥
मोक्ष मनीषाको नृपति जानत है जन जौन। आत्माको सो होत है प्रापत सुनु क्षितिरौन ॥
लगत कमलके पत्रमें जैसे नहिं कीलाल। मोक्षमती तिमि कर्मफलसो नहिं लिप्त नृपाल ॥
लखत नहीं तजिजात जिमि निर्मोकहि सुभुजंग। तिमि विमुक्त सो देत है दुःखहि छोड़िउतंग ॥
सुमुनि पञ्चशिखके सुने ए भाषण अभिराम। जनक भूप भूमें चरत भयो मोदसों माम ॥

भीष्मउ वाच ॥

यह जो निश्चय मोक्षको पढ़िहै ताको जौन। उपद्रवन सों छूटि कै लहि है आनंद तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्य पुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारत दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे जनकपंचशिख संबादे पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

कहा किए सुख होत अरु कहा किए दुख होत। कहा किए निर्भय फिरै लोकमांहि मतिपोत ॥

भीष्मउवाच ॥

निग्रह जो इन्द्रियनको ताको है दम नाम। तास प्रशंसा करत है बेदवान बुधिधाम ॥
दमको साधन सब करै ब्राह्मण करै बिशेश। अदमवानसों होतिहै सिद्धि न क्रिया नरेश ॥
क्रिया सत्य अरु तपस ए दमहीमें है सर्ब। दमहिं बढ़ावत तेजकों दमहिं पबित्र अखर्ब ॥
है अपाप निर्भय दमी लहत ब्रह्मपद पर्म। जगहूमें जबलौं रहत तबलौं रहत सशर्म ॥
प्राप्त होत नहिं तेजकों क्रोधी है जन जौन। जनकों भय अदमीनते महत होत बुधिभौन ॥
तास नाम क्रव्याद जो कच्चे मांसहि खात। तिहिते भय जिमि होत तिमि अदमीते बिख्यात ॥
मेटनको अदमीनके उपद्रवहि लोकेश। बिरचत भो भूपालकों गुणिकै बर अचलेश ॥
आश्रमवारे धर्मते होत जौन फल पर्म। ताते अधिकी होत फल दमते भूप सुकर्म ॥
जिनके दमको उदय है तिनको चिन्ह अनूप। मतिसो मैं अवगाहिकै तुम्हैं कहत हौं भूप ॥
गर्व अभार अदीनता औ सन्तोष महान। आस्तिकबुद्धि अनूप औ मृदुता अरुठ सुजान ॥
औ तजिबो अभिमानता गुरु पूजा अभिराम। अनसूया अरु बहुदया भूतनमें बुधिधाम ॥
स्तुति निन्दा छोड़िबो अनृत बाद बहुबात। रागादिकको बार्त्ता तिनको तजिबो तात ॥
सर्ब कामना छोड़िबो औ करिबे नहिं बैर। शील धरण सुब्रत करण औ तजिबो सबघैर ॥
औ तजिबो पैशुन्यको गुणिकै दोष महान। ए लक्षण दम वानके हैं हे भूप सुजान ॥
लोकमांहि सतकारकों प्राप्त होय दमवान। प्राप्त होत देहान्तमें स्वर्गहि समुद महान ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

हितहि गुणै सब भूतनवारे। धरिकै सरल सुभाव सुढारे ॥ काहू जनसों द्वेष न राखै।
मधुर बचन सबही सों भाखै ॥ देत त्रास भूतनकों नाहीं। आपुहु डरत न तिनके माहीं ॥
सबही भूत देखि दमवानै। धारि प्रेमको परम महानै ॥ करत प्रणाम आयकै पाहीं।
चहुघां खरे होय नगिचाहीं ॥ महत अर्थमें हर्ष न पावै। औ अनर्थ में शोच न लावै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनु भूपाल दमी है मोई। तासम प्रज्ञावत नहिं कोई ॥ अनसूया अरु क्षमा महानी। औ सन्तोष शान्ति प्रिय बानी ॥ सप्तदान अरु इनको जे हैं। दुष्ट मनुज पावत नहिं ते है ॥

दोहा ॥

बिनाकाल कोउ मरत नहिं यहगुणि कैहियबाच। दमी लोकमें फिरत है है कै परम निभीच ॥

स्वस्तिश्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीचन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुननाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे दान्तकथनंषष्ठचत्वारिंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ मोरठा ॥

बिना अहिंसा धर्म भूतगणनकों अभयता। जातिन दई सुकर्म सुनहु पितामह प्रज्ञ बर ॥ कीजै देवत अर्थ पशुको वध मखमांहि नृप। कहत सुवेद समर्थ औ सब स्मृति कहति है ॥ यातेमो सन्देह मेरे मनमें महत अति। कहो तात बुधिगेह दोऊ किहि विधिसों सधै ॥

भीष्मउवाच ॥

वेदउक्त व्रत जौन तासों जे जन युत नहीं। खाए आमिष तौन महत दोषकों लहत हैं ॥

दोहा ॥

वेदउक्त व्रतकों गहे जे जन प्रज्ञ अनूप। खाये आमिष तौनहूं गिरत स्वर्गते भूप ॥ परपीड़ा कर यज्ञ जो याते निन्दित तात। तनपीड़ा कर जौन है साऊ निन्दित ख्यात ॥

आभीर छन्द ॥

निवृति धर्ममें जौन। तत्पर है बुधिभौन ॥ तिनको यह वृत्तान्त। कहो तोहि चिति कान्त ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

चान्द्रायण आदिक उपवास। तपन कहत तिनको बुधिरास ॥ केते जन कहु नृप शिरमौर। यहही तप कै है तप और ॥ भीष्म बाच ॥ जाते देह जाय है क्षीण। तिनहकों तप मति गुणो प्रवीण ॥ मोक्षारथ साधन है जौन। सकत न होय निबलसो तौन ॥

रामगीती छन्द ॥

नृप त्याग अरु जो नम्रता है तौन ही तप पर्म। बर करत जो यहि तपहि सोई सुमति मान सुधर्म ॥ है लहत सोई मोक्ष मार्गहि चाससों है दूरि। यह गुणत है जन लोकमाहीं मनीषाके भूरि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीचन्दीजनकाशीवासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायामहाभारतदर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे सप्तचत्वारिंशोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ मोरठा ॥

लोक मांहि जे कर्म ते आपुहिसों होत हैं। कै है कर्ता पर्म इनको पुरुष सुजान बर ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

इहि प्रसंगमें कहत हौं एक इतिहास अनूप। सुरपति अरु प्रह्लादको प्रश्नोत्तर है भूप ॥ परम भक्त प्रह्लाद जो परमेश्वर को प्रज्ञ। इन्द्र ताहि पूछत भयो वह सुप्रश्न धर्मज्ञ ॥ समदरशी प्रह्लादको बुद्धि जानिबे काज। नम्र होयकै जाय तट पाणिजोरि नरराज ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

थोरेहि गुणसों जन जगमाहीं। होय प्रतिष्ठित रहत सदाहीं ॥ सब गुण हैं थिर तुम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नीके। हैं जेने बर माहिं महीके ॥ पै शिसुलौं तुम रहत सदा हौ। मानादिकहि बिचारत ना हौ ॥ औ तुम हौ बर आत्मज्ञानी। याते पूछत सुखद सुठानी ॥ साधनता तुम कहा बिचारी। अर्थ ज्ञानके आनंद कारी ॥ परी फांसि तव ग्रीवामाहीं। छुटे गेहते तब थिय नाहीं ॥ तबहू शोच करत नहिं मनमें। निशि बासर नविच एको चणमें ॥ कौन हेतु याको है कहिए। भो संशय ताको तुम दहिए ॥ धीरज ताको धरिकै भारी। कै मनिलाभ भए सुख कारी ॥ यह सुनिकै सुरपतिको बानी। बोलत भो प्रह्लाद सुज्ञानी ॥ प्रह्लाद उवाच ॥ माया परम प्रकृति को कारण। कहत तुम्हें हैं करि निर्धारण ॥ आत्महि भिन्न प्रकृति ते जानै। जे जन ते सुख दुख नहिं आनै ॥ आत्मा है बर नित्यानन्दी। कबहूं होत नहीं है द्वन्दी ॥ जानत है नहिं यहि दृतांतहि। गुणत आत्मा माहिं नितांतहि ॥ धर्म प्रकृतिको सुरपति जो जन। प्राप्त होत अभिमानहि सो जन ॥ कहौ आपु जो जड़ है माया। चलत न बिन आत्मा का छाया। प्रकृति होति है किमि तौ सुनिए। कहत तुम्हें हैं सुरपति गुणिए ॥

मौनी छन्द ॥

होत जौन है तौन कहावत भाव। होत तौन आपुहिसों सुनु सुरराव ॥ काहू के कीन्हें मां ते न हं होत। जानत ते जन जिनके मतिको द्योत ॥ दुग्ध होत आपुहि सों गोस्तन बीच। जैसे यत्न बिनाही सुरप निभीच ॥

दोहा

अपनेहि होति सुभावसों माया प्रकृति हमेश। आत्माके पुरुषार्थसों होति नहीं खगेश ॥
मायाके परभाव सों होत आपुही सर्व। करत न भोगत आत्मा नित्यानन्द अखर्व ॥

सोरठा ॥

आत्माको कर्तार भले बुरेको गुणत जो। ताकी बुद्धि अपार दोषवती मैं गुणत हैं ॥

दोहा ॥

आत्माको कर्त्ता गुणे है विरोध सुरराज। सो मैं तुमसों कहत हैं तनिकै बुद्धि दराज ॥
आत्मा कर्ता होय जो तौ ताके सब काज। सिद्धि भएचहिए बिघनरहित सुनो सुरराज ॥
प्राप्त होत अनिष्ट है किए इष्ट व्यापार। आत्मा को पुरुषार्थ सो है तहं कहा सुढार ॥

आभीरछन्द ॥

ताते नहिं कर्तार। आत्मा बुद्धि अगार ॥ आपुहि सों सब होत। अच न संशय द्योत ॥

दोहा ॥

जौ आपुहिसों होत है सुख दुःखादिक सर्व। तौ कारण अभिमानको है का सुनो अखर्व ॥
आपुहिसों सबहोत है यहमेरे सिद्धांत। आत्मज्ञानहूं औ तिमिहिमोक्षहू सुखद नितांत ॥

सोरठा ॥

भले बुरे जे कर्म सुख दुखादि के हेतु ते। जौ यह कहौ सधर्म तौ निषेध इनको सुनो ॥

दोहा ॥

सुख दुःखादिहिदेतहै कर्मप्रकाशि सुरेश। होत प्रकृत तौ आपुही जानो निजुहि बिशेश ॥
काहू काहूंहि देत नहिं सुख दुःखादिक सर्व। आपुहिसों सबहोतहै यह सिद्धांत अखर्व ॥
आपुहिकर्त्तागुणतजो तौनकरत अभिमान। आपुहि कर्त्ता गुणतनहिं सोनकरत मविमान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट ताहि मैं सर्बकी जानत हौं सुरराय। याते शोच न करत हौं दुःख समय को पाय ॥

सोरठा ॥

अंतवान है जौन तास शोच क्यों कीजिए। हिय बर मतिको भौन तामें यह गुणतै रहौ ॥
ममता औ अहङ्कार औ आशा मोमें नहीं। औ जे बन्ध अपार तिनसबहिन सों मुक्त हौं ॥

दोहा ॥

जाते भूतन को प्रभव अरु लय जाके माहि। ऐसो जो परब्रह्म है ताको गुणत सदाहि ॥
काहूमें द्वेषन करत औ काहू में प्रीति। शत्रु मित्र नहिं गुणत हौं काहूहियहम रीति ॥
स्वर्गादिक की कामना मैं राखत हौं नाहिं। तत्पर आत्मज्ञान में मैं हौं रहत सदाहिं ॥

शक्रउवाच ॥ सोरठा ॥

जिहि उपायसों होय शांतिप्राप्तिअरु बुद्धि तब। कृपादृष्टि जोय कहो मोहि प्रह्लाद तुम ॥

प्रहलादउवाच ॥ दोहा

सेवा किए बड़ेन को गहिकै कोमल भाव। अप्रमाद तको धरे मनमें बर सुरराव ॥
औ जीते इन्द्रिय सकल औ मति किए अमन्द। ज्ञान पायके लहत है मानवमोक्ष अद्वन्द ॥

तामरछन्द ॥

सुरराज ए सुनि बैन। भरि हर्षसों हिय ऐन ॥
अति भो सराहत ताहि। हियमांह सो अवगाहि ॥

दोहा ॥

पूजि इन्द्र प्रह्लाद को आज्ञालेय सशर्म। जात भयो निज धाम को भूपति सुनहु सुकर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेइन्द्रप्रहलादसंवादेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

निग्रह सब इन्द्रियनकों त्याग गर्वको आपु। कह्यौ पूर्व अवगाहिकै मोकों बुद्धि कलापु ॥
चञ्चल है अति सम्पदा तास प्राप्ति अरु नाश। ताम कबहु होय नहिं हर्ष दुःख अरु त्रास ॥
जिहि मतिसों सोम तकहौ औजिहि मतिकोंपाय। लहिविपदाधरिवीर्य्यकोंमाहिमेंरहैनराय ॥

भीष्मउवाच ॥

कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसंगमें भूप। तामें है सम्वाद बलि अरु वासवको भूप ॥

रामगोती छन्द ॥

सुरराज हनि सब असुरगणकों पितामह पै जाय। इमि भयो पूछत कहां है बलि देहु मोहि बताय ॥ नहिं घटत है कबहु न जाके हरसों धन देत। सो गयो कित बलि कहौ हमको कृपा महतनिकेत ॥ हौ बनो आपुहि वायु आपुहि वरुण आपुहि भान। शितभानु आपुहि अग्नि आपुहि आपु जल बलवान ॥ तजि आजहौ सो जतो वर्तत समय लहिकै नीर। लखि परत है नहिं गयो बलि कित महत अति बलवीर ॥ ब्रह्मोवाच ॥ याहि समय मांहो सोध बलिको उचित तुमकों नाहिं। हम देत बलिहि बताय मिथ्या कहै किमि तव पाहि ॥ हय वृषभ उष्टर खरगणमांहो श्रेष्ठ देखो जाहि। तुम जानियो बल ताहि तुमको कहत हम अवगाहि ॥ शक्रउवाच ॥ बलि मिलै जो कछु शून्यथलमें बधा की नहिं ताहि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम कहौ श्रीलोकेश हमकों सुमतिमों अवगाहि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ बलि योग्य बधके है नहीं बधियो न याते आप। जौ मिलै तासों पूछियो तौ परै नीत कलाप ॥ ए बैन सुनि लोकेश के अमरेश गजहि भगाय। चढ़ि चलो ढूंढ़न बलिहि भूमें बली बज्र उठाय ॥ खररूपकों धरि खरो है बलि शून्यथलके मांहि। आतश्रेष्ठ लखि बलि जानि ताकों जात मो तिहि पांह ॥ शक्रउवाच ॥ खरयोनि जो अति अधम ताकों प्राप्त तू बलि हाय। हियमांहि शोचहि करत है को नाहिं मोतन जोय ॥ बश शत्रुके है परे कबहुन परो अब तू आय। गो रहित ह्वैकै सबहि तुममों गयो वीर्य्य नशाय ॥ बहु दैत्य तवसंग रहत है अरु बहुत बाहन पर्म। सबलोकमांही भरे है तू निज प्रताप सधर्म ॥ तव रहत आज्ञामांहि है सब दैत्य जोरे पानि। तव राज्यमाहीं बिना जोतें भूमिमांहि महानि ॥ बहु होत है बरअन्न ऐसे भाग्यवान अनूप। तू हुतो अब यह योनि गर्द्दभकी लही दुखरूप ॥ गुणि ताहि तू हियमांहि शोचहि करत है को नाहिं। जब देत है ज्ञातीनकों धन महत सागर पाहिं ॥ तव हुतो तेरो मनस कैसो कहौ हमकों तब। अरु कहो अब खरयोनि पाये है सु कैसो अब ॥ देवांगना बहु नाचतीही निकट तव बहुबर्ष। बर रत्नभूषित हुतो तोपर छत्र अति उत्कर्ष ॥ तव अग्र गावत रहे है षटसहस बर गन्धर्व। तव दापतें हो होत जय जय ध्यान परम अखर्व ॥ मखमांहि तेरे गडो हो अतिविमल कञ्चन जूप। दश सहस मखमें दईही बर गऊ परम अनूप ॥ बरनापमें छत्तीस अंगुल दण्ड खड्गाकार। है नाम सन्या तास सो बलि महीमांहि उदार ॥ जहं गिरै अति बलवानके फेके सुबलसो पर्म। यत्न हात तहं लौ यज्ञको है कहत प्रज्ञ सुकर्म ॥ सब भूमिमें तुम यज्ञके यत्न किए है जन खत्त। फिकवाय सन्या बली जनसों भलो विधिसों दत्त ॥ तव हुतो कैसो मनस तव बलि दैत्यपति बलवान। अब कहो कैसो अब है मन भए खर मतिमान ॥ नहिं छत्र चामर परत लखि अरु दई विधिकी माल। अरु हेम भाजन कहां है तव मणिनजडित विशाल ॥ बालिरुवाच ॥ है गुप्त मम छत्रादि तिनकों तू सुपूछत मोहि। जब सुखद ऐहै समय मम तब परैंगे लखि तोहि ॥ यहि समय में यहि भांति पूछब उचित तोकों नाहि। गजराजपै चढ़ि आयकै खररूप मैं तिहि पाहि ॥ नहिं दुःखमाहो करत शोचाह रिद्धिमें नहिं हर्ष। जे रहत हैं जन निरत निशि दिन ज्ञानमें उत्कर्ष ॥

दोहा ॥

मो ऐसो जब होय गो तू है सुनु सुरराज। कहि सकिहै इमि नहिं वचन तब करि गर्व दराज ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे बलिवासवसंवादे एकोनपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ चण्डाकुलक छन्द ॥

फेरि प्रश्न पूछत भयो बलिसों यह सुरराज। कीबे बागविलास बर तनिकै बुद्धिदराज ॥

शक्रउवाच ॥ तोमरछन्द ॥

तव संगमें बहु अश्व। जवमांहि जे प्रषदश्व ॥ सम है सुचढ़त अनूप। बल वान बीर सुरूप ॥ हमको न तू मनवीच। गुणतो हुतो सुनिभीच ॥ सबलोकमांहि प्रताप। भरि देतहौ सु अमाप ॥ अब तू दशायह पाय। दुखदा महा बररोय ॥ जियमांहि शोच महान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति कर्त कौन सुजान ॥ बलिरुवाच ॥ हम अन्ततव गुणि सर्व । नहिं करत शोच अखर्व ॥
मतिमान हैं जन जौन । नहिं करत क्लेशहि तौन ॥

दोहा ॥

जानत जे न अनित्यता जगवारी सुरपाल । मूरखता सों लहत हैं ते जन क्लेश विशाल ॥

मधुभार छन्द ॥

जन सुमति पाय । किल्विष नशाय ॥ लहि सत्व पर्म । है लहत शर्म ॥ गुण सत्व नांहि ।
जिन जननमांहि ॥ ते जन्म लेत । फिरि फिरि अचेत ॥ हम कामनान । कौनहुं सुजान ॥ हिय
माहि कर्त । सुखसहित चर्त ॥ अरु रागद्वेश । करत न सुरेश ॥ हमअन्तत पाहि । तबकहतनाहि ॥

दोहा ॥

मारत मरो मरेहि है मारत जो अरु मर्त । जानत आपुहिमरे हम यह सत्वत उच्चर्त ॥
मारि जीतिकै अरिनकों जौन करत है गर्व । सो कर्त्ता नहिं औरही कर्ता जानु अखर्व ॥
प्रभव नाश जो जगतको मन कर्त्ता है तास । मनको कर्त्ता औरही है कोऊ बुधिरास ॥
पञ्चभूतमय सर्व है है नहिं नेको भेद । यह गुणिकै नहिं कीजिए जियके मांही खेद ॥
काल सबहिकों करत है अपने वशके मांहि । जानत यह वृत्तान्त जे करत शोच ते नांहि ॥
कालसिन्धु यह जौन है ताके बारण पार । औ द्वीपहु तामें नहीं वासव प्रबल उदार ॥
महतहि करत विचार है पै पावत नहिं अन्त । काल समुद्र विशालको सुनिए वर सुरकन्त ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

काल ग्रसै भूतनकों नाहीं । मम देखत जौ तौ मनमाहीं ॥ करौं शोच मैं सुरपति भारी ।
कह्यो बुद्धिसों सुगुणि सुढारी ॥ शूनो ग्रहमें गर्द्दभ ह्वैकै । मैंहौं खरो खतनुको खैकै ॥ तहां
आय तू निन्दा मेरी । धरि गरूरता करत घनेरी ॥ जौ अपने मनमें मैं आनो । रूप अने-
कन बिधिके तानो ॥ जिन्हें विलोकि इन्द्र तू आनै । साध्यसमनके मांहि महानै ॥ तू तो
अन्तत पराक्रम गावै । काल स्वभाव न मनमें लावै ॥ करत करावत है सबकालै । और नहीं
सिद्धान्त विशालै ॥ वासव मैं जब क्रोध कियो हो । कांप्यो सबको तब सुहियो हो ॥ यातें
जानत यहि वृत्तान्तहि । सबल देखि सब डरत नितान्तहि ॥ इन्द्र तुहुं करु इहि सुविचारै ।
मनमें ल्याउ न गर्व अपारै ॥ है आधीन आपने नाही । करिबो भूति प्रकाश सदाही ॥ वय
कुमारमेंही मति जैसी । अबहुं है वासव तब तैसी ॥ ज्ञानवती जो बुद्धि महानी । अबलौं
मनमें ताहि न आनी ॥

दोहा ॥

सुर नर राक्षस उरग अरु पितर तिमिहि गन्धर्व । जानत है तू हे सबै ममवशमांहिअखर्व ॥
देखि सकत हे जे नहीं मम ऐश्वर्य्य महान । जिहिदिशिमें मैं रहत हौं तिहिदिशिको बलवान ॥
करते हुते प्रणाम सब ऐहो हो मैं वीर । तिहिकों गुणिकै शोच मैं करत न हौं रणधीर ॥
होय प्रतापी परम जो दर्शनीय कुलवान । होय जीविका तास जो दुखसों परम महान ॥
ऐसोही भवितव्य है याको यह मनमांहि । गुणिए ताकों देखिकै वासव औरै नांहि ॥
होय नीच कुलवान अरु मूढ़ कुरूप महान । रहै महत सुख सहितजो भृत्यन सहित सुजान ॥
ताहि निरखिकै यह गुणै अपने मनके बीच । ऐसोही भवितव्य है याको इन्द्र निभीच ॥
मैं भो गर्द्दभ तू चढ़ो मैगल ऊपर भव्य । ताते हे मति जानु तू जो मम तव करतव्य ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहि दशाहि लहि समयकों प्राप्त होत हैं सर्व । यातें तू सुरराज मति करु अभिमान अखर्व ॥
सदा दरिद्री रहत नहिं औ न सदा धनवान । समय पाय सब होत हैं निजुहि जानु पबिमान ॥

रामगीती छन्द ॥

लहि बज्र करमें चढ़ो गजपर मढ़ो रुजसों भूरि । मन जौन आवत कहत सोई महत मुदसों पूरि ॥ हम सुनत हैं ते बचन तेरे समय के परभाव । नहिं सुष्टिकामों मारितोकों करत नतसुर राव ॥ नहिं समय विक्रम करण को यहि हेतु ते मैं शान्ति । धरि खरो गर्द्दभ होय कै हौं गोय अपनी कान्ति ॥ सुर असुरसों मैं पूज्य हौं बरबल प्रतापी दच्छ । अतिधाक मेरी रही धावति चहूं वोर प्रतच्छ ॥ जौ प्राप्त मोकों भयो है यह महत कुत्सित काल । तौ गुणत हैं किहिकों न ह्वै है प्राप्त यह सुरपाल ॥ तुम बारहौ आदित्य जे हौ बली बर्चसधाम । तिन सबनको मैं ऊतो एकहि धरे तेजस नाम ॥ हो मैंहिं कर्षत मैंहिं बर्षत जलहि हे जलदेश । अरु मैंहिं करत प्रकाश हौ तिहुलोक मांहि अशेश ॥ हौ लेत मैंहीं देत मैंहीं ऊतो बलसोंभूरि । अरु लोककी हौ कर्षत रच्छा मैंहिं दुख करि दूरि ॥ अरु मैंहिं हौ त्रयलोक कोपित मो समान न और । मैं गुणत काहूकों नहीं हौ सुनो सुरशिरमौर ॥ मैं ऊतो ऐसो गयो सो यहि समयमें मम सर्व । कछु परत देखि न मोहि लहि यह दुखद काल अखर्व ॥ है तू न कर्ता औ न मैं हौ समय लहि सुरपाल । जन दशा सुखदा दुःखदाकों प्राप्त होत विशाल ॥

दोहा ॥

निशि बासर अरु मास ऋतु वर्ष जास हैं अंग । अरु माया आधार है ताको सुनु बर खंग ॥
ऐसो जो है काल सो दौरत जो है तास । पीछे दौरत औ खरो रहत खरो तिहि पास ॥
मुहूर्त्तादिक नाम सब कालहिके हैं दच्छ । ताहीके बशमांहि यह जो लखि परत प्रतच्छ ॥

सोरठा ॥

पूर्व कालके मांहि होय गए बहु सहस हैं । जानो मिथ्या नांहि तो सम इन्द्र महाबली ॥

दोहा ॥

अन्तकाल जब आय है तेरो हे सुरपाल । तब तूहू रहि है नहीं गुनु सिद्धान्त बिशाल ॥

आभीर छन्द ॥

ग्रासि लेत है काल । सबको सुनु सुरपाल ॥ यातें तू अभिमान । होमें करु न महान ॥

दोहा ॥

राजश्री को प्राप्त ह्वै तू जानत मनमाहि । रहि है इमिही सर्वदा सो यह रहिहै नाहि ॥
तजि सहसन सुरपतिनकों आई मेरे पास । राजश्री सुरराज यह कीन्हें परम प्रकास ॥
मोहूंकों अब छोड़िकै गई तिहारे पाहि । राजश्री यह चंचला ऐसी गुणु मनमाहि ॥

सोरठा ॥

मति कहु बचन सगर्व तोहूकों यह छोड़िकै । राजश्रीय अखर्व जै है कौनहु कालमें ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे बलिवासवसंवादे पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

श्रीकरिकै जो दर्प भो तास समनके काज । कहत एक इतिहास हौं तुमसों हम नर राज ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीको अरु इन्द्रको तामें है सम्वाद । सुनहु तौन भूपाल वर तजिकै सर्व प्रमाद ॥
निकसति वलिकी देहतें लक्ष्मी भई सुभूप । तेजमयी अति चञ्चला परमा भरा अनूप ॥

संजुता छन्द ॥

सुरराज ताकहं देखिकै । हियमांहि विस्मय लेखिकै ॥
वलिको सु पूछतभो बली । यहिभांतिसों मतिमों भली ॥

शक्रउवाच ॥ दोहा ॥

तव तनुते यह जो कढ़ी मढ़ी प्रभासों स्वच्छ । कहौ कौन है मोहि तुम वलि सुदैत्यपति दच्छ ॥

तोमरछन्द ॥ वलिरुवाच ॥

हम याहि जानत हैं न । मम सत्य मानहु वैन ॥
तुम इन्द्र पूछहु याहि । मन होय तौ नहिं नाहि ॥

शक्रउवाच ॥ उकछाछन्द ॥

वलिके तनते आम । कढ़ी भामई माम ॥ मोदिग आवति नारि । कहु तू कौन सुढारि ॥

अरिलछन्द ॥ श्रीरुवाच ॥

जानत हौ नहिं मोहि विरोचन । औ नहिं जानत वलि वैरोचन ॥
है एक नाम दुःसहा मम वर । दूजो नाम विधत्सा पविधर ॥

दोहा ॥

तीजो लक्ष्मी नाम है हैं ऐसे वहु और । जानत मोकों सुरहु नहिं औ तुहु सुरशिरमौर ॥

शक्रउवाच ॥

वलिहि तजनको हेतु है कहा रमा कहु मोहि । आवनकों मम पासकी वलि ऊपरतू कोहि ॥

श्रीरुवाच ॥

आयो काल अनिष्ठ है वलिको याते याहि । छोड़ति हौं सुरपाल सुनु और कछु न अवगाहि ॥

शक्रउवाच ॥

वलिकोतूजिहिविधितज्यौतजियोतिमिमतिमोहि।जिहिउपायसोंनहितजैसोकहुपूछततोहि ॥

रामगीतीछन्द ॥ श्रीरुवाच ॥

वर सत्यमें अरु दान में अरु तपस्यामें पर्म । व्रत औ पराक्रम धर्म में हौ रहति शक्र सशर्म ॥ हौ पूर्व ब्राह्मणभक्त अरुवर सत्यवादी स्वच्छ । वहु यज्ञ करिकै करत पूजा हुतो मेरी दच्छ ॥ अब ब्राह्मणनकी करत निन्दा धारिकै वहुगर्व । यह परमदुःखसु लोकजन को लग्यो देन अखर्व ॥ यहि हेतु ते तजि वलिहि आई पास तव अमरेश । मैं रहौंगी जौ राखि है तजिकै प्रमाद हमेश ॥ शक्रउवाच ॥ नहिं कोऊ ऐसो लक्ष्मी सुनु सर्व भूतनमाहि । जो एक राखै तोहि मैंहौं कहत सति तव पाहि ॥ श्रीरुवाच ॥ सुनु कहत है तू सत्य हे सुरपाल विच्छ विशाल । नहिं शकत कोऊ राखि मोकों एक कौनेहु काल ॥ शक्रउवाच ॥ तू रहैजिहि विधि पास मेरे मोहि कहु विधि तौन । मैं करौं जाते मोहि तजि तू करै अनत न गौन ॥

श्रीरुवाच दोहा ॥

मोको राखै सुरप जौ करिकै चारि विभाग । तौ तव पास रहौं सदा नांउ कहुं न वड़भाग ॥

शक्रउवाच ॥

तव विभाग मैं शक्ति भरि करिहौं देवि सुढारि । तास उलंघ न कीजियो मैंजो कहौंविचारि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महति चराचर धारिणी भूमि एक तव पाद । धारण करिहैं कहत हैं मैं निजु छोड़ि प्रमाद ॥

श्रीरुवाच ॥

राख्यो भूमें पाव मैं एक दुतियकों ठौर । गुणिकै तू कछु मोहि अब सुनु बर सुरशिरमौर ॥

शक्रउवाच ॥

दुतिय पाव तव धारि है जल यातें जलमाहि । धारण करु हे लक्ष्मी करु विचार तू नाहि ॥

श्रीरुवाच ॥

दुतिय पाव जलबीच मैं राख्यो हे सुरराव । और ठौर कछु मोहि जहं राखौं तीजो पाव ॥

शक्रउवाच ॥

देव यज्ञ अरु वेद ए रहत अग्नि के बीच । याते चौथो पाव तव धारण करी निभीच ॥

श्रीलक्ष्मीरुवाच ॥

अग्निमांहि पद तीसरो राख्यों मैं सुरपाल । अब तुम चौथे पदहि मम ठौर बतावहु हाल ॥

शक्रउवाच ॥

विप्र जितेन्द्रिय प्रज्ञ बर सत्यमान हैं जौन । लक्ष्मी चौथो पाव तव धारण करिहैं तौन ॥

श्रीलक्ष्मीरुवाच ॥

राख्यो चौथो पाव मैं विप्रनमाहीं पर्म । जानहु चारिहु ठौर मम चारिहु पाव सशर्म ॥
वित्त तीर्थ अरु यज्ञ अरु विद्या ए मम पाव । चारि चारिहू ठौरमैं राखे हैं सुरराव ॥

शक्रउवाच ॥

तेरे चारिहु पावकों जो जन हनि है ताहि । हनि हौं मैं सुनु लक्ष्मी परमअघी अवगाहि ॥

भीष्मउवाच ॥

दैत्यनको राजा तदनु बोलत भो अचलेश । सुरपतिसों यहि भांतिसों धीरज मान विशेश ॥

बलिरुवाच ॥

वैवस्वतमनुके सुनो अन्तमाहि सुरपाल । ह्वै है जब सावर्णि मनु तब फिरि युद्ध कराल ॥
सुर असुरनको होयगो जीतैंगे हम तोहि । भानुस्थिति मध्यान्हमें ह्वै है जबयत जोहि ॥

शक्रउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

मोहि बिरञ्चि मनै करि दीन्हो । ताते मैं तव बध नहिं कीन्हो ॥
नातो तोहि बज्रसों हनतो । प्रबल प्रताप आपनो तनतो ॥

दोहा ॥

छोड़ि दयो मैं तोहि बलि शीघ्र यहांते गच्छ । भानुस्थिति मध्यान्हमें ह्वै है कबौ न स्वच्छ ॥
आज्ञाते लोकेशकी फिरत रहत है भानु । लोकन माहि प्रकाश बर करत महा बलवानु ॥
उत्तर औ दक्षिण अयन सूरयके हैं दोय । तिनमें तत्पर रहत है दैत्यराज बलि जोय ॥

भीष्मउवाच ॥

बलि दक्षिणदिशि जात भो वासवके सुनि बैन । बोलो कछु नहिं बासवहु उत्तर गो बुधिऐन ॥
बलिकों तजिकै लक्ष्मी गई इन्द्रके पास । याते कहि लक्ष्मी नहीं कीजै गर्व प्रकाश ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे इन्द्रस्यश्रीप्राप्तिर्नामैकपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

गर्व न कीजै लक्ष्मी को लहिकै भूपाल । कह्यो पूर्व अवगाहि मैं अब बरबिक्ष बिशाल ॥
मैं हौं कहत अशोचमें एक इतिहास अनूप । तामाहीं संवाद है सुरप नमुचिको भूप ॥

सोरठा ॥

लक्ष्मीसो ह्वै हीन नमुचिदनुज बैठो हुतो । तासों बली प्रवीन पूछत भो सुरराज इमि ॥
भए रमासोंहीन औ च्युत भए सथानतें । सोच करत है कौन नमुचिदनुज हमकों कहो ॥

नमुचिरुवाच ॥ अरिल छन्द ॥

शोक आयकै होत प्राप्त जब । शत्रु महत अति लहत हर्ष तब ॥
केहूं तास होत नहिं वारण । लहै सहायहु आनंद कारण ॥

दोहा ॥

तातें शोच न करत हौं सुनहुं प्रबल सुरराज । अन्तवान मैं गुणत हौं यह सब जगत समाज ॥
नशति रमा सन्तापतें तिमिहि नशत है रूप । वयहु नशति सन्तापते औ बरधर्म अनूप ॥
याते आपत कालमें कीजै नहिं सन्ताप । यहो जायगो नष्ट ह्वै गुणि यह शक्र सदाप ॥

अरिल छन्द ॥

जब जन हर्षमांहि मन राखत । सिद्धि होत तब जो अभिलाषत ॥ शक्र अब मति संशय आनहुं । है सिद्धान्त शास्त्रको मानहुं ॥ आज्ञा करत जौन परमेश्वर । हम हैं करत सोय खर्गेश्वर ॥ परमेश्वरही आज्ञाकारक । है यह बर सिद्धान्त विचारक ॥ शुभ औ अशुभहि जानत है जन । पै नहिं करत लाय शुभमें मन ॥ करत रहत है निशिदिन पापहि । गुणत तास नहिं भयके यापहि ॥ याते गुणिए सुनो सचीपति । महति मनीषा सूक्ष्ममों अति ॥ जन पावत जैसो प्रभु शासन । सोई करत यह निज संभाषन ॥ रहत तहांही जहंप्रभु राखत । रहत न तहां जहां अभिलाषत ॥ करत हिएमें यह गुणि शोचन । सति जानो सुरदुःख बिमोचन ॥

दोहा ॥

जो जो मम भवितव्य है सो सो प्रापत आय । भयो गुणत यह जौन नहिं शोच करत सुरराय ॥
आवत जे सुख दुःख हैं समय पाय सुरराय । तिनकों सब संसारमें सकत न कोय छुड़ाय ॥

जयकरीछन्द ॥

नर अरु अमरादिक सुरपाल । कोन लहत है आपत काल ॥ यह गुणि सदसद विद हैं जौन । होत भीतिकों प्राप्त न तौन ॥ करत विज्ञजन हैं नहिं कोह । औन करत काहूमें छोह ॥ कबहूशोच न कबहू हर्ष । करत नहीं सुरपति उत्कर्ष ॥ धर्मतत्वको करि सुविचार । करत जौन जन बुद्धि अगार ॥ धर्मधुरन्धर सोय सुरेश । धर्म प्रवक्ता कहत हमेश ॥ ह्वै प्राप्त योग्य नहिं जौन । प्राप्त होत नहिं कबहूं तौन ॥ यह गुणिकै ज्ञानी जन जौन । भयकों प्राप्त होत नहिं तौन ॥

नरेश छन्द ॥

बर मानुष जे मतिमान हैं । गुणि कामहि दुखद महान हैं ॥ तनुते निकारि ते देत हैं । निति रहत अनन्द समेत हैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

जैसी जैसी होति है प्राप्त अवस्था आय। तैसी तैसी छोड़ि भय भोगत है सुरराय ॥

मोहा छन्द ॥

धर्मतत्व अवगाहिकै। प्राप्त होत जो चाहिकै ॥ धर्म धुरन्धर सोय है। और न जानो कोय है ॥ प्रज्ञनके जे कर्म हैं। तिनके जे फल पर्म हैं ॥ ते नहिं जाने जात हैं। कहत सुबुध अवदात हैं ॥ ग्रह आश्रमसों होयकै। च्युत गौतम दुख जोयकै ॥ नहीं मोहकों ज्यों लह्यो। तिमहि मैं न निजु है कह्यो ॥

चरणा दोहा ॥

सुखदुखजितेप्राप्त हैनेकोंतितेहोत हैंआय। तेटारेते टरत कबहुनहिंजानो निजुसुरराय ॥

हंसा दोहा ॥

यहबिचारिकै मोहको प्राप्तहोत नहिंजौन। रहतसर्वदा सुरप सुनु महत कुशलसों तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्य पुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारत दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे शक्रनमुचिसंवादेद्विपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच दोहा ॥

आवै काल अनिष्ट तब कीजै शोचहि नाहि। कह्यो पूर्व अध्यायमें आपु हमारे पाहि ॥ बंध्वादिकको नाश अरु भए राजको नाश। कष्ट होत तिहि मांहि जे मग्न मनुज मतिराश ॥ होय श्रेयकों प्राप्त बर कहा किएतें फेरि। कहो आपु अवगाहि अब ज्ञान चक्षुसों हेरि ॥

भीष्मउवाच ॥

बंध्वादिकको नाश अरु भए राज्यको नाश। जौन कष्टगत है तिन्हे शरमद धीर्य्य प्रकाश ॥

मनोहरछन्द

धीरय धारे सदा प्रवीण। होत शरीर नहीं है क्षीण ॥ धीरय ताते होत अनन्द। रहत सदा आरोग्य नरेन्द ॥ रहे शरीरारोग्य नरेश। श्रियको पावै फेरि सुवेश ॥ धारत वृत्ति सात्विकी जौन। धीर्य्य ताहि पावत है तौन ॥ अब एक इतिहास अनूप। तुम्हें कहत हैं सुनिए भूप ॥ पुनि बलि बासव को है खच्च। तामांही सम्वाद सुदच्च ॥ देवासुर संग्राम महान। होय चुक्यो जब भूप सुजान ॥ चतुर्दन्त ऐरावत पर्म। तापै चढ़िकै शक्र सशर्म ॥ फिरत भयो तिहुलोकन बीच। लीन्हे करमें बज्र निभीच ॥ कबहूं सरिता पतिके पांहि। उन्नत गिरि गह्वरके मांहि ॥ बलिकों देखि भयो तट जात। बासव महा बीर्य बिख्यात ॥ सह ऐश्वर्य इन्द्रकों देखि। मनमें बिषा न की अवरेखि ॥ निर्विकार बलिकों सुरराज। देखि खरो करिकै गजराज ॥ कहत भयो सो ऐसे बैन। बलि दानवपति कों मतिऐन ॥ सह ऐश्वर्य मोहि लखि पाहि। बलि चिन्ता न करी मनमाहि ॥

दोहा ॥

ताको कारण है कहा कहो मोहि दैत्येश। अनैश्वर्य्य तू मैं महा सह ऐश्वर्य्य सुवेश ॥

तोमर छन्द ॥

तिहु लोककोवरराज। नशिजातजासदराज ॥ नहिंतौनत्यागतप्रान। बलिदैत्यराजसुजान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

तू शोचहु नहिं करत है कारण काहे तास । निर्विकार तू है खरो सोंहे सहित हुलास ॥

तोमर छन्द ॥

सुरराजके सुनिवैन । बलि दैत्य राज सचैन ॥ मन मांहि गुणि करि तौन । कहतो भयो बलभौन ॥ बलिरुवाच ॥ सुनि वैन मो पविमान । बहु कर्त का अभिमान ॥ वश मैं भयो तव माहि । लखु हो खरो तव पाहि ॥ नहिं तोहि आवति लाज । अति धारि गर्व दराज ॥ बहु अच बोलत वैन । गजपै चढ़ो सहचैन ॥

दोहा ॥

महत बली मैं पूर्व हौ तू हौ निबल सुरेश । ताहि गुणत तू है नहीं ह्वैकै निलजअशेष ॥

रामगीत छन्द ॥

जो आपु अति बलवान ह्वैकै अरिहि वशमें पाय । तजि देत ताकों कहत हम पुरषारथी सुर राय ॥ ह्वै लहत हैं रणमांहि तिनमें लहत है जय एक । वर समय ताको भाग्य करिकै होत सो सविवेक ॥ सब भूतको जो ईस सो तौ हारिही है जात । सुनु गजारूढ़ सुरेश वर है कहा मम तव बात ॥ है हौनवारो जो अनर्थ न मिटत हो सुरपाल । बिन बुद्धि विमला जानु यह सिद्धान्त विघ्न विशाल ॥ जब होत जनकों आय प्रापत अति अनिष्ट अनेह । तव फटी नौका जाति ज्यौं जलमाहि बूड़ि अछेह ॥ तिमि सुमति सो अज्ञान माही जाति बूड़ि सुरेश । नहिं सकति होय उपाय कौनहु किएहु भूरि कलेश ॥ जिमि नष्ट गे है इन्द्र पूरब बहुत तौनहि भांति । हम तुमहु औ जे और है हैइन्द्र बहुवर कांति ॥ सब जांयगे ह्वै नष्ट हे सुर श्रेष्ठ गुण सिद्धान्त । ह्वै गजारूढ़ सुमूढ़लौं का करत गर्व नितान्त ॥ हे भए तोते इन्द्र पूरब बहुत हे सुरपाल । अरु पृथ्वी में पृथु आदि राजा भए बहुत विशाल ॥ ते गए सबही नष्ट ह्वै लखि परत एकहु नांहि । तिमि तुहु जै है नष्ट ह्वै यह जानु निजु मनमांहि ॥ जिहि दशाकों मैं प्राप्त भो तिहि दशा कों सुरराज । तव पाय है सकि है न तू तव धारि धीर्य दराज ॥ वर राज्यवारे नाश माही तुहु कबहु शोक । निजु लहैगो अभिमान का तू करत है बलओक ॥ उद्योग कारक बहुत मैं हौ मोहि हु यह काल । अति दुखद प्रापत भयो है हे देखु वर सुरपाल ॥ गहुक्षमा तूहु पाय है यहि समय कों दुखदाय । नहिं रहैगो यह समय जो है प्राप्त अब सुरराय ॥ मैं बधो हौ यहि हेतु ते बलवान आपुहि जानि । बहुवार ताकों करत है अभिमान ताको तानि ॥ जब करत हौ मैं क्रोधको तब सामुहें मम आय । नहिं खरो कोऊ होत हौ बलवान ओज बढ़ाय ॥

दोहा ॥

अपने यशके कहत ए मोहि होति है लाज । पै कहवावै तू खरो सोंहें मम सुरराज ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

युद्धबीच पुरुषारथ मेरो । तेरो लख्यो पूर्व बहु तेरो ॥ मैं आदित्य द्वादशो जीते । हे बलसों दीन्हे करि रीते ॥ तिमहि साध्यगण मारत बलमैं । जीति किए हे पूर्व विकलमैं ॥ औ आठहु बसु जीते मैंहे ॥ गुणत नहीं ए सचीपति तैहे ॥ तू जानत पुरषारथ जैसो । है मेरो स्वर्गाधिप तैसो ॥ शिखर तोरिकै भारे भारे । तो ऊपर मैं हे बहु डारे ॥ ऐसो है मैं अब कछु नाही । करिहौं सकत खरो तव पाही ॥ यह मेरे पुरषारथ सारो ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल न याते धीरय धारो ॥ बात कहत स्वर्गाधिप जैसी । तूहै कहत सहत हैं तैसी ॥

दोहा ॥

सुनिकै बलिके ए बचन बज्री क्रोधहि गोय । कहत भयो अनिमेष ह्वै सोंहे ऐसे जोय ॥
बज्र सहित मम कर उठो ऐसो मैं जो ताहि । चासमान नहिं होय को दैत्यप सोहै चाहि ॥
तू न बिचा नेकहु करत यामें अचरज मूरि । जान्यो मैं तू है रह्यौ सहत धीर्यसों पूरि ॥
देहमाहि औ द्रव्यमें कीजै नहिं बिश्वास । दोऊ ए थिर है नहीं जानत ज्ञान प्रकास ॥
काल बन्हिकेमांहि यह परो जगत है सर्व । जानत मनमें मैंहु हौं दैत्यप प्रज्ञ अखर्व ॥
महतहु तो बलवान तू अब यहि पाय दशाहि । नेकहु ग्लानि न करत है बलि मनमें अवगाहि ॥

अरिलछन्द ॥

नष्ट ताहि तूं जगको जानत । याते हर्ष शोक नहिं आनत ॥ बलि बिद्वान महा है तू बर । कालहि जानततू उन्नत कर ॥ दैत्यप शुभ औ अशुभनमें गुनि । लेत हंसलौ शुभहीकों चुनि ॥ ते जीते लोकनको तनिमति । तो सम और न ज्ञानमान अति ॥ रहत जहां लागत नहिं तो मन । कमल पत्रमें जैसे जलकन ॥ कबहु नहीं छूटत रज औ तम । तोको याते कोउ न तो सम ॥ प्रीति अप्रीति नहीं तू राखत । काहूमें न सत्य निति भाषत ॥ दया तोहि लखि मोकों आवति । तोहि हननकी तट नहिं भावति ॥

दोहा ॥

दुखद बरुणकी पाससों तेरो बधो शरीर । करिहि प्रजा अपचार जब छुटि जै है तब धीर ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनु भार्य्या सब सासुसों करवायकै गृहकाम । अरु पितासों करवाय है सुत काम गृहके आम ॥ पद धुवावैंगे शूद्रहू बर बिप्रसों सह हर्ष । अरु ब्राह्मणीकों राखि हैं गृहमांहि बलि उत्कर्ष ॥ सब पुर्ष कुत्सित योनि माहीं छोड़ि हैं निज बीर्य । तजि बर्ण दै हैं धर्म अपनो दैत्यराज सधीर्य ॥ अरु करैंगे हे सर्वभोजन कांस्य भाजनमांहि । सब परस्पर संकोचको कबहैंहु करि हैं नांहि ॥

दोहा ॥

ऐसो ह्वैहै काल जब तो शरीरते सर्व । क्रमसो जैहै छूटि ए पास सुप्रज्ञ अखर्व ॥

तोमर छन्द ॥

हमते न तू करु त्रास । नितिही रहो सहुलास ॥ हम जो बतायो तोहि । तिहिकालकों तू जोहि ॥ कहि दैत्यसों इमि बैन । सुरराज गो निजऐन ॥ जय पायकै उत्कर्ष । लसतो भयो सह हर्ष ॥ ऋषि तासु सुस्तुति खच्च । करते भए बर दच्च ॥ सुनि तौन श्री सुरराज । अति लह्यौ मोद दराज ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे बलिवासवसंवादे चिपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

बंध्यादिकको नाश अरु भए राज्यको नाश । धीरज धारे लहत जन आनदको परकाश ॥
बलिवासव संवाद कहि कह्यो पूर्व तुम तात । करिकै कृपा महान बर परम प्रज्ञ बिख्यात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होयगो सिद्धिकों जो जन पूरब तास। औ ह्वै है जिहि पुरुषकी महत वृद्धिको नास॥
ताको पूर्व सुभावसो कैसो होत सुजान। अब यह मोहि कहो नृपति करिकै कृपा महान॥

भीष्मउवाच॥

वृद्धि अवृद्धिहि लहनकी चेष्टाको सुनुभूप। पूर्वहि मन कहि देत है लहि सुद असुद अनूप॥
कहत एक इतिहास हौं मैं यहि मैं तव पाहि। है संवाद सुरेश औ थीको ताके माहि॥

चरणाकुलक छन्द॥

फलसों परम तपस्या वारे। ज्ञानी नारद सुऋषि सुढारे॥ फिरत तिहूं लोकनके माहीं। संशय कहूं लहत है नाहीं॥ वर ध्रुवद्वार वहां गंगाको। धरिकै हिए ज्ञान इच्छाको॥ जाते भए मोदसों पागे। नारद सुऋषि महा बड़भागे॥ तौनहिं समय इन्द्रहू आयो। सुरगण सहित ओजसों छायो॥ तहां स्नान करत भे दोऊ। औ जे संग अमर हे ओऊ॥ करन लगे जप स्नानहि करिकै। दुओ तदनु वार्ता विस्तरिकै॥ इतनहिं मांहि भानु भो उदित। उठिकै स्तुति करत भे मुदित॥

दोहा॥

उदितभयोरविजिहिसमयतिहहिसमयमेंदक्ष। नभमेंतिनकों रविहिसमतेजपस्यौलखिस्वक्ष॥
बेग गरुड़ अरु भानुको तैसोही तिहिमाहि। नारद औ सुरराजके सो आवत भो पाहि॥
अपनी भासों करत जो लोकनमांहि प्रकाश। ताके बिच वर कमलमें लक्ष्मी भरी हुलाश॥
देखि परी तिन दुहुनकों शिखिकीज्वाल समान। धारण कीन्हे भूषणनि भासों भरे महान॥

चरणाकुलक छन्द॥

थी लक्ष्मी अति तेजस छाई। व्योमजानते अति सुखदाई॥ सुरपति औ नारदके सो है। आई सुरपहु ह्वै विहसो है॥ गयो सनारद सांहे थी के। नमस्कार भो करत नजीके॥ तदनु सविधिसों पूजा करिकै। ऐसे कहत भयो मुद धरिकै॥ शक्रउवाच॥ को है तू कितसों इत आई। जै है कहां हर्षसों छाई॥ थीरुवाच॥ तिहुलोकनमें प्राणी जेते। मोकों चाहत हैं सब तेते॥ विकसित कंज भानुके करसों। दलको सहस भरो भा वरसों॥ लक्ष्मी आदिक नाम हमारे। हैं बहुं हे सुरराज सुढारे॥ विजय हौंनवारी जिन वारी। रहति धजा मैं हौं तिनवारी॥ धर्मशील जनके गृहमाहीं। सुनु सुरपति हौं रहति सदाहीं॥ औ नहिं भजत कबहु जे रणमें। रहती हौं मैं तिनके तनमें॥ औ है जिनमें उदारताई। रहति सदा हौं सुनु सुरराई॥

दोहा॥

औ जे जन मतिमान हैंतिनमें रहति सदाहि। औ जे जन हैं नम्र अति वर तिनहूके माहि॥

चरणाकुलक छन्द॥

धर्म सत्य हे असुरनमाहीं। यातें रहतीहो तिन पाहीं॥ अब तिन धर्म सत्यसब त्यागे। अधर्म औ असत्यमें पागे॥ यहितें मैं अब तिनकों तजिकै। आई पास तिहारे ब्रजिकै॥ अब मैं रहि हौं वासव तोमें। निश्चय जानु कह्यौ यह जोमें॥ शक्रउवाच॥ कैसे हुते दैत्य हे आगे। अबते कैसे भए अभागे॥ तिनकों तजि आई मो पांही। मोहि सत्य कहु गुणि मनमांही॥ श्रीरुवाच॥ पूरब दैत्य धर्म हे धारे। धीर्य्यहि छोड़त नहे सुढारे॥ दानादिकहि करत हे नीके। पूजत हे गुरु चरणहि सीके॥ प्रेम भक्त हे विप्रनवारे। राखत गृह हे स्वच्छ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवारे ॥ राखत ऊते अक्षमा नाही । रहत जितेन्द्रिय ऊते सदाही ॥ मंत्री औ सेवकको राखत । ऊते प्रसन्न सत्य है भाखत ॥ यथायोग्य सनमान करत है । औ काहूकों नहिं निदरतहै ॥ सोवत है संध्यामें ते ना । होते गर्वक निकटै है ना ॥ स्नानादिक सुक्रिया है जेती । रतिसों करत ऊते सब तेती ॥ उठिकै प्रातहि इतके मांही । लखतऊ ते निज सुखहि सदाही ॥ शयन करत बासरमें हेना । औ सुअर्ध रजनीलौ ते ना ॥ रक्षा करत ऊते दीननकी । खबरि लेत है धनहीननकी ॥ ताकत है कबहू न परनारी । करत दया है भूतनवारी ॥

दोहा ॥

ऐसे गुणवारे ऊते जब सब दैत्य सुवेश । तब मैं तिनके पास मैं रहत ऊती खगेश ॥
सृष्टि भई उत्पन्न है जबसों तिनके माहि । युगलौं रही अनेक मैं आनंद सहित सदाहि ॥
जब लहि कुत्सित समयकों तज्यो धर्म तिन सर्व । काम क्रोधके बश भए जब मैं लखे अखर्व ॥
लागे करण बड़ेनको नितिहि अनादर तौन । करण लगे परिहास अरु सभासदनके मौन ॥

रामगीतो छन्द ॥

प्रत्युत्थान बड़ेनको नहिं लगे दीबे तौन । अरु पिता सोहे कहन लागे बचन दुर्मतिभौन ॥
तजि हयाको जे योग्य कबहू नाहिं कहिबे दक्ष । अन धर्म करिकै प्राप्त जौ है होत अर्थ
प्रतक्ष ॥ तिहि मांहि श्रद्धा करण लागे भरे दुर्मति भूरि । अरु नारि तिनकी सर्वते बेहया-
पनसों पूरि ॥ कटु बचन लागी पतिनसों बहु कहन नित्य सुवेश । नहिं करण आदर लगे
गुरुको धरि प्रमाद असेश ॥ बिन दिए भिक्षा बलि सुभोजन करण लागे सर्व । अपबिचही
जिनकी रसोई सूद अन्न अखर्व ॥ निति करण लागे भयहि त्यागे सुनो हे अमरेश । स्नाना-
दिको उच्छिष्ट भोजन लगे करण हमेश ॥ अरु नारि तिनकी दिए तजि सब धामवारे
काज । गृह पशुनके ते अनादरको लगी करण दराज ॥ बिनदिएही ते शिशुहि भक्षण
लगो भक्ष पदार्थ । अरु अपूपादिक चारु भक्ष बनाय करिकै स्वार्थ ॥ ते दैत्य आपुहि लगे
भक्षण करण तजि बर रीति । मख बिनहि भक्षण करण लागे मांस धारि अनीति ॥ अरु
लगे गृह गृह मान नित्यहि कलह करण अखर्व । सतकार नीच न करण लागे बड़ेनको
धरि गर्व ॥ जन अधर्मी धर्मीनकी निन्दाहि लागे कर्ण । अरु होन सङ्कर लगो तिनमें परम
धर्महि दर्ण ॥ जन धर्मविद ते लगे कीबे दासिकामें भोग । बर धर्मपत्नीमाहि रतिसों
दियो तजि संयोग ॥ धरि नारिबारे बेशको नर बेश नरको नारि । बिच सभाके ते लगे
नाचन भावको बहु धारि ॥ अरु शूद्र कीबे लगे ब्राह्मण कर्मको अवदात । राज्यमें तिनके
सुताश्रित भए पित अरु मात ॥ बर बेदबिद ते जीविकारथ कृषी ल्यायो कर्ण । गुरुकी
सुआज्ञा भंग लागे कर्ण दुर्मति धर्ण ॥ अरु श्राद्धमाहीं मूर्ख बिप्रहि लगे भोजन दैन ।
तितिही अभक्षहि लगे भक्षण महादुर्मति ऐन ॥ इहि भांति कीबे अनाचारहि लगे दानव
सर्व । तब भई तिनकों छोड़िबेकी मम सुबुद्धि अखर्व ॥ अब इन्द्र मैं तब पास आई राखु
मोहिं सधर्म । जौ पूजि है तू मोहि तो सब देवताहू पर्म ॥ धृति शान्ति आशा क्षमा
श्रद्धा विजिति संतति इत्य । ए अष्टदेवी रहति हैं मैं रहति हौं तहं नित्य ॥

दोहा ॥

तुमकों गुणिकै धर्ममें तत्पर सहित हुलास । आई हे खगेश हम सर्व तुम्हारे पास ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोरठा ॥

लक्ष्मीके ए बैन सुनिकै श्रीखगेश बर। सह नारद मतिऐन अतिही हर्षित होत भो ॥

जयकरीछन्द ॥

बहन लगे शीतल पवमान। मन्द मन्द तहं सुरभी बान ॥ सह लक्ष्मी सुरपतिको सर्व। आए देखन देव अखर्व ॥ तदनु सलक्ष्मी श्रीसुरराज। सह ऋषि नारद देव समाज ॥ भए पधारत दिवकों भूप। भरे दीप्तिसों परम अनूप ॥ स्वर्गमाहि जब श्रीखगेश। पहुंचत भो तिहि समय सुवेश ॥ दृष्टि सुधाकी भई अमन्द। बजन दुन्दभी लगी नरेन्द ॥ दिशो सुहावनि लागी सर्व। समय पायकै दृष्टि अखर्व ॥ करत भयो भूमें सुरराज। बढ़त भयो बर धर्म समाज ॥ रत्नसों भूषित अभिराम। होति भई भूनृप बुधधाम ॥

दोहा ॥

लक्ष्मी सह सुरराजकी यह जो कथा अनूप। पढ़ि हैं ताको जौन सो सम्पति लहि हैं भूप ॥
लक्ष्मीको जो भव अभव ताको धर्मा धर्म। है कारण तुमकों कह्यौ सो हम भूप सुकर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे श्रीबासवसंवादसमाप्तश्चतुर्पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

किए कौन आचार अरु किहि बिद्यासों पर्म। औ सुपराक्रम कौनसों श्री बर बीर सुकर्म ॥
परमात्माके धामको प्राप्त होत जन दक्ष। कहो आपु अवगाहिकै मोकों प्रश्न प्रतक्ष ॥

भीष्मउवाच ॥

मोक्ष धर्मकेमांहि जो तत्पर रहत सदांहि। होय जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी बैठि सुप्रश्नमपाहि ॥
प्रकृति परे जो ब्रह्म है नित्यानन्द अनूप। ताकों प्रापत होत है सो जन श्री बर भूप ॥
कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसंगमें दक्ष। जैगीषव्य महा सुबुध ब्रह्मज्ञानी अक्ष ॥
औ श्यामल देवल सुऋषि तिनको है संबाद। तामाहींसों भूप तुम सुनिए छोड़ि प्रमाद ॥

देवलउवाच ॥

नमस्कार जो करत हैं तिहितें खुसी न होत। औ निन्दा जो करत हैं तापै क्रोध उदोत ॥
करत नहीं हौ कबहु तुम जैगीषव्य सुजान। कैसी तव मति है कहो ताको मूल सुठान ॥

भीष्मउवाच ॥

सुनिकै जैगीषव्य ऋषि देवलके ए बैन। कहत भए इमि महातपोधन सुमतिके ऐन ॥

जैगीषव्यउवाच ॥ मोरठा ॥

पुण्यकर्म है जौन तिनकी जो गति शान्ति अरु। तुम्है कहत हौं तौन श्यामल देवल सुऋषिसुनु ॥

दोहा ॥

हृदय ग्रन्थिकों छोड़ि जे सुख सह फिरत हमेश। जिनके बन्धुन काहुके बन्धुन ते सुबुधेश ॥
पुण्यसुकर्मा प्रश्नबर तेई और न कोय। सुस्तुति निन्दाकों सुने ज्ञान चक्षुसों जोय ॥
होत खुसी नहिं औ करत क्रोध कबहु मनमांहि। सबहीको समदृष्टिसों देखत रहत सदांहि ॥
जे जन ह्वै धर्मज्ञ बर नित्य करत हैं धर्म। निन्दा सुस्तुति ते सुने लहत क्रोधन अधर्म ॥
पुण्य सुकर्मा जौन जन तिनको मारग जौन। तामें मैं निति चलतहौं करत अनत नहिंगौन ॥
निन्दा औ सुस्तुति सुने लहत न मैं कछु हर्ष। श्यामल देवल सुऋषिबर प्रश्नावत उत्कर्ष ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उकला छन्द ॥

हमकों पूछ्यो जौन । कह्यो तुम्हें हम तौन ॥ अब ज्ञानिनकी बात । कहत तुम्हें हैं ख्यात ॥

दोहा ॥

खुसी होति ज्ञानीनके भए परम अपमान । खेद महाही चित्तमें होत भए सनमान ॥
करत जौन अपमान है जाको ताको पाप । प्राप्त होत है आयकै तिहिजनको सहदाप ॥
जिनके परपद लहनकी इच्छा रहति हमेश । ते यह व्रत धारण किए रहत सदा तजि क्लेश ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्मे जैगीषव्यासित देवलसंबादे पंचपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥

युक्त सर्ब बरगुणनसों प्रिय लोकनको सर्ब । ऐसो को है लोकमें कछु वर प्रश्न अखर्ब ॥

भीष्मउ बाच ॥

कहत एक इतिहास हैं यहि प्रसंगमें भूप । उग्रसेन अरु कृष्णको है सम्बाद अनूप ॥

उग्रसेनउ बाच ॥

जाके सुनिकै नामको खुसी होत सब लोक । बहु गुणसों सम्पन्न बर नारद प्रज्ञाओक ॥
कहो मोंहि श्रीकृष्ण तुम तास सर्ब वृत्तान्त । तुम ज्ञाता हौ सर्बके बासुदेव श्रीकान्त ॥

बासुदेवउबाच ॥

नारदके गुण सर्बते तुमको कहत प्रतक्ष । यादवपति सुनु तौन तुम उग्रसेन बर दक्ष ॥
नारदमें सु चरिच गुण हैं बहु पै अहंकार । करत न यातें लोकमें पूजित रहत उदार ॥

रामगीती छन्द ॥

चापल्य भय अरु अरति औ नहिं क्रोध नारदमांहि । अरु करत जो सो शीघ्र ताके मांहि पागि सदांहि ॥ वर शूर है औ सत्यबादी तजे सब कामादि । बरज्ञानसों जो गुणत है निति तत्व जौन अनादि ॥ जो तपस्या औ ज्ञानसों अरु तेजसों परिपूर्ण । अरु भणत सुन्दर बचन है कल्याण कारक तूर्ण ॥ इतिहास करिकै ग्रहण सुन्दर अर्थको जो कर्त । अरु क्षमा धारे रहत है निति नहिं कुबैन उचर्त ॥ बहु करत नीकी बारता अरु बहुत श्रुत है दक्ष । नहिं लालसाको करत कौनहु परम पण्डित स्वक्ष ॥ है अदीन अक्रोध औ सुअलुब्ध औ निष्काम । है सु हरिकी भक्ति जाके हृदयमें दृढ़ नाम ॥ सब दोषसों अरु मोहसों सो रहित है बिख्यात । नहिं नेक संशय हृदय माहीं जास अति अवदात ॥ सब संगमांहि अशक्त है पै लगत शक्त समान । मनको लगावत है न कौनहुं कार्य्यमांहि सुजान ॥ सो मनहिं जानत सर्बहिके पै करत निन्दा नांहि । है कुशल अतिही सुऋषि नारद सर्ब बिद्यामांहि ॥ अरु देत कालहि ब्यर्थ जान न जितेन्द्रिय है पर्म । निति योगमाहीं रहत तत्पर अप्रमत्त सशर्म ॥ नहिं दूसरेके लाभमाहीं करत द्वेषहि तौन । अरु धरे लज्जा रहत है निति परम प्रज्ञाभौन ॥

दोहा ॥

यातें पूजित सुऋषि बर नारद है सरबत्र । सबहीको प्रिय लगत है यत्र जात है तत्र ॥

स्वस्तिश्री काशीराज महाराजा धिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना बिरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेबासुदेवोग्रसेनसंबादोनामषष्ठपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥

बहु प्रकारकी जे कथा सह इतिहास अनूप। तिनकों सुनि पश्चात का पूछो श्रीवर भूप ॥

वैशम्पायनउवाच ॥

अधिकारी जो मोक्षको तास स्वरूप अमन्द। बहु इतिहासनमांहि सुनि भूपति कुन्तीनन्द ॥
लखिकै तत्वज्ञानके अधिकारहि निजमाहि। सुनो जौन सोई कथा पुनि भीषमके पाहि ॥
सुनिबेकी बिस्तरित करि इच्छा हियके बीच। पूछत भो पांडवपति अरिदलदमन निभीच ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

ध्यान कर्म अरु काल अरु युग युगकी जो आयु। आदि अन्त जो सर्वको अरु जो है नरराय ॥
लोक तत्व सब औ सुनो भूतनवारी सर्व। आगति गति हमकों कहो प्रज्ञावान अखर्व ॥
भृगु अरु भारद्वाजको पूर्व कह्यो इतिहास। सो सुनिकै बिमला भई मेरी मति मतिरास ॥
तौनहि पुनि बिस्तारिकै कहो मोहि बड़भाग। सुनिबेकी है लालसा मोहिय सह अनुराग ॥

भीष्मउवाच ॥

कह्यो व्याससुनि पुत्रकों जो इतिहास अनूप। यह प्रसंग मैं कहत हौं तुमकों सो मैं भूप ॥
सब भूतनको कौन है कर्ता उत्तम पर्म। अरु जो कालज्ञान सों जानो जाय सुकर्म ॥
पढ़ि अंगनसह वेदकों श्रीशुकवर बुधिधाम। ब्रह्मचर्य्यमें रहनकी अनिश कामना साम ॥
करिकै होमें व्यासकों पूछत भो संदेह। महा प्रज्ञ धरमज्ञ बर परम शीलको गेह ॥

शुकउवाच ॥

ब्राह्मणके जो कर्म हैं कहो तौन तुम मोहि। तुमसों बक्ता और नहिं कहूं परत है जोहि ॥

भीष्मउवाच ॥

सुनिकै शुकके वैन ए व्यास बिज्ञ अवदात। गुनिकै होमें कहत भो तिहिको इमि विख्यात ॥

व्यासउवाच ॥

अव्यय अजर अनाद्य अज स्वच्छ सनातन पर्म। ऐसो जो है ब्रह्म सो सुनहु सुतात सगर्म ॥
सब भूतनको सोय है कर्ता आनद रूप। ज्ञानीहूं दुर्लभ कहत ताको परम अनूप ॥
तुमकों काल स्वरूप अब कहत सुनहुं शुक ख्यात। दश अरु पञ्च निमेषको काष्टा नामक तात ॥
कला कहत है तीश जो काष्टा जिनको नाम। कला तीश औ कलाको दशम भाग बुधिधाम ॥
तास मुहूरत नाम है अरु मुहूर्तको तीश। बासर होत यथा निशिहु भणत महान मुनीश ॥
निशि बासर जे तीस है तास महीना नाम। अयन नाम षटमासको दोय अयनको आम ॥
वर्ष नाम इनको सुनो करत बिभाग दिनेश। मर्त्यलोककी वर्षलौं संख्या कही अशेश ॥
पितरनके दिन रातिको अब हौं कहतप्रमान। पितरनकोएकमासकोनिशि दिन होतसुजान ॥
शुक्लपक्षको होत दिन कृष्णपक्षकी राति। जानत ते जन शास्त्रमें जिनकी धिषणा भाति ॥
देवनके दिन रातिते एक वर्षको होत। बासर उत्तम अयनकों जानो शुक बुधिपोत ॥
रजनी दक्षिण अयनको जानो अब मैं अग्र। ब्रह्माके दिन रातिको कहत प्रमाण सनग्र ॥

चरणा दोहा ॥

सतयुगत्रेताद्वापरकलियुगतिनकीजोहै आयु। पृथक्पृथक्मैंकहततुम्हैहौंसुनहुतौन मनलायु ॥
सुरके चारिसहस बर्षणको सतयुग होतसुजान। संध्यासो शत चारिबर्षकीऔ संध्याससुठान ॥
आदि सन्धि जो युगनकी ताको संध्यानाम। है संध्यासह अन्तसन्धिकोनाम सुनो बुधिधाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन सहस बत्सरका त्रेता औ संध्या शततीन । बत्सरकी है औ संध्यासङ्ग होत तात परबीन ॥
दोय सहस बत्सरको द्वापर औ संध्या शत दोय । बत्सरकी है औ संध्यासङ्ग द्वै सतहीको होय ॥
एक सहस बत्सरको कलियुग औ संध्या शत एक । बत्सरकी है औ संध्यासङ्ग तास होत सबिबेक ॥

दोहा ॥

ऐसो जो यह काल है ताहि ब्रह्मबिद पर्म । कहत निरन्तर ब्रह्म है गुणिके जात सधर्म ॥
सतयुगमांही रहत है चतुष्पाद बर धर्म । सत्यहि रहत अधर्मकी प्रवृति न होति सुकर्म ॥
और युगनमें होत है एक एक पदक्षीन । चौर्य्य काम अरु अनृत अरु मायातें सुप्रबीन ॥
बढ़ती होति अधर्मकी जानो नृप सिद्धान्त । सतयुगमें नहिं होत हो रज जनको क्षितिकान्त ॥
सिद्धि होत है अर्थ सब आयु चारिशतबर्ष । होति जननकी हो रहे बली होत उत्कर्ष ॥
और युगनमें आयुमें एक एक पदक्षीन । होत सुन्यो मतिमानजनके तट भूप प्रबीन ॥
सुनिबेको अरु पढ़नको बेदनको फल जौन । उत्तर उत्तर युगनमें न्यून होत बुधिभौन ॥

सोरठा ॥

पृथक् पृथक् कहै धर्म सतयुगादि चारौनके । सतयुगमें तप पर्म त्रेतामाहीं ज्ञानबर ॥
द्वापरमाहीं यज्ञ कलियुगमाहीं दान नृप । ए चारिङ्गके प्रश्न कहे तुम्हैं हम धर्मबर ॥

दोहा ॥

देवनके द्वादश सहस बर्षनमांहि अनूप । सतयुग आदिक जात ह्वै चारों युग सुनु भूप ॥
इनचारिङ्गकी जौन है आठत एक हजार । ब्रह्माको दिन एकसो जानो बुद्धि अगार ॥
एतिहि दीर्घा होति है रजनिङ्ग बिधिकी भूप । प्रलय होत जब शयनकों ब्रह्मा करत अनूप ॥
फेरि निशाके अन्तमें जागि प्रजापति पर्म । करत सृष्टि उत्पन्न है क्रमसों भूप सुकर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीवन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्मे व्यासशुकसंबादे सप्तपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥

जिमि जन जलके माहिंपरिबूड़त औ उतरात । जनन मरणको देखिदुखतिमि जगमें बिख्यात ॥
रुचै जनहि कैवल्य जौ ज्ञानवान तौ होय । लहै ज्ञान जन ब्रह्मपद पाय रहै सुख भोय ॥
अबुधनकों जन सुबुधते भवसागर ते पार । नाव ज्ञान उपदेशसों करत निशङ्क उदार ॥
नष्ट भयो है दोष शुक जिनको ऐसे जौन । सुसुनि छूटि दारादिसों दुखद जानि अति तौन ॥
देशादिक बारहनकों गुनो जानि सुबदाय । लहिबे काजै योगकी सिद्धि सुमनहि लगाय ॥
देश कर्म अनुराग अरु अर्थ अहार उपाय । निश्चय चक्षु सुढार अरु अरु संहार अपाय ॥
मन दर्शन देशादि ए बारह करै बिचार । इनमें प्रथमहि देशको सुमती पुरुष सुढार ॥
होय पबित्र अनूप अति होय जासतट तोय । बालु जामें होय नहिं औ जिहिको शुक जोय ॥
होय खुसी मन कङ्करन जामें एकङ्ग होय । नत उन्नत नहिं होय अरु परै कण्टकन जोय ॥
योग्य सु जोगाभ्यास के ऐसो होत सुदेश । अब मैं कहत बिचार हौं कर्मनको शुभबेश ॥
सम अहार करिकै रहै औ श्रम बहुत करै न । सोवै जागै समय लहि आलस कबहु धरै न ॥
राखै शिष्य सुशीलमें गुणिकै बर अनुराग । अम अभावके काजकों करै अनत नहिं लाग ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखै धनहि अभावको चिन्ताके दुखदाय। आसनादिको करव जो ताकों कहत उपाय ॥
करव दूरि रागादिको ताको कहत अपाय। गुरुके अरु वर वेदके वचन मांहि सुखदाय ॥
मानव जौन प्रमाण है निश्चय ताको नाम। नेत्रादिक इन्द्रियनको राखै वशमें आम ॥
शुद्धहि करै अहार नित प्रवृत्ति विषयके माहि। ताको जौन अभाव है सो संहार सदाहि ॥
प्रवृत रहत सङ्कल्प औ विकल्पमें मन नीति। शुद्धाचार समदर्शि हैं करे भक्ति वीनीति ॥
जन्म मृत्यु अरु व्याधि अरु जरा दुःख अरु शोक। इनको जौन विलोकिबो दर्शन सो मति ओक ॥
जाके इच्छा मोक्षकी होय तौन मतिमान। द्वादशह्न इन माहि सो प्रवृत रहै गहि ज्ञान ॥
जो जन उत्तम ज्ञानको इच्छा करै हमेश। वाणी मनकों बुद्धिसों रोकै तौन बुधेश ॥
जो चाहै कैवल्य सो ज्ञान परम अवदात। तासों आत्माको करै भिन्न बुद्धिसों तात ॥
जो जन जानत आतमहिसो भवसागर पार। होत जनन औ मरणके दुखसों छूटि अपार ॥
जो वर योगाभ्यासमें प्रवृत भयो जन होय। नित्य कर्म जोनाहि करै लगत दोष नहिं कोय ॥
योग सुरथ पै बैठिकै योगीजन अभिराम। ब्रह्म नगरको जात है आनंद सह अति साम ॥
ब्रह्मनगरकों जायबेकी जो विधि है तात। सो मैं तुमसों कहत हैं सुनो तौन विख्यात ॥

सोरठा ॥

प्रथम होयकै मौन सप्त धारणा कीजिए। तदनु करै बुधिमौन जन प्रधारणाको सुगुणि ॥

टोहा ॥

पदसों कैलै जानुलौं जौन अंग हैं ताहि। जानो भूतिहि मांहि शुक्र थापि मरुत अवगाहि ॥
भूके बीज लकार सह करै द्रुहिणको ध्यान। पांचघरीलौं बुद्धिसों थिर ह्वैकै मतिमान ॥
है यह पृथ्वी धारणा सविधि किए ते याहि। पृथ्वीकी जय लहत है महत सुबुध अवगाहि ॥
गुदलौं लैकै जानुसों जानो नीरस्थान। तामें मरुतहि थापिकै पांचघरी मतिमान ॥
जलके बीज वकार सह नारायणको ध्यान। करै लहत जलकी जयहि अरुज होत शुभठान ॥
गुदसों लैकै हृदयलौं अग्निस्थान अरूप। तामें मरुतहि थापिकै पांचघरी मति रूप ॥
शिखिके बीज रकार सह करै शम्भुको ध्यान। जीतै अग्निहि रोगसों रहित होय मतिमान ॥
लेय हृदयसों मध्यलौं भृकुटीके अवदात। जानो सो सुस्थान है मारुत कुलको ख्यात ॥
तामें वायुहि थापिकै पांचघरी लौं दक्ष। मारुत बीजय कार सह ईश्वरको अति स्वच्छ ॥
किए ध्यान वर होत है नभचारी बुधिधाम। जीति वायुको लेत है योगी शुक्र अभिराम ॥
भृकुटीको जो मध्य है तिहिसों लैकै स्वच्छ। थान जौन ब्रह्माण्डलौ सो नभको है दक्ष ॥
वायुहि तामें थापिकै नभको बीज हकार। ता सह शङ्करको परम दोयघरीह्न उदार ॥
जीति गमनकों लेत है किए ध्यान अवदात। जोगमांहि जो रहत है तत्पर विधि सहतात ॥
अहङ्कार अव्यक्तकी सुनो धारणा जौन। सुनहु तात अब कहत हैं तुमकों दोऊ तौन ॥
स्थूल देह ते भिन्न है मैंही हैं यह सर्व। अहङ्कार वर धारणा जानो याहि अखर्व ॥
मैंही हैं सब जौन शुक्र यह अभिमान महान। ताको करिबो नाश जो ताहि परम मतिमान ॥
वर अव्यक्त सुधारणा कहत ज्ञानसों पर्म। कही तुम्हें हम धारणा सातह्न तात सशर्म ॥

सोरठा ॥

योगयुक्त जन जौन ताको जो जो होत है। विक्रम प्रापत तौन सो सो तुमको कहत हैं ॥
औ आत्माको ध्यान कीन्हे अन्तहकरणमें। योगिहि सिद्धि सुठान प्राप्त होत सो कहतहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशात्मा जौन कहि हैं ताके रूप हम। तिन्हें लखै मतिमौन अहन्ताहि तजि देहकी ॥

दोहा ॥

अहन्ताहि छोड़त नहीं थूलदेहकी जौन। प्रकाशातमाके नहीं लखत रूपको तौन ॥
अहंभाव जो देहको छूटि जात है जास। पूर्व रूपको होत है प्राप्त तौन मतिरास ॥

सोरठा ॥

प्रथम होत रंगस्याम तदनु होत है रक्त रंग। तदनु पीत अभिराम तदनु होत है रंगसित ॥

दोहा ॥

स्वेत रंग लहि होत है सूक्षम बायु समान। तदनु लहत है जौन फल सो मैं कहत महान ॥
करत सृष्टि उतपन्न है बिधिलौ योगी तौन। भूको देत कषाय है लहि मारुत गुण जौन ॥
नभकी शक्ति अदृश्य जो ताहि लहत नभमाहि। ऐसे औरऊकी सकति पावत संशय नाहि ॥

सोरठा ॥

अहङ्कार को एक जीतें पांचऊ भूत जे। जानत हैं सविवेक तेऊ जीते जात है ॥

दोहा ॥

जीतें इनपटहूनकों अति निर्मल जो ज्ञान। ताको प्रापत होत है योगी जौन सुजान ॥
सगुण भयो जो आत्मा व्यक्त ताहि अव्यक्त। जानत योगी जौन सो भयो ज्ञान में रक्त ॥
परम बोध अव्यक्तको ताके पूछ खच्च। सुनु वृत्तान्तहि व्यक्तके मैंहौं कहत प्रतच्च ॥
है पचीश बरतत्व शुक योग मांहि अभिराम। औ सांख्यऊ के मांहि ते तुम्हें कहत हैं आम ॥

चरणा दोहा ॥

मूल प्रकृति अरु महातत्वअरुअहङ्कारगुणतीन। ज्ञानेन्द्रियऔकर्मेन्द्रियऔमनअरुचित्तअपीन ॥

दोहा ॥

महाभूत अरु बुद्धि अरु पुरुष कहे ए तत्व। तोहि पचीसों सांख्यके मतसों तात ससत्व ॥
होय बढ़ै जीवै मरै व्यक्त जानि तू ताहि। कह्यो व्यक्तको रूप हम तोहि तात अवगाहि ॥
इन चारिऊसों रहित जो ताहि जानु अव्यक्त। जानत हैं द्वै आत्मा जौन ज्ञानमें रक्त ॥
ईश्वर कारण रूप है जीव सुकारज रूप। जानत यहि सुबिभागकों श्रुतिमतसों मतिरूप ॥
जीव सुभोगत कर्मफल ईश्वर भोगत नाहिं। दुऔ आत्मा रहत ए तात देह के माहिं ॥
तत्वज्ञानी जौन है जीवनमुक्त अमन्द। ताको लच्छण अब कहत तोहि तात निर्द्वन्द ॥
ममताकों राखै नहीं रहै सदा निर्द्वन्द। अहङ्कार छोड़ै कहै कटु न बचन दुख कन्द ॥
अहङ्कार त्यागे रहै औ रुढ़ द्वेषिहि सर्ब। जो अपमान करै गुणै अशुभ न तास अखर्ब ॥
मन बाणी अरु कर्मकों रहै दबाए नित्य। सब भूतनमें सम रहै कहै न कबऊ असत्य ॥
इच्छा नेच्छा ना करै भोजनहीके काज। करै उपाय निबाहिवें देह सर्ब तजि साज ॥
प्रापत होय अनिष्ट जल व्यथित होय नहिं नेक। राखै मन एकाग्र निति ह्वै अहिंस सविवेक ॥
कह्यो तोहि सिद्धान्त हम सांख्यशास्त्रको खच्च। योगशास्त्रको कहत हैं अब सिद्धान्त प्रतच्च ॥
परम योग ऐश्वर्य्यको प्राप्त होत है जौन। यहि भवसागर महतको लहत पार है तौन ॥
भए योगसे प्राप्त जे अणिमादिक बसु सिद्धि। तिनमाहीं बैराग्यसों जौन लगत बुधिनिद्धि ॥
पावत योगैश्वर्य्यकों योगी औरन कोय। कह्यो तुम्हें सिद्धान्त यह जोय शास्त्रको जोय ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगमतहि अरु सांख्यके एकहि जानत जौन। है करिकै निर्द्वन्द्व जन लहत ब्रह्मपद तौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्य पुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे शुकानुप्रश्ने अष्टपंचाशत्तमोऽध्याय: ॥

व्यासउवाच॥ चरणा दोहा ॥

सांख्यमार्गअरुयोगमार्गसोदुओब्रह्मपद देत। सांख्यमार्गते योगमार्गसोहैअतिक्लेश निकेत ॥

सोरठा ॥

याते दोउनमाहिं सांख्यमार्ग सो श्रेष्ठहै। सो मैं तेरे पाहिं फेरि कहत हौं तात सुनु ॥

दोहा ॥

या भवसागर माहिं जो बूड़त औ उतरात। आश्रय ज्ञान जहाजको करै तौन अवदात ॥

शुकउवाच ॥

आश्रय कीजै ज्ञानको जगते छूटे मुक्त। कहत आपुसो ज्ञानको कहो रूप मति युक्त ॥
जासों जान्योजात है वस्तु तत्व अभिराम। कहत मनीषावान है ताको विद्या नाम ॥
ताहि कहत हो ज्ञान तुम प्रश्नामों अवगाहि। की प्रापक जो ध्येयको परम धरम है ताहि ॥
आत्माको उच्छेद है जिनके मतके माहि। लोकायत ऐसे सुनो संमत तिनको ताहि ॥
कहत ज्ञान हो आपुको तात प्रश्न अवदात। कृपादृष्टि सों जोहिकै कहो मोहि विख्यात ॥
छूटिजात है दु:ख सब जनन मरणको जौन। जासों सो हमको कहो तात ज्ञानके भौन ॥

व्यासउवाच ॥

आत्माको सु अभाव तौ किहि पै ह्वैहै ज्ञान। याते लोकायत मतहि व्यर्थ कहत मतिमान ॥
आपुहिसों जग होत है जौन कहत यहिभांति। प्राप्त होत कल्याणकों कवहुंन तिनकी पांति ॥
कर्ता है संसारको आपुहिसों नहिं होत। जैसे कर्ता कृषीको कृषीकार मतिपोत ॥
भूतनको परूप है ब्रह्म सु नित्यानन्द। अवरूप माया परम जानत सुबुध अमन्द ॥
भूत चारिपरकारके अण्डज उद्भिज तात। होत जरायुज औ स्वेदज ते देखि परतहैं ख्यात ॥
स्थावरनसों श्रेष्ठ है तिनमें जंगम पर्म। वहु विशेष जो चेष्टा करति हमेश सशर्म ॥
जंगम दोय प्रकारके वहुपद औ द्वैपाद। तिनमें श्रेष्ठ द्विपाद हैं जानो यह निर्वाद ॥
खेचर औ पार्थिव सुनो द्विपदहु विधिके दोय। तिनमें पार्थिव श्रेष्ठ है भक्षत अन्नहि जोय ॥
पार्थिव दोय प्रकारके मध्यम उत्तम पर्म। निर्णयको उत्तमनके तुमको तात सशर्म ॥
कहत भेद मध्यमनके सुनहु तौन तुम सर्व। जातिधर्म धारण करत याते श्रेष्ठ अखर्व ॥
मध्याम द्वै धर्मज्ञ एक औ धर्मज्ञ न एक। तिनमें जो धर्मज्ञ सो श्रेष्ठ गुणो सविवेक ॥
धर्मज्ञहु द्वै वेदविद एक एक है और। तिनमें जेहैं वेदविद तौन श्रेष्ठ सह गौर ॥
वेदज्ञहु द्वै होत हैं एक प्रवक्ता पर्म। एक और है दुहुनमें वक्ता श्रेष्ठ सशर्म ॥
वक्ताहूं द्वै होत एक आतमविद एक और। तिन दोउनमें श्रेष्ठ है आतमविद सह गौर ॥

सोरठा ॥

आत्मविद हैं तौन सोई जानहु सर्वविद। सोय सत्यको भौन सोई त्यागी शुचि परम ॥

दोहा ॥

जो वर ब्रह्मज्ञानमें तत्पर रहत हमेश। ताकों ब्राह्मण कहत हैं सुमनस हरण कलेश ॥
सर्व व्यापक जौन हैं आत्मा नित्यानन्द। तेई ब्राह्मण हैं परम जानत ताहि अमन्द ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनके चारु महात्म सम कछू नहीं है और । जे ब्राह्मण हैं मैं कह्यौ तुम्है तात करि गौर ॥
जो प्रापक है ध्येयको परम धर्म औदात । ताको जानो ज्ञान तू निश्चय करिकै तात ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिगोकुलनाथ
कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारत-
दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे शुकानुप्रश्ने एकोणषष्ठितमोऽध्याय: ॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥

ब्राह्मणको आचरण यह कह्यौ तुम्है हम जौन । सिद्धि कर्मकी लहत है ज्ञान बान है तौन ॥
कर्ममाहि जे करत नहिं संशयकों बुधि निद्धि । तौन लहत निश्चय सुनो तात कर्म कीसिद्धि ॥
कर्ममाहि केते कहत पुरुषारथ है हेतु । किते सुभावहि कहत हैं भाग्यहि किते सचेत ॥
सर्व मतनको खण्डिकै योगी जे अवदात । परब्रह्मकों कहत हैं निश्चय कारण तात ॥
चेता द्वापरमाहि अरु कलियुगमें जो होत । तिनजनके मनमाहि शुक संशय करत उदोत ॥
सत युगमें जन होत जे सत्व गुणी अभिराम । समदरशी संमदेह सों रहित होत मतिधाम ॥
ह्वैकै तत्पर वेदमें सर्विधि करत तप पर्म । काम द्वेषसों होयकै रहित खच्च सह शर्म ॥
तपसों औ वरधर्मसों जे जन युक्त सुजान । सर्वकामकी लहत हैं ते जन सिद्धि महान ॥
तपसों ब्राह्मण होयकै जगतहि करत अखर्व । ब्रह्मा ह्वै प्रभु होत है भूतन केरो सर्व ॥

सोरठा ॥

वेदवान है जौन तिन वर वेद विचारमें । नित्य ब्रह्म है तौंन कह्यो परम दुर्ज्ञेय है ॥

दोहा ॥

कह्यो व्यक्त वेदान्तमें तौन योग अतिखच्च । कीन्हे जान्योजात है यह जानत वरदच्च ॥
वेद यज्ञ अरु वर्ण अरु आश्रमको अवदात । ऊतो विभाग न बीचमें चेतायुगके तात ॥
द्वापरमाहि विभाग भो वेदादिकको सर्व । आयु भए तें तात सुनु मनु जन बारी खर्व ॥
द्वापरवारे अन्तमें तिमिही कलियुगमाहि । नाश वेदको लगत है हौन कहत अवगाहि ॥
कलियुग बारे अन्तमें कछूं रहत कछुं नाहिं । प्रवृत अधरम भए धरम रहत नहीं भूमाहि ॥
औषधिको अरु गऊको नष्ट सुरस ह्वै जात । जन अुति बेचन लगत अरु धर्म जौन कछुतात ॥
पोषत जैसे दृष्टि है शुक भौ मन कों सर्व । वेदाध्यायिनको तिमिहि वेद सप्रीति अखर्व ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ
कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां
महाभारतदर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे शुकानुप्रश्ने षष्ठितमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

परम सुकृति श्रीव्यासके सुनिकै शुकएवैन । भूरि प्रशंसा व्यासकी करिकै सो मतिऐन ॥
धर्मारथ अरु मोक्षसों युक्त परम अभिराम । फेरि प्रश्न यह करत भो ससुद होय बुधिधाम ॥

शुकउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

वेदमान मतिमत सखकारी । अनसुयक वर शुभ सम चारी ॥ ऐसो जोजन ब्रह्महि कैसें । प्रापत होत कहो तुम जैसें ॥ व्यासउवाच ॥ विद्या बिना सु ब्रह्मा चारी । औ गृहस्थ तपबिन सुखकारी ॥ वानप्रस्थ इन्द्रिय बिनरोके । औ सन्यासी रुबबिन मोके ॥ केहूं सिद्धि लहत है नाहीं । मैं अवगाही कहत तव पाहीं ॥ परत न देखि ब्रह्म चखसों है । तिमिहि और इन्द्रिय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब सोहै। केहूं परत नहीं है जानो। परत मनहिंसो है अनुमानो ॥ ज्ञानदीपसों जोहत जो है। ब्रह्महि प्राप्त होत जन सो है ॥ सब भूतनमें ब्रह्महि देखै। ब्रह्म माहि तिनकों अवरेखै ॥ ब्रह्महि प्राप्त होत है सोई। निश्चय जानेहु और न कोई ॥ परको औ अपनेको जानै। एकहि और नहीं अनुमानै ॥ देवहु ताके मारगमाहीं। सुनु हे तात सकत चलि नाहीं ॥ इच्छा करत तास पदवारी। जानि मोदता परम सुढारी ॥ अणुहूतें सो सूक्ष्म जानो। औ महतहूते महत बखानो ॥ अन्त सर्वभूतनको सोई। है पै देखत ताहि न कोई ॥

दोहा ॥

ऐसो नित्यानन्द वर ब्रह्म होत है तात। ज्ञानीहूको तास गति दुखसों जानी जात ॥
आत्माके द्वै रूप हैं क्षर एक अक्षर पर्म। क्षर भूतनमें रहत है अक्षर नित्य सधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ
कवीस्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेएकषष्ठितमोऽध्याय:॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥

योगतत्व मैं कहत हौं तुमको अब अब तात। जासो योगी ब्रह्मपद पावत है अवदात ॥
जो जन है शुचि कर्म अरु इन्द्रिय निग्रहकार। योग्य जानिबे तास है ज्ञानपरम सुखकार ॥
स्वप्न लोभ भय क्रोध अरु काम पञ्च ए पर्म। विघ्न योगमें हैं तिन्है करै सुदूरि सुकर्म ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

जीतै रटहि शान्तिसों भारी। मन संकल्पहि तजि दुखकारी ॥ जीतै कामहि शुभमग चारी। सत्वहि धारि अशुभ गण हारी ॥ जीतै निद्राको पणधरिकै। औ जीतै लोभहि धृति करि कै ॥ अप्रमादता धारि सुहाई। जीतै भयहि जानि दुखदाई ॥ ऐसे इन दोषनकों जीतै। जो योगी निज शुभकों चीतै ॥ इनकों जीतै ते यश पीनै। होत पाप माहै अतिक्षीनै ॥ सिद्धि होत है सब उद्गाढ़ै। आनंद दायक ज्ञान सु बाढ़ै ॥ निशिके आदि अन्तके माहीं। मनहि लगावै आत्मा पाहीं ॥ एकहु इन्द्रिय जौ अलगाई। तौ मतिकढ़ति मसकजन नाई ॥ याते सब इन्द्रियके थोकै। अतिही सावधान ह्वै रोकै ॥ चंचल मीनहि धीवर जैसें। पकरत है पहिलेही तैसें ॥ पूर्वहि करिकै सबमें मनकों। पीछे नेत्रादिकके गणकों ॥ मन सह जब षट इन्द्रिय लागैं। बीच आत्माके नहिं भागैं ॥ आत्मा करत प्रकाश महा है। इमि जिमि पावक धूम बिना है ॥ गिरि उतंगके शृंग सुहाए। तिन पै औ तरुतर छवि छाए ॥ योगाभ्यासहि धीरज सेती। करै सुकरि प्रज्ञाहि सचेती ॥ योगते न उद्वेग करावै। मनकों नीकी विधिसों लावै ॥ रहै सुदेवता यतन माहीं। औ जिहि गृहमें कोऊ नाहीं ॥ योगी करै वास वर तामें। औ शून्या पर्वत सुगुहामें ॥

दोहा ॥

ऐसो योगी जौन वर षटमासहि के माहिं। प्राप्त होत है ब्रह्मको यामें संशय नाहिं ॥
शूद्रहु औ नारीहु जौ यहि मारगको पर्म। प्राप्त होंहि तौ परमगति लहिकै होहिं सधर्म ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ
कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे शुकानुप्रश्नेद्विषष्ठितमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुकउवाच दोहा ॥

सुन्यो योग वृत्तान्तमें तुमसों अनुपम सर्व । एक संशय अब तात मो कीजै दूरि अखर्व ॥
कह्योकर्मको करब अरु कह्यो कर्मको त्याग । बेदमाहि सो त्यागते ज्ञान होत बड़भाग ॥
लहत ज्ञानसों कौन गति कर्म किए अरु कौन । गतिकों प्रापत होत है मानव बर बुधिभौन ॥
कर्म तजन अरु करणमें है बिरुद्ध हे तात । कहो मोहि अब गाहिकै बक्ता तुम अवदात ॥

भीष्मउवाच ॥ मधुभार छन्द ॥

सुनिए सुबैन । बरज्ञान ऐन ॥ अवगाहि ताहि । भे कहत चाहि ॥ व्यासउवाच ॥ लहि ज्ञान तात । जिहि गतिहि जात ॥ अरु किए कर्म । जिहि गतिहि पर्म ॥ बर बुद्धि पोत । जन प्राप्त होत ॥ सो कहत तोहि । सुनु तात जोहि ॥

उकठा छन्द ॥

कर्म त्याग है जौन । निश्चत धर्म है तौन ॥ कर्म करब जो तात । प्रश्चत धर्मसो ख्यात ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

बंधे जात जन कर्महि कीन्हें । तजे कर्म बरज्ञानहिं चीन्हें ॥ छूटत याते जे सुमती हैं । गुणिकै कर्महि करत नहीं हैं ॥ बारम्बार लहत हैं देहै । कर्म किए करि परम सनेहै ॥ कर्महि छोड़ि भयेते ज्ञानी । लहत ब्रह्मपद ताहि सुठानी ॥ जिनकी बुद्धिमें न महताई । करत कर्मकी तौन बड़ाई ॥ ज्ञानहि प्राप्त भए जन जेहैं । कर्महि नहीं सराहत तेहैं ॥ जो जल पियत नदीके माहीं । कूपहि तौन प्रसंशत नाहीं ॥

दोहा ॥

कर्म कियेते अरु तजे जिहि गतिकों जन जात । सो गति बिधिसों बर्णिकै कही तोहि बिख्यात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीस्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मेशुकानुप्रश्ने त्रिषष्ठितमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

सुने व्यासके बैन बर प्राप्त भयो जो ज्ञान । ताहि जनावन व्यासकों गुणि शुक बर मतिमान ॥
सुनी बार्त्ता जौन है पूछत है पुनि ताहि । बरा बुद्धिसों बुद्धि बर हिएमाहि अवगाहि ॥

शुकउवाच ॥

माया आदिक सब भए आत्माते हे तात । सुन्यो आपुसों पूर्व मैं प्रश्नोत्तर में ख्यात ॥
साधुनको आचार मैं सुन्योचहत हौं अद्य । तात कृपा करिकै महत कहो मोहि सोसद्य ॥
तजिबो करिबो कर्मको कह्यो बेदके माहिं । कौन कीजिए कर्म अरु कौन कीजिए नाहिं ॥
मैं भो तव उपदेशते पावन परम सुजान । लोकऊके वृत्तान्त में तुमहौ विज्ञ महान ॥

व्यासउवाच ॥ सोरठा ॥

जैसे बर आचार चतुरानन पहिले कहे । ऋषि बर बुद्धि अगार तैसे धारण करत भे ॥

दोहा ॥

ब्रह्मचर्य्यसों परम ऋषि उत्तमलोकहि जात । कीन्हेते बिधिवत सुनो निर्मल मन करि तात ॥

शुकउवाच ॥ सोरठा ॥

करो नहीं ए कर्म परम बेदके वचन ए । तिनमें तात सशर्म अतिही महत बिरुद्ध है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

मोक्ष होयगी तात किमि बिन छूटे कर्म। यह इच्छा है सुननकी कहो मोहिं गुणि मर्म ॥

भीष्म उवाच ॥

गन्धवतीसुत विप्रवर सुनि सुतके ए बैन। भयो सराहत ताहि गुणि ज्ञान परम मतिऐन ॥

व्यासउवाच ॥

फल चारोंआश्रमनको ब्रह्म जानिबो जौन। याते कीन्हे विधिसहित लहत मोक्षबुधिभौन ॥
चारोंआश्रम जौन ते सिढ़ी परम हैं स्वच्छ। इन पै चढ़िकै ब्रह्मकों प्राप्त होत जन दच्छ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे शुकानुप्रश्नेचतु:षष्ठितमोऽध्याय: ॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥

देहादिक जे सर्व हैं हे सुत प्रकृति विकार। तिनमें युत क्षेत्रज्ञ है जानत प्रज्ञ सुढार ॥
जानत है क्षेत्रज्ञ शुक तिनकों अरु ते सर्व। जानत नहिं क्षेत्रज्ञ कों जड़ताते सुअखर्व ॥
सो मनसह इन्द्रियनसों सर्व करत है काज। निज सत्तासों तिन सबहि करि चैतन्य दराज ॥
श्रेष्ठ सुइन्द्रिय ते विषय विषयज्ञते मन पर्म। मनते श्रेष्ठा बुद्धि है निश्चयकरी सगर्म ॥
आत्मा श्रेष्ठ सुबुद्धिते ताहते अव्यक्त। श्रेष्ठ परम जानत सुबुध जौन ज्ञानमें शक्त ॥
सब भूतनमें आत्मा छ्यो रहत है तात। अतिही सूक्षम बुद्धिसों सोहै जान्यो जात ॥
ध्यान परम करि विषयतेचञ्चलमनहिं छुड़ाय। अहंताहि जो देततजि धरिकै शान्ति सुभाव ॥
पावत सो कैवल्यपद गावत जाहि बुधेश। भावत जास कथा सुने ललचावत सुहमेश ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

मनकी निर्मलता सों आछी। पांति शुभाशुभ वारी पाछी ॥ कीन्हे जीति अनिश सुख भारो। ताहि लहत है सुबुध सुढारो ॥ जिमि निर्वातस्थलके मांही। दीप होत कम्पित है नांही ॥ तिमि निर्मल तासों मनवारी। जन नहिं खेद लहत सुखहारी ॥ आपुमाहि आत्माको देखै। दोऊ कालमाहि अवरेखै ॥ दश हजार वेदकी खासी। रिचा तिन्हे मथि मतिसों भासी ॥ यह सिद्धान्त सुढार लह्यौ है। जो तव आगे प्रगट कह्यौ है ॥ शुक नवनीत दहीतें जैसे। भिन्न करत जन तुमकों तैसे ॥ वेदबीचते करि कै न्यारो। यह सिद्धान्त दयो कहि भारो ॥ तत्पर होय धर्मके माहीं। स्नातकादि जन तिनके पाहीं ॥ कहिए यह औरनके सोहें। कबहु ज्ञान चक्षुसो जोहें ॥ वेद विहित व्रत धारत जो हैं। स्नातक विप्र कहावत सोहैं ॥

दोहा ॥

अन्तमई पुहुमी दिए होत जौन फल स्वच्छ। होत सुताहुतें अधिक याकोंकहे प्रतच्छ ॥
दूरि करणके काज मैं तो मनको सन्देह। औरहु पूछै सो कहौं तोकों सहित सनेह ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे शुकानुप्रश्ने पंचषष्ठितमोऽध्याय: ॥

शुकउवाच ॥ दोहा ॥

धर्म और जिहि धर्मतें होय श्रेष्ठ नहिं कोइ। तौन धर्म हमकों कहो कृपादृष्टि सों जोइ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यासउवाच ॥

सर्वधर्मतें श्रेष्ठ अति कियो ऋषिन्ह कोखक्ष। मनको करि एकाग्र सुनु तोकों कहत प्रतक्ष॥

चरणाकुलक छन्द ॥

मतिसों इन्द्रियगणकों रोकै। तासों तजै विषयके थोकै॥ समन इन्द्रियनको जो लगिबो। विषयमांहि सो दुखमें पगिबो॥ यातें तात रोक इनकेरो। श्रेष्ठ सर्वधर्मनतें हेरो॥ सह मन इन्द्रियगणकों मतिसों। रोके सावधानता अतिसों॥ रहै तृप्त जब आत्मामाहीं। करै और व्यापारै नाहीं॥ छूटि विषयतें इन्द्रिय तेरे। लगि है आत्मामें सुत मेरे॥ तब आपुहि तू देखन लगिहै। आत्माहिमें समदम पगि है॥ बिना धूमको पावक जैसो। तेजोमय आत्मा है तैसो॥ ताहि मनीषी ब्राह्मण जेहैं। ह्वै कै निर्मल देखत तेहैं॥ जिमि सुफूलफल युक्त सुढारो। महावृक्ष बहुशाखावारो॥ सो जानत नहिं फूल कहा है। मेरे औ फल मधुर महा है॥ इमिहि न आपुहि आत्मा जाने। धारे बहु लघु बपुष महा ने॥

दोहा ॥

ताको भये प्रकाश बर ज्ञानदीप जो खक्ष। आपुहि देखत आप है आत्मा तात प्रतक्ष॥

चरणाकुलक छन्द ॥

नदी दुःखरूपा अतिभारी। क्रोध पङ्कसों भरी करारी॥ इन्द्रिय पञ्च ग्राह जिहिमाही। महति सर्वदिशि फिरति सदाही॥ मन सङ्कल्प कूल जिहि केरे। काम सर्प जिहिमांहि बड़ेरे॥ लोभ मोह तृणसो है छाई। पापात्मासों तरी न जाई॥ मायाते सो भई महानी। तास न त्वरिता जाति बखानी॥ जगजलनिधिकों प्रापत हो है। होती घोर स्रोत तिहिको है॥ है जतनादि भौंर जिहि माही। अघी परत तिनमांहि सदाही॥ ताकों महति मनीषावारे। तरत परम धीरज को धारे॥ तरत तात यहि सरितहि जो है। जातब्रह्महो ह्वै जन सो है॥ लहत पार ता यहि सरिताको। जो जन करत बड़ाई ताको॥ धर्म धुरन्धर जैन महाने। धीरजमाननमांहि बखाने॥ गुप्त कथा यह तोहि कही है। अधिहि कहनके योग्य नहीं है॥

दोहा ॥

सबधर्मनते श्रेष्ठ अति पूछ्यो जो हो धर्म। तैन धर्म अवगाहिकै तोको कह्यो सधर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे शुकानुप्रश्ने षष्ठपष्ठितमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

भिन्न स्थूल शरीरते अल्प शरीरी जैन। योगी ताहि समाधिमें प्रगट करत हैं तैन॥ नाम चित्त एकाग्रता को समाधि है तात। तासों योगी लहत है आनंदकों अवदात॥

सोरठा ॥

जे योगी अभिमान छोड़ै अपनी देहको। ते जगमाहि महान निर्मोही ह्वै कै फिरत॥

दोहा ॥

लिंग शरीरको प्रथक् सब सब देहन के बीच। योग मार्गमें जे प्रवृत ते हैं लखत निभीच॥ भास्वतके प्रतिबिंब को जिमि जलमाहीं तात। देखतहै संसार में मानव ते विख्यात॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोरठा ॥

लिंगदेह आधीन योगिनके निति रहत है। कामादिक जे पीन तिनकों देत छुड़ाय कै ॥

जयकरीछन्द ॥

स्वप्नजुमें योगीजन जौन। लिंग देहकों जानत तौन ॥
भिन्नस्थूल देहते तात। पगेयोगमें निति अवदात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउहितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मे शुकानुप्रश्ने सप्तषष्ठितमोऽध्याय: ॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥

आत्मा है अज्ञानते भिन्न तात अवदात। सो मैं यहि अध्यायमें तोहि कहत हौं ख्यात ॥

रामगीती छन्द ॥

हियक्षेत्रमें उतपन्न भो है कामतरु अति माम। है मोह ताको बीज जानत जौन हैं बुधि धाम ॥ अज्ञान ताको मूल अरु है शोक शाखा तास। कीलाल सीचन काज ताके जो प्रमाद प्रकास ॥ है ईर्षा शुक पत्र ताके पाप अन्तर छाल। है भयहि अंकुर तास औ चिन्ताहि बिटप विशाल॥ वज्र मोहनी लतिकानसों है वलितभूत महान। है तास धर्माधर्म फल जन चहत जौन अजान ॥

दोहा ॥

यहि वृक्षहि तजि देत जो जन सुख दुखको अन्त। ताको प्रापत होत हैं ज्ञानी परम अनन्त ॥

मोरठा ॥

अज्ञानी हैं जौन काम वृक्ष पै चढ़त ते। डारत है करि तौन तिनको क्षिप्रहि नष्ट द्रुम ॥

दोहा ॥

लहें ज्ञान बल कामद्रुम जात उपास्यौ तात। ताहि उपारत योगविद धीर्य्यवान अवदात ॥

मोरठा ॥

यह शरीर पुर जौन तास स्वामिनी बुद्धि है। चञ्चल ताको भौन मन है तास अमात्य शुक॥

दोहा ॥

पुरजन है तिहि मांहि शुक इन्द्रियजेहैं सर्व। मनबारी ते रहति है अज्ञामांहि अखर्व ॥
तिहि पुरमें द्वै दोष हैं राजस तामस पर्म। तिनमें पौरुष स्वामिनी लागे रहत सुकर्म ॥
अहङ्कारराजसऔतामसकुत्सित पथसों तात। भोगतहैसुखदु:खमहत कौजानतबुधअवदात ॥
सत्वमई है बुद्धि शुक तिहितें निज बशमांहि। राजस औ तामस कबौ तात सकत करिनांहि ॥
राजस तामस लेत करि मनकों निज बशमांहि। मनकी समता गहति मति होत जबैमनपांहि ॥
स्वामिनि भई अमात्यके जो संगमांहि मलीन। तौ मलीन क्यों होहि हे सुनु शुक पुर वासीन ॥
मनकों प्रापत होति है खेद सुभए कुकर्म। मन संग खेदित होति है बुद्धिहु तात सधर्म ॥
बुद्धिमांहि शुक रहत है आत्माको आभास। यहि कारणते तौनहूं पावत खेद प्रकास ॥
मनहीं याते जानिए महा दु:ख को हेत। राजस तामसमांहि जो कीन्हे रहत निकेत ॥
ज्ञान होय जिनकों सुने ऐसे मैं इतिहास।। तोहि सुनाए बहुत हैं तनिकै बुद्धि प्रकाश ॥
तिनकोगुणिबशमांहिकरिमनइन्द्रियसह तात। गुणिअनित्यसंसारसोरहितहोहुअवदात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच सोरठा ॥

कहे ज्ञानके काज शुकहि व्यास इतिहास जे। ते तुमकों नरराज कहे तिन्हें हियमें गुणौ ॥

स्वस्ति श्री कशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्री बजन्दीनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्ने अष्टषष्टितमोऽध्याय:

युधिष्ठिरउवाच दोहा ॥

मनकों कीबो शान्ति जो सो है जनकों श्रेय। कह्यो पूर्व अवगाहि कै मोकों यह गांगेय ॥
अन्त समय में शान्ति मन आपुहिसों है जात। शान्तिकाज क्यौं कीजिये यातें साधन तात ॥
जोतुमइमिहनकोंकहौमतिसोंगुणिहियमांहि। तौथिरिकरिकैमनहितुमसुनोकहततबपांहि॥
गतप्राण जे भूमिमें परे भूप बलवान। मृतक शब्द कैसें भयो तिनकों प्राप्त सुजान ॥
प्राप्त होत है शान्ति जो अन्त समय के मांहि। मनकों सो भूपालसुनु रहति निरंतरनांहि ॥
मृत्यु कौन किहितें भई कैसी बिधिसों तात। करति प्रजा संहार किमि कहो मोंहि बिख्यात ॥

भीष्मउ वाच ॥

शान्तिकाज यातें करै साधन सबिधि सुप्रज्ञ। शान्ति लहत मन तब महत होत शरम धर्मज्ञ ॥
यहि प्रसंग मैंकहत हौं एक इतिहास अनूप। ता मांही संबाद है मृत्यु द्रुहिण को भूप ॥

मनोहरछन्द

सतयुगमें अनुकंपक भूप। महापराक्रमवान अनूप ॥ होत भयो सो सत्वाधीन। महत समरके मांहि प्रबीन ॥ हरि नामा ताको सुत पर्म। हरि समान सों बली सुकर्म ॥ ताहि हनत भे शत्रु अखर्ब। युद्ध मांहि लरि क्रुद्ध सगर्ब ॥ पुत्र शोक तासो अति पीन। होत भयो अनुकंपक छीन ॥ मिलत भए नारद ऋषि ताहि। तिनको अनुकंपक नृप चाहि ॥ बर्णि युद्ध को सब वृत्तान्त। कहत भयो सुतशोक नितान्त ॥ नारद सुनि भूपति के बैन। कहत भए एक कथा सचैन ॥ पुत्र शोक कीबेको दूरि। अनुकंपक भूपतिको भूरि ॥ नारदउवाच ॥ भूपति तोहि एक आख्यान। अब कहत बिस्तरित सुठान ॥ प्रजा बनावत भो लोकेश। बढ़ति भई सो बहुत नरेश ॥ तिनमें मरै सुकोऊ नाहिं। भूरि भीरि भी भूके माहिं ॥ प्रजा होति भी बिकला सर्ब। बिधि करि चिन्ता देखि अखर्ब ॥ प्रजा नाश को मनके माहिं। बिधिके कारण आयो नाहिं ॥ कियो बिचार बहुत बहुबार। तातें बाढ़ो क्रोध अपार ॥ कढ़त भयो इन्द्रियते ज्वाल। सो जारत भो प्रजहि बिशाल ॥ देखि प्रजाको पीड़ित ईश। भए द्रुहिण पैजात महीश ॥ ब्रह्मा देखि शंभुको बैन। कहत भयो ऐसे बल ऐन ॥ जो तुम कहो करैं हम तौन। शंकर पशुपति गिरिजा रौन ॥

स्वस्तिश्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे मृत्यु प्रजापति संबादे एकोणसप्ततितमोऽध्याय: ॥

स्थाणुरुवाच ॥ चरण दोहा ॥

प्रजातुम्हरीबिरची है यह यापै क्रोध करौन। तवकोपानलसोंहैपीड़ित धीरजजात धरौन ॥

प्रजापरिरुवाच ॥

इच्छाप्रजान न हौंनकीहै मोमनमेंनाहिं। क्रोध कियोलखिवहुप्रजा सत्य कहततब पाहिं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भार प्रजाको पाय बड़ धरणी जब जलमाहिं । बूड़न लागी प्रार्थना करी आय मो पाहिं ॥
तब मैं प्रजा संघार को भयो विचारत हेतु । देखि परो एको न तब कियो क्रोध दृपकेतु ॥

स्थाणुरुवाच ॥

करहु क्रोध लोकेश मतिप्रजा नाशकेकाज । तब रुद्र शिखिसों जायगीजरि सबप्रजा दराज ॥
सर्व प्रजा को चाहिए नाश नहीं लोकेश । याते क्रोधा नलहि तुम देहु दबाय अशेश ॥
जाते होय नहीं सुनो नाश प्रजाको सर्व । ऐसी और उपाय तुम हीमें गुणो अखर्व ॥

बरवैछन्द ॥

उदभव होय प्रजा को बारंबार । द्रुहिणप्रार्थना यहमैं करत उदार ॥

नारदउवाच ॥ दोहा ॥

महादेवके बैन ए सुनि करिकै लोकेश । कर्षत भे जिन तेज जो बगस्यो हुतो विशेश ॥
करपि तेजको प्रजाके जनन मरण के काज । भए कल्पना करतश्रीद्रुहिण देव शिरताज ॥
छेद्रन ते लोकेश के तदनु मृत्यु कढ़िबाम । कृष्ण रक्त पेहें बसन भूषण धरे ललाम ॥
धारेकुण्डल द्रव्य अति श्यामल लोचनताश । खरीभई दक्षिणदिशहि सो बड़ भरी प्रकाश ॥

जयकरीछन्द ॥

देखत भे बिधि औ हर ताहि । भरी तेजसों अति अवगाहि ॥ ब्रह्मा ताको निकट बुलाय । कहत भए इमि वचन सचाय । करु तू नाश प्रजाको माम । मेरी आज्ञासों है बाम ॥ बचन द्रुहिण के ए सुनि बाल । रुदन करति सो भई बिशाल ॥ क्रमसों प्रजा नाशके काज । अश्रु मृत्युके सुर शिरताज ॥ लेत भयो आनंद सों छाय । सुनु अनुकंपक बर नरराय ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे प्रजापतिमृत्यु संवादे सप्ततितमोऽध्याय: ॥

नारदउवाच ॥ दोहा ॥

सुनि ब्रह्मा के बैनए मृत्यु जोरिकै पानि । कहत भई बाणी सुइमि मृदुता भरी महानि ॥
धर्म होय जिहि कर्ममें ऐसो कहिए मोहि । लोकनाथ मोवोर तुम कृपा दृष्टि सों जोहि ॥
जामें अधरम होत है ऐसो जो है कर्म । तासों अतिहीडरति हौं मैं हौं द्रुहिण सधर्म ॥
नाश प्रजाको होयगो मोसों नहिं लोकेश । मोहिं करो आज्ञा न यह करिकै तुम सविशेश ॥
संबंधी जिन जननके हनिहौं तिनको शाप । ताते धारणकरति हौं साध्वस अतिहि अमाप ॥

चरण दोहा ॥

बहिहैंआसू दीनजनन के ते बहुदिनलोंमोहिं । दाहैंगेयाते शरने मेंराखहु रतिसों जोहिं ॥

दोहा ॥

श्री इच्छा है तप करण मोको हे लोकेश । आज्ञा मोको दीजिए करिकै कृपा विशेश ॥

पितामहउवाच ॥ रामगीतीछन्द ॥

सुनु प्रजाके संघारबेको हम बनाई तोहि । करु और तू न विचार हीमें मृत्यु हे इत जोहि ॥
जो कह्यो हम है तोहि ह्वैहै अन्यथा नहिं तौन । मम बचन याते मानिकै संहार को करि गौन ॥ ए बैन सुनिकै विधाता के कछु न बोली बैन । अतिनम्र ह्वैकै भई सोहें खरी सुनु बलऐन ॥ सो भई होती प्राणगतसी तब भूप उदार । करु प्रजा को संहार ए सुनि बचन बारंबार ॥ लखि मृत्यु बारी दशा बिधि सुनि कछू बोले नाहिं । सब लोक देखत भए मोदित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होयकै मन माहिं ॥ जब क्रोध विधिको दूरि भो तब गई तहं ते बाल। गो तीर्थको विधि बैन अंगीकारकै न नृपाल ॥ तहं जाय करिकै तपस्या सो भई करति महान। एक पांव सों ह्वै खरी पन्द्रहपद्म वर्ष सुजान ॥ तहं जाय करिकै ताहि ऐसे कहत भे लोकेश। मम बैन अंगीकार करु तू मृत्यु हे शुभ वेश ॥ ए बैन विधिके तिन्हैं लाई मृत्यु सो मन मैन। पुनि बीस पद्मसु एक पदसों कियो तप बलऐन ॥ दश सहस पद्मसु रहीसो पुनि पद्मुनमें भूपाल। द्वै अयुत वत्सर कियो वायुअहार हे तिहि बाल ॥ नृप तदनु ग्यारहसहस वत्सर कियो तप जलमांहि। वर कौशिकी जो नदी ताके भई जाती पांहि ॥ तहांहूं रहती भई जल वायु भक्षि नरेश। सो तदनु जातीभई श्री सुरसरीकों शुभवेश ॥ तहं भई रहती दासवत ह्वै रहितचेष्टा बाल। सो तदनु गिरि हिमवान ऊपर जाय कै महिपाल ॥ जहं किए देवन यज्ञ हे तहं कियो तप अभिराम। वर वर्ष एक निखर्वलौं विधि सह अखर्व ललाम ॥ तहं करि प्रसन्न सु विधाता कोंकहतिभी इमि बैन। सुनु प्रजाको संहार मोसों होयगो नहिं ऐन ॥ इमि वचन कहिकै भई परती विधाताके पाय। विधि तदनु ऐसी भांति मृत्युहि कहत भो समुभाय ॥ सुनु मृत्यु तोको होयगो न अधर्म करु संहार। यह कर्म माहीं प्राप्त ह्वै है तोहि पुण्य अपार ॥ हम रहैं गे सहसुरन तत्पर नित्य तव हितमांहि। मैं देत हौं वर दान तोकों जानु मिथ्या नाहिं ॥ बहु व्याधिवारे व्याजसों नहिं तोहि देहैं दोष। सब प्रजा याते आपने मनमें न करु अपसोस ॥ तू पुरुषके तट पुरुष ह्वैहै नारिके तट नारि। औ नपुंसकमें होयगी तू नपुंसकहि सुढारि ॥ ए बैन सुनिकै विधाताके नोरि मृत्यु सुपानि। इमि कह्यौ ए मति कहो मोकों वचन हठकों ठानि ॥ ए वचन सुनिकै मृत्युके विधि कह्यौ इहि विधि भूप। नहिं तोहि ह्वैहै दोष प्रापत निजुहि जानु अनूप ॥ तव अश्रु जे हे गिरे पूरब धरे तेहैं सर्व। सुनु मृत्यु ह्वैहैं रोग ते दुखदाय परम अखर्व ॥ यह प्रजा जो है नाशमाहीं तास तिनको नाम। ह्वैहै न तेरो होयगो करु हिए निश्चय साम ॥ सब प्रजा पीछे काम क्रोधहि मृत्यु देतू लाय। क्रमसों सु अन्त अनेहमाहीं मम सु आज्ञा पाय ॥ डरि शापसेती विधाताके कह्यौ ऐसी भांति। तव लहे आज्ञा हनोंगी मैं प्रजावारी पांति ॥ सो प्रजा अन्त अनेह-माहीं काम क्रोध लगाय। मृत्यु हनती भई क्रमसों प्रजाको नरराय ॥

दोहा ॥

मृत्यु अक्षिके अश्रु जे तेई हैं रज सर्व। प्राप्त होति है तिनहिसों दुखको प्रजा अखर्व ॥
विधिकी आज्ञा पाय कै याविधिसों अचलेश। मृत्यु हनति है प्रजाको याते करु न कलेश ॥
अन्तकाल जब होत है जनको प्रापत आय। निश्चय ताको करति है नाश मृत्यु नरराय ॥
यह गुणि कै तुम शोचको प्रापत होहु न भूप। तव सुत दिवमें प्राप्त ह्वै पावत मोद अनूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीस्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषाया महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेमृत्युप्रजापतिसंवादेएकसप्ततितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

मृत्यु हनति है प्रजाको रोग व्याजसों तात। कह्यौ पूर्व अध्यायमें यह गुणि कै विख्यात ॥
रोग निरन्तर रहत है तनमें कीन्हे वास। निवृति होति तनकी सुनो भए सुधर्म प्रकास ॥
यातें मोकों धर्मको कहो स्वरूप बखान। धर्म प्रवक्ता आपुही हौ भू बीच महान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहिहि लोकमें करत है जनकी धर्म सहाय। परलोकहुमें करत की दुओ लोकमें राय ॥

भीष्मउवाच ॥

सदाचार अरु स्मृति अरु वेद सुअरु वर अर्थ। ए लक्षण हैं धर्मके चारि महीप समर्थ ॥

सोरठा ॥

जासों जानो जाय ताको लक्षण नाम है। परउपकार सचाय की वो धर्म महान अति ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द ॥

दुहूं लोकमें देत है धर्म धर्मै। महापापसों देत है दुःख पर्मै ॥ सुनो है करै धर्म याते सदाही। नहीं पांव दे पापके मार्ग माही ॥ सभामें महीपाल कीन्है निशंकै। सदा जात धर्मी धरै हीन शंकै ॥ अधी जात है नित्यही शंक धारे। कपै भूपको वज्र भौ हैं निहारे ॥

दोहा ॥

लक्षण जो है धर्मको कह्यौ तोहि सो आम। ऋजुतामें तुम नित्यही प्रवृत रहो बुधिधाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतकथनोदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे धर्मलक्षणनामो द्विसप्ततितमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

वर सूक्ष्म जो धर्मको लक्षण अति अभिराम। ताहि कह्यौ अवगाहि मोहि कैसुपितामह आम ॥ आपु कह्यौ सिद्धान्त है पै कुतर्क करि एक। पूछत हौं शङ्काभई मो मनमें सविवेक ॥ उत्पति थिति संहारए आपुहिसों सबहोत। धर्मकहा है करत नहिं अनुभव तास उदोत ॥ अज्ञानी ते धर्म गुनि करत अधर्माचर्ण। ज्ञानी ते सुअधर्मसों धर्म करत शुभ कर्ण ॥ वेद विहित जो धर्म है युगयुगमाहीं तास। एक भाव नहिं रहत है होत जात है ह्रास ॥ और सुनो एक धर्मको करत दोय तिनमांहि। एक लहत आनन्दकों एक लहत है नांहि ॥ यातें मनमानै कहो कैसे धर्म प्रमान। अप्रमाण जो धर्म भो तौ है तात सुजान ॥ अप्रमाण भो वेद औ स्मृतिहूको अवदात। मूल धर्मको श्रुति स्मृति यहिकारण ते तात ॥ पूरवतें आए करत धर्म महत जन पर्म। यातें करनो है न पै धर्म प्रमाण सु कर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारत दर्पणे शांतिपर्वणि मोक्षधर्मे त्रिसप्ततितमो ऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥

यहि प्रसंगमें कहत हौं एक इतिहास अनूप। जाजलि नामा सिद्ध एक तेजोमय अति भूप ॥ बणिक एक मतिमान वर तुलाधार तिहिनाम। तामें है संवाद तिन दोउनको बलधाम ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

जाजलिनामा द्विज वनचारी। तेजोमय मतिमत शुभकारी ॥ करत रह्यो तप सागर-पाहीं। मनकों करिकै थिरता माहीं ॥ होय जटाधर धरि मृगछाला। कियो उतम वज्र-वर्ष बिशाला ॥ कछूकाल रहतो भो जलमें। महा सुधीवर अति निर्मलमें ॥ लोकनकों नो जलके माहीं। देखत भो इमि जिमि निजपाहीं ॥ लखि इमि कहत भयो मुनि मनमें। भो सम और न वर द्विजगणमें ॥ तब पिशाच इमि बोले तासों। इमि न वचन कछु सुनि मेधासों ॥ तुलाधार एक बणिक सुहायो। काशीमांहि रहत सुखछायो ॥ कहते नहीं बणिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो ऐसें। बचन कहत तू सगरबत तैसें ॥ यह सुनिकै भूतनकी बानी। कहत भयो जाजलि अभिमानी ॥ तुलाधार हम देख्यो नाहीं। ए भाषण सुनि ताके पाहीं ॥ आय निकारि नीरतें नीको। भए दिखावत पथ काशीको ॥ जाजलि सो काशीमें आयो। तुलाधार तट गुणसों छायो ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

कहा कर्म कीन्हो ऊतो जाजलि उग्र महान। परम सिद्धिको प्राप्त भो जाते बर मतिमान ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

करतो भयो तपस्या भारी। जाजलि बिप्र वेद मगचारी ॥ धर्मबीच सो नितिही पागो। अधरममें न कबहुं अनुरागो ॥ तपतमांहि पंचागिनि तापै। बर्षामांहि सहै सो आपै ॥ ऋतु-हिमन्तमें जलमें ठाढ़ो। रहै धारि धीरजकों गाढ़ो ॥ कियो तपहि यहि भांति महानै। पै आन्यो न हिये अभिमानै ॥ एक समय में सो भुशांई। बनमें खरो काष्टकी नांई ॥ ताकी घनी जटोमें अच्छी। नृप कुलिंग नामा बर पच्छी ॥ नीड बनावत भये सुठानो। जाजलि द्विजबर तिहिकों जानो ॥ भयो नेकहुं चञ्चल नाहीं। पंछी रहत भए तिहिमाहीं ॥ भूप सुनो जब बीती बर्षा। तब तिन अण्ड दए वे धर्षा ॥ अण्ड दए जाजलि द्विज जाने। चञ्चल भो न धीर्य को ताने ॥ रक्षा करत भए तिन केरी। ते पच्छी करि प्रीति घनेरी ॥ जब सुअण्ड फूटे पकि नीके। अण्डज दोय भए शुभ श्रीके ॥ बढ़त भए ते तबहि दोऊ। बिप्र न अंग हलायो कोऊ ॥ समय पाय ते परम सुढारे। भए सपक्ष होत बलवारे ॥

दोहा ॥

आतमजनको लखि बढे दुओ कुलिंग सहर्ष। तास जटामें रहत भे सुनहु भूप उतकर्ष ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

प्रातहि ते बनमें उड़ि जावैं। सांझभए ते फिरि तहं आवैं ॥ पच्छी एक समयके माहीं। पांचदिवसलौं आए नाहीं ॥ तबहु न जाजलि अंग हलायो। खरो रह्यौ धीरजसों छायो ॥ षष्ठम दिन ते पच्छी आए। रहे जटामें सुदसों छाए ॥ तदनु गए उड़ि फिरि बनमाहीं। एकमासलों आए नाहीं ॥ अब ऐहैं न इहां ते पच्छी। तिनकों जगह मिली कछुं अच्छी ॥ यह जाजलि गुणिकै निजु मनमें। तहंते जात भयो सो बनमें ॥ भयो बिचारत मनमें पूरी। आपु तपस्या अपनी रूरी ॥ आपु समान और जगमाहीं। तपस्वी और सुजानत नाहीं ॥ एक समयमें नदी सुढारी। ताहि प्राप्त ह्वै सो बनचारी ॥ करि स्नान तरपणकों करिकै। रविकी सुस्तुति करी सुद धरिकै ॥ तदनु कहत भो इमिमनभायो। धर्मको सुफल सुमैं अब पायो ॥ तदनु भई ऐसे नभबानी। जाजलि कहाभयो अभिमानी ॥ तुलाधारके सम भूमाहीं। धर्मी अबहि भयो तू नाहीं ॥ तुला धार कबहु नहिं ऐसे। कहत कहत तू जाजलि तैसे ॥ सुनिकै नभबाणी बनचारी। करि उत्पन्न क्रोध अति भारी ॥ तुलाधारको देखन काजै। फिरत भयो भूमांहि दराजै ॥

दोहा ॥

कछू दिवसमें काशिकामें भो प्रापत आय। बैठो ऊतो दुकानमें तुलाधार नरराय ॥ बेचत ऊतो घृतादिकों ताहि लखत भो बिप्र। लेत भयो जाजलिहि सो सादर उठिकै क्षिप्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलाधारउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

तुम आवोगे मेरे पाहीं । हम न तजा है निजु मनमाहीं ॥ जो हम तुम्हैं कहत सो सुनिए । ताहि आपने मनमें गुणिए ॥ प्रथम सिन्धुमें तप तुम कीन्हों । पै सुधर्मको रूप न चीन्हों ॥ जब तब जाजलि भो तप पूरो । तब तेरे शिर ऊपर रूरो ॥ पक्षिन नीको नीड बनायो । सुखदायक अति परम सुहायो ॥ अण्डज भए तीनमें आछे । भए प्रौढ़ बहुदिन करि पाछे ॥ तिनको ते जाने मनमाहीं । चञ्चल करी देह निज नाहीं ॥ ते उड़िगे पक्षी तब जानो । सिद्धि भयो सो धर्म महानो ॥ बोल्यो जबते है अभिमानी । तब है तोहि भई नभबानी ॥ सो सुनि भूरि क्रोधसों छायो । ढूंढ़त मेरे निकटै आयो ॥ जाजलि विप्र कहत हैं तोकों । अब मैं करौं कहै जो मोकों ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीस्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेजाजलितुलाधार संवादेचतुःसप्ततितमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

श्रीजाजलि वर विप्र ए तुलाधारके बैन । सुनिकै ऐसे कहत भो ताहि मनीषा ऐन ॥

जाजलिरुवाच ॥

बेचत है तू सर्वरस औ हैं गन्ध जितेक । औ बेचत है औषधी हैं भू मांहि तितेक ॥ ऐसी मतिको प्राप्त भो तू किमिकछु अवगाहि । तुलाधार सुनु बनिकभो अचरज तोको चाहि ॥

भीष्मउ वाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

जाजलिको सुनिकै यह बानी । तुलाधार वर बनिक सुज्ञानी ॥ धर्मतत्व सूक्ष्म अति ताको । कहत भयो तनिकै मेधाको । तुलाधार उवाच ॥ जन महान जानत जिहि धर्मै । जानत ताको मैंहूं पर्मै ॥ द्रोह सोय भूतनको नाहीं । अथवा अल्प होय जिहिमाहीं ॥ ऐसी जो है वृत्ति सुढारी । ताहि करत हौं मैं बनचारी ॥ काष्ठनसों औरनके काटे । मैं अपने सदननको पाटे ॥ चन्दनादि वर गन्ध सुआछा । बेचत हौं औ सुनु द्विज लाछा ॥ औ लवणादिक रसकों लैकै । तास मोल तजि कपटै हैकै ॥ उचित न फालै बेचत ताही । कपट छोड़ि कहि गाहक पाही ॥ मन वच कर्मसों न अपकारै । परवारे जो कबहु विचारै ॥ धर्महि सोय जगतमें जानै । और नहीं कोऊ अनुमानै ॥ कौनहु मैं न कामना राखों । मिथ्या कबहु नहीं हौं भाखों ॥ जो जन मोहि वचन कटु भाखै । तास द्रोह सो मन नहिं राखै ॥

दोहा ॥

न स्तुति काहूकी करत काहू की निन्दान । जानत हौं संसारको मैं अनित्य मतिमान ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

सोना औ मृतिकामें मानों । हौं मैं एकभाव निज जानों ॥ पुत्र पिताके धर्महि धारै । जैसी विधि करि परम विचारै ॥ धर्महि तिमिहि अहिंसक वारे । धारत हौं मैं परम सुढारे ॥ अभय देत सब भूतहि जो है । आपहु अभय कहत जन सो है ॥ यह गुणिसब भूतहि जगमाही । मैं हौं देत सु अभय सदाही ॥ प्राणी देखि डरत है जाको । होत न धर्म प्राप्त है ताको ॥ चन्द्रादित्य वायु अरु धाता । औ यम भूतनमें अख्याता ॥ बसत सुनो जाते भय नाही । दीजै भूतनको सु सदाही ॥ अज ऋषि मेष वरुण है जानो । औ है अश्व अर्यमा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो ॥ धरणी धेनु बत्स निशि राजा । जानो जो करि लोभ दराजा ॥ इनको बेचत सो नहिं पावै । कबहु सिद्धि अति दुखसों छावै ॥ इमि मैं महत जननसों सुनिकै । यह नहिं कर्म करत हैं गुणिकै ॥

दोहा ॥

जानत लोकाचारसों तू धर्महि द्विज पर्म । कहा किए का होतहै यह नहिं गुणत समर्म ॥
कीजै तौन बिचारिकै ज्ञान दृष्टिसों जोय । बिना बिचार न कीजिए कारज कबहूं कोय ॥
जो निन्दा मेरी करत अरु जो सुस्तुति खच्च । राखत हैं सम भाव तिन दोउनमें मैं दच्च ॥
धर्म कह्यो यह तोहि जो तास मनोषी पर्म । करत प्रशंसा है महा जाजलि बिप्र सधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मे जाजलि तुलाधारसंबादे पंचसप्ततितमोऽध्याय: ॥

जाजलिरुवाच ॥ दोहा ॥

धर्म कह्यो यह जौन ते प्रष्टत भए तिहिमाहिं । सिद्धिहि दोऊ लोककी लहि है मानव नाहिं ॥
जीवत पशु अरु अन्नसो मनुज होत औ यच्च । नास्तिकलौ तू कहत है कहा बणिक बर प्रच्च ॥
बिना जीविका कौन बिधि रहिहैयह संसार । होयसकतिनहिं जीविका किये धर्म तबचार ॥

तुलाधारउ बाच ॥

नास्तिक हैं नहिं बिप्र मैं तोहि कहत हैं दच्च । हिंसासों जो रहितहै चारु जीविका खच्च ॥
करत न निन्दा यच्चकी यच्च बिष्णुको रूप । दुर्लभ है जन यच्च बिद जाजलि प्रच्च अनूप ॥
बिप्रयच्च भगवान है छोड़त है जन ताहि । जाजलि बिप्र अनूप बुध करत नहीं अवगाहि ॥
अग्निष्टोमादिक सुनो चाचयच्च है जौन । हिंसा मय तिनकों करत पगि जन दुर्मतिभौन ॥
यच्चनको स्वर्गादि फल लिख्यो बेदके बीच । पै आत्माको जानिबो फल सिद्धान्त निभीच ॥
ताहि बिचारत हैं नहीं बरमतिसों अवगाहि । मिथ्या फल स्वर्गादिमें लगे रहत हैं चाहि ॥
आत्माको जो जानिबो ताकोजे बुध यच्च । करत नहीं स्वर्गादिकी राखि कामना प्रच्च ॥
द्रव्य प्राप्त भो सुकृतसों तासों सुमन सपर्म । नमस्कार स्वाध्यायसों तुष्टित होत सुकर्म ॥
जानो इन तीनहुनकों ब्राह्मण मखके हव्य । अति उत्तम तुम बिप्रबर जाजलि बिप्र सुभव्य ॥
परमेश्वरकी प्रीति बिन जौन करत है यच्च । कुत्सित ताकी होति है प्रजा बिप्रबर प्रच्च ॥
लुब्धहि सन्तति होति है लुब्धनके बुधिधाम । प्रजा अलुब्ध अलुब्धके होति परम अभिराम ॥
करत यच्च जन जौन है फलमें करि सन्देह । ताको फल नहिं यच्चको प्राप्त होत मतिगेह ॥

जाजलिरु बाच ॥

कह्यो धर्म यह गुप्त ते हम न सुन्यौ अबलौन । सो काहूके बदनसों तुलाधार बुधिभौन ॥
कौन कर्म कीन्हे महत सुखकों प्रापत होय । प्राणी कहु फिरि मोहि तू ज्ञानचक्षुसों जोय ॥
मेरे यहा है महति सुनिबेकी तो बैन । महा मुनिनकी होति मति तैसी है तव ऐन ॥

तुलाधारउबाच ॥

यच्च जौन जन करत हैं हीमें करि अभिमान । ते नहिं फलको यच्चके प्रापत होत अजान ॥
एक गऊहीसों लहत यच्चनको फल चारु । जे जन श्रद्धावान हैं सुमती परम उदारु ॥
श्रृंगनमें सुरभीनके तीर्थ रहत हैं सर्व । गोश्रृंगोदक स्नानते यातें प्रच्च अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व तीर्थके स्नानको होत प्राप्त फल पर्म। गो पद रज ऊपर परै कलमष नशत सुकर्म ॥
श्रद्धा सह जाजलि किए धर्म पर्म अभिराम। शुभलोकनको होत है प्राप्त मनुज बुधिधाम ॥

भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥

तुलाधार जे धर्म कहे स्वच्छ अवगाहि कै। साधुनसों ते पर्म सेवित हैं निर्दोष अति ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे तुलाधारजाजलिसंवादेषष्ठिसप्ततितमोऽध्याय: ॥

तुलाधारउवाच ॥ दोहा ॥

सुजन कुजनके मार्ग जे तिनको तू द्विज देखि। देखैगो तव परैगो भलो बुरो अवरेखि ॥
ए पक्षी बहु जातिके चहूं ओर को धाय। अपने अपने नीडमें प्राप्त होत हैं जाय ॥
तव शिरमांहि कुलिंग जे भए ऊते हे विप्र। तिनको तो शिर नीड है तिन्हैं बुलावहु क्षिप्र ॥
तुलाधार के वैनसुनि जाजलि विप्र सचैन। भयो बुलावत भूप तिन पक्षिनकों मतिऐन ॥
जाजलिके प्रिय वचन सुनि बोलत भए विहंग। धर्ममए वर वचन अति ऋजुता भरे उतंग ॥
हिंसासों जे रहित जन तिनके कर्म सुढार। रहत प्रकाशित लोकमें दोऊ प्रज्ञ उदार ॥
हिंसा जो सो धर्मकी नष्ट करति श्रद्धाहि। बिनश्रद्धा विश्वास वर रहत धर्ममें नाहि ॥
यातें हिंसा त्यागतें सिद्धि होत है सर्व। हिंसा में रत जे नहीं ते हैं प्रज्ञ अखर्व ॥
श्रद्धासों सब होत है श्रद्धा बिन नहिं एक। याते श्रद्धा सह करै कार्य्य सर्व सविवेक ॥
ब्रह्माकी गाई कथा कहत पुराणे प्रज्ञ। अब सुनो जाजलि सुद्विज ताहि प्रगट वरविज्ञ ॥
अति पवित्र है आपु पै श्रद्धा हिए न तास। अरु जो है अपवित्र पै श्रद्धावत मतिरास ॥
तिन दोउनके द्रव्यको जानत देव समान। धन उदारको श्रेष्ठ है श्रद्धातेंहि महान ॥
लीजै अन्न उदारको कृपिण जननको नाहिं। श्रद्धा होति न कृपिणमें यह गुणि कै हियमाहिं ॥
परम अश्रद्धा पाप है श्रद्धा नाश निपाप। श्रद्धावान समान है और न दुद्धि कलाप ॥
यातें तू श्रद्धाहि करु जाजलि विप्र सुजान। श्रद्धातें तू पाय है परपद निति सुखवान ॥

भीष्म उवाच ॥

तदनु विप्र औ बणिक वर श्रद्धावान निभीच। ब्रह्मभावको लहत भे थोरेहि दिनके बीच ॥
तुलाधारकी उक्ति वर बहुत अर्थ जिहिमांहि। कही ताहि अवगाहि कै मैं नृप तेरे पांहि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजा धिराजश्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना विरचिते भाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे तुलाधारजाजलिसंवादे सप्तसप्ततितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

श्रद्धासह कारज करत सो फल उत्तम देत। कह्यो पूर्व अध्यायमें मोको बुद्धि निकेत ॥
सो सुनि कै मेरे हिये भयो तात सिद्धान्त। कहिए अब एक और मैं पूछत हौं वृत्तान्त ॥
करै परीक्षा कार्य्यकी तुरकी लहि चिरकाल। कहो मोहि अवगाहि कै वक्ता आपु विशाल ॥

भीष्मउ वाच ॥

इह प्रसंगमें कहत हौं एक इतिहास अनूप। चिरकारी नामा सुद्विज ज्ञानवान वर भूप ॥
ताके शुभ आचरणको तामें है वृत्तान्त। मन थिरि कै ताको सुनो कुन्तीसुत क्षितिकान्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहर छन्द ॥

चिरकारी वर विज्ञ विशाल। गौतमऋषिको सुत क्षितिपाल ॥ बहुत कालतौं प्रथम विचार। करिकै कारज करै सुढार ॥ यातें चिरकारी भो नाम। गौतम सुतको मेधाधाम ॥ कहत आलसी बहुजन ताहि। करत विचारहि जे जननाहि ॥ एक समयमें माता तास। रमति भई परसंग सहुलास ॥ तास पिता तब ऐसे बैन कहतो भयो ताहि मति ऐन ॥ अपनी माताको हनि डारु। अब तू न करु और विचारु ॥ सुनि ए बचन पिताके तौन। कहत तथास्तु भयो मति भौन ॥ तदनु तौन मनमाहि विचार। करत भयो क्षितिनाथ उदार ॥ आज्ञा पितुकी किमि मानौन। कैसें मारहुं माता जौन ॥ क्यौं न धर्म संकटमें हाय। बूड़ौं अज्ञनतौ दुख छाय ॥

दोहा ॥

पितुकी आज्ञा मानिबो सो है उत्तम धर्म। औ रक्षण जो मातको सोउ धर्म है पर्म ॥

जयकरीछन्द ॥

प्रथम नारिको हनिबोखात। परम पाप ताहूमें मात ॥ ताको हनिकै को जगमांहि। दुखको प्राप्त भयो है नांहि ॥ औ पितुकी माने आज्ञान। कौन प्रतिष्ठा लही महान ॥ भो उत्पन्न दुहुनसों खच्च। मैं संसार मांहि परतच्च ॥ ए किमि मोसों दोऊ काज। सिद्धि होहि मो शोच दराज ॥ पितुकी आज्ञा मानत जौन। दूरि करत अघ निजको तौन ॥ याते पितुकी आज्ञा ताहि। कीजै परम धर्म अवगाहि ॥ लहे पिताकी कृपा अखर्ब। करत कृपा देवत हैं सर्ब ॥ दुःख लहेहू छोडत नाहिं। पिता पुत्रको राखत पाहिं ॥ ऐसो पिता होत जगमाहिं। मानो ताकी आज्ञा नाहिं ॥

चरणा दोहा ॥

होत पिताको गौरव ऐसो कीन्हों तास विचार। अब माताको गौरव ताको करत विचारसुढ़ार

मनोहर छन्द ॥

मो शरीरको कारण मात। ज्यौं अरणी पावकको ख्यात ॥ सुतके सुख करणी अतिमाम। माताके सम और न आम ॥ माता जाके सोय सनाथ। जाके मात न तौन अनाथ ॥ पुत्र पौत्र नहुसो जौन। युक्त जगतमें मानव तौन ॥ ससुद जबै माता तट जात। शिशु द्विवर्षकैसे ह्वै जात ॥ रक्षा माताही सविधान। करति पुत्रकी सदा महान ॥ पुत्र समर्थहुकी अवदात। रक्षा करति नित्य है मात ॥ जब जनकी माता मरि जात। तबही दुखी होत हैं ख्यात ॥ तबहीं वृद्ध जात ह्वै पर्म। शून्य होत जग तास अशर्म ॥ जगतीमें नहिं मातसमान। रक्षा कारक और महान ॥ माता सम छाया नहिं और। है सिद्धान्त परम यह गौर ॥ धारण करति पुत्रको मात। धात्री कहावति याते ख्यात ॥ जनतीहै पुत्रहि अभिराम। यातें जननी भो है नाम ॥ अंग बढ़ावति सुतके खच्च। यातें अम्बा भई प्रतच्च ॥

दोहा ॥

नारीको अपराध नहिं पुरुषहिको अपराध। यामें है सन्देह नहिं यह सिद्धान्त अबाध ॥ कारण है व्यभिचारको पुरुषहिनारीनाहिं। पुरुष करत इच्छाहि तब जातनारितिहि पाहिं ॥ याते नारि अवध्य है वधिबे योग्य कबौं न। पशुहू जानत क्यौं नहीं जानै प्रज्ञाभौंन ॥ पालि देत आनन्द है मृत्युलोकमें पर्म। औ पूजे परलोकमें भूरि देत है धर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताको गौरव नहीं यातें बरण्यो जाय। दुओ लोकमें और नहिं माता सम सुखदाय ॥ एसेहि करत विचार नृप बीतत भो बहुकाल। तदनन्तर आवत भयो तास पिता मंहिपाल ॥ बध तियको मम पुत्र कहु कियोहोय नहिं हाय। मनमें करत विचार यह महत शोचमें चाय ॥

मनोहरछन्द ॥

युक्त होत है दुखसों तौन। मेधातिथि गौतम मतिभौन ॥ मनमें करिकै पश्चात्ताप। लोचन तेसु गिरावत आप ॥ पुत्रहि कहत भयो इमि बैन। मम आश्रममें बर बल ऐन ॥ ब्राह्मण होय अतिथव्रत धारि। आवत भयो तात अचलारि ॥ वाणीसों पहिले सनमान। करि दै अर्घ्य पाद्य सविधान ॥ पूजत भो सादर बैठाय। पुनि पुनि मधुरी गिरा सुनाय ॥ साथ अहिल्याके तिहि कर्म। कुत्सित कीन्हों तात सशर्म ॥ दोष अहिल्याको तिहिमाहिं। नहिं औ सुरपतिहूको नाहिं ॥ औ न हमारोहू है तात। यह विचार निश्चय मति जात ॥ दोष समागमको है जानु। और नहीं मनमें अनुमानु ॥ सुनो समागम हो तो जौन। दोउनसो यह होतो तौन ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

द्वेष न काहूको करत वर मुनिजन अभिराम। याते ए भाषण कहे गौतम ऋषि बुधिधाम ॥

मनोहर छन्द ॥

तदनु कहत भो ऐसे बैन। गौतमऋषि बर प्रज्ञा ऐन ॥ होत अक्षमाते दुख भूरि। यह सुगौर संशय तें दूरि ॥ परम अक्षमासों मैं हाय। परो पापसागर में जाय ॥ पतिव्रता पत्नी अभिराम। भरी गुणनसोंअतिहो भाम ॥ डारी मैं सुतसों मरवाय। ताहि ईर्षासों दुखदाय ॥ मोसुत चिरकारी है आर्य्य। ताहि कह्यो कीवे यह कार्य्य ॥ करी बैर जौ याके माहिं। परिहौं अघ सागरमें नाहिं ॥ तदनु पुत्रको ऐसे स्वच्छ। बचन कहत भो गौतम दक्ष ॥ हे चिरकारी परम निभीच। जौ तू यहि कारजके बीच ॥ भो है है चिरकारी पर्म। तौ तू चिरकारी सह धर्म ॥ करु रक्षा तू मेरी बात। औ तव माताकी अवदात ॥ औ जो मैं तप कीन्हों तास। ताकी रक्षा करु सहुलास ॥ आपु पापतें बचि कै पर्म। तू चिरकारी होहु सुकर्म ॥ यह कारन में जौ चिरकाल। कीन्हों है है प्रज्ञ बिशाल ॥ चिरकारित्व तात तव जौन। सफल होय गो तौ बर तौन ॥

दोहा ॥

चिरदिन इच्छाही करी सुतकी तेरी मात। चिरदिन तोको गर्भ में राख्यो हौ हे तात ॥ चिरकारित्वहि सफल कहि चिरकारी तू स्वच्छ। गौतम ऐसे मोह बश कहत भयो प्रत्यक्ष ॥ तदनन्तर देखत भयो चिरकारी को आम। अपने पास उदास अति गौतम ऋषि मतिधाम ॥

जयकरी छन्द ॥

दुखित पिताको देखि नितान्त। चिरकारी बर बिज्ञ सुदान्त ॥ तर्त हाथतें शस्त्र गिराय। पाणि जोरि कै शिरहि नवाय ॥ भूपैगिरि करिकै परणाम। पितुहि प्रसन्न करत भो आम ॥ देखि पुत्र सह पत्निहि पर्म। गौतम होतो भयो सशर्म ॥ पूरव मम माता पै कोहि। देय गए हे आज्ञा मोहि ॥ मो पितु ताहि हननकी आम। करतो रह्यो विचारहि भाम ॥ मैं न हनी मोकों अब हाय। कहिहै कहा पिता रुटछाय ॥ ऐसे होमें करत विचार। करि पितु पद बिच शिरहि सुढार ॥ बहुतबेरलौं भूके माहिं। परो रहो करि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोचहिपाहि ॥ तदनु सु गौतम सुतहि उठाय । प्रेम सहित निज हृदय लगाय ॥ चिरं-जीव रहु यह बर बैन । कहतो भयो सु प्रज्ञा ऐन ॥ करि कै पुत्रहि हर्ष समेत । कहत भयो इमि बचन सचेत ॥ चिरकारी तेरो कल्यान । होहु परम मम प्रिय मतिमान । चिरकारी तू रहु चिरकाल । आशिष मेरी पाय विशाल ॥ तैं चिरकाल विचारहि माहिं । कियो मात निजु मारी नाहिं ॥ तातें मोहि महत भो शर्म । प्रापत चिरकारी सह धर्म ॥

दोहा ॥

तदनन्तर गाथा कहत गौतम भो यह ताहि । चिरकारी जे पुरुष हैं तिनमें ए गुण चाहि ॥

मनोहर छन्द

मित्र ताहि राखै चिरकाल । मित्रमाहि धरि प्रेम विशाल ॥ शीघ्र न तजै करै जो काज । करि विचार हियमाहि दराज ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

सुतकी जो चिरकारता तासों अतिहो हर्ष । पावत भो गौतम सु मुनि मेधावत उत्कर्ष ॥

मोरठा ॥

सर्व कार्य्यके बीच चिरकारी लौं पुरुष बर । निश्चय करे निभीच चिरदिनलौं दुख लहत नहिं ॥ कीन्हें प्रथम विचार कार्य्य माहि चिरकाललौं । भूपति बुद्धि अगार होत न पश्चात्ताप है ॥

दोहा ॥

आश्रममें बहुदिवस रहि सुत सह गौतम पर्म । जात भए सुरलोककों मेधा ओक सशर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे चिरकारिकोपाख्यानोनामाष्टषष्टितमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

परम अहिंसा धर्म है हिंसा कलमय पर्म । भीषमसों वृत्तान्त यह सुनिकै पूर्व सुकर्म ॥ दुर्लभ गुणि भूपतिनको परम अहिंसा धर्म । फेरि प्रश्न यह करत भो नृपकौंतेय सुकर्म ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

किमि सुप्रजा रक्षण करै भूप किए बिनघात । जानि श्रेष्ठ अति मैं तुम्हैं पूछत हौं हे तात ॥

भीष्मउवाच ॥

कहत एक प्राचीन हौं यहि प्रसंगके माहि । बर इतिहास महीप सुनु पांडु सुवन मम पाहि ॥ द्युमत्सेन भूपाल अरु सत्यवान सुत तास । तिनको है संवाद नृप तिहि माहीं मतिरास ॥

रामगीती छन्द ॥

नृप द्युमत्सेन सु कह्यौ ऐसे सत्यवानहि बैन । ए दंड्यजन तुम देहु इनकों दण्ड तात सचैन ॥ ए बचन सुनिकै कह्यौ ऐसे सत्यवान सुजान । ए दंड्य हैं पै इन्हें देहु न दण्ड तुम बलवान ॥ बध नाम जो यह धर्म सो नहिं धर्महै हे तात । यहि मांहि हिंसा होति है सो पाप है विख्यात ॥

द्युमत्सेनउवाच ॥

हैंयोग्यबधकेचौरइनकोहोयजोबधनाहिं । तौकहैंगे परबस्तुकोनिजुपागिअधरम माहिं ॥ नहिं लोकवारो कार्य्य केहु चलैगो हे तात । ह्वै निडर करिहैं उपद्रवको चौरगण विख्यात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यवानउवाच ॥

है बिप्रके आधीन तीनहु वर्णवारे कार्य। जो दण्ड देहै भूप तिन तौ कहत है बर आर्य ॥ बिन बिप्रही सब कार्य करिहै औरहु है तौन। जो उलंघत बिप्रवच तेहि पर्म दुर्मतिभौन ॥ सुनु ताहि देनो दण्ड भूपहि उचित है हे तात। सिद्धान्त है यहि माहि शंका नेकु नहिं सरसात ॥ गुणि देय ऐसो दण्ड तामें होय हिंसा नाहिं। यह कह्यौ है मैं तुम्हैं हे अवगाहि कै मनमाहिं ॥ जिहि चोरको नृप हनत है तिहि चोरके जन जौन। ते सर्व मारे जात हैं तिहिभूपसों बलभौन ॥

दोहा ॥

याते वध कीजै नहीं मार दीजिए भूरि। तिहिसौं डरि नितिही रहै चौर कर्म सो दूरि ॥ करिहौं मैं चोरी न अब जब इमि कहै सु चोर। तब ताको नृप दीजिए तजि कहि बचन कठोर ॥

द्युमत्सेनउवाच रामगीती छन्द ॥

हे सुनहु सुत मर्य्यादसेती जनहि दीन्हे दण्ड। लहि समय होत न पाप है हौ होत धर्म अखण्ड ॥ है है सनातन धर्म यह यहिमें नहीं है पाप। सब युगन माहीं करत आये बिज्ञ भूप कलाप ॥ बिन हने मानत चोर हैं नहिं करत चोरी फेरि। यहिते न त्यजिए चौर की अपराध ताकों हेरि ॥ है अल्प जिनको द्रोह औ है अल्प क्रुध मृदु पर्म। अरु सत्यही निति कहत ऐसे जे महीप सुकर्म ॥ ते राज्य के आनन्द कों नहिं होत प्रापत तात। नहिं होत कबहु प्रताप तिनको भानु सम बिख्यात ॥ जब ताड़नाको लहत हैं तब कहत ऐसे बैन। हम करैंगे चोरी न ते पुनि करत दुर्मति ऐन ॥

सत्यवानउवाच ॥

जौ हननहीको चोरकों तव हृदय है सिद्धान्त। नरमेधके मिसि मारि तौ तू करि बिचार नितान्त ॥ जौ रहै तत्पर धर्ममें नृप प्रजाहु तौ सर्व। नृप श्रेष्ठ के आचरणकों है करति सरति अखर्व ॥ जो चलत आपु न धर्म पथमें तजि प्रमादहि भूरि। औरहि चलावत हसत ताकों देखि कै जन दूरि ॥ जो कियो चाहै दूरि अघसोप्रथम आपुहि दण्ड। दै फेरि बंध्वादिकहि पीछे प्रजहि देय अखण्ड ॥ जहं लहत पापी दण्ड नहिं तहं बढ़त पाप महान। ध्रुव धर्म लघुता लहत हैं जन कहत हैं मतिमान ॥

दोहा

पूर्व पितामह हौं कह्यौ मोकों यह वृत्तान्त। बिप्रअहिंसा धर्म इमि कहै नृपनको दान्त ॥ जामें हिंसा होय नहिं ऐसो शासन भूप। देय प्रजाकों तात सुनु गुणि कै धर्म अनूप ॥ सत युगको यह धर्म है कह्यौ तु हौ हम जौन। यामें तत्पर रहत जे पावत आनंद तौन ॥

रामगीती छन्द ॥

बर धर्मवारी षोडशी नृप कला है रहि जाति। कलि अन्तमें क्षितिकन्त सुनु बर और सर्व नशाति ॥ मनु कहत स्वायम्भू सु ऐसे अहिंसा जो धर्म। निति ताहि धारण करे रहिए सुखद गुणि कै पर्म ॥

स्वस्तिश्री काशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि गोकुलनाथ कबीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे द्युमत्सेनसत्यवानसंवादेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरउवाच दोहा ॥

धर्म जौन गार्हस्थ अरु योगधर्म अभिराम। श्रेयद है इनमांहि को कहो मोहि बुधिधाम ॥

भीष्मउवाच ॥

ए जो दोऊ धर्म हैं देत महत फल पर्म। साधु करत आचरण इन दोउनको गुणि मर्म ॥ इन दोउनको कहत हौं गुणि कै तुम्है प्रमान। मनकों करि एकाग्र सुनु कुन्ती सुवन सुजान ॥ इहि प्रसंग में कहत हौं एक इतिहास अनूप। गोको औ मुनि कपिलको है संवाद सुभूप ॥

रामगीती छन्द ॥

नृप नहुष जो सो जानि करिकै वेदके बर बैन। भो काज त्वष्टाके सुहनतो गउहि भो बल ऐन ॥ भो कपिल मुनि तिहि गउहि देखत सत्यवान अनूप। सो नहुष नृपकी करत निन्दा भयो तहं सुनु भूप ॥ तिहि गऊमो ऋषिस्थूमरश्मी विप्र करि सु प्रवेश। इमि कहन लागो बैन सोंहे कपिलके शुभ बेश ॥ जो श्रुतिहिकी तू करत निन्दा और तौ का धर्म। जे तपस्वी विप्र हैं बर ते सदाहि सुकर्म ॥ सुनु वेदके मानत प्रमाणहि अप्रमाण कबौ न। जो वेदमाहीं लिख्यौ है सब उचित करिबो तौन ॥ कपिलउवाच ॥ मैं वेदकी नहिं करत निन्दा औ न राखत दच्छ। सम बिसम मैं नहिं कहत कबहूं वेद बैनहिं खच्छ ॥ हैं आश्रमी जे सर्व तिनके भिन्न २ सुधर्म। पै किएतें निष्काम एकहि होत सुफल सुकर्म ॥ जिमि परिव्राजक परमपदकों प्राप्त होत सुजान। तिमि ब्रह्मचारी गृही त्यौंहीं वाणप्रस्थ सुठान ॥ ए चारिआश्रम जौन हैं ते चारि मारग खच्छ। सुनु परमपदकों जायबेके बिघन रहित प्रतच्छ ॥ पै सुनो सन्यास मारग गहे शीघ्रहि जात। अरु ब्रह्मचारय आदि जे हैं तीन मार्ग बिभात ॥ तिनको गहेसों शीघ्रता सों परम पद नहिं लेत। है चारिहुनको भेद इतनो गुनत बुद्धिनिकेत ॥

दोहा ॥

करै कर्म यह जानिकै वेदविहित जे सर्व। पै जो है सन्यास सो उत्तम परम अखर्व ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनु जो अहिंसा शास्त्र तातें प्रगट भूरि सुकर्म। तुम कहा हिंसा शास्त्रमें फल लख्यौ उत्तम पर्म ॥ स्थूमरश्मिरुवाच ॥ जो चहै स्वर्गहि करै बिधिवत यज्ञ सो अवदात। यह सुफल हिंसा शास्त्रको है कपिलमुनि विख्यात ॥ अज अश्व मेष सु गौ पक्षी बनौषधि बहु पर्म। अरु ग्राम्य औषधि यज्ञसाधन सर्व ए सहशर्म ॥ वध किए यातें यज्ञमांहीं होति हिंसा नाहिं। विधि करी पूजा यज्ञसेती सुरनकी भूमाहिं ॥ गौ अज अरु मेष मानुष अश्व गर्दभ जौन। अश्वतर ए ग्राम्य पशु हैं कपिलमुनि मतिभौन ॥ सिंह औ बाराह बारण व्याघ्र बानर ऋक्ष। अरु महिष ए हैं पशु बनके सत्य मुनिबर दच्छ ॥ ए यज्ञ साधन ताहि प्रापत होहिं जौअवदात। तौ इन्हैं उत्तम जानिए हम सुन्यो पूरब ख्यात ॥ जन यज्ञ कर्ता लहत स्वर्गहि औ पशुऔ सर्व। जे यज्ञ माहीं जात होमे सह विधान अखर्व ॥ पशु वृक्ष लतिका पयस दधि घृत भूमि हविदिशि काल। ऋक् साम औ यजु वेद त्रय यजमान विप्र विशाल ॥ अरु सुनो यहा औषधी औ सबहैं सुज्ञान। ए यज्ञके सब अंग हैं अरु यज्ञ जो अभिरान ॥ सो लोक थितिको मूल है बर कपिल मुनि बुधिधाम। बर आज्यसों अरु दुग्ध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दधिसों अरु त्वचासों पर्म ॥ अरु बालसों अरु रंग पदसों गौ मखहि सह शर्म । जिमि करति पूरण तिमहि सब अश्वादि पशु शुभठान । मखकरत पूरण अंग अपने सोसुनो मतिमान ॥

दोहा ॥

पशु अश्वादिक हैं बने यज्ञहि काजे सर्व । याते इनको हनत हैं मखमें मनुज अखर्व ॥ कोऊ काहूहि हनत नहिं करत सर्व मखकाज । बध अश्वादिक पशुनको निश्चय बुध शिरताज ॥ किये कराये बिधि सहित यज्ञहि प्रज्ञ महान । स्वर्ग लोकमें प्राप्त है पावत मोद सुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शांतिपर्वणिमोक्षधर्मे गोकपिलसंवादे अशीतितमोऽध्याय: ॥

कपिलउवाच ॥ दोहा ॥

दृश्य पदारथ जौन है तिनकों लखत हमेश । कर्म मार्ग कों छोड़ि कै सन्यासी शुभवेश ॥ प्राप्त होत हैं ब्रह्मकों काहू लोकहि माहिं । महत पराक्रमसों सुनि जु लहत व्यतिक्रम नाहिं ॥

रामगीती छन्द ॥

जे सर्व बन्धनसों छुटे हैं होय कै निर्द्वन्द । ते रहित ह्वै सब पापसेती भए फिरत अमन्द ॥ जे ज्ञानमें निति रहत तत्पर शोककों तजि सर्व । और जो गुण छोड़ि करिकै जानि दुखद अखर्व ॥ तिन जननकी जे गतिहि पावत मनुज वर सुखदाय । गृह धर्ममें का प्रयोजन तिन जननको दुख दाय ॥ सूमरश्मिरुवाच ॥ तुम कहत हौ सिद्धान्त ही पै गृहीबिन अभिराम । निर्बाह सन्यासीनको नहिं होत है बुधिधाम ॥ निति मातके हैं रहत आश्रित पूज जैसी ॥ भांति । तिमि गृहाश्रमके रहत आश्रित और आश्रम पांति ॥ है गृहस्थाश्रमही सुनो सब धर्मकेरो मूल । सुर पितर पावत गृहस्थाश्रम सोंहि तृप्ति अतूल ॥ नहिं प्रजाको उत्पन्न करिबो और आश्रममाहिं । जौ गृहाश्रम नहिं होय तो मुनि होय बर्षा नाहिं ॥ जौ कहौ ऐसें होति मोक्ष न गृहाश्रम के बीच । तौ सुनो जे नहिं करत विधिवत गृहाश्रमहि निभीच ॥ ते लहत मोक्ष न आलसी औ जेन श्रद्धावान । अरु जे पगे कामादि माहीं रहत नित्यअजान ॥ सन्यास बिन है होति मोक्ष न कहत जे इमि बैन । यह कपिल मुनि सिद्धान्त जानो ते सुपण्डित हैन ॥ बर ऋषिनको अरु सुरनको अरु पितृगणको धर्म । जन्मतहि जनको होत है ऋण आय प्राप्त सशर्म ॥ विधि सह पढ़ते ऋषिन को ऋण औ किएते यज्ञ । ऋण सुरनकेरो सर्व छूटत सुनो मतिवर प्रज्ञ ॥ औ किये सुत उतपन्न छूटत पितरको ऋण जौन । जौ गृहाश्रम नहिं करै तौ ए छुटैं ऋण किमि तौन ॥ यम दूतसों ते लहत दण्ड न करत मख सविधान । पशु सहित उत्तमलोककों हैं चले जात सुजान ॥ कपिलउवाच ॥ जे कर्मतजि कै धारि धीर्य्यहि धरत हैं सन्यास । रागादिमलसों रहित ह्वै कै पाय सुमतिप्रकास ॥ ते निर्विकार सुब्रह्म भावहि लहत महत सुजान । पथमांहि तिनके सुरङ्ग जाय न सकत उग्र महान ॥

दोहा ॥

चारिद्वार हैं पापके गुप्त करैं ते सर्व । ब्रह्म भावकों होत है जब जन प्राप्त अखर्व ॥ एक वाणी एक जठर औ एक उपस्थ औ हस्त । ए प्रतिबन्धक ज्ञानके जानत सुबुधसमस्त ॥

रामगीती छन्द ॥

कटु वचनको नहिं बोलिबो औ वृथा बकिबो नाहिं । अरु छोड़िबो पै शुन्यको जो ग्लानि गुणि मनमाहिं ॥ अरु छोड़िबो मर्य्याद सेतो सत्य नित्य सगौर । ए वागद्वारहि गुप्तकारक सर्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुध शिर मौर ॥ अरु अलोलुपता महत अशनहिं छोड़िबो अरु जौन। ए जठर द्वारहि गुप्तकारक गुणो वर मतिभौन ॥ अरु त्याग जो परदारको है सदा बुद्धि अगार। सो उपस्थद्वारको है गुप्तकार सुढार ॥ है बाहु द्वारहि गुप्तकारक छोड़िबो हिंसाहि। जो करत चारो द्वार गुप्त न बुद्धि सो अवगाहि। बर कहत आरज होत ताके सर्व कारज व्यर्थ। कछु होत है नहिं यज्ञतपसों प्रज्ञ परम समर्थ ॥ सूमरश्मिरुवाच ॥ है कर्म करिबो जौन अरु जो करमको है त्याग। इन दुहुनमें पथ कौन सो है श्रेष्ठ कहु बड़भाग ॥ कपिलउवाच ॥ जे बिज्ञ तव सम परम हैं अज्ञान नहिं तिनपांहि। ते गुणत श्रेष्ठ अश्रेष्ठकों हैं आपुही हियमांहि ॥ सूमरश्मिरुवाच ॥ है सूमरश्मि सुनाम मेरो कपिलमुनि अवदात। मैं श्रेयकी करि कामना हियमांहि परम सशांत ॥ बरज्ञान लहिबे काज आयो इहां हौं तवपास। अति कृपा करिकै कहौ मोकौ आपु सहित हुलास ॥ मैं वादकी इच्छा न करिकै तुम्हें पूछत अब। सुनि आपुसे हौ आपुही गति तुम्हारी सरवच ॥ जो युक्त है शुचि बुद्धिसो बरचिदाभास अमन्द। तुम करत तास उपासना हौ कपिलमुनि निर्द्वन्द ॥ की बुद्धि करिकै कियो निश्चय तास ऐसो जौन। तिहि की सुकरत उपासना है आपु प्रज्ञाभौन ॥ मैं छोड़ि करिकै तर्कशास्त्रहि बेद कर्महि पर्म। है जानतो हौं सहित बिधिवर बुद्धिसों गुणि पर्म ॥ जौ सबिधि आश्रममांहि तत्पर रहै मानव स्वच्छ। तौ बेदबिहित सुकर्म सिद्धिहि होत प्रापत दच्छ ॥ बहु पूर्व पूर्व सु करमवारी बासनासों माम। यहि भूरि भवसागरहि नहिं तरि सकत है बुधिधाम। हम शिष्य हैं तव कृपा करिकै ज्ञानको उपदेश। तुम कीजिए बर कपिलमुनि हौ ज्ञानमान विशेश ॥

दोहा ॥

चारों जे हैं वर्ण अरु चारों आश्रम जौन। तिनको पर आनन्द को साधन जो मतिभौन ॥
तामें जो कछु न्यून है सो तुम देहु बताय। ताकी पूरणता नहीं हमैं प्राप्त सुखदाय ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

जे ज्ञानमें जन रहत तत्पर साधनाके बीच। लगि ताहि देत छुड़ाय जगते ज्ञान परम निभीच ॥ बर ज्ञानतें जो रहित हैं आचरण मेधा धाम। सो देत अतिही क्लेश है बहु प्रजाको मुनि माम ॥ तुम हौ सुज्ञानी औ निरामय पर्म उत्तम स्वच्छ। अद्वैत भावहि पायबो सो अतिहि दुर्लभ दच्छ ॥ है होत कबहू प्राप्त काहू कोहि निश्चय जानु। सन्देह यामें है नहीं सिद्धान्त कहत महानु ॥ भो स्वच्छ तत्वज्ञान काहूको नहीं अवदात। जय चाहि अपनी करत व्यर्थहि बाद है बिख्यात ॥ जन ह्वै रहे कामादिके बशमांहि जगमें सर्व। यहिते सु तिनको किए बशमें अहङ्कार अखर्व ॥ जे करत इच्छा परमगतिकौं लहनकी अभिराम। बहु शुभाशुभ जे कर्म तिनकों देत तजि बुधिधाम ॥ सूमरश्मिरुवाच ॥ जो कह्यौ है हम आपुसों सो शास्त्रको अवगाहि। बिन शास्त्र जाने प्रवृत धर्म सुहोत है मुनि नाहि ॥ जो न्याय है आचार जगमें शास्त्रहीते सर्व। है प्रवृति कौनो नहीं जानो बिना शास्त्र अखर्व ॥ बरशास्त्रसों जे रहित मानै व्यक्तहीकों प्रज्ञ। है बुद्धिसेती हीन ऐसे जौन मानव अज्ञ ॥ ते तमोगुणसों युक्त है संसार है बुधराज। हम कह्यौ है अवगाहि तुमकों तनि सुबुद्धि दराज ॥ जो वेदमांही लिख्यौ ताको करत आश्रय नांहि। अनुमानहीं सों कहत सो किमि गहै मनके मांहि। जो कहत हौ सो कुटम्बीको परम दुष्कर कर्म। यहि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांहि लागे व्यर्थ ह्वै है कर्मकाण्ड सगर्म ॥ वर वेदवारी कृपा पीछे भए ते अवदात । सुनु नास्तिकता आय जै है कपिलमुनि विख्यात ॥ हम कह्यौ जो यह आपुसों अवगाहि करिके ताहि । तुम कहौ हमको और तुम सो परतहै नहिं चाहि ॥

दोहा ॥

औ जैसी विधि मोक्षको जानत तुम बुधिधाम । तैसेही हमकों कहो करिकै कृपा ललाम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे गोकपिलसंवादे एकाधिकाशीतितमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

सूमरस्मि हम बेद नहिं पीछे करत सुजान । जानत है हम बेदही लोकनको सुप्रमान ॥
शब्द ब्रह्म है एक अरु परब्रह्म है एक । कर्मोपाषणा काण्ड अरु शब्दब्रह्म सविवेक ॥
परब्रह्म निरुपाधि जो नित्यानन्दाव्यक्त । शब्दब्रह्मके मांहि जन जो बुध हैं आशक्त ॥
सो जन अति उज्जल भए क्रमसेती मतिगेह । परब्रह्मकों होत है प्रापत निस्सन्देह ॥
गर्भाधानादिक सरव संस्कार जे स्वच्छ । तिनमें जो हैं युक्त जन मेधावान सुदच्छ ॥
सो अधिकारी ज्ञानको होत और नहिं कोय । ज्ञान लहेते ब्रह्मकों प्राप्त होत सुख भोय ॥
गुणिकै कर्म अनन्त में अब कहत हौं तोहि । कर्महिमें न लगो रहै दिव्यदृष्टिसों जोहि ॥
ज्ञानारथ साधन करै तजि कामादिक सर्व । गुणिकै विमलाबुद्धि सो दायक दु:ख अखर्व ॥
यज्ञादिक सबही करै पै फल आशा नाहि । मनमें राखै आपने जन मतिमान सदाहि ॥
संन्यासाश्रम मुख्य है तीनो आश्रम जौन । ते साधन संन्यासके जानो प्रज्ञा भौन ॥
तीनो आश्रम विधिसहित कीन्हे उज्जल होत । तदनु किए सन्यास वर ज्ञान सुकरत उदोत ॥
निर्विकार जो ज्ञान है होत प्राप्त जब पर्म । ब्रह्मभाव तब लहत जन सूमरस्मि सहशर्म ॥
तीनो आश्रम जिहि किए सन्यासाश्रमकाज । ब्राह्मण कहिए ताहि वर प्रज्ञावान दराज ॥
सन्तोषी त्यागी परम ते सुज्ञानके थान । और न कोऊ है गुणो जगके मांहि महान ॥
सो जो परपद लहनकी तर्क करै हियमांहि । परपद पावै छूटि तौ जगतें संशय नांहि ॥

सूमरस्मिरुवाच ॥

त्यागि फलाशा को सुनो जौन करत है कर्म । अरु जे जन संन्यास में प्रवृत भए सह शर्म ॥
तिन दोउनको मांहि जन श्रेष्ठ कहो है कौन । वक्ता आपु महान हौ कपिल ज्ञानके भौन ॥

कपिलउवाच ॥

दोउनमाहीं श्रेष्ठ है त्यागी मनुज सुजान । त्यागी ही आनन्द को प्रापत होत महान ॥

सूमरस्मिरुवाच ॥

तुमको निश्चय ज्ञानमें गृहिहि कर्मके बीच । जाको निश्चय है जहां तहंहीं शरम निभीच ॥
निश्चयही जौ मुख्य है तौ भो कहा विशेश । ज्ञान मांहि वर कर्मतें कहो मोहि शुभवेश ॥

कपिलउवाच ॥

शुद्ध सुहोत शरीर है कर्मनसों अभिराम । पै पावत कैवल्य जन ज्ञानहिसों मतिधाम ॥

स्वस्ति श्री काशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेगोकपिलसंवादे द्वैसीतितमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

मोक्षधर्म जिन जननसों होय सकत नहिं तात । तिनको कहा त्रिवर्गमें कहो श्रेष्ठ अवदात ॥

भीष्मउवाच ॥

अब एक इतिहास हौं कहत पुरातन पर्म । ताहि सुनो एकाग्र कै मनकों तात सधर्म ॥
कुण्डधार निज भक्तको कीन्हें है उपकार । तिहिको है वृत्तान्त नृप ताके मांहि उदार ॥
कोऊ निधनी बिप्र एक भूप मखेच्छावान । धर्म करौं जौ धन मिलै यह गुणिकै मतिमान ॥
अतिहीदारुणविधि सहित करतभयोतपपर्म । मनकोंथिर तामांहिकरि सोब्राह्मणसहशर्म ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

महती भक्ति हिए में सो धरि । देवतानको पूजत भो चरि ॥ पै न कछूं नृप पावत भो धन । महाविज्ञ बर बिप्र तपोधन ॥ तदनन्तर चिन्ता करिकै अति । करत विचार भयो इमि बरमति ॥ ऐसो कोऊ होय सुदेवत । होय प्रसन्न शीघ्र जो सेवत ॥ तदनन्तर ब्राह्मण सो लेखत । कुण्डधार जलदहि भो देखत ॥ ताहि देखि इमि भयो बिचारत । करहि श्रेय भो लखिकै आरत ॥ रहत नगीच देवताके यह । दै है धनवर शीघ्र कृपा सह ॥ तदनन्तर विधिवतसों पूजत । भयो ताहि तहं सुबचन कूजत ॥ घोरहि कालमांहि सो जलधर । होत प्रसन्न भयो करुणाकर ॥ ब्राह्मणके उपकारहि कारक । बचन कहत भो सो जलधारक ॥ तदनन्तर कुशशाई सो बर । ब्राह्मण स्वच्छ परम मेधाधर ॥

दोहा ॥

जलधरके सुप्रभावसो स्वप्न अवस्था माहि । सब भूतनको देखतो भयो आपने पाहि ॥
मणिभद्रको लखत भो स्वप्न तौनही बीच । अति तेजोमय छबि महा धारे परम निभीच ॥
आज्ञाते सो देवकी जाचकको फल देत । होत लखे आनन्द अति ताको दया निकेत ॥

जयकरीछन्द ॥

शुभहि करत हैं कर्म जौन जन । तिन्हें देत है देवराज्य धन ॥ करत अशुभ हैं जे जन दुर्मति । तिनके छीनलेत करि कट अति ॥ जक्षणके देखत सो जलधर । कुण्डधारि नामा बर छबिधर ॥ करत प्रणाम भयो भूपै परि । देवनके आगे सुदको धरि ॥ तदनन्तर मणि-भद्र महामति । देवनकी आज्ञा ते करि रति ॥ कुण्डधार जलधर छबि ऐनहि । सोंहे कहत भयो इमि बैनहि ॥ तोहि कहा इच्छा है तुर कछु । अचनेक संकोच न तू गहु ॥ कुण्डधार उवाच ॥ जौ प्रसन्न हौ देव भए तुम । देहु कृपा करि जो मांगें हम ॥ मेरो महाभक्त ब्राह्मण यह । याहि कृपा करि कीजै सुख सह ॥ सो सुनि मणिभद्र बोलो पुनि । देवनकी आज्ञा मनमें गुनि ॥ उठु उठु कुण्ड धार हे जलधर । धन अर्थी जौ ब्राह्मण यह बर ॥ तौ तुम देहु चारु याकों धन । अतिही आनन्दित करिकै मन ॥ ब्राह्मण चाहत है धन जेतिक । अबही चारु देतहौ तेतिक ॥ कुण्डधार मानुष्यहि गुण चल । ब्राह्मणकी मतिको सनु बरबल ॥ जास प्रशंसाको बुध गावत । ऐसे तपमें भयो लगावत ॥ कुण्डधारउवाच ॥ धन चाहत हम ब्राह्मण काज न । रत्न पूरणा भूमि दराज न ॥ रहो धर्ममें नित्यहि तत्पर । यह सुबिप्र हम मांगत यह बर ॥

मणिभद्रउवाच ॥ दोहा ॥

रहो धर्मके मांहि यह तत्पर नित्यहि बिप्र । धर्मनके जे परमफल याहि मिल्यौते चिप्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥

दुर्लभ इच्छित पाय वर कुण्डधार सहहर्ष । होत भयो भूपालमधि सुनु अरिंदर उत्कर्ष ॥
तदनन्तर तिहि ब्राह्मणहि कुण्डधार भो देत । भीरण चीर सुधीर ह्वै परम सुधर्म निकेत ॥
तिहिकोखखिकैदोषगुणिजलधरमेलहि ग्लानि । जाय तपस्या करत भोवनकेमांहि महानि ॥

अरिल छन्द ॥

देव अतिथसों रहे मूल फल । बाकी तिन्हें आंचके निर्मल ॥ किए तपस्या ब्राह्मणकी अति । होतो धर्म मध्यमें दृढ़ मति ॥ त्यागि मूल फलको सो मतिधर । परम अहारी होत भयो वर ॥ तदनन्तर पर्णकुको तजि करि । जलाहार भो धीरजको धरि ॥ तदनु सु भक्षत भयो स्पर्शन । त्यागि नीरहूको बहु वरसन ॥ तास प्राण छीजतभो तपहूंन । बहुत कालमें ताको वर सुन ॥ होतो भई सुदिव्यदृष्टिनृप । सह विधान वर करत करत तप ॥ ताको होति भई ऐसी मति । कछुकालमें तहं वर नरपति ॥ मांगै कोऊ जो मोसों धन । ताहि देंउ तो ह्वै प्रसन्न मन ॥ मिथ्या होय नहीं वाणी मम । यह विचारिकै तदनु सु उत्तम ॥ फेरि तपस्या करत भयो वर । सहित विधान महामेधाधर ॥ तदनु विचारत भो मनमें यह । ब्राह्मण तीन महा आनन्द सह ॥ जो मैं राज्य देंउ काहूहि अब । ताहि मिलैतो सह समाज सब ॥ मिथ्या होय नहीं मम भाष न । आखन कहौं मिलै तुर ताखन ॥ तदनु सु कुण्डधार भो दर्शन । देतो ताहि प्रगट सह हर्षन ॥ कुण्डधार की पूजा सह विधि । करत भयो सो ब्राह्मण बुधिनिधि ॥ तदनु कहत भो ऐसे जलधर । तिहि ब्राह्मणको भूपति वर कर ॥ दिव्यदृष्टि जो पाईते अति । तिहिसों तू लखु भूपनकी गति ॥ औलोकनको कन अवलोकन । सहित चराचरके बहु योकन ॥

दोहा ॥

तदनन्तर सहसन नृपति भयो नरकके बीच । दिव्यदृष्टि सों देखतो ब्राह्मण तीन निमीच ॥
कुण्डधारसों कहत भो तदनु ताहि इमि बैन । जो तू दुखको प्राप्त भो मोहि पूजि मति ऐन ॥
तो मोकों पूजे कहा तोहि भयो फल पर्म । औ तेरो उपकार हम कीन्हों कहा सुकर्म ॥
देखु देखु तू फेरि द्विज कामवान जन जौन । नरकहि पावत कामना करै सुकिमि बुधिभौन ॥
देवतानके वचनतें कामादिक जे सर्व । विघ्न करत हैं जननके प्रापत होय अखर्व ॥
देवतानको बिन कृपा धार्मिक होत न कोय । परम धर्म प्रापत भये आपुहिकों तू जोय ॥
तपके स्वच्छ प्रभावमें सहतराज्य धन भूरि । दीवेकी इच्छा करत जनहि मोदसों पूरि ॥
देव विघ्न जो नहिं करै तो धार्मिक जन होय । देहिं जगतमें जननकों जो मन आवैसोय ॥

भीष्म उवाच ॥ चौपाई ॥

तदनु सु विप्र जोरि कै पाणी । इमि जलधरहि कहत भो वाणी ॥ कीन्हो आपु असुग्रह भारी । मो ऊपर वर परउपकारी ॥ मैं तव पूर्व असूया कीन्हीं । मतिमों काम लोभसों भीन्हीं ॥ तिहिकों तुम मनमें न विचारो । ताहि माफ करिकै सु विसारो ॥ एकवचन ब्राह्मणके सुनि कै । कुण्डधार जलधर वर गुणिकै ॥ क्षमा कियो तहं ऐसें कहिकै । मिलिकै सो ब्राह्मणसों चहिकै ॥ भयो सु अन्तर्ध्यान तहांहीं । फेरि लखि पस्यौ विप्रहि नाहीं ॥

दोहा ॥

तदनन्तरसो फिरत भो सबलोकनके बीच । कुण्डधारकी लहि कृपा तपसों भयो निमीच ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करण लग्यौ संकल्प जो हौंन लग्यौ सो सिद्धि । फिरन लग्यो आकाशमें लहि कै तपसों सिद्धि ॥
सन्त विप्र अरु देवता औ चारण जो यक्ष । झलसित ह्वै पूजा करत धार्मिक जनकी खक्ष ॥
कामिनको औ धनिनकी पूजा करत कबौ न । याते तिनते श्रेष्ठ हैं धार्मिक जन मतिभौन ॥
मोक्षारथ साधन नहीं होय सकै जो तात । ह्वै तत्पर निति धर्ममें रहि है जै अवदात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविना विरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे कुण्डधारोपाख्याने असीतितमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

धर्मारथ जो यज्ञ है तास रूप कछु मोहि । तात सुनो विख्यात अब कृपादृष्टिसों जोहि ॥

भीष्मउ वाच ॥

उंछवृत्ति वरविप्रको मैं वृत्तान्त अनूप । नारदको गायो तुम्हैं अब कहत हौं भूप ॥

नारदउ वाच ॥ काव्य छन्द ॥

विदर्भ नामा देशमाहि एक विप्र सु उंछ वृत्तिवारो ॥ मनके माहि विष्णु पूजाको करत विचार भयो भारो ॥ सूरजपर्णी औ सुवर्चला ताको शाक भक्षिकीको । औ सावांको भक्षि तहां सो रहत छतो अति वरधीको ॥ सावां अरु सो शाक विष्णुको अरपे सो नृप दिवकेरो । साधन भयो अहिंसासेती आनंद दायक बहु तेरो ॥ परम निर्मला ताकी नारी पुष्करधारिणि नामांहो । भई कृशाहो व्रत कीन्हें सो तबहूं अति अभिरामांहो ॥

दोहा ॥

मोरपुच्छ अरु परण जे धरे बन्हो तास । सोइ करति जो पति कहत धारि शापकी त्रास ॥
आज्ञा पतिकी पायकै पुष्करधारणि बाल । त्यागि फलाशा बिबिधि मख करती भई बिशाल ॥
होय नहिंसा जीवमें करिकै यह सुबिचार । पशुबनायकै दृष्टिको हनती भई सो दार ॥
सुनहु तात एक मृगछतो तिहि अटवीके माहि । ब्राह्मणको सो कहतभो ऐसे ह्वै कै पाहि ॥
अंगहीन भो यज्ञ तव छते दृष्टिपशु प्रच्छ । याते मैं तोको कहत विप्र परम धरमच्छ ॥
जौ नहिं धन तव पास तौ मोकों छनि सबिधान । स्वर्ग लोककों जाहु तू सह तिय समुद सुजान ॥
तदनन्तर तिहि यज्ञमें सावित्री साक्षात । होय कहति ऐसे भई तिहि ब्राह्मणकों तात ॥
तोसों यह मृग कहत सो करि सुविधान समेत । सावित्रीके बैन ए सुनिकै बुद्धिनिकेत ॥
सहवासी है यह सुमृग कहत भयो इमि बैन । याते हे सावित्रि सुनु याको हनिहौं मैंन ॥
ब्राह्मणके ए वचन सुनि सावित्री अचलेश । मखपावकके मांहि तहं करती भई प्रवेश ॥
फेरि छमृगभो कहतपै मान्यौ ब्राह्मण नाहिं । कहतभयो इमिमृगहि तू खरो रहु न मम पाहिं ॥
ए ब्राह्मणके बचन सुनि हरिण अष्टपद जाय । कहत भयो इमि आयकै फिरि विप्रहि नरराय ॥
मोहि मारिकै सहित विधि छति तू मखके बीच । संग गतिकों हौं प्राप्त ह्वै जासों हौं छ निभीच ॥
दिव्यदृष्टि मैं देतहौं तोकों ब्राह्मण पर्म । तिनसों तू लखु अप्सरा सुखमासनी सशर्म ॥
औ गन्धर्वनके भरे भासों भूरि बिमान । रतनसों भूषित भले देखु खक्ष मतिमान ॥
दिव्यदृष्टि लहि हिरणसों देखि विप्र चिरकाल । हिंसाको यह स्वर्गफल यह तहं गुन्यो नृपाल ॥
कौनहु कारण पायकै हरिण होयकै धर्म । बनमें तिहि रहतो छतो शीतादिक सहि पर्म ॥
हो कारणहि छुड़ायबे विप्रहि कहत कुरंग । मोको हनि छनि बिधि सहित करु तू यज्ञ अरुंग ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि कुरंगके बैन ए द्विज यह कियो विचार। स्वर्ग लहैं मैं याहि हनि जनि मखमांहि सुढार॥
यह बिचारतहि विप्रको तप भो नष्ट बिगाल। हिंसा मख उपकारि का याते नहीं नृपाल॥
तदनन्तर तिहि विप्रसों यज्ञ अहिंसावान। करवावत भो आपुही धर्म सधर्म सुजान॥
समाधान भो नारिको ब्राह्मणको हे भूप। भए अहिंसा यज्ञ वर अहित विधान अनूप॥
अहितहि हिंसा धर्म है निश्चय जानु सुधर्म। परम अहिंसा धर्म सों उत्तम सर्व सशर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिगोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे यज्ञनिन्दानामचतुरशीतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

त्रिवर्गमाहीं धर्मकों कही श्रेष्ठता आप। सोहि पूर्व अध्यायमें तात सुबुद्धि कलाप॥
परम उपाय किए बिना मोक्ष होतनहिं तात। कह्यो पूर्व सो सोहि तुम कहु उपाय अवदात॥

भीष्मउवाच ॥

पूछनको सब धर्म औ बर कैवल्य उपाय। तोहीसों है बुद्धिबर बिमला सुनु नरराय॥
घट करणेमें बुद्धि जो होत सुघट जब सिद्धि। तब न प्रयोजन तास कछु ऐसेही बुधि निद्धि॥
प्रवृत्ति धर्म है सबिधि जो कछु न प्रयोजन तास। निवृत्ति धर्म निष्कर्म जब मनमें कियोप्रकास॥
एकहि मारग मोक्षको तोहि कहत हौं तौन। मनको करि एकाग्र सुनु कुन्तीसुत मतिभौन॥
मनको जो सङ्कल्प है ताको छोड़ि अखर्व। करै कामको दूरि औ क्षमा धारिकै सर्व॥
दूरि क्रोधता कों करै औ आलसकों त्यागि। निद्रा दूरि करै सुबुध परम बुद्धिमें पागि॥
सावधानता सों करै भयकों दूरि महान। मन लगाय त्रैचक्षमें रोकै स्वास सुजान॥
इच्छाकों अरु द्वेषको तजै धीर्य्यकों धारि। तजै लोभ औ मोहको सन्तोषहि बिस्तारि॥
परम सुतत्वाभ्यासमें पगिकै आठहु याम। भ्रमकों औ अज्ञानको करै दूरि बुधिधाम॥
तजै अधर्महि कृपासों औ अनित्यता जौन। करै सनेहै दूरि नृप तासों प्रज्ञा भौन॥
बायु रोकसों क्षुधा औ मौनभावकों धारि। बहुत बारताकों तजै बिमलामति बिस्तारि॥
करुणासों अभिमानकों दूरि करै हे तात। करै सु दूरि वितर्ककों निश्चय तें अवदात॥
मतिसों मन औ बचनकों जीतै बुद्धिनिधान। मतिको जीतै ज्ञानसों निर्मल परम महान॥
आत्मावारे बोधसों जीतै ज्ञानहि पर्म। जीवात्माके बोधकों चित्त प्रकाश सो पर्म॥
यह मारग है मोक्षको निर्मल परम अनूप। यापै जे बुध चढ़त ते सुखसों पहुंचत भूप॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीस्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे योगचारानुवर्णनोनाम पंचाशीतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

सबकोऊ हमको कहत धन्य धन्य जगमांहि। औ हमसों कोऊ महा दुःखित जगमें नांहि॥
हम देवत ह्वै दुख लह्यो धारेते नरदेह। याते नरदेहहि गुण्यो दुःख रूप बुधिगेह॥
करिहैं बर सन्यासको ग्रहण कबै हम तात। छोड़न काजै देहको दुःखद महा विख्यात॥
इन्द्रिय आदिक सर्व जे तिनको तजि अभिमान। जैहैं मैं आरण्यकों कब हे तात सुजान॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥

व्याकुल होऊ न भूप तुम अन्तवान गुणि सर्व। कोऊ है न अनन्त यह है सिद्धान्त अखर्व ॥
लहिहौ तुम कैवल्य जब ह्वैहै दुखको अन्त। जौ तुम इमि हमको कहौ हियमें गुणि क्षितिकन्त ॥
मेरो मन लागो रहत नित्यराज्यके मांहि। लहिहौं किमि कैवल्यको तौ सुनु नृप ममपांहि ॥
अचल कछूहू है नहीं याते बर भूपाल। लहि हौ तुम कैवल्यकों आनंद परम विशाल ॥
साधन किए समाधिको अल्पकालहो बीच। आनंदको कैवल्यके लहि हौ नृपति निमीच ॥
प्राप्त भए जे दैवते दुख सुख तिनमें नांहि। लागै मिति लागो रहै मोक्षसाधन मांहि ॥
श्याम अरुण रजमें मिले तद्वत होत समीर। श्याम अरुण पै गुण नहीं मानतको रणधीर ॥
इमिहो दुख सुखयुक्त सों भए आत्मा तात। लागत सुखदुखवान पै भिन्नहिं है अवदात ॥
आत्माके गुण हैं नहीं सुख दुःखादिक सर्व। याते छेदिजात हैं छेदे गुणत अखर्व ॥
तम जो भो अज्ञानते ताहि ज्ञानसों खच्च। दूरि करै तब होत है ब्रह्म प्रकाशित दच्च ॥
आत्मा सिद्ध न होत द्रुत यत्नऊ किए विशाल। याते लागोई रहै विकल न होय नृपाल ॥
भ्रष्ट होयकै राज्यसों वृत्रासुर बलवान। कह्यौ जौन सो अब मैं तोको कहत सुजान ॥
कहत भए ऐसे बचन शुक्र ताहि अवगाहि। भए पराजय तू हिये व्यथा करत क्यों नाहि ॥

वृत्रउवाच ॥

मनसों महत विचार कै भग औ मोक्षहि पर्म। जानत हौं याते न मैं सुद शुक्र लहत सुकर्म ॥
बशमें ह्वैकै कालके प्राणी कर्माधीन। नरकमांहि बूड़त किते पावत स्वर्ग प्रवीन ॥
जहं रहिबेको कर्म है जितनो तितने बर्ष। रहिकै तहं पुनि जन्मकों प्राप्त होत सतवर्ष ॥
ऐसे मैं संसारके बीच लखत हौं जीव। कर्म करै जैसो लहै लाभ सुनो मतिसीव ॥
वृत्रासुरके बैन ए सुनिकै शुक्र नरेश। कहत भए वृत्रासुरहि ऐसे बचन विशेष ॥
असुर होयकै ए बचन तू बोलत क्यों तात। असुरभावके बैन ए नाशक हैं विख्यात ॥

वृत्र उवाच ॥

मैं सुविजयके लोभसों पूर्व कियो तप पर्म। सो जानत हौ आपु औ सुमति सु और सुकर्म ॥
मैं तपवारे तेजसों घेरि तीनहू लोक। भारत भो वर आपुकों जानि महाबल ओक ॥
सबभूतनकेमांहि नहिं जोति सक्योकोउमोहि। कोऊ मेरे तेजको सकतऊ तोनहिं जोहि ॥
तपसों भो ऐश्वर्य्य हो ऐसो प्रापत मोहि। सो सब मेरे कर्मसों गयो नष्ट ह्वै जोहि ॥
नष्ट भए ऐश्वर्य्य सों प्राप्त धीर्य कों होय। मैंन शोच नेकऊ करत हियो ज्ञानसों भोय ॥
पूर्व सुराधिप समरके समयमांहि अवदात। मोहि विष्णु भगवानको दरशन भोहो ख्यात ॥
कीबेको सुरराजकी आए ऊते सहाय। तेजोमय जिनकी महा महिमा जानि न जाय ॥
जानततप कछु शेषहै पूरवकृत तिहिमाहि। कर्मफलहि पूछन करत इच्छाहौं तवपाहि ॥
आत्माकेसाक्षात्कारकी जो सामर्थ्य महान। तौनकहा है करि कृपाकहौमोहि मतिमान ॥
किहिते प्रकृत सु होतहैकिहिते जीवतभूत। रहतनिरन्तर किहि फलहिकरिकैजीवअकूत ॥
रहतनिरन्तरजिहिफलहि लहिकैजीवमहान। सोकिहि ज्ञानसुकर्मसों पायोजातसुजान ॥
कुन्ती सुत ए शुक्र सुनि वृत्रासुरके बैन। कहत भए मैं कहत सो सुनु सबन्धु बलऐन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वृत्रगीतासु षष्ठाशीतितमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उशनोवाच ॥ दोहा ॥

नमस्कार मैं करत हौं भगवत बिलुहि पर्म । तास कृपा को पायकै को नहिं होत सगर्म ॥
तास महातम कहत हौं तुमको मैं सुखदाय । मनको करि एकाग्र सुनु चञ्चल ताहि बिहाय ॥

भीष्मउवाच ॥

तिही समयके मांहि तहं आए सनत्कुमार । तिनको संशय करणको दूरि सुबुद्धि अगार ॥
पूजित ह्वैके दुहुनमों बैठत भे ते तब । आसन अतिही स्वच्छ पर गति जिनकी सरबत्र ॥
उशना सनत्कुमार को कहत भए इमिबैन । नारायण को वृत्तको कछु महात्म्य सुखऐन ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

सुनि कै सनत्कुमार सुज्ञानी । शुक्राचार्यकी यह बानी ॥ नीके विष्णु महातमवारे । कहत भये वर वचन सुढारे ॥ सब जगस्थित विष्णुके माहीं । जानत तास गतिहि कोउ नाहीं ॥ भूत ग्राम को माय बनावैं । काल पाय के सोइ नशावैं ॥ फिरि उत्पन्न करत हैं सोई । यहि वृत्तान्तहि जानत कोई ॥ इन्द्रियादिको निग्रह कीन्हें । बुधको विष्णु परत है चीन्हें ॥ और उपाय कियेते भारी । जानि परत है नहिं धनुधारी ॥ जन्म अनेक और व्यापारै । कीन्हें नहीं स्वच्छता धारै ॥ शुद्ध होत है जनिमें एकै । लहै सुरन हरिको सबिवेकै ॥

दोहा ॥

ऐसी है सामर्थ्य प्रभु नारायणकी पर्म । कही तोहि अवगाहि हम याको गुणि तू मर्म ॥

वृत्रउवाच ॥

हरिकीही सामर्थ्यसों जो सबही है होत । काहेको तौ मैं करौं हिये बिखाद उदोत ॥
तब बाणो में श्रवण करि कल्मषसों भो दूरि । मतिसों तास विचार हौं करत मोदसों परि ॥

भीष्मउवाच ॥

ऐसे कहि कै बैन वर वृत्रासुर मतिमान । विष्णुहि अन्तःकरणमें ल्याय परम करि ध्यान ॥
प्रापत परम स्थानकों होत भयो तजि देहि । ऐसो हरिके शरणको है प्रभाव बुधिगेह ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

सनत्कुमार सुवृत्रको कह्यो महातम जास । एई हैं भगवान सो तिनको हमको आस ॥

भीष्म उवाच ॥

और नृपनलौं मति गुणै कृष्णहि कुन्तीनन्द । कारण हैं संसारके ए भगवान अमन्द ॥
निर्विकार जो ब्रह्म है ताको चौथो अंश । अर्द्धभाग तिहिमाहि है यह केशव यदुवंश ॥
अर्द्धभाग जो शेष है सत्तासंती तास । सर्व जगत यह है बन्यो जास जन्म अरु नास ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

वृत्रासुर वृत्तान्त सुनि मैं जान्यो यह तात । आत्माकी गतिको लखी वृत्रासुर अवदात ॥
आत्माकी गति लखत नहिं राज्य भये तौ नष्ट । थिरता को लहतो न कछु पावत अतिही कष्ट ॥
यहि असार संसारमों वृत्रासुर भो मुक्त । अति विलन्द आनन्द जो सो तासो भो युक्त ॥
जिनमें केवल सत्व है ते न जन्म पुनिलेत । औ जिनमें रज तम लहत पुनिपुनि बुद्धि निकेत ॥
अशरमको हम शरम गुणि लगे रहत तिहिबीच । धौं किहि गतिको प्राप्त हम ह्वैहैं तातनिभीच ॥

भीष्मउवाच ॥

पिता पितामह शुद्ध है तब औ तुम्ह शुद्ध । याते चिन्ता तू न करु भूपति मनमें उद्ध ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त सुपुण्य प्रभाव सो ह्वै दिवमें अभिराम । मानुषताको प्राप्त फिरि ह्वैहै नृपमतिधाम ॥
ह्वैहै सिद्धनमें तदनु गणना तब भूपाल । तत्पर है तुम धर्ममें शोच न करो विशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे सप्तासीतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

परम बिष्णुको भक्त अरु परम जास बिज्ञान । वृत्रासुर ऐसो महा बली सुधीरज मान ॥
शक्र ताहि कैसे हन्यो यह मेरे सन्देह । कहो मोहि बिस्तारसों आपु महामति गेह ॥

भीष्मउवाच ॥

बज्री रथ पै बैठिकै देवगणन सह उद्ध । भयो बीरतासों भयो आवत कीबे युद्ध ॥
अचलोपम वृत्रहि लखत सोहे भो सुरराज । उन्नत योजन पञ्चशत तास देह नरराज ॥
औ स्थूल कछु अधिकचय शतयोजन बलधाम । निर्जर सब कांपत भए ताकों लखि के आम ॥

संजुता छन्द ॥

मघवान ताकहं देखिकै । बलवान अति अवरेखिकै ॥ सिथिलांग होत भयो महा । नहिं धीर्य्य धारि गयो तहा ॥ बहु दुन्दुभी बाजन लगी । चहुंवोर घोर सुधुनि पगी ॥ नृप देखि कै सुर राजको । अरु तास सर्व समाजको ॥ डर नेकहू नहिं धर्त भो । रण लालसा हिय कर्त भो ॥ सब फौजको तहं साजिकै । रनको खरो भय गाजिकै ॥ असि शूल परिघ सवानसों । अरु और शस्त्र सुठानसों ॥ सुरदैत्य ते लरणे लगे । अति भूरि अमरषसों पगे ॥

दोहा ॥

बिधातादि सुर और ऋषि आवत भे तहं सर्ब । देखनकों रण अप्सरा औ सुसिद्ध गन्धर्ब ॥

तोटक छन्द ॥

तदनन्तर वृत्र सुबाहुबली । नृप प्रापत ह्वै नभमांहि छली ॥ रति उन्नत प्रस्तरकी बरषा । करतो सुभयो तहं बेधरषा ॥ सुर ते शरवृष्टि महा करिकै । सु बरावत भे तिनकों चरिकै ॥ दिवमें शरके गण छाय रहे । सटि बारिदके समभाय रहे ॥

दोहा ॥

चाहि वृत्रसो तदनु करि मायायुद्ध महान । मोहत भो सुरराजकों तब परम बलवान ॥
सामबेदके बाक्यसों सुऋषि बशिष्ठ अनूप । मोह दूरि सुरराजको करत भए तहं भूप ॥

वशिष्ठउवाच ॥ तोमरछन्द ॥

तुम होय कै सुरराज । बलवान बीर दराज ॥ सुनु हौत मोहित पर्म । किहि हेतुतें वर कर्म ॥ बिधि बिष्णु हैं तव पास । शिव सोम औ सहुलास ॥ अरु देखु ए ऋषि सर्ब । तव खरे पास अखर्ब ॥ डरु नेकु तूं न सुरेन्द । हतु शत्रुवृन्द बिलन्द ॥ तव स्तव पढ़त दराज । गुरुआदि ऋषि सुरराज ॥

भीष्म उवाच ॥ दोहा ॥

ए बशिष्ठके बचन सुनि बासव बीर अनूप । बलदराजकों प्राप्त सो होत भयो सुनु भूप ॥
दूरि करत माया भयो वृत्रासुरकी सर्ब । महत तेजसों आपने बासव बली अखर्ब ॥

नगस्वरूपिनी छन्द ॥

सुवृत्रको निहारिकै । कराल शोच कारिकै ॥ सु औ चमूहु देखिकै । महाकराल लेखि कै ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

सुराचार्य बहु ऋषिन सह जाय महेश्वरपास। तिनकों प्रथम सुनाय कै वृत्रतेज परकास ॥
तदनु प्रार्थना करत भे वृत्रनाशके अर्थ। जानि महेश्वरकों महा तेजोमय सु समर्थ ॥
तदनु महेश्वरको महा तेज होय ज्वर भूरि। वृत्रासुर बलवानकी देहमांहि गो पूरि ॥
तदनु महेश्वर कहत भे सुरराजहि इमि बैन। यह वृत्रासुर परम है बल महानके ऐन ॥
वज्र माया यह करत है गति याकी सरबच। प्राप्त योगको होय कै तूयाको हनि अच ॥

अरिल छन्द ॥

साठि हजार वर्ष कीन्हो बर। वृत्रासुर तप पूरब पविधर ॥ विधिवत थिरतामें मनकों करि। हिए कामना अतिबलकी धरि ॥ याहि दियो हो तहं यह बर विधि। लहि है वृत्रासुर महिमा सिधि ॥ औ लहि है तू महाबलत्वहि। उग्रतेज अरु महाकुलत्वहि ॥

दोहा

याते अतिही उग्र है वृत्रासुर बलवान। याको हनिबे काज मैं अपनो तेज महान ॥
तोहि देत हौं भीतिकों छोड़ि याहि तू मारि। उह युद्धमें बज्रसों गर्जि बीर असुरारि ॥

शक्रउ वाच ॥ जयकरी छन्द ॥

तब प्रसादसों याकों हनिहौं। निज प्रताप लोकनमें तनि हौं ॥ भीष्मउ वाच ॥ ज्वर जब वृत्रासुरके तनमें। प्राप्त भयो तब सुर ऋषिगणमें ॥ फैलत भो आनन्द महानो। ऐसो सो नहिं जाय बखानो ॥ तिहिते सुर ऋषि महत निनादै। करत भए बहु छोड़ि बिषादै ॥ तदनन्तर बहु बाजे बाजे। युद्धकाज भट दुहुंदिशि गाजे ॥ बगरीही माया जो भारी। क्षणमें नष्ट भई सो सारी ॥ असुर वृन्द अतिही अकुलाने। सुधि बुधि अपनी सर्व भुलाने ॥ यह वृत्तान्त जानि ऋषि देवा। भूपति तहां सहित अहमेवा ॥ सुनाशीरको करि सु बड़ाई। मारु मारु धुनि करी सुहाई ॥

दोहा ॥

तहं रथस्थ सुरराजको अति कठोर भो रूप। सुनिकै सुस्तुति ऋषिणकी सुखकी उक्ताभूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे वृत्रासुरोपाख्याने अष्टासीतितमोऽध्याय: ॥

भीष्मउ वाच ॥ दोहा ॥

वृत्रासुर ज्वर युक्तके जे शरीरके मांहि। चिन्ह भए रण समयमें कहत तेसु तब पांहि ॥

चामर छन्द ॥

सुआस्य तास धूम्रके समान तच होत भो। महान स्वास देहमाहि कम्पको उदोतभो ॥
उठे सुरोम सर्व औ अखर्ब जो मजात भो। शिवा कढ़ी सुवक्त्र ते कपाल तास स्यातभो ॥

दोहा ॥

गिरति भई आकाशते उल्का ताके तीर। महता घोरा ताहि लखि भके असुर सब बीर ॥

उकछाछन्द ॥

गृध्र औ बक काक। बोलत कुत्सित वाक ॥ वृत्रासुरके घोर। फिरत भए चहुं ओर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगस्वरूपिनी छन्द ॥

सुबज्र लेय हाथमें। अमर्त्यवृन्द साथमें ॥ निहार तो सुवृत्रको। भयो धरैं सुछत्रको ॥

गुरुतोमर छन्द ॥

ज्वर सों युत वृत्र बली रणमें। लखि बासव को रुटकै मनमें ॥
अति घोर निनाद भयो करतो। डरको नहिं नेक भयो धरतो ॥

दोहा ॥

लेत जंम्हाई वृत्रपै बज्र चलायो शक्र। अतिही तेजोमय महत कालअग्नि सम वक्र ॥
क्षिप्रहि भयो गिरावतो वृत्रहि सो पबिघोर। जै जै जै धुनि करत भे देव सर्व तिहि ठोर ॥
युतसत्ता सों बिष्णुकी बज्र चण्ड भूपाल। तासों हनि वृत्रहि गयो दिवको श्रीसुरपाल ॥

रामगीती छन्द ॥

नृपतत् अनन्तर वृत्रवारी देहते अति भाम। अति घोर रूपा ब्रह्महत्या भई कढ़ती आम ॥
दशनावली अतिही कराला घोर चक्षु बिशाल। कछु कृष्ण पिंगल रूप जाको खुले बाल कराल ॥ अरु धरे दीर्घ कपाल माला अति बिशाला तौन। औ चीरबल्कल किए धारण तात बरबल भौन ॥ बहु रुधिरसों सो भरी देखन लगी इन्द्रहि तच। सुरराज सो सुर लोकको नृप छुतो जातो अच ॥ लखि ताहि गहती भई सो कर तास गरमें डारि। लखि ताहि भारी भीतिसेतो भरो बर असुरारि ॥ सो कमलके बिशमांहि बहु दिन भयो करतो बास। तहं भई तेजोमई नष्टा सर्व ताकी भास ॥ बहु ब्रह्महत्या छूटिबेकी करी इन्द्र उपाय। पै नहीं छूटी महाघोरा दुःखदा नरराय ॥ नृप तत अनन्तर जाय ब्रह्मापास श्रीसुरराज। लहि चरण गिरतो भयो तिनके भरो दुःखदराज ॥ है ब्रह्महत्या गह्यो सुरपहि बिधाता यह जानि। गुणि ब्रह्महत्या को भयो इमि कहत मेधा तानि ॥ तू छोड़िदे सुरराज को है कह्यो मेरो मानि। है कहा इच्छा तोहि मोको अच कछु अनुमानि ॥ ब्रह्महत्योवाच ॥ तुम भए परम प्रसन्न मोपै बिधाता लोकेश। तेहिते सु मोकों सर्व प्रापत भयो कछु नहिं शेश ॥ मैं नास तेहां करो मोको देहु आपु निवासु। इमि बचन कहि पुनि कह्यो ऐसे बिधाता को आसु ॥ मर्य्याद तुमही लोकमें यह करी है लोकेश। गो बिप्र है नहिं योग्य बधके पूज्य परम हमेश ॥ जो कहत हौ सो करोंगी रहि हैं न पै मर्य्याद। तुम देहु मोहिं निवास मैं तहं रहौं छोड़ि बिषाद ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

द्विजहत्याके प्रगट ए चतुरानन सुनिवैन। रहिबे को इमि कहत भे देहै तोको ऐन ॥
तदनन्तर करते भए ब्रह्मा शिखिको ध्यान। इमि ब्रह्मा तट आयकै कहतो भयो कृशान ॥
आज्ञा जो कछु होय हम करैं तौन लोकेश। चतुरानन ए बन्हिके सुनिकै बचन बिशेश ॥
कहतभए इहिभांति हम द्विजहत्याके भाग। करिहैं बहु तिनमांहि तुमपावकबर बड़भाग ॥
चौथेभागहि लेहुतुम अच गुणोमति और। अघ छूटनको शक्रको यह शिखि सुनि करि गौर ॥
कहतभयोइमिजौन तुमकाहिहौ करिहौ सोय। पैमेरी कब छूटिहै अघ तुम कहिए जोय ॥

ब्रह्मोवाच ॥

जबहूं हैप्रज्वलित तू तव जोपूजा नांहि। करिहै तबशिखि जायगी द्विजहत्यातिहिपांहि ॥
बैन धनंजय श्रवण करि ब्रह्माके ए ख्यात। द्विजहत्या के भागको धारत भो है तात ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदनुबुलावतभोद्रुहिणतृणऔषधिअरुवृक्ष। कह्योतिनकोजो कह्यौ अग्निहिकतो प्रतक्ष ॥
व्यथित होयकै अग्निवत ब्रह्माके सुनि बैन। कहत भए इमि हे द्रुहिण द्विजहत्याको ऐन ॥
धारण करिहै पै सुनो याको ह्वैहै अन्त। कब तुम कहो विचारिकै दुख भो हमें अनन्त ॥
हम सब अपने भाग्यसों शीतादिक जे सर्व। सहत तिन्हे हैं आपु हौ गुणत न द्रुहिण अखर्व ॥

ब्रह्मो वाच ॥

छेदन भेदन करिहि जो पर्व कालके मांहि। द्विजहत्याके भाग सो जैहै ताके पांहि ॥

भीष्मउवाच ॥

तरु औषधि तृण ए बचनसुनिकै विधिकोपूजि। जिमि आए तिमि जात भे सब सुवक्र विधि कूजि ॥
तदनु बुलावत भो द्रुहिण अमरानकों तात। कह्यो तिनकों जोकतो कह्यो नगादिहिख्यात ॥

अमरसऊचु: ॥

द्विजहत्याको भाग हम लेहैं चतुरथ अद्य। पै छूटैगी यह कबै कहो हमें तुम सद्य ॥

भीष्मउवाच ॥

मैथुन करि है जो पुरुष रजस्वलाके मांहि। द्विजहत्याको भाग यह जैहै ताके पांहि ॥
तदनन्तर कीलालको ब्रह्मा चिन्तन कीन। सो ब्रह्माकों प्राप्त ह्वै करि सु प्रणाम प्रबीन ॥
विधि तुम मम चिन्तन कियो यातें हम तव तीर। आए हैं जो कहहु सो करैं कह्यो इमि बीर ॥

ब्रह्मोवाच ॥

द्विजहत्या सुरराजकों प्रापत भई विशाल। ताको चौथो भाग तुम लेहु सुनो कीलाल ॥

आपऊचु: ॥

द्विजहत्याको भाग हम लेहैं चतुरथ सर्व। पै विधि हमकों छोड़ि है कब यह दुखद अखर्व ॥

ब्रह्मो वाच ॥

मुखपुरीष श्लेषमा जो जन तोमें डारि। है ताके संग जायगी द्विजहत्या तुरवारि ॥
तदनन्तर तजि इन्द्रकों द्विजहत्या सुखदाय। प्राप्त भई चारिहुनमें होती है नरराय ॥
फिरि आज्ञा लहि द्रुहिणकी अश्वमेध सविधान। सुनाशीर करतो भयो महाधीर बलवान ॥
परम शुद्धिकों प्राप्त भो तातें यो सुरराज। यह पूरव हम हौ सुन्यो कुन्तीसुत नरराज ॥
कृपातें सुलोकेशकी द्विजहत्या सो वक्र। छूटि सु निज ऐश्वर्य्यकों प्राप्त होत भो शक्र ॥
वृत्रासुरके बदनते भे उत्पन्न शिखण्ड। ते द्विजातिके भक्षणहि भूपति प्रबल प्रचण्ड ॥
श्रेष्ठ ताहि प्रापत भयो जैसें वज्री बीर। तैसें ह्वै हो प्रात नृप तुमहू बर रणधीर ॥
पढ़िहैं शक्र कथाहि जो पर्व पर्वके मांहि। विप्रवृन्दमें किल्बषहि प्रापति ह्वैहैं नांहि ॥
कह्यो पराक्रम इन्द्रको अद्भुत अब महान। अब इच्छा है सुननकी तुमको कहा सुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ
कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे
शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वृत्रवधोनामएकोननवतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

ज्वरसों मोहित वृत्रको वज्री वज्र चलाय। मार्यो सो सुनिकै भई इच्छा यह नरराय ॥
ज्वरजो सो उत्पन्न भो किमि किहिते कहु आप। ज्वरवारी उत्पत्तिको हमकोबुद्धिकलाप ॥

भीष्मउ वाच ॥

जैसे ज्वर उत्पन्न भो तुम्हें कहत हौं आम। कुन्तीसुत भूपालमणि सुनो बीर बलधाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहर छन्द

रत्नसों भूषित अभिराम। गिरिसुमेरको शृंग ललाम॥ तापै बैठे ऊते महेश। शैल सुता सह पूर्व सुरेश॥ औ बैठे अश्वनीकुमार। हे औ धनद सुभूप उदार॥ सत्कुमारादिक ऋषि पर्म। बैठे ऊते तहां सह शर्म॥ औ सुअंगिरस आदिक तात। बैठे हे सुरर्षि अवदात॥ बैठे नारद पर्वत तच। हे तहं गति तिनकी सरवच॥ औ सुअप्सरा सर्व अनूप। बैठी ऊतीं तहां सुनु भूप॥ शीतल मन्द सुगन्ध समीर। बहत ऊती सुखदायक बीर॥ औ विद्याधर सिद्ध सुढार। सेवत हे पशुपतिहि उदार॥ औ बहु नाना वपुधर भूप। औ हे राक्षस तच अकूत॥ नन्दी धारण कीन्हें शूल। खरो तेजसों भरो अतूल॥ गंगा धारण कीन्हें रूप। सेवतिहीं शङ्करहि अनूप॥

दोहा॥

इमि देवनसों ऋषिनसों पूजित श्रीभगवान। रहत भए गिरि शृंगपै उन्नत परम सुठान॥

मनोहर छन्द॥

कौनहु कालमांहि भूपाल। दक्ष प्रजापति बिक्ष बिशाल॥ इच्छा करी करणकी यज्ञ। पूरवत विधिसों धरमज्ञ॥ शक्रादिक सु देवता सर्व। दक्षयज्ञको लखन अखर्व॥ भए सु हरद्वारको जात। बैठि बिमानन पै अवदात॥ शैलसुता तिन सबकों देखि। कहत भई शम्भुहि इमि लेखि॥ ए सुर जात कहां हैं सर्व। बैठि बिमानन पै सुअखर्व॥ सुनाशीर आदिक सानन्द। कहिये संशय भयो बिलन्द॥ महेश्वरउवाच॥ हयमख करत प्रजापति दक्ष। तच जात शक्रादिक खक्ष॥ उमोवाच॥ दक्षयज्ञमें क्यौं नहिं जात। आपु कहौ हमकों बिख्यात॥ महेश्वरउवाच॥ देवन पूर्वहिंसो मखमाहिं। हमको भाग देत हैं नाहिं॥ उमोवाच॥ अतिहि श्रेष्ठ देवनमें आप। परमतेजके महत कलाप॥ पै नहिं पावत भाग ईशान। याते भो दुख मोहि महान॥ भीष्मउवाच॥ ऐसे कहि शङ्करको बैन। होति भई चुप घरी अचैन॥ देवीके मनको वृत्तान्त। मनमें जानि शम्भु क्षितिकान्त॥ लै कै भीमरूप गण साथ। नन्दीपै चढ़ि गिरिजा नाथ॥ मख बिध्वंस करत भे जाय॥। दक्षप्रजापतिको नरराय॥ केते गण करते भे ध्यान। किते करत भे हास महान॥ किते रुधिरसों अग्निहि धाय। भए बुझावत तच नृराय॥ मख खम्भनको किते उखारि। भए फिरावत कौतुक धारि॥ दक्ष सेवकनको तहं दौरि। ग्रसत भए केते बरजोरि॥ तदनु तौनमख धरि मृगरूप। भो अकाशको भागत भूप॥

दोहा॥

ताके पीछे जात भे शिव लहि शर कोदण्ड। तच खेदकन भालते शिवके गिरो प्रचण्ड॥ सो कण भूमें गिरतही महाअग्नि भो होत। ताके बिच एक पुरुषको होतो भयो उदोत॥

मनोहर छन्द॥

ताको अतिही रूख शरीर। भीमरूप चख अरुण सुबीर॥ तास भयङ्कर ऊरध केश। भरो रोमसों ताको बेश॥ कृष्ण बर्णसो परम कराल। श्येन उलूक सदृश भूपाल॥ धारण किये रक्त सो बास। मखहि जरावत भो सो आस॥ सुर औ ऋषिगण पै नृप तौन। तदनु दौरतो भो बल भौन॥ साइससेती तास अखर्व। भीत भयेसुर औ ऋषि सर्व॥ बसुधा कांपति भई बिशाल। शीघ्र बेगसों तास नृपाल॥ सर्व जगतमें हाहाकार। दिशि दिशिमें भो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होत अपार ॥ ब्रह्मा तिहो समयके मांहि । जाय कहत भो इमि शिवपांहि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ भाग यज्ञमें देवत सर्व । तुमहूकों देहैं हे सर्व ॥ यह जो श्यामल पुरुष कराल । कर्षि लेहु ताकों तुम हाल ॥ तब रुटते सुर औ ऋषि भरि । रहे भीतिसों हैं सब पूरि ॥ तब प्रस्वेदते भो जो आम । यह ज्वर ह्वै है ताको नाम ॥ रहि है शिवलोकनके मांहि । सकि है धारि याहि कोउ नांहि ॥ याते कीजै खण्ड अनेक । याके करि कै आपु विवेक ॥ सुनिकै ब्रह्माके ए वैन । कहत तथास्तु भए शिव ऐन ॥ खण्ड किए बहु ज्वरके ईश । गुणिकै विधिके बचन महीश ॥ गज मस्तक में पीड़ा जौन । ज्वरको खण्ड जानु नृप तौन ॥ पर्वत मांहि शिला जतु तात । काई जलके माहीं ख्यात ॥ अरु सर्पनमें जो निर्मोक । ज्वर को खण्ड जानु बल ओक ॥ पशुपदमें जो खोरक रोग । औ भूमें ऊखर संयोग ॥ हयगल व्रणमें आमिष खण्ड । बढ़त तौन ज्वरभाग प्रचण्ड ॥ शिखामांहि कढ़ती है और । मोर शीशमें नृप शिर मौर ॥ औ कोकिलके जो चखरोग । ज्वर विभागको सो संयोग ॥ सर्व शुकनके हिक्का जौन । ज्वर विभाग जानो नृप तौन ॥ शार्दूलनमें जो श्रम माम । ज्वर विभाग सो है बुधिधाम ॥ ज्वरहि नाम मानुष्यन मांहि । निश्चय करि सुकह्यो तब पांहि ॥

चरण दोहा ॥

जन्ममरणमें मध्यमेंत्योहि जनहिंप्राप्त ज्वरहोत। महततेजयह शंकरको है ज्वरनामाबलपोत ॥

दोहा ॥

वृत्रासुर जब मुक्त भो ज्वरसेती भूपाल । मार्यो वज्र चलायकै तब ताकों सुरपाल ॥ प्राप्त होतभो विष्णुकों वृत्रासुर तजि देह । घातित ह्वै कै वज्रसों महा पराक्रम गेह ॥ ज्वरवारी उत्पत्ति हम कही तुम्हैं भूपाल । अब इच्छा है सुननकी तुमकों कहा विशाल ॥ ज्वरबारी उत्पत्तिको जो सुनि हैं वृत्तान्त । रोगनसों सो रहित ह्वै ह्वैहैं सुखी नितान्त ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे ज्वरोत्पत्तिर्नाम नवतितमोऽध्यायः ॥

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥

यज्ञ कियो जो भंग शिवताहि कियो पुनि दक्ष। किमिलहि शङ्करको कृपा हमकों कहो प्रतक्ष ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

हरद्वार शुभ देश में दक्ष करत भो यज्ञ। संग सुऋषि संघात लै सह विधान धर्मज्ञ ॥ स्वर्गलोक बासी परम स्तुती करत भे सर्व । औ पृथ्वी वासी सरब अञ्जलि जोरि अखर्व ॥ इन्द्र सहित आवत भए मखभागी ते सर्व । तिनको देखि दधीचि अति कीन्हों क्रोध अखर्व ॥ कहत भये ऐसे बचन ऋषि दधीचि नृप तब । सो न यज्ञ है शम्भुकी पूजा होत न यज्ञ ॥ घोर उपद्रव होत भो यामें बिन गिरिजेश। ताहि विचारत कोउ नहिं मति बिसारि विशेश ॥ ऐसें कहिकै वैन सो ध्यानचक्षुसों स्वच्छ। सहगिरिजा गिरिजापतिहि देखत भो ऋषिदक्ष ॥ औ देवीके देखतो भो नारदहि समीप। अतिहि महत आनन्दकों प्रापत होत महोप ॥ एक मंच तिन सबनको जानि निभोचि सगर्व। मखगृहते कढ़ि कहत भो इमि सुनि दक्ष अखर्व ॥ पूजनतें सु अपूज्यके औ जे पूज्य अनूप। किए अपूजन तास बुध जानत हैं मतिरूप ॥ पातिक नर संघारको होत प्राप्त है पर्म। अहत गुणै कोऊ नमम भाषत मोहि समर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणाकुलक छन्द ॥

इतनेहीमें शङ्कर आए। सबके देखत रूढ़सों छाए॥ तिनको देखि कहत भो बानी। दक्ष प्रजापति इमि अभिमानी॥ रुद्र सुएकादश है तिनकों। जानत हैं हम नाहीं इनकों॥ दधीचिरुवाच॥ शंभु समान और हम नाहीं। देखत देवत लोकन माहीं॥ शिवको नहीं बुलावन केरो। सबको मंच परत है हेरो॥ यहि सुमंच सो यज्ञ न ह्वै है। पूरण भूरि उपद्रव ग्वैहै॥ दक्षउवाच॥ ए सुविष्णु सब यज्ञन वारे। हैं सुईश प्रभु सुखद सुढारे॥ एई योग्य बुलावनको है। इनके और समान न हो है॥ दै हो यज्ञ भाग इनहींकों। करिकै भूरि भक्तिमें ही कों॥ देव्युवाच॥ कौन दान औ नियम करौं मैं। औ किहि तपको टटहि धरौं मैं॥ यज्ञभाग जिहिसों पति मेरे। पावैं ऋषिसुर बीच घनेरे॥ गौरी कों कहती इमि बानी। कहत भए ऐसे वृषजानी॥ मोहि गौरि तूं जानति नाहीं। मैं अब कहा कहौं तब पांहीं॥ मखमें स्तुति करत द्विज बेदी। मेरो रति सह होत अखेदी॥ करत कल्पना मखके माही। मम भागज्ञको सविधि सदाही॥ देव्युवाच॥ करत प्रतिष्ठा निज तिय सोहै। हीनज्ञ पुरुष चढ़ाय सु भोहै॥ भगवानुवाच॥ करत प्रतिष्ठा होंमैं नाहीं। देखु अबहि मैं तेरे पाहीं॥ जाहि करत उत्पन्न दिराजै। मखको भाग लेनके काजै॥ ऐसे कहि देवी को बानी। श्री कैलाशनाथ वृषजानी॥

दोहा॥

अपने मुखते एक तहं भए बनावत भूत। ताहि कहत ऐसे भए करिकै कृपा अकूत॥ दक्ष प्रजापतिके मखहि नष्ट शीघ्र करु जाय। बीरभद्र तब होय गो नाम ख्यात बरकाय॥

चरणाकुलक छन्द॥

शंकरकी यह बाणी सुनिकै। तिहिकौं बीरभद्र सो गुणिकै॥ काली सहित जाय मख-नष्ट। करि करिबे दक्षादि सकष्ट॥ बलसों दूरि करण के काजै। पारवती के कोप दराजै॥ बीरभद्र गण तदनु सुढारे। रोमकूपते अति बलवारे॥ बर उत्पन्न बहुत गण कीन्हें। शिव सम उग्र परे ते चीन्हें॥ रौम्य नाम होते भे तिनके। अतिहि बीरवर साध्वस बिन के॥ दक्ष यज्ञको कीवे भंगे। आए ते धरि क्रोध उतंगे॥ करत भए तहं घोर निनादै। सुरनज्ञ सुनिकै लह्यो विषादै॥ केते दक्ष गणन कों मारे। केते यज्ञ स्तंभ उखारे॥ केते हव्य खायके भूमैं। केते डार देत भे भूमैं॥ ज्ञती देवतन की जे नारी। तहंते फेंकि दूरि गहि डारी॥ रक्षादेव करत हैं जाकी। तामें धरी पांति सनिधाकी॥ ऐसो यज्ञस्थान सुहायो। बीरभद्र गण ताहि जरायो॥ तदनु काटि कैं शिर मखवारो। घोर निनाद करत भो भारो॥ दक्ष और ब्रह्मादिक देवा। सके पाय तिहिको नहिं भेवा॥ तदनु भए पूछत इमि ताकों। को तूं धरे भूरि बलताकों॥ बीरभद्रउवाच॥ देवीको भो क्रोध महानो। ताहि जानि अमरष ईशानो॥ करत भए तातेहम आए। करण भंग तब मखहि सुहाए॥

दोहा॥

मैंहौं भो शिव कोपते बीरभद्र मम नाम। भई भद्रकाली प्रगट गौरी रुटते माम॥

चरणाकुलक छन्द॥

शिवके भेजे आए इत हैं। जानो हम तव परम अहित हैं॥ ताते शिवके शरने जाको। मनमें दक्ष और मति लावो॥ बीरभद्रकी बाणी सुनिकै। दक्ष धर्म भूत मनमें गुणिकै॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवतट जाय नम्र अति ह्वैकै। दक्ष दक्ष इतिमों हिय ख्वैकै॥ पढ़िस्तोत्र शुभ लोवे शिवको। करत प्रसन्न भयो अति शिवको॥ तदनु कहत भो ऐसे बानी। शंकरको लहि कृपा महानी॥ धर्म क्रियोजो मैंवहु कालै। सहित सुवेद विधान विशालै॥ सो नहिं व्यर्थ होय शिवमेरो। यह वर देहु शरनि निति हेरो॥ शिवउवाच॥ धर्म नष्ट ह्वैहै तब नाहीं। मोदित होहु दक्ष मनमाहीं॥ ये सुनि वैन हर्षसों पागो। शिव सहस्रनामहि अनुरागो॥ पढ़िके स्तुति करत भो नीकी। दक्षप्रजापति दृढ़यानी की॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुस्तुति करी जिन नामन लेती। शिवको अति करि दक्ष सचेती॥ भई लालसा मो मन माहीं। तिन्हें सुननकी कछु मो पाहीं॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥

अति सुखदायक नाम हैं शंकरके अवदात। तेमहा सह तुम सुनो तुम्हें कहत हौं तात॥

सहस्रनाम॥

नमस्तेदेवदेवश देवारिबलसूदन। देवेन्द्रबलविष्टम्भ देवदानवपूजित॥ सहस्राक्षोविरूपाक्ष अक्षयक्षाधिपप्रिय॥ सर्वत:पाणिपादान्त सर्वतोक्षिशिरोमुख। सर्वत:श्रुतिमल्लोके सर्वमाव्य-त्यतिष्ठसि॥ शंकुकर्णमहाकर्ण कुम्भकर्णार्णवालय। गजेन्द्रकर्णगोकर्ण पाणिकर्णनमोस्तुते॥ शतोदरशतावर्त्त शतजिह्वनमोस्तुते। गायंतित्वांगायत्रिणो अर्चयत्येकमर्किण:॥ ब्रह्माणंत्वां शतक्रतु मूर्ध्वंस्वमिवमेनिरे। मूर्तोहितेमहामूर्त्तं समुद्रांबरसन्निभ॥ सर्वावैदेवताह्यस्मि न्नावोगोष्टइवासते। भवच्छरीरेपश्यामि सोममग्निजलेश्वरं॥ आदित्यमयवैविष्णुं ब्रह्माणंचबृह-स्पतिं। भगवान्कारणंकार्य्यं क्रियाकरणमेवच॥ असतश्चसतश्चैव तथैवप्रभवाप्ययौ। नमोभ-वायशर्वाय रुद्रायवरदायच॥ पशूनांपतयेनित्यं नमोस्त्वन्धकघातिने। त्रिजटायत्रिशीर्षाय त्रिशूलवरपाणिने॥ अम्बकायत्रिनेत्राय त्रिपुरघ्नायवैनम:। नमश्चण्डायकुण्डाय वण्डायाण्ड-धरायच॥ दण्डिनेसमकर्णाय दण्डिमुण्डायवैनम:। नमोर्ध्वदंष्ट्रकेशाय शुक्लायावततायच॥ विलोहिताय भूमाय नीलग्रीवायवैनम:। नमोस्त्वप्रतिरूपाय विरूपायशिवायच॥ सूर्य्यायसूर्य्य मालाय सूर्य्यध्वजपताकिने। नम:प्रमथनाथाय वृषस्कन्धायधन्विने॥ शचुन्दमायदण्डाय पर्ण चिरपटायच। नमोहिरण्यगर्भाय हिरण्यकवचायच॥ हिरण्यकृतचूड़ाय हिरण्यपतयेनम:। नमस्तुतायस्तुत्वाय स्तूयमानायवैनम:॥ सर्वायसर्वभक्षाय सर्वभूतांतरात्मने। नमोहेचेयमंचाय शुक्लध्वजपताकिने॥ नमोनाभायनाभ्याय नम:कटकटायच। नमोस्तुकृशनासाय कृशांगायकृशा यच॥ संहृष्टायनमस्तुभ्यं नम:किलकिलायच॥ नमोस्तुचायमाणाय शयितायोत्थितायच। स्थितायधावमानाय कुण्डायजटिलायच॥ नमोनर्तनशीलाय मुखवादित्रवादिने। नाट्योपहार लुब्धाय गीतवादित्रशालिने॥ नमोज्येष्ठायश्रेष्ठाय बलप्रमथनायच। कालगायायकल्पाय क्षयायोपक्षयायच॥ भीमदुन्दुभिहासाय भीमव्रतधरायच। उग्रायचनमोनित्यं नमोस्तुदशबा हवे॥ नम:कपालहस्ताय चितिभस्मप्रियायच। विभीषणायभीष्माय भीमव्रतधरायच॥ नमो विकृतवक्त्राय खड्गजिह्वायदंष्ट्रिणे। पक्वाममांसलुब्धाय तुम्बीवीणाप्रियायच॥ नमोवृषाय वृष्याय गोवृषायवृषायच। कंकंकटायदण्डाय नम:पचपचायच॥ नम:सर्ववरिष्ठाय वरायवर दायच। वरमाल्यगन्धवस्त्राय वरातिवरदायच॥ नमोरक्तविरक्ताय भावनायाक्षमालिने। संभिन्नायविभिन्नाय छायायातपनायच॥ अघोरघोररूपाय घोराघोरतरायच। नम:शिवाय शान्ताय नम:शान्ततमायच॥ एकपादद्रुनेत्राय एकशीर्षायवैनम:। क्षुद्रायक्षुद्रलुब्धाय सवि भागप्रियायच॥ चञ्चलायशितांगाय नम:शमशमायच। नमश्चण्डिकघंटाय घटायाघंटघंटिने॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्राध्मातघंटाय घंटामालाप्रियायच । प्राणघंटायगंधाय नमःकलकलायच ॥ हुंहुंहुंकारपाराय हुंहुंकारप्रियायच । नमःशमशमेनित्यं गिरिष्टक्षालयायच ॥ गर्भेमांसमृगालाय तारकायतरायच । नमोयज्ञाययजिने ऋतायप्रऋतायच ॥ यज्ञवाहायदांताय तथायातपनायच । नमस्तटायताय्याय तटानांपतयेनमः ॥ अन्नदायान्नपतये नमस्त्वन्नभुजेतथा । नमःसहस्रशीर्षाय सहस्रचरणायच ॥ सहस्रोदितशूलाय सहस्रनयनायच । नमोबालार्कवर्णाय बालरूपधरायच ॥ बालानुचरगोप्ताय बालक्रीडनकायच । नमोष्टद्वायलुब्धाय क्षुब्धायक्षोभणायच ॥ तरंगांकितकेशाय सुंजकेशायवैनमः । नमःषट्कर्मतुष्टाय त्रिकर्मनिरतायच ॥ वर्णाश्रमाणांविधिवत् पृथक्कर्मनिवर्तिने । नमोघुरुघायघोषाय नमःखलखलायच ॥ श्वेतपिंगलनेत्राय कृष्णरक्तेक्षणायच । प्राणभग्नायदण्डाय स्फोटनायकृशायच ॥ धर्मकामार्थमोक्षाणां कथनीयकथायच । सांख्यायसांख्यमुख्याय सांख्ययोगप्रवर्तिने ॥ नमोरथ्यविरथ्याय चतुष्पथरथायच । कृष्णाजिनोत्तरीयाय व्यालयज्ञोपवीतिने ॥ ईशानवज्रसंघात हरिकेशनमोस्तुते । अबंकांविकनाथाय व्यक्ताव्यक्तनमोस्तुते ॥ कामकामदकामाय तृप्ततृप्तविचारिणे । सर्वसर्वदसर्वघ्न संहारांतनमोस्तुते ॥ महामेघचयप्रख्य महाकालनमोस्तुते । स्थूलजीर्णांगजटिले वल्कलाजिनधारिणे ॥ दीप्तसूर्याग्निजटिले वल्कलाजिनवाससे । सहस्रसूर्यप्रतिम तपोनित्यनमोस्तुते ॥ उन्मादनशतावर्त गांग्यतोयार्द्रमूर्द्धज । चन्द्रावर्त्तयुगावर्त्त मेघावर्त्तनमोस्तुते ॥ त्वमन्नमत्ताभोक्ताच अन्नदोन्नभुगेवच । अन्नस्रष्टाचपक्ताच पक्वभुक्पवनोनलः ॥ जरायुजाण्डजाश्चैव स्वेदजाश्चतथोद्भिजाः । त्वमेवदेवदेवेश भूतग्रामचतुर्विध ॥ चराचरस्यस्रष्टात्वं प्रतिहर्त्तातथैवच । त्वामाहुर्ब्रह्मविदुषो ब्रह्मब्रह्मविदांवर ॥ मनसःपरमायोनिः खम्बायुर्ज्योतिषांनिधिः । ऋक्सामानितथोङ्कार माहुस्त्वांब्रह्मवादिनः ॥ हायिहायिऋवाहायि ऋवाहायितथासकृत् । गायन्तित्वांसुरश्रेष्ठ सामगाब्रह्मवादिनः ॥ यजुर्मयोऋग्यजुश्च त्वामाहुर्निमयस्तथा ॥ पञ्चमेस्तुतिभिश्चैव वेदोपनिषदोगणैः ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याः शूद्रावर्णावराश्चये । त्वमेव मेघसंगाश्च विद्युत्तमितिगर्जितः ॥ सम्वत्सरस्त्वमृतवो मासोमासार्द्धमेवच । युगंनिमेषाःकाष्ठास्त्वं नक्षत्राणिग्रहाःकलाः ॥ पृषाणाङ्ककुदोसित्वं गिरीणांशिखराणिच । व्याघ्रोमृगाणां पततां तार्क्ष्योनन्तश्चभोगिनां ॥ क्षीरोदोप्युदधीनांच यंत्राणांधनुरेवच । वज्रःप्रहरणानांच व्रतानांसत्यमेवच ॥ त्वमेवद्वेषदृच्छाच रागोमोहःक्षमाक्षमे । व्यवसायोधृतिर्लोभः कामक्रोधौजयाजयौ ॥ त्वंगदीत्वंशरीचापी खड्गीसशरीतथा । छेत्ताभेत्ताप्रहर्त्तात्वं नेतामंतापितामतः ॥ दशलक्षणसंयुक्तो धर्मार्थकामएवच । गंगासमुद्राःसरितः पल्वलानिसरांसिच ॥ लताबल्यस्तृणौषध्यः पशवोमृगपक्षिणः द्रव्यकर्मशुभारम्भः कालपुष्पफलप्रदः ॥ आदिश्चान्तश्च वेदानां गायत्र्योंकारएवच । हरितोरोहितोनीलः कृष्णोरक्तस्तथारुणः ॥ कद्रुश्चकपिलश्चैव कपोतोमेचकस्तथा । अवर्णश्चसुवर्णश्च वर्णकारोह्यनोपमः ॥ सुवर्णनामाचतथा सुवर्णप्रियएवच । त्वमिन्द्रश्चयमश्चैव वरदोधनदोनलः ॥ उपप्लवश्चित्रभानुः स्वर्भानुर्भानुरेवच । होत्रंहोताचहोम्यंच ऋतंचैवतथाप्रभुः ॥ त्रिसौपर्णंतथाब्रह्म यजुषांशतरुद्रियं । पवित्रंचपवित्राणां मंगलानाञ्चमंगलं ॥ गिरिकोहिण्डुकोवृक्षो जीवःपुङ्गलएवच । प्राणःसत्वंरजश्चैव तमश्चाप्रमदस्तथा ॥ प्राणोपानःसमानश्च उदानोव्यानएवच । उन्मेषश्चनिमेषश्च क्षंतक्षंभितमेवच ॥ लोहितान्तर्गतादृष्टि र्महाबक्रमहोदरः । सूचीरोमाहरित्श्मश्रु रूर्ध्वकेशश्चलाचलः ॥ गीतवादित्रतत्वज्ञो । गीतवादनकप्रियः ॥ मत्स्येनलचरोनाल्यो ऽबालःकेलिकलःकलिः । अकाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वातिकालश्च दुष्काल:कालएवच ॥ मृत्यु:क्षरश्चक्षयश्च पक्षोपक्षक्षयंकर: । मेघकालोमहादंष्ट्र: सम्वर्त्तकबलात्मक: ॥ घण्टोघण्टाघटीघण्टी चरुचेलीमिलीमिली । ब्रह्माकायकमण्डलीनां दंण्डीमुण्डस्त्वदंण्डधृक् । चतुर्युगश्चतुर्वेद श्चातुर्होत्रप्रवर्तक: ॥ चतुराश्रमनेताच चातुर्वर्ण्य करश्चय: । सदाचारप्रियोधूर्तो गणाध्यक्षोगणाधिप: ॥ रक्तमाल्याम्बरधरो गिरीशोगिरिक प्रिय: । शिल्पिक:शिल्पिनांश्रेष्ठ: सर्वशिल्पप्रवर्तक: ॥ भगणेत्रांकुशश्चण्ड: पूष्णोदन्तविनाशन: । स्वाहास्वधावषट्कारो नमस्कारोनमोनम: ॥ गूढव्रतोगुह्यतपा स्तारकस्तारकामय: । धाता विधातासंधाता विधाताधारणोधर: ॥ ब्रह्मातपश्चसत्यश्च ब्रह्मचर्यमयार्जवं । भूतात्माभूतकृद्भूतो भूतभव्यभवोद्भव: ॥ भूर्भुव:स्वरितश्चैव ध्रुवोदान्तीमहेश्वर: । दीक्षितोदीक्षित:क्षांतो दुर्दीक्षोदान्तनाशन: ॥ चन्द्रावर्तोगुणावर्त्त: सम्वर्त:संप्रवर्तक: । कामोविन्दुरणु:स्थूल: कर्णि कारसृजप्रिय: ॥ नन्दीमुखोभीममुख: सुमुखोदुर्मुखोमुख: । चतुर्मुखोबहुमुखो रणोष्टाग्नि मुखस्तथा ॥ हिरण्यगर्भ:शकुनिर्महोरगपतिर्विराट । अधर्महामहापार्श्व श्चण्डधारीगणाधि प: ॥ गोनर्दोगोप्रस्तरश्च गोवृषेश्वरवाहन: । त्रैलोक्यगोप्तागोविन्दो गोमार्गोमार्गएवच ॥ श्रेष्ठ:स्थिरश्चस्थाणुश्च निष्कम्प:कम्पएवच । दुर्वारणोदुर्विषहो दुश्चहोदुरतिक्रम: ॥ दुर्द्धर्षो दु:प्रकम्पश्च दुर्विषोदुर्जयोजय: । शश:शशाङ्क:शमन: शीतोष्णोज्वराधिपृक् ॥ आधयोव्या धयश्चैव व्याधिहाव्याधिरेवच । समयज्ञश्चगव्याधो व्याधीनामागमोगम: ॥ शिखण्डीपुण्डरी काक्ष: पुण्डरीकवनालय: । दण्डधारस्त्र्यंबकश्च उग्रदण्डोण्डहाशन: ॥ विषाग्रपात्सुरश्रेष्ठ: सो मपास्त्वमरुत्वति । अमृतपास्त्वजगन्नाथ देवदेवगणेश्वर: ॥ विषाग्निपामृत्युपाश्च क्षीरपासो मपास्तथा । मधुरश्चुपानामयपा स्त्वंत्वमेवतुखिताज्यपा: ॥ हिरण्यरेतापुरुष स्त्वमेवस्त्वंस्त्रीपु मांस्त्वंहिनंपुसकश्च बालोयुवास्थविरोजीर्ण दंष्ट्रस्त्वंनागेन्द्रशक्र स्त्वविश्वकृत विश्वकर्ता । वि श्वकृद्विश्व कृताम्बरेण्यस्त्वं ॥ विश्ववाहोविश्वरूप स्तेजस्वीविश्वतोमुख: । चन्द्रादित्यौचक्षुषीते हृदयश्चपितामह: ॥ महोदधि:सरस्वती वाग्वलमनलोनिला । होराचनिमेषोन्मेष नक्षत्रज्ञान गोविन्द: ॥ पौराणाऋषयोनते माहात्म्यं वेदितुं शक्ता: । याथातथ्येनतेशिव यामूर्तय: सुसूक्ष्मा स्तेन ॥ मह्यंयातिदर्शनं चाहिमांशततंरक्ष । पितापुत्रमिवौरसं रक्षमांरक्षणीयोहं ॥ तवा नघनमोस्तुते भक्तानुकम्पोभगवान । भक्तश्चाहंसदात्वयि य:सहस्राण्यनेकानि ॥ पुंसामाहत्यद र्दृश: तिष्ठत्येकसमुद्रांते । समेगोप्तास्तुनित्यश: यस्मिन्निद्राजितश्वासा: ॥ सत्वस्था:संयते न्द्रिया: ज्योति पत्यंतियुंजाना । तस्मैयोगात्मनेनम: जटिलेदण्डिनेनित्यं ॥ लम्बोदरशरी रिणे कमण्डलुनिषंगाय । तस्मैब्रह्मात्मनेनम: यस्यकेशेषुजीमूता नद्य:सर्वांगसन्धिषु ॥ कुक्षौ समुद्राश्चत्वार स्तस्मैतोयात्मनेनम: । सम्भक्ष्यसर्वभूतानि यगांतेपर्युपस्थिते ॥ य:शेतेजलमध्य स्थ स्तंप्रपाद्योऽम्बुशायिनं । प्रविश्यवदनंराहोर्य:सोमंपिबतेनिशि ॥ ग्रसत्यर्कंचस्वर्भानुर्भूत्वा मांसोभिरक्षतु । येवानपतितागर्भा यथाभासनुपासते ॥ नमस्तेभ्य:स्वधास्वाहा प्राप्नुवंतुसुदं तुते । येऽगुष्ठमात्रापुरुषा देहस्था:सर्वदेहिनां ॥ रक्षंतुतेहिमान्नित्यं नित्यंचाप्याययन्तुमां । येनरोदंतिदेहस्था देहिनोरोदयन्तिच ॥ हर्षयन्तिनहृष्यंति नमस्तेभ्यस्तुनित्यश: । येनदी- षुसमुद्रेषु पर्वतेषुगुहासुच ॥ वृक्षमूलेषुगोष्ठेषु कांतारेगहनेषुच । चतुष्पथेषुरथ्यासु चत्वरेषु- हटेषुच ॥ हस्त्यश्वरथशालासुजीर्णोद्यानालयेषुच । येषुपञ्चसुभूतेषु दिशासुविदिशासुच ॥ चन्द्रा र्कयोर्मध्यगता येचचन्द्रार्करश्मिषु । रसातलगतायेच येचतस्मैपरंगता: ॥ नमस्तेभ्योनमस्तेभ्यो नमस्तेभ्योस्तुनित्यश: येषांनविद्यतेसंख्या । प्रमाणंरूपमेवच असंख्येयगुणारुद्रा ॥ नमस्तेभ्यो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तुनित्यश: सर्वभूतकरोयस्मा । त्वर्वभूतपतिर्हर: सर्वभूतान्तरात्माच ॥ तेनत्वंननिमंत्रित: त्वमेवह्यज्यसेयस्मा द्यज्ञैर्विविधदक्षिण: । त्वमेवकर्त्तासर्वस्य तेनत्वंननिमंत्रित: ॥ अथवा माययादेवसूक्ष्मया तत्रमोहित: । एतस्मात्कारणाद्वापि तेनत्वंननिमंत्रित: ॥ प्रसीदममभद्रंते भवभावनतस्मने । त्वपिमेहृदयंदेव त्वयिबुद्धिर्मनस्त्वयि ॥ स्तुत्वैवंतंमहादेव विरदामप्रजापति: । भगवानपिसुप्रीत: पुनर्दक्षमभाषत ॥

दोहा ॥

ऐसे करिकै शम्भु की दक्ष स्तुति अवदात । होत भयो चुप फेरि नहिं कछू कह्यौ हेतात ॥ कहत भए इमि दक्ष को ह्वै प्रसन्न ईशान । भए परम इहिस्तवनसों हमपरितुष्ठ सुजान ॥ रहिहौ नित्य समीप मम कहैं कहा हम और । तुमको दक्ष प्रजापते विक्ष विप्र शिर मौर ॥ बाजपेयशत औ सहस अश्वमेध अभिराम । तिनको लहिहौ तुम सुफल मम प्रसाद तेंमाम ॥ भयो विघ्न तव यज्ञमें ताते करहु न क्रोध । ऐसो हो भवितव्यही जानो दक्ष सबोध ॥ दक्ष प्रजापतिसों बचन ऐसे कहिके तब । अन्तर ध्यान सु होत भे गति तिनकी सरबच ॥ दक्षप्रोक्त यहस्तव जो ताको पढ़िहै जौन । औ सुनिहै नहिं अशुभ को प्राप्त होयगोतौन ॥ ह्वैहै मानव प्राप्त सो दीर्घ आयु को भूप । अतिहि श्रेष्ठ यहस्तव है कामद परम अनूप ॥ सब देवन के मांहि जिमि अतिहि श्रेष्ठ ईशान । तिमि सबस्तवन मांहि यहस्तवश्रेष्ठबलवान ॥

रामगीती छन्द ॥

यशराज्यसुखऐश्वर्य्य बिद्या चहै जोजन तात । सोभक्ति सहजन सुनैयहि बरस्तवकोअवदात ॥ भय रोग सबमिटिजातहैअभिरामहोतशरीर । यहदेहसोहोलहतसमतागणनकीबरधीर ॥ यहस्तव जौने धाममाहींपढ़ोजायनरेश । तिहिमाहिंभूतपिशाचराक्षसकरिनशकतकलेश ॥ जो सुनै नारी भक्ति सेती तौनपूज्याहोति । हैहोतिसुरपतिनारिकीसीतासुबिमलाज्योति ॥ जो सुनै अथवा पढ़ै ताके सिद्धि होत सुकर्म । औ बिचारै कहै सोऊ सिद्धि होत सधर्म ॥ ईश गौरी गुहहि औ नंदीहि पूजि सप्रेम । ह्वै तदनु शुद्ध सु पढ़ै शिवको सहसनामसनेम ॥

दोहा ॥

प्राप्त होत देहांत में स्वर्ग लोक के बीच । होतन तिर्य्यग योनि में प्रापत भूप निभीच ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकबिनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे दक्षप्रोक्तशिवसहस्रनाम समाप्तिर्नामनवतितमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

दु:ख महत अरुमृत्यु सोचसित रहत सबजीव । जिमिहमकोए प्राप्तनहिंहोहिकहोमतिसीव ॥

भीष्मउवाच ॥

यच एक इतिहास सुनु भूपति छोंड़ि बिषाद । नारद और समंग को तामें है संबाद ॥

चरणाकुलकछन्द नारदउवाच ॥

नित्य नित्य हर्षितहि रहत है । शोकताहि नहिं नेकु लहत है ॥ औ उद्वेग नेकहू नाहीं । देखि समंग परत तव माहीं ॥ रहत सु नित्य तृप्त के सम है । करतबाल तव चेष्टा तुमहै ॥ समंगउवाच ॥ भूत सु भव्य भविष्यहि जानो । मैं न सत्य मिथ्या हो मानो ॥ याते मनही लहत उदासी । धीरे रहत हर्षता खासी ॥ मिथ्या भाव गुण्य मनमांही । कर्मारम्भ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतहो नाहीं ॥ कर्मारम्भ बिना किहि भांती । तुम ऐसे जीवनकी पांती ॥ जीवैगी तुम यह जो बानी । कहौ सुनो तो ऋषि बरज्ञानी ॥ जीवत अन्ध पंगु है जैसे । जीवत हमहूं हैं सुनि तैसे ॥ सब इन्द्रियहि शोक सों छावै । औ इन्द्रियहि मोह कों पावै ॥ ऐसे मतिसों जो जन जानै । सोइ प्रज्ञ सुख दुख नहिं आनै ॥ मूरख इन्द्रियहै सुनि जाकी । सो नहिं लहत प्राप्त प्रज्ञाकी ॥ प्रापति प्रज्ञा होत न जाको । सुख दुख होत प्राप्त है ताको ॥ सो ऐसो जो आतम ज्ञानी । दुखदा अहन्ताहि जिहिभानी ॥ सो चिन्तै नहिं कबहूं भोगै । औ सुख दुख वारे संयोगै ॥ योगारूढ़ पुरुष वर जोहै । चाहत औरके न सुख सोहै ॥ प्रापति भई न कबहूं जाकी । मनमें धरै न इच्छा ताकी ॥ प्राप्त होय जौ धनहिं महानै । तौन हर्षता मनमें आनै ॥ ताके नाश काल के मांही । प्रापत होय विषादहि नांही ॥

दोहा

योग बिना नहिं होत है प्रापत ज्ञान महान । औ न योग बिन होत है प्राप्त परम कल्यान ॥

मनोहरछन्द ॥

प्राप्त भए प्रिय होत सहर्ष । ताते दर्प होत उत्कर्ष ॥ नारक होत दर्पतें भूरि । ताते भो प्रिय सुदसों दूरि ॥ कह्यो तोहि यह जो वृत्तान्त । तप करिकै मैं तौन नितान्त ॥ जान्यो ताते मोको शोक । करत नहीं बाधा मति ओक ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे सुमंगनारद संवादोनामएकाधिक नवतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

अबलौं वृद्धज्ञानके कहे बहुत उपदेश । आपु पितामह प्रज्ञ वर हमकों सुखद विशेश ॥ जानत तत्व न शास्त्रको संशय गत मनजास । उद्योगहु नहिं करत जो अब श्रेयस कहु तास ॥

चरणाकुलकछन्द भीष्मउवाच ॥

तत्पर गुरु पूजा के मांहि । रहै सुबैठै वृद्धन पांहि ॥ औ वृप सास्वत शास्त्र सुनेते । लहत श्रेय जन कहत गुणेते ॥ अब एक इतिहास सुदारो । कहत तुम्हें हौं ताहि विचारो ॥ गालव अरु नारद मेधा मैं । है संवाद दुहुनको तामैं ॥ गालव निजु श्रेयसके काजै ॥ मति को करि विस्तार दराजै ॥ कहत भए नारदकों बानी । हर्षितह्वै रिजुता सों सानी ॥ लोक तत्वकों हम नहिं जाने । जानत तुम सब तुमहि बखाने ॥ छूटि जाय अज्ञान हमारो । प्राप्त होय वर ज्ञान सुदारो ॥ जासों ऐसी हमैं बतावो । चारु उपाय देर मति लावो ॥ मानव चारिहु आश्रम वारे । निजु निजुहोकौं कहत सुदारे ॥ मिलत श्रेय आश्रम हमाहीं । पै न मिलत जो रहत सदाहीं ॥ नारद शास्त्र होत जो एकै । होत श्रेयतो लहैं विवेकै ॥ बहुत शास्त्र है मुनि वर ताते । जानि न परत श्रेय मेधाते ॥ नारदउ वाच ॥ सब शास्त्रहि लखि हैं औ सुनिहैं । तिनको अपनी मतिसों गुणिहैं ॥ तोहि श्रेय तब परिहैं जानो । शास्त्र बिन न परिहैं अनुमानो ॥ शास्त्र के न सिद्धान्तहि जानै । अरु अपनेको शास्त्री मानै ॥ श्रेय परत ताहि नहि जानो । मम ए बचन सत्य करि मानो ॥

दोहा ॥

सह विधि वेदाध्ययन जो अरु वेदान्त विचार । अरु जो इच्छा ज्ञानकी श्रेयस सोय सुदार ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानेसों सब शास्त्र बरलाभ बुद्धिको होत। बुद्धि लाभ सम और नहिं जानत हैं मतिपोत ॥
बुद्धि लाभ सोइ श्रेय है अति उत्तम अभिराम। कह्यो तुम्हैं जो श्रेयहै सो गुणिकै हम आम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे श्रेयवाचिकोनामद्व्यधिकनवतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

होत सु प्रज्ञा लाभ है कीन्हें शास्त्र बिचार। श्रेयस प्रज्ञा लाभते प्रापत होत अपार ॥
कह्यो पूर्व अध्यायमें हमको तुम यह तात। और एक वृत्तान्त अब पूछत हौं कछु ख्यात ॥
हम ऐसे भूपालते संग पाससो पर्म। छूटैं किहिगण सों भए युक्त कहो गुणि मर्म ॥

भीष्मउवाच ॥ रामगीती छन्द ॥

हौ कह्यो पूर्व अरिष्टनेमी सगरको इतिहास। नृप अच सो सुनु मनहि थिर करि बुद्धिको सो प्रकास ॥ सगरउवाच ॥ ऋषि कहा कीन्हें परम सुखके मनुज प्रापत होत। अरु कहौ कैसे होय कबहूं शोचको न उदोत ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि बैन ए सु अरिष्ट नेमी सगरके अवदात। गुणि चित्त माहीं आपने इमि कहत भो सुनु तात ॥ हे मोक्षको सुख जौन सोई परम सुख अभिराम। नहिं होत ताकों कबहु प्रापत मूढ़ जो जन माम ॥ निति रहत है पुत्रादिमें औ पशुनमें अनुरक्त। बहु दुःखदा जो नेहफांसी भयो तासों युक्त ॥ अति प्रौढ़ करिकै सुतनकों तिनकों सुकरि सुविवाह। निति रक्त रहनो नेहफांसी जानु सो नरनाह ॥ जो जानि करिकै सुतनकों सामर्थ छोड़िहि देत। सो चरत है आनन्दसेतो लोकमांहि सचेत ॥ अरु सुतवती जब होय नारी ताहि दे तब त्यागि। नहिं पुत्र होय समर्थ तौलौं रहै मति में पागि ॥ ए बचन मेरे श्रवण करिकै सुक्तवत रहु भूप। तू छोड़िकै उद्वेगता करिबुद्धि विमल अनूप ॥

दोहा ॥

ए सु विप्रके बचन सुनि सगर भूप बड़भाग। प्राप्त भयो प्रज्ञाहि सो मनमें गहिकै त्याग ॥

भीष्मउवाच ॥

संग पाससों छुटत जन त्याग दिये ते सर्व। और उपाय न है कछू त्याग समान अखर्व ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेसगरारिष्टनेमिसम्बादेऽधिकनवतितमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥

छूटि जातहै दुःखसों छोड़ि देय सब संग। पूरब यह वृत्तांत कहि भीषम प्रज्ञ उतंग ॥
संगदोषते लहत जन अधो गतिहि दुखदाय। अरु प्रतिबन्धक स्वर्गके मारगको नरराय ॥
कहिबेको यह शुक्रको उपाख्यान जो ताहि। पूछे पाण्डव के कहत श्रीभीषम अवगाहि ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

असुरनके प्रियमांहि रत काव्य रहत क्यों तात। औ अप्रिय में सुरनके कहो मोहिबिख्यात ॥
असुरनहीं के तेज को नित्य बढ़ावत पर्म। ह्वै करिकै देवर्षि वर याको कहिए मर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरु प्रापत शुक्रत्वको भयो कहौ किहि भांति । अरु पाई किहिभांति सों चारु ऋद्धिकी पांति ॥ जौन रूप भूमिस्थ अरु तासों दिवके माहिं । बशिष्ठादि सब ऋषिनलौं जाय शकत है नाहिं ॥ यह सब जाननकी महति इच्छा मोमन माहिं । मोसबप्रश्नको सुगुणिकहो आपु मम पाहिं ॥

भीष्मउवाच ॥

कहत तुम्हैं हौं जौन तुम पूछ्यो हे वृत्तान्त । जैसे हम पूरव सुन्यो तैसे सुनु क्षितिकान्त ॥

जयकरीछन्द ॥

असुर करत बाधा मखबीच । छते सुरनके होय निभीच ॥ लेतछते जब अमर दबाय । दैत्यन के वृन्दनको धाय ॥ असुर जात हैं भागि सदाहि । तब भृगुपत्नीके गृहमांहि ॥ शरण भए ते भृगु की बाम । रक्षा करतीही अभिराम ॥ तहां न जाय शकत हे देव । तासु शाप को गुणिके भेव ॥ तब तिन लयो विष्णुको शर्ण । निर्जर जानि महा भय हर्ण ॥ विष्णु सुरन को पीड़ित देखि । अति अरु शरण भए अवरेखि ॥ चक्र चलाय सुनो अवनीश । भृगुपत्नी को काट्यो शीश ॥ लयो शुक्रको शरणो जाय । तब तिन असुरन भयसों छाय ॥ शुक्र मातके बधसों क्षीण । अभय देवके तिनहि प्रवीण ॥ देवन को बाधा अति भूरि । देन लग्यो वज्र रुटसों पूरि ॥ सर्व जगतको प्रभु पुरहूत । अरु ताकों जो कोश अकूत ॥ यक्षराज ताको प्रभु ख्यात । तास शरीर मांहि भृगुतात ॥ योग युक्तसों करि सुप्रवेश । रोकि धनपतिहि सुसुनि सुवेश ॥ हरत भये ताको धन सर्व । स्वच्छ योग सों परम अखर्व ॥ धन हरि गये सर्व अलकेश । प्रात होत भो दुखहि अशेश ॥ दीन होयके शङ्कर पास । जात भयो भो अतिहि उदास ॥ शङ्करकों अपनो वृत्तान्त । कहत भयो ऐसे क्षितिकान्त ॥ भार्गवभो तनुमाहि प्रवेश । करिकै रोक मोहि गिरिजेश ॥ लेय गए मेरो धन सर्व ॥ योगयुक्तिसों परम अखर्व ॥

तोमर छन्द ॥

सुनि श्रीदके ए वैन । करि शम्भु राते नैन ॥ कवि है कहां कछु मोहि । धनदे कह्यो इमि जोहि ॥ दवि भोन शम्भु समीप । गुणि क्रोधवान महीप ॥ करमांहि लीन्हे शूल । शिवकों सुगुणि प्रतिकूल ॥

दोहा ॥

शूलपाणिको लखि पस्यौ भार्गव अतिही दूरि । तदनु पस्यौ शूलाग्र पै देखि योगसों भूरि ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

शङ्कर कविहि शूलपै जान्यौ । भए शूलपै यह अनुमान्यौ ॥ तपसों भई सिद्धता भारी । प्रापत कविकों परम सुढारी ॥ सो यह चाहत मोंहि बतायो । यह गुणि शूलहि सद्य नवायो ॥ शूल नवावत करमें आयो । कवि तपके तेजस सों छायो ॥ करमें लखिकै शीघ्र तहाहीं । डारिदेत भे निज सुखमाहीं ॥ शम्भु उदरमें प्रापत ह्वैकै । कवि भो फिरत शोच सो ग्वैकै ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ भार्गव शम्भु उदरके माही । पैठि कियो का कछु भो पाही ॥ भीष्मउवाच ॥ भार्गव पैठि उदरमें नीको । सुस्तुति करत भो वृषयानी को ॥ कढ़िये की कविके मन आवै । शङ्कर सों पै कढ़न न पावै ॥ तब शङ्करको ऐसे बानी । कहत भयो तबहि कविज्ञानी ॥

दोहा ॥

मोपै होय प्रसन्न शिव कढ़न दीजिए नाय । बार बार मैं कहत हौं तुम्हैं जोरिकै हाथ ॥ तबशङ्कर ऐसे कह्यौ निकरु शिश्न की राह । सर्वद्वार रोकत भए इमि कहि शिव नरनाह ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल छन्द ॥

शङ्कर सर्व द्वार रोके जब। अति व्याकुलता लहत भयो तब ॥
फिरत उदरमें भो कवि इत उत। शिवके दहत तेज सों दुखयुत ॥

उकछा छन्द ॥

कढ़त शिश्न की राह। भार्गव भो नरनाह ॥ शुक्र भयो है नाम। याते कविको आम ॥

दोहा ॥

भार्गव शिवके उदरते कढे शिश्नके राह। याते दिवमें शुक्रत है जाय नहीं नरनाह ॥
महत तेजसों युक्त अति निकसे कविहि निहारि। होत क्रोध युत शूलले खरे भए त्रिपुरारि ॥
भई निवारति क्रोध तहं देवी शिवको भूरि। देवीके पुत्रत्वकों प्राप्त भयो सुद पूरि ॥

ब्रह्मो वाच ॥

शुक्र भयो मम पुत्र है याते याको नाश। कीजै आपुन ममपते करिकै क्रोध प्रकाश ॥
देवउदर ते जो कढ़त तास विनाश कबौन। भयो आजुलौं औ नहीं ह्वै है हे ममरौन ॥
ए देवीके बचन सुनि ह्वै प्रसन्न शिव तब। जाहु शुक्र तूं मुदित ह्वै तव मन आवै यब ॥

दोहा ॥

शिवको औ तिमि उमाको करिकै शुक्र प्रणाम। निजुस्थानको जात भो तेजोमय अभिराम ॥
भार्गवको जो चरित सो हम सब कह्यो विशाल। हमको जो पूछ्यौहुतौ कुन्तीसुत भूपाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेभार्गवसमागमोनामचतुरधिकनवतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

संगदोषते शुक्रसो लहत ऊर्द्ध गति नांहि। यह सुनि तुमसों डर भयो भूरि मोहिये मांहि ॥
याते पूछत आपुसों कहौ श्रेयकछु और। प्रबक्तानके आपु हौ तात परम शिरमौर ॥
कौन कर्म कीन्हे पुरुष दुजौ लोकके बीच। अतिहि पर्म जो शरम है ताको लहे निभीच ॥

रामगीती छन्द ॥

एक कहत हैं इतिहासतुमकों अच मैं प्राचीन। इमि परासरकों पूछतो भो जनक भूप प्रबीन ॥ सब भूतगणको श्रेय है का दुओलोकन मांहि। जो जानिवेके योग्य है सो कहो मेरे पांहि ॥ ए बचन सुनिकै परासर नृप जनक के अवदात। इमि भए कहते जनक को सुनि कृपा करिकै तात ॥ परासरउवाच ॥ बरधर्महोहै श्रेय भूपति दुओ लोकन बीच। कुछ और श्रेष्ठ न धर्म्म ते है बदत बिज्ञ निभीच ॥ जन होतहै अति पूज्य दिवमें प्राप्तधर्महि होय। बुध आश्रमीते रहत तत्पर धर्ममें अघगोय ॥ जनचारि बिधिको लहत है गति जनक भूप सुजान। ते क्रमहिसों मैं कहत तुमको अच बिज्ञ महान ॥ जन योनिको बिहगादिको है लहत अघरत जौन। अरु स्वर्ग कोते होत प्रापत पुण्यवत मतिभौन ॥ सो मनुज ताको पाय जामें पुण्य पाप समान। फिरि ह्वै शुभा शुभ कर्म माहीं प्राप्त होत सुजान ॥ नृप पुण्यको अरु पाप सबको भएते उच्छेद। जन प्राप्त ह्वै कै अल्पपदको नित्य रहत अखेद ॥ गति लहत तैसो मनुज जैसे होहिं पूरब कर्म। गति कर्मके आधीन जानो जनकभूप सुधर्म ॥ नृप किए पुण्य अपुण्य तिनमें होयजो बलवान। है होत ताको भोग प्रथमहि कहत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेधावान ॥ अघ होय अथवा पुण्य जोई जात है रहि शेष। है होत ताको भोग पीछे नशत नहिं अचलेश ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासुषंचाधिकनवतितमोऽध्याय: ॥

पराशरउवाच ॥ दोहा ॥

है सुखादिको हेतु नृप पूरवकृत जो कर्म। तास करण उच्छेद वर करै योगगुणि मर्म ॥
ब्रह्म भावसों लखत जो संसारहि लहि देह। ब्रह्म भावकों लहत है सोई नृप बुधिगेह ॥
निरालम्ब मन करि करी सेवा जिहि जनपर्म। भक्ति ज्ञान रूपी परम सोय प्रशस्त सुकर्म ॥
हस्तादिक को कार्य्य नहिं तासे वाके मांहि। जिन्हे ज्ञान साक्षात नहिं तिनसों होतो नांहि ॥
दुर्लभ जो है आयु नहिं ताहि बितावैव्यर्थ। उत्तर उत्तर शरमकों यत्नहि करै समर्थ ॥
भक्ति ज्ञान रूपा परम सेवा जो अभिराम। ताको प्रापत होयकै पूरब जन बुधि धाम ॥
फिरि जो राजस कर्म में प्राप्त होय भूपाल। लहै श्रेष्ठता तौनहीं कहत सुबुद्ध विशाल ॥
प्राप्त वर्ण उत्कर्षको पुण्य कर्मसों होत। ताहि बितावत है कुनर करिकै पाप उदोत ॥
कियो पाप अज्ञानते जोन परम सुखदाय। ताको दूरि करै परम करिकै तप नरराय ॥
पाप कर्मते होत है निश्चय दुःखहि भूरि। यह बिचार करिकै रहै पाप कर्म सों दूरि ॥
कुत्सित हो फल लखत हौं पापनको अचलेश। देहादिहि जाको रचत सो अघ करत हमेश ॥
होत नहीं बैराग्य है पापात्मासों भूप। निश्चय ताको होत है नरक प्राप्त दुख रूप ॥
रंग वस्त्रते छुटत है केते छूटत है न। यत्न किएते इमिहि अघ जानो नृप मति ऐन ॥
कियो जौन अज्ञानतें छूटि जात सो पाप। औजानेसों जो कियो सोनहिं सुमति कलाप ॥
जो जनकरि सुबिचार यह नित्य करत शुभकर्म। प्राप्त होत कल्याणको निश्चय सो जन पर्म ॥
यह साधारण सबन को कह्यौ धर्म हम भूप। अब विशेष भूपतिन को कहत सुधर्म अनूप ॥
जीतै उन्नत अरिन को पालै प्रजहि सनीति। अग्नि होत्र औ मख करै वयके मध्य सरीति ॥
करै वास आरण्यमें अन्तमाहि लहि ज्ञान। निग्रह ह्वै के इन्द्रियनको रहै भूप सविधान ॥
जिमि आपुहि देखे तिमिहि भूत गणन कोसर्व। सत्यमाहि तत्पर रहै गुणिकै धर्म अखर्व ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे पराशरगीतासुषडधिकनवतितमोऽध्याय: ॥

पराशरउवाच दोहा ॥

हम राजा हैं मुनिनके पालत हैं सहधर्म। तिनको कीन्हों योग जो सह विधान अति पर्म ॥
ह्वै है छुटहौ अंशवर ताके फलके बीच। हमकों प्रापत यह सु गुणि मनमें होय निभीच ॥
प्राप्ति होन को ब्रह्मको हम क्यों करें उपाय। जो ऐसे हमको कहौ तौ सुनिए नरराय ॥
कौन कौन को करत है जगमाहीं उपकार। कौन देत है कौन को यह तुम गुणो उदार ॥
प्राणी कर्महि करत है सर्व आपने अर्थ। कोऊ करत परार्थ नहिं निश्चय जानु समर्थ ॥
माता आदिक की किए सेवा सहित विधान। सुधरत है परलोक यह गुणिकै करत सुजान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकसो अपनोही अरथ याते वाहू मांह। ऐसेही सबको गुणो निश्चय है नरनाह॥

भीष्मउवाच॥

सुनि सु पराशर के बचन ए गुणि जनक नृपाल। फिरि फूकृत भो चाहिकै तनिकै बुद्धिविशाल॥

जनक उवाच॥

काहे साधन श्रेय सो जो है नित्य अमन्द। औ विनाश को लहत नहिं कहिए विघ्न विलन्द॥
अरु प्राणी कहं जायकै आवत इत नहिं फेरि। कहो आपु अवगाहिकै ज्ञान चक्षुसों हेरि॥

पराशरउवाच॥

साधन नित्य असंग है परमश्रेय को भूप। औ विनाश नहिं होत है तपको स्वच्छ अनूप॥
आवत इत नहिं फेरि जो प्राप्य ब्रह्म में होत। जानत यह वृत्तान्त भो जिनके ज्ञान उदोत॥

अरिलछन्द॥

जोजन करिकै दूरि अधर्महि। प्राप्त होत है उत्तम धर्महि॥ अभय दान जीवन को दै करि। सानद रहत मोक्ष को लै करि॥ जोजन सहसन सुरभिन के चय। देत सैकरन अरु चञ्चल हय॥ तिहितें अतिहि श्रेष्ठ है सोजन। अभय देत भूतन को जोजन॥

दोहा॥

विषय मध्यहू रहि नहीं लिप्त होत मतिमान। विषय विनाहूं विषय में लिप्तहि रहत अजान॥

अरिलछन्द॥

लगि विषयन में जो निति देखत। अपनो भलो सो न अव रेखत॥ वशमें होय क्रोध वारे वहु। सुखको प्राप्त होत है नहिं कहु॥ देरन कीजै कीजै अति द्रुत। धर्महि बिमला मतिसों ह्वै युत॥ छोड़ति मृत्यु धर्मके काजन। समय पाय लै जाति सुराजन॥

दोहा॥

चित्त होत जब बिमल है शर्म धर्मसों भूप। तब नृप योगाभ्यासकी आवति राह अनूप॥
जात अन्ध अभ्याससों जैसे निजु गृहमांहि। ऐसेही बर युक्ति जो लही गुरुके पांहि॥
ताके बर अभ्यासते ज्ञानी परम अनूप। मार्ग अगोचर मांहिहू जात चलो है भूप॥
मोक्षधर्मके मांहि जन बिप्र नहीं है जौन। जनन मरणमें चक्र सम घूमत है जन तौन॥
ज्ञान मार्गको लहत जो दुहू लोकमें पर्म। प्राप्त होत आनन्दकों तुम्हैं कहत गुणि मर्म॥
मनही कारण बन्धको लगे विषयमें भूप। औ न लगे ते मोक्षको कारण मनहि अनूप॥
याते मनकों रोकिकै कीन्हें योगाभ्यास। आत्माको जन होत है प्रापत पाय प्रकास॥
इन्द्रिय कीजे विषय है तिन्हें गुणतनिजु कार्य्य। सो निज कारजयोगसों छूटि जात है आर्य्य॥
मृण्मय भाजन में पके रहत नहीं की लाल। तैसे तपयुत देहमें विषय नहीं भूपाल॥
आच्छादितअज्ञानसोंविषयमांहि रतजौन। जानतपवनहिं अन्धजिमितिमिआत्माकोतौन॥
जराअवस्थालों रहतजोरत जगहीबीच। अहि वायुहि ग्रसि लेत तिमि ताको मृत्यु निभीच॥
खेचे खेचे फिरत है जिमि नावहि मल्लाह। मनतिमि देहहि भावनासों जगमें नरनांह॥
नेहयुक्त जन जात नशि ऐसे लांहकै कष्ट। नीरमाहि जिमि जात है सैकतको गृह नष्ट॥
जो शरीरकों गुणत गृह तीरथ अन्तर शुद्धि। औ मति मारगमें चलत पावत सुख बरबुद्धि॥
अति बर आस्तिकभावतेमतिसों गुणि व्यापार। करै सुबुध जिहि अर्थ सो नष्ट नहोत उदार॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥

जनकपराशर सुमुनिसों सुनिकै यहसिद्धान्त । प्राप्तपरम आनन्दको होतभयो चितिकान्त ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मेपराशर गीतासमाप्तिर्नाम सप्ताधिक नवतितमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

सत्यक्षमा दम सुमतिकों सुबुध सराहत सर्व । लोकमाहि तव मत कहा यामें प्रश्न अखर्व ॥

भीष्मउवाच ॥

कहत एक इतिहास हैं यहि प्रसंग में भूप । साध्यनको अरु हंसको है सम्वाद अनूप ॥

हरिगीती छन्द ॥

विधि हंस ह्वैके हेमके फिरते सुतीनो लोकमें । नृपसुनो कबहूं भए आवत साध्यवारे थोकमें ॥ साध्याऊचु: ॥ हे हंस हमहैं साध्यनामा देव पूछत आपुसों । तव रूप लखिकै जानि तुमको भरे ज्ञान कलापसों ॥ हमको कहो तुम कृपा करिकै मोक्षको जो धर्म है । तव वदनते अभिराम अतिही वचन निकसत नरमहै ॥ हौ कहा जानत श्रेष्ठ तुम अरु रमत हे तव मन कहां । जो काज कीन्हें पुरुष छूटे जगतसों कहुसो इहां ॥ हंसउवाच ॥ बरस्व धर्म्मा चरण धारै सत्य निति भाषण कहै । सब छोड़िकै रागादिको जब चित्तवारी को लहै ॥ कबहूं प्रियाप्रिय प्राप्त में हर्षै विषादै ना करै । इन्द्रियनको वशमें करै नहिं कामना कौनहु धरै ॥ नहिं कहै कबहूं बैन ऐसे होय दुख जिनकों सुने । कटुवचनको जो दु:खहै सो सह्यो जात न यह गुने ॥ जन कहै कोऊ आयके कटुवचन तौ आपुन कहै । नहिं कहो ऐसो मानिही में क्षमा धारेही रहै ॥ हम सुनत उत्तम कार्य्य है यह और या सम है नहीं । सुख चहत सो यह करत कारज लगत अन्त न है कहीं ॥

दोहा ॥

सत्य सुफल है वेदको सत्य सुफल को पर्म । इन्द्रियकेरो रोकिवो ताको मोक्ष सधर्म ॥
बचन क्षुधा तृष्णा रुटहि औ उपस्थको जौन । रोकतहै ताको कहत हम ध्यानी मतिभौन ॥
मैं परिपूरण ज्ञानसों तबहूं नित्य सहर्ष । सेवत सविधि बड़ेन को जानि महत उत्कर्ष ॥
तृष्णासों अरु रोषसों रहितहि रहतसदाहि । विषयलाभकोजात नहिं कबहुंसुरनकेपाहि ॥
छूटो है मैं पापसों घनसों जिमि निशिनाह । कौनहु कारजमें लगत मैं न सहित उत्साह ॥
बुधसों अबुधनको करै कबहु नहीं अपमान । औ नबुलावै निज निकट करिकै प्रेम महान ॥
निन्दा परकी औ स्तुती अपनी करै कवौन । कोऊजो निन्दा करै तौ सुनि रहै सुमौन ॥
होत जास अपमान है तास कछू नहिं होत । नशत शीघ्रही करतजो लहिकै दु:खउदोत ॥
क्रोधी जो शुभ करतहै ताको यम हरि लेत । अमहीको सो होतहै प्रापत अबुध अचेत ॥

जयकरीछन्द ॥

सत्य क्षमा दम प्रज्ञा पर्म । ए चारो दायक हैं शर्म ॥ पै इन चारिन छके माहिं ।
औरहि गुणो सत्य सम नाहिं ॥ सत्य स्वर्गको है सोपान । कीन्हों मैं सिद्धान्त महान ॥

दोहा ॥

देवनको अरु सुरनको फिरि लोकनकेबीच । कहत यहै सिद्धान्त हैं मैं भो परम निमीच ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे जनको संग करै तैसोही ह्वै जात। आपहु कछु दिन में सुनो वसन रंग इव ख्यात ॥
जे निति तत्पर रहत हैं शिश्न उदरकेमांहि। अरुजेनित्यहि कहतहैं परुष वचनसबपांहि ॥
औ चोरामें जे रहत तत्परसहित हुलास। तिनते दूरहिरहतसुर कबहु न आवतपास ॥
सम्भाषण सुर करत हैं वर साधुनके संग। नित्य प्रशंसा करत हैं तिनकी परम उतंग ॥
जौन सत्व गुण हीन अरु असन करत जे सर्व। होत नहीं सन्तुष्ट हैं तिनसों देव अखर्व ॥

साध्याऊचु: ॥

किहिसोंछादितलोकनहिंकिहिसोंहोतप्रकास।अरुकिहिसोंमिचहितजतअचकहौहमपास॥

हंस उवाच ॥

आच्छादित अज्ञान सों मत्सरसों न प्रकाश। होत जात है लोभको भए महान प्रकाश ॥

साध्याऊचु: ॥

बैन एक ब्राह्मणनमें रमत मोदके बीच। मौन धरतको और को कलह न करत निभीच ॥

हंसउवाच ॥

रहत मोदते प्राज्ञ अरु प्राज्ञ रहत है मौन। प्राज्ञहि कलह न करत है करत लोकमें गौन ॥

साध्याऊचु: ॥

का कारण देवत्वको विप्रन को अभिराम। अरु काहै साधुत्वको कारण कहिए आम ॥
असाधुत्वको हेतु औ मानुषताको कौन। साध्यनके ए बचन वर सुने हंस मति भौन ॥

हंसउवाच ॥

बेद पढ़न देवत्वको कारण है अभिराम। औ कारण साधुत्वको व्रत जो विधिवत नाम ॥
असाधुत्वको हेतु है निन्दा कीबो जौन। मृत्यु लहत यहि हेतुते मनुज कहावत तौन ॥

भीष्मउ वाच ॥

हमको पूछ्यौ जौन तुम अब कह्यो हम तौन। अब आगे का पूछिहै हमको सुतबल भौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे हंसगीतासमाप्तिर्नाम अष्टाधिकनवतितमो ऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउ वाच ॥ दोहा ॥

सत्य क्षमा दमऔ सुमतिइनचारिहुके मांहि। कही श्रेष्ठता सत्यको आपुतात ममपांहि ॥
सो सुनिकै निश्चय भयो मो मनमें अवदात। सांख्यमांहि अरु योगमें जो विशेष कहुख्यात ॥
सांख्य मांहि अरु योगमें जो विशेष है दक्ष। सुन्यो पूर्ब पै आपुसों सुनिहौं फेरि प्रतक्ष ॥

भीष्मउवाच ॥

करत प्रशंसा सांख्यकी सांख्यमती है जौन। करत प्रशंसा योगकी अरु योगी है तौन ॥
दृश्यमान यह जगत जो ब्रह्मतौन है सर्व। सांख्य नाम यहि ज्ञान को है नृप अब अखर्व ॥
ब्रह्मजगत यह सर्वजो तौ ईश्वर नहिं कोय। ईश्वरबिन किमिछूटिबो महादु:खसों होय ॥
करत प्रशंसा योगकी याते योगी स्वच्छ। भिन्न योग में पूज्य औ पूजक है नृप दक्ष ॥
ईश्वर पूज्य अनूप जो मोक्ष प्रदाता तौन। सांख्य योगके मांहि है इतो भेद क्षितिरौन ॥
जगते भिन्न न ईश्वरहि जानन को यह हेतु। सांख्य मतीते कहत हैं हे सुनु तात सचेतु ॥
कबहुं जो नहिं लगत है विषय द्वन्द के बीच। मानत है संसार को ब्रह्महि परम निभीच ॥
ब्रह्महि सो ह्वै जात है होत जबै देहांत। याते मानै भिन्न क्यों ईश्वर को क्षिति कांत ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याहीको वरकहत हैं सांख्य सुप्रज्ञ अखर्व । सांख्य मांहि है नृप प्रकृत होय सकत नहिं सर्व ॥
निश्चय सांख्य मतीनको होत शास्त्रतेतात । जिमि योगिन कोतिमितिन्हें अनुभव होत न ख्यात ॥
दुओ मार्ग ए मोक्षके श्रेष्ठ गुणत हौ भूप । प्रकृत होय जिहि मांहि वर सोइ होत सुखरूप ॥
तुल्यहि व्रत तुल्यहि दया तुल्यहि है आचार । दोउन के है शास्त्रही भिन्न सुबुद्धि अगार ॥

युधिष्ठिरउ वाच ॥

तुल्यहि है दोऊनके आचारादिक सर्व । भेद शास्त्र को क्यों भयो कहिये तात अखर्व ॥

भीष्म उवाच ॥

अकृतभाव जो द्वैतको ताको एकउ बार । तत्त्वज्ञान तब होत तब उदय न होत उदार ॥
राग मोह अरु स्नेह औ तथा क्रोध अरु काम । द्वैत भाव जबलों रहत तबलों ए सब नाम ॥
तात सुनो जब होहि नहिं उत्पन्नहि ए सर्व । कर्म होत नहिं देह नहिं रहतिन दुःख अखर्व ॥
सांख्य शास्त्रकी रीति यह कही तुम्हें जो भूप । योगशास्त्रकी रीतिसों अबहों कहत अनूप ॥
जो निशोध है मानिबो जगको तासों ख्यात । सत्यभाव जो दृश्यमें सो न रहत है तात ॥
तासों सब रागादिको होय जात उच्छेद । मुक्त होय संसार सों नित्यहि रहत अखेद ॥
ऐसो जो नहिं होय तौ योग मार्ग ते भ्रष्ट । निश्चय योगी जात है महत पायकै कष्ट ॥
होति भिन्न सम्भावना योग मार्गसों पर्म । मोक्ष मांहि याते नहीं योग मुमुख्य सुधर्म ॥
याही को निश्चय करत है अनेक दृष्टांत । आगे सो एकाग्र कै चित्तहि सुनि क्षिति कांत ॥

रामगीती छन्द ॥

अनिमेष जैसे मत्स्य बलवत काटि करिकै जाल। पुनि प्राप्त होत सुनीर में तिमि योगवान विशाल ॥ सब काटिकै कलमषण को पर पदहि प्रापत होत । फिरि होत ताहिन प्राप्त हैं रागादि बारो होत ॥ जिमि तोरि पासहि हरिन बलवत विमल मार्गहि जात । तिहि भांतिही बलवान योगी योग सों अवदात ॥ लोभादि बन्धन महत दुःखद काटिकै ते सर्व । है बिमल मार्गहि लहत जो आनन्द रूप अखर्व ॥ जिमि अबल फांसी मांहि परि मृग जात है है नष्ट । तिमि भांति ही बलहीन योगी महत लहिकै कष्ट ॥ बध लहत जैसे जाल में परि मत्स्य जे बल हीन । तिहि भांतिही सों अबल योगी जानु भूप प्रवीन ॥ जिमि अलप पावक थूल इन्धन सों सुनो बुझि जात । तिहि भांति योगी अबल दीरघ किए साधन तात ॥ जिमि भए ते सुकशान सोई महत वर बलवन्त । करि जारि डारत भस्म सर्वा भूहितुर क्षिति कन्त ॥ सुनु तिमिहि क्रमसों योग करिकै भएते बलवान । सो जगहि अंत अनेह रविसम सोखि लेत महान ॥ जिमि अबल जनको लेत करि बश मांहि नीर प्रवाह । तिमि विषय योगी अबलको करि लेत बश नरनाह ॥ जिमि बली बारण नीर स्रोतहि रोकि है सो देत । तिमि विषय को योगी दुलहिकै योग बलहि सचेत ॥ वर योगके बलहि बलहि योगी तेज सों अति तात । ऋषि सुरनके अभिराम पदको प्राप्तते है जात ॥ नृप सबल योगी पै चलो नहिं मृत्युहू को जोर । करि योग बलसों लेत योगीबली भूत अथोर ॥ तिन सहित भूतन फिरत भू के बीच निर्भय होय । नहिं जीति ताको सकत केहूं काऊ कवहू कोय ॥ बलयोगसों जो होत प्रापत कह्यौ तुमसों तौन । अब कार्य्य सूक्ष्म योगते जो होत सुनि बलभौन ॥ जिमि हनत धन्वी लक्षको अति सावधान महान ॥ तिमि करत योगहि सविधि सो कैवल्य लहत सुजान । जिमि स्नेह सेती पाच पूरण धारि शिरपर ताहि । सोपानपैं जन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़त करि एकाग्र मन अवगाहि ॥ एकाग्र करि कै चित्त त्योंहीं योगवान नरेश । है करत आत्महि अमल जैसो परम चण्ड दिनेश ॥ जिमि महाजलके मांहि गत जो नाव ताहि मलाह । अति शीघ्र देत लगाय तटपै तिमहिं वर नर नाह ॥ अति श्रेष्ठ योगी योग करिकै करि सुदूरि प्रमाद । सुनु लहत है परपदहि जाके नहीं निकट विषाद ॥ जिमि सार्थि वर हय युक्तरथसों रथीकों निजु देश । पहुंचाय देत सु शीघ्र हीहै तिमहि वर अचलेश ॥ जो धारणामें युक्त योगी योगको अभिराम । सो होत प्रापत परम पदकों तीरलों बुधिधाम ॥ परमात्मा में आत्माको कै प्रवेश अनूप । जो रहत जोगी हनत सो अघ लहत पद सुखरूप ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ उकछा छन्द ॥

कैसे करि आहार । योगी प्रज्ञ सुठार ॥ औ किनकौ नृप जीति । बलको लहै सरीति ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

मंडल कणा पिण्याकको भक्षण करै हमेश । तजि दुग्धादिकसों लहत योग बलहि अचलेश ॥ यवकी लपसी विरचिकै ताहि खाय बहुकाल । एक बेरसो होत है प्रापत बलहि विशाल ॥ अरु जो योगी पिवत है दुग्ध मिश्रकीलाल । बहु बर्षनसों होत है प्रापत बलहि विशाल ॥ जोन निरंतर करत नहिं योगी मांस अहार । तौन होत है योग के बलकों प्राप्त सुठार ॥ कामक्रोध शीतोष्णअरु बर्षा भयअरु शोक । श्वास अरति तृष्णामहति औ विषयनको थोक ॥ आलस औ निद्रा परश जीते इन्हें सुजान । योगी ह्वैकै योगके बलकों परम महान ॥ करत प्रकाशित आत्महि बिमला मतिसों भूप । चञ्चलताको चित्तकी करिकै दूरिअनूप ॥ यह मारग अतिवक्र है यामें होत निवाह । काहू काहू को सुनो बिन्न बीर नरनाह ॥ छुरी धार अति निशितपै खरो रहो है जात । योगमार्ग ऊपर नहीं चल्यो जात है तात ॥ नष्टा जाकी जाति ह्वै योग धारणा पर्म । सो योगी नहिं लहत है बर शुभ गतिहि सशर्म ॥ जोयोगी विधिवत रहत योगधारणा मांहि । जनन मरनके दुःखको फेरि लहत सोनांहि ॥ यहि विधि योगी योगके बलसों परम अनूप । सब भूतनकों छोड़िह्वै जात ब्रह्म ह्वै भूप ॥ रीति सांख्य अरु योगकी भिन्न भिन्न भूपाल । शास्त्र भेद याते भयो है हे प्रज्ञ विशाल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे योगविधिर्नामानवतितमो ऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउ बाच ॥ दोहा ॥

योगमार्ग हमको कह्यो आपु सविधि विख्यात । अब संपूरण सांख्यको कहु विधान हे तात ॥

भीष्मउ वाच ॥

कपिलादिकन जो कह्योमुक्तम अतिअभिराम । स्वच्छ परम मत सांख्यकोसुनो तौन तुमआम ॥ भमएको नहिं परत है देखि सांख्यमें भूप । औ दोषहु एको नहीं गुण बहु परम अनूप ॥ सुरनरऋषि राक्षसनके अरु असुरनके भूरि । विषय जानिके दोष सह परमाज्ञानसों पूरि ॥ और सर्वज्ञ तिनहुके जानि विषय भूपाल । औ सुअवधिकों आयुको गुणिकै विन्न विशाल ॥ सर्वविषयिनकोदुःखगुणिअनिशविलंदनितान्त।योगमांहिअरुदोषजेतिनकोगुणिचितिकान्त॥ दशगुणगुणिकैसत्वकेरजके नौ अनुमानि । औ तमके गुणआठ गुणि तिनकै सुमति महानि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणनाम ॥ दोहा ॥

अनुद्वेग ऋजुता परम श्रद्धा प्रीति प्रकास। पुण्य त्याग सन्तोष औ दूति दूष मतिरास ॥

इति सत्वनामानि ॥

अनशनत्व मद परुषता भेद और रढ़ काम। दर्पद्वेष अरु क्रपणता ये रजगुण नव नाम ॥

इति रजोगुणनामानि ॥

महामोह अरु मोह तम अरुता मिश्र नरेश। निद्रा अन्ध प्रमाद औ आलस दायक क्लेश ॥

इति तमोगुणनामानि ॥

सत्व सगुण है बुद्धिके इन्द्रिय सहमत जौन। ताके षटगुण जानिकै तिनको नृप बुधिभौन ॥
रूपादिक जे पञ्च अरु महत्तत्त्व अहङ्कार। ए गुण सप्त सुबुद्धिके जानो बुद्धि अगार ॥
मनन करण मनको सुगुण दृष्टादिक जे तात। ते पांचों इन्द्रियनके पञ्च सुगुण हैं ख्यात ॥
जो बाधत इन सबनको मोक्ष लहत सो खच्च। होत प्राप्त जब ज्ञानको जानि परत ए दच्च ॥

रामगीती छन्द ॥

नृप रूपसों युत दृष्टि है अरु गन्धसों युत घ्रान। रसमांहि जिह्वा युक्त है अरु शब्द में हैं कान ॥ अरु वायु युक्त स्पर्शमें है मोहसो तमबीच। युत अर्थमाहीं लोभ है बर वदत विज्ञ निभीच ॥ पद गमन में आशक्त औ करशक्त बलमें पर्म। हम कहत जो यह गुणो ताको अतिहि सूक्षम पर्म ॥ अरु उदर में आशक्त शिखि है भूमि जलमें भूप। जलतेज में आशक्त तेजस वायुमांह अनूप ॥ आशक्त नभमें वायु है अरु महत में नभतात। अरु महत तत्व सुबुद्धिमें आशक्त है अवदात ॥ आशक्त तममें बुद्धि है तम रजो गुणके मांहि। रज सत्वमें आशक्त है हम सुन्यो बुधजन पांहि ॥ अरु सत्वसो आशक्त है जीवात्मामें खच्च। जीवात्मा आशक्त माया सहित प्रभुमें दच्च ॥ कैवल्यमें आशक्त माया सहित प्रभु है जौन। कैवल्यसो आशक्त है नहिं कहूं नृप बलभौन ॥

दोहा ॥

मन अरु उद्भव कारणा धी अरु पूरव कर्म। आश्रित जानो देहके ये सब भूप सुधर्म ॥
उदासीन मध्यस्थ जो आत्मा परम अनूप। तामें है नहिं पाप यह जानै गुणिके भूप ॥
है आरोप इन्द्रियादि को आत्मा में जो तात। तौन अविद्या सेती जानै दच्च परम अवदात ॥
स्वप्नमांहि जिमि आत्मा एकहि जगदाकार। देखिपरत है वासना वसते सुमति अगार ॥
जानोतिमिजाग्रतहूमें देखि परत जो सर्व। सो भ्रम है यह सत्य नहिं धरिकैज्ञान अखर्व ॥
विषय वासना महति जो दुखदा अतिहि विशाल। ताते दुर्लभ मोक्ष है आत्मा को महिपाल ॥
लगत बुद्धिमें मोक्षका सहसनमें कोउ एक। पूरव पुण्य प्रभाव तेप्रापत भये विवेक ॥
दुर्लभहै अति मोक्ष जो जानो नृप सिद्धान्त। विषय वासनाते करत मनुज कुकर्म नितान्त ॥
जनमे मरत को प्राप्त है याते बारम्बार। लोकन माहीं दुःखको प्रापत होत अपार ॥
ये देही तब दोषजो तिन्हें जानिके त्यागि। लागे मोक्ष उपायमें वर विवेक में पागि ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

देहोद्भव है दोष कहूं कौन अच हे तात। वक्ता और न आपसो कहूं लोकमें ख्यात ॥

भीष्मउवाच ॥

पञ्च दोष है देहके मांहि वदत हैं विज्ञ। शिष्यकपिल सुनिके क्षितिप परम सांख्य सर्वज्ञ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय निद्रा अरु श्वास औ काम क्रोध दुखरूप। सब देहिनको देहमें पञ्चदोष ए भूप ॥
अप्रसादता सों भयहि छेदै अरु निद्राहि। सेवन करिके सत्वको जीते जन अवगाहि ॥
छेदै क्रोधहि क्षमासो अरु जोहे नृपकाम। करे तास छेदन सुबुध सङ्कल्पहि तजि माम ॥
अरु जो पञ्चम दोषहै श्वास ताहि आहार। करि सुअण्य छेदै सुबुध मति को करि विस्तार ॥
दोष पांचहुन को सुनो ऐसे छेद नृपाल। सांख्य मार्ग माहीं प्रवृत रहै सुविज्ञ विशाल ॥
काटि शुभाशुभ बासना ज्ञानशास्त्र सों चण्ड। सांख्य मार्ग में प्रवृत जे धीरयवान अखण्ड ॥
यह संसार समुद्र जो अतिहि विशाल गंभीर। निश्चय ताकों तरतहै ते सुनु नृप बर बीर ॥
यह संसार समुद्र जो तरि तिहिकों नरनांह। सांख्य मारगी होत है तदनु प्राप्त नभमांह ॥
प्राप्त होत नभ माहिं तब सूरय तिनको खच्च। राखत अपने करण में भरे तेज सों खच्च ॥
पदममाहिंजिमितंतुहैतिमिरहिकिरणनमांह। विषय सुचौदहभुवनकेलखनलगतनरनांह॥
तिनको प्रापत होत है तब तहां सो बायु। सप्तलोक कों मरुत के जात जौन नर रायु ॥
शीतलादि जे तीन गुण तिनसों युक्त अनूप। जास परश ते होत सुख कुन्ती सुत बरभूप ॥
तमोगुणहि प्रापत करत तिनकों सो पव मान। तम रजकों रज सत्य कों प्रापत करत सुजान ॥
सुद्धहि प्रभुहि प्राप्त करत तिन्हैं सत्य सुखदाय। परमात्मा कों करत है प्रापत प्रभु नरराय ॥
परमात्मा कों प्राप्त ह्वै तिनहीं में मिलि जात। लहत न फिरि आगमनकों सांख्यमती अवदात ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

परमात्मा को प्राप्त ह्वै जनमति के अवदात। जनन मरण के समर नहिं करत कौन फिरि तात॥
पूछतहौं मैं आपसों सत्य कहौ तुम अच। तुमसों और न विज्ञ है गति जाकी सर्वच ॥

भीष्मउवाच ॥

प्रश्न कियो यह जौन तुम सो अति संकटवान। बुधजन कों नृप होत है ऐसे माहिं महान ॥
कीन्हां शिष्य न कपिलकेअच परम सिद्धान्त। सो मैं ताको कहतहौं सुनु थिरि ह्वै चितिकान्त ॥
मोक्षअवस्था माहिहू तातरहतहै ज्ञान। हानि ज्ञानकी होति नहिं कपिलमुनि कहत सुजान ॥
इन्द्रिय को सु अभाव है मोक्ष अवस्था मांहि। तातें ज्ञान घटादिकों तब रहत है नांहि ॥
निर्विकार परमात्मा प्राप्त भए तिहि बीच। होत न फिरि आगमनकों प्रापत रहत निभीच ॥
यह हम जीवन मुक्तकों कह्यौ तोहि वृत्तान्त। अब विदेह कैवल्य हो कहत सुनो चितिकान्त ॥
मोक्षार्थी जन जौन है युक्त ज्ञानसों पर्म। सो थोरेही काल में शान्तिहि लहत सुधर्म ॥
तात श्रेष्ठ नहिं ज्ञान है सांख्य ज्ञान सम और। सांख्य ज्ञानी लहत हैं जो अति उत्तम ठौर ॥
सांख्य परम निर्द्वन्द है अक्षर वर अवदात। निश्चय है यह अच तूं संशय करु मति तात ॥
सांख्यहि में बल पर्म है सांख्यहिमें सुखपर्म। करत प्रशंसा सुबुध हैं सांख्यहि की गुणि मर्म ॥
परमात्मा में होत है प्राप्त त्यागि के देह। प्रवृत्त सांख्य में ते नहीं जात अनत बुधि गेह ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे सुसांख्यनिरूपणोनामशततमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

सांख्य मार्गमें प्रवृतजे ते जिहि गतिकों जात। सो गति हम तुमसों सुनी तात परम अवदात ॥
पूछत हौं वृत्तान्त एक और आपुसों अच। तुमहीं कहिबे योग्य हौ है तब गति सर्वच ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षर है वर कौनन्नृप प्राप्त होयकै जाहि । फेरिनजन आगमनको लहत कहो अवगाहि ॥
अरुअक्षरहै कौन कछु नृप जाको प्रापतहोय । फेरि आगमनको लहत प्राणी दुखसों भोय ॥
तत्व जानिबे काय शुभ अक्षर क्षरको रूप । पूछत हौंमैं जानिकै तुमको बिक्ष अनूप ॥

रामगीती छन्द ॥

नृप दक्षिणायन भानुके अवरहे दिन हैं घोर । यहि हेतुसे समझिये भो उत्पन्न दुःखसु घोर ॥ जब परम गतिको प्राप्त ह्वै हौ त्यागिकै तुमदेह । तब पूछिहौं मैं होय किहिसों जगत में मति गेह ॥

भीष्मउ वाच ॥ चरणादोहा ॥

अचएकइतिहासकहतहौंसुनुनृपछोड़िविषाद । सुमुनिवशिष्ठकरालजनककोतामेंहैसम्वाद ॥

मनोहर छन्द

सुमुनि वशिष्ठ महामति मान । अति तेजोमय भानु समान ॥ बैठे हुते सु ऋषिगण माहि । जाय जनक नृप तिनके पाहि ॥ जो तुम पूछ्यो हमको अच । सोई भयो सु पूछत तच ॥ वशिष्ठउवाच ॥ नष्ट होत जिमि जगत अखर्व । काल वितीत भएते सर्व ॥ औ जिमि नष्ट न होत नृपाल । तिमि सुन अच सुबिक्ष विशाल ॥ चारौं युगको चारि हजार । आहुति भए सुवुद्धि अगार ॥ होत दिवश विधि केरो एक । औ निशि ह्वयुग गए तितेक ॥ कल्पद्रुहिनके दिनको नाम । सहित निशा सुनु नृप मतिधाम ॥ कल्प षष्ठि अरु नृप शत तीन । विधि वत्सर में होत प्रवीन ॥ शत वत्सर जीवत लोकेश । तदनु होत विधि अन्त नरेश ॥ अमूर्तात्मा शम्भु अनूप । सिरजत हैं विधिको पुनि भूप ॥ रहतो हैं अणिमादिक सिद्धि । अनिश शंभुमें वर बुधि निद्धि ॥ जास पाणि पद शिर सर्वच । है जानो संशय मति अच ॥ सुनत श्रेष्ठ है सो बिनकान । औ देखत विन चक्षु सुठान ॥ वहुशास्त्रनमें जाकेनाम । हैं बहु जानत वर मति धाम ॥ होत जगत ताहीते सर्व । औ ताहीमें लीन अखर्व ॥ अक्षर सोई आनंद रूप । और सर्व क्षर जानो भूप ॥ है अक्षर रूप चराचर जौन । पावत महत दुःख कों तौन ॥ क्षर अरु अक्षरको वृत्तान्त । कह्यो तुम्हें हम गुणि क्षितिकान्त ॥ जान्यो जात ज्ञानसों खच्च । अक्षर जो है अपरत्यच्च ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे बशिष्ठकरालजनकसम्वादे एकाधिकशततमोऽध्याय: ॥

वशिष्ठउवाच ॥ दोहा ॥

मायाके संयोगते पुरुष होयके अज्ञ । बहु देहनको होत है प्रापत नृप वर प्रज्ञ ॥
कबहूं तिर्य्यग योनि में प्राप्त होत है जाय । कबहूं सत्व सामर्थ्य ते सुर ह्वै रहत सचाय ॥
मानुषता लहि जात है कबहूं दिवमें खच्च । कबहूं दिवतें गिरि लहत मानुषता पुनि दच्च ॥
ऐसे मकरी फंसति है आपुहि तनिकै जाल । तैसेही गुण युक्त है पुरुषज्ञ जनक नृपाल ॥
आपु परम निर्द्वंद्व पै भए गुणनसों युक्त । रोग ज्वरादिक कों लहत होय शकत नहिं मुक्त ॥
धारि अहंता कहतहैं आधि व्याधिसों ग्रस्त । मैं आनन्दित रहत हौं कारज करत प्रशस्त ॥
कबहूं भूमें करत है कबहूं ग्रह में सैन । कबहूं प्रस्तर पै करत कबहूं नदी तट ऐन ॥
व्याघ्रचर्म धारत कबहूं कबहूं सिंहको चर्म । मृग चर्महि धारण करत कबहूं सगर्व सशर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन मधुर बिचित्रबर बस्त्र रत्न द्युतिमान । तिनको प्रापत होयकै करत महत अभिमान ॥
चान्द्रायन आदिक करत बिधि सेती उपबास । इच्छाही में राखिकै फलकी सहित हुलास ॥
चारोहूं आश्रमन में तत्पर रहत नृपाल । बहु प्रकार के करत हैं बहु पाखण्ड विशाल ॥
बहु प्रकारके करत हैं बहुमख औ बहुदान । करत चारिहूं बर्ण लहि चारिहु के सुविधान ॥

चरणा दोहा ॥

आपुहि करत बिभाग आत्मा माया सेती माम । धर्म अर्थको कामसत्वको रजतमकोबुधिधाम ॥

दोहा ॥

द्वंद्व अनेकनको लहत नित्य नित्य भूपाल । ममता माहीं पागिकै आपुहि भूल बिशाल ॥
देवलोकमें प्राप्त ह्वै मैं सुख लहि हौं भूरि । शुभ कर्मनको करि कहत ऐसों सुदसों पूरि ॥
कबहूं देवत्वहि लहत कबहूं मानुष ताहि । निरयमांहि परिकै लहत कबहूं दुःख महाहि ॥
जनन मरण कोटिन लहत माया के बशहोय । घूमत तीनो लोकमें बहु कौतुककों जोय ॥
आपु अनिन्द्रिय पै सुनो माया बशते भूप । सेन्द्रिय मानत आपुकों ह्वैकै सगुण अनूप ॥
अक्षर है पै आपुकों मानत है क्षर आपु । परि प्रपञ्चमें प्रकृति के हे नृप बुद्धि कलापु ॥
रहति षोडशी है कला शशिकी याते भूप । फेरिहु पञ्चदशी कला ह्वै है जाति अनूप ॥
इमि सप्रकृति आत्मा रहत याते पावत देह । बहु प्रकारको फेरिहु जनक भूप मितिगेह ॥
माया को जब होत क्षय होत तबै है मुक्त । तबलो अबहि रहत है जबलौ माया युक्त ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वशिष्ठकरालजनकसम्बादे द्व्यधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच दोहा ॥

मायाके सुवियोग बिनु होतिमोक्षहै नाहिं । यह सुनि सुमुनि वशिष्ठसों मतिसोंगुणि मनमाहिं ॥
पुरुष नित्य तिमि नित्य है मायाहूतिहि तौन । ह्वैहै मोक्षबिचारि यह जनक भूपमति ऐन ॥
पूछत सुमुनि वशिष्ठसों फेरि भयो भूपाल । नम्र होय ऐसे परम तनिके बुद्धि बिशाल ॥

जनक उवाच ॥

जैसे भार्य्या पुरुषको है सम्बन्ध अनूप । अक्षर क्षर सम्बन्ध है तद्वतहो मतिरूप ॥
गर्भ धारि नहिं शकत हैनारीसोंबिनपीय । बिरचि शकत शिशुरूपनहिं सुमुनिपुरुष बिनतीय ॥
दोउनके सम्बन्धते औ गुणते शिशुरूप । होत सुनो सब योनि में निश्चय सुमुनि अनूप ॥
अस्थिस्नायु मज्जा सुगुण ए सुपिताके तीन । माताके त्वच मांस औ शोणित ए सुप्रबीन ॥
वेद शास्त्रके बीच है यह हम सुन्यो प्रमान । इमि है प्रकृति अरु पुरुषको है सम्बन्ध सुजान ॥
ताते जान्यो परत है मोक्ष मार्ग सों व्यर्थ । जौ तुम जानत होहु तौ कहिये मोंहि समर्थ ॥
मेरे महतोमोक्षकी कांक्षाहै अवदात । सब तत्वन को आपुहौ जानत बर मुनि ख्यात ॥

वशिष्ठउवाच ॥

जानत है तू वेद औ शास्त्रहि जनक नरेश । पै जानत तिनको नहीं सूक्ष्म तत्व विशेश ॥
वेदशास्त्र धारण किए पै न भयो तत्वज्ञ । ताते सब धारण भयो तास व्यर्थ नृप प्रज्ञ ॥
ग्रन्थ तत्व जाने बिना ग्रन्थ धारिबो भारि । ताही को है सफल जो जानत तत्व सुढारि ॥
जो जानत है तत्व कहि शकत यथोचित तौन । तत्व कहै किमि ग्रन्थको अर्थ न जानत जौन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांख्यमांहि अरु योगमें जैसो निर्णय स्वच्छ। देखिय रत तैसो तुम्हैं अब कहत सुनि दच्छ ॥
योगमार्गसों लखत है योगी जाहि नृपाल। प्राप्त होत है ताहि वर सांख्य मतीहु विशाल ॥
सांख्य योगको एकही जानत सो मतिमान। ताकी गतिकों और सो जायन शकत सुजान ॥
नरनारी सम्बन्धतें जिमि सुहोति है देह। पुरुष प्रकृति सम्बन्धते तिमहि जगत मति वेह ॥
ऐसे तुम हमको कह्यो पूरव गुणि भूपाल। सो हमु अब न लगत है यह दृष्टान्त विशाल ॥
जैसे एक सुभाव है नरनारी को भूप। पुरुष प्रकृतको एक है तिमिन सुभाव अनूप ॥
पुरुष अनिन्द्रिय औ सुनो तुच्छ प्रकृति है जौन। याते माया पुरुष को है सम्बन्ध कवौन ॥
पुरुष भिन्न है प्रकृतिते निश्चय नहिं सन्देह। सत्ता सेतो पुरुषकी रचति जगहि मतिगेह ॥
मायाहीतें होत है आकाशादिक सर्व। फेरि लीन ह्वै जात है माया मेंहि अखर्व ॥
प्रकृति अकेली रचित किमि जगतहि बिना सहाय। यह आशङ्का जो करौ मनमें तुम नरराय ॥
तौ तुम सुनिये देत हौं तुम्हे अब दृष्टान्त। शुक्र सुमिचा वरुणको गिरत भये क्षितकान्त ॥
देखे उरवशिही तदनु सो मिचा वरुण उठाय। शुक्र धरत भे कुम्भ में यत्न सहित सकुचाय ॥
हम औ होत अगस्त्य भे कुम्भमाहिं अवदात। एक पुरुषहिके सुगुण सों ऐसेही है तात ॥
एक प्रकृतिहिसों होत है जगको सकल प्रपञ्च। पुरुष कछू नहिं करत है अब न संशय रञ्च ॥
आपु निरामय आत्मा नित्य अनादि अनन्त। देहादिक सें सर्व है पै इहि भांति भनन्त ॥
देहादिक संघात कहावत याते आत्मा भूप। अज्ञ महान जानते हैं यह वृत्तांत अनूप ॥
जब जानै इमि जीव ए माया के गुण सर्व। तब परकों देखन लखत जो है नित्य अखर्व ॥
जो गुणके सम्बन्धसों रहित सो ईश्वर पर्म। बुध ताको पर कहत है गुणति जाम मति मर्म ॥
सांख्य मांहि अरु योग में जेहैं कुशल अनूप। जानत प्रकृतिहि को सबै हैं जेते गुण भूप ॥
जबलौं जानत आपु नहिं आपुहि तबलौं जीव। जब जानै तबब्रह्म है नित्य भूप मति सीव ॥
भिन्न भिन्न जानत सुनो जीव ब्रह्मको अज्ञ। औ जानत हैं एकही जे महान हैं प्रज्ञ ॥
जीव ब्रह्म के मांहि जो हेतु भाव चर तौन। औ अद्वैत भावसों अचर नृप मति भौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे वशिष्ठकराल जनकसंवादेचधिक शततमोऽध्यायः ॥

जनकउवाच ॥ चरणा दोहा ॥

जीवब्रह्मके एकत्वहितुमअचरकहतसुजान। औनानात्वहिकहतआपहौचरवरविज्ञ महान ॥

दोहा ॥

सुनिसुनि इनदुहुमतनहे होत महत संदेह। सोमैं प्रगटे कहत हौं तुमको अब अछेह ॥
होत नहीं एकत्व है बन्ध मोक्ष को हेतु। औ है हे नानात्व में आतम नाश सचेतु ॥
चर है जो नानात्व सो यहि सुवचन सों दच्छ। याते फिरि हमको कहो करिकैकृपा प्रतच्छ ॥
चर अचर को जो कह्यो हमको तुम वृत्तांत। बुद्धि खिर समझै नहीं याते रह्यो न दांत ॥
बुद्धिमान है कौन अरु है अबुद्ध सो कौन। औ प्रबुद्ध है कौन तुम कहो हमें बुधिभौन ॥
ज्ञान प्राप्ति को नाम है विद्या सुखकी खानि। जासों ज्ञान ढंपो रहै ताहि अविद्या जानि ॥
अचर कहत सुनित्यको चर अनित्य को भूप। तत्वविवेकहि कहत हैं सांख्य सुप्रज्ञ अनूप ॥
वित्त वृत्तिके रोकको योग कहत हैं दच्छ। प्रवृत भये जन योग में होत परम हैं स्वच्छ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण दोहा ॥

विद्याऔरअविद्याकोअरुक्षरअक्षरकोतात। भिन्नअभिन्नभावकहुऔतिमिसांख्ययोगकोख्यात॥

वशिष्ठउवाच ॥

सुनहुं जनकनृपसांख्य योगकेचारुनिरूपणबीच। सब प्रश्नकोउत्तर तुमकोदेहोंअब निभीच॥

दोहा ॥

योग सांख्यके मांहिमैं प्रथम कहत हौं योग। जिहि विधिसों पूरब कहत आएहैं बुधलोग॥
सुनुनृपयोगीजननको ध्यानहिंहै बलपर्म। विद्या विदतिहिध्यानको द्विविधिकहतगुणिमर्म॥
एक मनकी एकाग्रता दूजो प्राणायाम। प्राणायामहु होत है है बिधि को मतिधाम॥
एक सगर्भ निगर्भ एक तिन दोउनमें भूप। जो जप ध्यान समेत है प्राणायाम अनूप॥
सो सगर्भ है कहत बुध अगर्भ बिन जप ध्यान। इन दोउनमें श्रेष्ठहै सगर्भ जौन सु जान॥
मुत्र पुरीष अनेह औ भोजन को सु अनेह। तामें प्राणायाम नहिं कीजै नृप मति गेह॥
शेषकालमें करतही रहे सुप्राणायाम। अब प्रत्याहारहि सुनो तुम्हैं कहत हौं आम॥
इन्द्रिय केरो रोकजो सोहै प्रत्याहार। सब इन्द्रिय को विषय में लगन न देय सुठार॥
मनसों अथवा प्रेरणा द्वा विंशन सों पर्म। रोक करै इन्द्रियन को योगी जन गुणि मर्म॥
पञ्चविंश औ पुरुष जो नित्यानंद अनूप। ताहि प्राप्त ह्वबे सुनो जनक बिज्ञ बरभूप॥
द्वाविंशति जे प्रेरणा तिन सो जान्यो जात। ब्रह्म सनातन शुद्धजो परम नित्य अवदात॥
कामादिकसों रहित है जाको मनअति स्वच्छ। ताहीसों ह्वैशकत है योगसहित विधिदच्छ॥
ह्वै बिमुक्त सब संग सों अल्प अहारी होय। मनहिं लगावै आत्मा में सुज्ञान सों जोय॥
विषय में न जाकी लगै इन्द्रिय ह्वैकै मुक्त। रहै काष्टवत जानिए भयो योगमें युक्त॥
जिमि स्थान निर्वात में रहत प्रकाशित दीप। बुद्ध्यादिक सों होन त्यों योगी जो अवनीप॥
अनुभव बलते जब कहै मैं हों ब्रह्म अनूप। देखि परत परमात्मा आत्मा में तब भूप॥
लघुहूते लघु औ महत मतहुते है तात। सब भूतन में रहत है पै नहिं जान्यो जात॥
ऐसे आत्महि जानिवो सोई योग नरेश। और न लक्षण योगको है बर कहत बुधेश॥
योग यथा बिधि हम कह्यो तोहि अब अवगाहि। अब हौं सांख्य ज्ञानकौं कहत सुनोतुम ताहि॥

चरण दोहा ॥

भूपकहतअव्यक्त प्रकृतिकों जे जनहैंप्रकृतिज्ञ। महततत्वउत्पन्नहोत है तिहि सुप्रकृततेप्रज्ञ॥

दोहा ॥

अहङ्कार उत्पन्न नृप महत तत्वते होत। पञ्च भूतको होत है तिहिते तात उदोत॥
अव्यक्तादिक आठए मूल प्रकृति सुठार। मन इन्द्रिय दश बिषय शरषोड़श ए सुबिकार॥
होत जहांते सर्व ये होत तबही लीन। जैसे सागर में लहरि तैसे भूप प्रवीन॥
इन सबको लय होत तब रहत ब्रह्म है एक। औ उद्भव जब होत तब आपुहि होत अनेक॥
प्रकृतिहि करत चिदातमा बहु प्रकारकी दच्छ। मुख्य अधिष्ठाता सुनो याते सोई स्वच्छ॥
क्षेत्र बन्यो जो प्रकृत को रहत जबै तिहि बीच। होत अधिष्ठाता नृपति तब चैतन्य निभीच॥
जानत है सो क्षेत्रको याते भो क्षेत्रज्ञ। नाम आत्माको परम जानत है बरप्रज्ञ॥
पञ्च बीस औ पुरुष जो सोई ईश्वर तत्व। और अनीश्वर सर्व जे हैं चौबीस अतत्व॥
जानत जो यहि भेदको सोय सांख्य है भूप। जे जानत यहि भेद नहिं सो घूमत दुख रूप॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिमान है नाम जीवको प्रकृती नाम अबुद्ध । भिन्न प्रकृतिते जो है आत्मा ताको नाम प्रबुद्ध ॥
कह्यौं तोहिं अवगाहि हम यह बर ब्रह्म विचार । ब्रह्म भावको लहत सो जो यह गुण तसुढार ॥
फेरि जन्म नहिं लहत जे पावत ब्रह्मज्ञान । जे नहिं पावत ते लहत पुनि पुनि जन्म सुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदित नारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वशिष्ठकरालजनकसंवादे चतुर्धिक शततमोऽध्याय: ॥

वशिष्ठ उवाच ॥ दोहा ॥

जो अव्यक्त प्रकृति है ताको जन्म प्रलय है धर्म । ताहि अविद्या कहत हैं ज्ञानी गुणिकै मर्म ॥
जन्म मरण सों रहित जो ताको विद्यानाम । पञ्चविंशक सु कहत है जाहि मनीषा धाम ॥
छूटतहै अज्ञान नृप जैसेजैसे दक्ष । होत सुविद्या भाव है तैसे तैसे स्वच्छ ॥
विद्या कर्मेन्द्रियन की बुद्धीन्द्रिय मतिमान । विद्या बुद्धीन्द्रियन की पञ्च सु भूत महान ॥
भूतनकी विद्या मनस औ रूपादिक तास । है विद्या रूपा दिकी अहङ्कार मतिरास ॥
अहंकार की बुद्धि सु विद्या तास प्रकृतिअव्यक्त । परब्रह्म हेताकी विद्या जानत ज्ञानाशक्त ॥
सर्व ज्ञान को ज्ञेय है विद्या ही भूपाल । नाम ज्ञानधी वृत्ति को कहत सुबुद्ध विशाल ॥
सोई है धीवृत्ति नृप निश्चय करिवो जौन । जौन जानिवो योग्य है ज्ञेय कहावत तौन ॥
विद्याऔरअविद्यातुमकोकहीसुहमचितिकान्त । क्षरअक्षरकोफेरिकहतहौंतुमकोमैंवृत्तान्त ॥
दोऊ अक्षर अरु क्षरऊ दोऊ निःसंदेह । कारण तुमको कहत हौं दोउन को मति गेह ॥
आदिअन्त सो रहित है औ है नित्य अमन्द । तत्व कहत दोऊन कों प्रज्ञावान अमन्द ॥
क्षरको अक्षर कहतकिमि जो इमि कहो नृपाल । तो मैं तुमको कहत हौं याको हेतु विशाल ॥
सहगुणजोउत्पतिजगतकीअक्षरताकेकाज । फिरिफिरिलहतविकारकहावतक्षरयातेनरराज ॥
गुणजालहिजब करतसुयोगीशुद्धब्रह्ममे लीन । पञ्चविंशकऊहोयजाततब तबहीं लीन प्रवीन ॥
पञ्च वीशकी लय भए रहि है आत्मा नाहिं । जौ तुम इमि गुणिकै कहौ तौ सुनिएमो पाहिं ॥
महदादिककीलयभएप्रकृति मांहि जिमि भूप । रहति प्रकृतिहै शेष तिमि जानत प्रज्ञअनूप ॥
निज उत्पति स्थानजो षट विंश और अमन्द । पञ्चविंश ह्वै जातहै तामें लीन नरेन्द्र ॥
लय सु भये आभासकी होत सुख्य नहिं नष्ट । शुद्ध आत्मा रहत है एनम वचन सपष्ट ॥
निर्गुणताको होत है पुरुष प्राप्त जबखच्च । तवविनाश को होतिहै प्रकृतिऊ प्रापत दच्च ॥
पञ्चविंश क्षेत्रज्ञ जब शुद्धात्मा में लीन । होन लगत तब गुणवती प्रकृतिहि गुणत प्रवीन ॥
निर्गुणजानत आपु को नित्यानन्द अमन्द । विशुद्धात्मा होत तब प्रज्ञ सुजनक नरेन्द्र ॥
जब इमि जानत अन्य हौं मैं औ माया अन्य । तत्व ताहि तब होत है प्राप्त पुरुष नृप धन्य ॥
मिश्रित माया में पुरुष होत नहीं है फेरि । कह्यौं तुम्हैं अवगाहि यह ज्ञान चक्षुसों हेरि ॥
पुरुष कहत इहि भांति जब घूमि होतहै ज्ञान । जीवन अपनो समुझि कै जैसे मात्स्य सुजान ॥
ह्रदते ह्रदको होत है प्रापत तैसी भांति । पावत हो अज्ञानते मैं देहनकी पांति ॥
मायाके वशमें भए वीति गयो बहुकाल । मैं आपुहि जानो नहीं भए अबुद्ध विशाल ॥
सविकारा जो प्रकृति है तासों मैं अविकार । ठगो गयो पै दोष नहिं याको अब अपार ॥
मेरो ही अपराधहै भए सु यामें शक्त । बहु प्रकारके विषय में भयो रह्यो आशक्त ॥
अब मैं जाग्यो भई अविद्या निद्रामेरीदूरि । देहौंछोड़ि प्रकृतिकों अबमैंरहिहौं सुखसों पूरि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब रहिहैं षटविंशके संग प्रकृति संग मैन। ऐसे जानत ज्ञानसों पञ्चविंश है ऐन ॥
क्षर अक्षरको सर्व मैं तुम्हैं कह्यो वृत्तान्त। जैसे लिख्यो सुवेदमें तैसे वर क्षित कान्त ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वशिष्ठकरालजनकसम्वादेपंचाधिकशततमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥

अब मैं बुद्ध अबुद्धिको कहत बिभाग अनूप। बेदमांहि जैसो लिख्यो तैसो सुनु वरभूप ॥
बुद्ध ब्रह्मको कहत बुध जीवहि कहत अबुद्ध। गुण युत भये अबुद्ध है होत बुद्धही शुद्ध ॥
गुणको धारण करत है बुद्धिमान जो जीव। जानत है नहिं बुद्धको याते सुनु मति सीव ॥
मैं करता मैं भोगता बुद्धिमान अभिराम। कहत करत क्रीड़ा महत लहि विकारको माम ॥
निर्गुण पुरुष प्रधान को जानत है नहिं जीव। याते कहत अबुद्ध है ताहि प्रज्ञ मति सीव ॥
जो जानै तो पञ्चविंश कहि षडविंश कहिन भूप। पञ्चविंश संगात्मक याते सुनु मतिरूप ॥
जानत नहिंषडविंशहि यातेजीवहि कहतअबुद्ध। जानतपञ्चविंशकहि याते बुद्धमान बुधशुद्ध ॥
पञ्चविंशकचतुरविंशकहिजानत हैंषडविंश। षडविंशहि जानतनहिंदोऊएनृपजनकअहिंश ॥
सोई दृश्य अदृश्यमें निज संज्ञासों छाय। रह्यो नित्यहै ब्रह्मवर निर्गुण सुनु नरराय ॥
सर्व व्यापक ब्रह्मजो तौ क्यों देखत नाहि। हम नहिंजो ऐसो कहो अब मोहि अवगाहि ॥
अब आनत हैं आपुको देहो नृप मति ऐन। चतुर्विंश औ पञ्चविंश कहि तब सो जानत हैन ॥
षडविंशक की को कहै वहतो निर्गुण पर्म। जब जीतै प्रकृतिहि सुनो थिरि ह्वैकै गुणिमर्म ॥
उत्कृष्टा अति निर्मला विद्या जो अतिस्वच्छ। ताको जानत है महा सुखदा जनक सुदक्ष ॥
बोध होत षडविंशको तिहि विद्यासों शुद्ध। बोध भये षडविंशको तजत प्रकृतिको उद्ध ॥
तदनन्तरमें कहत हैं निर्विकार षडविंश। प्रकृतिहि जानत गुणवती सुन्यो भूप अवतंश ॥
सर्व गुणनसों रहित हैं मैं षडविंश प्रबुद्ध। जब इमि जानत होत तब अजर अमर अति शुद्ध ॥
जबलौं ब्रह्मज्ञान नहिं तबलौं सर्व प्रपञ्च। होत सुब्रह्मज्ञान तब है प्रपञ्च नहिं रञ्च ॥
मैं आत्मा इमि बुद्धिसों जब नहिं जानो जाय। तब जानो षडविंशको अनुभव भौ नरराय ॥
जब अभेदताको लहत षडविंशककी दक्ष। रहित सुपुण्यापुण्यसों होय जात तब स्वच्छ ॥
जो प्रबुद्धअरु बुद्धिमान जो अरु हैं जीव अबुद्ध। सो हम अब बखानिकै कह्यो तुम्हैं नृप शुद्ध ॥
तबलों है नानात्व सु जबलौ जानवनहिं षडविंश। जब जान्योतबहोतजातहैनृप एकत्वअविंश ॥
जानब जो एकत्वको सोय मोक्ष है भूप। कहत सुनो जे ज्ञान में तत्पर रहत अनूप ॥
मोक्ष तबैही होत जब छूटि जात अज्ञान। और उपाय न मोक्षकी है हे भूप सुजान ॥
मोक्ष मार्ग में प्रवृत्त जे क्षमावानधी मान। तिनको कहिबे योग्य है जो हम कह्यो सुजान ॥
रत्नवती जो भूमि है सो दीजै महिपाल। यह दीजै न अपात्रकों कबहूंविज्ञ विशाल ॥
आदि अन्त अरु मध्यसों रहित ब्रह्मपरस्वच्छ। कह्यो तुम्हैं हमडरहु मति अब कराल नृपदक्ष ॥
कह्यो ज्ञानको तत्व जो तुमको हम यह भूप। जनन मरण नहिं होत है तामें पगे अनूप ॥
ताहि जाफिकै देह तुम त्यागि मोहकों सर्व। ब्रह्मासों पायो ऊतो मैं यह ज्ञान अखर्व ॥
कह्यो तुम्हैं षडविंश हम तेहिको जाने दक्ष। होत न पुनरावृत्तिको प्रापत है जन स्वच्छ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिते सुन्यो वशिष्ठ ऋषि औ वशिष्ठसों भूप । नारद सुन्यो प्रतक्ष यह बर सिद्धान्त अनूप ॥
औनारदसोंहमसुन्यो कह्योतोहिहमतात । शोचहितजिदे याहि गुणि तू मतिमोंअवदात ॥
जानत जेक्षर अक्षरहि ते नरहतभयपूरि । औनहिं जानत ते सदा लहतभीतिको भूरि ॥
अविज्ञानते मूढ़ते जन्म सहस्रन लेत । उपद्रवनको होत हैं प्रापत महत अचेत ॥
अज्ञानार्णव घोरअति तामें परिकै भूत । वहु प्रकार के लहत दुख बूड़त नित्य अकूत ॥
अज्ञानार्णवते तस्यो नहिं रज तम तवमाहि । यातेतू आनन्द को लहिहै भूप सदाहि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वशिष्ठकराल जनकसम्वादे सप्ताधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

क्षर अक्षरको सर्व हम कह्यो तुम्हैं सिद्धान्त । जैसे पूरव हौं सुन्यो तैसे सुमुक्षिति कान्त ॥
योगी मनसह वायुको जिहि जिहि अङ्गमें खच । राखतहै देहान्तलौं तिहितिहि अंगके दच्छ ॥
देवन वारे लोकको ते योगी हैं जात । अब यह तुमको कहत हौं तात सुनो विख्यात ॥
याज्ञवल्क्य अरु जनकको कहिके वरसम्वाद । सुनो तौन एकाग्र करि मनकोछोड़ि विषाद ॥

जनकउवाच ॥

योगीकरिकैयोगवर किहिकिहिलोकहिजात । याज्ञवल्क्यहमकोकहो आपुविज्ञहौख्यात ॥

याज्ञवल्क्यउवाच ॥ राममीती छन्द ॥

मन सहित वायुहि धारि पदमें जौन छोड़त देह । सो विष्णुवारे लोकमांही जात है बुधिगेह ॥ अरु जंघमांही धारि छोड़े वसुनको जो लोक । तिहि मांहि प्रापत होत योगी योगसों मति ओक ॥ अरु जानु माही धारि छोड़े साध्य लोकहि जात । धारि पायुमें जो तजत सो लहि मैचलोक विभात ॥ अरु प्रजा पतिको कहत है धरि उरु में अवदात । तजि देहको मति गेह योगी तेजको सरसात ॥ अरु धारि पार्श्वन मांहि छोड़े लहत आशुग लोक । वर जात सुरपति लोकको धरि नाभिमें मति ओक ॥ वाहुन में हू धारि वायुहि सहित मन महिपाल । तनु तजे सुरपति लोक मांही जात सुखद विशाल ॥ उर मांहि धरि तनु तजे शिवके लोक को अभिराम । अरु धारि ग्रीवामांहि उत्तम लोक लहत ललाम ॥ है होत विश्वेदेवको नृप प्राप्त सुखमें धारि । अरु गन्ध वहको प्राप्त नासामाहि धारि सु टारि ॥ अरु ओच में धरि तजे दिशिको प्राप्त योगी होत । भ्रू मांहि धरिकै आखिनेयनको लहै मतिपोत ॥ अरु होत अग्निहि प्राप्त लोचनमांहि धरिकै खच । हैपितृ गणको प्राप्त होत ललाटमें धरि दच्छ ॥ मन सहित वायुहि धारिकै योगी सुमूर्द्धा बीच । है होत प्रापत ब्रुहिण गणको वर वदत विज्ञ निमीच ॥ धरि सहित मन जिमि अमंगमांही वायुको तजि देह । जन जात है जिहि लोकको ते कहे हम मति गेह ॥ अब कहत हौं मैं तुम्हैं जे जन मरत वत्सरमांहि । ते होत प्राप्त अरिष्ट तिनको ते सुनो मम पांहि ॥ जन लखै जौन अरुन्धतीको औ न पूरण चन्द्र । अरु दीप दक्षिण ओर देखै खण्ड प्रच्छ नरेन्द्र ॥ अरु लखै जो नहिं ध्रुवहि जीवत तौन वत्सर एक । क्षितिकान्त सुनु सिद्धान्त करिकै कहत बुध सविवेक ॥ अरु लखै जो नहिं आपुको पर चक्षुमाहीं भूप । जन तौन हूं एक वर्ष जीवत वदत विज्ञ अनूप ॥ छविहीन को है जाय महती अतिहि छवि अभिराम । अरु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय है छबिमान जनकी हीन छबि मतिधाम ॥ अरु अल्प मतिको जौन ताको जाय है मति भूरि। अरु दीर्घ मतिको जौन ताको जाय है मति दूरि ॥ अरु पूर्व प्रकृति न रहै जाकी औरही है जाय। जो करै परिभव सुरनको अरु विप्रको नरराय ॥ षडमास हीमें तौन प्रापत मृत्युको है जात। जो अंग देखे मध्यखाली सूर शशिको भात ॥ अरु सुरभि लागै जाहि नृप सब गन्ध ऐसी दक्ष। है सप्त निशिमें होत ताको मृत्यु आय प्रत्यक्ष ॥ अरु जास चख अरु दशनको जो रंग सो फिरि जाय। अरु कर्ण नासा जाय जाके वक्र है नरराय ॥ है जाय संज्ञाहीन औ वर रूप जाको भंग। अरु वाम चखते गिरै आकस्माद जल सुनु खंग ॥ अरु मूर्धाते धूम्र निकसै सद्य सो मरि जात। ए जानि महत अरिष्ट मानव बुद्धिसों अवदात ॥ परमात्मा में आत्माको दे लगाय अनूप। निशि दिवस गाफिल रहै नेकुन त्यागि सबको भूप ॥ देहान्तको जो समय ताको रहै देखत दक्ष। परमात्मा में आत्माको लाय करिके स्वच्छ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कबीस्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना बिरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेयाज्ञवल्क्यजनकसंबादेसप्ताधिकशततमोऽध्याय: ॥

याज्ञवल्क्यउवाच ॥ दोहा ॥

भिन्नप्रकृतिते ब्रह्म है ताहि जनाव न काज। परम गुप्त यह कहतहौं सुनो तौननरराज ॥
फिरतऊतोमें बेद प्राप्तिकी इच्छाहीमेंधारि। भासमानसोंयजुर्वेदमें लहतभयोशुकटारि ॥

बसुकला छन्द ॥

करत प्रसन्न भयो मैं भानुहि। तप करिकै विधि सहित महानहि ॥ मोहि इमि कह्यो चाहि भासकर। मागु अब तूद्विज वांछित वर ॥ अति प्रसन्नता दुर्लभ है मम। भये प्रसन्न देत सब है हम ॥ तदनु नाइ करिकै मैं शीशहि। कहत भयों ऐसे अहनीशहि यजुर्वेद हम चाहत जानन। बदीजै क्षिप्रहि कीजै आनन ॥ ए सुनि बैन कह्यो इमि दिनकर। यजुर्वेद देहै तोकों बर ॥ बचन होय कै देबि सरस्वति। बसि है तो शरीर में बरमति ॥

दोहा ॥

तदनु कह्यो इमि मोहि रबि तू निज बदन पसारि। बदन पसारत में भई पैठति देबि सुढारि ॥
जब पैठी मम देहमें बाणी रबिकी स्वच्छ। जरण लगो तब नीरमें भयो पैठतो दक्ष ॥

कला छन्द ॥

मोंहि देखि रबि भे इमि बोलत। तू काहे कों व्याकुल डोलत ॥ दाह रहैगी एक मुहूरत। शीतल तामें ह्वैहै तूरत ॥ तदनु देखि मोकों शीतल अति। कहत भए इमि रबि सुन क्षितिपति ॥ यजुर्वेद ऐहै द्विज परण। याज्ञवल्क्य तोको अति तूरण ॥ तू बनाय है शत पथ नामक। ब्राह्मण को सुबिप्र मति धामक ॥ ह्वैहै तदनु मोक्ष में तब मति। सांख्य योगमें कीन्हे सो रति ॥ जौन मिलत पद है अति पावन। ताहि प्राप्त ह्वैहै सह चावन ॥

दोहा ॥

ऐसे कहि मोसों बचन अस्त होत भे भानु। तदनु गिराको गेहमें चिन्तन कियो सुजानु ॥
स्वर व्यंजन सों भूषिता प्रणव सहित अभिराम। कढ़ति भई मम बदन तें बाणी बिमलाभाम ॥
देबी को अरु भानुको अरपत भो मैं तास। पारायण करिकै परम सह विधि सहित उलास ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरचत भो मैं तदनु नृप शतपथ ग्रन्थ अनूप। महत हर्षकों प्राप्त है सहस्रहस्त बरभूप ॥

चरणा दोहा ॥

अति उत्तम शत शिष्यनको मैं भयो पढ़ावत स्वच्छ। अप्रियार्थ वैशम्पायनके शिष्यन सहित सुदच्छ ॥
तदनु सुशिष्यन सह करवायो तबसु पिताको यज्ञ। देवल मम मामाको पक्षी हुतो तबबर प्रज्ञ ॥

दोहा ॥

ताके देखत हमलई यज्ञ दक्षिणा तब। अरु नृप मम मामाहुतो वैशम्पायन यब ॥
दक्षिणार्थ निज बेदकी तासों कियो बिवाद। बेद दक्षिणा होत मैं सुनहु भूप अबिषाद ॥
तब मोकों तेरे पिता और सुनिन अभिराम। समुझायो इमि मति करै मातुल सों कहि आम ॥
शाखा कीन्हीं पञ्चदश यजुर्वेद की पर्म। मैं लहि करिकै भानु सों करि प्रसन्न सह गर्म ॥
परम कृपासों भानुको यजुर्वेद को पाय। प्रवृत्त होत भो मैं सुनो प्रज्ञ जनक नरराय ॥
हम सुबनाई पञ्चदश शाखा तिनकों जानि। चिन्तन करै सु ब्रह्मको तदनन्तर अनुमानि ॥

मनोहर छन्द ॥

पूरब बिश्वावसु गन्धर्व। अतिही प्रज्ञावान अखर्व ॥
यह भो पूछत मोहि प्रतच्छ। काहित ब्राह्मण को है स्वच्छ ॥

दोहा ॥

जो बिचार है युक्तिसों अन्वीक्षा तिहि नाम। सो प्रधान जिहि माहि है जनक भूप मतिधाम ॥
ताहि कहत आन्वीक्षि को विद्या है बर बुद्ध। सो विद्या पूछत भयो बिश्वावसु अति शुद्ध ॥
औ बिश्वादिक प्रश्न सो करतो भयो अनूप। ताको हम यह होकह्यो जनक बिज्ञबर भूप ॥
एक मुहूरत बैठतू याको करि सुबिचार। बिश्वावसु सुनु तोहिमैं कहिहौं बुद्धि अगार ॥
ध्यान करत मैं तदनु भो देवीको सबिधान। ताते उत्तर प्रश्न को उपज्यो तुरहि सुजान ॥
तौन सुनावत ताहि भो प्रतिसों मैं अवगाहि। सो दे उत्तर अति अमल है बिश्वादिकको याहि ॥
बिश्वावसु गन्धर्वकों तदनु कह्यो मैं भूप। अब तुम बिश्वादिकनको उत्तर सुनहु अनूप ॥
भूत सुभव्य भयङ्करै बिश्व कहत है दच्छ। भूत भव्य भयकों करै तास नाम सुनु स्वच्छ ॥

चरणा दोहा ॥

भूतभव्य भयङ्कर जानो अरुभय जगको नाम। अब अबिश्वको सुनो रूप तुमतुम्हे कहत हौं आम ॥

दोहा ॥

मौन अबिश्व कहावत आत्मा भिन्न बिश्वतें जौन। ऐसेही तुम श्वाश्वकों जानो बर मति भौन ॥
सुबुध कहत स्वप्रकृतिको अश्व निर्गुणहि स्वच्छ। मिच पुरुषको कहत अरु कारण प्रकृतिहि दच्छ ॥
ज्ञान प्रकृतिको कहत अरुकहत ब्रह्म कों ज्ञेय। ज्ञान प्रकृतिको नाम भो जाते सो मनदेय ॥
सुनो जौन जन्मादि को उपयोगी है ज्ञान। तौन प्रकृति भो ज्ञानहै यातेनाम सुजान ॥
जौन ज्ञानसों जातहै जान्यो तासो ज्ञेय। कहत सुबुध सो पुरुष है सुनो भूप मनदेय ॥
जासु ईश्वरकों कहत अरु जीवहि अज्ञ नरेश। रहित सुभए उपाधिसों दुऔ ब्रह्म एदेश ॥
ईश्वर कारण रूपहै जीव सुकारज रूप। कारण कार्य्य उपाधि जब छूटि जाय सुनु भूप ॥
निर्विकार पर ब्रह्म तब ए दोऊ है जात। याते तजन उपाधिको करै यत्न अवदात ॥
तथा प्रकृतिकों कहत अरु पुरुषहि को सुक नाम। अतपा कहत सु ब्रह्मको निर्विकार मतिधाम ॥
तपा नाम याते भयो प्रकृति लहत सन्ताप। है क नाम सुखको भयो याते पुरुषक आप ॥
कबहुं नहीं सन्तापको पावत याते भूप। भयो ब्रह्मको नाम है अतपा भनत अनूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिहि कहत अवेद्य बुध वेद्य पुरुषको नाम। जाने साधन मोक्षको होत सुपुरुष ललाम॥
भयो वेद्य है पुरुष को याते नाम सुजान। औजड़ताते प्रकृतिको भो अवेद्य अभिधान॥
चला कहत अरु अचल का पूछो हो तुम जौन। ताको उत्तर देतहौं अब सुनो मति भौन॥
चला प्रकृतिकों कहत हैं निश्चल पुरुषहि शुद्ध। उत्पति लय जगकी करत लहि विकारको उद्ध॥
माया याते चला भो नाम तास मतिधाम। उत्पति लयको जगत के करता है पै नाम॥
पुरुष विकार न लहत है याते निश्चल स्वच्छ। भयो तप्त अभिधान है जनक भूप वरदच्छ॥
तिनहि अवेद्य सुपुरुषको प्रकृती वेद्य सुजान। कहत सुबुध अवगाहि कै जिनकी बुद्धिमहान॥
यद्यपि कही अवेद्य है पूरब प्रकृति सुदच्छ। वेद्य पुरुषको औ सुनो शास्त्र रीतिसों स्वच्छ॥
देखि परति याते सुनो प्रकृतिहि है नृप वेद्य। दृश्यमान नहिं होत है याते पुरुष अवेद्य॥
जड़ताते जानति न जिमि प्रकृति आपनो रूप। तिमि पुरुषहु याते सुनो दुओ अहहैं भूप॥
श्रुति बलसों तुम किए विश्वादिक प्रश्नअमन्द। तिनको उत्तर मैं दयो श्रुति बलसोंहि बिलन्द॥
प्रश्न सु आन्वीक्षिकी को कीन्हों गन्धर्वेश। तुम वर बलसों तर्कके उत्तर तास अशेश॥
बलसों आन्वीक्षिकिहिके मैं हौं दैहौं अब। विश्वा बसु गन्धर्वपति सुन मन करि एकत्र॥
उत्पत्यादिक जगतकी करत पुरुष है पर्म। उत्पत्यादिकसों रहित आपु सुनित्य सशर्म॥
अज अक्षय याते सुनो पुरुष कहावत स्वच्छ। पूर शरीरको नाम है भनत सुबुध है दच्छ॥
पुरुष कहावत आपु है तामें कीन्हें बास। होत प्रकाशित देह है सत्ता सेती तास॥
करती है संसारको याते वर गन्धर्व। प्रकृति नाम भो ख्यात है मायाको सु अखर्व॥
है विद्या आन्वीक्षिकी इमि बिचारि बो जौन। कह्यो तोहि अवगाहिकै हम वर मेधा भौन॥

चरणा दोहा॥

अवण मननमें ईश्वर वारेरहै युक्त नितबुद्ध। सूक्ष्म मतिसोंयहिविचारिकै विद्याकों अतिशुद्ध॥

दोहा॥

बेद मांहि जो है कह्यो वेद्य आत्मा ताहि। जानत नहिं ते जनन औ मरणहि लहत सदाहि॥
सांगो पांग सुवेदजे पढ़त सुनो गन्धर्व। को जानत नहिं वेद्यको नित्यानन्द अखर्व॥
वेद भारवे कहत हैं ताके जे वेदज्ञ। याते वेद्यहि जानिबे करै यत्न वर प्रज्ञ॥
पुरुष प्रकृति कोनित्यही करते रहै विचार। तासों पुनि पुनि जन्मकों लहै न बुद्धि अगार॥
जनन मरण को चिन्ति दुख कर्मकाण्डकों त्यागि। नित्यहिजो तत्पर रहै योगमाहिं जब पागि॥
देखतही षडविंशको तब सों वर गन्धर्व। कह्यो तुम्हें अवगाहिकै यह हम गुह्य अखर्व॥
मानत षडविंशकहिको सांख्य मार्ग गत जौन। जन्म मृत्युके दुखहि गणि परम ज्ञानके भौन॥

विश्वावसुरुवाच॥

रहित भएते प्रकृतिसों पञ्चविंश षडविंश। होय जात यह है कह्यो सो किमि बुध अवतंश॥
पञ्चविंशकों जो कहो याज्ञवल्क्य मुनिजीव। ईश्वरत्व ताको नहीं ह्वैहै तो मतिसीव॥
घट जो सोपट होत नहिं कहैं शास्त्रके दच्छ। इमिहि जीवनहिं होत है ईश्वर कहत प्रत्यच्छ॥
जीवनहीं है ईश्वरहि है जो कछु इमि आपु। कर्मकाण्ड तो व्यर्थ सब ह्वैहै बुद्धि कलापु॥
कर्मकाण्ड सों होत है जीवहि केरे अर्थ। याते तुम अवगाहिकै कहिए अब समर्थ॥

चरणादोहा॥

जैगीषव्यादिक ऋषीनसों पूछो मैं बहुबार। पै ह्वैहै विश्वास बचन तब सुनिकै बुद्धि अगार॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

तुमसों अविदित कछु नहीं जानत सब सिद्धान्त। यजुर्वेदकों प्राप्त तुम भए भानुसों दान्त ॥
दान्त पूरण सांख्यज्ञान[कोजानतहौ मुनि आपु। योगशास्त्रकोतिमहिंअरु जानत बुद्धिकलापु ॥
केवल धृतकों मण्डते जैसे लेत निकारि। ऐसे तुम हमको कहौ अति बरज्ञान विचारि ॥

याज्ञवल्क्यउवाच ॥

जितनो जोजासों सुन्यो सो आवतहै सर्व। तोको तू गन्धर्व बर प्रज्ञा वान अखर्व ॥
जातें पूछो मोहिसों तोहि कहत हौं दत्त। मनको करि एकाग्र सुनु गंधर्वेश प्रत्यक्ष ॥
जड़ा प्रकृतिसों पुरुषसो होत प्रकाशित पर्म। पुरुष प्रकाशित प्रकृतिसों होत न सुनु महमर्म ॥
पञ्चविंशके बोधसों सांख्य योग तत्वज्ञ। प्रकृतिहि कहत प्रधान है हे गन्धर्व प्रतज्ञ ॥
प्रकृति माहिं पञ्चविंश की धारण कीन्हीं जाति। छाया यातें भो प्रधानहै नाम ध्येयसों ख्याति ॥
पञ्चविंशकी प्रकृतिमें परती छाया मात्र। है न लिप्त जो आपुहै जानो संशय नात्र ॥
जबलौं साक्षी भूत सु तबलौं पञ्चविंशहै नाम। साक्षी नहिंतब षडविंशहि नाम तास मतिधाम ॥
साक्षी तासों कहतजो देखत है साक्षात। साक्षी भए सु जीव कहावत षडविंशहि अवदात ॥
सांख्यमती जनजौन अरु हैं बर योगी जौन। जन्म मृत्युकी भूरिभय ताते मेघा भौन ॥
षडविंशहिकों लखत है तत्पर ह्वैकै पर्म। निहत धर्मके शास्त्रको गुणिकै मतिसों मर्म ॥
षडविंशहिकों लखतजो होय जात सरवज्ञ। जनन मरणको प्राप्त नहिं फेरि होत सो प्रज्ञ ॥

विश्वावसुरुवाच ॥

नमस्कार मैं करत हौं तुमको हे बर दत्त। दुर्लभ ब्रह्म विचार यह हमको कह्यौ प्रत्यक्ष ॥
जैसी अब तैसी रहो तब मति बरसुखदाहि। प्राप्त भयो विश्वासकों मैं सु तुम्हारे पाहि ॥

याज्ञवल्क्यउवाच ॥

ऐसे कहिके वचन मम करि प्रदक्षिणा तौन। अति प्रसन्न ह्वै स्वर्गको जात भयो मति भौन ॥
होत ज्ञानते मोक्ष है याते ज्ञानहिं काज। यत्न करे सब बासना छोड़ि भूप शिरताज ॥
चारिहु बर्णन माहिं जो कहै ज्ञान की बात। ताको सुनि श्रद्धा करै तेहि माहिं अवदात ॥
ज्ञान वारता माहिं जो नहीं करत श्रद्धाहि। जनन मरणको प्राप्त सो निश्चय होत सदाहि ॥

चरण दोहा ॥

विधि मुखते ब्राह्मण भये भुजते क्षत्रिय भूप अखर्व। वैश्य नाभिते शूद्रचरणते याते ब्राह्मण सर्व ॥

दोहा ॥

लहत महत अज्ञानतें योनि जाल को भूप। ज्ञान लहनको नृप करै याते यत्न अनूप ॥
पूछ्यो हमकों जौन तुम कह्यो तुम्हें हम तौन। यामें तत्पर होहु तुम जनक भूप मति भौन ॥

भीष्मउवाच ॥

सुनिकै जनक नरेश ए याज्ञवल्क्य के बैन। अति प्रसन्न होतो भयो महत पाय कै चैन ॥
याज्ञवल्क्य बर सुमुनिकी जनक जोरिकै पानि। करतो भयो प्रदक्षिणा धारिसु प्रीति महानि ॥
जात भए निजथानकों मुनिवर विज्ञ विशाल। राखत भो निज हृदयमें जोमुनि कह्यो नृपाल ॥
बेदवान बर द्विजनको कोटि गऊ भो देत। औ अञ्जलि अञ्जलि रतन सादर प्रीति समेत ॥
तदनन्तर सुनु पुत्रकों राज्य देय कै आप। संन्यासी को व्रत धरत भयो सुबुद्धि कलाप ॥
सांख्य शास्त्रके ज्ञानकों भयो विचारत भूप। औ संपूरण पढ़त भो योग शास्त्र मति रूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपुहि जानत भो जनक अच्युत नित्य अनन्त। निर्विकार आनन्दमय सुनु पाण्डव क्षिति कन्त ॥
जन्मादिक की चिंतना छोड़त भयो सुजान। करत प्रशंसा भे मनुज ज्ञानी तासु महान ॥
याज्ञवल्क्य सों ज्ञान यह पायो जनक नृपाल। अरु पायो है जनक सों हम यह सुखद विशाल ॥
ज्ञान पोत सों जात है यह भवसिंधु अखर्ब। तस्यो औन यज्ञादि सों कहत सुबुध हैं सर्ब ॥
ताते तू लगु ज्ञानके साधन मांहि अनूप। भए ज्ञानको प्राप्त तू श्रेष्ठ होयगो भूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कबिनाबिरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मेजनकयाज्ञवल्क्यसम्बादो नामाअष्टाधिकशततमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउ बाच ॥ दोहा ॥

कही ब्रह्म बिद्या हमैं तुम श्रुतियुक्त प्रधान। अब साधन सु प्रधान जोबिद्या पर्म सुजान ॥
ताको सुनिबे काज हैं प्रश्न करत हे तात। कहौ ताहि अवगाहि कै मोंहि आपु बिख्यात ॥
ऐसो है तप कौन सो अरु ऐसो बरकर्म। अरु ऐसो है शास्त्र को पढ़े ताहि गुणि मर्म ॥
जरा और अंतकहि नहिं मानव प्रापत होय। कहौ योग्य कहिबे तुमहि ज्ञानचक्षुसों जोय ॥

भीष्मउबाच ॥

अब कहत इतिहास हैं सो सुनु छोड़ि बिषाद। जनक भूप औ पञ्चशिख को तामें संवाद ॥

मनोहर छन्द ॥

यती पञ्चशिख को भूपाल। ज्ञानवान बर जनक बिशाल ॥ यह तुम पूछ्यो हमको जौन। सोई पूछत भो मति भौन ॥ जनक भूपके सुनिकै बैन। कहत पञ्चशिष भो मति ऐन ॥ मिथ्या समुझै सब संसार। जरा मृत्यु सहरोग अपार ॥ मिथ्या सबै समुझिबो जौन। उत्तम साधन जानौ तौन ॥ जरामृत्यु है जीते जात। याही साधन सों अवदात ॥

दोहा ॥

जरा मृत्यु के जीतिबे को साधन नहिं और। जानौ तुम सिद्धान्त यह जनक भूप शिर मौर ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेजनकपंचशिखसंबादो नामनवाधिक शततमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥

तातबिना गार्हस्थ्य के मोक्ष तत्व कछु काहि। प्राप्त भयो हम को कहौ तात आपु अवगाहि ॥

भीष्मउबाच

अब एक इतिहास सो तुम्है कहत हैं तात। शुलभा नाम्नो ब्राह्मणी ज्ञानवती अवदात ॥
ताको अरु नृप जनक को तामें है संवाद। मनको करि एकाग्र सुनु तजिकै सर्ब बिषाद ॥
धर्म ध्वज नामा जनक मैथिल पूर्ब नृपाल। छतोवेद के मांहि सो अतिही बिज्ञ बिशाल ॥
मोक्ष शास्त्र के बीच अरु नीति शास्त्र के बीच। प्रश्न महान छतो परम औबलवान निभीच ॥
निग्रह कै इन्द्रियन को पालतछतो धराहि। ताके सुनि आचरणको चाहत सुबुध सदाहि ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

योग धर्म की जाननवारी। शुलभा सन्यासिनी सुढारी ॥ महि में फिरत छती सो एका। महती ग्यानवती सबिवेका ॥ जनकहि मोक्ष शास्त्र के माही। अतिहि प्रबीन सुने सबपाही ॥ तापस दीक्षा लीबेकाजै। रूप धारिकै परम दराजै ॥ एक पलक में सुलभा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती। मिथिला मांहि भई अति भाती ॥ भिक्षा मिसि मिथिलाधिप पासै। जाति भई करि भूरि प्रकासै ॥ राजा तासु रूप को देखो। औ सुकुमार ताहि अवरेखो ॥ कोहै यह कितते इत आई। बिमला सुन्दरता सों छाई ॥ ऐसे मन में नृप गुणतो भो। अरु अति विस्मय को लहतो भो ॥ आदर करि कै अति ही ताको। भो बैठावत नृप मिथिला को ॥ तदनु तासु पद धोय सुहायो। नृपतेहि को भोजन करवायो ॥ ज्ञानवान मंत्रिनके माहीं ॥ बैठो जनक भूप तेहि पाहीं ॥ बैठि आयकै भोजन करिकै। ज्ञानवती मतिको विस्तरिकै। नृप जगते छूटो है कीना। यह निश्चय करिबे सुप्रवीना ॥ सुलभा भई प्रेरणा करती। साध्वस धरत भई भर न रती ॥ ह्वै अनिमेष सामुहे ज्वैकै। नृपके चारु चखन में ह्वैकै ॥ अपनी मतिको नृपकी मतिमें। करि प्रवेश पगि योग युगतिमें ॥ योग सुबंधन सेती भूपै। सुलभा बांधति भई अनूपै ॥ मूक जनक भूपहि कीबेको। ज्ञान परीक्षा को लीबेको ॥ योग रज्जु सो तासु महानी। बांधे ज्ञान जनक नृप ज्ञानी ॥

दोहा ॥

रहित सदा अभिमान सों एक देह के मांहिं। दोऊ जे संवाद सुनि तिनको तू मम पाहिं ॥

चण्डाकुलक छन्द ॥ जनकउवाच ॥

जनक कहत भो ऐसे ताको। ज्ञानवती तनिकै मेधाको ॥ को है तू कितते इत आई। जैहै कहां तेज सो छाई ॥ औ आचार कहा है तेरो। कहु तू शीघ्र प्रश्न सुनि मेरो ॥ मैं हौ राजा पैहौ मुक्तै। है अभिमान में न हौ युक्तै ॥ जानन की इच्छा है तोको। मेरे कहु संन्यासिनि मोको ॥ तूं प्रतिष्ठिता है मैं जानो। औ प्रभाव तेरो अनुमानो ॥ हेतु मोक्ष को ज्ञान सुढारो। अन्य नहीं है कहिबे वारो ॥ एक गुरुही है सुनु मेरे। हैसु पराशर के कुल केरे ॥ नाम पञ्चशिख है तिन केरो। संशय कियो दूरि तिन मेरो ॥ तिनके सांख्य योग के माहीं। सुलभ नेकहू संशय नाहीं ॥ मोक्ष धर्म नीके तिन जानो। मैं यामें नहिं अधिक बखानो ॥ भ्रमत भ्रमत पृथ्वी में आए। मिथिला मांहि ज्ञान सों छाए ॥ आषाढ़ादिक चारि महीना। रहत भए मम पास प्रवीना ॥ मोको मोक्ष तीन विधि केरी। कहत भए करि कृपा घनेरी ॥ एक सांख्य सेती तिनकूनी। विधिवत योग मार्ग सों दूनी ॥ राज्य केसु अभिमानै तजिकै। पालै प्रजा नीति सों दृजिकै ॥ तत्पर रहै ज्ञान के माहीं। तीजो को साधन मम पाहीं ॥ यह तिन कह्यो कृपाकरि चोखी। तिनके बुद्धि ज्ञान की पोखी ॥ विचलित राज्य तेन तिन कीन्हो। तिनको कह्यौ ज्ञान मैं चीन्हो ॥ तिनकी कही मोक्ष मैं सुनिकै। ताको अपने मनमें गुणिकै ॥ रहित राग सों ह्वै मैं एकै। रहत परमपद में सविवेकै ॥ है सुमोक्ष की विधिवर जानो। वैराग्यहि और न अनुमानो ॥ गुरुते ज्ञान लहे जननीको। योगाभ्यास कियो सु बिधीको ॥ ताते लहत सु आत्मा ज्ञानै। ताते वर वैराग्य महानै ॥ लहि वैराग्य द्वंद्वते न्यारो। जीवन मुक्त जात ह्वै भारो ॥ प्राप्त भयो यहि बुद्धिहि मैहौ। ताते रहित मोहसों हैहौ ॥ रहत मुक्त ह्वै करिकै सबसों। कृपा पञ्चशिख कीन्ही जबसों ॥ उत्तापित जे बीजन जैसे। उद्भवकों पावत है तैसे ॥ प्राप्त भएते ज्ञान सुढारो। होत नहीं फल कर्मन वारो ॥ चन्दनसो दक्षिण कर पाटै। अरु जो वाम करहि मम काटै ॥ तिन दोउनको मैं सम जानो। हौ नहिं मित्र शत्रुता मानो ॥ सेवत गुणत लोष्ट्र औहै मैं। सुलभे नित्यहि रहत सचेमैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

बैठो है मैं राज्य पै रहित संग सों होय। मैंभी संन्यासीन सम ज्ञान चक्षु सों जोय ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

और मोक्ष के जाननवारे। जे जन हैं जग मांहि सुढारे ॥ थिति सुचारि विधि के रोतेहैं। मोक्ष मार्ग माहीं कहतेहैं ॥ तत्पर होय ज्ञानके माहीं। करिबो जो है कर्म सदाहीं ॥ एका थिति यह अरु जो दूजो। ताको तिन यहि विधि सों कूजो ॥ तत्पर रहै ज्ञानही बीचै। लागे अनतनु होय निभीचै ॥ ज्ञानहि मुख्य गणै नहिं कर्मै। तीजी थिति यह जानो पर्मै ॥ मुख्य कर्म गुणिबो नहिं ज्ञानै। सो चौथी थिति बुद्ध बखानै ॥ औ सु पञ्च शिख गुरु हमारे। श्रेष्ठा ज्ञानवती मतिवारे ॥ ऐसी थिति सु कही है मोको। सो मैं अब कहत हौं तोको ॥ अन्त: करण शुद्धवर कीबे। अतिही बिमल ज्ञानको लीबे ॥ कर्म करत है जन विधि सेती। करिकै अपनी बुद्धि सचेती ॥ प्रापति होय ज्ञानकी तबहूं। कीजै कर्म न तजि एकबहूं ॥ कामादिक सों रहित गृही जो। है संन्यासी के समही जो ॥ सो कामादिक मैं तत्पर जोहै। संन्यासी सुगृहीसम सोहै ॥ ए बर बैन हमारे सुनिकै। ऐसे कहै हमैं जो गुणिकै ॥ कर्म पूर्ववतही अभिलाखो। क्षत्रादिक को क्यों है राखो ॥ तौ सुनु क्षत्रादिक हम ऐसे। राखत दण्ड चिदण्डी जैसे ॥ छोड़े ते अनुराग नहो है। होत मोक्षको बाध कही है ॥ जौ नेकहु अनुराग अराधै। तौ सुनु होय मोक्षको बाधै ॥ सुलभे सब आश्रम के माहीं। यामें संशय नेकहु नाहीं ॥ सुनु कमण्डलादिक को धारे। होत मोक्ष नहिं कहत बिचारे ॥ खक्षमोक्ष खर शरन सुनैना। त्याग खड्ग तापै करि पैना ॥ राज्यै-श्वर्य्य पास दुखकारी। ताहि काटि कीन्ही मैं न्यारी ॥ जैसो मैं तैसो तब आगे। सुलभा कह्यो सत्यमें पागे ॥ अब सुनिबेको बाते तेरी। सुलभे इच्छा भई सुमेरी ॥ अतिहि सुन्दरी है तू सुलभा। अब्या में न लखी तब तुलभा ॥ औ तू योवन सोंहै छाई। चटजुता सो तब कही न जाई ॥ औ ऐसो है ज्ञान सुढारो। बरणो जात नहीं सो भारो ॥ पूछत हौं मैं सुलभा ताते। कहु तूं कोहै मोको ख्याते ॥ मम शरीर में धसि बुधिपागी। सुलभा मोहि दबावन लागी ॥ सो यह मैं न उचित है कीन्हों। मेरे ज्ञान नहीं की चीन्हों ॥ संन्यासीको योग्य नहीं है। छलकीवो हम सत्य कही है ॥

दोहा ॥

पैठे मेरी देहमें भयो बितिक्रम जोन। तेरे सुनु मैं कहत हौं सुलभा तोको तौन ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

दोष परक्रिया नारी वारो। प्राप्त भयो है तोको भारो ॥ बैठी दूरि कहै जो मोको। तौ सुनु अब कहत हौं तोको ॥ मनसों तौ तूं पैठी मोमें। याते दोष सही है तोमें ॥ पैठी तू किहि की पैठाई। मम हियमें सुन्दरता छाई ॥ हम क्षत्रिय तू बिप्रा बाला। मम तव संगमते अघ जाला ॥ बरण शङ्करै सु ह्वैहै सुनु हे। और कहत ताहूको गुनु हे ॥ हम सु गृही सन्यासिनि ते हे। आश्रम शङ्कर ह्वै याते हे ॥ अरु जो कहे क्षत्रिया हौ हौ। आई संन्यासिनि मिसि सौ हौ ॥ तौ सुनु हे तूं धौ अस गोचा। धौहै सुलभा नारि सगोचा ॥ जौ तूं दार सगोचा ह्वैहै। तौ सुगोत्र शङ्कर ह्वै जैहै ॥ औ सुनु तौ भरतार बिदेशै। गयो होय वातें न कलेशै ॥ सहिन शकी मकरध्वज वारे। आई छल सों पास हमारे ॥ परतिय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होति अगम्या ह्वैहै। होय धर्म शङ्कर जे जैहै ॥ कियो योग्य जो करिबे नांही। ते यातें पूछत तव पांही ॥ ज्ञान कपट सों युत है तेरो। की तोमें अज्ञान घनेरो ॥ पियको तियको तियको पियको। रति सो लाभ सुधासो हियको ॥ जो अलाभ रागी को नारी। विषकी तद्वत सो दुख कारी ॥ तैं करि चुको परीक्षा मेरी। अब तू मोहि कुवै मति एरी ॥ तू संन्यास शास्त्र विधि सेती। पालु होय कै परम सचेती ॥ तू निज कारजको इत आई। की काहू भूपाल पठाई ॥ कहिए झूठ न नृपके सोहै। औ तिमहो द्विजके बंग चोहै ॥ यातें तू कछु सत्यहि मोको। सुलभो पूछत हौं मैं तोको

दोहा ॥

जाति प्रकृति अरु आचरण अरु जो मनकी बात। अरु आगमको हेतु निजु तू कछु मोकोख्यात ॥

भीष्म उवाच ॥

सुलभाको भूपति जनक बहुतै कहे कुवैन। प्रापत भई विकारको नेकु नहीं मति ऐन ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

सुलभा सुनि भूपति सों बानी। कहति भई इमि ऋजुता सानी ॥ सुलभोवाच ॥ मति अरु बाणी के हैं दूषण। नव नव भूप कहत मति भूषण ॥ भिन्न सु तिन दूषण सो जोहै। सुन्दर बाक्य कहावत सोहै ॥ सांख्या सौचव्य औ क्रम निर्णय। औ सुप्रयोजन पञ्चम मतिचय ॥ युक्त होत इन पांचौ सोहै। बाक्य बुधनके पास सुनोहै ॥ रूप तुम्हे इन पांचहु वारे। कहती हौ सुनु भूप सुढारे ॥ शब्दोच्चारण कोन्हें पाछै। निर्णय को घेरे मति आछै ॥ सहजहि अर्थ परे नहिं जोनो। सौचव्य ताहि भूप अनुमानो ॥ गुण दोषन की गणना कोई। अर्थ मांहिसंख्या है सोई ॥ कहिबे योग्य पूर्व यह बानी। अरुयह पीछेयोग्य सुठानी ॥ यह विचारकीबोलप जोहै। ताहि कहत क्रम बुध बर सोहै ॥ बहु भाषणमों निश्चय करिकै। कहनो जोहै मति बिसरि कै ॥ निर्णय ताकों प्राज्ञ कहत हैं। ज्ञान माहिंजे मतिहि सहत हैं ॥ मनमें कछु पदारथ बारी। भए कामना अतिही भारी ॥ बहु विधियत्न करै करवावै। तबहू तास सिद्धि नहिं पावै ॥ तातें दुःख भए जो तजिबो। ताको फेरिन कबहूं सजिबो ॥ वृत्ति निवृत्ति रूपा यह ढापति। ताहि प्रयोजन कहत महामति ॥ और सुनो नृप काहू वारे। होत देखते जे दुख भारे ॥ तिनको दूरि करणके काजै। करिबो जोन उपाय दराजै ॥ वृत्ति प्रवृत्ति रूपा यह जानो। याहिहु कहत प्रयोजन मानो ॥ इन पांचहुसों युक्त सुढारे। बाक्य बदन ते सुनो हमारे ॥

दोहा ॥

उपेतार्थ भिन्नार्थ अरु न्याय वृत्त बर दक्ष। असन्दिग्ध अनधिक तिमहि अरु श्लक्ष्ण स्वच्छ ॥
ए षट गुण हैं बाक के तिन्हें विचारै भूप। मेधा को बिसारि कै बिमला परम अनूप ॥
संपूरण बाक्यार्थकी जोन प्रगटता भूप। उपेतार्थ सो जानिये मतिवर भणत अनूप ॥
भिन्नारथकी सूचना शब्द मांहि जो नाहिं। अभिन्नार्थ तिहिकों कहत गुणिकै मति बुध माहिं ॥
विशेषणन की बाक्यके सुनो स्वच्छता जोन। न्याय वृत्त ताको सुनो जेहिं मेधा भोन ॥
कढ़िबो जो है अर्थको बोले अधिकबिनाहिं। अनधिक गुणताकोकहतबुध गुणिकैमतिमाहिं ॥
अष्ट श्लेषादिक सुगुण तिनकी युतता जोन। ताहि श्लक्ष्ण कहत हैं सुमति बान है तोन ॥
अक्षर धरिये बाक्यमें कब हूं नहीं कठोर। नीचोच्चारित शब्द जे तेउ नत नृप धिर मोर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ जो अर्थ पुराण सो रहित शब्दमें जास। ताहूको नहिं राखिये सुनो भूप बुधि रास॥

दोहा॥

औ ताको न राखिए जामें होय त्रिवर्ग विरोध। अर्थधर्म कामहि हैत्रिवर्ग कहत सुजान सबोध॥
अरु काहूको शब्द जो लगै न नीको भूप। ताहूको नहिं राखिए बाक्य माहि मति रूप॥
औ न असंगत राखिए शब्दबाक्य हे माहिं। शुद्ध छन्द व्याकरणसों जो नहिं ताहिहु नाहिं॥
रम्भा वारे नृत्यसे अक्षर जेहि पद बीच। नहीं होहि नहिं राखिए ताहिहु भूप निभीच॥
बिना हेतु पद जोन अरु जामें अध्याहार। ताहूको नहिं कीजिए बाक्यमांहि अधिकार॥
ए नव दूषण बाक्यके इनको जोन अभाव। सोई गुण ह्वै जात है सुनहु जनक नरराव॥

रामगीती छन्द

मैं कामते अरु क्रोधते अरु दीनताते भरि। कादर्य्यताते लोभताते औ चपासों पूरि॥
अभिमानतेकारुण्यते नृपऔ न भयते छाय। मैंकहतिकबहूं नकछूनिर्भय रहति हौं नरराय॥
कामादि है नव बुद्धिवारे भूप दूषण पर्म। इन सबनके सु अभाव गुण नव जानु तू गुणिमर्म॥
बर होय सबही गुणन सेती बाक्ययुक्त अनूप। अरु होय बक्ता बिज्ञ औ श्रोतासु तैसो भूप॥
जब बिज्ञ बक्ता कहे सारद सुनै श्रोजन सर्ब। तब अर्थ होत प्रकाशकों है प्राप्त परम अखर्ब॥
अपमान श्रोता को सु करिकै कहत वक्ता जोन। है होत श्रोताको न ताको बोध सुनुक्षिति रोन॥ जो छोड़ करिकै स्वार्थको जन कहत हैं पर अर्थ। तिहिमाहिं शङ्का होति श्रोता के सुभूप समर्थ॥ हैं दोष बत यह हेतुते सो वाक्य निश्चय जानु। जिहि में न शङ्का होब ऐसो कहे वाक्य सुजानु॥ जो बदत शङ्का रहित वाक्यहि जानु वक्ता सोय। अवगाहि अविकल होयकै बरज्ञान चखसों जोय॥ मैं अर्थवत अभिराम तोको वाक्य कहति अनूप। एकाग्र मन करि श्रवण करि तू जनक मिथला भूप॥ तो मांहि अरु मोमांहि है चित अंश जोसो एक। यह हेतुते का पूछनो है मोहि सुनु सविवेक॥ देहादिको जो होय पूछत तौ सु ये जड़ सर्व। जड़को कहा नृप पूछनो है गुणो मर्म अखर्व॥ जिमि धूरि माहीं पस्यो जलसो मिल्यो जान्यों जात। देहादिमें तिहि भांतिही चित अंश सो अवदात॥

दोहा॥

जानत जड़ताते नहीं इन्द्रिय आपुहि आपु। औरनको का जानि हैं ते सब बुद्धि कलापु॥
छम है मिली सु औरसो यहहू जानत नाहिं। यह सुनिकै ऐसे कहौ जो तुम मेरे पाहि॥
होत पदारथ ज्ञान है इन्द्रिय सेती सर्व। तौ सुनु तुमको कहत हौं जनक सुप्रज्ञ अखर्व॥
अपेक्षा इन्द्रिय करत सर्व नेत्रादिकबरभूप। वाह्य सुगुण सौर्य्यादिकी इच्छाकरतिअनूप॥
रूप सु चक्षु प्रकाश ए देखनमें त्रयहेत। तिमिहि और इन्द्रियनमें जानो बुद्धि निकेत॥
एकादश हैं सुगुण मन नाना करत विचार। साधु असाधु पदार्थ को ह्वैकै निकट उदार॥
द्वादश हैं गुण बुद्धिहै करति सुनिश्चय तोन। सत्वनाम एक ते रहौ है गुण नृप मतिभोन॥
लघु दीरघ सामर्थके जासों जानो जात। जीव जगतके मांहि सुनु जनक भूप अवदात॥
और अहंता ममता जोहै सुगुण चौदहो भूप। तौनहुं सत्वहि बीच है जानत प्रज्ञ अनूप॥
जो कलानको वटुरिबो पंदरहौ गुण तोन। प्राणादिकको नाम है कला सुनो क्षितिरोन॥
षोड़श हैं गुण जोन है तास अविद्या नाम। प्रकृति औरनृप प्रगटता ए द्वै गुण मतिधाम॥
जरा मृत्यु सुख दुःख अरु प्रिय अप्रिय एद्वंद्व। तौन सुगुण उनईस औ हैं सुनु जनक नरेन्द्र॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विंशक औगुण काल है अरुद्वै सदसद भाव। पञ्चभूत विधि शुक्रबल अष्टक ए नरराव ॥
इन्द्रिय आदिक तीस ए गुण हैं कहतसुधीर। गुणिके कहतसमर्थ जो याको बुधरणधीर ॥
आस्ति नास्तिको कहत हैं सवद सुभाव बुधेश। कहत वासना को सुबुधि प्रज्ञावान नरेश ॥
जौनकरावत वासना शुक्र कहतहै ताहि। जासवासना काज तिहि यत्न कहत बलवाहि ॥
कारण प्रकृति प्रधान है इनसब केरो ताहि। किते कहत अव्यक्त है किते व्यक्त अवगाहि ॥
ऐसी जो वह प्रकृति है ताते भई सु देह। हम तुम यह व्यवहार सो ताहोमें मतिगेह ॥
याते जो तव प्रश्न यह हमको कहु तू कौन। उत्तरतासन तनुकसोंदियो जात जितिरौन ॥

रामगोती छन्द ॥

हो नृपति शोणित शुक्रसो उत्पन्न है सब देह। एक राति मांही मिलत शोणित शुक्र वरमति गेह ॥ अरु पांच निशिमें होत बुद बुद सात निशिमें शक्त। तवमासमाहीं होत है सब अंग भासो युक्त ॥ जव जन्म ताको होत प्रापत लहत तव अभिधान। फिरि उत्तरोत्तर रूप औरे होत जात सुजान ॥ है होत प्रथम सुबाल रूप सुफेरि होत कुमार। फिरि होत प्राप्त कुमार ताते यौवनहि अति चारु ॥ फिरि होत वृद्धा अवस्था कों प्राप्त है भूपाल। नहिं रहत यहि क्रमिसों न पूरव अवस्था मतिजाल ॥ है होत भेद सुरूप बारो नित्य क्षण क्षण मांह। है अतिहि सूक्ष्म जात है आन्यो नहीं नर नांह ॥ उत्पत्ति जोई अवस्थाको औ सुनो जो आन्त। अति सूक्ष्म ताते ताहि जानत कोउ नहिं क्षिति कान्त ॥ सम्बन्ध जो निज रूपको सोतो सुनो रहतैन। है अन्य जो सम्बन्ध ताको कहै को नृप बैन ॥ तूं कौन की है प्रश्न पूछो कहतो जो यह मोहि। यह हेतुते उत्तर न ताकों शकति हौं दै तोहि ॥ जिमि गुणत निष्कल आतमा है आपुको तूं भूप। तिमि गुणत क्यों नहिं और हूको प्रश्न होय अनूप ॥ अरु गुणत जौ तूं आपुको अरु अन्यको है एक। तौ कौन की है कहा पूछत मोहि इमि सबि बेक ॥ तूं कौन है अरु कौनकी यह पूछिवो है जौन। जे छुटै है जन द्वंद्वसों यह चाहिए तिन कौन ॥ जो शत्रुमें अरु मित्रमाहीं भेद सोहै युक्त। संसार सों तिहि अनुजको किहि भांति कहिये मुक्त ॥ अरु रहत जौन त्रिवर्ग माहो नित्यहो अनुरक्त। संसारसों तिहि मनुज को किमि भांति कहिए मुक्त ॥ तूं मुक्त है नहिं मुक्त ताको करत है अभिमान। अभिमान को नहिं करत हैं जे मुक्त हैंलहि ज्ञान ॥ है सर्व समता अहंता को छोड़िवो जो भूप। है सोय लक्षण मुक्तवारो भणत विज्ञ अनूप ॥ नृप जौन पालत सविधि सर्वा भूमिको बलवान। संहार करि सब अरिनकेरो तेज सहित महान ॥ सो रहत है एक नगरमें सर्वत्र नहिं नर नाह। औ नगर हूते रहत है सो एक हो गृह माह ॥ गृहमाहिं हू एक पलंग में औ पलंगहू के बीच। तिय अर्धमाहीं रहति अर्धहि आपु लहत निमीच ॥ मम राज्यमें अरु पुरी में किहि दियो करण प्रवेश। संन्यासिनी तव कह्यो हो इमि मोहिं जनक नरेश ॥ यहि हेतु काजै कह्यो है मैं तोहि यह वृत्तांत। तू याहि विमला बुद्धिको विस्तारि गुणि क्षिति कांत ॥ सुनु और हू उपभोगमें औ तिमहि भोजन माह। आच्छादनहू में रत रहत परतंत्रही नर नाह ॥ अरु दण्ड दीवे माहिं अरु नृप कृपा कीवे माहिं। परतंत्रही है रहत राजा अब संशय नाहिं ॥ है मंत्रि आदिक विना होतन कछू एकौ काज। है स्ववशतासों कहा है नर राजको नर राज ॥ निज अंग लों जे रहत हैं जन सदा अपने पाहिं। महिपाल जो सो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनकु सों है उरत रहत सदाहिं ॥ सुख अल्प जाके बीच है अरु दुःख परम बिलन्द। है राज्य ऐसो होत ताको प्राप्त होय नरेन्द ॥ नहिं कीजिए अभिमान नितिही शान्ति रहिये धारि। जो धरत शान्ति न देत तिनको सुखहि दुखसो टारि ॥ रत रहत क्षत्रिय धर्म माहीं जो नरेश नरेश। सोलेत दशओंभाग देत सुप्रजाको न कलेश ॥ ककुन्यून क्षत्रिय धर्म में सो भाग पञ्चम लेत। है कहा धर्म सु राज्य राजा बिना बुद्धि निकेत ॥ अरु मोक्ष सुख सो कहा है बिन धर्म पर्म अनूप। है भूमि सर्वा दक्षिणा जिहि माहिं ऐसो भूप ॥ जो अश्वमख नहिं करत ताको कोउ धरणी माहिं। यह हिये गुणि बिन भूमि राजा रहैंगे हम नाहिं ॥ है पर्म धर्म न और नृपको अश्वमेध समान। जे अश्वमेधहि करत भू दै तेइ धन्य सुजान ॥ मैं राज्य माहीं और दूषण सकति देय हजार। यहि भांतिही अवगाहि कै सुनु जनक भूप उदार ॥

दोहा ॥

चारि शंकरन को भयो तो को प्रापत पाप। यह मोको पूरव कह्यो हौतै बुद्धि कलाप ॥ मैं जो अपनी देह है राखति तास न साथ। संग राखि हों औरको कैसे हे नरनाथ ॥ ऐसो जोमैं ताहि इमि कहिबो उचित नवैन। सुनी मोक्षते पञ्चशिख ये सबनृपमतिऐन ॥ मुक्त संगसो जनक तू ज्ञानी परम उतंग। ताको फिरिकै सो भयो क्षत्रादिक को संग ॥ जौन पञ्चशिखसो सुन्यो व्यर्थ भयो तब सर्व। कै झूठेहि तू कहत है सुन्यो न ज्ञान अखर्व ॥ तेमैं मम तव अबहि यह छूटो होतो सोन। तो मैं कीन्हों सत्वसों मैं प्रवेश मति भौन ॥ औ जो तू ज्ञानी परम तजे देह अभिमान। तौ प्रवेश कीन्हें कहा तो मैं भयो सुजान ॥ और सुनोजो लेतहै जन्म महत कुलमाहिं। तौन सभामें सद असद देत बचन कहिनाहिं ॥ जैसे कमल दलस्थ जल छूवत दलकोनाहिं। तिमिहितोहिछूवतिनमैं करिप्रवेशतोमाहिं ॥ और सुनोतो पञ्चशिख दयो न तोको ज्ञान। जानिपस्यो जो परश मम तोकोभूपसुठान ॥ तू न मुक्त है मोक्षकी जानत है कहि बात। तू गोदोऊ ओरसों ज्ञान बिना अवदात ॥ तुम्हें लोक व्यवहारसों कहती हौं निजनाम। बिप्रा बैश्या हौं न मैं औ नहिं शूद्रावाम ॥ हौं भूपति तव सबरणा सुलभा है मम नाम। कुलमें नृपति प्रधानके उपन्ना मतिधाम ॥ ममसु पूर्व जो मखन में भेड़े चयनउतंग। चक्रद्वारगिरिद्रोणगिरि औगिरिवरशतशृंग ॥ गरुड़ादिकको मखनको विरचित जो आकार। इष्टकादिसो नामहै ताको चैत सुढार ॥ ऐसे कुलमें मैं भई उत्पन्ना हौं भूप। मम सम नहिं भर्ता मिल्यो भूमें कछु न अनूप ॥ धारण मैं यह हेतुते करति भई संन्यास। बिना बिचारे मैं नहीं आई हौं तव पास ॥ मैंतवमति सुनि मोक्षमें ताहिजानिबेकाज। निष्कपटा तव निकट हौं आई मिथिलाराज ॥ मैं स्वपक्ष परपक्षकी कहति नहीं हौं बात। नहिं स्वपक्ष परपक्षको जानत मुक्त ससात ॥ वसतभिक्षुएक राति जिमि शून्यसदनमेंभूप। तिमिहिवसी एकराति मैं तवतनुमाहिंअनूप ॥

उकछा छन्द ॥

अब मैं प्रात: काल। जै हौं हे भूपाल ॥ भीष्मउवाच ॥ सुलभा के सुनि बैन। भूरि अर्थके ऐन ॥ बोलो कछू न फेरि। रह्यो तासु मुख हेरि ॥ याते भो सिद्धान्त। यह पाण्डव चितकान्त ॥ दुर्लभ गृह मेंपर्म। है सु मोक्षको शर्म ॥ हेतु मुक्तिको भूप। संन्यासही अनूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीठद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीबासि गोकुलनाथ कवीश्वरात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे सुलभाजनकसंवादोनामनवाधिक शततमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

कहि करिके संन्यासको श्रेष्ठ ताहि अभिराम । सुलभाके इतिहास में भीषम मेधा धाम ॥
तासदिखावतधर्म अवशुकसुचरितकहि स्वच्छ । जनमेजय क्षितिपाल सुनु पाण्डवकों परतच्छ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

पुत्र व्यासको प्रश्न शुक किहि प्रकारसों तात । प्राप्त भयो निर्वेदकों कहो आपु विख्यात ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणा दोहा

औ अव्यक्त व्यक्तके तत्त्वहि कहिए आपु अमन्द । सगुण रूपनारायण केरो कहिए सोउ नरेन्द ॥
अपनीशाखाभएबढ़ावतशुककों सबसुनिव्यास । औअन्यङ्गकोभएपढ़ावतकछुकछुसहितङ्गास ॥

दोहा ॥

तदनु भए ऐसे कहत ताहि व्यास मुनि बैन । हिम आतप सङ्ग तात अरु निति करु धर्म सचैन ॥
क्षुधा पिपासा वायु अरु औजे इन्द्रिय सर्व । तिन सबकों तू जीति बरगहिकै ज्ञान अखर्व ॥
सत्य सुधाई अरु सुतपकों तू पालु सदाहि । अनसूया अरु अहिंसा नित्य राखु मनमाहि ॥
देवनसों अरु अतिथ सों अन्न रहो जोशेष । ताते रक्षा प्राणकी करि तू तात हमेश ॥
नीर फेणवत देह है जीव विहंग समान । ताते स्वारथ कार्य्यमें तू लगु होय सुजान ॥
कामादिक सब शत्रु तबलखतै रहत सदाहि । करिहैं तोहि खराब जो परिहैगफलत माहि ॥
क्षीण होति निति जातिहै आयुष याते तात । गुरू पास क्यों जातनहिं ज्ञानकाज अवदात ॥
अन्न चहत इहिलोकही मांस बढ़ावन काज । परलोकारथ करत है कारज कछु नदराज ॥

काव्य छन्द ॥

सुनहु तात नितिकरत धर्मकोनिन्दा जे जन । सर्व कुमारग में चलत अन्धलों नित्यहि तेजन ॥
तिनके पीछे चलत तौनहु लहत महा दुख । जे सुधर्म में प्रवृत होत तिन पास गए सुख ॥

दोहा ॥

याते जे तत्पर रहत निति सुधर्मके माहिं । जोहै कीबे योग्यसो जाय पूछ तिन पाहिं ॥
जोन बतावै तोहि कछु ताको हिए विचारि । रहु ताही के बीच निति तत्पर तात निहारि ॥
धर्म निसेनिहि प्राप्त ह्वै कछुकछु पढ़ु तूतात । सुश्रूषा करि गुरू की बुद्धि पाय अवदात ॥
अन्धकार संसार यह महत दुःखको धाम । यामें तें सकि है न कढ़ि ज्ञानदीप बिनमाम ॥
कामादिकके काजनहिं ब्राह्मणकी यहदेह । याते करु तू ज्ञानके काज यत्न सस्नेह ॥
अरुजो तेरे हृदयमें ज्ञान होय अवदात । तौ आत्माको जानि करु धर्म मांहि मन तात ॥
अज्ञानी है जोन जन तिन कों यम के दूत । लेय जात यम पास है देते दुःख अकूत ॥
तस्करादि जाकों नहीं लेय सके अरु भूप । मरेहु पीछे संगको जो नहिं तजे अनूप ॥
ऐसो जो धन परम है ताकों लहिबे काज । मेरी आज्ञा मानि कै करि तू यत्न दराज ॥
कर्तासों नहिं रहत है भिन्न कबहु नहिं कर्म । छायालों संग रहतहै नित्य कहत गुणिमर्म ॥
बीतत भए पचीस शुक तबऊमरि में वर्ष । अबहु तो लगु धर्म के संचल में उत्कर्ष ॥
डूबति है नहिं धर्म में जास बुद्धि अवदात । ताही को बुध कहत हैं पुण्यवान अवदात ॥
दीन्हो जोन उदार है ता धन सोंका होत । अरु बल फल का जो नहीं जीते अरि के गोत ॥
औ काहे तिहि शास्त्रसो जिहिसों करै न धर्म । आत्मासोका जो नहीं भयो जितेंद्रिय पर्म ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीष्मउवाच ॥

द्वैपायनके बचन ए सुनिकै शुक मति धाम। छोड़ि पिताको जातभो लहे ज्ञान अभिराम ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणिमोक्षधर्मे व्यासशुकसंबादे दशाधिकशततमोऽध्याय: ॥

युधिष्ठिरउबाच ॥ दोहा ॥

धर्मात्मा सुत व्यासको कैसे भो शुकतात। बड़ी सिद्धिकों प्राप्तभो औ कैसे कछु ख्यात ॥
कहां कियो उत्पन्न अरु शुककों व्यास बुधेश। शुककी जननी औ जनिहि जानत हम न नरेश ॥
बाल्य अवस्था मांहि किमि शुककी प्रज्ञापर्म। अतिही सूक्षम ज्ञानमें होति भई कछु मर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

दृढ़ा पनसों होत नहिं औ न बित्तसों ज्ञान। केवल बिमला बुद्धिसों प्रापत होत महान ॥
होति सु बिमला बुद्धि है तप सों परम अनूप। निग्रहते इन्द्रियन के होत स्वच्छ तप भूप ॥
बाजपेय शत औ सहस अश्वमेध अभिराम। एक कला सम योगकी होत नहीं बलधाम ॥
मैं तुमकों शुकदेवकों कहत जन्म वृत्तान्त। औ जो शुक श्रेष्ठा लही गति सोऊ क्षितिकान्त ॥

काव्य छन्द ॥

च्युत कनेरिकी व्यूढबी सों बरभरी प्रभा अति। मेरु शृंगपै करत ऊते क्रीड़ा गौरीपति ॥
सबिधि तपस्या करण लगेतहं व्यास सुचावन। पञ्चभूत समधीर्य्य मान अतिमोद बढ़ावन ॥

दोहा ॥

ऐसो बरसुत लहनकों शिवसों अति अभिराम। मनको करि एकाग्रता में सुनृप बलधाम ॥
आराधन शिवको करत रहत भए शतबर्ष। तब सुवायु अहार ह्वै सुमुनि व्यास उत्कर्ष ॥
नेकुन श्रीमुनि व्यासको हीनहोत भो प्रान। वासी तीनो लोकके अचरज गुण्यो महान ॥
वैश्वानरकी शिखासी जटा व्यासकी चण्ड। भासति भई सुतब नृप तेजस भरी अखण्ड ॥
कही मारकण्डेय ही हमैं तात बड़ बात। तामें एक यह हू कहीऊती परम अवदात ॥
तिहि तपके परभावसों अबउव्यासकी पर्म। वैसी ए तेजोभई भासति जटा सुधर्म ॥
तपसेती मुनि व्यासके ह्वै प्रसन्न अति शर्ब। इच्छा करि बरदेनकी बोलत भए अखर्ब ॥
जैसे धीरज मान हैं पञ्चभूत अति शुद्ध। तैसो तोको होयगो प्रापत पुत्र प्रबुद्ध ॥
तिहुलोकनमें छाय है ताको तेज महान। औ बर यशको प्राप्त तव ह्वै है पुत्र सुजान ॥

भीष्मउ वाच ॥

पसुपतिसों बरपायकै परम व्यास मुनि प्रज्ञ। शिखिकाजे अरणी मथन लगे भूप धर्मज्ञ ॥
आवति ताही समयमें भई घृताची तब। भूषण पेन्हि अनूप अति ऊते व्यासमुनि यब ॥
देखि घृताचिहि कामसों मोहित भे मुनिव्यास। शुकीरूपको धारितब आवति भीतिनपास ॥
शुकी सुरूपा घृताचिहि देखि व्यासको काम। जैसोको तैसो रह्यो न्यूनभोन बुधि धाम ॥
रोकत भे बहु भांतिसों कन्दर्पहिश्रीव्यास। पैनसक्यो रुकि करत भो औरहुमहतप्रकास ॥
अरणीही में गिरत भो व्यास सुमुनिको वीर्य्य। रहे मथत ग्लानि नलही नेकहुभूप सधीर्य्य ॥
मथत भएते शुक्रको होत भयो शुक तब। अति तेजोमय भानुसम गति जाकी सर्वत्र ॥
व्यासहिको सो होत भो ताकोरूप अनूप। गंगा ताको आयकै भई न्हवाती भूप ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिगीती छन्द ॥

नृप चर्म कृष्ण कुरंगको अरु दण्डवर गिरतो भयो। शुकदेवके तट व्योमते तहं अतिहि तेजस सों छयो ॥ सब अप्सरा नाचन लगीं गन्धर्व बर गावन लगे। शुकदेव जूको देखि कै आनन्द सों अतिही पगे ॥ सब इन्द्र आदिक लोकपालक तब नृप आवत भये। अरु देवऋषि अरु देव अरु बर ब्रह्मऋषि रतिसो रये ॥ बर दिव्य पुष्पन की सुवृष्टी तब मारुत करतभो। सब चराचरको वृन्द भूरि प्रसन्नता को धरतभो ॥ सुर दुन्दुभी बाजन लगी अरु गौरि सह शिव प्रीतिसों। जन्मतहि शुककोदेत भे उपनयन अति बर रीतिसों ॥ तिहिको कमण्डलु देतभो अति शुभ अखण्डल प्रेमसों। भे हंस सारस करत तास प्रदक्षिणा अति क्षेमसों ॥ शुक रहत तबहि भयो अति बर ब्रह्मचारी होयकै। भे आपुहीसों वेदताको प्राप्त अति शुभ जोय कै ॥ तउ वृहस्पतिको गुरू कीन्हों चिन्तिकै शुक धर्मको। सब वेद पढ़ि औ शास्त्र सब पढ़ि धारिकै विधि पर्म को ॥ गुरु दक्षिणा दै गुरुसों कर जोरि आज्ञा मांगिकै। तप उग्रको आरम्भ करतो भयो विधिमें पागिकै ॥ शुक देवतनको ऋषिणको भो पूज्य बाल्यहि में महा। वर ज्ञान सों औ तपस्या सों अधिक अच न है कहा ॥

दोहा ॥

रत ताको मन रहत भो मोक्षहिमें अवदात। त्रिवर्गमें कबहूं नहीं लगत भयो सुतात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेशुकोत्पत्तिर्नामएकादशाधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ चरण दोहा ॥

खेवेको उपदेश मोक्षको जाय पिताके पास। खरोहोयकै हाथजोरि इमिकहत भयोसुजाय ॥
परममोक्षकेधर्मांहितुमअतिहिकुशलहौतात। शान्तिलहैसोममजासोंतुमऐसोकहियेख्यात ॥

तोमर छन्द ॥

सुनि पुचके शुभबैन। लहि मोदको मति ऐन। कहते भए इमि ताहि। पढ़ मोक्ष शास्त्रहि चाहि ॥

दोहा ॥

आज्ञा लहिके व्यासकी श्रीशुकदेव सुजान। योग शास्त्र औ सांख्यको पढ़त भयो सविधान ॥
जब जान्यो श्रीव्याससुनि पुत्र भयो मम पर्म। मोक्षधर्म विद कहत तब ऐसे भए सुशर्म ॥
मिथिलाधिप नृप जनकके पास जाहु तू तात। सर्व मोक्षको अर्थ सो कहिहै तोको ख्यात ॥

काव्य छन्द ॥

पाय पिताकी आज्ञाको शुकदेव प्रज्ञवर। गमन करत भो मिथिलाको सुदलहि मेघाधर ॥
मोक्षधर्मकीपूछनकोविधिअतिसुखदायक। चलतसमयमैंकह्यौ शुकहि इमिमुनिमहिनायक ॥

रामगीती छन्द

ऋजु रीतिसों तू जाइयो हे तात मारगमाहिं। आकाश है मति जाइयो रहियो न काहू पाहिं ॥ अरु जायके मिथिलाधिपति तट कीजियो मति गर्व। संदेह तेरो दूरि करि है सर्व जनक अखर्व ॥ है धर्ममाहिं प्रवीण नृप औ मोक्ष शास्त्रहु बीच। यजमान औ है सो हमारो नीति निपुन निभीच ॥ नृपजनक जोई कहै सोई कीजियो मति और। ए वचन सुनिकै पिताके शुक चलत भो सह गौर ॥ सामर्थ्य ताकी जायबेको व्योम में है भूप। सह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धु भूके पारसों पटसो चल्यो ऋजुरूप ॥ बर इलावृत शुभखण्डमाहीं मेरु गिरि है साम। शुक उतरि तातें तहां ह्वै कै परम मेधा धाम ॥ हरि बर्ष नामाखण्ड माहीं भयो आवत दक्ष। फिरि आवतो किम्पुरुष नामाखण्ड में भो स्वच्छ ॥ फिरि भरतको जोखण्ड यह है प्राप्त ताके बीच। बहु देश देखन लगो सो शुक परम प्रज्ञ निभीच ॥ नृप प्रथम चीनहिं लखत भो पुनिहूण देशहि तौन। पुनि लखत आर्य्या बर्तको भो महा मेधा भौन ॥ बहु लखत पत्तन रत्न औ बहुभरे कान्ति अनूप। पै जानि तिनको तुच्छ तिनमें मन न लावत भूप ॥ जिमि बिहग बिहमें संग सो तिमि रहित श्रीशुक पर्म। भो जनक रक्षित देशमाहीं आय प्राप्त सशर्म ॥ तिहि देशबारी लखत शोभा स्वच्छ मिथिला पास। भो बाटिकामें आवतो नृप भरो परम प्रकाश ॥ नर नारि तामें लखत भो औ बहुत हय गुणहाल। मन है न लखते लगत तास न चित्त नेकु नृपाल ॥ ह्वै प्राप्त शुक पुरद्वार माहीं भयो करत प्रवेश। कहि द्वार पालक तिन्हें रोके उग्रवैन अशेश ॥ सुनि बैन तिनके क्रोध नेकु न कियो शुक बर प्रज्ञ। भो रह्यो अति बर ज्ञानगाढ़ो गढ़े सुनु धर्मज्ञ ॥ अति मार्ग श्रमसों क्षुधा सों औ प्याससों न मलीन। शुक भयो नेकहु रहो जैसो प्रभा तैसी पीन ॥ जहं द्वार पालन रोक कीन्हों खरे तहं बिन ग्लानि। बहु बारलौं अति घाम माहीं भरे कांति महानि ॥ तिन सबनमें एक देखि शुक को कहि सुकरुणा भूरि। करि दिये छोड़ी दूसरी पै पूजि ऋजुता पूरि ॥ सो तहां ह्वै बर मोक्षही को रह्यो करत विचार। तहं भूप को मंत्रीसु आयो एक बुद्धि अगार ॥ नृप सुनो घटिका द्वैक में शुकदेव को तिहि पर्म। करवाय कै सुप्रवेश नृप के सौध मांहि सुधर्म ॥

दोहा ॥

आसन पै बैठाय कै निकरि भयो पुनि आप। जनक भूप के सदन ते पाण्डव बुद्धि कलाप ॥

रामगीती छन्द ॥

पञ्चास आई वामतहं अभिराम छबिकी धाम। कटि छाम जिनकी साम कच अति लोल नैन ललाम ॥ बरकनक के अति बनक के पहिने सुभूषण स्वच्छ। तिनकी सुकरतो जनक आज्ञा जनक को ते दक्ष ॥ रति माहिं रति सम अतिहि कुशला करे रति मय नैन। तिनके सुकेश महान के सम शीसुकेशी हैन ॥ तनमें लगाय सुवास पहिने वास अरुण अनूप। सुसकाय काय झुकाय चाहे भाव करि बहु भूप ॥ तिन धोय करिके पाय तिनके चाव सहित महान। शुभ चन्दनादि लगाय कै पहिराय माल सुठान ॥ अति मधुर बाणी कूजि तिन को पूजि सरति अखर्व। करवावती ते भई भोजन भावती अति सर्व ॥ महि हाथ तिनके साथ ह्वैके तदनु बाग अनूप। दिखवावतो ते भई सब कछु गावतो सुनु भूप ॥ अति भई लोल कलोल करती डोलि डोलि नगीच। शुकदेव जूको जानिबे को धार्य्य भूप निभीच ॥ लगि रहीं सेवा माहिं औ पगिरही हांसी माहिं। धर्मज्ञ सुनु शुक प्रज्ञ तिनसों भो बिकारित नाहिं ॥ तिन छयो छबिसों दयो शुकको तच पलंग बिछाय। करि सविधि संध्या भयो तापै पौढ़तो शुक आय ॥ मन जास ब्रह्म बिचारही में रहो लगि भूपाल। नहिं भाव मन को और भो तिय भाव चाहि बिशाल ॥ करि ध्यान पूरब रैनि में अरु मध्य में करि सैन। फिरि उठत मुनिबर भयो श्री शुकदेव प्रज्ञा ऐन ॥ करि प्रातकृत सब भए बैठत नारिहू उठि सर्व। जिमि करतिहीं तिमि कौतुक करण फेरि अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

ऐसे पर नारीन की लीला माहिं अनूप। भयो बितावत दिवस निशि श्रीशुकमुनि वर भूप ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदित नारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे शुकस्यजनकपुरप्रवेशोनामद्वादशाधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

तदनन्तर श्रीजनक ऋषि संचिव सह मति धाम। सामग्री शिर पै लिए पूजाको अभिराम ॥ आगे करि रनिवास सब आसन परम अनूप। चारु रतन अरु कांतिमय बहुबिधि के वरभूप ॥ लोबेको गुरु पुत्र को आगे भोनृप जात। अपने मनमें जानिके ज्ञानी वर अवदात ॥ रत्न जटित आसन विमल लै सुपुरोहित पर्म। जनक भूप के पाणिमें देत भयो सहशर्म ॥ शुकको बैठन काज नृप आसन सो भो देत। अर्घ्य पाद्य देकै करी पूजा बुद्धि निकेत ॥ देत भये सुरभी जनक शुद्धांगा अभिराम। पूछत भो शुक कुशल लहि पूजाको मति धाम ॥ आज्ञा बैठन को दई तदनु नृपहि शुक स्वच्छ। लहि आज्ञा पैठत भयो जनक भूमि पै दच्छ ॥ तदनु पूछि के कुशल नृप बोलि सुकोमल बैन। फिरि आगमको हेतु भो पूछत प्रज्ञा ऐन ॥

शुकउवाच ॥ जयकरी छन्द ॥

मिथिलामें है मम यजमान। जनक भूप वर मेधा वान ॥ मोक्ष धर्म में कोविद पर्म। है अतिही निति रहत सशर्म ॥ प्रवृति निवृति में जो सन्देह। दूरि करैगो सब मति गेह ॥ यह स्वपिताकी आज्ञा पाय। आयो हौं तव तटनरराय ॥ अब तुम्हैं हम पूछैं जौन। कहिए आपु यथो चित तौन ॥ ब्राह्मण कहा करै मतिरूप। सो अब कहौ हमैं तुम भूप ॥ औ सु मोक्ष किमि लहत सुजान। कीन्हें तप को पाए ज्ञान ॥ जनकउवाच ॥ ब्राह्मणको सु प्रथम सुनु काज। सुखते मेरे प्रज्ञ दराज ॥ प्राप्त होय उप नयनहिं वेद। सविधि पढ़ै करि मनहिं अखेद ॥ तदनु दक्षिणा गुरुको देय। नरम बचन कहि आज्ञा लेय ॥ निजगृह माहिं आय सविधान। करै समावर्तन मति मान ॥ ब्रह्मचर्य्य को तजिबो जौन। परम समावर्तन है तौन ॥ तदनु गृही ह्वैकै अभिराम। पुत्र पौत्रन के लखि आम ॥ पालै वानप्रस्थ को धर्म। तजि प्रमादता होय सशर्म ॥ ह्वै संन्यासी ब्रह्म विचार। करै फेरि सुनु बुद्धि अगार ॥ श्रीशुकउवाच ॥ हियके माहिं ज्ञान विज्ञान। भए परम उत्पन्न सुजान ॥ जन तीनो आश्रमके बीच। रहै अवश्यहि कहां निभीच ॥ हमको कहो अब यह भूप। तुम हौ ज्ञानी परम अनूप ॥ जनकउवाच ॥ बिना ज्ञान विज्ञान महान। मोक्ष प्राप्त नहिं होति सुजान ॥

दोहा ॥

होत ज्ञान विज्ञान है गुरु सम्बध बिनान। गुरु को सेवा मुख्य है याते तात सुजान ॥ मैं आत्मायह शब्दको अर्थ जानिबो ज्ञान। आत्माको अनुभव परम तासु नाम विज्ञान ॥ पहिलेही तत्पर भए संन्यासाश्रम बीच। रहिहै लोकन औ करम शुक सुनु परम निभीच ॥ जीवन मुक्त जिते भए पूरब ज्ञानी पर्म। सब आश्रमको तिन ग्रहण कीन्हों इतो सशर्म ॥ यहि क्रमसों बहुयोनिमें तजे शुभाशुभ कर्म। होत मोक्षको प्राप्त है ज्ञानी स्वच्छ सशर्म ॥ कीन्हें जे बहु जन्ममें इन्द्रिय सबही शुद्ध। मुक्त होत तिनसों पहिलेही आश्रममें वरबुद्ध ॥ आश्रम में पहिलेहि जो होय जाय जन मुक्त। अपराश्रम में छूटिए तौ काहेको युक्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतन में आत्मा लखै अरु आत्मा में भूत। होत नहीं सो लिप्त है कछुं जगबीच अकूत ॥
परमात्मा को होत है प्राप्त छोड़िकै देह। गाथा अच ययातिकी कही सुनो मतिगेह ॥
मोक्षशास्त्र में विज्ञते धारत गाथा तौन। आत्माहीमें ज्योतिहै अन्यच न मति भौन ॥
सब भूतनके बीचमें सोहै ज्योति समान। जानत है जिन जननको प्राप्त भयो है ज्ञान ॥
जब सब भूतनमें करे नेकु नहीं दुर्भाव। तब आत्माको होतहै प्रापत जनबुध राव ॥
राखे जब समभावको सबभूतनके बीच। प्राप्त होत है ब्रह्मको तब जन होय निभीच ॥
जबनिंदास्तुतिहैगुणे सम अरु कांचनलोह। लहि शत्रुहि कोपनकरै औन मित्रलखि छोह ॥
शीतोष्णहिसुखदुखहि अरु अर्थ अनर्थहि सर्व। जानै सम तब ब्रह्मको प्रापत होत अखर्व ॥
ए सब तोमें लखतहौं व्यासपुत्र अवदात। और जानिवे योग्यसो जानत तू हे तात ॥
आयो जब मम देशमें तबमैं जान्यो तोहि। तव सु पिताकी कृपाते ज्ञानभयो यहमोहि ॥
तवगतिहै शुक अधिक अरु अधिकहिहैविज्ञान। औअधिकहिसामर्थ्यपै जानततूनसुजान ॥
कै धो तू शुकबाल्यते कै शंसयते तात। जानत नहिं विज्ञानजो उतपनसो अवदात ॥
तट बैठे मोसेनके शंसयसों ह्वै दूरि। शुद्ध ब्रह्मको प्राप्त तू ह्वै है सुखसों पूरि ॥
तब हियमें उत्पन्नभो अति निर्मल विज्ञान। थिर बुद्धी तेरी भई तजे रूढादि महान ॥
ए उद्योगन करत है याते प्रापत भोन। ब्रह्महि जो उद्योग नहिं करत कहत है सोन ॥
सुखदुःखहिसमतूगुणत नृत्यगीतमेराग। होत न तोको औन कछुं भयहिलहतबड़ भाग ॥
शत्रु मित्रताको नहीं राखत काहू माहिं। कनक लोहको सम गुणत देखि आपने पाहिं ॥
ऐसो देखत तोहिं हम और मनीषी जौन। देखत तेऊ हैं सबै परम ज्ञानको भौन ॥
विप्रहि कीबे योग जो सो तू करत सदैव। औ मोक्षहिमें रत रहत नित्य और कछुनैव ॥
जो कछु पूछन योग्य है सो तोमें है सर्व। पूछो चाहत और का प्रज्ञावान अखर्व ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकबिना बिरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे शुकजनकसम्बादोनामचयोदशाधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

भूप जनकके वचनए सुनि शुकप्रज्ञविशाल। उत्तरदिशि हिमवानको चलतो भयो नृपाल ॥
नारद तौ नहिं समयमें देखनकाज अनूप। गिरि हिमवानहि आवते भए ज्ञानमयभूप ॥
राजति हैं तहं अप्सरा अरु किन्नर गन्धर्व। बोलत हैं जहं मोर औ कोकिल समुदअखर्व ॥
और बहुत बहु रंगके वर विहगणके जूह। बोलि रहे हैं डोलिकै धरैं सुमोद समूह ॥
पक्षिराजहूरहतहैं नित्यहिजिहिगिरिबीच। ऋषिगणसहदेवत जहां आवतनित्यनिभीच ॥
विष्णु जहां तप हौ कियो महत पुत्रके अर्थ। बाल्य अवस्था माहिं हो तहांस्कंद समर्थ ॥
महति शक्ति फेकी हती तौन गड़ी लखिवैन। सेनानी कहतो भयो ऐसे बरबल ऐन ॥
सोई याहि हलाय है औ उपारि है सोय। मो सम बलमें होयगो विप्र भक्त वर कोय ॥
वासी तीनोंलोकके सेनानीके बैन। सुनिए पीड़ित होत भे अतिही नृप बल ऐन ॥
सबको पीड़ित देखिकै दोन्हीं विष्णु हलाय। ताके हले वसुन्धरा कंपति भई नरराय ॥

चरण दोहा ॥

याहि उपारे सेनानीको ह्वै जैहै अपमान। यहविचारिकैनहीं उपारीशक्तिहिश्रीभगवान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहत भए प्रह्लादको हरि इमि शक्ति हलाय। अतिहि कियो स्कंदते पुरषारथ दृढ़काय ॥
नहिं स्कंद पुरषार्थ सम कोऊ करिहै और। सहि न सक्यो प्रह्लाद ए वैन उग्रतिहिठौर ॥
शक्तिहि लग्यो उखारिवे तौन हलोऊ नाहिं। महत नादकरिकेगिरो मूर्छित ह्वै भूमाहिं ॥
तासों उत्तर दिशाको तप है करत महेश। अग्नि प्रकाश जहां करत चारों वोर हमेश ॥
दश योजन विस्तरितसो आदित्याचलि नाम। जाय बसत तामें नहीं कोऊ अतिही माम ॥
और पूर्व दिशिव्याससुनि ऊते पढ़ावत वेद। पैलहि वैशम्पायनहिं औ जैमिनिहि अखेद ॥
चौथे तिनहिं सुमन्तको तिहि स्थानको स्वच्छ। देखतभो आकाशते सुनि शुकदेव प्रतच्छ ॥
औ व्यासऊ लखते भए शुकहि व्योमके बीच। गुणसो छूटे बाण सम आवत उग्र निभीच ॥
आय पिताके पायशुक धरतो भयो सप्रीति। पैलादिक चारिऊनसों मिलतोभयो सरीति ॥
तदनु जनक सम्वादसो कहतो भयो अनूप। क्रमसों सब सुनि व्यासको शुकसुनि वर बरभूप ॥
सुत सहशिष्यनको सुसुनि व्यास पढ़ावत तच्छ। रहतेहैं रवि उग्र सम गति जिनकी सर्वच्छ ॥
पैलादिक सबशिष्यते एक समयके माहिं। प्रार्थना करते भए आय गुरूके पाहिं ॥

शिष्या:ऊचु: ॥ चरणाकुलकछन्द ॥

आपु बढ़ायो तेज हमारो। महत तिमहि यश लहत सुढारो ॥ एक अनुग्रह मांगत अबहैं। जोरि पाणि तुमसों हम सब हैं ॥ यह सुनिकै शिष्यन की बानी। कहत व्यास ऐसे भे ज्ञानी ॥ करों कहा मैं कार्य्य तुम्हारो। तुम्हैं होय प्रिय तौन उचारो ॥ सब ए बचन गुरूके सुनिकै। कहते भए शीशनत पुनिकै ॥ षष्ठम शिष्य आपु मति कीजै। यह हम वर मांगत सो दीजै ॥ तात सुनो पैलादिक चारौ। हम औ पञ्चम पुच तुम्हारौ ॥ शिष्यन की सुनि कै यह वानी। कहत व्यास भे इमि वर ज्ञानी ॥ ब्रह्मलोक लहिवे की इच्छा। करै जौन सो लैमन वांच्छा ॥ वर ब्राह्मण को वेद पढ़ावै। आलस कबहु न मनमें लावै ॥ बहुत होऊ तुम शिष्य हमारे। परम उज्जला मेधावारे ॥ दीजे वेद अशिष्यहि नाहीं। तिमिव्रती छत भ्रङ्ग माहीं ॥ धरिये वेदहि नहिं नहिंकबही। सुनो हमारी शिक्षा सबही ॥ कनकहि बहुविधि सेकत जैसे। शिष्यहि शोधि लीजिये तैसे ॥ होय महत भय जिहि थल माहीं। तहां भेजिये शिष्यहि नाहीं ॥ मेधा बढ़े शिष्यकी जिमि जिमि। अधिक पढ़ावै ताको तिमि तिमि ॥ वेद पढ़न सो कार्य्य महानो। यह तुम सबही निश्चय जानो ॥ देवनकी सु स्तुति के लीन्हे। ब्रह्म वेद प्रगटे है कीन्हे ॥

दोहा

वेद वान बर बिप्रको करत अनादर जौन। कहत तुम्हे हो सत्य यह लहत परा भव तौन ॥
कही वेद अध्ययन की उत्तम विधि तुम पाहिं। शिष्यन के उपकार को राख्यो तुम मनमाहिं ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउहितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे वेदाध्ययन विधौ चतुर्दशाधिक शततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

सुनिकै गुरुके वैन ए लहिकै मोद अखर्व। आपुसमें मिलते भए पैलादिकते सर्व ॥

मधुभार छन्द ॥

गुरु कह्यो जौन। वर ज्ञान भौन ॥ करि है सदाहि। विधि सहित ताहि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

आपुस में ते बोलिकै चारों ऐसे भूप। इमि सु प्रार्थना करत भे गुरुसों फेरि अनूप ॥
हम सब शाखा भेद सो श्रुतिहि अनेक प्रकार। करिहैं भूमें जायके तात सुज्ञान अगार ॥

उकछा छन्द ॥

शिष्यनके सुनि बैन। परम ज्ञान के ऐन ॥ कहत भए इमिभाय। तिनको सुनु नरराय ॥

दोहा ॥

जहं मन आवै जाउ तहं तुम पैलादिक सर्ब। अप्रसा दता राखियो श्रुतिमें सदा अखर्ब ॥

उकछा छन्द ॥

सुनि कै गुरुके बैन। पैलादिक मति ऐन ॥ प्रदक्षिणा सविधान। करि नत शीश सुजान ॥ उतरत भूके बीच। चारो भए निमीच ॥

दोहा ॥

यज्ञ चारि ऋत्तिजन सों हुबेकी बिधि खच्च। भूमण्डलके बीच ते प्रद्दत करत भे दच्च ॥
विप्रनसों क्षत्रियनसों बैश्यनसों अभिराम। कर वावत भे यज्ञ नृप सह विधान मतिधाम ॥
बिदा भए सब शिष्य जब तब बर मुनि श्रीव्यास। रतशुकसहित सुध्यानमेंहोतभये सङ्गलास ॥
नारद ताही समयमें भूप आयके तत्र। इमि बोलत भे व्याससों गति जिन की सर्वत्र ॥
सुनो बिज्ञबर व्याससुनि तब आश्रम के माहिं। शब्द बेद अध्ययनको होत कहौ क्यौंनाहिं ॥
बेदघोषबिनलहतनहिंशोभायहगिरिराज। यह सुनिकैइमिकहतभेव्याससुमुनिशिर ताज ॥
नारद तुम यह है कहीमम मनहींकी बात। हो सर्वज्ञ कछू नहीं तुमसों है अख्यात ॥
करैं अब हम सुमुनि बर जो तव आज्ञा होय। यह बानी सुनि कहतभे नारद ऐसे जोय ॥
अपठन मल है बेदको अव्रत मल है पर्म। ब्राह्मणको अरु चपलता तियको सुनहु सधर्म ॥
भू कोमल वाही कहै देश मलेच्छ स्थान। याते बेदाध्ययन तुम सुत सह करो सुजान ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

नारद की यह बानी सुनिकै। व्यास बिशारद ताको गुणिकै ॥ पढ़त बेद भे ऊंचे बानी। करिकै अतिही सुत सह ज्ञानी ॥ ताही समय सदा गति आयो। अति शय उग्र बेगसों छायो ॥ तब गुणि अन्याध्याय के भेदे। सुतसों कह्यो पढ़ै मति वेदे ॥ चुप ह्वै शुक पूछत भो पितसों। आयो उग्र वायु यह कित सों ॥ सुनि यह खच्च पुत्र की बानी। कहत बचन भे ऐसे ज्ञानी ॥ आयो कितते वायु महानो। तूही निज मति सों अनुमानो ॥ सप्त मार्गहे मारुत वारे। क्रमसों सुनु तू तात हमारे ॥ साध्य नाम सुरगण बर जोहो। तासों मरुत समान भयो हो ॥

दोहा ॥

भयो उदान समानते औ उदानते ब्यान। तासों भयो अपान है औ अपान ते प्रान ॥
प्राण वायु अनपत्य है याते होतन और। प्रथक् प्रथक् अब कहत हौं इनके कहत सगौर ॥
मारुतही है तात सुनु सब जीवन को प्रान। प्राण भयो यहि हेतुते मारुतको अभिधान ॥
देह जलदकों चलन की करत प्रेरणा तात। प्रवह नाम याते भयो मारुतको बिख्यात ॥
उदय अस्त सूर्य्यादिको औ जठरानल धाम। करत प्रकाशित है भयो याते आवह नाम ॥
जलधिन सो जल लेयकै औ जल दनकों देत। करत बरषिबे योग्यहै करिकै परम सचेत ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतिय वायु शुक तौन है ताको उद्वह नाम। तनु में कहत उदान है ताहीको मतिधाम ॥
जौन चलावत वायु है नभके बीच विमान। प्रथक् प्रथक् अग करत जो वरषन काज महान ॥
मेघनकों सो वायु है चतुरथ संवह नाम। महत गिरिन को देत है सो गिराय बलधाम ॥
पीड़ाजाके वेगसों पावत अचल विभात। मेघ कहावत वेग सह जास बलाहक तात ॥
अतिही दारुण चलत जो नभते करतो ध्यान। निवह नाम है तास शुक सो पञ्चम पवमान ॥
भूमें गिरन न देत जो नभ गंगाको वारि। औ बीचहि तें देत जो किरण भानुकी टारि ॥
क्षीण शशिहि जो करत है पूरण अति अभिराम। षष्ठम सो पवमान है परिवह ताको नाम ॥
नाश करत प्राणीन को जो लेहिकै कल्यान्त। अन्तक औ मृत्युज्ञ रहत जाके बशमें दान्त ॥
आतम चिन्तक दक्षके पुत्र सु दशहज्जार। जोहै तिनके मोक्षको कारण उग्र सुढार ॥
ते ब्रह्माण्डहि फेरिके जाके बेगहि पाय। जात भए अतिही प्रबल जोन बखानो जाय ॥
जो जाके पीछे परत आवत है फिरि सोन। होय उलङ्घन सकत है काहूसों जिहिकोन ॥
सप्तमसो पवमान है तास परा वह नाम। चलत निरन्तर रहत हैं ए सातों बलधाम ॥
कंपित भो यह वायुसों उत्तम अचल महान। है अतिही आश्चर्य यह अद्भुत अकथ महान ॥
यह जो है शुक वायु सो विष्णु श्वासको भूरि। सर्व विथाको लहत जब जात जगत में पूरि ॥
पढ़त वेद विद वेद नहिं चले महत पवमान। निकसत है संग वायुके मुखमें वेदसुठान ॥
दोऊ मारुतके भिरे खेद लहत है वेद। मरुत चले नहिं पढ़नको कह्यौ तुम्हे हम भेद ॥
इमि कहि ऐसे फेरि कहि अब तू पढ़ु हे तात। द्वैपायन सुनि वर भए व्योम धुनीको जात ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे पंचदशाधिक शततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

पिता गए तब सुमुनि वर श्री शुकदेव अनूप। पूछन की वेदार्थ को इच्छा करिकै भूप ॥
नारद मुनिकी करत भे पूजा सहित विधान। तदनु कह्यौ नारद सुमुनि ऐसे शुकहि सुजान ॥
कहा श्रेय तेरो करैं कहु तू मोको ख्यात। नारदके सुनि बचन शुक कहत भए इमि तात ॥
सुनि वर जो यहि लोकमें हमको अति हित होय। हमैं युक्त तासों करो कृपा दृष्टि सो जोय ॥

नारदउवाच ॥

ऐसे सनत्कुमार भे पूर्व ऋषिन सो वैन। कहत और तहं उग्र है सत्य समान न ऐन ॥
बिद्या सम नहिं चक्षु है और अनूप अमन्द। और नहीं अनुराग के सम अति दुःख बिलन्द ॥
अज्ञानी संसारमें दुःख ओतके बीच। परिकै जाते हे बहे नहिं सुख होत नगीच ॥
कर्मनको फल देख तू जगत बीच सबिवेक। मनुज उठावत पालकी एक चढ़त है एक ॥
केते ऐसे पुरुष हैं जिनके नारि अनेक। औ केते हैं कर्मसों जिनको मिलत न एक ॥
मनको करि एकाग्र ए नारदके सुनि वैन। करत विचार भयो परम यह श्रीशुकमति ऐन ॥
क्लेश होय जिहि माहिंलघु अरु फल उदय महान। कौन कर्म ऐसे परम है आनन्दस्थान ॥
तदनन्तर गति उत्तमा ताको हिये विचारि। मनहीमें इमि कहत भो महत शोकको धारि ॥
कैसे ह्वै है प्राप्त यह उत्तम गतिको पर्म। जैसो फेरि न दुख लहौ निलहि रहौ सधर्म ॥
उत्तम गतिको लहनकी इच्छा है अभिराम। मेरे मनमें छोड़ि कै सर्वसंग दुख धाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम गतिको प्राप्ति नहिं होति योग बिन खच्च । ताते ह्वैकै योगको प्रापत परम प्रतच्च ॥
छोड़ि देहको अति बिमल ह्वैकै मारुत रूप । मैं प्रवेश दिन नाहमें करिहौं उग्र अनूप ॥
घटत बढ़तही रहत है पुनि पुनि मास सदाहिं । तामें करण प्रवेशकी यातें इच्छा नाहिं ॥
औ शशिमें ह्वै जात जो आवत है फिरि तौन । रबिमें ह्वैकै जातसो आवत फेरि न जौन ॥
अक्षय मण्डल रहत है मारतगडको चण्ड । फैलावत सन्ताप है लोकन माहिं अखण्ड ॥
याते तजिकै देहको मैं सब ऋषिन समेत । सूर्य्य सदन में होय कै जैहौं होय सचेत ॥
लखो योगको बीर्य्य मम नग नागादिक सर्व । सब भूतन के माहिं हम करत प्रवेश अखर्व ॥
आज्ञा लैकै तदनुमुनि नारद सो अवदात । ज्ञानी श्रीशुकदेव मुनि पिता पास भो जात ॥
दरश पिताको पाय कै हाथ जोरि शिर नाय । मांगत भयो प्रदक्षिणा करिकै बिदा सचाय ॥
सुनिकै ए शुकदेवके व्यास सुमुनि बर बैन । अति प्रसन्न ह्वैकै कहत ऐसे भे मतिऐन ॥
भो भो सुत कछु बेर तू बैठि हमारे पास । जासों मैं शीतल करौं लोचन सहित हुलास ॥
छुटो स्नेह संदेह सों शुकमुनिवर अभिराम । बैठनको नहिं मन कियो गमन कियौ मतिधाम ॥
जात भयो कैलाशको छोड़ि पिताको पास । गिरिजा गिरिजापतिहि जहंसेवत गणसहुलास ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कबिनाबिरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मेशुकोपाख्यानेषोड़शाधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

खच्च श्रृंग कैलाशको तृणसों रहित अनूप । सम अति उज्जल बैठतो तामें भो शुक भूप ॥
पक्षिन के संघातको है आराव जहान । तब चढ़ावत बायु भो क्रमसों सहित बिधान ॥
अति हो उज्जल आत्मा सर्व संग सों मुक्त । ताहि देखि हंसतो भयो अति मुदसों ह्वै युक्त ॥

रामगीती छन्द ॥

सो योगको पुनि प्राप्त ह्वैकै मोक्ष मारग काज । चलत नभको भयो उद्यत भरो तेज दराज ॥ करिकै प्रदक्षिण तदनु ऐसे नारदहि शुक बैन । भो कहत गिरिकैलाश ऊपर महामेधा ऐन ॥ शुकउवाच ॥ मैं लख्यौ मारग मोक्षको अरु प्रकृत भो तिहिबीच । तब होहु निति कल्याण नारद ज्ञानवान निभीच ॥ तब अनुग्रह ते प्राप्त ह्वैहौं चहत जो गति ताहि । परणाम करिकै सुमुनिसों शुक तदनु पाय बिदाहि ॥ फिरि योगको सो प्राप्त ह्वै कैलाशते उठि पर्म । शुक बायु भूत अमंद दिवमें भयो जात सशर्म ॥ जब जासमन सम भए ताको भूत देखत सर्व । छबि बैन तेज समान जाकी उग्र अतिहि अखर्व ॥ सब चराचर ते भए पूजत ताहि सहित बिधान । बर पुष्प बर्षण लगे सुरगण भरे तेज महान ॥ सब अप्सरा गन्धर्व ताको भए बिस्मित देखि । अरु सिद्ध ऋषिहू भए बिस्मित उग्र अति अवरेखि ॥ इमि कहत भे यह तपस्या सो महत सिद्धिहि पाय । गतब्योम में रबिमाहिं लाये नैन भीति बिहाय ॥ यह कौन है सुख ऊर्द्ध कीन्हे लखत काहुहि नाहिं । है परम जाके तेज सम बर तेज भानुहिमाहिं ॥ अति शीघ्र जाके गमनको रव भरत भो नभबीच । भो जात मलया चलहि सो शुक उग्र परम निभीच ॥ है उदच सो अरु पूर्व चित्ती जहां रहति हमेश । ते प्राप्त है आश्चर्य को इमिभई कहति नरेश ॥ यह परम बेदाभ्यास में रत बिप्र तिहिमें खच्च । अति लखो चिरता बुद्धि बारी अच सबहि प्रतच्च ॥ यह अल्पकालहि माहिं सिद्धिहि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त है अवदात। करि सविधि सेवा पिता चारी चल्यौ नभमें जात ॥ यह पिताके हो अतिहि प्रिय किमि विदा कीन्हो याहि। ए उर्व्वशी के वचन सुनि शुक रह्यो चहुं दिशि चाहि ॥ नृप तदनु तहं चहुं वोरसो सुर जोरि करि कै पानि। भे लखत शुकको प्रभा विमला भरी तेज महानि ॥ शुकदेव तिनको तबै ऐसे भयो कहतो वैन। जो पिता आवै अब मम आह्वान करत अचैन ॥ तौ श्रवण करि कै वचन तिनके बोलियो तुम सर्व। ए वचन सुनि शुकदेवजू के दिशा शैल अखर्व ॥ अरु सरित त्यौंही सरित्पति भे कहत ऐसे तात। तुम कहत सोई कहैवे तव पितासो हम ख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ तिन सवनके ए वचन सुनि शुकदेव ज्ञानी पर्व। गुण छोड़ि कै सब भयो निर्गुण स्वच्छ दच्छ अखर्व ॥ जिहि समय में शुकदेव मुनि वर भयो निर्गुण होत। भो होत उल्का पात औ दिग दाह कीन्ह उदोत ॥ अरु भई धरणी कम्पिता वहु भयो हाहा कार। उतपात एसव भए तिनको सुनो हेतु उदार ॥ जब तजत है संसार को वर महा पुरुष अनूप। तव होत है उत्पात विश्व अभाग्य सूचक भूप। भे शिखर गिरिते गिरण के ऐ तरुन वारी डार। सरितान को अरु सरित्पति को भयो उछ रत वार ॥ भो मन्द भानु प्रकाश अरु भो अग्निमें नाहिं ज्वाल। भूमें जलाशय भए सूखत सर्व अल्प विशाल ॥ अब सुनो तहं जे शकुन भे शुकदेव जू को तीर। वर लगो वर्षण वारि बासव लगो वहन समीर ॥ शुकदेव गिरि हिमवानाके वन श्रृंगअतिही साम। भो लखत है एक हेमको एक रजतको मतिधाम ॥

दोहा ॥

शत शत योजन को सुतिन दोउनको विस्तार। तितनेही उन्नत मिले दोऊ ऊते सुढार ॥
तिन दोउन शुकदेव की मतिको रोधन कीन। जुदे होतभे यह सुनो तुम आश्चर्य्य प्रवीन ॥

रामगीती छन्द ॥

तिन दुऊंन के ह्वै बीच में शुकदेवमुनि भो जात। भे शोर करते देव ऋषि आश्चर्य्य यह लखि तात ॥ भे द्विधा गिरि के सांन शुक मुनि कढ़ो तिन में होय। लखि साधु साधु सुभए करते नाद सब तहं जोय ॥ सो पूज्यमान ऋषीण सों अरु देव गण सों भूप। अरु यक्ष गन्धर्वादिकन सो पूज्य मान अनूप ॥ भो होत तापै पुष्प वर्षा भई नभ ते होत। शुक तदनु ऊपर जात भो मन्दाकिनी को सोत ॥ भो लखत तामें ऊती क्रीड़ा करति नग्ना आम। वहु अप्सरा तो देखिके शुकदेवको मतिधाम ॥ जिमि रही क्रीड़ा करति तिमिही रही धारण वास नहिं भई करती छई छविसो धरें भूरि उलास ॥ गुणि शुकहि जातो व्यासमुनि धरि हिय भूरि स्नेह। भे चलत पीछू ते भए धरि योग गति मति गेह ॥ शुकदेव मुनिवर प्रभंजन ते ऊर्ध्व नभ के बीच। गति के दिखाय प्रभाव अपनो परस उग्र निभीच ॥ भो ब्रह्म भूत अमंद होतो इन्द्र रहित नरेन्द्र। गति धारि योग महान बारी व्यास बुद्ध विलन्द ॥ शुक गमन कीन्हो जहां ते हो तहां भे मुनि जात। क्षणमाच हीमें लगो तिन को वहुत देर न तात ॥ शुक गयो हो जिहि द्विधा करिकै पर्वता ग्रहि भूप। मुनि व्यास ताको भये देखत भरो ओज अनूप ॥ तहं व्यास सों इमि भए कहते तव ऋषिवर दच्छ। यह फटो तव सुत तेजसों है पर्वताग्र प्रतच्छ ॥ नृप तदनु हे शुक व्यास मुनि इमि करत भे आह्वान। रव दीर्घसों सो भरत भो तिहुं लोक मांहि सुजान ॥ आह्वान करिकै श्रवण बोलत भे चराचर सर्व। हां तात ऐसो भांति सेती तदनु प्रच्छ अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

तबसो लैके आजुतक पर्वत गह बर बीच। उच्चारण कीन्हे शबद दीरघ तात निभीच ॥
हे शुक ऐसी कढति है प्रगट प्रति ध्वनि पर्म। भूतन में शुकदेव छपि आपु प्रभाव सशर्म ॥
अपनो प्रगट दिखाय कै तातहि तजि शब्दादि। प्राप्त होत पर पदहि भो जोहै नित्य अनदि ॥
शुक की महिमा देखि के अद्भुत श्रीमुनि व्यास। चिंतन करिके शुकहिको बैठत भए उदास ॥
तहां सुनग्ना अप्सरा मन्दाकिनि के तीर। देखि व्यास को दौरिकै धारति भईं सुचीर ॥
यह लखि निज आशक्तता पुत्र मुक्तता ताहि। लज्जित औ झलसित भए मनहींमें अवगाहि ॥
तदनन्तर शिव आयके व्यास पास अवदात। बाणी नीकी कहि भए समुझावत हे तात ॥

शिवउवाच ॥

परम स्वच्छ सामर्थ्य को पञ्च भूतकी व्यास। माग्यो हो सुत पूर्व तुम करि तप सहित हुलास ॥
तुम्हैं प्राप्त तैसोहि भो सो अब ज्ञानी पर्म। ब्रह्म तेजते तब सु अरु मम प्रसादते पर्म ॥
जो पद दुर्लभ सुरनकों प्राप्त ताहि भो होत। तुम काहेको शोकको हिय में कियो उदोत ॥
रहि है पर्वत औ जलधि जबलों तबलों व्यास। रहि है तेरी पुत्र सह कीरतिको सुप्रकास ॥
मम प्रसादते देखि है सब लोकनके मांहि। छायाको निज पुत्रकी सदा आपने पांहि ॥
समुझाए श्रीशम्भु के अरु सुत छाया पाय। हर्षित ह्वै फिरते भए व्यास सुमुनि नरराय ॥
कह्यो तुम्हैं शुकको जनम त्यौंही गमन अनूप। नारद मोसों यह कथा पूर्व कहीही भूप ॥
औ मुनि बर श्रीव्यास तौ कही अनेकन बार। ही हमको यह जो कथा महिमा भरी अपार ॥
धारण करि है ताहि सो लहि है गति निर्वान। जनन मरणके दुःखको लहि है फिरि न सुजान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविनाबिरचिते भाषायांमहाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे शुकोपाख्यानसमाप्तिर्नाम सप्तदशाधिकशततमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

जन्म गमन शुकदेव को सुनि हर्षित ह्वै भूप। तदनन्तर पूछत भयो इमि गुणिकै मतिरूप ॥
होत भक्ति बिनज्ञान नहिं अति उज्जल अभिराम। फेरि प्रश्न गांगेय को पूछत भो यह आम ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ उकछा छन्द ॥

चारों आश्रम जौन। सिद्धि लहन को तौन ॥ इच्छा मनके बीच। जौ नृप करै निभीच ॥

दोहा ॥

कौन देवकी तौ करै पूजा सहित बिधान। कौन देवकी कृपाको प्रापत होय सुजान ॥
ब्रह्म लोकको होत है प्रापत मानव स्वच्छ। होति तहांते है नहीं पुनरावृत्ति सुदच्छ ॥
किहि गतिको सो लहत है मुक्त जगततें जौन। कहा करै अरु प्राप्त जो स्वर्गमांहि जन तौन ॥
जासो च्युत नहिं स्वर्गते फेरि होय अवदात। को पितरनको है पिता अरु सुरनको सुर तात ॥

भीष्मउवाच ॥

जो यह पूछो प्रश्न तुम तौन गूढ़ है पर्म। शतवर्षहु में तर्कसो कहि नहिं सकिहैं मर्म ॥
याको कोऊ देवके बिना प्रसाद न भूप। अब कहत इतिहास हौं तुमको एक अनूप ॥
नारायणको अरु सुमुनि नारदको सम्बाद। तामे सो एकाग्र कहि मन सुनु छोड़ि बिषाद ॥
होत धर्मको पुत्र भो नारायण भगवान। कह्यो हुतो यह मम पिता मोको भूप सुजान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वायम्भुव मन्वन्तर में हे नृप सतयुग बीच सुवेश। चारि मूर्ति भगवानकी होतो भई विशेष॥
नरनारायण हरि कृष्ण इन चारिहु में भूप। नरनारायण करत भे तप सविधान अनूप॥
माया मय तनु धारिके बदरीआश्रम बीच। कृष्ण अति तपके तेजमों लखे न जात निमीच॥
जापै होहिं प्रसन्न अति नरनारायण पर्म। सोई तिनको लखि सकै औरन कोय सुधर्म॥

चरणाकुलक छन्द॥

फिरत फिरत लोकनमें आए। बदरीआश्रम में छवि छाए॥ श्रीनारद मुनि अतिवर ज्ञानी। महिमा जाय न जासु बखानी॥ करत हुते तर्पण अरु पूजा। ते दोऊ तिन सम नहिं दूजा॥ तिहि पलमांहि देखि कै तिनको। अचरज प्राप्त होत भो मुनिको॥ तदनु गुणत भो ऐसे मनमें। श्रीनारद बर मुनि तिहिक्षणमें॥ एकहि मूर्ति विष्णु की भारी। भई चतुर्द्धा परम सुढारी॥ करी धर्म पै कृपा महानो। इन अतिही यह मनमें जानो॥ एहैं परम धाम सबकेरे। भूत चराचर जे बहुतेरे॥ औ हैं पितर चराचर बारे। सबदेवनके देव सुढारे॥ किहि देवहि अरु पितर हिएहै। पूजत हिए धारिकै नेहै॥ नारद यह बिचारि मन माहीं। भयो पहुंचतो तिनके पाहीं॥ देव पितृ कारज करि आछे। नारद को देखत भो पाछे॥ नरनारायण तदनु सुढारो। आदर करि मुनि नारद बारो॥ बैठावत भे पूजा करिकै। बैठि सुमुनि नारद सुद धरिकै॥ नमस्कार करि ऐसे बानी। बोलत भए मधुरता सानी॥ नारदउवाच॥ आपुहि बेद पुराणन माहीं। हौ जू गाए जात सदाहीं॥ तुमहीं मूल चराचर बारे। सब देवन के देव सुढारे॥

दोहा॥

तुम किहिकी पूजा करत मैं नहिं जानत नाथ। नरनारायण कहत भे सुनि ऐसे नरनाथ॥

चरणाकुलक छन्द॥

कहिबे योग्य बात यह नाहीं। लखि तब भक्ति कहत तब पाहीं॥ अति सूक्ष्म जो जात न जानो। इन्द्रियादिसों रहित बखानो॥ सुनि क्षेत्रज्ञ कहावत सोई। अरु सबको अन्तर तम ओई॥ ताते सुनु अव्यक्त भयो है। तीनो गुणसों तौन रयो है॥ व्यक्त भए ते प्रकृति कहावै। सोई जो जगको सरसावै॥ सो उत्पत्ति स्थान हमारो। नारदमुनि मन मांहि बिचारो॥ यातें हम निर्गुणहि सदाहीं। पूजत दुओ कार्य्यके माहीं॥ सोई पिता देव है सोई। तासु समान और नहिं कोई॥ सुर पितृ कार्य करणको जोहै। उनहीं को शासन पुनि सोहै॥ ब्रह्मादिक सु प्रजापति जेते। सो शासन गुणि कै सब तेते॥ देव पितर कारज विधि सेती। करते हैं करि बुद्धि सचेती॥ देवपितर कारज सो जानो। ताहीको न अन्यको मानो॥ ब्रह्मादिक सों जे है हीना। अरु गुण कर्म्मनसों सु प्रवीना॥ तिन को मुक्ति जानु मुनि ज्ञानी। पाय सिद्धिते परम महानी॥ जो क्षेत्रज्ञ ब्रह्म तिहि माहीं। प्राप्त होत संशय है नाहीं॥ ज्ञान योगसेती सो देख्यौ। जात और सों नहिं अवरेख्यौ॥

दोहा॥

ताहीतें हम हैं कढे ऐसे जानि सदाहि। ताको पूजत सहित विधि भक्ति राखि मनमाहि॥
जो जन पूजा करत है जास भक्ति सह पर्म। ताहि देत है इष्टगति ते सुनु सुमुनि सधर्म॥
औनिष्केवल भजत जो उनहीको जन स्वच्छ। ताहि लीन करिलेत है आपु मांहि मुनि दच्छ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्त वारता है कही तुमको हम यह पर्म। तुम सु हमारे भक्त हौ याते सुमुनि सुधर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदित नारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कबिनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे नारायणनारदसंवादे अष्टादशाधिकशततमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

सुनि नारद ए श्रवण करि नारायणके बैन। कहत भयो ऐसे बचन नारायणहि सचैन ॥

भीष्मउवाच ॥

रक्षणको ये धर्मके चारि धरे तुम रूप। कीजे आप बिधान सह रक्षण तास अनूप ॥
मैं अबश्वेत द्वीपको जात तिहारो ओर। रूप लखनको तदनु इमि कह्यौ सुमुनि शिरमौर ॥
कोऊ श्वेतद्वीप में जाय सकत सुनि हैन। जो ऐसे हमको कहौ तो सुनिए मम बैन ॥
पूजा गुरुकी करतहौं मैं सविधान सदाहि। गुप्त अन्यकी वातमैं कहौन काहू पाहि ॥
बेदपढ़ेमैं बिधि सहित कीन्होंतपसविधान। अनृत कबहुं बोल्यो नहीं लोकनमें भगवान ॥
पाणि पाद अरु उदर अरु मेढ्र सुममएचारि। अंगसदातिनकोकरत रक्षणनाथ सुरारि ॥
राखतमैं समभावहौं शत्रुमित्रके माहिं। श्वेतद्वीप तिहिको सबिधि मैंहौं जपत सदाहि ॥
यातेमैं जैहौं न किमि श्वेतद्वीपके बीच। नारायण सुनि इमि कह्यो तूसुनिजाऊ निभीच ॥
श्रीनारायणके बचन सुनि कै सुमुनि सहर्ष। पूजा करि जातो भयो गिरिमेरुहि उत्कर्ष ॥
गिरि सुमेरु के श्रृंग पै बैठि सुघटिका दोय। उत्तर पश्चिम कोन में श्वेतद्वीप को जोय ॥
उत्तर क्षीर समुद्र के अति उज्जल अभिराम। द्वाचिंशत योजन सहस दूरि मेरुते माम ॥
तेजोमय उज्जल परम तजदेह अभिमान। देखि परे अन शन बती वासी तत्र सुजान ॥
तिनके वज्र समान तनु अतिही बरबलवान। मस्तक छत्राकार अरुघनसमतिनकोध्यान ॥
अष्टडाढ़ अति शुभ्र अरु षष्टिदन्त अभिराम। रसनासों चाटत रविहि पायसइव बलधाम ॥
कालचक्रको लेत भो जौन देवते खत्र। ध्यान योग्यसो तिन कियो हिय में ताहि प्रतत्र ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

वासी श्वेतद्वीपके तेजोमय अवदात। कैसे मुक्त समान भे कहो तात विख्यात ॥
वासी श्वेत द्वीपके तिनको लक्षण जौन। अरु मुक्तनको एकही जानि परत मतिभौन ॥
तिनको कैसी उत्तमा प्राप्त होति गतिपर्म। यह कहिकेसंदेह मम दूरि करहु गुणिमर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

हम खपितासों यह कथा सुनी पूर्वही भूप। मनको करि एकाग्रसुनि है यहसार अनूप ॥
पूर्व हुतो एक भूप वर तास उपरि चर नाम। मित्र इन्द्रको भक्तवर नारायणको माम ॥
हुतो पिताको भक्त अरु धर्मी परम दराज। हरि बरतेसों लहतभो सर्वा भूको राज ॥
देव कार्य्य पित्र कार्य्यको नित्य करत सबिधान। हुतो अहिक जास यश फैलो हुतो महान ॥
यज्ञादिक जे करतहौ तिनवारौ फल सर्व। नारायणको देतहौं अर्पि सप्रीति अखर्व ॥
कीन्हों कबहुं हुतो नहिं जाने नेकहु पाप। जास राज्यमें दुष्टता होति न रही रसाप ॥
अत्रिमरीचि सु अंगिरस क्रतु पुलस्त्य मतिमान। पुलह बशिष्ट सुसप्तऋषि तेजस भरेमहान ॥
अष्टम स्वायंभुव सुमनु ए सब एक हजार। सुर बत्सरलौं करिकै सुतप सहित विधान सुढार ॥
नारायण को करत भे आराधनवर सर्व। ताते भए प्रसन्न अति बिष्णु कृपाल अखर्व ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासनते श्रीविष्णुके सरस्वती अचलेश। इन आठहुके वदन में करती भई प्रवेश ॥
भए बनावत शास्त्र ए एकलक्ष अभिराम। हरिहि सुनावत सो भए ग्रन्थ परम मतिधाम ॥
तदनन्तर ऐसे कहत नारायण भगवान। भे ऋषीनको वचन वर ह्वै कै गुप्त सुजान ॥
विरच्यो जो यह शास्त्र तुम तामें लक्षश्लोक। याहीते ह्वै है सुनो प्रवृत्ति धर्मको थोक ॥
स्मृति विरचि है देखिकै स्वायंभू मनु ताहि। निवृत्तिहुमें ह्वै है प्रवृत्ति मानव ताकोचाहि ॥
दैत्यगुरुहि अरुसुरगुरुहि यह उपनिषद अतिस्वच्छ। देहै स्वायंभुव सुमनु ते दोऊ वर दच्छ ॥
करिहै यह वर शास्त्रको लोकनिमाहिंप्रचार। तदनन्तर श्रीबृहस्पति सुरगुरु ज्ञानअपार ॥
प्रज्ञ उपरिचर वसुहि यह देहै शास्त्र अनूप। करिहै यामें सो क्रिया विधिवत भूमें भूप ॥
प्रवृत्ति भएते लोकमें यह सु शास्त्रकी पर्म। आचारज तुम प्रकृतिके ह्वै है सर्व सुगर्म ॥
नृपति उपरिचर होयगो सम्पतिवान अनूप। लुप्त होय गो शास्त्र यह जब सोमरिहै भूप ॥

अरिल छन्द ॥

ऐसे कहिकै बैन। नारायण बल ऐन ॥ तजि ऋषीणको जात। भए तहां ते तात ॥

दोहा ॥

तदनन्तर सो शास्त्रवर कीन्हों प्रवृत्ति ऋषीण। सुरगुरु भो तबदेत भे ताकोतौन प्रवीण ॥
तदनुजातभेतप करण निजनिज वांछितवान। मरीच्यादिवर सप्तऋषि महामनीषावान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे शताधिक एकोनविंशतितमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

यही कथाकों कहत हौं मैं अब करि बिस्तार। मनको करि एकाग्रसुनुपाण्डव बिच्र उदार ॥
चयलोकन के नाथ को महा कल्प है नाम। महा कल्प बीते भयो बाचस्पति मति धाम ॥
देव पुरोहित आंगिरस जब उत्पन्न अनूप। भयो देव तब होत भे अतिही हर्षित भूप ॥
बृहतसुनाम बड़ेनकों तिनको जो पति होय। ताहि बृहस्पति कहतहैं परम मनीषी लोय ॥
भूप उपरिचर नाम ताको शिष्य भयो बलवान। सो वसु ऊतो महामति ताको सुयश महान ॥
चित्र शिखण्डिन शास्त्रको पढ़त भयो नृप तौन। पालत भयो प्रजाहि सो नीति सहित बलभौन ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

अश्वमेध सो करिबे लागो। सहित विधान लोदसों पागो ॥ सुराचार्य्य भे होता ताके। तिन के सम न और मेधाके ॥ बिच्र प्रजापतिके सुत नीके। एकत हित अरुचित शुभ थीके ॥ ता में भए सदस्य सुढारे। एतीनों बर मेधा वारे ॥ धनुष रैभ्य मेधा तिथि आछो। होत तिन्हें लखि पातक पाछो ॥ अर्वावसु सुपरासु ज्ञाता। शान्ति कपिल तिमि आनंद दाता। ताद्य तिमहि ऋषि वैशम्पायन। देवहोत्र अरु कण्व सचायन ॥ वेद शिरा अरु ए मेधावी। सोरह ब्राह्मण शरण शुभावी ॥ अरु सब सामग्री मखवारी। धरी गई अति खच्च सुढारी ॥ बैठत भयो उपरिचर राजा। मख शालामें परम दराजा ॥ हौ अहिंस नृप याते नाहीं। पशुकी घात भई मिसि माहीं ॥ वन में होत पदारथ जेहैं। भूप मगाय खच्च बहु तेहैं ॥ तिनके जिहि जिहि देवहि जैसे। भाग चाहिए दीन्हें तैसे ॥ ह्वै प्रतच्च भगवान सु आए। तब प्रीति नृपकीसों छाए ॥ आपुहि ग्रहण भागको कीन्हों। और द्विजनको दर-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शन दीन्हों ॥ सुर गुरु यदि वृत्तान्तहि जाने । भरे क्रोधसों परम महाने ॥ तब व्योम में भुवहि चलायो । आंखिन में आंसू भरि आयो ॥ तदनु उपरिचरसों इमि बानी । बोलतभे सुर गुरु अभिमानी ॥

दोहा

होय हमारे सामुहे लेब उचित है भाग । नारायण भगवान को सुनहु भूप बड़ भाग ॥

चरणाकुलकछन्द ॥ युधिष्ठिरउ बाच ॥

और देव गुरुसों है जैसे । भाग लह्यौ हरिक्यौं नहिं तैसे ॥ भीष्मउवाच ॥ पाण्डव तदनु उपरिचर राजा । नम्र समेत सदश्य समाजा ॥ भए प्रसन्न करावत ज्ञानी । गुरुको ऐसी कहिके बानी ॥ यह सतयुग है याके माहीं । करिबो क्रोध उचित है नाहीं ॥ जाहि भाग दीन्हों सह रागै । नीको ताहि क्रोध नहिं लागै ॥ है प्रसन्न देखत हैं जाको । दरशन देत बिष्णु हैं ताको ॥ हम तुम देखि सकैंगे नाहीं । यह हम सत्य कहत सब पाहीं ॥ तदनु सु एकत द्वित बित ज्ञानी । तिनहि सप्त ऋषि ऐसे बानी ॥ कहत भए सुर गुरुके सांहे । है करिकै अतिही ननि चोहे ॥ हम मानस सुत ब्रह्मा केरे । गुणिके अयसकाज घनेरे ॥ पावनउत्तर दिशिको जाते । एक समय ते भए बिभाते ॥ रत्न शानु के उत्तर भारे । क्षीर सिन्धु के स्वच्छ किनारे ॥ अतिहि महत धीरज सों ज्वैके । सहस वर्ष लौं ठाढ़े ह्वैके ॥ उत्तमतपहि भए हम करते । चलता मेन भए मन धरते ॥ नारायण कों कैसे देखैं । यह इच्छा मन में अवरेखैं ॥ पूर्ण तपस्या भई तुम्हारी । इमि हरि वाणी भई सुढारी ॥ तुम सु तपस्या कीन्हीं आछी । मनकी चञ्चलता करि पाछी ॥ प्रभु को देखन को है चाहौ । पै देखोगे किमि अवगाहौ ॥ क्षीर सिन्धु के उत्तर नीको । श्वेतद्वीप महा है श्रीको ॥ नारायण के भक्त सुढारे । चन्द्र समान सुबर्च सवारे ॥ एक बिष्णुही कों ते जानैं । और न को हृ में मन आनैं ॥ निराहारते रहत सदाहीं । बिषयन चाहैं इन्द्रिय पाहीं ॥

दोहा ॥

पुरुषोत्तम को होत है प्राप्त तौन मति मान । उत्तम श्वेतद्वीप में यातें सुनो सुजान ॥ जावो तुम सब तच बर लहिहौ दर्श हमार । तहंहीं होत प्रतक्ष है मेरो रूप सुढार ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

हम सब तिहि बाणी को सुनिकै । है अनमेष ताहि हिय गुणिकै ॥ भए सु श्वेतद्वीपकों जाते । अतिही आनंद पाय बिभाते । पहुंचे श्वेतद्वीपके माहीं । हमकों देखि पस्यौ कछु नाहीं ॥ ताके तेजसों अति भारी । मन्द ह्वै गई नजर हमारी ॥ दरशन पुरुषकों न भो याते । नारायण की तदनु छपाते ॥ प्रापत होत भए हमज्ञानै । बिना उग्र तप परम महानै ॥ नारायणकों कोऊ नाहीं । देखत यह बिचारि मन माहीं ॥ फिरि शत वर्ष कियो तप हम जब । देखि परे तिहिके वासी तब ॥ भरी प्रकाश चन्द्र सम शोभा । तिनकी नित्य रहतहै लोभा ॥ जपमें बर गायची वारे । विधि सों तीथिरिता सों भारे ॥ घिरिता सों उज्जल मन वारी । भए प्रसन्न बिष्णु अघहारी ॥ तब सु एक एक सुनि वारी । महा प्रलय के रबि सम भारी ॥ अतिही उग्र कान्ति हम देखी । तब हम जियमें यह अवरेखी ॥ है यह द्वीप धाम तेजश को । अरु तिमही अति उज्जल यशको ॥ हैं सब जन समता सों पूरे । न्यूनाधिक्य नहीं हैं मूरे ॥ एक समय में तहं हम दीसी । उठती प्रभा सहस रबि कीसी ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताको देखि तहां के बासी। भरे सु आनंद तासों खासी ॥ नमस्कार करि तिहि दिशि दौरे। जिहि दिशि उठी पानि कों जोरे ॥ उग्रा उठी प्रभाहो जाकी। करत भए ते पूजा ताकी ॥ ताके तेजससों अति भारे। मन्द ह्वै गए नैन हमारे ॥ यातें देखि पस्यो कछुनाहीं। और विचार भयो मनमाहीं ॥

दोहा ॥

तदनन्तर हे माहपुरुष हे नित्य पुण्डरी काक्ष। हृषी केश हे नमस्कार है तुमकों नाथ महाक्ष ॥
यहै एक सुनते भए तच ध्यान अभिराम। हम सब हैं सुर गुरु सुनो वाचस्पति मतिधाम ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

इतनेहो में सौरभ पूरो। चलत सदा गति मो अति रूरो॥ जिहिं जिहिं कर्ममाहिं वर जेते। औषधि खच्च चाहिये तेते ॥ तहां सु तौनसदा गति ल्यायो। तिनहो पुष्पसमूह सुहायो ॥ नमो नम: यह बोले बानी। जैसेहो सुमधुरता सानी ॥ तैसेहि तच प्रगट ह्वै आए। श्री भगवान कृपा सों छाए ॥ हम तिनकी मायासों मोहे। याते तिन्हें नहीं हम जोहे ॥ चितमें चिन्ता भूरि हमारे। होति भई प्रभु बिना निहारे ॥ कोहैं ए कितते इत आए। इमि हमकों मनमें कुछ न लाए ॥ लखिकै श्वेत द्वीप के बासी। भरे परम परभासों खासी ॥ ब्रह्म भावमें ते हे पागे। यातें हमसों नहिं अनुरागे ॥ हमसों तदनु आपही बोले। विष्णु महान कृपा जो शोले ॥ देवउवाच ॥ श्वेत द्वीप बासी तुम देखे। विषय विवर्जित आनंद भेखे ॥ है इन केरो दरशन जोई। परमेश्वर को जानहु सोई ॥ अब तुम अचिर इहां ते जावो। और नहीं मनमें कछु लावो ॥ कबहुं अभक्तन कों एक बेरो। होत नहीं दरशन प्रभु केरो ॥ बिन दरशन कीन्हे हम कैसे। जांय इहांतें जो कछु ऐसे ॥ होत न दरश कालमें योरे। जानो अन्नत बचन मति मोरे ॥ महत काज करनो है आगे। चेता माहिं तुम्हें रति पागे ॥ देव कार्य्य की सिधि कौ लोने। परि है तुम्हें सहायक होने ॥ सुनिकै एवर बैन सुहाए। हम अपने सुधाम को आए ॥

दोहा ॥

सके न हम तप सादिसों परमेश्वर कोदेखि। तुम कैसे लखिहौ तिन्हें आनो तुम अवरेखि ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

सर्बो परि परमेश्वर स्वामी। आदि अन्त सों रहित सु नामी ॥ ऐसे वज्र विधिसों समुझाए। गए बृहस्पति मतिसों छाए ॥ सबिधि यज्ञ वर पूरण कीन्हों। परमेश्वरहि पूजि सुद लीन्हों ॥ पूरण भए यज्ञ वर राजा। बिज्ञ उपरि चर वसु शुभ साजा ॥ करतो भयो प्रजा को पालन। सहित विवेक नीति की चालन ॥ विधिको शाप पाय हों आयो। दिवितें भुव मण्डल कों गायो ॥ पैठत भो सो नृप धरणी में। सौरभ गस्यतो वरणी में ॥ नारायणमें तत्पर ह्वैकै। जपतो भयो भक्तिसों ज्वैकै ॥ ताते फेरि परम गति पाई। विधिके निकट गयो नरराई ॥ तदनु सुक्ति तिहि लही सुटारी। तिहिते अन्यन पद सुखकारी ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ब्रह्मलोकते क्योंसो राजा। गिरो धसो मांहिमें किहि काजा ॥ भीष्मउवाच ॥ एक इतिहास कहत प्राचीना। इह सु प्रश्नमें भूप प्रवीना ॥ ऋषि यो सुरगण को तिहि माहीं। है सम्वाद सुनो मम पाहीं ॥ ऐसे सुरण कह्यो ऋषि गणसों। कीजै मख सविधान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शन दीन्हों ॥ सुर गुरु यदि वृत्तान्तहि जाने । भरे क्रोधसों परम महाने ॥ तब व्योम में भुवहि चलायो । आंखिन में आंसू भरि आयो ॥ तदनु उपरिचरसों इमि बानी । बोलतभे सुर गुरु अभिमानी ॥

दोहा

होय हमारे सामुहे लेब उचित है भाग । नारायण भगवान को सुनहु भूप बड़ भाग ॥

चरणाकुलकछन्द ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥

और देव गुरुसों है जैसे । भाग लह्यौ हरिक्यौं नहिं तैसे ॥ भीष्मउवाच ॥ पाण्डव तदनु उपरिचर राजा । नम्र समेत सदश्य समाजा ॥ भए प्रसन्न करावत ज्ञानी । गुरुको ऐसी कहिके बानी ॥ यह सतयुग है याके माहीं । करिबो क्रोध उचित है नाहीं ॥ जाहि भाग दीन्हों सह रागै । नीको ताहि क्रोध नहिं लागै ॥ ह्वै प्रसन्न देखत हैं जाको । दरशन देत विष्णु हैं ताको ॥ हम तुम देखि सकैंगे नाहीं । यह हम सत्य कहत सब पाहीं ॥ तदनु सु एकत द्वित बित ज्ञानी । तिनहि सप्त ऋषि ऐसे बानी ॥ कहत भए सुर गुरुके सांहे । ह्वै करिकै अतिही ननि चाहे ॥ हम मानस सुत ब्रह्मा केरे । गुणिके श्रेयसकाज घनेरे ॥ पावनउत्तर दिशिको जाते । एक समय ते भए बिभाते ॥ रत्न शानु के उत्तर भारे । क्षीर सिन्धु के स्वच्छ किनारे ॥ अतिहि महत धीरज सों ज्वैके । सहस वर्ष लों ठाढ़े ह्वैके ॥ उत्तमतपहि भए हम करते । चलता मेन भए मन धरते ॥ नारायण कों कैसे देखैं । यह इच्छा मन में अवरेखैं ॥ पूर्ण तपस्या भई तुम्हारी । इमि हरि बाणी भई सुढारी ॥ तुम सु तपस्या कीन्हीं आछी । मनकी चञ्चलता करि पाछी ॥ प्रभु को देखन को है चाहौ । पै देखोगे किमि अवगाहौ ॥ क्षीर सिन्धु के उत्तर नीको । श्वेतद्वीप महा है श्रीको ॥ नारायण के भक्त सुढारे । चन्द्र समान सुबर्च सवारे ॥ एक विष्णुही कों ते जानैं । और न को हृ में मन आनैं ॥ निराहारते रहत सदाहीं । बिषयन चाहैं इन्द्रिय पाहीं ॥

दोहा ॥

पुरुषोत्तम को होत है प्राप्त तौन मति मान । उत्तम श्वेतद्वीप में यातें सुनो सुजान ॥ जावो तुम सब तब बर लहिहौ दर्श हमार । तहंहीं होत प्रतक्ष है मेरो रूप सुढार ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

हम सब तिहि बाणी को सुनिकै । ह्वै अनमेष ताहि हिय गुणिकै ॥ भए सु श्वेतद्वीपकों जाते । अतिही आनंद पाय बिभाते । पहुंचे श्वेतद्वीपके माहीं । हमकों देखि पस्यौ कछु नाहीं ॥ ताके तेजसों अति भारी । मन्द ह्वै गई नजर हमारी ॥ दरशन पुरुषकों न भो याते । नारायण की तदनु छपाते ॥ प्रापत होत भए हम ज्ञानै । बिना उग्र तप परम महानै ॥ नारायणकों कोऊ नाहीं । देखत यह विचारि मन माहीं ॥ फिरि शत बर्ष कियो तप हम जब । देखि परे तिहिके वासी तब ॥ भरी प्रकाश चन्द्र सम शोभा । तिनकी नित्य रहतहै लोभा ॥ जपमें बर गायत्री वारे । विधि सों तीथिरिता सों भारे ॥ घिरिता सों उज्जल मन वारी । भए प्रसन्न विष्णु अघहारी ॥ तब सु एक एक सुनि बारी । महा प्रलय के रबि सम भारी ॥ अतिही उग्र कान्ति हम देखी । तब हम जियमें यह अवरेखी ॥ है यह द्वीप धाम तेजश को । अरु तिमही अति उज्जल यशको ॥ हैं सब जन समता सों पूरे । न्यूनाधिक्य नहीं हैं मूरे ॥ एक समय में तहं हम दीसी । उठती प्रभा सहस रबि कीसी ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताको देखि तहां के बासी। भरे सु आनंद तासों खासी ॥ नमस्कार करि तिहि दिशि दौरे। जिहि दिशि उठी पानि कों जोरे ॥ उग्रा उठी प्रभाहो जाकी। करत भए ते पूजा ताकी ॥ ताके तेजससों अति भारे। मन्द ह्वै गए नैन हमारे ॥ यातें देखि पस्यो कछुनाहीं। और विचार भयो मनमाहीं ॥

दोहा ॥

तदनन्तर हे माहपुरुष हे नित्य पुराहरी काच। हृषी केश हे नमस्कार है तुमकों नाथ महाच ॥
यहै एक सुनते भए तच ध्यान अभिराम। हम सब हैं सुर गुरु सुनो वाचस्पति मतिधाम ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

इतनेहो में सौरभ पूरो। चलत सदा गति भो अति रूरो॥ जिहिं जिहिं कर्ममाहिं वर जेते। औषधि खच्च चाहिये तेते ॥ तहां सु तौनसदा गति ल्यायो। तिमही पुष्पसमूह सुहायो ॥ नमो नम: यह बोले बानी। जैसेही सुमधुरता सानी ॥ तैसेहि तच प्रगट ह्वै आए। यों भगवान कृपा सों छाए ॥ हम तिनकी मायासों मोहे। याते तिन्हें नहीं हम जोहे ॥ चितमें चिन्ता भूरि हमारे। होति भई प्रभु विना निहारे ॥ कोहैं ए कितते इत आए। इमि हमकों मनमें कछु न लाए ॥ लखिकै श्वेत द्वीप के वासी। भरे परम परभासों खासी ॥ ब्रह्म भावमें ते हे पागे। यातें हमसों नहिं अनुरागे ॥ हमसों तदनु आपही बोले। विष्णु महान कृपा जो घोले ॥ देवउवाच ॥ श्वेत द्वीप बासी तुम देखे। विषय विवर्जित आनंद भेखे ॥ है इन केरो दरशन जोई। परमेश्वर को जानहु सोई ॥ अब तुम अचिर इहां ते जावो। और नहीं मनमें कछु लावो ॥ कबहुं अभक्तन कों एक वेरो। होत नहीं दरशन प्रभु केरो ॥ बिन दरशन कीन्हे हम कैसे। जांय इहांतें जो कछु ऐसे ॥ होत न दरश कालमें योरे। जानो अनृत वचन मति मोरे ॥ महत काज करनो है आगे। त्रेता माहिं तुम्हे रति पागे ॥ देव कार्य्य की सिधि कौ लोने। परि है तुम्हें सहायक होने ॥ सुनिकै एवर बैन सुहाए। हम अपने सुधाम को आए ॥

दोहा ॥

सके न हम तप सादि सों परमेश्वर कोदेखि। तुम कैसे लखिहौ तिन्हें आनो तुम अवरेखि ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

सर्वो परि परमेश्वर स्वामी। आदि अन्त सों रहित सु नामी ॥ ऐसे वहु विधिसों समुझाए। गए वृहस्पति मतिसों छाए ॥ सविधि यज्ञ वर पूरण कीन्हों। परमेश्वरहि पूजि मुद लीन्हों ॥ पूरण भए यज्ञ वर राजा। विज्ञ उपरि चर बसु शुभ साजा ॥ करतो भयो प्रजा को पालन। सहित विवेक नीति की चालन ॥ विधिको शाप पाय हों आयो। दिवितें भुव मण्डल कों गायो ॥ पैठत भो सो नृप धरणी में। सौरभ मस्यवतो वरणी में ॥ नारायणमें तत्पर ह्वैकै। जपतो भयो भक्तिसों ज्यैकै ॥ ताते फेरि परम गति पाई। विधिके निकट गयो नरराई ॥ तदनु सुक्ति तिहि लही सुढारी। तिहिते अन्यन पद सुखकारी ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ब्रह्मलोकते क्योंसो राजा। गिरो धसो मांहिमें किहि काजा ॥ भीष्मउवाच ॥ एक इतिहास कहत प्राचीना। इह सु प्रश्नमें भूप प्रवीना ॥ ऋषि औ सुरगण को तिहि माहीं। है सम्वाद सुनो सम पाहीं ॥ ऐसे सुरण कह्यो ऋषि गणसों। कीजे मख सविधान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगणसों ॥ ऋषयऊचु: ॥ अज संज्ञा बीजहुको जानो । छागहि को अज तुम मतिमानो ॥ हिंसा मख साधुनको नाहीं । करिबो उचित गुणो मन माहीं ॥

दोहा ॥

यह शतयुग यहिमाहिंनृप हिंसामखकिमिहोय । यह अहिंसयुग नित्यहै जानत हैं बुधलोय ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

देवनसों ऐसी वरवानी । कहत हुते ऋषि बहु बिज्ञानी ॥ ताही समय उपरिचर नामा । आयो तहां भूप गुण धामा ॥ कहुंते व्योम मार्ग में ह्वैकै । कीन्हें बहु मख तिहि मुद ज्वैकै ॥ ताहि देखि ऐसे सब बोले । हरि है यह संदेह अतोले ॥ तदनु जाय सुरऋषि गण आगे । आदर करि नृपको अनुरागे ॥ तिहिको पूछत भे ते ऐसे । यहि युग माहिं होत मख कैसे ॥ बीजनसो कीहो तप सुन सों । कहहु भूप तुम युत बहुगुणसों ॥ यह सुनि भूप जोरिकै पानी । कहत भयो तुम सब बरज्ञानी ॥ तुम्हैं कौन मख लागत नीको । कहिए मत तुम निज निज हीको ॥ ऋषयऊचु: ॥ पशु सुयज्ञ मतमें सुरबारे । बीज यज्ञ मत माहिं हमारे ॥ है इतको तौ नृप मत ऐसो । अवगुणि कहौ होय तव जैसो ॥ भीष्मउवाच ॥ पक्ष राखि बैठे उन केरो । कह्यो देखि दिशि ऋषिगण केरी ॥ छागहि सों मत कीजै विधिसों । यह मैं जानत सुमति बुद्धिसों ॥ बोले तासों ऋषिगण ऐसे । महा क्रोध अरि अरिसों जैसे ॥

दोहा ॥

होहु भ्रष्टतब स्वर्गते तेरी गति अब तैन । नभ में कबहु होहु मति हेतू दुर्मति ऐन ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

पैठि जायगो तू महि माहीं । महा अधम तू सत नृप नाहीं ॥ सुनतहि शाप ऋषिनते ऐसो । भयो बिबर बसुधा में तैसो ॥ प्रभु प्रसाद ते अहि अनकूलो । महि गत भो पै सुधि नहिं भूलो ॥ सुमनस शाप छुटनकी विधिको । भए बिचारत सकल सु सिधिको ॥ हेतु हमारे येहि नृप पायो । शाप ऋषिनसों अति दुखछायो ॥ तदनु सुरन यह बैन उचारो । प्रभु मेटो यह शाप तिहारो ॥ ब्राह्मण मान्य सदा जगमाहीं । तिनको शाप मिटैगो नाहीं ॥ जबलौ तूमहि माहीं रहिहै । तबलौ मख हुत धारा लहिहै ॥ तृप्त रहैगो नितिही तासों । बिकल न ह्वै है तृषा क्षुधासों ॥ कछू काल में तोको ईश्वर । देहै ब्रह्मलोक धरणी श्वर ॥ यह बर दै सुर दिवहि सिधारे । ऋषिनहु लीन्हे पथ गह वारे ॥ तदनु उपरिचर बसु सो राजा । प्रभुको नाम जानि सुख साजा ॥ भयो जपत धरि भक्ति महानी । मान्य बिप्र है यह हिय आनी ॥ ह्वै प्रसन्न प्रभु तास भगतिसों । ऐसे कहत भए खगपतिसों ॥ भूप उपरिचरबसु लहि शापै । ऋषि वृन्दनको करि सहदापै ॥ प्राप्त भयो है सो महिमाहो । करौ ऊर्द्धगति प्रापति ताहो ॥ ऐसे बचन स्वप्रभुके सुनिकै । पक्षणको फरकाय सुधुनिकै ॥ पैठि भूमिमें भूपहि लैकै । दयो छोड़ि नभमें सुद भैकै ॥

सोरठा ॥

तहं ते तदनु नृपाल ब्रह्मलोक को प्राप्तभो । देह सहित छबि जाल महा मोदको धारिकै ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे एकशताधिकविंशतितमोऽध्याय: ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

बिप्र शाप ते तिहि नृपति दुर्गति लही अनूप । प्रभु सुकृपा ते ऊर्द्ध गति फिरि तिहि पाई भूप ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

श्वेतद्वीपको प्राप्त ह्वै नारदमुनि तपधाम । तहंके वासिन को भए देखत अति अभिराम ॥
नारद तिनकी करत भे पूजा सहित विधान । नारदकी मनसों करी पूजा तिनहुं सुजान ॥
समदम साधन करि तहां नारायण को तब । स्तवन करत भे सविधि सुनिगति जिनकीसरबच ॥

नारदउवाच ॥

नमस्ते देव १ देवेश २ निष्क्रिय ३ निर्गुण ४ लोकसाक्षिन ५ क्षेत्रज्ञ ६ अनन्त ७ पुरुष ८ महापुरुष ९ पुरुषोत्तम १० त्रिगुण ११ प्रधान १२ अमृत १३ अमृताख्य १४ व्योम १५ सनातन १६ सदसत् १७ व्यक्ताव्यक्त १८ शतधामन् १९ आदिदेव २० वसुप्रद २१ प्रजापते२२सुप्रजापते२३वनस्पते२४महाप्रजापते२५उर्जस्पते२६वाचस्पते२७जगत्पते २८मनस्पते २९ दिवस्पते ३० मरुत्पते ३१ सलिलपते ३२ पृथिवीपते ३३ दिक्पते ३४ पूर्वनिवास ३५ गुह्य ३६ ब्रह्मपुरोहित ३७ महाराजिक ३८ चातुर्महाराजिक ३९ आभासुर ४० महाभासुर ४१ सत्यसदाभाग ४२ जाम्य ४३ महाजाम्य ४४ संज्ञासंज्ञ ४५ तुषित ४६ महातुषित ४७ प्रमर्दन ४८ परिनिर्मित ४९ अपरिनिन्दित ५० अपरिमित ५१ अवशवर्तिन ५२ यज्ञ ५३ महायज्ञ ५४ यज्ञसम्भव ५५ यज्ञयोने ५६ यज्ञगर्भ ५७ यज्ञहृदय ५८ यज्ञकृत ५९ यज्ञभाग हर ६० पञ्चयज्ञधर ६१ पञ्चकालतकृतपते ६२ पञ्चराज ६३ वैकुंठ ६४ अपराजित ६५ मानसिक ६६ नामनामिक ६७ परस्वामिन ६८ सुस्नात ६९ हंस ७० परमहंस ७१ महांहंस ७२ परमयाज्ञिक ७३ सांख्ययोग ७४ सांख्यमूर्ते ७५ अमृतेशय ७६ हिरण्यशय ७७ देवेशय ७८ कुशेशय ७९ ब्रह्मेशय ८० पद्मेशय ८१ सर्वेश्वर ८२ विष्वक्सेन ८३ त्वज्जगदन्वय ८४ त्वज्जगत्प्रकृति: ८५ त्वमसिराज्यं ८६ बडवामुखाग्नि: ८७ त्वमाहुति: ८८ त्वंसारथि: ८९ त्वदिङ्मुखि: ९० त्वम्वषट्कार: ९१ त्वमोङ्कार: ९२ त्वंमन: ९३ त्वंचन्द्रमा ९४ त्वंचतुराज्यं ९५ त्वंदिशांगज: ९६ हयशिर९७प्रथमत्रिशौपर्णवर्णधर: ९८ पंचाग्नि ९९ त्रिणानितेक १०० षडंगविधान १०१ प्राग्ज्योतिष १०२ ज्येष्ठामग १०३ मासिकव्रतधर १०४ अथर्वशिर १०५ पंचमहाकल्प १०६ फेणपाचार्य १०७ बालखिल्य १०८ वैखानश १०९ अभग्नयोग ११० अभग्नपरिसंख्यान १११ युगादे ११२ युगमध्य ११३ युगनिधन ११४ आखण्डल ११५ प्राचीनगर्भ ११६ कौशिक ११७ प्रस्तुत ११८ पुरुहूत ११९ विश्वकृत १२० विश्वरूप १२१ अनन्तगते १२२ अनन्तभोग १२३ अनन्त १२४ अवध्य १२५ अव्यक्तमध्य १२६ अव्यक्तनिधन १२७ व्रतावास १२८ समुद्राधिवास १२९ यशोवास १३० तपोवास १३१ सदम्पावास १३२ विद्यावास १३३ कीर्त्यावास १३४ श्रीनिवास १३५ सर्ववास १३६ वासुदेव १३७ सर्वछन्दक १३८ हरिहय १३९ हरिमेध्य १४० महायज्ञभागहर १४१ वरप्रद १४२ सुखप्रद १४३ धनप्रद १४४ हरिमेध्य १४५ यम १४६ नियम १४७ महानियम १४८ कृच्छ १४९ अतिकृच्छ १५० महाकृच्छ १५१ सर्वकृच्छ १५२ नियमधर १५३ निवर्त्तभ्रम १५४ प्रवचनग १५५ पृथिगर्भ १५६ प्रकृत १५७ प्रकृतवेदक्रिय १५८ अज १५९ सर्वमते १६० सर्वदर्शिन १६१ अग्राह्य १६२ अचल १६३ पवित्र १६४ महापवित्र १६५ हिरण्मय १६६ बृहत् १६७ अप्रतर्क्य १६८ अविज्ञेय १६९ ब्रह्माग्रज १७० प्रजासर्गकर १७१ प्रजानिधन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर १७२ महामायाधर १७३ चिचशिखण्डिन १७४ बरप्रद १७५ पुरोडासभागहर १७६ गतखर १७७ छिन्नकृष्ण १७८ छिन्नसंशय १७९ सर्वतोमुख १८० निष्टतरूप १८१ ब्राह्मण प्रिय १८२ विश्वमूर्ते १८३ महामूर्ते १८४ बान्धव १८५ भक्तवत्सल १८६ ब्रह्मण्य १८७ ॥

दोहा ॥

नारद कृतयहस्तव सुनि होय प्रसन्न रमेश। दरशन श्री प्रभु देतभे धरिके रूप विसेश ॥ शीश चक्षु अरु उदर पद धारण किये अनेक। जपत प्रणव बेदहि पढ़त तेजो मय सविबेक ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

नारद प्रभु को दरशन करिके। नमस्कार कीन्हों मुद धरिके ॥ नारद सों प्रभु ऐसी बानी। कहत भए मधुराई सानी ॥ एकत द्वित चित ऋषि मुद छाए। एक समय में इत है आए ॥ तिनहूं को न दरश भो मेरो। बिना भक्ति के भाव घनेरो ॥ मम पद में मन रहत तिहारो। याते दरशन भयो हमारो ॥ यह सु द्वीप के बासी जेहैं। मेरेही बपु जानो तेहैं ॥ मनमें इन्हें हमेशे ध्यावऊ। बहु बिधि इनके गुण को गावऊ ॥ इच्छा होय जौन बर मागो। हौं प्रसन्न आनंद सों पागो ॥ नारदउवाच ॥ समदम साधनादिको आछो। आजुहि भो फल दुख भो पाछो ॥ और कहा बर तब दरशन सम। ताहि नाथ गुणि अब मागैं हम ॥ तदनु कहत भे इमि जगनायक। श्रीपरमेश्वर आनद दायक ॥ इन्द्रिय रोक मोहिं जे ध्यावै। तिनके निकट विघन नहिं आवै ॥ अब तुम जाऊ इहां ते नारद। मो सु भक्त तुम परम बिशारद ॥ भीष्मउवाच ॥ अव्यय अच्युत निति बर नामी। सोई कृष्ण जानु जग स्वामी ॥ और न कोऊ इनके आगे। यह निश्चय धारऊ अनुरागे ॥ नारायणउवाच ॥ मैं माया विरची तू याते। मोहिं लखत तनु लखतो नाते ॥ नारद यह मन में न बिचारो। मैं माधव को रूप निहारो ॥

दोहा ॥

मोहीते ब्रह्मा भए रचत चराचर जौन। मम ललाटके क्रोधहे भए चन्द्र तप मौन ॥ दक्षिण पारश्वसे रहतहू मेरे अरु बाम। पार्श्व माहिं आदित्य है द्वादश रहत सधाम ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

अष्ट सुबसु रहत निति आगे। पीछे रहत दश्वसुद पागे ॥ सर्व प्रजापति सप्त सुमुनि बर। वेद सर्व अरु यज्ञ सुमुद कर ॥ औषधि तप यम नियम सु जेते। मेरे निकट देखु सब तेते ॥ अष्टसिद्धि मेरे तट देखो। बेद मात गायत्री पेखो ॥ रमासु बानीकी रतिनीकी। मेरे रहत सदाहि न जीकी ॥ सरिता सर अरु सिन्धु सुढारे। चारि पितरगण निकट हमारे ॥ हमहि पिता सुरदेवन केरे। मोहि गुणत है सुमुनि बड़ेरे ॥ मम बिरधो ब्रह्मा सो मेरी। पूजा कीन्हीं सबिधि घनेरी ॥ ह्वै प्रसन्न मैं ए बर दीन्हें। ताके भक्ति भावकों चीन्हें ॥ कल्प आदिमे मो सुत ह्वै है। लोकाध्यक्ष होय मुद बैहै ॥ तब कृत मर्यादामे चरिकै। सबहि बताश उलंगन करिकै ॥ बर लहिबेकी इच्छा जिनको। ह्वै है तुम बरदै है तिनको ॥ सुर अरु असुर पितर ऋषि जेते। तब उपासना करिहैं तेते ॥ सुरकाजै अवतार धरैंगे। हम जब तिनमें दुःख परैंगे ॥ यह बरबर ब्रह्मा को दैकै। रहते भए निष्टत हम ह्वैकै ॥ सर्व धर्मते पर अति जानो। निष्टतिहि औरनहीं अनुमानो ॥ निष्टत भए ते आनद सेती। रहत न लहत खेदता जेती ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

निवृति मांहि तत्पर भए बर आचार्य अनेक । करत प्रशंसा कपिलकी गुणत ताहि सविबेक ॥
प्राप्त निवृतिकों होयकै ह्वैकै मूर्ति अमान । यहि उत्तर दिशिमें रहत नारद सुऋषि सुजान ॥
योग शास्त्रमें योगसों प्राप्त होनकी जौन । गति सो मैंही हौं परम नारदमुनि तपभौन ॥
सहस चौकड़ीके उतै चराचरहि करि लीन । आत्मा में मैं रहोंगो एका को सुप्रबीन ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

फिरि मायासों रचिहौं जगतै । विषयीगण जामें है पगतै ॥ जो अनिरुद्ध नाम है मेरो । मूरति नाभि तेसु तिहि केरो ॥ होत कमल है ब्रह्मा ताते । होत भूत सब भाषत भाते ॥ रबि जिमि उदय अस्तको पावै । जानो तिमहि जगतके भावै ॥ मैं बराहको रूप धरौंगो । जलते भू उद्धार करौंगो ॥ हिरण्याक्षको बधिकै बलसों । देवहि भरिहों मोद अचलसों ॥ धरि नृसिंह बपुहिरण्य कसिपुहि । हरिहौं देव तनके रिपुहि ॥ बलि सुबिरोचनको सुत ह्वैहै । छीनि राज्य सुरपति सुख गैहै ॥ अदिति मांहि कश्यपसो ह्वैकै । मैं छलि ताहि मोदसों भैकै ॥ राज्यलेय सुरपति को दैहौं । वाकों मैं पाताल पठैहौं ॥ परशुराम ह्वैकै त्रेतामें । हरिहौं क्षत्रिन अरि जेता में ॥ त्रेतायुग अरु युगद्वापरु की । सन्धि मांहि हनिबे सुरपर की ॥ फिरि मैं जो दशरथ सुत ह्वैहौं । भालु कीश गणको संग लेहौं ॥ सह सेना रावण को हनिहौं । लोक लोक में निज यश तनिहौं ॥ द्वापर कलिकी सन्धी मांही । करिबे काज कंसकी नाहीं ॥ मथुरा में अवतार धरौंगो । दानवन के जूह दरौंगो ॥ द्वारावति में बास करौंगो । नरका सुरके प्राण हरौंगो । तिमिही सुर पीठहि मारौंगे । देवन के दुखको टारौंगो ॥

दोहा ॥

प्राग्ज्यौतिष पुरसों सुधन लै दानव गण भूरि । हतिकै द्वारावती में सोधन दैहौं पूरि ॥
बलिसुत बाणासुरहि मैं हतिहौं करि संग्राम । तदनु शोभबासीन को हतिहौं बलके धाम ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

काल यवन ह्वैहै रण वाको । ह्वै है मोहीं सों बध ताको ॥ जरासन्धनृप गण बस करिहै । सोऊ मो मतिही सों मरि है ॥ शिशुपालहि हनिहौं मख मांही । धर्म नृपति के नृप गण पाहीं ॥ अर्जुन एक सहाई ह्वैहै । मेरो सो भुव में यश गैहै ॥ धर्म नृपहि वज्र भ्रातन थीके । थपिहौं फेरि राज्य अपनीके ॥ पार्थहि हमहिं कहेंगे ऐसे । जन इनसों जय लहि हैं कैसे ॥ नरनारायण बरु ऋषि एहैं । लोकन में इनके सम केहैं ॥ दुष्ट क्षत्रियन कों ए नाशै । अर्थ साधुके सुयश प्रकाशै ॥ हरिके भार भरि बसुधा को । जादव सहित द्वारिका ताको ॥ करिहौं घोर प्रलय मैं नारद । कह्यौ तुम्हैं गुण भक्त बिशारद ॥ हंस कूर्म अरु मत्स्य सु भावन । अरु बराह नृसिंह सुबावन ॥ अरु भृगु राम राम दशरथ सुत । बासुदेव कल्की वज्र गुण युत ॥ ए दश हैं अवतार हमारे । भक्तन के भय भंजन वारे । लहि अवतार कार्य को करिकै । रहत फेरि पूरब गति धरिकै ॥ दर्शन भयो तोहि मम जैसे । ब्रह्माकोऊ भयो नहिं तैसे ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

इमि कहि नारद को सुप्रभु परमेश्वर भगवान । नारदके देखत भए तहहीं अन्तर ध्यान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदरी आश्रम को गए नारदहू सानंद। भगवत कथिता कथामें मन लगाय निर्द्वंद ॥

चण्डाकुलक छन्द ॥

जाय सु ऋषि नारद ब्रह्मासों। कही कथा यह मोद महासों ॥ सिद्ध गणन सों कही बिधाता। सिद्धन सोय कथा अवदाता ॥ कही भानुसों हर्षित ह्वैकै। भानु कही बहु सुदसों भैकै ॥ साठि सहस्र बाल्य खिल्यनकों। बाल्य खिल्य करि मोदित मनकों ॥ कही सुरन सों सुरन सुठानी। कही पितर गणसों सुखसानी ॥ कही सु पितरन सो सु पितासों। मोसों तिन यह मधुर सुधासों ॥ मैं तुमसों यह कही सुढारी। हरि की कथा महा सुख कारी ॥ जिन जिन कथा सुनी यह नीकी। तेते पूजा करत हरीकी ॥ जोजन भक्त कृष्ण को नाहीं। यह न कथा कहिए तिहि पाहीं ॥ पूरब उपाख्यान मैं जेते। कहे नहीं याकी सम तेते ॥ सिन्धुहि सुमिलि सुरा सुर जैसे। मथिक अमृत निकारौ तैसे ॥ यह इतिहास निकारौ नीके। मथि पुराण सब सुमति घनीके ॥ पढ़िहैं सुनिहैं जोजन याकों। करि मन थिरि तनिकै मेधाकों ॥ श्वेतद्वीप माहिं सो ह्वैकै। प्रापत महा मोदसों भैकै ॥ लीन नित्य नारायण माही। ह्वैहै यामें संशय नाहीं ॥ शुद्ध ज्ञान की इच्छा करिकै। जोजन पढ़िहैं मनको धरिकै ॥ सो बर चारु ज्ञान कों पैहैं। नहिं अज्ञान कबहु नगिचैहैं ॥

बैशम्पायनउवाच डकछा छन्द ॥

सुनिकै यह आख्यान। धर्मराज मतिमान ॥ श्रीहरि मांहि बिभात। तत्पर भए सभात ॥

सूतउवाच दोहा ॥

बैशम्पायन सों सुने यह इतिहास अनूप। सबिधि हरिहि पूजत भयो जनमेजय बर भूप ॥
फिरि मुनिसोंऐसेकह्यो परमेश्वरकेनाम। फेरि कहौ तुम प्रीतिसों सहनिरुक्तिअभिराम ॥

बैशम्पायनउवाच ॥

अर्जुनसों जिननामबर सहबिरुक्तिजिहिभाय। कहेपूर्बहरि कहतहौं तिमिसुनियेनरराय ॥

अर्जुनउवाच ॥

कहुनिरुक्त निजनामकोंमोकों आयसुरारि। और न कोऊ कहिसकतमतिमहानिबिस्तारि ॥

भगवानउवाच ॥

श्रुति अरु शास्त्र पुराणमें मेरे नाम अनेक। कहे ऋषिन मतिवरमहत तेजोमय सबिबेक ॥
तिनमें कर्म जेहैं किते किते गौण हैं नाम। ते तुम सों मैं कहत हौं धीर पार्थ मतिधाम ॥
नारायण परमातमा बिश्व योनि भगवान। अच्युत अव्यय सगुण हरि निर्गुण आनदबान ॥
इनआदिक बहुनाम हैं करिकैतिनको जाप। पाप रहित जन होत है दूरि होतिचयताप ॥
मोसों अरु हरसों न कछु भेद जानु हे पार्थ। होय रहेहै हम द्विधा एकहि जानु यथार्थ ॥
बर दीबे के योग्य सुनु हमें न कोऊ और। बर लीवेकों हम द्विधा भए सुर शिर मौर ॥
तुम सर्वोपरि प्रभु तुम्हें है बरसों का काम। जोकछु हमि तो कहतहौं तुम्हें अच बलधाम ॥
बरकीहोतीप्रतिकिमिजो हमबर नहिंलेत। द्विधा भए इहि हेतु हम जानो बुद्धि निकेत ॥

बरबै छन्द ॥

नारा नाम सलिल को सो मम ऐन। नारायण मो याते नाम सचैन ॥

तोमर छन्द ॥

सब जीवनमें बास। है मेरो मति रास ॥ बासु देव भो नाम। याते मो अभिराम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

सब जीवन में व्याप्ति है मेरी याते विष्णु । नाम भयो विख्यात है जगत माहिं सुनु कृष्णु ॥
प्रश्न कहावै श्रुति अहत जलते गर्भ स्थान । है मेरे याते भयो पृश्नि गर्भ अभिधान ॥
चित ऋषिकौएकसमयमें एकत द्वित करि क्रोध । हतो गिरायो कूप मैं जैसे महा अबोध ॥
पृश्नि गर्भको और ऋषि कियो जाय सविधान । ताते नष्ट भयो चित निकसों समुदसुजान ॥
पृश्नि गर्भ के नामको जैसो फल अभिराम । सब नामनको जानु तू तै सोई फल साम ॥

बरवैछन्द ॥

गई धरणिमें जानी याते नाम । भो गोविन्द हमारो बर बलधाम ॥

दोहा ॥

भए कर्म संयोगते मेरे नाम अनेक । तिनके उत्तम फलनकों जानत है सविवेक ॥
कही निरुक्ति स्वनामकी मैं तोसों हे पार्थ । कीर्तन किए ऋषिगणके लखिके कर्म यथार्थ ॥
भूमि लोक गो लोक अरु ब्रह्म लोकमें धीर । फिरत रहत हौं पार्थ सुन बहुविधि धारि शरीर ॥
रुद्र चलत हैं समर में तेरे रथ के अग्र । मैं रक्षा हौं करत तुम याते मारि समग्र ॥
बर बैरिनके वृन्दसों पाई जीति अनूप । भो सब कौरुगणनकों रुद्र काल के रूप ॥
तैने मारे रुद्र के मारे सुभट प्रचण्ड । याते रुद्रहि पूजि तू धरिकै भक्ति अखण्ड ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दित नारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे एकशताधिकत्रयोविंशतितमोऽध्याय:

शौनकउवाच दोहा ॥

कह्यौ महत आख्यान ते मोसों सूत सुजान । सो सुनिकै सब मुनिनकों अचरज भयो महान ॥
नारायणकी सुनि कथा जोजनको फल होत । सब तीर्थनके स्नानते सो नहिं करत उद्दोत ॥
दुखसों लखिबे योग्य जो देव ऋषिनसों सर्व । नारद श्वेतद्वीप में सो हरि लख्यो अखर्व ॥
देखि सकत नहिं नारदहू गएहू अनेकन वर्ष । नारायणही करि कृपा दीन्हों अपनो दर्श ॥
बासी श्वेतद्वीपके तास नाम अनिरुद्ध । ऐसे नारायणहि लखि नारद फेरि प्रबुद्ध ॥
नर नारायणको लखत बदरी वनहि पयान । कीन्हों कारण तास तुम हमकों कहौ सुजान ॥

सूतउवाच ॥ रामगीतीछन्द ॥

इमि पितामहके पितामहको भए बूझत भूप । बर यज्ञ यल में प्रज्ञ जन में जय सुधीर अनूप ॥ भगवान श्रीअनिरुद्ध केरे गणत बचनहि तज्ञ । तिन कहा कीन्हों कहौ आगे अहो ऋषिबर प्रज्ञ ॥ अरु किते बासर बसे बदरी बिपिनके अवदात । तुम धन्य मोको कियो यह सुअनन्यकी कहि बात ॥ अति बरविशारद कहे नारदसों कहा तिन बैन । नर औ सु नारायण महात्मा महा आनंद ऐन ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

नारदसों जिमि कहतभेनर नारायण अत्र । तिमि मैं तुमसों कहतहौं सुनिए भूपति अत्र ॥

व्यासउवाच अरिलछन्द ॥

चलिकै श्वेतद्वीप सों नारद । कथा धारि हिय माहिं विशारद ॥ भए सुकञ्चन गिरि पै आवत । तदनु सु नर नारायण भावत ॥ गए परम आनदसों पागत । कीर्तन में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिके अनुरागत ॥ नर नारायण को तहं देखत । भयो आपनो भाग्य सु लेखत ॥ पूजा कीन्ही नर नारायन । नारद की सुप्रेम के भायन ॥ तिन्हें देखि यह भयो बिचारत । नारद सुनि आनंद बिस्तारत ॥

दोहा ॥

जैसे श्वेतद्वीप में देखे हे अभिराम । तैसे ही एहैं महा ते जो मय तप धाम ॥

अरिल छन्द ॥

यह बिचारिकै करि सु प्रदक्षिण । बैठे आसन पर सु बिचक्षण ॥ घृतकी आहुति पाय अग्नि जिमि । शोभित होत भए तिनहूं तिमि ॥ बोलत भे तहं तदनु नरायन ॥ नारद मुनिके प्रीति परायन ॥ देखी इत ए हमरी सूरति । श्वेतद्वीप में तुम बरमूरति ॥ नारदउवाच ॥ देखे श्वेतद्वीपकेभीतर । तुमकौं मैं तुमहीं वासी वर ॥ श्वेतद्वीप बासिहि अवरेवत । तुमकों निरखि तिन्हे हैं देखत ॥

दोहा ॥

तुम बिन तीनो लोक में तेजस्वी को और । कीर्तिमान श्रीमान बर बीर धीर शिर मौर ॥

अरिलछन्द ॥

इन्द्रिय बिन तहंके बासी बर । धरे भक्ति तव अति उत्तम तर ॥ तब अनिरुद्ध नाम जो मूरति । तास हिएमें धरिकै धूरति ॥ सबिधि सुपूजन करत हमेसहि । तासों रहत प्रसन्न बिशेषहि ॥ एक पावसों ह्वै करि ठाढ़े । श्रीअनिरुद्ध गहे पण गाढ़े ॥ उर्द्धबाहु बेदी पर बेदहि । पढ़त सहित अंगन के भेदहि ॥ ब्रह्मादिक सब तिन को पूजत । चरणन के सुस्तव कों कूजत ॥

दोहा ॥

पूजन भक्तन को कियो सोहै शिर सो लेत । ताको प्यारो भक्त सम और न जगत निकेत ॥

जयकरीछन्द ॥

तिन को भेज्यो मैं तव पास । आयो हों धरि मोद प्रकास ॥
रहिहौं अचहि नाय सदैव । अब मोहिं और कामना नैव ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि मोक्षधर्म्मे एकशताधिकचतुर्बिंशतितमोऽध्याय: ॥

नारायणउवाच ॥ दोहा ॥

ब्रह्मातिन्हें न लखि सकै तिनको दरशन कीन । तुम याते ऋषि धन्य हौ नारद परम प्रबीन ॥
तिनको प्यारो भक्त सम दूजो कोऊ नाहिं । तुम सुभक्त याते दयो दरशन तिन ह्वै पाहिं ॥

जयकरीछन्द ॥

श्वेत द्वीप तप केरो थान । तामें महा तेज भगवान ॥ हम बिन ताहि जानौ और । धन्य सु नारद मुनि शिर मौर ॥ सहस सूर्य्य की शोभा तच । श्रीअनिरुद्ध रहत हैं यच ॥ भेउत्पन्न तिनहिं ते सर्ब । जानु येच भूतादि अखर्ब ॥ प्रथम तेज देख्यौ हौ जौन । भक्ति पसारिसु ऋषि तप भौन ॥ ताही ते प्रगटे अनिरुद्ध । ताही ते प्रद्युम्न प्रबुद्ध ॥ सङ्करषण ताही ते जानु । बासुदेव ताही ते मानु ॥ हम उत्पन्न धर्म ते होय । बदरी बन कों उत्तम जोय ॥ करत तपस्या सहित बिधान । नारद मुनि बर बिघ्न महान ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

हम तुमको देखे हुते श्वेतद्वीपके मांहि । जानत हैं सङ्कल्प तब अरु आगम मम पांहि ॥
जानत भूत भविष्य अरु वर्तमान हमविप्र । बदरी बनमें रहत हे होति सिद्धि जहं क्षिप्र ॥
कह्यो जो श्वेतद्वीपमें देव देवसों सर्व । जानत हैं हम मुनि महा तेज सुविज्ञ अखर्व ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

नारायणके बचन सुनि ए नारद अभिराम । नारायणमें होत भे तत्पर गुर गुणधाम ॥
सहित बिधान सुमंत्र जपि करिकै ध्यान सुढार । बदरी बनमें रहत भो निर्जर बर्ष हजार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे एकशताधिक पंचविंशतितमोऽध्याय: ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

नारद कौनहु कालमें देवपितर के कार्य । करतेहुते विधान सहबदरी बनमें आर्य ॥
नारायण लखि कार्य सो कहत भए इमि बैन । नारद तुम कहु कौनकी पूजा करत सचैन ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

है फलको यहि पूजा केरो । करत सबिधि धरि प्रेम घनेरो ॥ नारदउवाच ॥ देव पितर परमेश्वर होहै । पूजत तिनहीको रतिहीहै ॥ यह गुणि देव पितरमें पूजत । सहित बिधान सुनामहि कूजत ॥ प्रथम सुकुशा बिछाय महीमें । तीन पिण्ड दीजै तिनहीमें ॥ तिनमें पूजा पितरन केरो । करत सबिधि धरि प्रीति घनेरो ॥ पितर सुपिण्ड संत्रमै कैसे ॥ कहो नाथ पूरब भे जैसे ॥ नारायणउवाच ॥ एक समैमें नष्ट भईहै । धरणि डूबि पाताल गईहै ॥

दोहा ॥

कियो तासो उद्धार हौ परमेश्वर सु विशेष । सूकर वपुको धारिके तेजश भरो बिशेष ॥
पूर्व जहां धरणी हुती धरि दीन्ही हरि तच । डाढ़ माहिं लागेहुते पिण्डा तिनहिं पवित्र ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

तहां काल मध्यान्ह निहास्यो । पितर कार्य करणो सुबिचास्यो ॥ कुशधरि तिनपै पिण्डा धरिकै । पितर कार्य कीन्हो बिधि करिकै ॥ गरमी भई सुतिनके तनमें । तिलउतपन्न भए तिहि क्षणमें ॥ ते चढ़ाय पिण्डनपै दापी । लोकनमें मर्य्यादा थापी ॥ तदनु करत भे ऐसी बानी । श्रीवाराह रूप सुखदानी ॥ हमहीं पिता बिधाता केहैं । तिनने रचे लोक सब जेहैं ॥ पितर सुकार्य होयगो कैसे । यह बिचार कीन्हों तिन जैसे ॥ तिमही चारु डाढ़ते भाई । तीन पिण्ड कढ़ि थिरता पाई ॥ दक्षिण दिशि ताते तुम जानो ॥ तेई पितर और न अनुमानो ॥

दोहा ॥

मेरे बिरचे कव्यभुक पिण्ड मूर्ति धर पर्म । लोक माहिं ह्वैकै पितर पूजा लहो सुधर्म ॥

चरणा दोहा ॥

पितापितामहअरुप्रपितामहतीनहुंपिण्डनमाहिं । थिरते हमहीहैंजानो तुमयामेंसंशयनाहिं ॥
मोते लोक अधिक नहिं याते पूजौं काहि । को मम पिता सु लोकमें मोते होत सदाहि ॥

अरिल छन्द ॥

मैं हौं पिता पितामह सबकर । ऐसे कहिके सूकर बपुधर ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिण्डदान दै बिधि कौं थापत । भए अदरशन ताको प्रापत ॥

दोहा ॥

पितर पिण्ड संज्ञिक भए तिनके कीन्हे दक्ष । मर्यादा बाराहकी बांधी यह परतक्ष ॥
पितर देव गुरु अतिथिगो द्विजहि सु पूजत जौन । पूजनते परमात्महि जानो तुम बुधि भौन ॥

चरणाकुलक छन्द ॥

नरनारायण की यह बानी । सुनि करिके नारद बिज्ञानी ॥ भगवतकी सुनि कथा ज्ञल-शिकै । बर्ष हजार तहां सो बशिकै ॥ गए हिमालय को ऋषि चायन । लगे करण तप नरनारायन ॥ सुनिके यह बरकथा रशाला । तुमज्ञं पबित्र भए भूपाला ॥ द्वेष करत पर-मेश्वर माहीं । दुज्ञ लोकनमें सो सुखनाहीं ॥ पावत गावत हैं सबज्ञानी । मैं नृप नीकी बिधि सों जानी ॥ ताके पितर नरकमें डूबैं । नानाबिधि लहि दुखसों ऊबैं ॥ ब्यास सु ऋषि बर गुरू हमारे । एसु महामति कहे सुढारे ॥

दोहा ॥

उनसों मैं यह श्रवण करि तुम्हे सुनायो भूप । नारायण तुम ब्यासको जानो प्रज्ञ अनूप ॥
उन बिन भारतको रचै धर्म्म कहैको और । करज्ञ यथा सङ्कल्प तुम यज्ञ भूप शिरमौर ॥

सौतिरुवाच ॥ चरणाकुलक छन्द ॥

पारीक्षित यह कथा श्रवण कै । मनको मखको और गवन कै ॥ मख पूरणकी क्रिया सुढारी । करत भए नृप शुभ मग चारी ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासिरघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कबिनाबिरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्म्मे एकशताधिकषड्बिंशतितमोऽध्याय: ॥

शौनकउवाच ॥ दोहा ॥

यह उत्तम आख्यान हम तुमसों सुन्यो सनेह । हयग्रीवाकी अब कथा कहिए तुम बरदेह ॥

शौतिरुवाच ॥

यहै कथा पूछीज्ञती श्रीजनमेजय भूप । ब्यास बिशारद सुऋषिसों सुनी परम सुखरूप ॥

जनमेजयउवाच ॥

धास्यो बपुहयग्रीवको नारायण किहिकाज । तुमहमको समुझायकै कहिएबुधशिरताज ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ चरणाकुलकछन्द ॥

नृप जनमेजय की यह बानी । सुनि बोले द्वै पायन ज्ञानी ॥ महा प्रलय जब भौ नर-राई । तब श्रीनारायण जल शाई ॥ तास नाभि ते कमल सुढारो । होतो भयो सहस दल वारो ॥ ताते होतो भयो विधाता । संपूरण बेदनको ज्ञाता ॥ कमल पत्रमें तिन तहं देखी । दोय बुन्द तेजशसों भेखी ॥ एक मधुरंग ज्ञतो भो तासो । मधु भो भरो तेजमय भासो ॥ कठिन ज्ञती तासों भो कैटभ । अतिहि कराल बिशाल महा प्रभ ॥ तिनसु बेद ब्रह्मते छीने । उर दिखायकै व्याकुल कीने ॥ सब विधि हरिकी सु स्तुति करिकै । कहत भए इमि दुख सों भरिकै ॥ बिन बेदन किमि सृष्टि बनाऊं । मैं हे नाथ परम दुख पाऊं ॥ तुम अभिमानि नके हौ नाशक । दीननके हौ मोद प्रकाशक ॥ तुमहि धर्मके थापन वारे । उत्थापन कै अघको भारे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

नारायण यह स्तवन सुनि उठेनींदको त्यागि । बेदनको ल्यावत भए उद्दित क्रुधसों पागि ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

हयग्रीव बपु तिन तहं धास्यो । अपनो परम तेज विस्तास्यो ॥ करत प्रवेश भए महि माहीं । पञ्चनको तिन दोउन पाहीं ॥ सुर उद गोयहि तहां उचरिकै । तिहिसों तिन ते बेदहि हरिकै ॥ तिनहि रसातल माहिं गिराए । विधिहि बेददै मुदसों छाए ॥ तदनु धरत भे पूरब रूपै । करि यह उत्तम कार्य अनूपै ॥ प्रभु ईशान कौन में राख्यो । तिहि बपुको द्वै पायन भाख्यो ॥ हयग्रीव भे बेद निकेता । करण विधानहिं मोद समेता ॥ फेरि सैनमें पागे स्वामी । लोकन के नायक खगगामी ॥ ते दोऊ अति क्रुधसों पागे । आय बेद थल देखन लागे ॥ जब तिन बेद लखे तहं नाहीं । खोजन तब लागे महि माहीं ॥ तिन दोउन नारायण देखे । देखत महा हाशिसों भेखे ॥

दोहा ॥

तदनु कहत ऐसे भए बेद हमारे बौन । हरे हौंहिगे इनहिने इन बिनहै इतकौन ॥
कोहै यह है कौनको सोवै कितसों आय । ऐसे कहिकै बैन बज्र तिन प्रभु दिए जगाय ॥

चरणाकुलकछन्द ॥

रण अभिलाखी तिनको जाने । आपुहु रण विचार मन आने ॥ लरि तिनसों रणमें वधिडारे । ब्रह्माके सब शोच निकारे ॥ लोक रचनकी आज्ञा चायन । दै भे अन्तरध्यान नरायन ॥ ब्रह्मा बेदहि प्रापत ह्वैके । विरचे लोक मोद सों भेके ॥ यों हरि प्रवृत्ति धर्म के काजै । हयग्रीव बपु धारि दराजै ॥ दोऊ दानवको बध कीन्हों । ब्रह्माको अति आनंद दीन्हों ॥ कथा सुने यह आनद मूलै । पढ़ो होय सो कबहु न भूलै ॥

दोहा ॥

हयग्रीवकी जो कथा पूछी हो तुम भूप । सो हम तुमसों सब कही पावन करणि अनूप ॥
कार्य करणको विष्णु प्रभु जैसो मनमें होय । तासो बपु धारण करत नृप मायासों भोय ॥
बेदशास्त्र तप योगको है स्थान हयग्रीव । जानो पारीक्षित नृपति प्रवृत्तधर्म की नीव ॥
प्रवृत्त धर्म विख्यातजो नारायण बपु जानि । नारायणके रूपही महा भतहु मानि ॥
अरु शब्दादिकहु गुणो नारायणके रूप । मन अरु दशइन्द्रियहु नृप सोई जानु अनूप ॥
कर्ता चेष्टा कर्म अरु कर्णदेव आधार । नारायण के रूपही जानो भू भर्तार ॥

चरणा दोहा ॥

तत्वजानिबेको है जिनकी इच्छातेजनसर्व । नारायणही सबको जानै मतिविस्तारिअखर्व ॥
बेदकार्य पितृकार्य अरु परम तपस्या दान । परमेश्वरही जानु तू इन सबको सुस्थान ॥
जानत परम सुपुरुषको सुकृषि सुविज्ञ महान । वाके गमनागमनको औरनको नहिं ज्ञान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीठहितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचिते भाषायांमहाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे एकशताधिकसप्तविंशतितमोऽध्याय: ॥

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥

अतिप्रसन्नताजहत हरि जानेतिनकोएक । ग्रहणकरत सो दान जो कीन्होंसहित विवेक ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप पुण्यसों रहितते पावैं पद निर्वान। ऐसे तुम ऋषि कहतहौ मति विस्तारि महान ॥
जेत्रिवर्गको तजतते हरिको प्रापत होत। पढ़त वेद उपनिषदसह जे मतिको करिद्योत ॥
तिनसोंगतिजानत अधिक हरियक्तनकोप्रत्त। तिनसमकोऊ न जगतमें स्वच्छमोक्ष धर्मत्त ॥
केवल हरिके भक्तको कैसो है आचर्ण। कौन काल में करत है कहिए शंसय हर्ण ॥
गतिअरुअगतिकहौहमैं ऋषिवरसहितविधान। ज्ञाताहूजो आपनो औरन लख्योमहान ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

रणमुखभीष्मादिकनकोलखिभोपार्थउदाश। तवहरिगाईगति अगति करिविस्तारप्रकाश ॥
हरिकी गाई गतिअगति कही पूर्वभूपाल। तुमसोंहम विस्तार करि तनिकेबुद्धि विशाल ॥
है गति मान उपाशना धर्म कहत है बुद्ध। पावत किए उपासना हरिको दर्शन शुद्ध ॥
अगति मान है ज्ञानसो याते सुनो नरेश। अन्त लगावै मनहिं नहिं ज्ञानी बुद्ध विशेश ॥
जिनकोमनएकत्र नहिं तेजन जानिसकैन। कहीजौन यह गति अगति पारीक्षित मतिऐन ॥
यहहि धर्म पूछत भए नारदसों नृप पार्थ। सुनते भीषम कृष्णके सुनो भूप ज्ञानार्थ ॥
ममगुरु द्वैपायन कह्योहैं यह मोहि क्षितीश। हरिबेको अज्ञानतम जानो याहितमीश ॥
नारायण के बदनते जब भे ब्रह्मा होत। देव पितर के कार्यको हरिने कियो उदोत ॥
याही अतिवर धर्मसों है यह धर्म अखण्ड। फेणि परिष यह धर्मको जानतभए प्रचण्ड ॥
बैखानश पावत भए तिनसों यहही धर्म। पावत बैखानशनसों सोम भयो सह शर्म ॥
तदनु अन्तरध्यान भो यह सुधर्म अवदात। तब श्रीहरके चक्षुते ब्रह्मा भयो विभात ॥
सुनत पितामह सोमते भो यह धर्म सुढार। ब्रह्मा रुद्रहिदेतभे अनुपम अमल उदार ॥
बालखिल्य गनको भए देत रुद्र यह स्वच्छ। हरि माया सों फेरिहु भोय यह अप्रतक्ष ॥
परमेश्वरहके बचनते फिरि भे ब्रह्मा होत। नारायणहो तब कियो यह सुधर्मको द्योत ॥
नारायणसों लहतभे श्रीऋषि प्रत्त सुपर्ण। यह सुधर्म के ग्रन्थ को सो ऋषि पावन कर्ण ॥
तीनबेर पढते भयो याते तिनको नाम। होत भयो त्रिशुपर्ण नृप महा तेज को धाम ॥
शुपर्णते यह धर्मको लहत भयो पवमान। तासों विद्याशाशी ऋषी पावत भए सुजान ॥
विद्याशाशिनको लहतभो यह नदीश अवनीश। फेरिहु अन्तरध्यानभो जैसे अमातमीश ॥
अवजिमि विधिभे अवन ते तैसे सुनु भूपाल। मनमें यह भगवानके इच्छा भई विशाल ॥
बहुविधिकीजो सृष्टिको बिरचे सहितविलास। ऐसो एक उत्पन्न हम करै पुरुषसहुलाश ॥
ऐसे गुनतहि श्रवणते एक पुरुष भो होत। नाम तास ब्रह्मा धस्यो सर्व गुननको पोत ॥
ब्रह्मासों तहं कहत भे इमि परमेश्वरबैन। प्रजा करौ बहु भांतिकी तुम उत्पन्न सचैन ॥
सात्वतधर्महिग्रहण करि अतिवरमोसोंतात। करुशतयुगकी थापना तासोंअतिअवदात ॥
नमस्कार परमेश्वरहि करिकै ब्रह्मा तत्र। ग्रहण कियो अति हर्षसों धर्म सुपर्म पवित्र ॥
ब्रह्माको उपदेश करि तिहि सुधर्मको भूप। जात भए तम पारको जो अव्यक्त अनूप ॥
तदनु सुथावर जंगमहि रचत भयो लोकेश। शतयुगकी करि प्रवृतिको थाप्योधर्म विसेश ॥
लोकनमेंसो प्रवृतभो सात्वत धर्म सुढार। पूजतभो तिहि धर्मसों हरिहि विश्वकरतार ॥
धर्मप्रतिष्ठा हेतुविधि खारो चिषभनुताहि। सात्वत भयो पढ़ावतो सहबिधान अवगाहि ॥
खारोचिषनिज पुत्रको भयो पढ़ावतसोय। तास शङ्खपद नाम हो पढ़ो सुतिहि सुखभोय ॥
भयो पढ़ावत शङ्खपद निजपुत्रहि अभिराम। ताको सुवर्ण नामहौं माहातेजको धाम ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रेतायुगमें धर्मसों फिरिभो अन्तरध्यान। बहुत काल लौं व्यक्त नहिं होतो भयो सुजान ॥
पर्म भागवत धर्म मैं कह्यों पूर्व हौं जौन। ताही की यह वारता जानु विज्ञ चिति रौन ॥
हरि ना ज्ञाते होत भो जब फिरि थी लोकेश। तब ब्रह्मा के देखते आपुहि थी कमलेश ॥
सनत्कुमारहि देत भे पर्म भागवत धर्म। पायो सनत्कुमार तें बीरण प्रज्ञ सशर्म ॥
रैभ्य सुमुनिको देत भो बीरण विज्ञ विशाल। कुक्षि नाम सुतकों दयों रैभ्य सुमुनि महिपाल ॥
फिरिहू अन्तर ध्यान भो स्वच्छ भागवत धर्म। गुप्त भयो बहुकाल लौं रह्यो तौन अति पर्म ॥
फिरि हरि अण्डज विधि भए तब फिरिसों बर धर्म। नारायणके बदनते भो उत्पन्न सुधर्म ॥
ग्रहण कियो विधि तास फिरि ताकों सहित विधान। ब्रह्मासों सो पढ़त भो बर्हीं सद्म सुजान ॥
बर्हि सद्मसों प्राप्त भो ज्येष्ठनाम ऋषि प्रज्ञ। ज्येष्ठ सुऋषिसों लहत भो अविकम्पन नृप तज्ञ ॥
फेरिहू अन्तर्ध्यान भो तौन भागवत धर्म। रहत भयो बहुकाललौं गुप्तहि सो अति पर्म ॥
जब यह पद्मज जन्म भो ब्रह्मांको भूपाल। सप्तम तबहू हरिहि यह कीन्हों प्रगट विशाल ॥
ब्रह्माकों सो देत भे ब्रह्मा दक्षहि दीन। दक्ष भानुकों देत भे भूपति पर्म प्रवीन ॥
ज्येष्ठ सुवनके परम हित देत भानु यह धर्म। ज्येष्ठ सुवन इक्ष्वाकुकों देत भये मनु पर्म ॥
वैवस्वत इक्ष्वाकुनै कियो जगत विख्यात। क्षीण होयके फेरिहू यह सुधर्म अवदात ॥
नारायणको होयगो प्राप्त कछू दिन माह। हरिसों पायो धर्म यह नारद ने नरनाह ॥
धर्म सनातन पर्म यह है महांन सुखदाय। शमदम वारे जननसों यह नृप कीन्हों जाय ॥
हरिहीं है क्षेत्रज्ञ नृप सब भूतन के मांह। तैसी क्रीड़ा करत है जैसी होती चाह ॥
धर्मराज नृपको कह्यो यह सुधर्म श्रीव्यास। सुनत सु भीषम कहके बहु ऋषीनके पास ॥
नारदने श्रीव्याससों कह्यो सु यह बर धर्म। यासों हरि चन्द्रा भये प्राप्त होत जन पर्म ॥

जनमेजयउवाच ॥

ऐसो जो यह धर्म जो और बतनके माहिं। जे प्रापत द्विज ते करै यह सुधर्म क्यों नाहिं ॥

वैशम्पायनउवाच ॥

होति तीन विधिकी प्रकृति देहिनकी भूपाल। सात्वकी राजसीतामसी कहत सुबुद्धि विशाल ॥
जिनकी सात्वकि प्रकृति है ते सुकर्त यहधर्म। प्रकृतिहि जानो हेतुहे क्रिया करणकों पर्म ॥
सात्विकही जन लहत है यह सुधर्म अवदात। सात्विक जनको हरिहिमें प्रेम सदा शरसात ॥
निज इच्छाकी सिद्धिलहै द्विजश्रीहरिकोध्याय। तृष्णाजिनकीछुटिगई तिनहिंदेतहरिचाय ॥
परमेश्वरकोबिनकृपासात्विकिप्रकृतिमिलैन। सात्विकिप्रकृतिबिनासुपथ औरमोक्षकोहैन ॥
जिनका राजसी तामसी प्रकृति तिन्हें भगवान। देखत नहिं तिनको लखेंब्रह्मा भूप सुजान ॥
लोकान्तरको लहत है याते तेजन सर्व। पुरुषोत्तम भगवान की कैसे लखै अखर्व ॥

जनमेजयउवाच ॥

सात्विकिसों जे रहित हैं होय प्रकृतिसो लीन। तेकिमि हरिको होतहैं प्रापत कह्यो प्रवीन ॥

वैशम्पायनउवाच ॥

पंचरात्र अरु सांख्य अरु वेदारण्यक योग। यहहि धर्म भागवतको कहत पुराणे लोग ॥
भक्ति मार्गको नाम हैं पंचरात्र अभिराम। जीवात्मा परमात्माको जिहिमें है मतिधाम ॥
बर विवेक तासों सुबुध सांख्य कहत हैं पर्म। वेदारण्यक कहत हैं ताको विज्ञ सशर्म ॥
जीवात्मा परमात्मा तिनको जौन अभेद। तौन होय जिहि ग्रन्थमें विज्ञ नृपाल अखेद ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग सुचित्त निरोधको नाम कहत बुध लोय। हरिहि लहनको मार्ग है इन बिन औरन कोय ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कबीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिनाबिरचिते भाषायां महाभारत दर्पणे शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे एकशताधिकाष्टाबिंशतितमोऽध्याय: ॥

जनमेजयउबाच ॥ दोहा ॥

सांख्यादिक जे सर्ब है तिनको जानो ज्ञान। होत होतकी एकहू जाने ऋषि मतिमान ॥

बेशम्पायनउ वाच ॥

नारायणके पुत्र अरु नारायण तें षष्ठ। बेद निधान सु ब्यासको ऋषिबर कहत सपष्ठ ॥

जनमेजयउ बाच ॥

पहिले तौ तुम यह कह्यो मोको सुऋषि अमन्द। भे बशिष्ठके शक्ति सुत तास पराशरनन्द ॥
भए पराशरके सुवन ब्यास सुबेद निधान। नारायण के सुत कहत ब्यासहि अवमतिमान ॥
पूर्बहू मोका जन्म है ब्यास सुऋषिको खत्त। बैशम्पायन यह कहो मोको करि सु प्रतत्त ॥

बेशम्पायनउ वाच ॥

एक समैमें बेदकों अरु भारतको अर्थ। अरु नारायणसों जन्म जिमि भे भूप समर्थ ॥
मम गुरु श्रीमुनि ब्याससों पूच्छो मैं सह मोद। सुनिके मेरे प्रश्नको कहत भए सबिनोद ॥
आदि कालको जौन तुम पूच्छो यह आख्यान। तपसों जान्यो तोहिमें कहत तौन सबिधान ॥
नाभि कमल ते जब भयो सप्तम जन्म नरेश। ब्रह्माको तबयों कह्यो ब्रह्मासों कमलेश ॥
प्रजा रचौ बहुभांति की लहि मेरीआज्ञाहिं। सुनि ब्रह्मा ऐसो कह्यो बुद्धि हमारे नाहिं ॥
तब गभु अंतर ध्यान ह्वै मतिको कियोबिचार। करत बिचारहि सुमति सों आगे भई सुढार ॥
तहं मतिसों ऐसे कह्यो नारायण भगवान। लोक रचनके हेत तू बिधि में करु खस्थान ॥
हरिकी आज्ञा पाय मतिबिधिसे कियो प्रबेश। ब्रह्मासो फिरि इमि कह्यो ह्वै कै प्रगट रमेश ॥
लोकनकी रचनाकरो अब तुम सहित बिधान। इमि कहि अन्तरध्यानभे लोक नाथ भगवान ॥
सृष्टि चरा चर मयसु यह बिरची श्री लोकेश। उत्त मन माहि बिचार नृप ऐसे कियो रसेश ॥
राक्षस दावब सृष्टिसे ह्वै है बहु बल बान। तिनसों रक्षा सृष्टि कीकीबे काज महान ॥
बाराहादिक रूप कहु धरिकै महा प्रचण्ड। करणे परिहै बध हमैं तिनको उग्र उदण्ड ॥
बाणीको उच्चार तहं कीन्हो श्री भगवान। ताते सार खत भयो होत महा मति मान ॥
नाम अपान्त रतमा भो तास परिच्छित तात। ज्ञाता तीनहूका लकोंकीर्ति मान अवदात ॥
तासो नारायण भए ऐसे कहत सुजान। करु बिभाग तू बेदको तात महा मतिमान ॥
स्वायम्भु मनुने कियो बेदनको सुबिभाग। सो बिभाग लखि हरि भए अति प्रसन्न बड़भाग ॥
तदनु सु ऐसे कहत भे तासों श्रीभगवान। और मनुनके माहिहूं इमिही तात सुजान ॥
करता बेद बिभागके हरता अद्यके द्वन्द। भरता कीरति भुवनमें चरता ह्वैहै नन्द ॥
आगे कलियुग आयहै तब कुरुबंसी भूप। लहिहै अति बिस्तारकों तुमसों तात अनूप ॥
प्रापत ह्वैहै भेदको ते बिनाशके हेत। बेद बिभागहि तबहू तुम करिहौ तात सचेत ॥
बीतराग तब सुवन सुत ह्वैहै बर मतिमान। लहिहै पदनिर्बाण सों प्राप्त भए बरज्ञान ॥

चरणा ॥ दोहा ॥

जन्म पराशर ते ह्वैहै तब सत्यवतीके मांहि। ते सरिसम तिहुं लोकन माहीं ह्वैहै कोऊनांहि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमि कहि मोसों हरि कह्यो जाऊ इहांते तात। हमतो सों दोऊ जनम कहे अब विख्यात ॥

वैशम्पायनउवाच ॥

सम्भव पूरव जनमको मेरे गुरुको भूप। कह्यो प्रथम अवप्रश्नको उत्तर सुनो अनूप ॥
सांख्यादिक सब ज्ञानके साधन हे भूपाल। पञ्चराच अति श्रेष्ठ है इनमें सुनु बरभाल ॥
भिन्न भिन्न आचार्य हैं सांख्यादिक के सर्व। है बरबक्ता सांख्यको सुनि श्रीकपिल अखर्व ॥
हिरण्य गर्भ सु योगको है बेत्ता मतिमान। अपान्तर तमां विप्रवर त्रिकालज्ञ गुणज्ञान ॥
वेदारण्यक के परम ते आचार्य अमन्द। पञ्चराच ज्ञाता हरिहि है हे जानु नरेन्द ॥
और पाशुपत नाम एक ज्ञाता ताके सर्व। साधन मोऊ ज्ञानको जानो भूप अखर्व ॥
पञ्चराच को गुणत ते हरिको प्रापत होत। पञ्चराच सों होत है शीघ्र ज्ञानको द्योत ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे एकशताधिकेकोनविंशतमोऽध्याय: ॥

जनमेजयउवाच ॥ टोहा ॥

बहुत पुरुष है कीसुऋषि एकहि पुरुष अमन्द। अबयह हमको गुणिकहौ तुमहौ विप्र बिलन्द ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

पुरुष बहुत सांख्यादिके ज्ञाता हैं भूपाल। सब पुरुषनको यान इक पुरुष अनूप बिशाल ॥
नाम बारता तुम सुनो करिकै मन एकत्र। अवण तास करिकै कथा कोनहिं होत पवित्र ॥
पुरुष सूक्त यह परम है वेदनमें विख्यात। चिन्तन ताको बरऋषिन कीन्हों गुणिअवदात ॥
आपुहि जात अनेक ह्वै पुरुष किये बिस्तार। बहुरि जात है एक ह्वै पुरुष मही भरतार ॥
नारहि पाय प्रसाद हम तासु कहत व्याख्यान। इहि प्रसंगमें कहतहौं एक इतिहासमुजान ॥
तामें है सम्बाद नृप विधि हरको अभिराम। क्षीरसिन्धुमें हेम छवि वैजयन्त है नाम ॥
पर्वत तामें लोकपति ब्रह्मा आपुहि एक। मन लगाय करतो हुतो थिरि ह्वै ब्रह्म बिबेक ॥
महादेव आवत भए अकस्मात नृप तत्र। नभते गिरि शिरपै भए गति जिनकी सरबत्र ॥
गिरत भए बिधि पदनपै बिधि तब लियो उठाय। अति आनंदसों छायके लयो हिएसों लाय ॥
आयो जो बहु कालमे सुत तासों लोकेश। अति प्रसन्न बोलत भए करिकै कृपा बिसेश ॥
आयो तू बहु कालमे याते पूछत तोहि। है सु कुशल स्वाध्यायको अरु तपकी कछु मोहि ॥

रुद्रउवाच ॥

सर्व हमारे है कुशल तब प्रसाद ते तात। बहु दिनमें मोको भयो तब दरशन अवदात ॥
आयो मैं यहि अचल में तव दरशन के हेत। तुम्हैं अकेले देखि भो अचरज जगत निकेत ॥
सेवित सुर अरु असुरसों ऐसो जोन स्थान। ताहि छोड़ि पर्वत कियो आलय कों भगवान ॥

ब्रह्मो वाच ॥

अच्युत अव्यय सर्व गति स्वामी जगको तास। करिबेको सुविचार इत आए हम सहुलास ॥
मोको तास स्वरूपको है नहिं परम ज्ञान। जितनो है तितनो कहत तोको करि व्याख्यान ॥
अनेकत्व एकत्व ए दोऊ उनहीं मांहि। महा पुरुष वह एकही और दूसरो नांहि ॥
गुणधरिकै बहु होत है निर्गुण ह्वैके एक। जानत है भगवानको इमि बुध करि सुबिबेक ॥
जो अचिन्त्यको जानिकै भाव सूक्ष्म जो चारि। तिनसे लाय समाधिको जोन रहै सुदधारि ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम पुरुषको प्राप्तको होत होयको सान्त। सो अचिन्त अव्ययनहीं मनमें जो वरदान ॥
अनिरुद्ध सु प्रद्युम्न अरु सङ्कर्षण अभिराम। बासुदेव चौथे सुए भावरूप्य तप धाम ॥
सत्ता जीव अचिन्तकी ताहि कहत हैं भाव। ताके सूक्ष्म रूप ए चारो हैं नरराव ॥
योग मार्गमें गुणत है योगी इमि अति स्वच्छ। ज्ञानी ते परमातमहि एवहि जानत दच्छ ॥
तुम पूछ्यो है हमें कह्यो तुम्हें हम तौन। योग सांख्यकी रीतिसों सुनो तात तप भौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशी राजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासिरघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे एकशताधिकचिंशत्तमोऽध्यायः ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥

शुलभाको अरु जनकको जो सम्वाद अनूप। अतिहि श्रेष्ठ संन्यासको तामें सुनिके भूप ॥
महत दुःख संन्यासमें गुणिकरकै मनबीच। सुख यामें अरु श्रेष्ठतर आश्रम कौन निमीच ॥
यह जाननकी लालसा करिकैं बट धरणीप। पूछत ऐसी भांति भो गंगा नन्द समीप ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

अबलौं हमको तात बहु कहे मोक्षके धर्म। आश्रमीन को अब कहो ससुख धर्म जो पर्म ॥

भीष्मउवाच ॥

धर्म सर्व है श्रेष्ठ पै जाहि न्यायसों द्रव्य। प्राप्त भयो ताको कियो धर्म परम है भव्य ॥
अब एक इतिहास हैं तुम्हे कहत हैं भूप। इन्द्रहि पूरब जो कह्यो नारदहुतो अनूप ॥
नारद मुनि सुरराजके पास गए जब चाहि। पूछत भो तब नारदहि सो ऐसे अवगाहि ॥
तिहुं लोकनके बीच तुम घूमत हो सरबच। लख्यो होय आश्चर्य सो हमैं कहो तुम अच ॥
कथा सुनाई इन्द्रको ए नारद मुनिबैन। तुम्हे सुनावत हैं कथा सोई नृप बल ऐन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दित नारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविनाविरचितेभाषायां महाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे एकशताधिकैकचिंशत्तमोऽध्यायः

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

गंगावारे कूलपै दक्षिणके अभिराम। महा पद्म पुरमें हुतो ब्राह्मण एक सुनि धाम ॥
अविवंशको सो हुतो धर्मी नृप बल गेह। बहुत पुत्र जाकेहुते श्रुतिमें किए सनेह ॥
श्रेष्ठनके आचारको करतो हुतो सदैव। निश्चय काहू धर्म में जाहि होत हो नैव ॥
कहा करौं तौ होय शुभ प्राप्त मोंहि कल्यान। यह विचारतै हो रहत लहिकै खेद महान ॥
तासु पास आवत भयो ब्राह्मण एक अवदात। ताको करि सतकार अति भोजन दीन्हों तात ॥
भोजन करिके स्वस्थ ह्वै बैठो जबवह विप्र। तब ताको पूछत भयो ऐसे सो द्विज क्षिप्र ॥

ब्राह्मणउवाच ॥

सुतहि गृहा श्रम देयकै परम धर्म जो स्वच्छ। ताको करिबे को भई भूरि लालसा दच्छ ॥
पै नेहादिक सों वधो कीन्हे सकत या तौन। जन मन्दागिनिको चहे जिमिभोजन मतिऐन ॥
यहि भवसागर पारहो भयो चहत बुधराय। धर्म नावमिलि है कबै कबै उतरिहौं धाय ॥
खेद कहत मम लगत नहिं भोगन में मन ख्यात। मोपै कृपा विशाल करि कहो धर्मकीबात ॥
बोलत भो सो द्विज अतिथ इमि ताके सुनि बैन। बानी सानी मधुरता सों वर प्रज्ञा ऐन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिथिरुवाच ॥

है मेरेहू लालसा जो तेरे सविवेक। मेरेहू निश्चय नहैं स्वर्ग द्वार अनेक ॥
किते प्रशंसा मोक्षकी किते यज्ञकी पर्म। किते गृहाश्रमकी करत प्रशंसा हिलहिशर्म॥

चरणा दोहा ॥

वाण प्रस्था श्रमकी केते करत प्रशंसा भूरि। राजधर्मकी करत प्रशंसा केते मुदसों पूरि ॥
गुरु से वाकी करत है किते मौन व्रत तास। किते युद्धमें मरि लहत दिवमें मोद प्रकास ॥
माताको अरु पिताको पूजि लहत है स्वर्ग। उंछ वृत्ति सो स्वर्गमें किते लहत सुद वर्ग ॥
किते अहिंसा धर्मसों किते सत्य सों पर्म। किते वेद अध्ययनसों लहत स्वर्गमें शर्म ॥
लहत स्वर्गमें वास हैं किते जितेन्द्रिय होय। ऐसे दिवकी प्राप्तिके बहु द्वारनको जोय ॥
थिरा बुद्धि मम है नहीं जैसे मेघ सवाय। कहै तुम्हें हम वैन ए धारि सत्य सुखदाय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्री उद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मेउञ्छवृत्त्युपाख्यानेएक शताधिकद्वाविंशन्तमोऽध्याय: ॥

अतिथिरुवाच ॥ दोहा ॥

शास्त्ररीति सों हम सुन्यो जैसो गुरुके पास। तैसो मैं उपदेशहौ तोहि करत सहुलास ॥
तीर्थ नैमिषा रण्यमें नदी गोमती कूल। नामनाम एक पुर परम छविको चारु अतूल ॥
पद्मनाभ नामा तहां महत सर्प है एक। जनहि करत सो मुदित है वानी सो सविवेक ॥
जाय तास तट पूछतू जौन पूछिबे होय। परम मरम कहिहै तुम्हें ज्ञान चक्षुसों जोय ॥
है अतिथिनको परम प्रिय शास्त्र विशारदपर्म। अनुपम गुणसों युक्त है शान्तहि धरेसशर्म ॥
परम धर्मको सर्पसो जानत जलवत जास। है सुभाव अध्ययनमें निर्तिहि रहत सहुलास ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराज महाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेउञ्छवृत्त्युपाख्यानेएकशताधिकद्वयस्त्रिंशत्तमोऽध्याय: ॥

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥

भार उतारे होत हैं जैसे मनुज सचैन। तिमि सचैन मो मन भयो सुनिकै तव ए वैन ॥

उकछा छन्द ॥

पथसों हान्यो जौन। लहिकै शय्या तौन। भोजन पाय क्षुधार्त ॥ अरु लहि अपहि तृषार्त ॥ जैसे होत सचैन। तिमिहे सुनि तव वैन ॥ जौन कह्यो तुम अद्य। करिहौं सो मैं सद्य ॥ यह रजनी में अत्र। रहुन जाहु अन्यत्र ॥ अतिथि सुनि सु यह वात। वसत भयो तहं तात ॥ मोक्षधर्म की पर्म। कहते कथा सशर्म ॥ रजनी दई विताय। तिन दोउन नरराय ॥ पूजित ह्वैके प्रात। अतिथि भयो सो जात ॥

दोहा ॥

तदनु अचिरंगज सुद्विज दूरि करण संदेह। पासजानको भुजनके गमन कियो मति गेह ॥
मारगमें एक मुनि मिल्यो तेजोमय अभिराम। ताको पूछत भो सुद्विज पद्मनाभको धाम ॥
पद्मनाभ नागेन्द्रको तिहि थल दयो बताय। सो सुनिकै प्रापत भयो नाग सुदन तट आय ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदनु कहत ऐसे भयो सो ब्राह्मण तहं बैन। हम ब्राह्मण आए इहां हैं नागेन्द्र सचैन ॥
ब्राह्मणके ए बचन सुनि पतिव्रता अहिनारि। विप्रहिसों देखत भई बाहिर आय सुढारि ॥
तदनन्तर पूजा सबिधि करिके ऐसे बैन। कहति भई अब जो कहो करौं तौन मति ऐन ॥

ब्राह्मणउवाच ॥

देखनको नागेन्द्रको मम इच्छा है नारि। एतदर्थही आगमन मेरो भयो सुढारि ॥

नागभार्योवाच ॥

अचआय है मम सुपति भये एक गतपक्ष। वहन गए हैं रबि रथहि सुनु ब्राह्मण वरदक्ष ॥
पारीरबि रथ वहनकी है महिना की एक। तिन कहि तामें गयो है पक्ष एक सबिबेक ॥
मोको आज्ञा होय जो अब करौं मैं तौन। सुनिकै ताके वचन इमि कह्यो बिप्र मतिभौन ॥

ब्राह्मणउवाच ॥

पद्मनाभसों मिलनको मैं आयो हौं दार। जबलों ऐहैं अब नहिं वनके बीच सुढार ॥
करिहौं तबलों वासमें जब आवै अहिराय। तब मेरो वृत्तान्त तू दीज्यो तिन्हें सुनाय ॥
ऐसे पन्नग नारिको कहिकै सो द्विज बैन। नदी गोमती कूलपै रहत भयो प्रति ऐन ॥

भीष्मउवाच ॥

निराहार ह्वै बसत भो नदी गोमती कूल। ताते पन्नग और सब दुखको पाय अतूल ॥
तास पास जाते भए सर्व कुटुम्ब समेत। नदी पुलिन में देखते ताको भए सचेत ॥
तास पासते जायकै कहत भए इमि बैन। निराहार ह्वैकै रहत अबआपु मति ऐन ॥
अतिही पीड़ित हैं भए याते हम अहि सर्व करौ आपु भोजन लहैं तब हम मोद अखर्व ॥
भोजन देनो अतिथिको यह सुगृहीको धर्म। कन्द मूल फल जो कहौ ल्यावैं तौन सशर्म ॥
आय हमारो धाम पै भूखो रहो न कोय। अतिथि आजुलों ये बचन सुनिके इमि सोजोय ॥
कहत भयो ऐसे वचन कीन्हों तुम सत्कार। याते भोजन करिचुके करहु न शोच अपार ॥
एक मासके बीच है वासर बाकी अष्ट। बहु बासर बाकी न अब याते करहु न कष्ट ॥
अष्टदिवसतकआयहै मैं नहिं सुनौअहार। करिहौंबततिनकाज यह जानोसबहि सुढार ॥
अपने अपने धामको जावो पन्नग सर्व। खेद करो मति आपने मनके बीच अखर्व ॥

भीष्मउवाच ॥

पूर्ण भयो जब मासतब आज्ञा रबिकी पाय। आवतभो निज धामको पद्मनाभ अहिराय ॥
पहुंचो जब निज धाममें तब लखि नारी तास। पद्मनाभके धोवती भई चरण सहुलास ॥
तदनन्तर पूछत भयो नारीको अहिराय। अतिथिदेव पूजति हुती सहित बिधानसचाय ॥
मम बियोग ते पीड़िता ह्वै करिकै तू नारि। धर्मनकी मर्याद तौ नहीं तजी सुकुमारि ॥

नागभार्योवाच ॥

परम धर्म है नारिको पातिव्रत्य ललाम। जानति तव उपदेशते तत्व स्वच्छ अभिराम ॥
तुमहौ पालत धर्म में होय तुम्हारी नारि। कैसे तजि हौं धर्मको कहिए आपु बिचारि ॥
भयो पक्ष एक अबहै ब्राह्मण आयो एक। रहत गोमती तीरपै पढ़त बेद सबिबेक ॥
राह तुम्हारी लखत है अनसन व्रत गहि तौन। मोहिगयो है कहि बचन ऐसे सो मतिभौन ॥
जब आवै निज धाममें नागराज तव पास। भेजि हमारे दीजियो याते सहित हुलास ॥
करौ ताहि तुम आजके शीघ्र गोमती कूल। दरशन देकै आपनो दायक मोद अतूल ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागउवाच ॥ चरणा दोहा ॥

मोहि बुलावन की सामर्थ्य नहोति मनुजके बीच। सुर है कीहै ऋषि उग्र यह ब्राह्मरूपनीभीच॥
मानव ऐसो कोऊ नहिं सके हमें जो जोय। नागराज के बचन ए सुनिकै बोली जोय॥
मानवही है वह नहीं परे देवता जानि। पै राखे है आपुको हियमें भक्ति महानि॥
कोव करो मतिदरशको तब वह सहित जलाश। धारे चातिक जिमि सुनोस्वाति बूंदकीआश॥
विघ्न न करिहै वह कछूदरशन चहत तुम्हार। तास आश मति छेदिए करिए कृपा सुढार॥
तास आश जौ छेड़िहौ जरिहै तौ तब अंग। आशा छेदे भ्रूणहा भूपऊ होत उतंग॥
होत दान ते सुयश है सत्य बचन ते धर्म। खच्च बोलिबो होत है जनको प्राप्त समर्म॥
मैंयोगी तब पास मैं जब ऐहै अहिराज। याते ताके जाइए पास प्रच्छ गिरताज॥

नागउवाच ॥

धारिहिए अभिमान नहिं क्रोध करत हौ नारि। क्रोध हमारी जातिको है सुभाव निर्धारि॥
वोध सर्पमें अधिक है याते प्राणी सर्व। सर्प जातिको करत हैं निंदा नित्य अखर्व॥
तब बाणी को श्रवण करि क्रोध दियो मैं त्यागि। धन्य आपुको गुणत हौं तोहि लखे अनुरागि॥
अबमें शीघ्रहि जात हौं तिहि ब्राह्मणके पास। ताके मैं संदेहको मिलतहिं करिहौं नास॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजन काशीवासि रघुनाथ कवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येणमणिदेवेन कविनाविरचिते भाषायांमहाभारत-दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मे पद्मनाभोपख्याने एकशताधिकचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्याय: ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

पद्मनाभ नामा भुजग तिहि ब्राह्मण तट जाय। मधुर बचन बोलत भयो ऐसे विधि नरराय॥

रामगीती छन्द ॥

कछु तोहि पूछत विप्र हम हैं कीजियो मति क्रोध। तूं कहां ते है अत्र आयो कौन काज सबोध॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मम नाम धर्मारण्यहै जो पद्म नाभा नाग। मैं तास करण मिलाप आयो अत्र हौं बडभाग॥ तिहिको न गृहमें सुन्यो याते अत्र कीन्हे बास। पगि मिलन के उत्साहमें भेएह देखत तास॥ कल्याण काजे तास विधिवत पढ़त हौं मैं वेद ए वचन सुनिकै कहत भो इमि पद्मनाभ अखेद॥ नागउवाच ॥ तूं अनिंदित विप्र है बर साधु परम अनूप। पर जनहि देखत स्नेह सों हैं धन्य है मति रूप॥ है लखत जाकी राह सोई नागहौं मैं विप्र। प्रिय कहा तवमैं करौं कछु अबमिलौ तूं क्षिप्र॥ सुनि तब हवाल खनारि सौ हौं लखन आयो तोहि। तिहि कार्य आयो अब तूं कछु कार्य सों अब मोहि॥ विश्वास करु मम बातमें निज कार्यकी लहि सिद्धि। सुनु विप्र जैहै इहां ते कछु शीघ्रही मति निद्धि॥ हित छोड़ि करिकै आपने सब भजतहै तूं मोहि। लै मोल लीन्हौं गुणनसों निज देउं का अब तोहि॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मैं लखन आयो तोहि अरु अहि कछू पूछत अर्थ। अरथच्छ जेहैं सुने तिनमें तोहि महत समर्थ॥ एक अतिथि द्विज ने तब बतायो नाम मोहि अहीन्द्र। इमि बचन कहि द्विज प्रथम ऐसे कह्यो फेरि महीन्द्र॥

दोहा ॥

भारतंडरथ बहनको जात खबारी पाय। तहां कछू आश्चर्य जो लख्यो होय अहि राय॥
प्रथम तौन आश्चर्य कहि फिरि जो पूछौं तोहि। कहियो हे नागेश्वर कृपा दृष्टिसों जोहि॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागउवाच ॥

द्विज अनेक अचरजन में सूर्यहि अचरज पर्म। जाके होत प्रकाश ते लोक माहिं बहुकर्म ॥
जिमि डारनमें बिहग तिमि तास करणके बीच। देवन सह मुनि बसत हैं ब्राह्मण बिज्ञनिभीच ॥
जास कराश्रित बायु जो निकरि व्योममें धूरि। होत उग्रहै औरका अचरज याते भूरि ॥
अष्टमासलौं कर्षिजल बरषत भूमें सर्व। काल पाय याते कहा अचरज और अखर्व ॥
पुरुषोत्तम जामें रहत शाश्वत श्रीभगवान। सुनो बिप्र याते कहा अचरज और महान ॥
आश्चर्यनके बीच एक लख्यों आश्चर्य और। अतिहि महत सों कहत हौं तुम्हे प्रज्ञ शिरमौर ॥
पूर्व मोहि एक समयमें बासर मध्यप्रचण्ड। रबिसम रबितट लखि पस्यो तेजस और अखण्ड ॥
आवत भो रबिसामुहे चीरत इव आकाश। लोकनमें सो उग्र अति करतो भूरि प्रकाश ॥
भयोनिकट तब मिलनको भानुपसारे पानि। अरुदक्षिणकरतिहिहु द्विजछबिसोंभरोमहानि ॥
जास तेजहो तौन सुनु एक क्षणक के माहिं। रबिमें मिलिगो फेरि सो भिन्न पस्यो लखि नाहिं ॥
तौन समैमें यह भयो प्राप्त हमें संदेह। यह रबिहै कीजो हुतो आयो सो मति गेह ॥
तब हम पूछ्यो रबिहि इमि तुम्हहि समान प्रचण्ड। कोहै जो तुममे मिल्यो तेजस भरो अखण्ड ॥

सूर्य्यउवाच ॥

उंछ वृत्तिधर एक बर बिप्र हुतो अभिराम। तौन गयो सुरलोकको भरो तेजसों माम ॥
यह सुमूल फल पर्ण द्विज गिरे परे हो खात। बायु भक्षिकै रहतहो कबहुं अप अबदात ॥
काहू सों मांगत न हो अरु नहिं बैठत पाहि। हो सुउंछशील वृत्तिमें तत्पर रहत सदाहि ॥
उत्तम गतिको प्राप्त बर जौन होतहैं भूत। तिनकी गतिको जानत न सुर असुरादि अकूत ॥

नागउ वाच ॥

पूर्व लख्यो आश्चर्य हौं यह हम सूरज पास। सिद्ध मनुज ते भानुमें प्राप्त होय सहुलास ॥
करत प्रदक्षिण मेरुकी याते धर्मारन्य। उंछवृत्ति में रहत जे तत्पर ते जन धन्य ॥

ब्राह्मणउवाच ॥

यह जो तुम हमको कह्यो सो आश्चर्यहि पर्म। प्रिय हमको अतिही लग्यो यह भुजगेश सधर्म ॥
कह्यो यह सु आश्चर्य नहिं हमें बताई राह। नित्य होहु कल्याण तब पद्मनाभ अहिनाह ॥
सुमिरणममतुमराखियोअरुतुमनिजवृत्तान्त। जब तबहमकोभेजियोकहिमतिबर अहिदान्त ॥

नागउवाच ॥

अबहिकहांद्विजजातहै कहेबिनानिजकार्य। आगमभोजिहिअर्थतब अबकहुसोद्विज आर्य ॥
करिकै अपनो काज अरु मम आज्ञाको पाय। धाम आपनो छाड्यो संशय सर्व बिहाय ॥
मन में गुण तू आपने मम जेते जन तौन। हम ऐसे लहि मित्र तू करुन शोच मति भौन ॥

ब्राह्मण उवाच ॥

ऐसेही जो कहत है जैसे तू नागेश। देवतही है तू भुजग प्रज्ञावान विसेश ॥
कहा करै कामहिं करै धर्म हुतों संदेह। उंछवृत्ति सुनि के भयो तौन दूरि मति गेह ॥
आयो हौं जिहि अर्थ मैं तौन सिद्धि भो अर्थ। अब हम जैहैं धाम को आज्ञा देव समर्थ ॥

भीष्मउवाच ॥

बिदा होय कै भुजगसों धर्मारण्य सुबिप्र। दिक्षा लीवें उंछकी जात भयो सो क्षिप्र ॥
च्यवन सु ऋषिके पास सब भए दूरि संदेह। आदर सेती लेत भे ताहि च्यवन मति गेह ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौन सुन्यो आश्चर्य है पद्मनाभ सों स्वच्छ। तौन च्यवनसों है सरब कहतो भयो प्रतच्छ ॥
सभा बीच नृप जनककी यह आश्चर्यहि भूप। कह्यो ऊतो मुनिनारदहि च्यवन सुविच्छ अनूप ॥
श्रीनारद सुरराज की सभा बीच अभिराम। कह्यो ऊतो तहं सर्व है देव इन्द्र बल धाम ॥
अति प्रशस्त ब्राह्मणकों कह्यों ऊतो सुर राज। परशुरामसों औ नृपति हमसों युद्ध दराज ॥
भयो ऊतो जिहि समयमे तौन समयके माहिं। बसुन कह्यों हमको ऊतो हम नृप तेरे पाहिं ॥
ब्राह्मणोंको जो ऊतो पूछ्यो परम सुधर्म। सो नृप हम अवगाहिके तोकों कह्यों सुकर्म ॥
नित्य जितेन्द्रिय होयकै छोंड़ि कामना इन्द। मोक्ष प्रद है सोय जो कियो स्वधर्म नरेन्द ॥
करिके प्रायश्चित द्विज धर्म्मानण्य अनूप। लेय उंछशील वृत्ति की दीक्षा विधिवत भूप ॥
च्यवन सुऋषिसों ह्वै विदा धर्मारण्य सुधर्म। रहतो भयो अरण्यमें होय अकाम सशर्म ॥

स्वस्तिश्री काशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्या ज्ञामिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि रघुनाथ कवीश्वरात्मज गोकुलनाथस्यात्मज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकबिनाबिरचिते भाषायां महाभारत दर्पणेशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे उंछवृत्त्युपाख्यानसमाप्तिर्नामैकशताधिकपंचविंशतमोऽध्याय: ॥

दोहा ॥

नभवसुवसुबिधुवर्षवरविजयनामअभिराम। आश्विनशुक्लसुदशमिका तिथिलहिकैगुणधाम ॥
मोक्षधर्म दर्पण परम मोक्ष प्रद अवदात। पूर भयो ताकों सुने पढ़े कलुष कटि जात ॥

कबित्त ॥

केते भूप देखे महि मण्डल के बीचमें मैं ओजसों अखण्डल के सम जे बिख्यात हैं।
दुबन कलाप नीर शोषक अमाय महा भानु से प्रताप को सदाही सरसात हैं ॥
मणि देवभनै जौलौं रहत परोक्ष तौलौं सांनसों महान धारे तेजकौं बिभात हैं।
उद्दित नरेशके न जोके भयें श्रीं के भूरि द्योषके शशीके सम फीके होय जात हैं ॥

शान्ति पर्व मोक्ष धर्म समाप्त: सम्वत् १९३१ ज्येष्ठ कृष्ण ३० भृगुवासरे ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अङ्कित है । इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा .६ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा ।

11 ONOV 1964		
2042		
		49,608

नकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्य

हरिद्वार ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar